Shree Raghunath Sanskrit Research Institute Library,
Jammu

No. ६३८-घ

Title लक्षणप्रकाश

Author वीरमित्रोयाः

Extent २४२ Age १९३३

Subject धर्मशास्त्रम्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नं० ६३८-घ
लक्षण प्रकाराः
पत्राणि २४२
(धर्मशास्त्रम्)

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वस्ता काङ्क: ३१

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथलक्षणप्रकाशस्यअनुक्रमणिकालिख्यते ॥ श्रीलक्ष्मीनृसिंहो जयति सज्जयतिसिन्धुरवदनोदेवोयत्पादपंकजस्मरणं

सूची ।

मानलक्षणं पत्र
गतिलक्षणं पत्र
संहतिलक्षणं पत्र
वर्णलक्षणं पत्र
स्नेहलक्षणं पत्र
स्वरलक्षणं पत्र
प्रकृतिलक्षणं पत्र
अनूकलक्षणं पत्र
क्षेत्रलक्षणं पत्र
मृजालक्षणं पत्र
गंधलक्षणं पत्र

रुधिरलक्षणं पत्र
कौर्मपृष्ठपादलक्ष· पत्र
पदतललक्षणं पत्र
अंगुष्ठलक्षणं पत्र
अंगुलिलक्षणं पत्र
नखलक्षणं पत्र
(पाद)पृष्ठलक्षणं पत्र
गुल्फलक्षणं पत्र
पार्ष्णिलक्षणं पत्र
जंघालक्षणं पत्र
रोमलक्षणं पत्र

जानुलक्षणं पत्र
ऊरुलक्षणं पत्र
कटिलक्षणं पत्र
स्फिक्लक्षणं पत्र
गुदलक्षणं पत्र
वृषणलक्षणं पत्र
लिंगलक्षणं पत्र
लिंगाग्रलक्षणं पत्र
मूत्रलक्षणं पत्र
मुष्कत्वलक्षणं पत्र
पुंस्त्वपरीलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वस्तिलक्षणं पत्र
नाभिलक्षणं पत्र
कुक्षिलक्षणं पत्र
पार्श्वलक्षणं पत्र
उदरलक्षणं पत्र
मध्यलक्षणं पत्र
वलिलक्षणं पत्र
हृदयलक्षणं पत्र
वक्षोलक्षणं पत्र
स्तनलक्षणं पत्र
चूचुकलक्षणं पत्र
जत्रुलक्षणं पत्र

स्कन्धलक्षणं पत्र
कक्षालक्षणं पत्र
बाहुलक्षणं पत्र
मणिबन्धलक्षणं पत्र
करभलक्षणं पत्र
करपृष्ठलक्षणं पत्र
करतललक्षणं पत्र
रेखालक्षणं पत्र
अङ्गुष्ठलक्षणं पत्र
अङ्गुलीलक्षणं पत्र
नखलक्षणं पत्र
पृष्ठलक्षणं पत्र

कृकाटिकालक्षणं पत्र
ग्रीवालक्षणं पत्र
चिबुकलक्षणं पत्र
हनुलक्षणं पत्र
कूर्चलक्षणं पत्र
कपोललक्षणं पत्र
मुखलक्षणं पत्र
अधरलक्षणं पत्र
उत्तरोष्ठलक्षणं पत्र
श्मश्रुलक्षणं पत्र
दन्तलक्षणं पत्र
जिह्वालक्षणं पत्र

घण्टिकालक्षणं पत्र
तालुलक्षणं पत्र
हसितलक्षणं पत्र
नासिकालक्षणं पत्र
क्षुतलक्षणं पत्र
नेत्रलक्षणं पत्र
दृष्टिलक्षणं पत्र
पक्ष्मलक्षणं पत्र
निमेषलक्षणं पत्र
रुदितलक्षणं पत्र
भ्रूलक्षणं पत्र
कर्णलक्षणं पत्र
ललाटलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सूची २

शिरोलक्षणं पत्र
केशलक्षणं पत्र
सर्वगात्रलक्षणं पत्र
पादाग्रलक्षणं पत्र
अथावर्तलक्षणं पत्र
पिटलक्षणं पत्र
पादाद्यंगलक्षणं पत्र
राजलक्षणं पत्र
सर्वोत्कृष्टपुरुषल॰ पत्र
पुरुषलक्षणप्रकर
णंसमाप्तं ॥

अथस्त्रीप्रकरणंवक्ष्यते
पादलक्षणं पत्र
पादरेखालक्षणं पत्र
अंगुष्ठलक्षणं पत्र
अंगुलीलक्षणं पत्र
नखलक्षणं पत्र
गुल्फलक्षणं पत्र
पार्ष्णिलक्षणं पत्र
जंघालक्षणं पत्र
रोमलक्षणं पत्र
जानुलक्षणं पत्र
ऊरुलक्षणं पत्र

कटिलक्षणं पत्र
नितंबलक्षणं पत्र
स्फिक्लक्षणं पत्र
भगलक्षणं पत्र
जघनलक्षणं पत्र
बस्तिलक्षणं पत्र
नाभिलक्षणं पत्र
कुलिरीलक्षणं पत्र
पार्श्वलक्षणं पत्र
उदरलक्षणं पत्र
मध्यलक्षणं पत्र
वलिलक्षणं पत्र

रोमराजिलक्षणं पत्र
हृदयलक्षणं पत्र
वक्षोलक्षणं पत्र
स्तनलक्षणं पत्र
चूचुकलक्षणं पत्र
स्कंधलक्षणं पत्र
गललक्षणं पत्र
वक्षालक्षणं पत्र
बाहुलक्षणं पत्र
मणिलक्षणं पत्र बंध
करपृष्ठलक्षणं पत्र
करपृष्ठलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पाणि तललक्षणं पत्र
कररेखालक्षणं पत्र
करांगुष्ठलक्षणं पत्र
अंगुलीलक्षणं पत्र
नखलक्षणं पत्र
पृष्ठलक्षणं पत्र
कृकाटिकालक्ष॰ पत्र
कंठलक्षणं पत्र
चिबुकलक्षणं पत्र
कपोललक्षणं पत्र
मुखलक्षणं पत्र
अधरलक्षणं पत्र

उत्तरोष्ठलक्षणं पत्र
दंतलक्षणं पत्र
जिह्वालक्षणं पत्र
घंटिकालक्षणं पत्र
तालुलक्षणं पत्र
हसितलक्षणं पत्र
नासालक्षणं पत्र
क्षुतलक्षणं पत्र
नेत्रलक्षणं पत्र
पक्ष्मलक्षणं पत्र
भ्रूलक्षणं पत्र
कर्णलक्षणं पत्र

ललाटलक्षणं पत्र
शिरोलक्षणं पत्र
केशलक्षणं पत्र
अथस्त्रीणांप्रकृति
लक्षणं पत्र
आवर्त्तलक्षणं पत्र
गंधलक्षणं पत्र
छायालक्षणं पत्र
सत्वलक्षणं पत्र
स्वरलक्षणं पत्र
गतिलक्षणं पत्र
वर्णलक्षणं पत्र

रुघोलक्षणं पत्र
स्त्रीलक्षणं पत्र
विङ्गिणिलक्षणं पत्र
पंखिनिलक्षणं पत्र
हस्तनीलक्षणं पत्र
इतिस्त्रीलक्षणप्रक
रणंसमाप्ता
अथराजचक्रल॰ पत्र
पट्टमहिषीलक्षणं पत्र
मंत्रिलक्षणं पत्र
पुरोहितलक्षणं पत्र
ज्योतिर्विलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सूची.
२
3

वैद्यलक्षणं पत्र
सहायलक्षणं पत्र
मित्रलक्षणं पत्र
शत्रुलक्षणं पत्र
सभालक्षणं पत्र
परिच्छदलक्षणं पत्र
पार्श्ववर्तिलक्षणं पत्र
रक्षकलक्षणं पत्र
तांबूलधारिलक्षणं पत्र
भांडागारिलक्षणं पत्र
खड्गधारिलक्षणं पत्र
अंतःपुराध्यक्षलक्षणं पत्र

अंतःपुरचरलक्षणं पत्र
सूदाध्यक्षलक्षणं पत्र
सूदलक्षणं पत्र
धर्माधिकारिणि ल. पत्र
लेखकलक्षणं पत्र
ग्रानलक्षणं पत्र
दौवारिकलक्षणं पत्र
मनीहावलक्षणं पत्र
शस्त्रशालाध्यक्षल. पत्र
शस्त्राध्यक्षलक्षणं पत्र
स्थपतिलक्षणं पत्र
सारथिलक्षणं पत्र

दूतलक्षणं पत्र
चारलक्षणं पत्र
नियोज्यसामान्यल. प.
राजसेवकलक्षणं पत्र
संधिविग्रहितलक्ष. पत्र
गुहकनपुरुषल. पत्र
सेनापलक्षणं पत्र
शूरलक्षणं पत्र
सामान्यनिवासस्थान
लक्षणं पत्र
दुर्गलक्षणं पत्र
दुर्गभेदाःलक्षणं पत्र

दुर्गपरिमाणं ल. पत्र
दुर्गाध्यक्षलक्षणं पत्र
ग्रामलक्षणं पत्र
अथ राजगृहविन्या.
सः लक्षणं पत्र
गोलक्षणं पत्र
रवलक्षणं पत्र
छागलक्षणं पत्र
कुक्कुरलक्षणं पत्र
कुक्कुटीलक्षणं पत्र
कूर्मलक्षणं पत्र
मार्जनीलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुष्पलक्षणं पत्र
उलूखललक्षणं पत्र
मुसललक्षणं पत्र
जलद्रोणीलक्षणं पत्र
दीपलक्षणं पत्र
शय्यासनलक्षणं पत्र
भद्रपीठलक्षणं पत्र
चामरलक्षणं पत्र
छत्रलक्षणं पत्र
पट्टलक्षणं पत्र
रत्नलक्षणं पत्र
कस्तूरीलक्षणं पत्र

अनिराजकलक्षणम
करणसमासं
अथनानायुधलक्षणं
अथमनखड्गलक्ष· पत्र
गुणलक्षणं पत्र
शरलक्षणं पत्र
नाराचनालिलक्षणं पत्र
फललक्षणं पत्र
धनुर्वेदः पत्र
गुणमुष्टयः पत्र
धनुर्मुष्टीसंधाने पत्र
आयापाः पत्र

लक्ष्यं पत्र
श्रमक्रिया पत्र
लक्ष्यास्खलनविधिः प·
शीघ्रसंधाने पत्र
दूरपातित्वं पत्र
दृढप्रहारि पत्र
हीनगतयः पत्र
बाणानांलक्ष्यस्खल
नगतयः पत्र
मृदुगतयः पत्र
दृढचनके पत्र
चित्रविधिः पत्र

वराटिकावर्त्तः पत्र
काष्ठभेदः पत्र
विडके पत्र
गोलकयुगमभ्रंतिवि
धि पत्र
शब्दवेधित्वं पत्र
धनुःप्रशंसा पत्र
खड्गप्रशंसा पत्र
खड्गलोहोत्पत्ति पत्र
खड्गलोहलक्षणं पत्र
खड्गलक्षणं पत्र
चक्रलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सूची· प· ५
५

पक्ष्मलक्षणं पत्र
लोमलक्षणं पत्र
केणयलक्षणं पत्र
शक्तिलक्षणं पत्र
वोन्थलक्षणं पत्र
गदालक्षणं पत्र
कुंतलक्षणं पत्र
पताकालक्षणं पत्र
डुंडुभिलक्षणं पत्र
गजलक्षणांश· पत्र
गजोत्पत्तिः पत्र
गजजातिनिर्देशः पत्र

भद्रादिगजलक्ष· पत्र
मंदगजलक्षणं पत्र
अंगलक्षणं पत्र
मृगगजलक्षणं पत्र
अंगललक्षणं पत्र
मिश्रगजलक्षणं पत्र
वनविशेषेणगजवि
शेषलक्षणं पत्र
गिरिनद्युभयल· पत्र
गजापुलक्षणं पत्र
दोषनाशकलक्ष· पत्र
गजमानलक्षणं पत्र

हेत्रलक्षणं पत्र
छायालक्षणं पत्र
वर्णलक्षणं पत्र
गंधलक्षणं पत्र
निस्वासलक्षणं पत्र
आकोकितल· पत्र
गतिलक्षणं पत्र
वेगलक्षणं पत्र
शब्दलक्षणं पत्र
आवर्तलक्षणं पत्र
पुष्पलक्षणं पत्र
बलपरीक्षा पत्र

सत्वपरीक्षा पत्र
अनूकलक्षणं पत्र
वेदिनलक्षणं पत्र
क्रोधलक्षणं पत्र
गुणलक्षणं पत्र
स्थितलक्षणं पत्र
प्रशस्तगजल· पत्र
अशुभदुष्टगजल· पत्र
प्रशस्तगजलक्षणं पत्र
अशुभदुष्टगजलक्ष· प·
समरकालेगजारोहण
योग्यगजलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समरकालजयादिस्
चक्रशुभाशुभल॰ प॰
कैरिणीलक्षण पत्र
गजरक्षाधिकारील॰ प
गजवैद्यलक्षणं पत्र
गजामात्यलक्षणं पत्र
गजाध्यक्षलक्षणं पत्र
गजारोहलक्षणं पत्र
आथाश्वलक्षणं पत्र
अश्वानांनरवाहनस्य
संभवः पत्र
अश्वजातिविभागः प॰

अश्वोत्पत्तिदेशाः पत्र
अश्वकुलविभागः पत्र
अंगप्रदेशनिर्देशः पत्र
आयुःप्रमाणं पत्र
आयुःपरीक्षमाणं पत्र
वर्णलक्षणं पत्र
गतिलक्षणं पत्र
वाहनविधिपत्र
स्वरलक्षणं पत्र
छायालक्षणं पत्र
गंधलक्षणं पत्र
सत्वलक्षणं पत्र

नुकललक्षणं पत्र
सारलक्षणं पत्र
प्रकृतिलक्षणं पत्र
अंगमानलक्षणं पत्र
प्रत्यवयवलक्षण पत्र
शुभ्यलक्षणं पत्र
पुच्छलक्षणं पत्र
ललामलक्षणं पत्र
आवर्तलक्षणं पत्र
महादोषलक्षण पत्र
राजयोग्याश्वल॰ पत्र
रणसमयेशुभाशुभ प॰

दशालक्षणं पत्र
दंतैर्वयोज्ञानं पत्र
दंतसंख्या पत्र
शालालक्षणं पत्र
अश्वाध्यक्षलक्ष॰ पत्र
शालग्रामशिमूर्तिप्रक
णं पत्र
शालिग्रामशिलामा
हात्म्यं पत्र
शालिग्रामचक्रमाहात्म्य प॰
शालिग्रामशिलामूर्तिसा
न्यलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सू: प. ५

शालग्रामचक्रलक्षणं पत्र
शालग्राममुद्रालक्षणं प.
देत्रलक्षणं पत्र
वक्रलक्षणं पत्र
शालग्राममूर्तिविवेक. प
कूर्ममूर्तितलक्षणं पत्र
वराहमूर्तिलक्षणं पत्र
नृसिंहमूर्तिलक्षणं पत्र
कपिलनृसिंहमूर्तिल. प
योगनृसिंहलक्षणं पत्र
विदारणनरहलक्ष. पत्र
सर्वतोमुखनृसिंहल. प.
पातालनृसिंहलक्ष. प.
आकाशनृसिंहलक्ष. प.
जिह्वानृसिंहलक्ष. पत्र
अधोमनृसिंहलक्ष. प.
ज्वालानृसिंहलक्ष. पत्र
वामनमूर्तिलक्षणं पत्र
परशुराममूर्तिलक्षणं पत्र
राममूर्तिलक्षणं पत्र
दशकंठकुलान्तकरा
मलक्षणं पत्र
वीररामलक्षणं पत्र
बलरामलक्षणं पत्र
विजयरामलक्षणं पत्र
कोदंडरामलक्षणं पत्र
कविनप्रदरामल. पत्र
कृष्णमूर्तिलक्षणं पत्र
कृष्णभेदाः पत्र
मदनगोपाललक्ष. प.
संतानगोपाललक्ष. प.
बालकृष्णलक्षणं पत्र
गोवर्द्धनगोपाललक्ष. प.
कालीयमर्दनलक्ष. प.
स्यमंतहारीलक्ष. पत्र
चाणूरमर्दनलक्ष. पत्र
कंसमर्दनलक्षणं पत्र
बौद्धमूर्तिलक्षणं पत्र
कल्किमूर्तिलक्षणं पत्र
चतुर्विंशतिमूर्तिल. प.
नारायमूर्तिलक्षणं प.
लक्ष्मीनारायणमूर्तिल. प.
नरनारायणलक्षणं प.
.... नारायणलक्ष. पत्र
माधवलक्षणं पत्र
गोविंदलक्षणं पत्र
विष्णुलक्षणं पत्र
मधुसूदनलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिविक्रमलक्षणं पत्र
श्रीधरलक्षणं पत्र
श्रीधरभेदाः पत्र
हृषीकेशलक्षणं पत्र
पद्मनाभलक्षणं पत्र
दामोदरलक्षणं पत्र
वासुदेवलक्षणं पत्र
संकर्षणलक्षणं पत्र
प्रद्युम्नलक्षणं पत्र
अनिरुद्धलक्षणं पत्र
पुरुषोत्तमलक्षणं पत्र
अधोक्षजलक्षणं पत्र

अच्युतलक्षणं पत्र
उपेंद्रलक्षणं पत्र
जनार्दनलक्षणं पत्र
हरिलक्षणं पत्र
अनंतमूर्तिलक्षणं पत्र
दै···मूर्तिलक्षणं पत्र
हयग्रीवलक्षणं पत्र
परमेष्ठीलक्षणं पत्र
हिरण्यगर्भलक्षणं प
चतुर्भुजलक्षणं पत्र
गदाधरलक्षणं पत्र
पुंडरीकाक्षलक्षणं प

सुदर्शनलक्षणं पत्र
योगेश्वरलक्षणं पत्र
विश्वपंजरलक्षणं पत्र
यज्ञमूर्तिलक्षणं पत्र
दत्तात्रेयलक्षणं पत्र
शिंशुमारलक्षणं पत्र
परमहंसमूर्तिलक्षणं प
लक्ष्मीपतिमूर्तिलक्ष॰ प॰
गरुडध्वजलक्ष्मीपतिमू-
र्तिलक्षणं पत्र
वटपत्रशायीलक्षणं प॰
विभ्रमलक्षणं पत्र

पीतांबरलक्षणं पत्र
सनत्स्ववसालक्षणं पत्र
श्रमनहरणलक्षणं पत्र
चक्रपाणिलक्षणं पत्र
बहुरूपीलक्षणं पत्र
पारिजातलक्षणं पत्र
गजेयोनिलक्षणं पत्र
त्रिमूर्तिलक्षणं पत्र
हरिहरलक्षणं पत्र
शंकरनारायणलक्ष॰ प
स्वयंभूलक्षणं पत्र
पितामहलक्षणं पत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सूची-
६

नरमूर्तिलक्षणं पत्र
शेषमूर्तिलक्षणं पत्र
सूर्यमूर्तिलक्षणं पत्र
हैहरमूर्तिलक्षणं पत्र
गरुडमूलक्ष पत्र
विषेनानरमर्कं पत्र
शिवनाभिमाहात्म्यं प-
द्वारवतीजामाहात्म्ये प-
द्वारकाशिलालक्षणं प-

गुरुशिष्य
योगपट्ट
कौपीनकटिसूत्रल-
यज्ञोपवीतं-
उत्तरीय
रुद्राक्षमहिमालक्षणं
सिंहासनलक्ष
कुंभलक्षणं
अर्घ्यपात्र
पाद्यपात्र
आचमनपात्र

अभिषेकपात्र
त्रिपादी
शंख
गंधपात्र
धूपपात्र
दीपपात्र
दीपमाला
दीपाधार
दीपिका
नीराजन
घंटाल-
भेरील-
नैवेद्यपात्रलक्षणम्

पानीयपात्र
तांबूलपात्र
मुकुट
सुवर्णभूषणल
नानाभरणल-
कंकतल-
अंजनपात्रशलाकयोर्ल-
दर्पण
व्यजनल
पादुकाल
वितानल

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लह.
१

ॐ श्रीगणेशाय नमः कोपारोपनटत्सटीङ्कटमटद्भ्रूभीषणाभ्रूकुटिभ्राम्यद्भैरवहष्टिनिर्भरनमद्दर्वीकरोर्वीधरे
गीर्वाणारिवपुर्विपाटविकटाभोगत्रुटद्धाटकब्रह्मांडैककटाहकोटिनटद्दोर्ख्यातदूर्वंवपुः १ सटाग्रव्यग्रेङ्गत्स्ववदम
नविङ्भ्रतिवलन्महादैत्यारंभस्फुरिन्नुरुसंरंभरभसः लिहन्नाघ्राणचक्रं ज्वलनवहपिरवोपद्रुसनयानसिंहीरंह्नोभि-
र्दमयतमदंहोमदकलं २ संसारध्वंसिकंसप्रमथनवसरविपुभ्रांभ्रवंशनावनं सभ्रेशीयशेवः प्रत्ररयन्नविरंतासनाथावि
रंसी यच्चूडारूढशृङ्गस्मितमधुरमुखांभोजशोभोदितहल्लेखाभिः सानुरागातिकनिकटनटद्वेद्कव्यक्तचद्रः ३ ली
लाभ्रांतिविसर्पदंवरतयाव्यग्राइकांतपद्म्यासन्नंचडुदंचदद्विवसुधाभोगीद्रकूर्माधिपं फूत्कारस्फुरदुत्पतत्फणि
न्कालेरिंगज्जटाजाउनयातव्योमगाभीरडुडुभिनटन्नव्यात्सवो धूर्जटिः ४ कुंभाहनतमयुखनावलिवलन्फेंकार
कोलाहलैः शुंडास्फालनविह्वलैः स्तनद्वव्यालैर्विपन्नाविभिः मज्जत्कुंभमहावगाहनहुताविभोमहाभोनिधौ दैवं
वः कुरुताक्रुतावरकरालं वक्त्रिरंवः ५ समंतन्मपतीसममसमपमेवत्रिभुवनं त्रिभिन्नैत्रैर्दोर्भिर्दशाभिरपिपांतो
दशादिशः दयानायां शेषोपरिचरणामेकं परपदाहतारिर्वोहन्यात्महिषमथनीमोहमहिषं ६ वामाम्भिदन्त्ववामा
न्भुवमनुसवयन्नश्रयन्नर्थिकामान् श्रीमान्भीमान्नुकारी बहलुवलभरैर्मेदिनीमल्लनामा आसीदाशीविषेंद्र
द्युतिधवलयशाभूपचक्रावतंसः श्रीकाशीराजवंशे विधुरिवजलधौ सर्वभूसार्वभौमः ७ संग्रामयामकामोनिरु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पममहिमासव विश्रामधामक्रामन्नेवारिचक्रे मिहिरद्युवनमो विक्रमोरुक्रमेण सौरैर्मेरोरुदारैरपरद्युवगिरिर्मेदिनी
मल्लेनेन प्रख्यातः क्षोणिचक्रे समजनि नृपतिर्मेदिनीमल्लनामा ८ निर्ष्पिष्टमिल्लजयपृष्टिर्विपुमिवजगतीमर्जुनाभैर्यशो
भिः संपूर्याचार्यवीर्यो विशिष्टवितरणैरर्जुनोऽर्जुनानो साम्राज्योपार्जनश्रीरगणितगुणभूरर्जुनप्रांशुबाहुर्जनान्मा
भूदर्जुनोस्मान्नरपतिरतुलो मेदिनीमल्लभूपात् ९ बुद्धिः शुद्धिमतीक्षमानिरुपमा विद्यानवद्या मनोगांभीर्यैक
निकेतनं वितरणं दीनार्त्तिनिर्दारणं आसीदर्जुनभूपतेर्विदयतो विद्रावणं विद्विषां भूमीनामवने च कारणगुणा
कार्यं यशोऽप्यर्जुनं तस्मादाविरभून्नभूतमहिमा भूमीपतेरर्जुनात्सौजन्यैकनिधिर्गुणैरनवधिर्लावण्यवारांनिधिः
भिंदन्नुद्धतमर्जयन्नवद्ययशाः प्रौढप्रतापोदयैर्दृष्टो मल्लखाननामनिखिलक्ष्मामंडलाखंडलः ११ यस्मिन्नृशा-
सति नीतिभिः क्षितिमिमां निर्वैरमासीज्जगत्यारीढेणसमं करीन्द्ररभसारंभोपि संभावितः श्येनः क्रीडति कोकिलकी
सविहगैश्चिक्रीडनकैर्मूषः किंवान्यद्दहने भवत्सदृग्गैः शार्दूलविक्रीडितं १२ हिमविशदयशोभिः शोभिताशो
मतिमनिरोहितवारिधिजभावः समजनि मल्लखानात्नः प्रतापैस्त्रिजगति रुद्रद्युव प्रतापरुद्रः १३ अविथनम
स्थितिनि सहस्रायशासासममानने गुणोज्जगतः पुत्रे भूरभिदधे चेतो हृद्दे प्रतापरुद्रेण १४ जातः प्रतापरुद्रात्ससु
द्रंपालयन्नवनीं कृतविप्रकाननदाहो मधुकरसाहीमहीपतिः श्रभ्रमे १५ एष्णुः पुराणभोगैर्विहितयोगैरनुदय।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नवलायोगैर्योगैश्च कृतसत्कृतियोगैरपि शठः भुजस्तंभालंबालसशायितविश्वंभरतया वभौ प्रोच्चैरुत्साहः समधुकर
साहःक्षितिपतिः १६ प्रज्ञागणगुणजापहृद्युतिमहोदयाविष्कृतः स्वर्धाम्नुरिवमांसलोरसभरैः सभारंजनः प्रदीप
कुमुदावलिर्द्विजपतिस्सुनहृत्त्रपोनरूपोजयतिसत्कृपोमधुकरच्छ्रुतारित्रपः १७ विनयस्य वीरसिंहे भूपतिसिंहे म-
लह· हीभारं ज्ञानानलमलदाहो मधुकरसाहो दिवं भेजो १८ श्रीतर्गंभीरतोभृत्कृतसलिलनिधिर्लीलिताशेषबंधुवृं-
२ 2 देलानंदसिंधुः सललितललनालोचनेंदीवरेंदुः भ्रूभंगीलेशभंगीकृतरिपुनिवहोनन्यसंगीतरंगीसन्माते-
गीतरंगीधरणिपतिरभूद्वीरसिंहो नृसिंहः १९ अमुष्यप्रस्थाने सततिसपदिनानेभनिवहैरिहैकोपि द्वेषीनखल
रणरोषी समजनि परं तस्यौडः स्थोगहनकुहरस्थोपि भयतः द्विपव्रुद्धैर्दिक्षुभ्रमितचकितं चक्षुरभितः २०
दानं कल्पमहीरुहोपरि यशः क्षीरोदनीरोपरि प्रज्ञावाक्पतेरोहितोपरि महासारोपि मेरूपरि दावाग्नेरूपरिप्र
तापगरिमाकामोपरिश्रीरभूत्सिंहात्रिक्रमवीरसिंहनृपतेः किंकिंनकस्योपरि २१ दानैरर्थिनमर्थनाविरहि
णं भनसर्थिनं चक्षणात्कुर्वाणो सतिवीरसिंहनिखिलक्ष्मामंडलाखंडले कामं चेतसि कामयेन्नरतनोत्कल्पद्रु
मः कल्पितं मोथीभूतजनैः समाश्रितखनिस्त्रिंतां च चिंतामणिः २२ आमं आममसंभ्रमं त्रिजगती चक्राणि
चक्रेचिराज्ञारंशीलितविस्फुपादपदवीब्रह्मांडभांडोपरि ब्रह्मांडं निजमंडमंडलमिवाकांयैवमेवाधुनाविस्फेण

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मयि यस्य भास्वरयशो हंसीवतंसीयति २३ जलकणिकामिव जलधिं कणिकामिव कनकाचलं मनुते नृपसिंहवी
रसिंहो वितरणरंहो यदाननुते २४ यदा भवति कौंडलीकृतमहाधनुर्मंडलस्तदा नयनतोऽवद्रुदितखांडवः पांडवः
मनो वितरणोन्मुखं वहति वीरसिंहो यदा तदा पुनरुदारधीरयमवर्णि कर्णो जनैः २५ शौर्यौदार्यगभीरता धृतिद
यादानादिनानागुणानुर्वीं दुर्वहभारखन्नदिपतिस्फूर्जीलदोः शालिनि संयोज्यैव जुझारसिंहपरसिंहपराणी पौरे
यच्चूडामणौ मज्जन् ब्रह्मणि वीरसिंहसुकृती नस्थो स्वयं निर्गुणः २६ नयः स्वाङ्गजलाङ्कुमाञ्चस्वफला भूरुर्वरा भू
स्तराव दधानविधूयमानदुरिता लोका विशोका बभुः राजन्वीतितिनिरीतिनिरीतिपितरी वीर्वीमिमां शासति श्रीम-
हीरजुझारसिंहनृपतौ भ्रूभंगभग्नद्विषि २७ संग्रामोत्कटतांबवोद्भटमवैरारवद्वेलाहदेश्वरांडंबरमूर्तिनो वरन-
दद्गीरा चिगोप्रावटैः भूभृत्सिंहजुझारसिंहपराणी जानैः प्रयाणोरणशौर्यौदार्यधनोपि कोनुधरणीचक्रेन च
क्रे भयं २८ नावहीरगभीरकृत्तिस्वलावज्ञजाडंवरस्तावत्तेगतेरगविराणचमत्कारस्फुरन्नामपितावज्ञोप-
महामहीभृदटवीदुर्गग्रहो विद्विषां याचन्नैव जुझारसिंहनृपतिर्दुर्ह्लाघवृद्धोत्सवः २९ अयं यदि महामनावि
तरणाशु धन्ते धियं भियं कनकभूधरो च तिक्रियं च कर्णोटति दधीचिरपचीयते वलिरलीकतूपायनेन दाति म
लिनायते स किल कल्पभूमीरुहः ३० ग्रामादागतनागनागमणिभूदानादिनानानपः प्रागल्भ्येन महेन्द्रचं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लल·
३
3

दुर्वहरणव्रलेशाविस्मृस्थली प्राचंप्रेनजितामितावसुमतीकोदंडदोर्दंडयोर्ज्जागर्त्तिनिज्ञभ्भारसिंहनृपतेः कुत्रश
तापोनवा २१ ब्रह्माभूच्चतुराननः स्मरहरः पंचाननः षण्मुखः स्कंदोभूपजभ्भारसिंहयशसोगानोत्सवेत्फन्स्व
कः तस्याभोगमुदीक्ष्य भूधरनभोनद्यस्त्रिलोकीदिशः सप्तद्वीपमयीमहीचविधिनाविज्ञेननिर्वीरिताः २२ तुंग
त्वादनवाप्यदेवृतनरोः पुष्पाणिसर्वाः समंश्रीमहीरज्जभ्भारसिंहनृपतेदीनेसमानंजगु श्रीजडवेहभारनिर्भरत
मज्जीवेतदेवदुमेस्माजंनेसुलभायमानकुसुनास्तंभूरिदेवस्त्रिय २३ भीमोयः सहदेवश्चश्चतनाडुर्हर्षपार्थोलस
न्श्रीभूमीनकुलः सदार्जुन महाख्यातिः क्षमामंडले कर्णश्रीः कृतवर्मभीष्मचरणाशोटीर्यदुर्योधनोरोषादेव
युधिष्ठिरोयदिभवेत्कः स्यात्समुच्छायतः २४ सत्कीर्तिश्चामदामाभरणभृतजगद्विक्रमादित्यनामाधाम्नोभूस्त्रा
महिम्नाविविध्विटितविपुणविक्रमोपक्रमेण सप्रांशुः पीवरांसः पृथुभुजपरियस्तस्यवंशावतंसोविश्वादंचत्स्यश
सोगुणगणहृदयानंदनोनंदनोभूत् २५ आषाढपूर्तिम्रकुर्वन्करविनरणतः पद्मिनीप्राणवंधुःप्रोद्यद्दिव्या·
वस्त्रीःस्फुटमहिमहरविः सर्वदाध्वस्तदोषः जंभारातेर्दिशोच्चैरवलसमुदयान्प्रभातप्रकाशीपुत्रोराज्ञःपवि
त्रोरचयतिसुदिनेविक्रमादित्यएव २६ सार्थीकुर्वन्निरर्थीकृतसुरविटपीचार्थिसार्थंनिजार्थैर्व्यर्थीभूतारिपृथ्वीप
तिरमरगुरुस्पर्द्धिसत्त्वबुद्धिः मानैर्यानादिदानैर्वेकुविषयगणाभिर्गीयतेयः सभायांभ्रातर्जातः सकविकलमुद

३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विक्रमादित्यएवा ३७ दानेंदीनमनोरथावधिरणारंभोरिनाशावधिः क्रोधोवागवधिप्रतापयशसोः पंथादिगंतावधि
दातृत्वं हितिरत्नराणावधिर्हरौभक्तिस्त्रजीवावधिर्यालमावधिकीर्विक्रमरवेः श्रेयः परंवर्द्धते ३८ हेमाद्रेःश्रियमस्य
थैवक्रुनेचक्रेचगेरांनतुंकैलासोपरिशोभतेपदयतिसाष्टेचदिङ्मंडलो भोगींद्रेनदधेभ्रजेविनजटाशृंगोचगं
गांव्यथालोकानामयमीश्वरोस्यपशासस्यैश्वर्यमुज्जृंभते ३९ श्रीगोपाचलमौलिमंडलमणिः श्रीहरवाशान्वये
श्रीहंसोदयहंसपंडितउतिख्यातोहिजाधीश्वरः यंलक्ष्मीश्चसरस्वतीचविगतद्वेद्वंचिरंभेजतुर्भोकारंरभसात्स
मानमुभयोः सान्त्वावमामासुगोः ४० पटुदिलविदित्वकुर्वतीनांनटलीलांस्फुटकीर्तिनर्तकीनां स्फुरदधर
भूमयोरणविजृंभणीयनीस्वविवनीपकश्रीरवनीरमारमणामिश्रगणिपरस्पुरामामिश्राजनि ४२ येनागमस्पुराणु
राणिनगरेविद्यानवर्याज्जितश्रीचंडीश्वरमग्रिहोत्रितिकेलत्वागरीयोगुरुं सुहासैवमहोग्रमेनवकुथाभांतीभवंती
स्थिरानहंसपपुकिपन्नकल्पलतिकेवायापिसूतेफले ४३ भास्सारविंदमत्रपास्यगुरोरपास्यलासंवतत्र्मरवमु
विपुसरस्वतीहासालंहतिश्चसरसाचगुणाविनाचपस्याननोतिरसनोपरितांडवानि ४४ अंकेलोमलतेवसी
मनिहषोरेकेवरेखांजनीकस्तूरीमकरीवभालफलकेधारेवमनुष्ठीलकी अर्द्धेभंगपरंपरेवकवरीसोरभ्यलोः
भाकुलायस्येवाधरधूमयोरणिरभूदाशाकुरंगीदृशः ४५ सभास्वरयशोनिधेः सुनिरवद्यविद्यानिधेःसवाक

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवितानिधेः स्मृतिनिधेः श्रुतिश्रीनिधेः अयं सत्कृतगौरवात्परशुराममिश्रात्सुगौरसूनगरिमापितृजगति मित्रमि-
श्रोऽजनि ४८ धर्मार्थैकनिकेतनं विधिमयं कर्मावनीदर्शनं स्तम्भे भोजमहोदयं श्रुतिमयं श्रीवीरमित्रोदयं द्राक्प्रसि-
द्धीकृतस्वहस्तसिद्धिशतया श्रीवीरसिंहाज्ञया तेने विश्वमदे पुरे पुरभिदः श्रीमित्रमिश्रः कृती ४९ क्षितितिलकवीर-
सिंहप्रणयकृताग्रहधीरमित्रमिश्रः गुणिगणहृदयानुरागहेतुं कलयति ललितलक्षणप्रकाशं लक्षणस्य-
लक्ष· ४ प्रकाशेऽस्मिन् परीक्षा चाष्टधः उन्मानलक्षणं चाथो मानलक्षणमेव च १ गतिसंहतिसाराणां लक्षणानि ततः प-
5 रं वर्णस्नेहस्वराणां च ततः प्रकृतिसत्त्वयोः अनूकक्षेत्रयोश्चैवमृजाणां धासंज्ञां तथा पादपादतलांगुष्ठांगुलीनां
लक्षणं ततः नखस्य पादपृष्ठस्य गुल्फस्याप्यथ लक्षणं पार्ष्णिलक्षणमुक्त्वान्ते जंघालक्षणजल्पनं अथोक्तं रोम-
जानूरुकटिस्फिग्गुदलक्षणं लक्षणं वृषणस्याथ प्रोक्तं लिंगस्य लक्षणं लिंगाग्रलक्षणं चाथो वर्णितं मूत्रलक्षणं
शुक्रस्य लक्षणं चाथ प्रोक्तं पुंस्त्वपरीक्षणं वस्तिलक्षणमुक्त्वा च कथितं नाभिलक्षणं कुक्षिलक्षणमाख्यातं ततः
पार्श्वस्य लक्षणं लक्षणं जठरस्याथ प्रोक्तं मध्यस्य लक्षणं त्रिवलीलक्षणं चाथ प्रोक्तं हृदयलक्षणं वक्षसः प्रो-
क्तं स्तनयोर्लक्षणं पुनः लक्षणं चूचुकस्याथ कथितं जत्रुलक्षणं स्कन्धलक्षणमाख्यातं कक्षावक्षोस्थलक्षणं
मणिबन्धस्य करयोः करपृष्ठस्य लक्षणं करस्य च तले रेखाङ्गुष्ठाङ्गुलीनखास्तथा पृष्ठं च लक्षितं पश्चाल्लक्षिता

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यक्षकादिका ग्रीवाचिबुकयोरुक्तं लक्षणं स्तनकूर्चयोः कपोलमुखयोरुक्तं लक्षणं चाधरोष्ठयोः श्मश्रुणो दशना
नां च रसनायाश्च लक्षणं घंटिकालक्षणं चाथो तालुलक्षणो वच १५ हासनासादृक्तानां च नेत्रदृष्ट्योश्च लक्षणं
पक्ष्मणोश्च निमेषस्य रुदितस्य भ्रुवस्तथा कर्णस्य च ललाटस्य शिरसश्चिकुरस्य च लक्षणं मशकादेश्च पुंसामत्र
निरूपितं १७ अथ स्त्रीणां स्वभावस्य मिश्रकस्य च लक्षणं आवर्तलक्षणं गंधच्छाययोर्लक्षणं ततः १८ सत्वस्व
रगतीनां च लक्षणानि ततः परं ततः पुंसः स्त्रियाश्चैव कामशास्त्रोक्तलक्षणं १९ पद्मिन्यादिप्रभेदाश्च स्त्रीणामथ नि
रूपिताः राज्ञः पट्टमहिष्याश्च सम्यग्गुणोथ पुरोधसः २० ज्योतिर्विदश्च वैद्यस्य सहायानां ततः परं मित्रस्य शत्रोः स
भ्यानां लक्षणं च क्रमोदितं २१ परिच्छदः पार्श्ववर्ती तिलकस्तदनंतरं तांबूलधारी कोषस्याध्यक्षः खड्गधरस्ततः २२
ततश्छत्रः पुराध्यक्षस्ततः पुरगतश्चरः लेखाध्यक्षश्च सूदश्च क्रमेणेते च लक्षिताः २३ धर्माध्यक्षो लेखकश्च लो
काह्वानकरस्तथा दौवारिकः प्रतीहारः शालीगृहस्य रक्षकः २४ शालाध्यक्षः स्थपतिश्च सारथिर्हस्तिपश्च वा
तोनिपाज्यस्तदनुसेवकोध्यक्षश्च लक्षितः २५ संधिविग्रहिको युद्धकर्ता सेनापतिस्तथा व्यूहं वासस्थलं दुर्गं तदध्यक्ष
श्च लक्षितः २६ ग्रामस्य राजगेहस्य गवां च वृषभस्य च छागकुक्कुटयोश्चैव लक्षणं समुदाहृतं २७ कुक्कुरस्य च कू
र्मस्य मार्जनीशूर्पयोस्तथा उलूखलस्य मुशलस्याथ लक्षणमीरितं २८ जलद्रोणी जलाधारशय्यासननिरूप

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णं गामरक्षत्रपदानां रक्षणानां लक्षणं ततः २९ कस्तूरिकालक्षणं ततः पश्चादायुधलक्षणं तत्र चापि धनुर्बाणफला
नां लक्षणं परः ३० फलस्य पायने स्थानगुणमुष्टिरथोदिता चापमुष्टिव्यथिलत्वे परतस्त्रमक्रिया ३१ वि
धिश्चलक्ष्यस्य वल्लने शीघ्रसंधानलक्षणं अयोकंटकरूपाणि संकटभेदित्वमेव च ३२ शराणां गतयः प्रोक्तास्त
ल॰ह॰ था दृढवेधनं पुनः अथ चित्रविधीनुक्त्वा यावल्लक्ष्यमुदीरितं ३३ शब्दवेधित्वमुक्त्वा च प्रशंसा धन्विनां ततः निरूप
५ णं च खड्गस्य विस्तरेण ततः ३४ चक्रस्य परशोश्चैव तोमरस्य च लक्षणं करणीयस्य च शक्तेश्चैवोत्थकस्य च लक्षणं ३५
5 गदांकुशपताकानां भेर्यादीनां च लक्षणं सविशेषस्ततः प्रोक्तो गजलक्षणविस्तरः ३६ गजायुर्लक्षणं दंतिदो
षनाशकलक्षणं गजस्य मानेहेतोर्गणिकाः पावकाश्च लक्षिताः ३७ गंधनिश्वासमरुद्धीनां नदीपानां च लक्षणं ग
धरहनि वेगानां हंतिनां वर्तयोस्तथा ३८ पुष्पस्य च बलस्यायस्तनानूकहृदयस्य च चेदितक्रोधयोस्तद्वद्गुणास्त्विहस्तो
स्तदीयपो ३९ प्रशस्तदुष्टगजयोरथ लक्षणमीरितं समराथ्यरूपारोहद्योग्योद्दलीनिरूपिताः ४० युद्धकाले
जयादीनां तत्र कंदंति चेष्टितं करिणा लक्षणं प्रोच्य गजरक्षाधिकारिणः ४१ गजवैद्य गजामात्यो गजाध्यक्षो
निरूपिताः अतेचेहमहामात्रलक्षणं परिकीर्तितं ४२ अथाश्वलक्षणा तस्योत्पत्तिर्देशाश्च कीर्तिताः ततोश्व
कुलभेदास्तत तस्यांगसंस्थितिः ४३ आयुर्वर्णाश्च गतयस्तदीयाः परिकीर्तिताः तुरंगवाहने प्रोक्तः प्रका॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दलक्षणं ४४ स्वरछायांगगंधानां सत्वानूकद्दयस्यैव सारप्रकृत्योरश्वांगमानस्यावयवस्य वा ४५ पुष्पपुंड्रलला
टानामावर्तस्य च लक्षणं माहादोषास्तुरंगमस्य लक्षितास्तदनंतरं ४६ राजयोग्यस्य चाश्वस्य परतो लक्षणं स्मृतं
संग्रामावसरे श्वस्य शकुनानां निरूपणं ४७ दशालक्षणमुक्ता च वयसो ज्ञापकं स्मृतं दंतसंख्या वाजिशा
लानदध्यक्षाश्च लक्षिताः ४८ शालग्रामशिलाचक्रमूर्तीनां लक्षणान्यथ अथ द्वारवतीजातशिलामूर्तिनि
रूपणं ४९ विस्तराच्छिवलिंगानां लक्षणानि ततः परं शिवलिंगार्चनफलं विशेषेण निरूपितं ५० शिवलि
गस्य नैवेद्ये भक्ष्याभक्ष्यविवेचनं अथ प्रकीर्णके प्रोक्तं लक्षणं गुरुशिष्ययोः ५१ लक्षणं योगपट्टस्य कौपीनकटि
सूत्रयोः उपवीतोत्तरीये च लक्षिते तदनंतरं ५२ रुद्राक्षलक्षणं प्रोक्तं तन्माहात्म्यसमन्वितं आसनादिवितानां
तश्चोपकरणान्यथ ५३ एवंक्रमेणाड्डले सलक्षणानां विचक्षणैः मिश्रमिश्रः प्रकाशोस्मिन् कृतः सम्यक्प
रीक्षणं ५४ ननु किमर्थं लक्षणप्रकाशारंभः लक्षणानामनुपयोगादिति उच्यते अस्ति हि महानुपयोगः तथा हि
अथ विवाहः सलक्षणो वरो लक्षणवतीं कन्यामुपयच्छेदिति अविप्लुतब्रह्मचर्यो लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत् एतैरे
व गुणैर्युक्तः सवर्णः श्रोत्रियो वरः इत्यादिवचनैः स्त्रीपुंसमासाद्विकलक्षणानां विवाहोपयोगात् लोके नैर्विविधा
कारैर्लौकिकैर्नपयवहरणपते चक्रांकितं हरेर्य्यापि शालग्रामस्य लक्षणं यथायोग्यं विचार्यैव गृहीतव्यं प्रयत्नतः अस्या

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.स. ६

दिवचनैः शालग्राममूर्त्तिलक्षणानां तत्पूजादावुपयोगात् लिंगं सलक्षणं पूज्यं तत्पूजे लिंगमलक्षणं तस्मात्स-
र्वप्रयत्नेन लिंगं कुर्यात्सलक्षणमित्यादिवचनैः लिंगलक्षणानां तत्पूजादावुपयोगात् आराधनोपकरणं तस्य ल-
क्षणमेव च उच्यते संशतिर्ब्रह्मन् श्रूयतां तदशेषतः वस्तूपक्रम्य सर्वपूजोपयुक्तं घंटाभिषेकादिपात्रलक्षणमभि-
धाय च तत्कृते हेमदंडं शंखं पूजार्थं परिकल्पयेदित्युपसंहारवचनेन घंटाधूपदीपाभिषेकादिपूजोपकरणपात्रल-
क्षणानां देवपूजोपयोगात् सूत्रं वंशैश्च पुष्पैश्च भूषितं दोषवर्जितं यथालाभोपपन्नं वा यः प्रयच्छति दंतिनं
यो जगत्त्रितये यद्दानं प्रयच्छति महामतिः भद्रजातिसमुद्भूतं पद्मनाभाय भक्तितः गजं तल्लक्षणोपेतं दद्याद्धि
प्राप्य भक्तित इति अश्वं यस्तु प्रयच्छेद्वै हेमचित्रं सुलक्षणं स तेन कर्मणा चैव गान्धर्वं लोकमश्नुते सर्वोपकर-
णोपेतं सुवाहं दोषवर्जितं यो रथं ददाति विप्राय स्वर्गलोके महीयते इत्यादिवचनैः गजाश्वादिलक्षणानां तद्दा-
नेपयोगात् सर्वलक्षणसंपूर्णो यो भवेद्गजउत्तमः संग्रामादिषु कार्येषु पार्थिवस्तं समारुहेत् सर्वलक्षणसं-
पूर्णमारुहेद्वाजिनं नृपः इत्यादिवचनैः गजाश्वादिलक्षणानां राजकार्येषूपयोगात् एवमन्येषामपि लक्षणा-
नां यथासंभवमुपयोगात् सर्वलक्षणप्रकाशारंभः इति उपयोगश्च तत्तल्लक्षणप्रस्ताव एव दर्श्यते तत्र च समा-
नगजादिषु शुभाशुभलक्षणफलस्वामिनिमित्तानुबंधप्रायाध्यायस्वरूपलक्षणमेवादावुच्यते तत्र ब्रह्मचापीयायमेष

६

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यथा मातरमाश्रित्य सर्वे जीवंति जंतवः तथा गृहस्थमाश्रित्य जीवंत्याश्रमिणः परे इत्यादिवचनैर्गृहस्थाश्रमप्राधा-
न्योक्तेर्गृहस्थतस्य च गृहिणी गृहमुच्यत इत्यादिवचनोक्तगृहशब्दार्थभूतगृहिणीयोगे सत्येवोपपन्नत्वात् स्त्र्यधीनत्वे
न तत्प्राधान्यावगमात् पुरुषलक्षणप्राथम्ये विनिगमनाविरहाच्च स्त्रीलक्षणमेवादौ कृतं तेनोच्यत इति अत्र ब्रूमः
यद्यपि सर्वेषामाश्रमेषु गृहस्थस्य ब्रह्मचार्याद्युपजीव्यत्वेन गृहस्थाश्रमस्य प्राधान्यं तस्य च स्त्रीमूलत्वेन स्त्रियाः
प्राधान्यं तथापि पुरुषप्राधान्यात् स्त्रियास्तत्पारतंत्र्यमेव तथा हि स्वलक्षणसदाचारा पत्युरायुर्विवर्द्धयेत् तया वर्जि-
येत्सर्वथा भूत्वाऽशुभालक्षणौघया भर्तुरायुर्हरंत्येता आलस्यादपरीक्षिता इत्यादिवचनैः स्त्रीलक्षणशुभाशुभ
फलस्य भर्त्रर्थत्वेन तथा लक्षणानि परीक्ष्यादौ ततः कन्यां समुद्वहेत् अतः स्वलक्षणयोषापरिणयाविचल
रोगिण्यादिवचनोक्तस्वलक्षणान्वितकन्योद्वाहस्य वर्जयेत्सर्वथा भूत्वरित्यादिवचनोक्तदुर्लक्षणान्वितस्त्रीवर्ज-
नस्य च पुरुषाधीनत्वेन तत्प्राधान्यमेव ननु एवं सति शास्त्रन्यायविरोधः स्यात् तथा हि षष्ठे दर्शपूर्णमासादिषु स्त्रीणा-
मधिकारोऽस्ति न वेति संशये स्त्रीणामद्रव्यवत्त्वात् कर्मणां च द्रव्यसाध्यत्वात् न तेषु स्त्रीणामधिकार इति पूर्वपक्षं कृ-
त्वा सिद्धांतितं फलार्थित्वात्स्वामित्वेनाभिसंबंध इति तस्यायं भावः स्त्रीपुंसयोरुभयोरपि फलार्थित्वसाम्यात्
कामश्रुतिवशादस्त्येव स्त्रीणामप्यधिकारः न च द्रव्याभावादनधिकार इति वाच्यं धर्मे चार्थे च कामे च नातिचरित-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

येन्मादिवचनैः पत्यार्जितस्यापि द्रव्यस्योभयसाधारण्यावगमात् तस्मादर्थित्वसाम्याद्द्रव्यवत्त्वसाम्याच्च स्त्रीणामप्य
स्त्येवाधिकार इति तदनेन न्यायेनोभयोः साम्यावगमात् कथमत्र पुरुषः प्राधान्येन व्यपदिश्यते अत्रोच्यते नवय
मनेन स्त्रीणामधिकारं कर्मफलस्वामित्वं वा वारयामः किंतु स्त्रीणामस्वातंत्र्यं ब्रूमः स्वातंत्र्यास्वातंत्र्याभ्यां च प्रधा
ल·त· नाप्रधानत्वव्यपदेशो नांगांगिभावेन दृष्टश्च लोके स्वतंत्रे प्रधानशब्दव्यपदेशः यथा रत्नकारकेषु समान
व्यापारेष्वागतेष्वपि प्रधानभूतः पक्वेन देवदत्तो नागत इति तथा च तस्मिन्नेवाधिकरणे भार्यापुत्रश्च दास
श्च त्रय एवाधनाः स्मृताः इति शंस्मृति विरोधात् स्वातंत्र्यापरतया व्याख्येयेति वदन् पार्थसारथिमिश्रः
स्त्रीणामस्वातंत्र्यं स्पष्टमेवाच ष्टयतु स्त्रीणां प्राधान्ये लिंगमुक्तं गृहिणी गृहमुच्यत इति तदिन्नरापेक्षया स्त्रीणां प्रा
धान्यं गमयति न भर्त्रपेक्षयेति सर्वमनवद्यं तस्मात्स्वातंत्र्यादादावेव प्रवक्ष्यामि पुरुषाणां तु लक्षणमिति वि
ष्णुधर्मोत्तरवचनाच्च पुरुषलक्षणमेवादावुच्यत इति तत्र नावलक्षणपरीक्षाकाल उक्तो भविष्यपुराणे सु
भेऽह्नि शुभे भे देवे शहे सोम्ये शुभे रवौ पूर्वाह्ने मंगलैर्युक्तः परीक्षेत विचक्षण इति जगन्मोहने सामुद्रोपि शोभ
ने हस्तनक्षत्रे शहे सोम्ये शुभे रवौ पूर्वाह्ने चालयेर्युक्तः परीक्षेत विचक्षण इति अत्र दक्षिणभागे पुंसां वामभा
गे स्त्रीणां लक्षणान्यवलोकनीयानि तदुक्तं प्रयोगपारिजाते वामभागे तु नारीणां दक्षिणे पुरुषस्य तु निर्दि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ष्टे लक्षणानि तज्ज्ञैः समुद्रवचनं यथेति लक्षणं शुभाशुभसूचकं चिह्नं स्कंदे काशीखंडे प्याह नारदः वैश्वानरस-
मभ्येहि ममोत्संगे निषीद भोः लक्षणानि परीक्षेऽहं पाणिं दर्शय दक्षिणमिति विवेकविलासेपि अकर्मक
ठिनः पाणिर्दक्षिणो वीक्ष्यते नृणां वामभ्रुवां पुनर्वामो वीक्ष्यते चातिकोमलः इत्यथायुः परीक्षा तत्र य-
द्यपि वक्ष्यमाणावयवादिलक्षणैः किंचिदायुः परिमाणं ज्ञायत एवेति तत्प्रसंगात्तत्रैव सकलायुर्लक्ष-
णकथनं युक्तमित्यादौ न तत्कथनानुपयोगस्तथापि प्रमाणसंहतिच्छायायागानि सर्वांगलक्षणैः दंतकेश
नखप्रमस्फुरणं पवर्णस्वरादिभिः सर्वमायुः परीक्षेत पश्चाल्लक्षणमादिशेत् दीर्घायुषि मर्त्यानां लक्ष-
णैः किं प्रयोजनमिति भविष्यपुराणादिवचनैर्वक्ष्यमाणसर्वेषामप्युलक्षणकथनस्यायुष्मतामेवोपयोगा-
त्तज्ज्ञानस्य चायुर्ज्ञानाधीनत्वात्तदर्थमादौ संक्षेपादायुः परीक्षा प्रस्तूयते प्रमाणादीनां लक्षणमग्रेभिधास्य-
ते तत्रायुर्लेखा करभोत्थिता कनिष्ठांगुलिमूलसमीपस्था ज्ञेया तथा च गरुडपुराणे कनिष्ठिकां समाश्रि-
त्य श्रायुरेखां समादिशेदिति सा च यदि कनिष्ठिकामूलोत्था तर्जनीप्रांतं गच्छति तदा शताब्दमायुर्ज्ञेयं तथा च भ-
विष्यपुराणे यस्य पाणितले रेखा कनिष्ठामूलसंभवा गता प्रांतं प्रदेशिन्याः स जीवेच्छरदां शतमिति गरुडपुरा-
णे विशेषः प्रदेशिनीगता रेखा कनिष्ठामूलसंभवा शतायुषं च कुरुते छिन्नयानहतोभयमिति प्रदेशिनीग-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ द्व॰
२
४

ताप्रदेशिनीयाप्यस्थिता सैव चेत्कनिष्ठाग्रष्टोत्या तर्जनीरेखामविच्छिन्नां गच्छति तदा परमायुर्ज्ञेयं तथा च स्कांदे
काशीखंडे अच्छिन्ना तर्जनीयाप्यतया रेखा स्पष्टमपि ते कनिष्ठाग्रष्टनिर्यातादीर्घायुष्यं प्रयामनयादिति दीर्घायुः
परमायुः तच्च विंशाधिकमष्टशतं तथा च समुद्रः कनिष्ठातर्जनीयावत् रेखा भवति चात्तता विंशत्यष्टाधि.
कशतं तन्नरो जीवत्यनामयमिति ननु मानायुर्वै पुरुषः शतायुरिति श्रुत्या शतायुरेवोक्ते कथमत्राधिकायुः कथनमिति
उच्यते शताधिकस्यापि श्रवणात् तथा च स्मृतिः सार्धवर्षशतं जीवेन्निसाग्रे सपादशतं पुराणेदृश्यपि जीवे
द्वर्षशतं साग्रमित्यादि मध्यमामान्तगतजीवितरेखया पूर्णायुर्ज्ञेयं तथा च प्रयोगपारिजाते समुद्रः क
निष्ठांगुलिदेशात्लरेखा गच्छति मध्यमां अविच्छिन्ना तरेखा स्याद्शीत्यायुर्विनिर्दिशेदिति आयुर्लेखायाः
अनामिकाग्रान्ताधिके षष्ट्यायुर्ज्ञेयं तथा च गरुडपुराणे कनिष्ठिकां समाश्रित्य मध्यमायां स्थिता गता ष
ष्टिवर्षायुषं कुर्याद्यायुर्लेखा तमानवमिति वराहसंहितायां रेखाः प्रदेशिनीगाः शतायुषां कल्पनीय
न्तनाभिः छिन्नाभिर्द्रुमपतनमिति रेखाः कनिष्ठामूलोत्थाः प्रदेशिनीगाः प्रदेशिनीमध्यान्तरगताः शतायु
षोज्ञेयाः इतोन्यूनगाभिर्लेखाभिर्न्यूनमायुः कल्पनीयं तद्यथा तर्जनीमध्यान्तात्किंचिन्न्यूनत्वेन नवत्यायुः ततो
पि किंचिन्न्यूनत्वे अशीत्यायुः मध्यमामध्यान्ते पंचसप्तत्यायुः ततोपि किंचिन्न्यूनत्वे सप्तत्यायुरित्यादि कल्पनी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यं तथाचविवेकविलासे उल्लंघ्यंतेचयावंशोगुल्यो जीवितरेखया पंचविंशतयोज्ञेयास्तावंतः शरदांबुधैरि
ति पुराणायविसंवादयतिविश्वसनीयदुर्लभराजविरचितसामुद्रतिलके पुंसामायुर्भागमस्येकं पंचविंशतिः
शरदां कल्प्याकनिष्ठिकांगुलिमूलादितस्तर्जनीपर्यंतमिति यस्यचायुर्लेखाऽनामिकांगुलिमूलादूर्ध्वायाति
सधर्मरतोज्ञेयः तथाचसामुद्रतिलके आयुर्लेखानामांगुलिमूलांतर्गताभवेदूर्ध्वा यस्यव्यक्तारेखासधर्म
निरतः सततमिति स्त्रीणां तु भविष्यपुराणे यस्याः कनिष्ठिकामूलाद्रेखायामाप्रदेशिनी शतमायुर्भवे
त्तस्याहीनायाहीनताक्रमादिति प्रदेशिनीयामाप्रदेशिनीमूलसमीपगता हीनताक्रमस्त्वेवंचदत्रापिक
ल्पनीयः वराहसंहितायां कनिष्ठिकामूलभवागतायाप्रदेशिनीमध्यमिकांतरालकरोतिरेखापरमायुरे
वाप्रमाणहीनात्तुतन्न्यूनमायुरिति परमायुर्व्याख्यातं भगुलेखसमुद्रः कनिष्ठामूलसंभूतागतामध्यमिकांत
रे प्रदेशिन्याअष्टसारेखायस्याः सादीर्घजीविनीति अत्रायुर्लेखायांपर्वतः छेदास्तावंतो यमस्यवाज्ञेयाः तदु
क्तंसामुद्रतिलके पर्वन्मात्राः छेदाजीवितरेखास्थिताभवंतिनृणां अपमृत्यवोऽपितावन्मात्रानिपुणैःपरिज्ञे
याः पल्लविनायांक्लेशः छिन्नायांजीवितस्यसंदेहः विषमायांधननाशः परुषायांकदशनंतस्यामिति वि
षमावक्रा परुषारूक्षा अत्रापर्युपरिछेदेरोगः अथछेदेशस्त्रभीतिः तत्रछेदानुयोगादशारिष्टवदपमृत्यु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्तरूपानः अस्त्वभीतिस्तनो गतावा निर्दिश्येति संप्रदायः दशाधिकंनामज्ञाता पुरुषस्या पुलैर्लेखायास्तु दशभागाः क
ल्पनीयाः तत्र यस्मिन् रेखाभागे रेखाछेदस्तदा पूर्वदशाभागोऽरिष्टफलमिति कल्पनीयं अथायुर्ज्ञानोपायांतरमु
क्तं नारदीयसंहितायां अनामिकापर्व यदा विलंघ्यते कनिष्ठिका शतेन स जीवति समेनाशीतिविषमे तु स
ल॰च॰ प्ततिर्यदा धहीने खलु षष्टिमादिशेदिति अनामिकापर्वमध्यमे तथा च गर्गसंहितायां अनामिकांतिमं पर्व स-
५ मानीता कनिष्ठिका आयामस्तु हि पर्वाणि येषां ते चिरजीविनः श्रुति कनिष्ठिका समानीतांतिमं पर्व स्पृष्ट्वा आया
१ मोऽर्हेत् अथान्योप्यायुर्ज्ञानोपायः उक्तो भविष्यपुराणे रेखाः पंचललाटे तु स्त्रिया वा पुरुषस्य वा शतं जीवंति व
र्षाणां मैश्वर्यं वाधिगच्छति रेखा च तस्य ये शीतिस्तिसृभिः सप्ततिस्तथा द्वाभ्यां षष्टिस्तु रेखाभ्यां चत्वारिंशत्तथै
कया अरेखेण ललाटेन विज्ञेया पंचविंशतिः रेखाछेदैस्तु विज्ञेयाः पापकर्मरता नराः अल्पायुषस्तथाल्पा
भिर्व्याधिभिः परिपीडिता इति वर्षाणां शतमशीतिरित्येवमप्येकसंबंधः वराहसंहितायां तिस्रो रेखाः शत
जीविनां ललाटायताः स्थिता यदि ताः चतसृभिरवनीशा नवतिश्चायुः सपंचाब्दा सपंचाब्दा नवतिरायुः पंच
नवसायुरित्यर्थः विच्छिन्नाभिश्चागम्यागामिनो नवतिरप्यरेखेण केशांतोपगताभिर्लेखाभिरशीतिर्वर्षायुः
केशांतोपगताभिः केशांतः केशोत्पत्तिस्थानं तत्रगताभिः केशमध्यगताभिरित्यर्थः पंचभिरायुः सप्ततिरेका

५

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्रावस्थिताभिरपि षष्टिः एकाग्रावस्थिताभिः एकस्याः अग्रेणावस्थिताभिः विद्धाभिः विच्छिन्नाभिरित्यर्थः अथ
वात्सप्रांतमिलिताभिः वक्रैरेखाभिश्शतार्धचत्वारिंशात्तत्वक्राभिः त्रिंशद्भूलग्नाभिर्विंशतिरप्यवामवक्राभिः स्वल्पा
भिः स्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चीनैरेकल्प्यमिति वक्रैरेखाभिस्तारिरेखावक्रत्वे पंचाशदायुः वक्रत्वमस्तकेरेखापेक्षयातिर्यग्गा
ताभिश्चत्वारिंशदायुः भ्रूसन्निहिताभिस्त्रिंशदायुः वामभागकुटिलाभिर्विंशतिरायुः तनुभिरल्पायुः लेखाभि
रिति प्रत्येकं संबंधः विज्ञेयमिति शेषः न्यूनाभिरुक्तन्यूनाभिर्लेखाभिर्द्वाभ्यामेकया च शताद्वा तत्स्वल्पायुरेव अत्रेदम
प्येकल्पनीयं यथा रेखात्रये शतमायुः रेखाचतुष्टये पंचनवत्यायुरित्युक्तं तत्र सार्धरेखात्रये सार्धसप्तनवतिवर्षा
ण्यायुरित्यादि कल्पनीयं अत्रोदाहृतभविष्यपुराणवराहसंहितावचनेषु ललाटे एकत्ररेखापंचके शतमायुरप
रत्ररेखात्रये एकत्र तिसृभिः सप्तत्यायुरन्यत्र पंचभिर्लेखाभिरेकत्र अरेखे विशाल ललाटे न न चत्वार्यायुरन्यत्र पंचविंश
तिरित्येवं मिथो विरोधस्तत्परिहाराय वराहवचनानि व्याख्यायंते निस्तीरेखाउति ललाटे आकर्णान्तास्तिस्रोरेखाः
शतायुषां ज्ञेयाः तथा चोक्तं गरुडपुराणे आकर्णान्तगता रेखास्तिस्रः स्युश्शतायुषः ललाटोपस्ताः तिस्रो रेखाः
स्युः शतवर्षिणामिति चतसृभिरिति अत्रायतपदानुषंगः चतसृभिर्लेखाभिः पंचनवत्यायुरवनीशत्वं च तदुक्तं
गरुडपुराणे नृपत्वं स्याच्चतसृभिरायुः पंचनवत्येति विच्छिन्नाभिरिति छेदयुक्ताभिर्लेखाभिर्नवत्यायुरप्यास्या।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·स·
१०
10

गामित्येव अत्राप्यायतनपदानुषंगः अपरेरेखेणात्रापिशब्दःस्वार्थे दीर्घाभिर्लेखाभिर्वर्जितेन ललाटेन नवर्षाण्यायु
र्गम्यगामित्येव ह्रस्वरेखायुक्तेन ललाटेनेत्यर्थः तथा चोक्तं गारुडपुराणे ह्रस्वरेखांचितेभालेनवसायुष्यंस्वल्पर
ति पुंश्चलोऽव्यभिचारी अथवाप्युमांसंपुमांसंचलतीति व्युत्पत्त्याधात्वर्थानुसारेणापि च व्यभिचारी पुरुषः प्रतीयते के
शान्तोपगताभिरिति दीर्घाभिः केशान्तोपगताभिर्लेखाभिरशीत्यब्दमायुः तदुक्तं सामुद्रतिलके जीवति वर्षाशीति
केशान्तोपगतदीर्घरेखाभिः पंचभिरिति एकाग्रावस्थिताभिर्लेखाभिः सममायुः षष्ठ्यायुष्य रेखाः समतिमायुः
पंचैकाग्रस्थिताः पुनः षष्टिमिति सामुद्रतिलके उक्तत्वात् अथवा दीर्घाभिः पंचभिर्लेखाभिः सममायुः एकाग्रा
वस्थिताभिश्च लेखाभिः षष्ट्यायुः एकाग्रावस्थिताभिरपि षष्टिरित्यत्राप्यपिशब्दःस्वार्थो वक्तुरेखेण्यादिवचना
नोक्तस्वैकिकपदार्थोऽध्याहार्यः अविहरत्वादिति इत्यायुःपरिज्ञानप्रकरणं समाप्तं अत्रादौ सर्वसामुद्रलक्षणोपयो
गितया आयुःपरिज्ञानमभिधायाधुनापरीक्षाकर्तव्यः प्रथमं प्रकृतं प्रस्तूयते वराहसंहितायां उन्मानमानगतिसंह
तिसारवर्णस्नेहस्वरप्रकृतिसत्वमनूकमादौ क्षेत्रंमृजां च विधिवत्कुशलोऽवलोक्य सामुद्रविद्वदति यातमनागतं च
उन्मानं दैर्घ्यादि मानं तुलामेयं गुरुत्वादि गतिर्गमनं संहतिरंगसंश्लेषः सारो रक्तादिधातवापिकांवर्णः स्नेहादिः
स्निग्धः स्निग्धतास्वरः कण्ठोत्थो ध्वनिः प्रकृतिः स्वभावः सत्वं चित्तधर्मो धैर्यादिः अथवा प्रकृतिरूपं सत्व अनूकं अती

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तज्जन्मसूचिकाश्चाकृतिः क्षेत्रं शरीरं प्रजाशरीरस्योन्नतता देहकांतिरिति यावत् पातमतीतं भावि अथैतेषां ल-
क्षणानि विस्तरेणो निरूप्यंते तत्रोर्ध्वमानमुन्मानं तथा चोक्तं लेकासाधनः ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं मानं तत्तुलया-
धृतमिति तिष्ठतो पुरुषस्य आपादतलमस्तकं सूत्रेण मापयेत् ततस्तदंगुलैरेव तत्सूत्रमानं कार्यं तत्राष्टोत्तरशतां-
गुलपरिमाण उत्तमः शतांगुलो मध्यमो नवत्यंगुलो निकृष्ट इति तथा च स्कांदे काशीखंडे आनीयतां कुमारकं सू-
त्रं च त्रिगुणीकृतं सूत्राच्छिवो गणाध्यक्षमूर्धमूलमवस्थापयत् मुनिः परिममौ बालमापादतलमस्तकं तिर्यगू-
र्ध्वसमे माने योष्टोत्तरशतांगुलः स भवेत्पृथिवीपालो बालायं तेयथा हि जेति: तिर्यक्मानं तत्प्रसारितभुजम-
ध्यमायुहृदयांतरं ज्ञेयं अंगुलमानं तत्स्वमध्यांगुलिमध्यपर्वमितं यावत् निजांगुलिपर्वसंख्यानियतं तेषां विवेकस्त्वेति
सामुद्रतिलकोक्तेः स्वांगुष्ठोदरविस्तारपरिमितं यावत्मिति हेमाद्रिः भविष्ये जयंतो नवतिः प्रोक्तो मध्यमस्तु शतां-
गुलः अष्टोत्तरशतं यस्य उत्तमं तत्सुलक्षणं प्रमाणलक्षणं प्रोक्तं समुद्रेण शुभाशुभमिति वराहसंहितायां तु वि-
शेषः अष्टशतं षण्णवतिः परिमाणं चतुरशीतिश्च पुंसां उत्तमसमहीनानामंगुलसंख्या स्वमानेनेति अत्रोत्तममध्यम-
मध्यमहीनपुरुषे हीनममध्यमहीनं फलं कल्पनीयं इत्युन्मानलक्षणं अथ मानलक्षणं वराहसंहितायां भाराई-
ततः सुखभाक् तुलितोऽतः दुःखभाक् भवत्यूनः भारोऽनीवायानामप्ययर्थः सर्वधराणीशः इति भारलक्षणामुक्तं हेमाद्रौ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निचरे ते षोडशमाषः कर्षो द्वौ पलं कर्षचतुष्टयं तुलास्त्रियांपलशतंभारःस्याद्विंशतितैः पूर्वकृताः पंचगुंजाभिर्माषास्तैः
षोडशमाषैः कर्षश्चतुर्भिः कर्षैः पलं पलानां शतेन तुला विंशतितौलिको भारः पलसहस्रद्वयमितस्तथैः घः पु
रुषस्तुलायां तुलितो भाराधिततुः सहस्रपलपरिमितशरीरः समस्तौ जनः अस्मान्न्यूनपरिमाणतनुर्दुःखितः
ल·च· भारप्रमाणतनुरतिचुनी अधिकमर्धमसमः सार्धोभारः पलसहस्रत्रयमितियावत्तत्परिमितवपुः सार्वभौ
११ मो राजा विज्ञेय इति सर्वत्र संबध्यते इति मानलक्षणं अथोन्मानमानपरीक्षाकाल उक्तो वराहसंहितायां
विंशतिवर्षा नारी पुरुषः खलु पंचविंशाब्दः अर्हति मानोन्माने जीवितभागे चतुर्थे वा इति जीवितचतुर्थभा
ग इति चायुर्वेदज्ञानामभिप्रायेण शततमपलेन अल्पायुषां जीवितचतुर्थभागे मानोन्माने कर्तव्यइत्युक्ते तत्रयुक्ते पं
चविंशतित्रिंशदाद्यल्पायुष्कचतुर्थभागे अवयवपरमहत्त्वनिष्पत्तेरदृढताभावेन मानासंभवात् अथगतिल
क्षणं भविष्ये हंसभासमयूरकाणां च तुलायस्यगतिर्भवेत् सभवेत्पार्थिवश्रेष्ठः समुद्रवचनं यथा भासो हंसः
अन्येषामपि शस्त्राणां पक्षिणां च शुभा गतिः वृषसिंहगजेन्द्राणां गतिर्भाग्यविवर्द्धिनी जलोर्मिसदृशी या च का
कोलूकसमा च या गतिर्द्युतिविहीनानां दुःखशोकभयंकरी श्वानोष्ट्रमहिषाणां च खरसूकरयोस्तथा गतिर्मे
षसमा येषां ते नरा भाग्यवर्जिता इति वराहसंहितायां शार्दूलसिंहसमदद्विपगोपतीनां तुल्या भवंति गतिभिः शि

११

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्विनांचभूपाः येषांच शार्दूलहितं स्तिमितं च यानं ते पीश्वराः द्रुतपरिप्लुतगा दरिद्रा इति शार्दूलो व्याघ्रः गोपनिर्हृषः
शिखिनामिति वज्रवचनं यशास्तपस्तसमिमार्य अत एव अन्येषामपि शास्त्रानां पक्षिणांच शुभा गतिरित्युक्तं शाकुपरि-
स्रुतं व्याकुलं मंदूकवत् गर्गसंहितायां हंसस्य भासस्य शुकस्य चैव येषां समाना गतयः समानाः ते धार्मिकाः
सर्वगुणोपपन्नानराधिपतं चिरमाप्नुवंति समानाः नातिमंदद्रुतगतयः समाना इति वृषभविशेषणं वा सा
मुद्रतिलके गतिभिर्भवंति तुल्या ये समदद्विरदनकुलहंसानां वृषभस्यापि नराः ते सततं धर्मार्थिकामपराः
गोमायुकरभरासभमहिषविभक्तकलासशशाकभेकमृगैः येषां गतिः समाना ते गतसुखराजसन्मानाः गोमायुः
शृगालः सैरिभो महिषः कृकलासः शरटः इति गतिलक्षणं अथ संहतिलक्षणं वराहसंहितायां संहततनु
सुश्लिष्टसंधयः सुखभुजो ज्ञेया इति सामुद्रतिलके मांसास्थिसंधिबंधः शिथिलो न कदापि लस्तनेयस्य सुसंस
हतिमान् धन्यो दीर्घायुर्जयिनो नियतमिति अतिसंहतिलक्षणं अथ सारलक्षणं वराहसंहितायां सप्त भवंति च
सारा मेदोमज्जात्वगस्थिशुक्राणि रुधिरं मांसं चेति नृणां प्रभवतो तत्समासफले मेदः अस्थिमांसांतर्गतः स्निग्धो मां-
सविशेषः मज्जा अस्थ्यंतर्गतः स्नेहभागः तानाहसप्त एव मज्जामेदः साराः सुशरीराः पुत्रवित्तयुताः स्निग्धत्वमिध-
निनेम्सडूभिः सुभगाविचक्षणास्तनुभिः स्थूलास्थिरस्थिसारो बलवान्विद्यांतगः सुरूपश्चावज्रयुतशुक्राः सुभ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गाविहीनो रूपवंतस्तातात्वोष्ठदंतपालीजिह्वानेत्रांतपायुकरचरणाः रक्तैस्तु रक्तसारा बहुसुखवनितार्थपुत्रयुताः
दंतपालीदंतनखकं उपचितदेहोविद्वान्धनीसुरूपश्चमांससारोयइति एतेषांविशेषतःफलंतुहेमाद्रौसपीते
श्रीमान्स्थिरमतिर्वैद्योमेदःसारोनरोत्तमः निम्नप्रतुष्टःसुभगोमंदकोपोमहाधनः १ संहतायस्यदंतेभ्योनिम्
नेतिमरीचयः शुक्रैश्चगुणावयस्यमज्जसारःसताहशाः २ अयत्नार्जितवित्तेशोवस्त्रभूषणभाक्सुखी अलंक
रिष्णुर्मेधावीत्वक्सारःशीलकीर्तिमान् ३ अवयुत्सुपरानेषवर्ततेनावरुध्यते अस्थिसारोनरःसौख्येदीर्घमायुश्च
विंदति ४ धनवान्पुत्रवान्शौंडःप्राज्ञःसाहसिकःसुखी यौवनात्ययमत्सुःस्यात्शुक्रसारोनरोध्रुवइति ५ शौंडश्च
नरःसाहसिकःसाहसंमरणांगीकारेणसंभावितमरणहेतुकर्मकरणेनधान् संपूर्णास्पर्शसुखविभाक्वेविभागी
बहुप्रजः शतायुःसमशीलश्चमांससारोर्थभाप्रजः बहुसुसारेभ्ययेप्रोक्ताःसारतत्वार्थदर्शिभिःगुणास्तेसुक्रमाश्च
नरस्यसमुदाहृताइति ७ सामुद्रतिलके प्रायेणसमसारः सर्वोत्कर्षास्पदंपुरुषइति हेमाद्रिणातुसत्वसंज्ञःसारो॰
धिकउक्तः सयथा स्मृतिमानोत्थमितःशूरःसुचिरवस्थितमर्यादो॰ विषादीविद्वाननहंकारीख्यातिमान्व्यवसायीसतत
मनिर्वेदीस्वल्पादपिदानासमप्राप्ताशश्चकल्याणेषु सत्वेनपरिपूर्णोनयुक्तोभवतिभूमिपः अन्यैरपिगुणैर्हीनः
सत्वेनसमहागुणाइति इतिसारलक्षणं अथवर्णलक्षणं वराहसंहितायां द्युतिमान्वर्णःस्निग्धःक्षितिपानां

ल॰ र॰ १२ 12

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मध्यमः स्तनार्थवतां रूक्षोथ नहीनानां स्मृतः शुभदोन संकीर्ण इति वर्णो गौरश्यामकृष्णभेदेन त्रिविधः स्निग्धा
दिभेदेनोत्तममध्यमहीनो ज्ञेयः तेषु योदीप्तिमान् सस्निग्ध उत्तमो गौरस्तो मध्यमः प्रकृतिस्थो ऽस्निग्धरूक्षः शुद्धार्थि
नां रूक्षोदरिद्राणां संकीर्णो व्यामिश्रवर्णः क्वचित्स्निग्धः क्वचिद्रूक्षोन प्रशस्त इति तथा च सामुद्रतिलके गौरः
श्यामः कृष्णो वर्णः संभवति देहिनां तेषु आद्यो द्वावपि शस्तो शुभोपि शस्तोन संकीर्णः पंकजकिंजल्कनिभो
गौरः श्यामः प्रियंगुकुसुमसमः कृष्णस्तु कज्जलाभः स्निग्धः शुद्धोपि नो शस्त इति इति वर्णलक्षणं अथ स्नेह
लक्षणं वराहसंहितायां स्नेहः पंचसु लक्ष्यो वाग्जिह्वादंतनेत्रनखसंस्थः सुतधनसौभाग्ययुताः स्निग्धैस्ते
र्निर्धना रूक्षैरिति गर्गसंहितायां चक्षुस्नेहेन सौभाग्यं दंतस्नेहेन भोजनं त्वक्स्नेहेन परं सौख्यं नखस्नेहे
धिकं धनं तयोर्मनखकेशेषु दंतोष्ठनयनेषु च स्नेहो येषां तत्र प्रतिपत्तकार्यं तेषामकारणमिति अकारणमय
लसिद्धं कार्यं भवतीत्याशयः प्रयोगपारिजाते तु विशेषः त्वचः स्नेहेन शय्याभ्यामादस्नेहेन वाहनमिति सामु
द्रतिलके प्रियभाषिणं रसनास्निग्धस्वाद्भोजनं रदास्निग्धः अति सौख्यं त्वकृस्निग्धो नियतं भजते भुजिष्यापि
भुजिष्योदामः जनसौभाग्यं नयनस्निग्धः समधिकधनं नखस्निग्धः केशास्निग्धेवकृविधस्रगंधमाल्यं नरो
लभत इति इति स्नेहलक्षणं अथ स्वरलक्षणं भविष्ये हंसरुदगानराधमामेघगंभीरनिस्वनाः क्रौंचस्वराश्च

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·च·
१३
13

राज्ञानो भाग्यवंतो महाधनाः चक्रवाकस्वराधन्याराज्ञानो धर्मवत्सलाः कुंभस्वरेण नृपतिर्दुंदुभिस्वर एव च स्वरदी
र्घस्वराः क्रूराः शिशूनां सदृशेन तु पशूनामिति पाठांतरे क्रूरस्वरसंयुक्ताः पुरुषाः क्लेशभागिनः क्रूरउत्क्रोशकः
वायसस्वराः काकरुतामित्रकोस्यस्वराश्चये भासरुता इति पाठांतरं हीनाभिन्नस्वरा येन अधमास्ते प्रकीर्तिता इति
वराहसंहितायां करिवृषरथौघभेरीमृदंगसिंहाद्रिनिस्वनाभूपाः गर्दभजर्जररूक्षस्वरास्तु धनसौख्यसंत्य
क्ता इति भेरीदुंदुभिः मृदंगो मुरजः अब्दो जलदः सचायं स्वरः पंचविधः प्रशस्तः तद्यथा गंभीरो दुंदुभिः स्नि
ग्धो महाननुनादीति तथा चोक्तं गर्गसंहितायां गंभीरो दुंदुभिः स्निग्धो महांश्चैवानुनादवान् इति स्वरगुणाः पंच
समद्रः प्राह तत्त्वविदिति तत्रोदीरितएवादिमध्यावसानतुल्यो यः सर्वजनमनोभिप्रेतो यः स दुंदुभिः दर्पदैन्य
भयव्याधिक्रोधादिभिरविकृतः श्रोत्रसुखो यः स स्निग्धः ग्रामपद्रपूर्णो जलताम्रपात्रयोपि कं श्रूयते स महान्
ह्रादपि शनैरुच्चार्यमाणो यः श्रोत्रपथमायाति सोनुनादीति एतेषां फलमप्युक्तं तत्रैव एभिराद्यैर्यशो विद्यामा
नं सौख्यं धनारामं वाहनानि सुतान्नार्यो राज्यं भोगानगमः ऐश्वर्यं व्यवसायश्च त्रिभिर्मेधा सरस्वती भोगानां चैव
भोक्तृत्वं दानं यज्ञागमस्तथेति अप्रशस्ता अपि स्वरास्तत्रैवोक्ताः ते च यथा विस्वरोऽतिस्वरो भग्नः स्वारो रूक्षस्त
भैरवः अतिहृत्तत्वपरुषो विशीर्णः स्खलप एव च निस्तोजर्जरितश्चैवानिमिलो गद्गदः स्वरः विस्वरो वर्बरः

१३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अतिस्वरक्षः भग्नः खंडितः द्वारः स्खलितः रूक्षः अप्रियः भैरवो ऽतिभयानकः अतिहृतस्वरः परुषो निष्ठुरः
विशीर्णो गलितान्तरः स्वल्पः सूक्ष्मः निम्नः कंठान्तर्गतः जर्जरितो भिन्नकांस्यस्वरसदृशः अतिनिर्मलः सुनिष्ठी
वः स्वैरैरेतैः कलिः क्रोधो लोभमोहमनोजः नैर्घृण्यमवमानस्य पारुष्यं शाठ्यमेव चेति कलिः कलहः शा
ठ्यं शठभावः शठः स्वकार्यतत्परः परकार्यविमुखः तथा चोक्तं वचसा मनसा यस्तु दृश्यते कार्यतत्परः कर्म
णा विपरीतश्च स शठः सद्भिरिष्यत इति मामुद्रतिलके वृकवककाकोलूकखरगोष्टक्रोष्टुरासभवरा
हैः तत्त्वः स्वरोन शस्तो विशेषतो हिंस्रो ऽड्डहरुति वृकोईहामृगः मध्यदेशभाषया ऽडुअरु इति प्रसिद्धः क्रो
ष्टा जंबुकः इति स्वरलक्षणं अथ प्रकृतिसत्वयोर्लक्षणं उन्मानमानगतिसंहति सारवर्णस्नेहस्वरप्रकृ
तिसत्वमनूकमादावितिवचने प्रकृतिः स्वभावः महीस्वभावः शुभपुष्पगंध इत्यादिवक्ष्यमाणाः सत्वं गुणाः
सत्वपदे सत्वरजस्तमसां त्रयाणां गुणानामुपलक्षणार्थमित्येव प्रकृतिसत्वभेदोयः प्रतिपादितस्तस्तत्रनहा·
नमहाभूतप्रकृतिप्रुतिवर्गासत्वरूपायेरित्यादिना वराहाचार्येण गुणरूपसत्वस्य प्रकृतिभिन्नत्वेन पंचम·
हाप्रुरुषलक्षणो प्रतिपादितत्वात्तद्विषयत्वमेव केचित्तन्मयेथं पठंति स्नेहस्वरप्रकृतयस्त्वतनोन्यनूकमिति
वस्त्वत्तस्तु प्रकृतिरेव सत्वं अस्मिन्नेव प्रकरणे एवं नराणां प्रकृतिः प्रदिष्टा पलक्षणाज्ञाः प्रवदंति सत्वमि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिवराहोक्तेः प्रकृतिसत्वमित्यत्र प्रकृतिरूपंसत्वमितिकर्मधारयेनैकपदंसंपाद्यततत्रोन्मानादिसत्वांतानांद्वं
द्वैकवद्भावः तत्रभूजलाग्न्यनिलांवरसुरनररक्षःपिशाचतिरश्चांप्रकृत्यायुक्तोदशविधः पुरुषोभवति तथा
चवराहसंहितायां महीस्वभावःशुभपुष्पगंधःसंभोगवान्सुश्वसनस्थिरश्च शुभपुष्पगंधः पद्मायुतमधु
ष्पशरीरगंधः सुश्वसनःसुरवसुगंधवायुः तोयस्वभावोवहुतोयपायीप्रियाभिभाषीरसभाजनश्च रसभाजनो
ल·च· मधुरादिरसप्रियः अग्निप्रकृत्याचपलोतितीक्ष्णश्चंडः क्षुधालुर्वहुभोजनश्च चंडःकोपनः वायुस्वभावेनच
२५ लःकृशश्चक्षिप्रंचकोपस्यवशंप्रयाति खप्रकृतिर्निपुणोविवृतास्यः शब्दगतौकुशलः सुषिरांगः विवृ
15 तास्यः शयनविवृतमुखः शब्दगतौगानविषयेकुशलः सुषिरांगःसुकुमारांगः त्यागयुतः पुरुषोमृदुको
पःस्नेहयुतश्चभवेन्नरसत्वः धर्ममतिसंयुक्तोगीतभूषणप्रियः संविभागशीलत्वान्नित्यमेवमानुषः नीता
प्रकोपःखलचेष्टितश्चसत्वेननिशाचराणां पिशाचसत्वश्चपलोमलाक्तोवहुप्रलापीचसमुल्वणांगः स्थूलां
गःआधिकांगइतिवा भीरुःक्षुधालुर्वहुभुक्तयःस्याद्ज्ञेयःससत्वेननरस्तिरश्चां एवंनराणांप्रकृतिःप्रदिष्टाय
ल्लक्षणज्ञाःप्रवदंतिसत्वमिति गर्गसंहितायांतुअन्यदेवोक्तं नत्रुतन्मत्वमित्याद्वर्यन्मोद्योच्चफलंभवेत् ग
तेनन्येर्यमापन्नस्यस्यतत्सत्वमुच्यतइति तन्मध्यंसाचतत्रैवोक्ता गतेर्धन्यतरोवर्णाद्वर्णाद्धन्यतरःस्वरो
स्वरा

२५

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नरेसत्वेसर्वंसत्वेप्रतिष्ठितं अस्थिष्वर्थाः सुखंमांसेत्वचिभोगाः स्त्रियोऽक्षिषु गतौयानंस्वरेचाज्ञासर्वंसत्वेप्रति
ष्ठितमिति विवेकविलासेपि गतेः प्रशस्तेवर्णस्ततस्नेहस्ततः स्वरः ततस्तेजस्ततः सत्वमिदं द्वात्रिंशतो
धिकमिति सामुद्रतिलकेपि एकमपिसत्वमेतैः सर्वैः शंसंतिलक्षणौघात्सत्वं यस्मिन्नास्तिमनुजानांनक
दाचनदुर्लभालक्ष्मीः सौभाग्यमिवस्त्रीणांपुरुषाणांभवतिभूषणंसत्वं तेनविहीनाभुवनेभज्यंतेपरिभव
पदंप्रायः वक्त्रानुगतेरूपेरूपानुगतेनराणांभवतिवित्तं वित्तानुगतेसत्वंसत्वानुगतागुणाः प्रायः इहसत्वमेव
मुख्यंनिखिलेष्वपिलक्षणेषुमनुजानां तदभावेतेपिपुनश्चिंतासाम्यंसमुपयांति ननुयेषांनमनागपिमनोवि
कारंकथंचनाभ्येति आपद्यपिसंपद्यपितेसत्वविभूषिताः पुरुषाः शुभलक्षणमप्येकंवायैर्नविलोकितं।
स्फुटंयस्य अथयत्प्रयतेपुनः श्रीस्तस्यतदस्तिध्रुवंसत्वमिति इतिप्रकृतिसत्वलक्षणं अथानूकलक्षणं समु
द्रतिलके सर्वभवेष्वनवरतंसत्वस्वरूपगतिभिरभ्यस्तं पुनरिहयदनुक्रियतेतदनूकंकथ्यतेसद्भिः अनूक
मनुकरणमनुकारः सचवक्त्रादिसादृश्यात्कल्पनीयः तथाचवाराहसंहितायां साध्यमनूकंवक्त्राद्गोवृष
शार्दूलसिंहगरुडमुखाः अप्रतिहतप्रतापाजितरिपवोमानवेंद्राश्च वानरमहिषवराहाजतुल्यवदनाः
सुतार्थसुखभाजः गर्दभकरभप्रतिमैर्मुखैः शरीरैश्चनिःस्वनिःसुखाश्चइति देववैत्यगंधर्वयक्षराक्षसोरग।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·द·
१५
15

विद्याधरपिशाचनरमृगतिर्यक्सत्त्वास्तत्तल्लचेष्टाभिर्ज्ञेयाः तथा चोक्तं गर्गसंहितायां पूर्वयोनिर्यथाकामो मा
नुषाणां प्रवर्त्तते यथा पूर्वजन्मनस्तथैव तदनुरूपोऽभिलाषो मानुषाणां भवति देवदानवगंधर्वैर्यक्षराक्षस
पन्नगैः विद्याधरपिशाचैश्च मानुषैर्मृगपक्षिभिः च्युतिर्जन्मोपपत्तिश्च मानुषेषु प्रकीर्त्तिता तानहं संभवस्वा
मिसमद्वचनं यथा येषां देवदैत्यगंधर्वादिशरीरच्युतिपूर्वकं मानुषजन्मप्राप्तिस्तानहं संभवस्वामीति संवं
यः स्रग्वी स्ववेषः स्वयसत्त्वो नराज्ञे यो गोब्राह्मणहितेरतः तृष्णाभिमानस्त्वपिकक्रोधोलोभसमन्वितः ३
युक्तो मृगपापकत्वात्सवेदो न उच्यते स्वशरीरो महाभागो दाता मानी प्रियंवदः स्त्रीसंगतस्परो मूने स्नानलास्य
रतिर्नरः लास्यं नृत्यं गंधगांधर्वमाल्यानां शयनासनयोषितां विविधानां चोपभोक्ता रतिमान्मित्रवत्सलः
गांधर्वंगानं तंत्रीभिहिमुखवादित्रपानोद्यानवनप्रियः गंधर्वसत्त्वो विज्ञेयो गजाश्वरथनंदनः तंत्रीवीणा
हिमुखवादित्रं मुरजादि उपकर्मीडराधर्पोवलिमाल्यानुलेपनैः दत्तधीर्वैरगुवीणाभिः शंखैः पणववडि
डिमैः वादित्रैर्नृप्यते भोक्ता भक्ष्यमांसासवप्रियः तेजस्वी निर्घृणः शूरोपदद्रसत्त्वो नरः स्मृतः निर्घृणो विकृतः
शूरस्तेजस्वी शर्वरीप्रियः उद्रसेवस्तन्मांसभोक्ता पानपरायणः देवगोब्राह्मणाद्वेषी वधबंधनतिश्चयः नि
र्घृणाश्चतथा हीश्रुवाद्रसो न उच्यते जलपाश्रुवतिः शूरः क्रोधनः शंकितः शठः रतश्चरथमाल्येषु गतिर्ज्ञोभूष

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णप्रियः द्रव्यार्जनपरः सर्वदेवतानांच पूजकः भुजंगसत्वो विज्ञेयो निद्रालुगोष्ठप्रवृत्तिप्रियः दांतोमहाधनः सर्वदे
वायतनपूजकः माल्यभोजनगंधानांविद्यानां विद्यानांचाभिसाधकः रूपवान्सुभगः श्रीमान्नेतांविद्याधरान्वयः
क्रूरोपिविहृतो दृष्टो निर्घृणः पापतत्परः मलिनोप्यशुचिर्भीतोगोब्राह्मणजुगुप्सकः निषादसौनिकस्त्रीषुनी
चप्रव्रजितासुच रमतेचिकृताहारीनरः पैशाच उच्यते सौनिकोहिंसाकर्त्ता अतोभयः सुभगोदातामानीमधुरभा
षणः आचारयुक्तोमधुरः स्वकर्मनिरतः शुचिः अतोभोगोगंभीरः आस्तिकः श्रद्धधानश्चसंतुष्टोऽसुभगोदातामानी
मधुरभाषणः आचारयुक्तोमधुरः स्वकर्मनिरतः शुचिः अतोभोगंभीरः आस्तिकः श्रद्धधानश्चसंतुष्टोऽसत्ववत्स-
लः अमत्सरवत्सलोमरणाभीरुः मनुष्यसत्वो विज्ञेयोगंधमाल्यरतिप्रियः पर्वतारामवादित्रनदीतीराश्रमेषुच र
भीरुताक्र म्यउद्यतः जनेविविधैर्गीतैः आक्रम्यः आक्रमितेयोयः उद्यतः उद्योगी नरतिंलभतेजंतुर्दुर्गंधोमृगसत्वजः चंचलोसुमनोभी
रुः सर्वसंचयनिश्चितः स्त्रीविज्ञेयोऽनाचारस्तल्लावानन्यवत्सलः तिर्यक्सत्वोनरोज्ञेयः कृपणो वरयोनिजइति अव
रयोनिजोनीचयोनिजः एतेषुदेवदैत्यनरगंधर्वोरगराक्षसाः सत्वानराः श्रेष्ठाः पिशाचादिसत्वाः कनिष्ठाइति तथा
चहेमाद्रौस्मर्यते देवासुरमनुष्याणांगंधर्वोरगरक्षसां तत्सत्वेष्ठानराः श्रेष्ठाः पिशाचानांनराधमाः इति पिशा
चानामितिवज्रवचनेतिर्यक्सत्वायमिप्रायमितिविवेकविलासे सद्धर्मः सुभगोनीरुक्स्वस्थमः स्वनयः कविः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्तवयस्मात्मनः श्रामान्नरस्वर्गगामगामो निर्दंभस्सद्योदानादानोदद्भः सदाऋजुः मर्त्ययोनेः समुद्भूतोभावीचा
त्रनरः पुनः मायालोभतृष्णालस्यवक्राहाराद्विवेष्टितैः तिर्यग्यानिसमुत्पत्तिर्ख्यापयस्यात्मनः पुमान् सरोगः
स्वजनद्वेषीक्रूरवाक्यमूर्खविसर्गकृत् ययास्मिस्वयशानायानेनरोनरकवर्त्मनीति इत्यनूकलक्षणं अथदेवलक्ष
ल·ल· णं अत्रशरीरेदशद्वेत्राणि तथाचवराहसंहितायां पादौसगुल्फौप्रथमंप्रदिष्टंजंघेद्वितीयंचसजानुचक्रे
१६ मेढ्रोरुमुष्कंचततस्तृतीयंनाभिःकटिश्चेतिचतुर्थमाहुः उदरंकथयंतिपंचमं हृदयंषष्ठमतस्स्तनान्वितं अथस
16 प्तमंसजत्रुणीकथयंत्यष्टममोष्ठकंधरे नवमंनयनेचसभ्रुणीसललाटंदशमंशिरस्तथा।
ति एतेषुदशसुदेहक्षेत्रेषुतत्तज्ज्ञानात्पूर्वदशभागकल्पनयाशुभाशुभफलंकल्पनीयमिति एतदुक्तंभवति उक्तायुः
परीक्षयाज्ञाता पूर्वादशभागाःकल्पनीयाः तत्रपायुक्षायत्रात्रगुल्फौमांसविहीनौसिरावनद्धौच ततदनिष्टंप्रोक्तंवि
परीतमतःशुभंसर्वमित्यादिवक्ष्यमाणप्रकारेणयदंगंशुभलक्षणोपेतंयत्क्षेत्रांतर्गतंतद्देवसंख्ययानतद्दापूर्व
दशभागः शुभफलदः यदंगमशुभंतदाप्यशुभः यत्रयम्यमूर्तरागोमध्यमइति तथाचसामुद्रतिलके दे
त्रवशात्तापेतेमनुजानांजगतिदशादशाः क्रमशः देवेष्वशुभेष्वशुभादशाः शुभेषुचशुभाः प्रायः इतिदेवल
क्षणं अथमृजालक्षणं शरीरकांतिर्मृजाच्छायेतियावत् तथाचवराहसंहितायां छायाशुभाशुभफलानि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिवेदयंतीलसामन्तच्छपतिद्युलत्तणैस्तैः तेजोगुणान्वहिरपिप्रविकाशयंती दीपप्रभास्फटिकरत्नघटस्थितेवस्निग्ध
द्विजनखरूक्षरोमकेशाच्छायासुगंधाचमहीसमुत्था पुष्टयर्थलाभाभ्युदयान्करोतिधर्मस्यवाहन्यहनिप्रवृद्धिं स्निग्धा
सिताचहरितानयनाभिरामासौभाग्यमार्दवसुखाभ्युदयान्करोति सर्वार्थसिद्धिजननीजननीवचाप्याच्छा
याफलंतनुमतांशुभमादधाति चंडाधृष्याप्यमहेमाग्निवर्णाशुक्रान्तेजोविक्रमैःसप्रतापैः आग्नेयीतिप्राणि
नांस्याज्जयायद्विप्रसिद्धिंवांछितार्थस्यधत्ते अधृष्याअनभिभवनीयप्रभामलिनपरुषकृष्णापापंयानि।
लोन्याजनयतिवधशोकौप्रवत्रनाशार्थनाशौ स्फटिकसदृशरूपाभाग्ययुक्ताप्युदाराविनिपतिवगगनो।
न्याश्रेयसांसद्मवर्णैः छायाःक्रमेणकुजलाग्निलांबराणां केचिद्वदंतिदशताश्चयथानुपूर्व्यासूर्योज
नाभपुरुहूतयमोडुपानांतल्यास्तुलक्षणफलैरितितत्समासउति कःपृथिवी अंजनाभोविल्लः उडुप
श्चंद्रः एवंपृथिव्यादिपंचमहाभूतच्छायाःउक्ताइतिशेषः केचिन्तुसूर्यविल्विंडयमचंद्रसंवंधिन्योऽन्याःपं
चपूर्वोक्ताःपंचएवंदशविधाच्छायेमाजलत्रसूर्यादिपंचच्छायाःनोक्ताः रूपसाम्यात् साम्यंतुसौरेवा
ग्नेयी वैल्ववीनाभसी ऐंद्रीपार्थिवी याम्यवी वाइीचाप्येति फलंतुपूर्वोक्तानामेव अतस्तत्समासःता
सांसंक्षेपेणकथनमित्यर्थः गर्गसंहितायां सूर्येंद्रमणिसंकाशाविविधैरेहसंयुता कांताद्वीमानप्रसन्ना

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

च प्रभा नृणां प्रशस्यते विवर्णा परुषा रूक्षा भस्मवर्णा न याकुला एणामादर्शोल्मकाभासा प्रभा नृणां न शस्यते
भूम्यम्बुवह्निवाय्वभःसंभूताः पंच कीर्त्तिताः छाया विसिंह्चंद्रार्कयमानां च तथा परा इति हेमाद्रावपि स्मर्यते रक्ता
तेजोभवा छाया नभो नीला तनाभसी वैडूर्याभा भसी श्वेता छाया सौम्या च पार्थिवी भस्मारुणा भान्नूला च वाय
वी सा न पूजिता असमग्रैः सकलेः समग्रैः सकलेफले पूर्वोक्तैर्लक्षणैस्तेषां नृणां छायाः सुनिर्द्दिष्टोदिति इति छा
लक्ष. यालक्षणं अथ गंधलक्षणं गर्गसंहितायां अम्लो वा कटुको—न्यः पलांडुलसुनोपमः मेदोरक्तवसामज्जावि
२ एमूत्राणां तथावेल्ल स्याद्गंधःसदृशोयेषां न च शस्ताः कदाचन नराभयंकरा नित्यं समुद्दिष्टा निनिंदिताः
17 वसामांसस्नेहभागा विशेषः शुद्धमांसभवः स्नेहो वसा संकीर्त्यते बुधैरिति वाग्भटः अभिधानात् कषायो म
धुरो नृपः सुरभिः कस्तु साम्यः स्याद्गंधः सदृशो येषां ते सौम्याः शुचयो नराः सत्यधर्मतपोयुक्ता दानव्रत-
परायणा इति सामुद्रतिलके गंधो वपुषि नराणां मज्जायते नासिकेंद्रियग्राह्यः श्वासस्वेदादिभवो ज्ञेयः स
शुभाशुभो द्विविधः कर्पूरागरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगंधाः द्विपमदभूमिगंधाः पुरुषाः शुभो
गिनः प्रायः मत्स्यांत्रपूयशोणितनिंबसाकाकनीडवकगंधाः दुर्गंधाश्च नरास्ते दुर्भगता निस्वता भाजः इति इ
ति गंधलक्षणं अथ रुधिरलक्षणं भविष्ये पद्मवर्णं भवेद्रक्तं स नरो धनरोधनवान्भवेत् पद्मवर्णे रक्तो मलिनि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भे किंचिद्रक्तं नयाकृलं भवेद्यस्य तु शोणितं अधमः स तु विज्ञेयः पापकर्मरतः सदा किंचिद्रक्तं तथा पीतं भवेद्य
स्य तु शोणितं मध्यमः स तु विज्ञेयः सुखदुःखस्य भाजनं प्रवालसदृशं स्निग्धं भवेद्यस्य च शोणितं राजानं तं
विजानीयात्समद्वीपाधिपं गुरो इति अत्युल्लेखसमुद्रः अलक्तसदृशं रक्तं जायते यस्य शोणितं धनवान् भोगवांश्चैव
स नरः परिकीर्तितः पद्मपत्रनिभं यस्य देहे भवति शोणितं जनयेद्रूधाकन्यादुःखितश्च सदा भवेदिति पद्मसितो
त्पलेनीलोत्पलेवा इति रुधिरलक्षणं इदं इत्युक्तं सामान्यलक्षणान्यभिधायाधुना प्रत्यंगविशेषलक्षणानि पा
दादिक्रमेण वक्ष्यते ननु सर्वेषु गात्रेषु शिरः प्रधानमित्यादिना सर्वावयवेषु शिरसः प्राधान्यावगमात्तस्यैवादौ लक्ष
णं वक्तुं युक्तमिति कथं पादलक्षणस्य प्राथम्यमिति उच्यते अतः परं प्रवक्ष्यामि देहावयवलक्षणमित्युपक्रम्य पा
दौ समांसलौ स्निग्धौ रक्तौ सोम्यौ सुशोभनाविति भविष्यपादलक्षणस्यैवादावुक्तत्वात्तत्पूर्वकमेव लक्षणकथ
नमिति नन्वत्तावत्पादलक्षणमुक्तं भविष्यगरुडपुराणयोः पादौ समांसलौ स्निग्धौ रक्तौ सौम्यौ सुशोभनौ अ
स्वेदनौ मृदुतलौ कमलोदरसन्निभौ श्लिष्टाङ्गुलीव सुनखौ सुपार्ष्णी श्यामके राजपार्ष्णिः पादमूले पादपृष्ठ
भाग इति यावत् उष्णौ शिराविरहितौ गूढगुल्फौ च भीमज गूढगुल्फौ समं पादं यस्य स्यात् कूर्मोन्नतौ च वर्णौ प्रख्या
तौ पार्थिवस्य तु यस्य पादतले रेखा सांकुशे वप्रकाशते मतं तं हि सुखं तस्य पुरुषस्य नसंशयः शूर्पाकृति म

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हावाहोष्णेतत्तलनखोनया वक्रौशिरासंततौचसंशुष्कौविरलांगुली दारिद्र्यदुःखदौज्ञेयौचरणौभीमनंदन ब्रह्म
घ्नौदेवशार्दूलपक्वमृत्स्नसवर्णौतले पीतावगम्यानिरतौकृष्णौयानरतौसदा यानेगमनं अभक्ष्यभक्षणौ श्वेतौज्ञे
यौसेनाधिपेनमेति अभक्ष्यं लशुनपलांड्वादि स्कांदेस्कांदेकाशीखंडे पादौसमांसलौरक्तौसमौस्निग्धौसुशोभ
ल·ल· नौ समगुल्फौस्वेदहीनौस्निग्धावैश्वर्यसूचकाविति इतिपादलक्षणं अथपादतललक्षणं गर्गसंहितायां प
१८ द्मरक्तौमलनिभैस्तथाहलतजसन्निभैः नृपाःपादतलैर्ज्ञेयापीतैश्चागम्यस्त्रीभागिनइति सामुद्रतिलके रेखाही^
18 नेकठिनेरूक्षेदुःखायविस्फुटितेनतलमेनः संहितेमंस्त्रीकार्यमस्तुमादिपातितुंसो रोगायविगतमांसमार्गाय
त्रयमुन्नटके उत्कटकमसकलभूमिस्पृक्शिराः शंखछत्रांकुलिशशशिध्वजादिसंस्थानाः अच्छिद्रांगुलीकाः
स्फुटास्तलेभाग्यधेयवतां ध्वजादीनित्यादिपदेनपद्मधनुःशरपताकादीनांग्रहणं तथावर्त्मडपद्मशंखवज्राङ्कु
शशरशक्तिध्वजपताकोरगव्यजनचामरस्तूपव्याकोऽहिरेखोपविन्नौचरणौचराज्ञोधनधान्यवतोमहात्मनोवज्रे
याविति हेमाद्रिणाउक्तत्वात् नाःशंखयोथाकृतपः पुरिष्यांमध्यभेदिनीयेषां स्त्रीभोगभाजनंतेजायंतेपुः
स्त्रीमेवचयति सेधासैरिभजंबूकमूषककंककाककंकसमाः रेखास्तुयस्यतलेनस्यनस्यरेखास्तिदारिद्र्यमिति
सेधाश्वाविन् मध्यदेशभाषयासारीतिप्रसिद्धा जंबूकःशृगालःकेकीलोहपृष्ठःमध्यदेशभाषयाकरांकु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लिइतिप्रसिद्धः इतिपादतललक्षणं अथांगुष्ठलक्षणं इहयस्यांगुष्ठांगुलिनखादीनामवयवावयविनोरभेदो
पचारेणाचरणांतःपातितानतलक्षणेनैवगतार्थता तथापिविशेषतः शुभाशुभफलज्ञानार्थंतन्नलक्षणा
निःपृथक्निरूप्यंते तत्रांगुष्ठलक्षणमुक्तंभविष्ये वृत्तैर्मांसलैस्तुंगैरंगुष्ठैराज्यभागिनः अंगुष्ठाः पृथुलायेषां
तेनराभाग्यवर्जिताः क्लिश्यंतेविकृतांगुष्ठास्तेनराधानगामिनः चिपिटैर्विततैर्भग्नैरंगुष्ठैरतिनिंदिताः वक्रैरु
द्धैस्तथाह्रस्वैरंगुष्ठैःक्लेशभागिनइति सामुद्रतिलके वृत्तोभुजगफणाकृतिरुन्नतोमांसलःशुभः साशिरो
ह्रस्वश्चिपिटोवक्रोविपुलःसपुनरशुभइति अंगुष्ठलक्षणं अथांगुलिलक्षणं भविष्ये मृदुवृत्तघनस्नि
ग्धास्तुंगतांगुलयः समाः येषांप्रदक्षिणावर्त्ताः पार्थिवास्तेनसंशयः यस्यप्रदेशिनीदीर्घाअंगुष्ठंसमतिक्रमे
त् स्त्रीभोगंलभतेनित्यंपुरुषोनात्रसंशयः कनिष्ठायांतुदीर्घायांस्वर्णास्यतुभागिनः चिपिटाविरलाःशुष्का
यस्यांगुल्योभवंतिवासभवेद्दुःखितोनित्यंधनहीनश्चजायतइति जगन्मोहनेसमुद्रः यस्यप्रदेशिनीदीर्घा
अंगुष्ठंचव्यतिक्रमेत् स्त्रीभोगंलभतेसोपिपुरुषोनात्रसंशयः भार्याचम्रियतेतस्यपुत्रोवाप्रथमोपिवा॰
सावहत्याभवेद्यस्यतेवियात्कलहप्रियं मध्यमायांतुदीर्घायांविद्याभोगीभवेन्नरः सावहत्याभवेद्यस्यभा
र्याहानिमवाप्नुयात् अंगुलीमध्यमायस्यसमास्निग्धाचशोभनी पुत्रोत्पत्तिजनयेत्सोपिश्रलापुत्रेवजायते अ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ द॰
४८
19

दीर्घत्वे प्रदेशिन्यपेक्षया ह्रस्वत्वमनामिकापेक्षया समत्वे प्रदेशिन्या सह एवमग्रेपि द्रष्टव्यं अनामिकायां दी
र्घायां स्वर्णभागी भवेन्नरः सा च ह्रस्वा भवेद्यस्य तेन विद्यान्यवहारगं यस्य प्रदेशिनी स्थूला तनयाश्चैव कनिष्ठिका वा
ल्पे च म्रियते माता समुद्रवचनं यथा प्रसंगतामिर्दीर्घाभिरंगुलीभिस्तु मानवः दासो वा दासकर्मा वा भवेन्मध्यो
न संशयः इति अंगुलिलक्षणं अथ नखलक्षणं भविष्ये इंद्रगोपकसंकाशैर्नखैर्नृपतयः स्मृताः शालाव
निप्रतीकाशैर्नखैर्भवति पार्थिवः ताम्रैर्नखैस्तथैश्वर्यं पद्मनखा नराः स्नेहाढ्यैर्नखैस्तथैश्वर्यं पुष्पितैः स
भगो भवेत् पुष्पितैः पुष्पकुद्दालाकारैरिति केचित् प्रभविंदुयुतैरित्यन्ये रूक्षैः कूर्मोन्नतैः स्निग्धैर्विमलैः सौ
ख्यभाग भवेत् श्वेतैर्नखैर्विवर्णैश्च पुरुषाः दुःखजीविनः कुशीलाः कुनखैर्ज्ञेयाः कामभोगविवर्जिताः विकृतैः
स्फुटितैः स्थूलैर्नखैर्दारिद्र्यभागिनः अत्यन्तरक्ताश्चक्रे भवंति पुरुषा हरितैर्नखैः बंधुभिर्विप्रयुज्यंते कलत्रयकरा
स्तन इति सामुद्रतिलके स्थूलैर्नखैर्विदीर्णैः शूर्पाकारैः खराश्च नखा दीर्घैः असितैः सितैर्दरिद्रा भवंति तैर्नो म
जावरहितैरिति इति नखलक्षणं अथ पादपृष्ठलक्षणं सामुद्रतिलके मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं च व
र्णपृष्ठं रोमस्वेदविरहितं पृथुलं कमठोन्नतं शस्तमिति कमठः कच्छपः कूर्मः इति पृष्ठलक्षणं अथ गुल्फल
क्षणं जगन्मोहने समुद्रः नराः स्थूलगुल्फास्तु नित्यं बंधनभागिनः समैर्भवंति गुल्फैस्तु पुरुषाः सुखभागिनः

४८

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुल्फैस्तु महिषाकारैर्वर्चबंधनभागिनः वक्रैस्तु दुःखिता नित्यं रोमशैर्निर्धनस्तथेति इति गुल्फलक्षणं अथ पा
र्ष्णिलक्षणं जगन्मोहने समुद्रः महापार्ष्णिलक्षणं अथ जंघालक्षणं जंघातो गुल्फजानोर्मध्यदेशः भ
भविष्ये वर्तुलाश्च जंघा नामैश्वर्यं चैव निर्दिशेत् मृगजंघाश्च राजानो जायंते नात्र संशयः मीनजंघास्त
थैश्वर्यं प्राप्नुवंति न संशयः सिंहव्याघ्रसमा जंघा धनिनः परिकीर्तिताः रोमशाश्च तथा जंघा दुःखदारि
द्र्यभागिनः शृगालजंघाः पुरुषा नित्यं भाग्यविवर्जिताः काकजंघा नरा ये तु ते वै दुःखस्य भागिनः दीर्घजं
घाः स्थूलजंघा नित्यं भाग्यविवर्जिता इति गारुडे जंघा विरलरोमिका मृदुरोमा समा जंघा न तथा करिकरप्र
भेति प्रशस्ता विशेषः उत्पले समुद्रः जंघाभिरतिदीर्घाभिरैश्वर्यमभिनिर्दिशेत् शृगालजंघा दुःखार्ताः
स्वजंघा नित्यमध्वगा इति सामुद्रतिलके जंघाग्रह्रस्वसहह्वावथवेधोनिस्वतमाप्रायः स्थूलादीर्घा मार्गवितनुस्व
ह्रस्वपिंडिकाजंघा सतो भल्लूकः स्वशृगालकरभरासभवायसजंघोपमा तस्य भीमिति इति जंघालक्षणं
अथ जंघालक्षणं वसरे जंघा विरलरोमिका मृदुरोमा समा जंघे सुश्लिष्टे सुसंगात रोमलक्षणमुच्यते
तथा च भविष्यगरुडपुराणयोः पार्थिवानां भवेद्रोममेकैकं रोमकूपके श्रोत्रियाणां च द्वे द्वे ज्ञेये महाम-
ते त्रिभिस्त्रिभिस्तथा निःस्वा मानवा दुःखभागिनः केशाश्चैवं महावादो निंदिताः इति जिनास्तथेति सामुद्रतिलके ल

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ललितानि स्निग्धानि भ्रमरप्रभाणि देहरोमाणि जायंते भूमिभुजां महति विरलानि तनुसूक्ष्माणि सुभगो रोमयुतः स्या
द्दिहान्यथ्नरोमसंयुतो मनुजः रोमैकैकं नरपतेर्द्वे द्वे श्रोत्रियधनाढ्ययुद्धिमतां त्र्यादीन्येतानि पुनर्निःस्वानां मूर्द्धजे
ष्वेवं रोमरहितः परिव्राट् स्यादधमः स्थूलहृस्वखररोमा पापः पिंगलरोमा निःस्वः स्फुटिताग्ररोमा धीति इति
ल.ल. रोमलक्षणं अथ जानुलक्षणं जानुर्जंघोरुमध्यग्रंथिः भवेद्धि निर्मांसजानुर्म्रियते प्रवासे भीमनेदन सौ
२० भाग्यमल्पैः कथितं दारिद्र्यं विकटैस्तथा निम्नैस्तु स्त्रीजिता ज्ञेयाः समांसैः राज्यभागिन इति विकटैः विकरालैः
20 उच्चलेसमृद्धः अतिस्थूलैः स्थिरैः कालं जीवेदैश्वर्यसंयुत इति जानुभिर्निम्नबंधाः सामुद्रतिलके कुंजरजानुसमजो
भोगयुतः पीतजानुरवनीशः सश्लिष्टसंधिजानुर्वर्षशतायुर्भवेत्प्रायः कुंभनिभे दुर्गतता तालफलाभेन वक्रः
खं जानुर्हीनपरानेषु स्यसदासेवनेन वधबंधो इदमेव यस्य विषमं स पुनः प्राप्नोति दारिद्र्यमिति विषमे एकत्र
मांसले महत्त्वमन्यत्र कृशं स्वल्पमिति इति जानुलक्षणं अथोरुलक्षणं जगन्मोहने समुद्रः वृत्तोरुर्हसितो
रुच्छ नरः सर्वगुणान्वितः ऊरुभ्यां विकटाभ्यां च समभवेत्स्त्रीषु वल्लभः स्थूलाग्रमध्यनिम्नैर्वनेन राधान्नगामिनः
ति सामुद्रतिलके ऊरुपस्यसमांसैरभास्ते भ्रमविनिर्बाते कोमलतनेनु रोमवितैस्त जायते भूपतिः प्रायः
स्निग्धावृत्तमंडलो क्रमेण पीनो प्रपृच्छनो लक्ष्मी विकटैर्हीनवल्लभतां गुणवतां सहतो वृत्तौः स्थूलाग्रमध्यनते

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्यातांमर्गात्तुसंपिनीपुंसां कटिनेविपुलेनिर्मांसेदुर्भगत्वायेति इत्यूरुलक्षणं अथकटिलक्षणं वराहसंहि
तायां सिंहकटिर्मनुजेंद्रः कपिकरभकटिर्धनैः परित्यक्तइति जगन्मोहनेसमुद्रः सिंहव्याघ्रसमायेषांकटि
स्तेदंडनायकाः ऋक्षवानरतुल्याभाकटिर्येषांनतेशुभाइति उत्पलेसमुद्रः सिंहतुल्याकटिर्यस्यसनरेंद्रोनसं
शयः श्वसृगालनरेंद्राणांतुल्यायस्यसनिर्धनइति सामुद्रतिलके यस्यकटिःस्यात्दीर्घापीनाहस्थुलाभवेत्सवि
त्तायः रोमशाकटिर्दरिद्रोह्रस्वकटिर्दुर्भगोमनुजइति इतिकटिलक्षणं अथस्फिक्लक्षणं स्फिजौकुर्यधस्त
नमांसपिंडौ भविष्यपुराणे स्थूलस्फिक्मंडलोयस्यनिःस्वोभवतिमानवः व्याघ्रस्फिक्मंडलोराजामंडूकस्फि
क्नराधिपः भूमंडलेमहाबाहोसिंहस्फिक्सार्वभौमतां ऋक्षवानरयोर्यस्यसदृशौभवतःस्फिजौ धनधान्यवि
हीनोसौविज्ञेयोभीमनंदनइति स्कांदे विस्तीर्णौमांसलौस्निग्धौस्फिजावस्यसुखोवितावितावितर्भविति उत्प
लेसमुद्रः अर्द्धस्फिगमनुजोधन्यव्याघ्रांतःसत्वकीर्तिनइति व्याघ्रादंतोमनुष्येस्येति इतिस्फिक्लक्षणं अथगुद
लक्षणं सामुद्रतिलके यत्नमांसोगंभीरश्चकुमारः संहतःसमःशोणः पायुःशुभोनराणांपुनरशुभोभवतिवि
परीतइति इतिगुदलक्षणं अथवृषणलक्षणं भविष्ये यस्यैकवृषणस्तातजलेधाराणात्समुंचति स्त्रीचंच
लस्तुविषमैः समैराजाभवानेस्त्रीचंचलःपरदारलंपटः इहुनैश्चापिदुःस्थायुःपा[illegible]जीवीप्रलंबकैः मणिभिश्चा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.ल.
२१
21

पिरकैस्तु धनवंतो भवंतिवै उन्नतैरलवैः मणिभिर्वर्तुलैः साम्रकृतिलके सुष्काः स्वपं वा जायंते सुप्रति
ष्ठितापत्य सम्भवति भर्तानितंभृमेः समाह्निवलपापाः जलमरणमहिनो येमेनुजानां कुलविनाशो
पि स्त्रीलोलत्वं विषमेः प्राक्पत्रोदक्षिणो वृत्ते दक्षिणोः वामोवृत्ते स्रुतेरपिडः खेन समं भवति दुहिता·
दुहिता निस्वाः शुष्कस्थूलेरगम्यरमणीरतास्तुरंगसमैः पुनर्दीर्घैर्दक्षिणेः भवंति न विवापवः पुरुषाइति ग
रुडपुराणे विशेषः प्रलंबाभ्यां वर्धीमता उन्नताभ्यां वृत्तस्वामीति वृषणाभ्यां भवतीति शेषः इति वृषणलक्षणं
अथलिंगलक्षणं भविष्ये दक्षिणावर्तलिंगस्तु गरो वै पुत्रवान्भवेत् वामावर्तेन यालिंगेनरः कन्याप्रसूय
ते सिंहव्याघ्रसमो यस्यह्रस्वो भवति मेहनः मेहनोलिंगं भोगवान्सततं विज्ञेयो न रक्तरंगमेहनः भूमिपादोप
विष्टस्य गुल्फौ स्पृशति मेहनः ईश्वरं तं विजानीयात्प्रमदानां च वल्लभं ऋजुभिर्वर्तुलाकारैः पुरुषाः पुत्रभागि
नः स्थूलैः शिरालैर्विषमैर्लिंगैर्दारिद्र्यमादिशेत् निम्नपादोपविष्टस्य भूमिं स्पृशति मेहनः दुःखितं तं वि
जानीयात्सुरूपं नाम संशयः इति स्कांदे काशीखंडे लिंगेन ह्रस्वेन राजराजो भविष्यतीति वराहसंहिता
यां लिंगेल्पे धनवाननपत्यरहितः स्थूले विहीनो धनैर्मेढ्रे वामनते सुतार्थरहितो वक्रेः न्यथापुत्रवान् दा
रिद्र्यं विनते त्वधो ल्पतनयो लिंगे सिरासंतते स्थूलग्रंथियुते सुखी मृदुकरो मन्तप्रमेहादिभिः अथास्यार्थः अ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

५५

स्थे लिंगे यवनी संततिहीनश्च स्थूले यवहीनः वामभागविनते लिंगे पुत्रद्वयरहितः अन्यथा वक्रे दक्षिणभा-
गविनते पुत्रवान् अधोविनते दरिद्रः शिरायामे स्वल्पपुत्रः स्थूलग्रंथियुक्ते सुखी लिंगे इति सर्वत्र संबंधः
भवतीति शेषः मृदुकोमले लिंगं प्रमेहादिरोगैर्ग्रस्तं करोति प्रमेहाः धातुविकाराः ते च विंशतिः श्लेष्मो-
द्भूताः दश पित्तोद्भूताः षट् वातोद्भूताश्चत्वार इति तथा च गरुडपुराणे धन्वंतरिरुवाच प्रमेहाणां निदाने
ते च सेहं शृणु सुश्रुत प्रमेहा विंशतिस्तत्र श्लेष्मणो दश पित्ततः षट् चत्वारो ऽनिलात्तेषां क्रमाद् हस्तामिल
हणं श्लक्ष्णं बहुलं सितं शीतं निर्गंधमुदकोपमं मेहत्युदकमेहेन किंचिदाविलपिच्छिलं आविलं कलुषं इ-
क्षोरसमिवात्यर्थं मधुरं चेक्षुमेहतः सांद्रीभवेत्पर्युषितं सांद्रमेहेन मेहति सुरामेही सुरातुल्यमुपर्यच्छमधो
५४ घनं मेहति रोमाणि पिष्टेन पिष्टवद्बहलसितं पिष्टेन पिष्टमेहेन शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा शुक्रमेही प्रमेहति मूत्र
५.५. यत्सिकतामेही सिकतारूपिणो मलान् शीतमेही सबहुशो मधुरं भृशशीतलं शनैः शनैः शनैर्मेही मंदं मं-
दं प्रमेहति लालातंतुयुतं मूत्रं लालामेहेन पिच्छिलं गंधवर्णरसस्पर्शैः क्षारेण क्षारतोयवत् नीलमेहेन
नीलाभं कालमेही मषीनिभं हारिद्रमेही कटुकं हरिद्रासन्निभं दहत् विस्रं मांजिष्ठमेहेन मंजिष्ठासलिलो-
पमं विस्रमुष्णं सलवणं रक्ताभं रक्तमेहतः वसामेही वसामिश्रं वसाभं मूत्रयेन्मुहुः मज्जाभं मज्जमिश्रं वा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मज्जमेदोमज्जमेहः कषायंमधुरंरूक्षंदौष्ट्रमेहंवदेत्तथः हस्तीमत्तइवाजस्रंमूत्रंवेगविवर्जितं सलसी
केविवद्धंचहस्तिमेहीप्रमेहतीति प्रमेहादिभिरित्याद्यादिपदेनमूत्रकृच्छ्रादिगुह्यरोगग्रहणं कोशनिः
ष्ठैर्भ्रूपादौर्घैर्भगैस्त्रवितपरिहीनाः अजन्वहनशेफसोलघुशिरालशिश्नास्त्वधनवंतइति कोशालिं
ल॰ल॰ २२ गाच्छादनकर्मीत्वक् शेफोलिंगं सामुद्रतिलके स्थूलशिरशाविशालछिद्रवनाश्वजनेनदारिद्र्यमिति
इतिलिंगलक्षणं अथलिंगाग्रलक्षणं भविष्येसवर्णरजतप्रख्यैर्मणिभिर्मुक्तासमप्रभैः प्रवालस
दृशैः स्निग्धैर्मणिभिः पार्थिवोभवेत् अत्रोनरोमणिशब्दोलिंगाग्रवचनः पार्थिवइतिनात्यभिप्रायेः
णैकवचनं रक्ताकृतिर्मणिर्यस्यासमः स्त्रियोविराजते पार्थिवः सत्वविज्ञेयः समुद्रवचनेयथा समै
स्तयोत्रतैःस्थापितः स्त्रियैर्मणिभिर्गृह धनवंतस्तथास्त्रीणांभोक्तारश्चभवंतिवै सोल्वणैस्थापितनिता
नरावीराभवंतिते कर्कशैर्मलिनैरूक्षैर्दीर्घैः ग्रामेर्दिशोव्रजेदिति वराहसंहितायां रक्तैश्चामणिभि
ईश्वाः पांडुरैर्मलिनैश्चवज्रपञ्चभाजेनामध्याव्रतेश्चनासुलवणैधनिनइति गारुडे समैःस्त्रीरत्नधनिनोमध्य
निम्नैश्चकन्यकाइति भवतीतिशेषः सामुद्रतिलके विद्रुमरत्नोपमयामहामणौरेखयानरोधनवान् दो
र्भाग्यवानशबलयाभूसरयाजायतेनिःस्वइति इतिलिंगाग्रलक्षणं अथमूत्रलक्षणं भविष्ये मूत्रया

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

५५

रापनैदेकावलिनादक्षिणायदि समभवेत्पार्थिवः एष्यं सन्मुद्ववचने यथा द्वेधारेचतथास्त्रियेसनरोभोग
वान्स्मृतः वक्रधारास्तथानुत्ताः सशब्दाः शुभरूपाधमाइति इदमशुभंफलेसशब्दन्तु तन्मूत्रधारावक्रत्वेज्ञे
यं सशब्दमूत्रधारात्मनेवत्वशुभंफलंवेदितव्यं तथाचोक्तंवराहेण सुखिनः सशब्दमूत्रानिस्रावाभिः श
ब्दधाराश्चेति विशेषान्तरमप्युक्तं तेनैव क्षितिविचतुर्द्धाराभिः प्रदक्षिणावर्त्तवलितमूत्राभिः पृथिवीपतः
योज्ञेयाविकीर्णमूत्राधनविहीनाइति यत्तुवराहसंहितावचनं एकैवमूत्रधारावलितादुःखप्रदानसुत
दाश्रीति तस्माद्दक्षिणावलितमूत्रैकधाराविषयं प्रादक्षिण्यन्तु सर्वीशाहुतं भविष्यपुराणोक्तमशुभफलं
वेदितव्यमित्यविरोधः अत्रान्योविशेषउक्तोउमलेसमुद्रेण द्विधारंपततेमूत्रंस्त्रियंशब्दविवर्जितं भो
५५ गवान्स्मृतविज्ञेयोगवाक्षोनात्रसंशयइति इतिमूत्रलक्षणं अथशुक्रलक्षणं भविष्ये मीनगंधंभवेद्द
५५ नोधनवान्पुत्रवान्भवेत् हविर्गंधंभवेद्यस्यसर्वोच्यः श्रोत्रियःस्मृतः मद्यगंधिर्भवेद्यज्वापद्मगंधिर्नृपः
स्मृतः लाक्षागंधिर्भवेन्निःस्वोवक्रकर्मःप्रजापते मधुगंधेभवेद्दाताक्षारगंधेदरिद्रता मधुदेहाइं नम-
यं तत्फलस्यपूर्वमेवोक्तत्वात् तत्रशुक्रस्त्रीजनकोमांसगंधेचभोगवान् शीघ्रंमैथुनगामीयः सदी-
चीपुरतोः तथा अल्पाद्वहेवशाहूलविज्ञेयोनात्रसंशयइति शीघ्रंमैथुनगामीमैथुनगामीमैथुनेय-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्पर्शीद्रेरेतस्त्रावतेरेतोवक्रत्वात् तथाचसामुद्रतिलके यस्यस्रवतेरेतोलघुमैथुनगामिनोवक्रस्त्रियं दी
र्घायुः संपत्तिपुत्रानपिविंदतेसपुमान् निपततिशुक्रलोकेचिरमैथुनसंगतस्यापि दारिद्र्यसोल्पायु
र्वक्रकन्याजनकतांभजतइति शीघ्रमैथुनेछावानितिकेचित् वराहसंहितायां कुसुमसमसमगंध
लल· शुक्राविज्ञातव्यामहीपालाइति सामुद्रतिलके सुरभिद्रव्यसुगंधेश्रियोनगंधेपत दारिद्र्यं ज्ञेयंवर्णेनसम
२२ विदुग्धसवर्णेनरेतसानृपतिः धूम्रेणडुःखसहितःस्याडुःस्थः सपामवर्णेनेति जगन्मोहनेसमृद्गः मी
23 नगंधेनशुक्रेणाधनवान्श्रोत्रियोभवेत् हविर्गंधेनशुक्रेणगवायोजायतेनरः मधुगंधेनशुक्रेणानरः
स्त्रीजनवल्लभः लाक्षागंधोभवेद्विसोमांसगंधेनतस्करः व्यसनीचवसागंधेमद्यगंधेनडुःखितः सपा
मवर्णेनशुक्रेणादेशभागीभवेन्नरइति इतिशुक्रलक्षणं अथप्रसंगात्स्त्रलपरीक्षाउच्यते तत्राहमि
ताक्षरायांनारदः यस्याप्सुप्लवतेवीर्यंह्लादिमूत्रंचफेनिलं पुमान्स्याल्लक्षणैरेतैर्विपरीतस्तुषंढकइ
ति अथवस्तिलक्षणं वसंत्यस्मिन्मूत्रादिकमितिवस्तिः लिंगोपरितनीनाभेरधोभागः भविष्ये विस्ती
र्णामांसलास्निग्धावस्तिः पुंसांप्रशस्यते निर्मांसाविकटानताबस्तिर्येषांनतेशुभाः गोमायोः सदृशा
यस्यस्यानोद्दमरहितस्यच सभवेत्दुःखितोनित्यंपुरुषोनात्रसंशयइति वराहसंहितायां परिशुष्क

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वलित्रिभिर्धनरहिता दुर्भगाश्च विज्ञेया इति उत्पले समुद्रः गोमायोः सदृशो यस्य स्वरो रूक्षमहिषस्य च
सभवेद्दुःखितो नित्यं धनहीनश्च मानवः इति सामुद्रतिलके खरसृगालकरभसैरभसैरभनादलाभवस्तिर्न
ताभवन्ति येषां संकीर्णा क्लिन्नास्ते धनहीनाः स्युर्नराः प्राय इति इति वलिलक्षणं अथ नाभिलक्षणं
भविष्यगतहृद्धराणयोः विस्तीर्णमंडलाभिस्त्वप्रोन्नताभिस्त्वनाभिभिः भवंति सुखिनो वीरनराजा
यासमन्विताः धनधान्यसमन्विता इति पाठांतरे निम्नाभिरथवाल्पाभिः क्लेशभाजो भवंति वै वलिम
ध्यगता वीरविषमा च विशेषतः धनहानिं तथा स्थूले नित्यं जनयते विभो वमावर्ता सदादास्यं करोती
ति विद्वेषाः करोति सा दक्षिणा नः स्पृहणीयां मनीषिणां मनीषा बुद्धिः सा चाह्यंगणयुक्ता विवर्द्धि
ता तथा चोक्तं सुश्रूषास्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्वज्ञानं च धीगुणा इति
श्रोतुमिच्छा सुश्रूषा पार्श्वा धनादीर्घमायुरैश्वर्यं चोर्ध्वमायता गवायंतमधस्तात्तु करोति विद्वेषाः
पातपत्रकर्णिकाभानाभिर्यस्य महामते भूपतिं कुरुते सा तु पुरुषं नात्र संशय इति वर्तुला यदि गंभी
रानाभिः पुंसः प्रशस्यते उत्ताना विरलानाभिः सर्वदा दुःखितो भवेदिति यस्यातिशेषः इति नाभिलक्षणं
अथ कुक्षिलक्षणं उदरपार्श्वभागो कुक्षी भविष्यत्समकुक्षिर्भवेद्भोगी निम्नकुक्षिर्धनापहः मायावी विषमा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कुक्षिस्तथा कुरङ्गकुक्षिर्मत्स्योदरा कुरङ्गकपदं राजाचोन्नतकुक्षिस्तु सार्वभौमो महाबलः इति सामुद्रतिलके
कुक्षिर्विषमगंभीरा विनिपातं स लभते नरः प्रायः अन्नाभावस्य पुनर्नारी दृष्टेन जीवने साप्यीति इति कुक्षि
लक्षणं अथ पार्श्वलक्षणं पार्श्वौ कक्षाधोभागौ भविष्ये मांसलैर्मृदुभिः पार्श्वैराज्ञां स्यात्रात्र संशय
लक्ष· इति गारुडे यतिनो विपुलैः पार्श्वैः निम्नावक्रैश्च निम्नगैः नृपः पार्श्वैः समांसलैः मृदुभिः सुसमैश्चैव दक्षि
२५ णावर्तरोमभिः विपरीतैः परप्रेष्या निर्द्धनाः सुखवर्जिता इति इति पार्श्वलक्षणं अथोदरलक्षणं
२५ भविष्ये मृगोदरो नरो धन्यो मयूरोदर एव च व्याघ्रोदरो नरपती राजा सिंहोदरो भवेत् मंडूकसदृशो यस्य
पुरुषस्योदरो भवेत् स भवेत्पार्थिवः पृथ्व्यां सामुद्रवचनं यथा समोदरो भवेद्भोगी निःस्वः स्याद्दीर्घोदर
इति वराहसंहितायां समजठरा भोगयुता घटपिठरनिभोदरा निःस्वाः सर्पोदरा दरिद्रा भवंति बह्वाशि
नश्चैवेति जठरमुदरं तुंदः प्रसिद्धः पिठरः उखामन्नं पच्यते यत्र मध्यदेशभाषया हांडीति प्रसिद्धा सामुद्र
तिलके जठरं यस्य समं स्यादमितः स पुमान्सदा महार्घ्यायः भेकोदरो नरपतिर्वृषभमयूरोदरो भोगी कृशो
दरः स्वावी स्यान्मीनव्याघ्रोदरः सुभगः शुनरजठरो भुजिष्यो बहुभोजी जायते मनुजः श्वष्टूकोदनोदरि
द्रः श्रृगालतुल्योदरोपेतः पापः कृशोदरः स्यान्मृगाशिप्रमसदृशोदरश्चौरः इति उदरलक्षणं अथ मध्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्षणं सामुद्रतिलके जायेत यस्य मध्यं मृगशालोदरसोदरं नरेन्द्रेन सपुमान् नृपतिर्न चैवो विपर्यये भवति विपरी
त इति इति मध्यलक्षणं अथ वलिलक्षणं वराहसंहितायां शस्त्रान्तं स्त्रीभोगिनमाचार्यं बहुसुतं यथासं-
ख्यं एकद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विद्यान्नृपं त्ववलिं विषमवलयो मनुष्या भवन्त्यगम्याभिगामिनः पापाः
ऋजुवलयः सुखभाजः परदारद्वेषिणश्चैवेति अन्यत्र समुद्रः अवलिस्तु नृपः प्रोक्तोपज्ञादानेकतनय
इति इति वलिलक्षणं अथ हृदयलक्षणं भविष्ये समोन्नतेन हृदयमकंपं पृथुरेव हि अरोमशं मां
सलं च पार्थिवानां न संशयः विस्तीर्णहृदयं येषां मांसलोपचितं भृशं शतायुषोति जानीयाद्भावतो
३४ मतोपनीन् खररोमचितं वीरशिरालं च विशेषतः अधमानां भवेदेव हृदयं चषग्रननेति इति हृदय
३३ लक्षणं अथ वक्षोलक्षणं भविष्ये समवक्षसोऽर्थयुक्ताः पीनैः शूराः सनातवः ततुभिर्ह्रस्वरीनास्युः समे
स्थाप्यकिंचनाः वध्यते वा विशास्त्रेण नात्र कार्या विचारणेति गारुडे सुपुत्राः समवक्षोभिः पीनैर्वक्षोभि
स्तु निर्जिता इति सामुद्रतिलके हृष्युलं भवत्युरःस्थलमचलेपिलाकविनमुन्नतेन नृपतेः मृगनाभीपत्रलता
समानमत्र रोमराजिचितं उरसा समेन धनवान् पीनेन भटः सत्यो हृद्धरोमगात्स्यादिति इति वक्षोलक्षणं
अथ स्तनलक्षणं जगन्मोहने समुद्रः उन्नतोपचिता येषां चना स्त्रियाः पयोधराः पुरुषापतिनः सूराभोग

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेतस्थकर्मभिरिति सामुद्रतिलके हृस्ताः स्तनाः प्रशस्ताः स्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसो विषमाः परुषा
विकराः प्रायोऽदुःखोपजायिन इति इति स्तनलक्षणं अथ चूचुकलक्षणं चूचुकं स्तनाग्रे भविष्ये उद्
दृत्तचुकायेन्नसभगास्तेप्रकीर्तिताः निर्दैन्या विषमैर्दीर्घैर्भवन्तीह सवीरज पीनैन्नपवित्तैर्निमग्नैस्थूलचूचुके
र्दैवसत्तम राजानः सुखिनश्चापि भवन्तीह न संशय इति गारुडे उन्नतैस्थूलचूचुकैस्सुभवन्ति सुभगा नरा इ
लक्ष. २५ 25 ति इति चूचुकलक्षणं अथ जत्रुलक्षणं जत्रुणि स्कंधसंधी भविष्ये जत्रुभिर्विषमैर्वीरजातिहीनो भवे
न्नरः पृष्टोन्नताभवेदेगा सभोगिना त्रसुसंशयः निर्मांसैर्विषमैर्वीर निस्वो निम्नैः प्रवर्त्तते धनवांश्च भवे
न्नहीनैः सुखभोगसमन्वित इति गारुडे विषमैर्जत्रुभिर्निःस्वा अस्थिवद्धैश्च मानवा इति इति जत्रुलक्ष
णं अथ स्कंधलक्षणं भविष्ये अमृष्टिक्षौ न यास्मिन् पुष्टौ विपुलौ च सुराधिप स्तुताणामीदृशावंसौ न राजा
नंदवर्द्धन निर्मांसौ रोमशौ भग्नावल्पौ वापि विशोषतः निर्द्धनस्येदृशावंसौ प्रख्यातौ व्योमकेशजेति जग
मोदने समुद्रः वृषस्कंधा गजस्कंधाः कोलस्कंधाश्च ये नराः सर्वे ते पार्थिवा ज्ञेया महाभोगा महाधना इति उ
त्पले समुद्रः कदलीस्तंभसंकाशा गजस्कंधाश्च ये नराः राजानस्ते हि विज्ञेया महाकोशा महाबला इति इति
स्कंधलक्षणं अथ कक्षालक्षणं बाहुमूले कक्षे भविष्ये असंस्वेदनोन्नते वस्तानस्यापीने षडानन समरी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मस्तुगंधे च कद्दे निम्नं तमाभुनामिति गारुडे कक्षास्त्वल्पदलाश्चोष्णाः सुगंधमृदुरोमिका अन्यथा त्वर्थहीना
नामिति समकक्षाश्च भोगाढ्या निम्नकक्षा धनोज्झिताः नृपाश्चोन्नतकक्षास्तु जिह्मा विषमकक्षका इति ॥
कक्षालक्षणं अथ बाहुलक्षणं भविष्ये उद्बद्धबाहुर्यस्तस्माद्बधबंधमवाप्नुयात् दीर्घबाहुर्भवेद्राजा स
मृद्धवचनेषु यथा प्रलंबबाहुर्विज्ञेयो नरः सर्वगुणान्वितः ह्रस्वबाहुर्भवेद्दासः परप्रेष्यकरोऽपि वा सम-
वृत्तभुजो यस्तु दीर्घपीनभुजश्च यः स सर्वा वा हूराजा स्यादित्याह समुद्रयोनिपिः इभांगसदृशौ वृत्तौ समौ
पीनौ च सुबृहत् आजानुलंबिनौ बाहू पार्थिवानां न संशयः इभांगगजकरः दरिद्राणां रोमशौ ह्रस्वौ बाहू ज्ञेयौ सु
रोत्तम तस्कराणां च विषमौ स्थूलौ सुसमौ च सुव्रतेति स्कांदे वामावर्तौ सुचलं वो दोषौ दिशद्रोणां विनाविति
५८ दोषौ हस्तौ सामुद्रतिलके गोपुच्छाकृति पीने हीने खरोम भिदीर्घ्ये निम्नऊ शिरासंधि प्रशस्यते भुजयुगे पुंसा
६६- मिति इति बाहुलक्षणं अथ मणिबंधलक्षणं मणिबंधः पाणिमूलं गारुडे मणिबंधैर्निगूढैश्च सुश्लिष्टैश्च
सुगंधिभिः नृपा हीनैः करच्छेदः सशब्दैर्धनवर्जिता इति वराहसंहितायां मणिबंधनैर्निगूढैश्च सुश्लिष्टैस्सं-
धिभिर्नृपाः हीनैर्हस्तच्छेदः श्लथैः सशब्दैश्च निःस्वा इति सामुद्रतिलके रेखाभिः सुगणाभिस्तिसृभिः कस्य
लमंकितं यस्य धनकांचनरत्नपुनं श्रीः पतिमिव भजति लक्ष्मीव त्रिपरिह्नेपाव्यक्ताप्यकायमाला भवति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यस्य मणिबंधे नियतं महार्थं सदिनः स सार्वभौमो नराधिपतिः करमूले यवमाला हि परिक्षेपा मनोहरा य
स्य मनुजः स राजमंत्री विपुलमतिर्जायते मतिमान् सुभगैकपरिक्षेपा यवमाला यस्य पाणिमूले स्यात्
भवति धनधान्ययुतः श्रेष्ठो जनपूजितो मनुजः यदि तिस्रो यवमाला मणिबंधाद् भ्रष्टता विनिः सृत्य प·
लक्ष· विश्य पृष्ठे तिष्ठंते न दधिकतनम मिहफलं ज्ञेयमिति विवेकविलासेपि मणिबंधयवश्रेण्यः तिस्रश्चेत्तन्नृ
२९ पो भवेत् यदि ताः पाणिपृष्ठे विनतोधिकतरं फलं द्वाभ्यां तु यवमालाभ्यां राजमंत्री धनी बुधः एकया
२८ वयं ज्ञातश्रेष्ठो वज्रचनोस्थिन इति इति मणिबंधलक्षणं अथ करलक्षणं गारुडे कपितुल्यकरा भू
पा व्याघ्रतुल्यकरा मलाः इति मलाः पापिनः स्कांदे काशीखंडे कमठीपृष्ठकठिनावकर्मकराणां करौ रा
ज्ञे हेन्नाशिशोः स्य पादौ चाधनिका मलाविति कमवः कच्छपः सामुद्रतिलके पाणीन्नृपतेः समज्ञाः तिः
स्वेदो मासलाव पच्छिद्रौ अरुणाव कर्मकठिनाव सो दीर्घांगुलीस्थियो विस्तीर्णौ तान्वनखौ स्यातां कपिवत्
करौ धनाढ्यस्य शार्दूलवद्दितत्तौ विकृतौ निःस्वस्य निर्मांसाविति इति करलक्षणं अथ करपृष्ठलक्षणं सा
मुद्रतिलके अवहल्लं करपृष्ठं विस्तीर्णं पीनमुन्नतं स्निग्धं निर्गूढशिरं परितः क्षोणीपतेः फणिफणाकारं
मणिबंधसमं तिघ्वनिर्मांसरोमसंचितसशिरं करपृष्ठं निःस्वानांतृत्वं परुषं विवर्णं स्यादिति विवेकविलासे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पिकरपृष्ठेस्तु विस्तीर्णे पीने स्निग्धे समुन्नते । स्वाद्यं शूरशिरेन्द्राणां फणाभृत्फणासंनिभे । विवर्णे परुषे रूक्षे रोम-
शे मे स्ववर्जिते मणिवेधसमे निम्ने नेष्टं करपृष्ठकमिति । इति करपृष्ठलक्षणं । अथ करतललक्षणं भविष्ये
निम्नं करतलं यस्य पितृवित्तेन तस्य वै । समं वै हि स्ववशार्हलं तथा हीनस्तु मानवः । अतिवृत्तेन निम्नेन धनी करत-
लेन वै । उत्तानकरतलो दाता भवतीह न संशयः । विषमा भवन्ति विषमे निःस्वाश्चापि विशेषतः । विषमाः क्रू-
राः करतलैर्दैवशार्हलला लाक्षाभैरीश्वराः स्मृताः । अगम्यागामिनः पीतैः रूक्षैर्निर्धनता स्मृता । अपेयपाने क्रुवे
तिनीलकृष्णैस्तथैव चेति सामुद्रतिलके । वज्ररेखापरिकलितं पाणितले भवति यस्य मनुजस्य यदि वा रे-
खाहीने सोऽल्पायुर्दुर्विनो निःस्व इति विवेकविलासेऽपि पाणौ रक्ततलेन धनी नीलेन मद्यपः पीतेनागम्यनारी-
गः कल्माषेण धनोज्झितः दातोन्नतेन तलेन पाणेर्निम्नेन पितृधनोज्झितः धनी संवृत्तनिम्नेन स्याद्विषमे निर्धनः पु-
नरिति । इति करतललक्षणं । अथ रेखालक्षणं भविष्यपुराणे निम्नस्निग्धा भवेद्यासां रेखा करतले गुरुः य-
तीनां नरेन्द्राणामिमा ह्रस्वपयोनिधिः । यस्य मीनसमा रेखा कर्मसिद्धिस्तु दृश्यते धनवान्स तु विज्ञेयो बहु-
पुत्रश्च मानवः । तुला यस्य तु वेदी वा करमध्ये हि दृश्यते वाणिज्यं सिध्यते तस्य पुरुषस्य न संशयः । स्रुचिः पा-
णितले यस्य द्विजस्य तु विशेषतः सोमः पाणितले यस्य निपातोऽन्तरं यज्ञयाजी भवेन्नित्यं बहुवित्तश्च मानवः ।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वः शैलोवाप्यथवावृक्षः करमध्येहिदृश्यते अचलांश्रियमाप्नोतिविक्रमत्वसमन्वितः शक्तितोमरबाणासिरे
खाचापोपमाभवेत् यस्यहस्तेमहाभागोसजयेद्रिपून् ध्वजोवाप्यथवाशंखः करमध्येनदृश्यते समुद्र
यीसभवेद्धलीचसततंगृह श्रीवत्समथवापद्मंवज्रंवाचक्रमेववा रथोवाप्यथवाकुंभोयस्यहस्तेप्रकाश
लल· ते श्रीवत्संचक्राकारेरेखाविशेषः मंडलेमावर्तविशेषःश्रीवत्समितितरायसमुत्कटे राज्ञांनेतेविज्ञा
२२ नीयाःपरसैन्यविमर्दने दक्षिणेतुकरांगुष्ठेयवोयस्यतुदृश्यते सर्वविद्याप्रवक्तासौभवेद्देवात्रसंश
यःइतिवराहसंहितायां अंगुष्ठयवैराढ्याः स्तनवंतोगुष्ठमूलजैश्चयवैः तिस्रोरेखामणिबंधनोत्थिताः
करतलेपगानृपतेः मीनयुगांकितपाणिर्नित्यंसत्रप्रदोभवति वज्राकाराधनिनांविद्याभाजांतुमीनपुच्छनि
भा शंखातपत्रशिबिकागजाश्वपद्मोपमानृपतेः कलशमृणालपताकांकुशोपमाभिर्भवंतिभूपालाः
दामनिभैश्चगवाढ्याः स्वस्तिकरूपाभिरैश्वर्यं स्वस्तिकस्थानेषुः चक्रासिपरशुतोमरशक्तिधनुःकुंतसन्नि
भारेखाः कुर्वंतिचमूनाथंयज्वानमुलूखलाकाराः मकरध्वजकोष्ठागारसंनिभाभिर्महाधनोपेताः को·
ष्ठागारंकोशगृहं वेदीनिभेनचैवाग्निहोत्रिणोब्रह्मतीर्थेन अंगुष्ठमूलेवर्ततीर्थेनचैनयज्ञवेदीसदृशे
नदाग्निहोत्रिणोभवंति वापीदेवकुलाद्यैर्धर्मंकुर्वंतिचत्रिकोणाभिः देवकुलंदेवप्रासादः आदिपदेन

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सिंहासनरथपुष्पादीनां चिह्नं त्रिकोणास्थाः शृंगाटकाभा इति यावत् अंगुष्ठमूले रेखाः पुत्राः सुदीरि
काः सूक्ष्मा इति गरुडपुराणे कुलरेखा तु प्रथमा अंगुष्ठादनुवर्तिते मध्यमा धनरेखा तु आयूरेखा ततः
परं यः सुमीनेकितकरो भवेच्छत्रधरो नरः वज्राकारस्त्वधनिनामत्स्यपुच्छो गुणिमाबुधः वज्राकारः वज्र
सदृशरेखांकितः अणिमाद्यैश्वर्ययुक्तो विद्वान् भवतीति शेषः स्कांदे काशीखंडेऽपि श्रीवत्सवज्रचक्राद्य
मत्स्यकोदंडदंडवान् तथास्य करगारेखा यथास्य स्थितिदिवसानिरिति जगन्मोहने समुद्रः कनिष्ठामूल
संबद्धा आयूरेखा च कीर्तिता द्वितीया धनरेखा च तृतीया कुलवर्द्धिनी यदि स्पूर्णाश्चरेखास्तुः संगिनस्य
सुलक्षणं तत्कायोर्मणिबंधयोरेखा स्यात्करगामिनी सुवर्णरत्नराज्यश्रीदायिका सा न संशयः अंगुष्ठ
स्यापि मध्येपि वृत्ते नपतिमुत्तमं मध्ये तर्जन्यंगुष्ठांतराले सैव तर्जनिकां प्राप्य दत्ते साम्राज्यमृद्धिकं से
नापतिर्धनेशो वा मध्यमागतरेखया अनामिकां पुनः श्रेष्ठ धनवान्सर्वदा नरः सुखिनं सुभगं वापि से
प्राप्ता सा कनिष्ठिकां करोति सततमेवैषा पापयच्छिन्ना सुवर्णभाक् भवतीति शेषः यावंतो मणिबंधा
द्रूल्लेखयोरंतरे स्थिताः रेखा इति शेषः सहोदरगणास्तावान्विज्ञेयः पाणिपल्लवे स्थितास्तां तेऽथ या
रेखाः कनिष्ठाजीवरेखयोः तावंतो महिलास्तस्य स्त्रियः स्तावन्मिताश्चवा इति महिलाः स्त्रियः ऊमले।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समुद्रः एकैपाणितले यस्य द्विजस्य तु विशेषतः यज्वयाजी भवेन्नित्यं बहुवित्तसमन्वितः श्रीवत्समथ
वायवे वज्रं वामरमेव वा यस्य हस्ते तु दृश्येत स भवेत्पृथिवीपतिरिति हेमाद्रौ नारदीयसंहितायां पद्म
मष्टदलाकारमच्छिन्नं पाणिपल्लवे अपि हीनकुले जातो हि नृपालो भवेन्नरः अभ्यंतरस्तु खमत्स्यप
लक्ष॰ स्य पाणितले भवेत् स तु लक्षमवाप्नोति समुद्रस्य वचो यथा अमत्स्यकृतो विद्या अयवस्यकृतोऽथ
२८ नमिति प्रयोगपारिजाते अंगुष्ठोदरमध्यस्थो यवो यस्य विराजते उत्तमभक्ष्यभोजी तु स नरः सुखमे
धते रेखाभिर्बहुभिः क्लेशं स्वल्पाभिर्धनहीनता रक्ताभिः सुखमाप्नोति कृष्णाभिर्दुःखितो भवेत् अंकु
शं कुंडलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत् तस्य राज्यं विनिर्दिष्टं सामुद्रवचनं यथा मत्स्ये शते विजानीयात् मक
रे तु सहस्रकं पद्मे कोटिर्विजानीयात् लेखकोटिसहस्रकमिति सामुद्रतिलके अथ नामीनाद्याकृतिरे-
खानां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये वामके नारीणां दक्षिणपाणौ नराणां तु जीवितमरणे लाभालाभे सुखदुः
खमिह जगत्यखिलं कररेखाभिः प्रायः प्राप्नोति नरोऽथ नारी वा अंतर्मुखेन मीनद्वयेन शोणेन पाणित
लमध्ये यस्यांकितं भवेदिह स धनी सत्रप्रदो मनुजः स्निग्धा गंभीरा शोणा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला अंत
हीनाः स्निग्धाः करे रेखा यस्य ते प्रेसां मधुपिंगाभिः सुखिनः शोणाभिस्ताम्राभिर्नीरोगा गंभीरास्तुः सूक्ष्माभिर्धीमंतः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समाभिस्थूलाभिरथसुभगाः पल्लविनाविच्छिन्नाविषमाः परुषाः समाः स्फुटितनताः विहिमास्त्रविवर्णाहरि
ताः कुलाश्चपुनरशुभाः आपाणिमूलकरभाद्रिः रेखांगुष्ठतर्जनीमध्ये नूनंभवतिसोगोत्रवृद्ध्यायुषां रेखाः
भिन्नाभिश्छिन्नाभिः स्वल्पानिभवंतिकुलधनायूंषि रेखाभिर्दीर्घाभिर्विपरीताभिस्तु विपरीतेनमणिबंधात्त्रिगि
च्छतिरेखायस्यप्रदेशिनीमूले बहुबंधुजनाकीर्णास्तस्यपुनर्जायतेभिजनः लघ्वीपुनर्नराणांलघुवि-
हृदीर्घपादवंशः परिभिन्नाविज्ञेयः प्रभिन्नयाछिन्नयाछिन्नः तर्जिन्यानस्फुटितादीर्घतरानपल्लवाशस्ता कु
र्वीरेखाकुरुतेसहस्रजनपोषमेकापि साप्रालग्नास्पर्शरेखावेदकरीत्वविषयस्यराज्यकरी वैशस्यमहार्थक
रीसौख्यकरीभवतिशूद्रस्य आलिखितंकाकपदंयतरेखायांतदृश्यतेयस्य अर्जयतिधनानिपुनस्तत्लहम
पिसव्ययंकुरुते इत्यनाभिः शरणाभिः शरणंप्राप्नोतिसंपदंसदसि मध्याभिर्वामध्यात्ह्रस्वाभिर्वापुमान्ह्र-
स्वा यदिरेखाःसर्वांगुलिसमस्तपर्वाणरेखितानाव्यक्ता सपंडायवैभविपुंसामहीयसोनन्यहेहोषांवरेखाः कनि
ष्टिकाग्रलेखामध्येनरस्यपाविन्योमहिलासुःमहिलायाः पुनरपिमनुष्याः रेखाभिर्विषमाःस्वमाभिरथ
समशीलाः हीननराहीनाभिर्नाभिधुवमधिकतरासमधिकाभिः पुष्टाभिर्दिश्वनर्भूः कन्यारेखाभिरथसु
दीर्घाभिः सुभगासुरत्नाभिः स्यात्स्फुटिताभिर्दुर्भगानारी मूलेंगुष्ठस्यनराणांस्थूलारेखाभवंतियावंतः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष॰
२५
२५

तावंतः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः पुत्रिकास्ताभिः यावंत्योमणिबंधाग्रेरेखांतः प्रतिष्ठिताः स्थूलाः तावन्तस्याकान्
भ्रातॄन्वदंतिसूक्ष्माः पुनर्भगिनीः रेखाभिः छिन्नाभिर्भोविरसवोज्ञेयाः यावंतस्ताः स्फुटानिपतंजीवंतितस्यत्योः
मीनोमकरःशंखःपद्मोवांनर्मरवः सदाफलदः पाणौवह्निर्मरवोयदितस्यफलंपश्चिमेवयसि छिन्नैर्भिन्नैःस्फु
टितैर्व्यक्तैः किमपिनास्तिफलमेतैः जायतेपाणितलेयस्यकोऽसौसार्वभौमानां ॥२१॥ एवंनौकावापोतोवायस्य
करतलेरेखाः धनकांचनरत्नानांपात्रंसांयात्रिकःसस्यात् सांयात्रिकःपोतवणिक् जायेतेगोमतःप्रासादे
दामभिःस्फुटैर्मनुजाः निधिनायकाः कमंडलुकलशस्वस्तिकपताकाभिः यस्यमृदंगच्छत्रचामरपुरंसप्रति
ष्ठितेपाणौ सोवसुधिरसनावासांभुनक्तिभूमिंभुजिष्यापि विप्रस्ययस्यसूर्योवेदिनिभश्चलतीर्थमपिहस्ते वि
ष्णापितिर्नियतंसभवेदथवाग्निहोत्रीशः भोगपनभवंतियवाः प्रसामध्यगुष्ठपर्वमुस्यष्टाः योषाविशेषनिमि
त्तेकर्मकृशंयशास्त्रंगस्य स्तनवंतः स्युवंतोजायंतेंगुष्ठमूलजैस्तुयवैः मध्यगतैर्धनकांचनरत्नाद्याभोगि
नःसततं त्रिपरिक्षेपामूलेंगुष्ठगानाभवतियस्ययवमाला द्विपःसमसमिद्धः सद्गुमान्राजावाराजसचिवो॰
वा यस्यद्विपरिक्षेपासैवनरोराजपूजितः सस्यात् यस्यैकपरिक्षेपायवमालासोपिविनाद्यः अंगुष्ठस्याध
स्तात्काकपदंभवतियस्यहंसनराः पश्चिमकालेमूलेनविपद्यतेसयः अव्यक्तास्तुस्तनवः खंडारेखाःकरे

२५

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्थितापस्य निर्गमोशोदिवराजनीश्री लास्यपलायनेस्मतनमिति विवेकविलासेपि सूक्ष्माः स्निग्धाश्चगंभीराः स
लेखामधुपिंगलाः श्यामाहृतनगानिच्छेदाः करेरेखाः सुभानृणां भाग्यश्रेणांगंभीराः सरेखायमधुपिंगला सू
क्ष्माः स्निग्धेभवेषु त्वाः सौभाग्याय समूलकाः छिन्नाः सपल्लवा रूक्षा विषमाः स्थानकच्युताः विवर्णाः स्फुटि
ताः कृष्णानीलाः स्तब्धाश्चतेनसमाः क्लेशं सपल्लवा रेखा छिन्ना जीवितसंशयं कटत्रेपरुषाद्भ्यविनाशवि
षमार्ध्ययेत मणिबंधात पितृलेखाकरभान्तविभवायुषोः ह्रेलेविर्योनिनिस्तोपितनेमेगुष्टकांतरं ये
यांरेखाद्मातिस्त्वः संपूर्णादोषवर्जिताः तेषांगोत्रधनाशेषिंसंपूर्णान्यथानते मणिबंधोन्मुखाश्चायुर्ले
खायांयेतुपल्लवाः संपदेतेनवहिर्यातेविपदेंगुलिसंमुखाः गत्वामिलितयोः पांतेद्रव्यपित्रोश्चरेखयोः रेह
वंधोविनिर्दिष्टकोष्टमंगोन्यथापुनः आयुर्लेखावसानाभिर्लेखाभिर्मणिबंधतः स्पष्टाभिर्भूतरोसस्पष्टनराभि
जीमयः पुनः जामयोभगिन्यः अस्पष्टाभिरदीर्घाभिर्यान्तजाम्याप्युषस्तरिः पर्वेरंगुष्टमूलेस्थैस्तनसंख्याः
स्तनवोनृणां पर्वैरंगुष्टमध्यस्थैर्विद्याख्यातिविभूतयः शुक्लपदेनराजन्मदक्षिणांगुष्टजेस्थितैः कृष्णपक्षे
नृणांजन्मवामांगुष्टगतैर्यवैः एकोप्यभिमुखः स्वस्यवपुः श्रीवृद्धिकारणं संपूर्णो किंपुनस्तेहोपाणिमू
लेस्थितैर्नृणां सिंहासनदिनेशाभ्यांनेयाचर्मेंडतोरतोः पाणिरेखास्थितैर्मत्स्यैः सार्वभौमाननसंशयः आनप

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रंकरेयस्यदंडेनसहितंपुनः चामरद्वितयंचापिचक्रवर्तीसजायते त्रिकोणरेखयासीरमुसलोत्खलादि
ना वस्तुनाद्दस्तजातेनपुरुषः स्यात्कृषीवलः गोमंतःस्तनरामोर्थैर्हीममभिःपाणिसंस्थितैः कमंडलध्वजौ
कुंभस्वस्तिकौश्रीप्रदौन्रणां अनामिकांत्यपर्वस्थाप्रतिरेखाप्रभुत्वकृत् ऊर्ध्वापुनस्तलेतेस्याधर्मरेखेय
ल·ल· मुच्यते रेखाभ्यांमध्यमास्याभ्यामाभ्यांकेवविपर्ययः तर्जनीष्टस्वंधीनलेखास्यान्तरवमस्तुदा अंगु
३· ष्ठपितृरेखातस्तिर्यककरेखापदमदा अंगुष्ठस्यतलेयस्यरेखाकाकपदाकृतिः तस्यस्यात्पश्चिमेकाले
30 विपत्तिःशूलरोगतः अत्रहेमादिणाआयुरेखामणिबंधनमध्येप्रदेशिनीप्राप्तिणिभिःस्तिरभिर्लेखा:
भिः शतमायुर्विस्तुकंतस्योदाहृतवक्रवचनविरुद्धत्वान्मूलानुपलं भाच्चोपेक्षणीयं इतिकररेखालक्षणं
अथांगुष्ठलक्षणं+ अथांगुलीलक्षणं भविष्ये विरलांगुलयोधनेनतान्दरिद्राश्चवलने धनिनस्तमहावा
होयेचनांगुलयोनराः विरलाश्चतथावृत्ताद्दृश्यन्तेगुलयःकरे सभवेत्दुःखिनोनित्यंनरोदारिद्र्यभा
जनमिति गारुडे हस्तांगुलयएवस्युरायुर्दीर्घावलितास्तुभाः मेधाविनांचसूक्ष्मास्तुभृत्यानांचिपिटाःसर
ताः अवलिताः अवक्राः आर्षेताम्नायिः मेधाश्चतीनानुस्मृतिः तथावाके श्रुतीनानुस्मृतिर्मेधातनकाल
ग्राहिणीमतिः शुभाशुभविचारज्ञाश्चस्तापीरैरुदाहृतेरेति स्थूलांगुलीभिर्निस्वास्तुर्नताभिःशस्त्रमृते

+५ सामुद्रतिलके अरत्नेरंगुष्ठः स्त्रिगयस्तेगोरन्नःप्रदक्षिणावर्तः अंगुष्ठेपिधनवतांसचनानिसमानिपर्वाणीति इत्यंगुष्ठलक्षणं

३०

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वः नतामिर्वृद्धिकरयस्याङ्गागत्समर्थः वद्दिर्नेम्राभिरंगुलीभिः शाह्वचातेनरस्युज्जीयनत्समर्थः तथाचोक्तं
विवेकविलासे षष्ठेनिविरलाः सूक्ष्माः स्थूलावक्रादरिद्रतां शाह्वयानवह्निर्नेमास्फेटनंविपिटास्त्रनाउति
अंगुष्ठमूलजैः पुत्रीस्याद्दीर्घांगुलिपर्वकः दीर्घायुः सधनश्चैवनिर्द्दनोविरलांगुलिरिति सामुद्रतिलके
नियनेकनीनिकांगुलिरनामिकापर्वयुगलमूलेच्य यद्यधिकनरापुंसांधनमधिकंजायतेमायः दीर्घाभिरं
गुलीभिः सौभाग्ययुतः सदीर्घपर्वाभिः विरलाभिः कुटिलाभिः सूक्ष्माभिर्भवतिधनहीनः छिद्रैमिथःका
निष्ठानामामध्यप्रदेशिनीनांस्यात् वृद्धेवनताहारिणवाल्येक्रमशोनरस्यसुखमिति विवेकविलासे अनामि-
कांतरेखायाः कनिष्ठोर्द्ध्वपदाधिका धनवृद्धिस्तदापुंसांमानपरीवज्ञस्तथामध्यमाग्रांतरेखापाश्चधिकायदि
तर्जनी प्रवृत्तस्तम्भितः पदः श्रीस्त्र्यग्नयनतोमध्या अंगुष्ठस्यांगुलीनांचयद्यूनाधिकताभवेत् धनैर्धीमैस्तयासीवो
रःतस्मादायुषापिव तर्जनीमध्यमारंध्रेमध्यमानामिकांतरे अनामिकाकनिष्ठांतः छिद्रेसतियथाक्रमं जन्मतः
प्रथमेत्रिंशेद्वितीयेपश्चत्नीयके भोजनावसरेऽङ्गःस्विकेप्याद्भः श्रीमतामपि आवर्त्तोदक्षिणः शस्ताः सांगुष्ठां
गुलिपर्वस्विति अंगुलिलक्षणं अथनखलक्षणं गरुडपुराणे नपुनस्तलनखाःक्लीवाःकुटिलैःस्फुटि
तैर्नराः निःस्वास्यकनखैर्विलक्षहारिद्रवर्णैःपरान्नकाः नामेभूपापाश्चनायास्तेति परतर्ककाःपरोपजीविनःश्वेतं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ज्ञायते यावत् गर्गसंहितायां स्कन्धश्वेतपनखा नैकवर्णा महाबलाः स्फुरिताधनखाश्चैव स्वस्तनाद्यविवर्जि
ताः निर्मलैर्लोहिताभैश्च नखैर्भवति पार्थिवः इति सामुद्रतिलके विद्रुमरुचयः स्निग्धाः पाणिनखाः कच्छपो
न्नतास्निग्धाः सशिखाः क्रमेण विपुलाः पर्वार्थमिता मेदुराः सशिखाः साग्राः दीर्घाः कुटिलास्तनुकाः शुक्ति
ल॰ह॰ निभाः परुषकरनखा विशिखाः तेजोमज्जाविहीनाः सहीयते धान्यधनभोगैः पुष्पयुतैर्ड्रोः शीलाः श्वेतैश्च व
३१ र्णास्तथोपमैः क्लीबाः पुष्पयुतैः श्वेतविन्दुयुक्तैः स्ववर्णाः परवानीकर्णा न तत्परः सूचकाः समर्थः अथ पद
31 नखव्याकरणे नैव शुभं सितविन्दवस्वरणपोवी आगन्तवः प्रशस्ताः पुरुषाणां भोजराममतमिति विवेकवि
लासेऽपि नाम्ना स्निग्धाः स्फुटिताः नगपर्वधौम्यानखाः शुभाः श्वेतैर्युतैर्वमत्स्याभैर्नैर्व्ययैकिनैः सरोगता पुष्पि
तैर्दुष्टशीलत्वं कौर्यं व्याघ्रोपमैर्नखैः स्फुटाभैः श्यामलैः स्थूलैः स्फुटितैश्च नीलकैः अचौतरूक्षवक्रैश्च
नखैः पातकिनः स्मृताः नखैः मादिनखैर्भग्नैर्जातमात्रस्य तत्क्रमात् अर्द्धाङ्गशोचनत्थौ शाष्ठोशास्त्रैः सहजा
युषः अतिरूक्षनखैर्भग्नैर्धर्मतीर्थरतो नरः कूर्मोन्नतैश्च नखैर्नरः स्याद्भाग्यवर्जितः इति इति नखलक्ष
णम् अथ पृष्ठलक्षणं भविष्ये व्याघ्रपृष्ठो नरो यस्तु सेनाध्यक्षश्च तापकः सिंहपृष्ठो नरो यस्तु वंधनेन स
निर्दिशेत् कूर्मपृष्ठास्तु राजानो धनसौभाग्यभोगिनः भवेद्रोमशपृष्ठेऽपि निर्लोमरोमसंहतमिति रोमसंहते

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रोमशं दरिद्राणामिति शेषः जगन्मोहने समुद्रः अश्ववाच्च समः स्पष्टः स्तनरो ऽ वनिनायक इति उत्पले स
मुद्रः स्निग्धं मांसलं स्पष्टमभग्नं च श्लेष्म लोमशं स्तथनानां विपर्ययस्ते निर्दिष्टानां प्रकीर्तितमिति विपर्ययस्तु स्तन
लक्षणविपरीते इति स्पष्टलक्षणं अथ कृकाटिकालक्षणं कृकाटिकाश्च वद्दुः सामुद्रतिलके नियतं कृ
काटिकारोमशिरासंयतानां णां सा पिकुरुते कुटिलाविकटाविसंकटा रोगदारिद्र्यमिति अतिकृकाटिका
लक्षणं अथ ग्रीवालक्षणं भविष्ये चिपिटग्रीवो हि कृशो मनो लोकस्यैवेश्वर चिपिटग्रीवको निःस्वः शिरा
लग्रीव एव चेति पण्डतान्तरे स्मृतः स्यान्महिषग्रीवो मृगग्रीवो भयातुरः ह्रस्वग्रीव स्तथनवान्स्तद्वि भोगवांस्तथा
ग्रीवायां विश्लायस्य कंबुरेखाः समाहिताः स भवेत्पार्थिवो भूमौ सर्वदुःखनिवर्हणः दीर्घग्रीवाः वक्रग्रीवाः श
शग्रीवाश्चपेनराः शुष्कग्रीवाः कृशग्रीवाः सर्वे ते निर्दिष्टाः स्तनाः इति कंबुग्रीवलक्षणं स्पष्टमेवाह उत्पले
समुद्रः वलित्रयचितग्रीवः कंबुग्रीवो हि कंबुग्रीवो हि कथ्यत इति गरुडपुराणे निम्नश्चिपिटकंठः स्यात्
शिरास्शुष्कगलः सखि निम्नो नीचः निम्नइति यावत् शिरास्शुष्कगलः शिरास्शुष्कः शिरारहितः गलः कंठो
यस्येति नि सः स्मृतः स्यान्महिषग्रीवः शास्त्रांतो मृगकंठकः कंबुग्रीवो यत्नपति र्लवकंठो निभ लक्षणा इति जगन्मो
हने समुद्रः ग्रीवास्याहर्तेलायस्य शृणिकुंभसमा भवेत् स्तथनं तं विजानीयादापुष्ठं तेच मानवमिति उत्पले

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सम्पुटः अस्त्वसुमहित्थग्रीवः पापकांतो ह्यबकंधरः इति सामुद्रतिलके पिशुनो वक्रग्रीवः शस्त्रविनाशो मृगग्रीवः
वामसमकामग्रीवोऽङ्गः क्लेशमायांभिको वकग्रीवः शुष्कशिरालग्रीवश्चपि पिरग्रीवश्च धनविहीन इति इति ग्री
वालक्षणं अथ चिबुकलक्षणं अधरादधः केशोपरि चिबुकं तल्लक्षणमुक्तमन्यत्र समुद्रेण निर्मांसैश्चि
बुकैर्दीर्घैर्निर्द्रव्यास्त्वाधवासिनः समांसलैर्घनोपेतावक्रपृथुसमन्विताः इति सामुद्रतिलके पुण्यवतामिह
ल॰ दे॰ चिबुकं हृतमांसलमदीर्घलघुमण्डलं अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं दरिद्राणामिति इति चिबुकलक्षणं
३२ अथ हनुलक्षणं सामुद्रतिलके हनुयुगलं स्निग्धं चिबुकोभयपार्श्वस्थितं पुंसां दीर्घं वक्रशालं पृथु तरस्यं भ^
भवति विपरीतमिति इति हनुलक्षणं अथ कूर्चलक्षणं सामुद्रतिलके कूर्चं प्रलेवशुभ्रमलमस्फुरितानयेति
द्देनैर्मण्डले स्निग्धं पूर्णो हस्तेह्यमेव के विशिष्यते पुंसामिति इति कूर्चलक्षणं अथ कपोललक्षणं भविष्ये
यस्याङ्गेरोचसे पूर्णो पद्मपत्रसमप्रभौ कृषिभोगी भवेन्नित्यं वक्रवित्तश्च मानवः सिंहव्याघ्रगजेन्द्राणां क
पोलः सदृशो यदि महाभोगी स विज्ञेयः सेनापतिश्चैव नायक इति गारुडे भोगीतमतिम्लगोडः स्थानं मेचीसंपू
र्णोगं डक इति अनिम्नगंडः उन्नतगंडः सामुद्रतिलके सुगविनः समुन्नतैः सुः परिपूर्णौ भोगिनश्चमांसपुनैः
सिंहद्विपेंद्रतुल्यैर्गंडैर्दैर्घ्यायिपायस्याः निम्नौ यस्य कपोलौ निर्मांसौ स्व सकूर्चरोमाणौ पापा सेडः खव्रुषो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भाग्यविहीनाः परप्रेष्याश्चेति इति कपोललक्षणं अथ मुखलक्षणं तत्प्रशंसा च वरैर्माह्रीस्मर्यते अथ लक्षणसंप
न्नं शरीरं यस्य देहिनः मुखं चैव लक्षणोपेतं सर्वावी मुखजैर्गुणैरिति गर्गसंहितायां मुखमधिकृत्य परमेतत्
शरीरस्य प्रधानायतनमुच्यते मुखं सर्वशरीरस्य सर्वं वा मुखमुच्यते मुखमालपने श्रेष्ठं मुखं च गुरुहवः स्मृतं य
न्मुखं मांसलं स्निग्धं सुप्रभं प्रियदर्शनं वर्णाढ्यं संधिविश्लिष्टमनन्तं सुखभागिनामिति भविष्ये वदनं मंडलं य
स्य धर्मशीलं तमादिशेत् मंडलं वर्तुलं महावक्त्रा नरा येन दुर्भगास्तेन संशयः हरिवक्त्रा जिह्मवक्त्रा विकृ
तास्यास्तथा नराः हरिश्मश्रुः भग्नवक्त्राः करालाश्च सर्वे तेन स्काराः स्मृताः संपूर्णवक्त्रा राजानो गजसिंहानना
स्तथा व्याघ्रवानरवक्त्राश्च निर्धनाः परिकीर्तिताः वदनं तु समं स्निग्धं सौम्यं संवृतमेव हि पार्थिवानां महावाहो
विपरीतं च दुःखिनां स्त्रीमुखं पुत्रनाशाय मंडलं सौम्यतां व्रजेत् दुःखनाशाय वै दीर्घं पापं संभवदं तथा भूतिनां
चतुरस्रं स्यात्सुरदारहतं स्यु निम्नं वक्रं तु देवशा प्रदारहतं भवेत् ह्रस्वं भवति नाशाय पूर्णं कांतं च भोगिनामि
ति गरुडपुराणे महामुखं दुर्भगानां स्त्रीमुखं पुत्रमामुयात् भीरुवक्रं पापिनां स्याद्धूर्तानां चतुरस्रकं निम्नं च
क्रमपुत्राणां कृपणानां च ह्रस्वकमिति स्त्रीमुखं मानमुखसदृशं मुखं तेयं तस्याः जननीसुखानुरूपं मुखकम
लं भवति यस्य मनुजस्य प्रायोयम्यः सप्तमानि मुखमिदं सः मुद्रेणोतिसामद्रः तिलके प्राशस्त्यमिथ्यानात्पत्रः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूर्द्धौदात्तत्वं भविष्यवचनं स्त्रीमुखेपुत्रनाशायेति यदपि वराहवचनं स्त्रीमुखमनपत्यानां शाठ्यवतां मे
डलं परिज्ञेयमिति उभयमपि मातृव्यतिरिक्तस्त्रीसदृशमुखविषयमित्यविरोधः जगन्मोहने समुद्रः मृगमू
षकवक्त्राश्च ते नरा दुःखभागिन इति अन्यत्रे समुद्रः कृपणानां नयाङ्गस्वं विधिदं परजीविनामिति सामु
ल॰ल॰ द्रतिलके रासभकरभसवर्णवक्त्रमुखा दुःखभागिनः पुरुषाः जिह्ममुखा विकृतमुखाः स्वस्कमुखा ह
३३ यमुखा निःस्वा इति इति मुखलक्षणं अथाधरलक्षणं भविष्ये रक्ताधरो नरपतिर्धनवान्कमलाधवश्चेति गा
33 रुडे स्निग्धैरधरैर्नृपाः बिंबोपमैश्च स्फुटितैरोष्ठैर्न नैश्चाखण्डितैः विवर्णैर्धनहीनाश्चेति वराहोप्याह बिंबो
पमैरवक्रैरधरैर्भूपास्तनुभिरस्वा इति सामुद्रतिलके बिंबाधरो धनाढ्यः प्रत्ताकान्माटलाधरो भवति प्राज्ञेरा
ज्यं लभते प्रवालवर्णाधरस्तु नरः घनाधरोन रोष्ठोयं गुलमानो सकोमलो मसृणो मडसममसृणकालोऽस
जायते प्रायशो धनवानिति इत्यधरलक्षणं अथोत्तरोष्ठलक्षणं वराहसंहितायां श्रोष्ठैः स्फुटितैर्विखण्डित
विवर्णरूक्षैश्च धनपरित्यक्ता इति अन्यत्रे समुद्रः उत्तरोष्ठैर्लोहितैश्च धनिनः सौख्यसंयुता इति सामुद्रतिल
के पीनोष्ठः सुभगः स्याल्लंबोष्ठो भोगभाजनं मनुजः अतिविषमोष्ठो भीरुर्लंबोष्ठो दुःखितो भवतीति इत्यु
त्तरोष्ठलक्षणं अथश्मश्रुलक्षणं भविष्ये अस्फुटितायां स्निग्धं वनतं मृदुतया यश्च संपूर्णं चतया कृष्ण

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्मश्रुभूमिपतेर्गेह रक्तैः स्वल्पैः सत्यातुल्यैः श्मश्रुभिर्भीमनंदन नराश्चौरा भवंतीह परदाररतास्तथेति इति
श्मश्रुलक्षणं अथ दंतलक्षणं भविष्ये कुंदकुड्मलसंकाशैः प्रकाशैर्दशनैर्नृपाः अल्पत्वान्नरदंताश्च नि
त्यं क्लेशपरिपीडिताः हस्तिदंताः खरदंताः खरदंताः स्निग्धदंता गुणान्विताः सर्वे ते धनिनो ज्ञेयाः समुद्रव
चनं यथा करालैर्विरलै रूक्षैर्दशनैर्दुःखभागिनः द्वात्रिंशद्दंता राजानः सैकत्रिंशश्च भोगवान् त्रिंशद्दं
तानराश्चिनिःस्वा दुःखस्य भागिनः ऊनत्रिंशेश्च दशनैः पुरुषा दुःखभागिन इति गारुडे दंताः स्निग्धा घनाः
शुभाः तीक्ष्णा दंष्ट्राः समाः श्रेष्ठा इति जगन्मोहने समुद्रः दक्षिणोन्नतदंताश्च महाभोगा महाबलाः लोक
दंताश्च ते नराः पापमंदनकाः मूषिकोपमदंताश्च ते पापाः परिकीर्तिता इति मूषिकाश्च लम्बूषकाः सामा
द्रतिलके द्वात्रिंशता नरपतिर्दंतानां स्याद्दशनैस्त्वेकविरहितैर्भोगी स्यात्रिंशता नातिधनो ह्यविंशत्या सुखविमु
क्तः दारिद्र्यदुःखभाजनमेकोनत्रिंशता सदा दशनैः अर्धमधः शस्तैरपि विहीनसंख्यैर्नरो दुःखी स्यान्नातिहि
ज्ञा वधः शाकृद्वादशके मासि राजदंताद्यौ शस्तावर्धेन स्तुभोजन्ममेवोन्नतोत्तहत् सर्वे भवंति दशनाः शु
भौ वर्षद्वये जनिश्च भूति आ सप्तमाब्दसमामानेनिपतन्ति पुनरुद्गमं प्राप्नुवंतीति इति दंतलक्षणं अथ जिह्वालक्षणं
भविष्ये कृष्णजिह्वा भवेद्येषां शबलया च जिह्वया भवेत्पापस्य कर्त्ता वै स्थूलजिह्वश्च रूक्षकः प्रेष्यो दासः रू

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लकोरक्तवक्त्रा पद्मपत्रसमा जिह्वा सूक्ष्मा दीर्घा सुशोभना न स्थूला न च विस्तीर्णा येषां ते मनुजाधिपाः निम्ना त्रि
ण्या च ह्रस्वा च रक्ताग्रा रसना यदि सर्वविद्याप्रवक्ता स भवेत्पुनीत्र संशय इति गारुडे जिह्वा रक्ता समा सुभेति अप
ले समुद्रः श्वेतजिह्वा नरा ज्ञेयाः शौचाचारविवर्जिता इति सामुद्रतिलके जिह्वा पीता स पुमान् मूर्खो ऽङ्गः खाकु
ल.त. लः सततमिति जगन्मोहने समुद्रः कृष्णजिह्वो भवेत्क्लेशी रक्तजिह्वस्तु नायकः श्वेतजिह्वो नरो ज्ञेयः शौचा-
३५ चारसमन्वितः अत्र कृष्णजिह्वः ईषत्कृष्णजिह्वः श्वेतजिह्वः ईषत् श्वेतजिह्व इति व्याख्येयं ईषत्स्थूला न चाति दी
35 र्घा यस्य स्यात्स भवेत् अतिश्वेता निकृष्टा च गर्हिता रसना बुधैरिति समुद्रोक्तेः पद्मपत्रसमा जिह्वा अतिसूक्ष्मा
च शोभना सर्वविद्याप्रवक्तारस्ते भवन्ति नरोत्तमा इति इति जिह्वालक्षणं अथ घण्टिकालक्षणं घण्टिका
गलच्छिद्रमध्यगता प्रसिद्धा सामुद्रतिलके अरुणा नलाग्रगा प्रकाशा तीक्ष्णाग्रा घण्टिका सुभा स्थूला लम्बा कृ
ष्णा कठिना सूक्ष्मा विपिटा नृणां न सुभेति इति घण्टिकालक्षणं अथ तालुलक्षणं भविष्ये कृष्णतालुर्नरो य
स्तु स भवेत्कुलनाशकः दुःखभागी च सततं तथा नव्यपुकरस्तथा सुखभागी च विज्ञेयः पीनतालुर्नराधिपः
आरक्ते चैव हृत्स्थूले शोभने गुरुताल्वके विकृते स्फुटिते रूक्षे ताल्वके न प्रशस्यते सितताल्वर्नरपतिर्गजना-
लस्तथैव च पद्मतालुर्भवेद्राजा श्वेततालुर्धनेश्वर इति पद्मं रक्तोत्पलं सामुद्रतिलके रक्तांबुजतालुरलो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भूमिपतिर्विक्रमी भवति मनुजः विज्ञायः सिततालुर्गिजताल्वे मंडलाधीशः हृद्वं श्यावले परुषं मलान्वि
तं न प्रशस्यते ताल्व कृष्णं कुलनाशकं नीले दुःखावहं पुंसामिति इति तालुलक्षणं अथ हसितलक्ष
णं भविष्ये अकंपमनुभदं ज्ञेयं नराणां हसितं शुभ निमीलिताक्षं पापस्य हसितं हि सरोजमिति वराहसंहि
तायां हसितं शुभदमकंपं समीलितलोचनं तु पापस्य दुष्टस्य हसितमसकृत्सोन्माद स्यात् सकृत्प्राकमिति सामुद्र
तिलके हसितमलक्षितदशनं किंचिद्विकसितकपोलमतिमधुरं पुंसां धीरमकंपं शोपणास्यान्यथानाना
मिति इति हसितलक्षणं अथ नासिकालक्षणं भविष्ये पार्थिवाः शुकनासाः सुदीर्घनास्तु भोगिनः कु सा
ञ्चनासा नराधस्तु धर्मशालास्तु ते मताः ह्रस्वाश्च सिंहनासाश्च ये नराः वाणिज्ये सिद्ध्यन्ते तेषां ह्रस्वानां चैव विक्र
यः विक्रतनासिकायस्य स्थूलाग्रा रूपवर्जिता पापकर्मा स विज्ञेयः समुद्रवचनं यथेति वराहसंहितायां
सुखभाक् शुष्कसमनासश्चिरजीवी शुकनासस्य छिन्नानुरूपयागम्यगामिनो दीर्घयातु सौभाग्यं आकुंचित
या चौरा स्त्रीमृत्युः स्यात् चिपिटनासः धनिनोऽग्रवक्रनासा दक्षिणवक्राः प्रभक्षणाः क्रूराः अवक्रनासाः सा
न कुटिलनासाः प्रभक्षणाः बहुभाषिनः अथवा दूखाय संचयशीलाः ऋज्वी स्वल्पच्छिद्रा सपुटा नासा सुभा
ग्यानामिति सामुद्रतिलके तिलपुष्पनत्वस्य नासः शुकनासो भवति भूपतिर्मनुजः क्रमविस्तीर्णा समुन्नतं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्वर-
३५
35

यानासामध्येशिखनर्भवति हेयास्थिताग्रभागातिदीर्घह्रस्वावतिः स्वस्येति इतिनासालक्षणं अथस्तनलक्षणं
वराहसंहितायां पतितोरोत्तनेसकृतहिद्विपिंडितेह्रादिसानुनादंच दीर्घावृर्णःशमुकेविज्ञेयंसंहतेचैवेतिसमा
र्थः पतितामायानां प्लुतेसकृदेकवारमेव विज्ञेयं दीर्घावृर्णांतहिद्विपिंडितेह्रादिसानुनादंशमुकेसंहतेचवि
ज्ञेयं पिंडितेगुणितेद्विगुणितेद्विवारमित्यर्थः त्रिपिंडितेत्रिगुणितेत्रिवारमित्यर्थः तथाह्रादिशब्दोत्तरभुके ते
यासानुनादश्चानादिशब्दयुक्तो ह्रादपिशनैरुच्चार्यमाणोयः स्रोतःप्रथमायातिसोनुनादीतिस्वरलक्षणेप्य
गमिहितमस्माभिः तथाप्रमुक्तमतिदीर्घं तथासंहतसंहतशब्दयुक्तं तत्त्रदीर्घतिप्रवादिमध्यावसानेन।
लोपः ससंहतः उत्पलेपराशरोपि सकृत्प्लुतेभोगवतो हि द्विह्लादिविरावृवो चतः स्याद्रोगनाशायपरम
स्याद्रशोभनमिति सामुद्रतिलकेपि निर्ह्रादिसानुनादे सकृत्प्लुतेभोगवतोपनवतोहिः दीर्घावृर्णोप्रमु
केसुसंहतेत्रिर्भवेत्सैसां राजलितेलघुचनराणां प्लुतेचवर्भवतिभोगनाशाय दोषदमतःपरंस्यान्निर्हिदनमनु
नादसंहितमपीति इतिस्वरलक्षणं अथनेत्रलक्षणं भविष्ये दाडिमीपुष्पसंकाशेभवेतांयस्यलोचने भू
पतिः सचविज्ञेयः समदीर्घाधिपोऽथ वा आत्माताः कोपनास्तेषां कुकुराक्षाः कलिप्रियाः विडालनेत्राहि
स्राश्चभवेतिपुरुषाधमाः मधुवनकलाक्षाश्चनरास्तेमध्यमाः स्मृताः नश्रीस्त्यजतिसर्वत्रपुरुषमधुपिंग

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ले आपिंगलाक्षा राजानः सर्वभोगसमन्विताः रोचनाहरितालाभा गजपिंगायनेश्वराः रोचनागोरोच
ना वलसर्वगुणोपेताः पृथिवीचक्रवर्त्तिन इति गर्गसंहितायां शुभ्रप्रशंसा सासूक्ता तत्रस्थूनासिके स्थितत्रा
पिचलत्वषी समेगोक्षीरवर्णाभे स्निग्धनेकृशलतारके प्रसन्ने च विशाले च स्निग्धे चैवायनेशुभो वाञ्छाक्षाः कुकु
टाक्षाः श्वशयग्राक्षाः श्वेवयेनराः निर्घृणाः पापिनः क्रूराङ्गरेताः कलहप्रियाः शास्त्रवध्याश्चनयनैर्गर्हितैर्भेमिहि
षोरगेः येषां चार्द्धविषमानी नेत्रे स्वेतशांखसमप्रभे विगुन्तूर्णसवर्णाग्रिसुक्ताविहर्षवत्तथा मल्लिकादोद्व
ह्वा पिलाजाः स्फटिकसन्निभाः पाटलालाक्षयेमर्त्यास्तेधन्याः पुरुषाधमाः महद्भिर्नयनैर्वामैः स्त्रीजिताः पु
रुषाः स्मृताः वामैः वक्रैः रक्ताभैर्नयनैर्नूनं निर्घृणाः पापकारिणः पनदेवत्तश्चेष्टचनेत्रेस्यालक्षणं रणा
कर्णान्यभृतियारेखानेत्रेनृणां प्रशस्यते तयाविरहिते रूक्षं स्नानं निम्नं कृशं च यत् परस्थैनिः प्रकाशं च संहि
रये पुनिकानिमे वल्लनेशस्यतेनृणां द्व्यक्षद्भयभयावहं संदिग्धं फलमिति विषयायाग्राहकं पुत्तिकामधुमहिका
विशेषः पिंगैरेतैः प्रयासंयतिनृणां नेत्रांतरेखया अर्कमर्कटपिंगं वनरावयस्पापिंगले कृष्णसर्पनरकेचर्म
गलं वल्लवर्चसं श्वेतनीलं च मंगल्यं शितिनीलं च यद्भवेत् रक्तैः स्तनयनै धर्मैः कृसलतारैः सुवेधितः भोग
वानथमन्ययतश्चकोराक्षोनराधिपः वृषदंशरक्तौ चाक्षाः क्रूराक्षानरेश्वराः दर्दुरोमंडुकः स्निग्धरक्तेऽपि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गेस्वपत्सवद्भिः समैस्थिरैः श्यायतैः श्यायतैः दृष्टुभिस्तंगे हृत्स्वस्वकैः समंगलैः श्लक्ष्णैः सकरीराश्चनयनैः पार्थिवाः
स्मृताः करीरैः पतिविशेषः मजायालनदृष्टैस्ववो व्यसनीतिकरैः स्तुभैरिति गरुडपुराणे क्रूराः केकराक्षस्तथा हरि
णाक्षाश्च कल्मषाः जिह्मेक्षलोचनैः चौराः सेनान्यो गजलोचनाः केकरस्तिर्यग्दृष्टिः गंभीराक्षा ईश्वराः स्युर्मित्रि
ल॰च॰ णः स्थूलचक्षुषः नीलोत्पलाक्षा विद्वांसः सौभाग्यं श्यामचक्षुषामिति वराहसंहितायां पद्मदलाभैर्धनिनो रक्तां
३८ तविलोचनाः श्रियो भाजः अतिकृष्णतारकाणामक्ष्णामुत्पाटनं भवति मंडितं स्थूलदर्शनं श्यामाक्षाणां भव
38 ति सौभाग्यमिति महाभारते वरमेकनेत्रकाणाः स्यात्काणः स्यान्नत्वकेकः वरमेकचक्षुकाणश्च केकरो न तु पिंगलः
पक्षद्वर्यौ धनोराजाकर्कशो मधुपिंगलः न केवलं कुलस्यांते त्वत्रस्यांतेकरिष्यतीति जन्मोह्ने समुद्रः कु
कुलातः सदाद्वेषी मानप्रवैर्नसंशयः नश्रीस्तनतिरक्ताक्षं पुरुषं मधुपिंगलमिति सामुद्रतिलके अथमा
मेरुकाक्षाः काकाक्षा धूसराक्षाश्च वज्रवयसो धूम्राक्षाः समन्नताक्षा भवंति नन्दवयस इति अत्र पुरुषाणाम
नेकदुर्लक्षणसद्भावे यदि नेत्रे एकलक्षणो भवतस्तदा सर्वदुर्लक्षणनिरासो भवति तदुक्तं गर्गेण एकतोऽ
ल्पलक्षणशतं सौम्यं चक्षुस्तथैकतः दुर्लक्षणशतं हन्यात्तरः सौम्येन चक्षुषा तस्मात्ते प्रयत्नेन लक्ष्मप्रशेन का
लविदिति इति नेत्रलक्षणं अथदृष्टिलक्षणं गर्गसंहितायां दृष्टिः पीनासितायन्यादीनां वैनिस्वकारिका

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गृध्रामदृष्टनेत्रोकृपणोदाताः स्युः स्निग्धदृष्टयः सर्पदृष्टिर्नरः क्रूरोदुःशीलः स्यात्तथैव च अधोदृष्टिर्नरः क्रूरो
विहाञ्चासाद्यमीलने कदेवदृष्टिः सुभगोलक्षणैः परिकीर्तितइति कदेवदृष्टिः स्थूलदृष्टिः सामुद्रतिलके
विशेषः शावदर्शनात्सुभगत्वंस्निग्धदर्शनाद्भवतिभूरिभोगित्वं स्थूलदर्शनाद्धीमत्वंदीनदर्शनाद्धनविहीनत्वं ऋजु
पश्यतिसरलमनाः पश्यन्नूर्ध्वंसदैवपुण्यपापः पश्यन्नधःसपापपत्तिपंकपश्यतिनरःक्रोधी दुष्टोदारुणाद
ष्टिः कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियोभवति अहिदृष्टिर्दर्योगीविशालदृष्टिः सदापापदृइति इतिदृष्टिलक्षणं अथप
क्ष्मलक्षणं सामुद्रतिलके सुदृढैः सूक्ष्मैर्नयनच्छदस्थितैः पक्ष्मभिर्घनैः सूक्ष्मैः सौभाग्यंचिरमायुर्लभतेमनुजो
धनेशत्वं पक्ष्मभिरपमाविरहिताः पुनरगाम्यनारीरताः पापाः इतिपक्ष्मलक्षणं अथनिमेषलक्षणं सामुद्र
तिलके अनिमेषोधनरहितः पुरुषः स्यादेकमात्रनिमेषोपि नियतंद्विमात्रनिमेषः परजनमाश्रित्यजीवतिसः
धनिनस्त्रिमात्रनिमेषास्तथाचतुर्मात्रनिमेषवंतोपि नतुपंचमात्रनिमेषाश्चिरायुषोभोगिनोधनिनइति
अत्रमात्राशब्देनअल्पः कालविशेषउपलक्ष्यते तत्परिमाणंचसामुद्रतिलकेउक्तं जानुप्रदक्षिणीकृत्यय
त्छोटिकांकरोतिदत्ते तदिहमिहसमयमानंमात्राशब्देननिगदितमिति हस्तेनजानुप्रादक्षिण्येनयच्छोटि
कादानंतत्परिमितः कालोमात्रेत्यर्थः भविष्ये द्विमात्रोन्मेषिणोनित्यंजीवंतिपरमाश्रिताः त्रिमात्रास्पंदनाज्ञे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

याः पृथवाः सुखभागिनः चत्वर्मीआवशेषास्तु निमेषैरीश्वराः स्मृताः दीर्घायुषो धर्मरताः पंचमात्रानिमेषिणइ

ति इतिनिमेषलक्षणं अथरुदितलक्षणं भविष्ये अश्रुभावहमनुष्याणां रोदनं स्यात्तथाश्रुणः अदीनानन्यकस्नि

ग्धं च समस्मितं च विशेषतः साश्रुदीनं तथा रूक्षमस्निग्धं च तथा गुरु अशुभावहं च विज्ञेयं नराणां वारिधारण·

लक्ष. मिति इतिरुदितलक्षणं अथभ्रूलक्षणं भविष्ये भ्रुवौ बालेंदुसदृशौ धनिनां ऋषभोत्तम दीर्घाभिर्धनिनो

३२ ज्ञेयाः संसक्ताभिश्च सत्त्वत खंडाभ्यां तर्थहीनाः स्युर्निराभ्रूभ्यां सदोत्तम मध्येनते भ्रुवौ येषां परदाररतास्तत

37 इति वाराहसंहितायां विषमभ्रुवो दरिद्रा बालेंदुसमभ्रुवः सधनाः इति सामुद्रतिलके बालेंदुनते विस्तीर्णे च पृथु न

लोन्नते सम्वेपणामे नास्यवशवितिर्गते दले द्वे च भ्रूदले दिशतः त्र्यणामपुते त्रिरोमरुडननरोमाञ्चिते भ्रुवौ श·

ले हीने स्थूले लग्ने च खरपिंगलरोमके नश्रुभे इति इति भ्रूलक्षणं अथ कर्णलक्षणं वाराहसंहितायां निर्मां

सैः कर्णैः पापमृत्यवश्चापटैः सुखभोगाः कृपणाश्च ह्रस्वकर्णाः शंकुश्रवणाश्च भूपतयः रोमशकर्णाः दी

र्घायुषो धनभागिनो विपुलकर्णाः क्रूराः सिरावनद्धैर्व्यालैर्मांसलैः सुखिनः इति भविष्ये दीर्घायुषो दी

र्घायुषो दीर्घकर्णा लंबवर्णास्तथास्विनः इति सामुद्रतिलके परिशुष्कर्णापाली पिप्पलिकाच यवयवाः स्युः स+

स्थानाः लवविवराविस्तीर्णाः कर्णाः प्रायेण भमिभुजां आद्यः प्रलंबकर्णाः सुविशुभावर्तपीनमकुर्णाः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मतिमान्मूषककर्णाः स्युर्भूपतिः शंकुकर्णः स्यात् येषां स्थूलच्छिद्राः कर्णाः स्युः कर्णशष्कुलीनाः स्वल्पायुषोदरि
द्रा विलोकमाना विरूपास्त इति इति कर्णलक्षणं अथ ललाटलक्षणं भविष्ये ललाटेनार्धचंद्रेण भवंति पृ
थिवीश्वराः विपुलेन ललाटेन महान् यतिः स्मृतः अल्पेन तु ललाटेन नरो धर्मरतस्तथा अल्पं ललाटं विषमं वि
लेपि हि शंवापि ललाटे यस्य दृश्यते ईश्वरं तं विजानीयाद्भोगिनं कीर्तिमाश्रितं विपुलैरुन्नतैः प्रोक्तैर्धन्या
स्युर्नात्र संशयः प्रांशोर्ललाटास्थि निम्नैः स्युर्नार्थसंपन्नकाउन्नतैश्च नराधिपाः विषमललाटा निस्वाः सदास्यु
रेवं मतम् आचार्याः शुक्तिसदृशैर्नराः स्युर्नात्र संशय इति वराहसंहितायां शुक्तिविशालैराचार्याः शिरास
न्नैरधर्मरताः शुक्तिविशालैः शुक्तिवद्विशालैः उन्नतशिराभिराढ्याः स्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च ललाटगा
ताभिः शिराभिः स्वस्तिकाकाराभिश्च शाश्वतधनिनो ज्ञेयाः निम्नललाटा वधबंधभागिनः क्रूरकर्मनिरताश्च अ
भ्युन्नतैश्च भूपाः कृपणाः स्युः संकटललाटा इति जगन्मोहने समुद्रः निम्नाविषमभालेन दुःखिता ज्वरजर्जराः
परकर्मकरा नित्यं शाप्यं ते वधबंधने ज्वरजर्जराः ज्वरपीडिताः अल्पेन तु ललाटेन अल्पायुस्तु भवेन्नर इति
सामुद्रतिलके विशेषः श्रीवत्सकार्मुकायाः यस्य शिरा रोमभिः कृता भाले रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी वा जाय
ते सपदीति इति ललाटलक्षणं अथ शिरोलक्षणं भविष्ये उन्नतैरनिम्नैः शिरस्तत्तोसंहतमेवच छत्राकारे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेत्रैर्ज्ञाणं गगवाचं मेड्रं लेस्यते संदृतेतरं विषमंतरविद्राणां शिरोदैर्घ्यं तु दुःखिताः गजकुंभनिभं मस्तकं समं सर्व
त्रभोगिनः चिपिटं तु शिरो यस्य हन्याद्धि पितरौ नरः घटाकृति शिरो ध्यानं मम सक्रुत्नेव वने नरः निम्नं शिरोनर्थदं स्या
न्नराणां ऋषभोनमेति वराहोपि घटमद्रीचाधरः विर्द्धिमस्तकः पापकृद्दुनपरित्यक्त इति सामुद्रतिलके य
न विरहितो हिमौलिः पापरतो मीनमौलिरतिदुःखी अश्वहृत विर्घनमौलिर्घनेन नतमौलिः सदानिर्घ इति इति
लक्ष० शिरोलक्षणं अथ केशलक्षणं भविष्ये कपिलैः स्फुटितै रूक्षैः स्थूलैश्च चिक्कुरैः खरैः दुःखिताः पुरुषा ज्ञेया ये
३८ म श्मश्रुभिरेव च विरलामृदवः स्निग्धा भ्रमरांजनसुप्रभाः केशा यस्य तु स्पष्टं ते स भवेत्पृथिवीपतिरिति वरा·
38 हसंहितायां एकैकभवैः स्निग्धैः कृष्णैराकुंचितैरभिन्नाग्रैः मृदुभिर्नचातिबहुभिः केशैः सुखभाग्नरेंद्रो वा ब·
हुमूलविषमकपिलाः स्थूलस्फुटिताग्रपरुषह्रस्वाश्च अतिकुटिलाश्चातिघनाश्च मूर्द्धजा वित्तहीनानामि·
ले ति इति केशलक्षणं अथ सर्वगात्रलक्षणं विस्पष्टमीनराशिरुग्राणां ये: रूक्षे सिरातते गात्रे तथा मांसविव
र्जिते दुर्गंधि चाशुभं सर्वं विपरीतं प्रशस्यत इति गारुडे यद्गात्रं महारूपं शिरालं मांसवर्जितं तत्तस्यादशुभं
सर्वं ततोन्यथेति इति सर्वगात्रलक्षणं अथ पादादिप्रमाणं सामुद्रतिलके अंगोपांगानामिह विस्तारायामप
रिधिभेदेन मानं यथानुरूपं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि स्वापार्ष्णिमेष्ठेनेतलमत्र चतुर्दशांगुलायामं विस्तारेणाष्टं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुलमंगुष्ठो द्व्यंगुलायामः पंचांगुलपरिणाहः पादेनैतन्नखोंगुलं दैर्घ्यात् अंगुष्ठसमा ज्ञेष्ठा मध्यानखोऽष्टांशो
ना अष्टांशोनानामा कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना सर्वासामप्यासां नखाः स्वपर्वत्रिभागमिताः सप्तांगुलपरि
णाहा प्रथमांगुलविस्तीर्णांगुली भवति अष्टाष्टभागहीनाः शेषाः क्रमशः परिज्ञेयाः जंघांतः परिणाहो ध्रुवम
ष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् विंशतिरेवोपगतो जानुर्द्वाविंशहस्तरपि अष्टादशांगुलमिता विस्ताराज्जानुघनेक
टिः पुंसां नाभेरंतः परिधिः षट्चत्वारिंशदंगुलकः पुंसां द्वादशाकुचयोरंतरं वदैर्घ्येण उरसि द्विगोपरिष्टा ·
स्त्वंगुलो भवति कक्षांतः विंशतिरुरस्थलस्याद्विस्तारादंगुलानि चतुरधिकः षष्ठ्यामस्य परिणाहे षडधिक
पंचाशदंगुलिके पर्वप्रथमं बाहोरष्टादशांगुलानि दैर्घ्येण शेषं पुनर्हीनो यं समतलं पंचमध्यमांगुलि
का इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात् पंचांगुलविस्तारं पाणितलं शस्तं खेन मध्यांगुलीवि
हीना प्रदेशिनी भवति पर्वणार्द्धेन तत्समानानामा कनिष्ठिका पर्वपरिहीना अंगुष्ठस्यायामोंगुलानि चत्वारि ज्ञा
यते पुंसां निजपर्वार्द्धपरिमिता भवंति सर्वेपि पाणिनखाः ग्रीवायाः परिणाहोंगुलानि चतुरधिकविंशतिः श
स्तः नासापुटद्वयं - विस्तारायंगुलमाने आचिबुकपश्चिमकचप्रांतं द्वाविंशदंगुलो मूर्द्धा कर्णद्वयसमध्ये
पुनरष्टाधिकदशांगुलिकः पुंसामंगुलमानेस्पष्टं शिष्टैः प्रविनिर्दिष्टं इदं पुनरुपयोगाहे दिक्मात्रमिदम्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यात्पुक्तति इति पादाग्रेण प्रमाणं अथावर्त्तलक्षणं विवेकविलासे आवर्त्तो दक्षिणे भागे दक्षिणः शुभकृन्न
णां वामे वामो निंद्यः स्याद्दिग्मध्ये तु मध्यमः इति सामुद्रतिलके रोमतत्त्वालभवः स्यादावर्त्तः शुभस्तथा शस्तो द
क्षिणवलितः स्त्रियोऽव्यक्तः परो न शुभः करतलपदस्फुटितयुगे नाभौ वा तद्भवोन्नृणां सः स्यात् अपरौ द्वावपि
लक्ष· ३८ 39 लक्षणविद्भिर्ज्ञेयौ यथास्थाने सव्यापसव्यभागे शिरसि यस्य दक्षिणावर्त्तः श्वेतातपत्रलक्ष्यालक्ष्मीः कर
वर्त्तिनी तस्य रोमावर्त्तः स्त्रियोः कुचयुगमध्ये प्रदक्षिणो व्यक्तः यस्योर्णाग्रेः स्वर्णांसो तु पिको वेभवो भर्त्ता भुज
युगे यस्य स्यादावर्त्तो दक्षिणप्रदंगदप्रतिमं नियतं सोऽखिलभूमिपुरुषो निजवाहुनावहति यस्य करांभोजत
ले दक्षिणवलितो भवेदिति व्यक्तः परिचितशौचाचारो यमपरः स्यान्महीनाथः भागवत्तो पंचांगुलिशिरस्सु
सोऽत्र्याय दक्षिणावर्त्तः प्रायः पुंसां वामावर्त्ताडः खंयथुनरेते श्रुतिश्रुगनाभ्यावर्त्ताः प्रदक्षिणाः श्रेयसे भ
वंति नृणां कृकाटावर्त्तोप्येकः श्रेष्ठतरो दक्षिणः शिरसि शीर्षे वामे भागे वामावर्त्तो भवेत्स्फुटो यस्य स दुःखी
सोऽभिलोस्फुटो निर्लक्षणो लभते वामो दक्षिणपार्श्वे प्रदक्षिणो वामपार्श्वके यस्य न नु तस्य चरमकाले भोगो·
नात्र संदेहः अंतर्ललाटपदेऽपमावर्त्तो ललामवद्यस्य वामोऽथ दक्षिणो वासौ लापुङ्गःखितो वा स्यात् यस्या
वर्त्तो दक्षिणयं सव्यक्तं भवति पादतलमध्ये नक्तंदिनमतिदीनो भूमिं सभ्रमति मतिहीन इति इत्यावर्त्तलक्षणं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ पिटकलक्षणं पराशरसंहितायां पिटकासितरक्तकुलवर्णाद्विजादीनांक्रमात्स्थानवर्णविशेषेण
क्तसकलफलदाभवंति तत्रमूर्द्धिसव्यतःस्त्रियःसव्यतोन्यभिषेकागमेकुर्यात् शिरसिधनागमं केशांतेसौ
भाग्यं ललाटेधनसंचयं भ्रुवोर्दौर्भाग्यं संगमेदोःशील्ये संगमोभ्रुवोरेव भ्रूमध्यभागइत्यर्थः इष्टसंगमे
गमंचनेत्रपुटयोः नेत्रयोरिष्टदर्शनमित्यर्थः शंखदेशेप्रव्रज्यां चिंतामश्रुपाते -योः स्तननाशं नासावं
शेवस्त्रलाभमग्रेस्त्र्यभिसंगमं अग्रेनासाग्रइत्यर्थः चिबुकोत्तरोष्ठयोरललाभं हन्वोर्धनागमं गलेन्नपान
माभूषणंच शिरःसंधौग्रीवायांचोपघातंशस्त्रे कर्णयोस्तद्भूषणमानंदश्रवणंच पार्श्वयोःशोकं उरसिइ
ष्टसंगमं स्कंधयोर्भैक्षवर्या कक्षयोरर्थहरणं स्तनयोःपुत्रलाभं पृष्ठदेशेदुःखशयनं अरिविनाशंबाह्वोः
प्रबाह्वोराभरणं मणिबंधयोर्नियमने नियमनेबंधनमित्यर्थः पाण्योर्धनागमं सौभाग्यंचांगुलीषु शोकमु
दरे अन्नपानावाप्तिंनाभ्यां चौरैरर्थहरणमधःअधःनाभेरधः धनधान्यावाप्तिंबस्तिशिरसि सौभाग्यमर्थलाभं
चवृषणयोः पुत्रजन्मस्त्रीलाभंमेहने गुदेसौभाग्यं यानांगनालाभमूर्वोः जान्वोररिभिरुपघातं शस्त्रेण
जंघयोः गुल्फयोरध्वबंधपरिक्लेशागमं स्फिजोरर्थहरणं पार्ष्णितलयोरगम्यागमने प्रपदतलेःधनागम-
ने नियमनमंगुलीषु अंगुष्ठेज्ञातिश्रेष्ठ्यं दद्युः इत्युक्तिप्रत्येकंसंबंधः वराहसंहितायामप्येवमेवनिरूपितं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उत्पातगंडपिटकादक्षिणतो वामतस्तु मीचाता: धन्या भवंति पुंसां न हि परीताश्च नारीणां इति पिटकविभागः
प्रोक्तश्चामधुना पुंसां तिलकविभागोप्येवं प्रकल्प्यः भवति मशकलक्ष्मावर्तजन्मापि न हि तन्निगदितफलका
रि प्राणिनां देहसंस्थमिति विवेकविलासे उत्पातपिटकौ लक्ष्मतिलको मशको व्रणः सर्पाणं स्मरणं गुह्य: स्व
भावयोगे प्रदक्षिणा इति इति पिटकलक्षणं अथ पादाद्यंगलक्षणानां विशेषफलं हेमाद्रौ समर्थितं यानवाह
नभूमेशो वात्सल्यचातिसुवर्णान्वितः निकटाराममोगीत्यादनं चातुर्याण्वितः धैर्यमायुः सुवर्णवासिनिर्णीभि
र्यस्थिरक्षन्नतता आज्ञाप्रदाने भृत्येभ्यो गुणाः सुजानु संपदि जानुसंपन्नजानुश्रुभलक्षणा नाहि परवेपी नं सम
वेत्स्यपराजयः प्रधानसमदेशानं फलमूर्वोः प्रवक्षते राजा स्याद्राजपुत्रो वा वऊरु आर्यो वक्तपजः कांतामेना
कूरोर्यंशः श्रेष्ठोक्षणालक्षणेः शयनासनयानानि वस्त्रस्त्रीमित्रसंपदः आसादयत्यपत्येन स्फिक्कटीयः
स्पशोभने भोगसंपयोर्थसंपत्तिरापद्धातिरेरोगता गुणावज्जदरंयपत्यनसेतन फलमादिशेत आस्यः शो - स्फ
नेमेधाशोकत्यागोदमः शमः अविषादश्च कुक्षेषु शालोहृदयजे गुणाः कुक्षेः स्वं स्ववमैश्वर्यं विज्ञाने लभ
तेस्तनसंपदा अंसयोर्वेतज्जत्रुणे संपदा स्तनवत्फलो पृष्ठं जरपार्श्वानां संपदा कक्षयोरपि आस्यभोगान्सद
लंवदाहेमादिभूषणं अन्नपानार्थसौख्यानि सुग्रीवो लभते नरः मज्जेशानं यने शानं विविधं पानभोजनं न

लक्ष. ५. ५०

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रः प्राप्नोतिसंपत्तैर्जिन्हादंतौष्टतालुभिः येषांचसंपदस्तेनाः कर्णेरमश्रूर्द्धतनुभूर्वा सुखमाप्यर्थनंतेषांप्रि
यस्यवर्णमेवच अथलक्षणसंपन्नंशरीरंयस्यदेहिनः चक्षुषोःसंपदः श्चैवयेष्वर्यसोऽश्नुतेमहत् ललनशो·
शालललाटानांसंपदामहैनैः सह आयुर्दीर्घसमासाद्यसनतेसुखमेधते आज्ञागतोयशोगंधेसुखंवर्णे
स्वरेधने भाग्यागमस्तथानूकेनिस्तंनूर्णप्रतिष्ठितमिति अथान्योपिविशेषउक्तोगर्गसंहितायां तेजसा
तेजआदत्तेपरेषांवपुषावपुः प्रभयाचप्रभांहन्यात्स्वरस्तास्वरस्वती गत्यागतिंधनैर्वित्तंपरेषांनात्रसंशयः
रक्ताश्चोनजहात्यर्थश्रीः कनकपीतकान् नदीर्घवाक्षैरैश्वर्यधनमाप्नोत्यचितःसुखं नस्तनासोवहेद्वारंसु॥
खोधीरस्तुसौख्यंतो सुखान्यैश्वर्यमर्थान्सात्विकेनास्तिदुर्गतिः कुतवीनास्तिधनवान् स्नेहवान्दुःखातो
नास्तिगतिमात्रास्यनीश्वरः शनैर्गौरवाणिशरीरंधनेदंतरोमनखास्तथा इंद्रियाणिचवुद्धिश्चसर्वेषांचिरजीवि
नां महाकर्णमहानासामहाचरणपाणयः सुवहद्ग्रीवाश्चविज्ञेयास्तेचिरायुषः सौभाग्यंविंदते॰स्नि·
ग्धांविद्यामैश्वर्यमेवच दंतैर्भोजनमाप्नोतिस्नेहेनचपरंसुखं वलमांसेतिमांसस्थस्थूलमांसःशिरातनः
सर्वेद्रंतकोनामसमुद्रमपिशोषयेत् येनकेनचिद्दत्वेनशरीरंयस्यवर्द्धतेसर्वेद्रंभकोनामसर्वकल्या·
णवर्जितः अपत्यंजनेविद्याहिन्नानेधमसंचयः पूर्वंवयसिवर्जितेसर्वेषामत्सजीविनां व्यंजनेप्रमस्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष·
५८
५१

प्रभृति अतिमेधातिकीर्तिश्चस्वल्पविक्रमोऽतिसत्त्ववानिव तथाजरायमस्तूतिश्चस्वलक्षणानिगलस्यपृष्ठः यथासत्त्वंतथा
शीलंयथावर्णस्तथाधनं यथागंधस्तथासत्वंविनयश्चतथाभुवं यथाचारस्तथाशौचंकीर्तिर्भवतिकर्मणाय
थामांसंतथासौख्यंविनयश्चतथाफवं निर्हीणोद्वेष्यसंतप्तः क्रोधनोनिःश्रीकितः परभाग्योपतापीचषडेतेनि
त्यदुःखिताः अतिदीर्घातिह्रस्वेषु अतिस्थूलकृशेषुच अतिकृष्णातिगौरेषुसदासत्त्वेनविद्यतइति वराहसंहि
तायां आंतस्ययानमशनंचवसुद्विजस्यपानंचतद्वपरिगतस्यभयेषुरक्षा एतानियस्यपुरुषस्यभवंतिका
लेधन्यंवदंतिखलुतंनरलक्षणज्ञाइति प्रयोगपारिजाते उरोविशालोधनधान्यभोगी शिरोविशालेन्नृप
पुंगवःस्यात् कटीविशालोबहुपुत्रभोगीविशालपादस्तुधनीस्त्रीस्यात् अतिमेधोऽतिकीर्तिश्चविक्रमी
चसत्त्वीनया अतिस्निग्धावरदृष्टिःस्यात्सनरोभाग्यवान्भवेत् अतिकृष्णमतिश्वेतमतिरक्तंनयैवच इत्थंवा
र्णेनरोगीसमुद्रस्यवचोयथा विवेकविलासे सात्त्विकःसुकृतीदाताराजसोविषयीभ्रमी तामसःपातकी
लोलः सात्त्विकोमीप्रसन्नमइति सामुद्रतिलके शुभलक्षणमगेभ्यः सौंदर्येणाधिकंमुखं यस्यसत्ता
तिप्राधान्यंप्राप्नोतिसथान्यधनवत्वासत्त्वरजस्तमश्चेत्यमीनरागांत्रयोभवंतिगुणाः क्वचिदेकः क्वचिद्द्वौ
त्रयः समंक्वापिहिदृश्यतेयः सत्त्वगुणोपेतः सदयालुःसत्यवाक्स्थिरःसरः देवगुरुभक्तिपुतोव्यसनेप्रुद

५८

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

येचक्रतपेर्यः काव्यकलासुप्रवणः कुलनारीकृतरतिः सदाशूरः शोणोनद्युतः सततंरजोपिकः कथ्यतेसप्रमा
न् मूर्खस्तमोन्वितः स्यात्रिद्रालुर्वंचकोऽलसः क्रोधी पतैर्मिश्रैर्वर्णैः शोभेदाश्चामेनृणांमिश्राः वृद्धिप्रतोपदी
र्घोऽरूलोयञ्जायतेनरोमूर्खः पिंगः शुचिः सुशीलकाणोद्वोपल्लदाशुर्यं पदंतरोपिमूर्खोरोमप्रुतोजायतेय
द्दलाग्रः पवित्रश्चरः सदायस्तदङ्गतंतंभतेभुवनेपृथुपाणिः पृथुपादः पृथुकर्णः पृथुशिराः पृथुस्कंधः पृथु
वक्षाःपृथुजठरः पृथुभालः पूजितः पुरुषः एकांतेभजतिश्रीः प्रलंबबाहुंभजतप्रधीशत्वं पीनांगंभजतिक्
बिर्मांसोपचितेचभजतिसौभाग्यं स्निग्धसंधिर्वंधोयः कश्चिन्मांसलोमृदुस्निग्पः अतिसुंदरः प्रकृत्यासमु
त्वाद्योजायतेप्रायः अत्रोक्तलक्षणेषुलक्षणानामन्येनफलंवक्तव्यं नद्युक्तंसामुद्रतिलकेदेहस्थितेषुतेषु
सत्तनमशुभेषुशुभेषुलक्षणेषुनृणां ज्ञात्वातरतमभावेनफलमपिनिर्दिशेत्प्राज्ञइति नत्रापिपदेवशुभ
मशुभंवालक्षणंबलवत्तदेवफलदं तथाचोक्तंविवेकविलासे पुष्टंयदेवदेहेस्याल्लक्षणंवाप्यलक्षणंइत
रेहाप्यतेनेनबलवत्फलदंभवेदिति सामुद्रतिलकेविशेषः यल्लक्ष्मपुनः शुभमपिकरेरवाप्रमेतिकेविसंव
दति वाह्याभ्यंतरमपरंतत्रसमुद्रेणनिर्दिष्टमिति अथराजलक्षणं भविष्यपुराणे रुद्रउवाच पुंसांप्रुता
नीहविभोलक्षणानिनरप्रसान शुभानिवांगजानानिब्रूहिमेवदतांवर ब्रह्मोवाच शृणुवत्सांगजानानिपा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्थिव सम्भूतानि वै पार्थिवोत्तम यतेयैश्च नराणां मध्यमा गतः त्रीणि यस्य महाबाहो विपुलानि नरेश्वर उन्नतानि
न यस्य षट् च गंभीराणि त्रीणि च चत्वारि चापि ह्रस्वानि सप्त रक्तानि वै विभो दीर्घाणि चापि सूक्ष्माणि भवंति य
स्य पंच च वदने च ललाटे च देवो न संशयः तथा विस्तीर्णमेतत्त्रितयं वीरयस्य नरेश्वर स राजा नात्र संदेहः शृणु
लक्ष- ष्व वोन्नतानि च कृकाटिकानयाचास्यं नखा वक्षोथ नासिका कक्षौ वापि महाबाहो षडेतानि विदुर्बुधाः ना-
५२ भिः सत्वं स्वरश्चेति गंभीराणि त्रीणि वै लिंगग्रीवा पृष्ठजंघं ह्रस्वमेतच्चतुष्टयं नेत्रांतौ हस्तपादौ तु तालुन्योष्ठौ
५२ च सप्तोत्तम जिह्वानखोष्ठरक्तानि समानि तु महामते नेत्रांतौ नेत्रप्रांतः अपांग इति यावत् नासिका लोच
ने वा कुन्तलयोरंतरं स्तनुः इति दीर्घमिदं प्रोक्तं पंचकं भूम्लोशह त्वचा केशरुहाः केशा दशनाश्च सप्तोत्तम सू
क्ष्माण्येतान्यंगुलीनां पर्वाण्यपि विदुर्बुधाः द्वन्ते राजा संस्कृत हि त्रिनी दिनं हादितेन तथा निर्दीर्णान्त प्रमुखं च सह
ने च विदुर्बुधाः अत्र व्याख्येयविषयस्तु शर्वीकद्वतनलक्षणादवगंतव्यः नेत्रैः कनकवर्णाभैर्नराभूपतयस्तथे
ति भवंतीति शेषः इदं तु वत्सनने च लक्षणं राजलक्षणं शुकनासद्रुपयोगित्वेनोक्तमित्यपौनरुक्त्यं स्कांदे काशी
खंडे विश्वानरं प्रमाह नारदः पंचसूक्ष्मः पंचदीर्घः सप्तरक्तः षडुन्नतः त्रिपृथुर्लघुर्गंभीरो द्वात्रिंशल्लक्षण
स्त्विति त्वक्केशांगुलिदशनाः पर्वाण्यंगुलजान्यपि तस्य पंचसूक्ष्माणि दिकालपदमाण्यया पंचदीर्घा

५२

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वीशुषोस्यै भुजौ नेत्रे हनुर्जानुर्नासा च तनयस्य ते पाणिपादतले चव नेत्रांते नाल्नु जिह्वा पंचैते रक्तं सप्तमाहुर्णाव
सनाभिमस्मिन् रामस्तु वपदं वक्षः कृकालिक कंधक रवक्रं षडुन्नतं ललाटं कटिर्वक्षोभिस्त्रिविस्तीर्णाय·
स्यात्सौग्रीवा जंघा मेढ्रमेढ्रनेस्य त्रिभिर्ह्रस्वो यमीरितः स्वरेणसत्वनाभिभ्यां त्रिगंभीरः शिष्टः स्मृतः इति
जलक्षणं अथ सर्वोत्कृष्टपुरुषलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे पुष्कर उवाच आदावेव महाभाग पुरुषाणां तु लक्षणं
निबोध त्वं मे गदतो भृगुवंशविवर्द्धन एकाधिको द्विशुक्लश्च त्रिगंभीरस्तथैव च त्रिकस्त्रिप्रलंबश्च त्रिभिर्व्या
प्नोति यस्तथा त्रिवलीवान् त्रिविनतः त्रिकालज्ञश्च भार्गव पुरुषस्योत्तमलक्षणो विपुलस्तथा त्रिषु चतुर्ले
खस्तथा राम तथैव च चतुःसमः चतुःकिष्कुश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुःकृष्णस्तथैव च चतुर्गंधश्चतुर्ह्रस्वः पंचसूक्ष्मस्त·
थैव च पंचदीर्घोऽष्टवंशश्च षडुन्नतस्तथैव च चतुरुन्नतः समसत्वो ह्यष्टवंशश्च नवस्थानामलस्तथा दशपद्मो दशाहृदः न्यग्रोधप
रिमंडलः चतुर्दशसमद्वंद्वः षोडशाक्षश्च शस्यते श्रीराम उवाच एकाधिकादयो येतोक्ताः पुरुषस्य तवया गु
णाः तानहं श्रोतुमिच्छामि यथावद्धर्मिणां वर पुष्कर उवाच धर्मे वार्थे च कामे च जनः सर्वोभिमन्यते एका
धिकः स विज्ञेयो यस्तु धर्मे विशेषतः तारकाभ्यां विताने द्वे शुक्लाभ्यां दशनास्तथा द्वात्रिंशद्वा यस्य स शुक्लद्वि
कः सत्वकीर्त्तितः उरो नासा ननयाः सत्वांगंभीरं यस्य देहिनः उरो नाभि स्वरा यस्य त्रयं गंभीरा यस्य देहिनः स्तिपादं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष· ५३

53

नरश्रेष्ठोच्यते सत्त्वधर्मज्ञस्त्रिगंभीरो नरोत्तमः । अनसूयादयाक्षान्तिः त्रिकमेकं प्रकीर्तितं मंगलाचारशौचेचअस्पृहे
त्वपरेत्रिके अनायासस्त्वकार्पण्यशौर्यंचेतित्रयस्त्रिकाः । अनायासमकार्पण्यमैश्वर्यंचत्रयस्त्रिकाः इति पाठांत
रे त्रिप्रलंबो भुजाभ्यां तद्वृषणोनचकीर्तितो दिग्देशजातिवर्गेष्वथतेजसायशसाश्रिया व्याप्नोतियो भृगुश्रेष्ठ त्रि
भिर्व्याप्तोऽयमसौनरः । उदरेवलयस्तिस्रोगंभीरायस्यदेहिनः । सउच्यते भृगुश्रेष्ठ त्रिवलीवान्नसंशयः । देवतानां गुरू
णांच द्विजानांचतथानतः । पुरुषोभार्गवश्रेष्ठप्रोक्तस्त्रिविनतः सदा । धर्मस्यार्थस्य कामस्य सम्यक्कालविभा
गवित् सेवतेयस्तुधर्मज्ञप्रोच्यतेसत्रिकालवित् । उरोललाटंवक्त्रंचविस्तीर्णानियस्यदेहिनः । कथितः स भृगुश्रेष्ठ
विपुलस्त्रिषुमानवः । द्वौपाणीद्वौचपादौध्वजच्छत्रादिभिर्युतौ लेखाभिर्यस्यनिर्दिष्टश्चतुर्लेखः समानवः ।
छत्रादिभिरिमंव्याप्तादिपदेनचक्रपद्मर्मत्स्यादीनांग्रहणं तथाच वक्राःसितोमरणदाक्षुपापाशवज्रैः शस्त्रा
घातः परस्परपाशमृणालपद्मैः । श्रीवत्समत्स्यमकरध्वजकंजराद्यैर्हस्तांघ्रिलांछितकराः स्वविभागवेद्याः इति ग्रंथ
स्थान्तरदृष्टंकरिष्यस्तथासमा पुरुषः स भृगुश्रेष्ठ चतुःसमउदाहृतः । बाहूजानूचमेढ्रंच चत्वार्यस्य समानि
तु पुरुषः स भृगुश्रेष्ठ चतुःसमउदाहृतः । षण्णवत्यंगुलोत्सेधश्चतुः किष्कुप्रमाणतः । प्रमाणयोगाद्धर्मज्ञचतुः
किष्कुः सकीर्तितः । किष्कुर्हस्तः । चतुः किष्कुः स्वहस्तेनहस्तचतुष्टयप्रमाणः । दंष्ट्राश्चतस्रःशुक्लाभायस्यनेत्रमः स

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उन्नताः किंचिद्यस्य स धर्मज्ञश्चतुर्दृढः प्रकीर्तितः नेत्रनासे भ्रुवौ श्मश्रु कुक्षाः केशास्तथैव च यस्यैते समकाः कु-
ला: श्रेष्ठोऽयं मनुजोत्तमः नासायां वदने स्वेदे कक्षायां च नरोत्तमः गंधस्त्वनुभिर्यस्य चतुर्गंधः स कीर्तितः ह्र-
स्वलिंगं तथा ग्रीवा जंघे द्वे ह्रस्वके तथैव च यस्य भार्गव चत्वारि ह्रस्वचतुर्ह्रस्वः प्रकीर्तितः अंगुलीनां तु पर्वाणि नखकेश-
द्विजत्वचः सूक्ष्माणि यस्य ते नाम पंचसूक्ष्मं प्रवक्षते हनुनेत्रे ललाटं च नासा चैव स्तनांतरं दीर्घाणि यस्य ते नाम पं-
चदीर्घं विदुर्बुधाः वक्षः कक्षौ नखा नासा मुखं चैव कृकाटिका षडुन्नतानि यस्यैतानि वदंति षडुन्नतं त्वक्केशालो-
मदंताश्च ह्रस्वान्यंगुलीनखास्तथा त्रीण्याययस्य सततं प्राज्ञाः समरक्तं वदन्त्युत्तमाः जानुवंशाव योरा मनुजवंशोस्तथा
पृष्ठे ऊरुवंशद्वयं चैव पृष्ठवंशं च भार्गव नासावंशं समं यस्य सोऽष्टवंशः प्रकीर्तितः नेत्रे नासापुटे कर्णौ मेढ्रं पायु-
मुखं तथा छिद्राणि वै नव विमलानि यस्य ते न वामल जिह्वोष्ठतालुनेत्रांतहस्तपादनखास्तनौ शिश्नाग्रवक्त्रेश-
स्यैते पद्माभा दश देहिनां पाणिपादौ मुखं ग्रीवा श्रवणौ हृदयं शिरः ललाटमुदरं पृष्ठं बृहंतः पूजिता दश प्रसारि-
तभुजस्येह मध्यमाग्रद्वयांतरं उच्छ्रायेण समं यस्य न्यग्रोधपरिमंडलः कथितः स नृणां श्रेष्ठः सर्वलक्षणपूजितः
पादौ गुल्फौ स्फिजौ पार्श्वौ वृषणौ वीक्षणे कुचौ कर्णौ ओष्ठौ सक्थिनी जंघे हस्तौ वाहू तथा भ्रुवौ सक्थिनी ऊरवौ द्वे
द्वात्मनानि यस्य स्युः समानि त्वं चतुर्दश चतुर्दशसमद्वंद्वः कथितः स नरोत्तमः विद्यास्थानानि यानीह कथि-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तानि चतुर्दश तैः प्रपप्रपतिर्योरामनेत्राभ्यां च नरोत्तमः सम्यक्त्वकथितो लोके षोडशात्मा ऽष्टहस्तमेति विद्यास्था
नान्याह याज्ञवल्क्यः पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दशेति
पुराणं ब्राह्मादि न्यायो वेदाद्यविरुद्धः सत्तर्कः मीमांसा वेदवाक्यविचारः धर्मशास्त्रं मन्वादिप्रणीतं अंगसहिता
लव. वेदाश्चत्वारः अंगानि षट् शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिरिति रामायणे हनूमानाह चतुःकिष्कुश्च त
५५ र्हिष्टस्त्रिषु सङ्कोऽदशपद्मवान् षट्सुन्नतो दशाष्टहस्त्रिभिर्व्याप्नोति राघव त्रिवलीवान् त्रिविनतः चतुर्गंधस्त्रिका-
५५ लवित् त्रिविकस्त्रिप्रलंबश्च महासोऽष्टदन्तस्वरः चतुःकुलश्चतुर्लेखः षोडशात्मस्त्रयः समः चतुर्दशसमद्वं
द्वः पंचस्नेहोऽष्टवंशवानिति त्रिषु सङ्कः कर्मधर्मयशांसि त्रीणि सक्तानि यस्य सः महासौऽष्टदन्तुस्वरः वदनोष्ठ
दन्तशब्दाः दृष्टेनस्समर्थः पंचस्नेहः स्नेहः पंचसु लस्नोवाक्तु जिह्वादंतनेत्रनखकेशस्य इति वराहवचनोक्तः वा
ग्मिन्द्वादंतनेत्रनखविभुस्त्रिविधस्य शयः इति श्रीलक्षणप्रकाशे पुरुषलक्षणप्रकरणं समाप्तम् अथ स्त्रील
क्षणप्रकरणं तत्रतावत्कन्यालक्षणनिरीक्षणकालउक्तो भविष्यपुराणे मुहूर्ते तिथिसंपत्रे नक्षत्रेवाभिप्र
जिते द्विजैश्च सहसंगम्य कन्यां पश्येत कालवित् इति जगन्मोहनेसमग्रेऽपि मुहूर्ते तिथिसंपत्रे ग्रहे सौम्ये बला
न्विते ब्राह्मणैः सह संगम्य कन्यां हि पश्येत शास्त्रवित् इति आप्लुलापनरस्य बहिरूपलक्षणशीलसंपत्ताम सरो।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गामुपयच्छेतेति शातातपिर्हृष्टं र्हृप्सायनेन्द्रापेरकुशलाधीबुद्धिः यत्रवास्यमनोरमतेतद्रूपं नदाहायसंलवः
यस्यांमनश्चक्षुषोर्निबंधस्तस्यामृद्धिरिति मनुः उद्वहेतद्विजोभार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्इति दक्षः समा
वर्त्तेनसर्वंतल्लक्षणांस्त्रियमुद्वहेदिति याज्ञवल्क्यः अविप्लुतब्रह्मचर्योलक्षण्यांस्त्रियमुद्वहेदितिलक्षणा
निद्विविधानिबाह्यान्याभ्यंतराणिच अथतावद्बाह्यान्याहमनुः अव्यंगांगींसौम्यनाम्नींहंसवारणगामि
नीं तनुलोमकेशदशनांमृद्वंगीमुद्वहेत्स्त्रियमिति पृथ्वीचंद्रोदयेशातातपः हंसस्वनांमेघवर्णांमधुपिं
गललोचनां तादृशींवरयेत्कन्यांगृहस्थःसुखमेधतइति मेघवर्णांमेघवत्स्निग्धश्यामवर्णां तथैवनारदो
पि मृगाक्षीमृगशावमृगाक्षीवामहोदरी हंसस्वनगामिनीनारीराजपत्नीभविष्यति मृदुभाषाचयानारीमृदु
पादतलागतिः नारीकुन्दवर्णाभाराजपत्नीभविष्यतीति गरुडपुराणे यस्यास्त्वकुंचिताः केशामुखंचप
रिमंडले नाभिश्चदक्षिणावर्त्तासाकन्याकुलवर्द्धिनी कुंचिताः केशाः ईषत्कुंचिताग्राः किंचित्कुंचिताग्राश्च
केशाः शुभायस्युःकेशलक्षणेवक्ष्यते पावकांचनवर्णाभारक्तहस्तसरोरुहा सहस्राणांचनारीणांभवेत्सा
चपतिव्रता स्मृतिचंद्रिकायांकन्याबालसूर्यसमप्रभा विशालनेत्राबिंबोष्ठीसाकन्यालभतेसुखं कार्येशुभेसं
सन्द्धीस्यात्तस्मात्स्वांगैकारोश्च सेहेषुभार्यमानतास्यानवेमुपाचशयनेशुभा कार्येषुमिंद्रियेषु नाभिःस्व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शस्तागंभीरादक्षिणावर्त्तिकाशुभा यरोभात्रिवलीनार्याः स्तनौरोमवर्जिताविति विष्णुधर्मोत्तरात्रेययोः
शस्ताग्रीवाहंसगामिनीमत्तमातंगगामिनी गुरूरुजघनायामामत्स्यपाराशवलक्षणा सुनीलकेशीतन्वंगीपरपु
ष्टनिनादिनी तनुमध्यविलोमांगीस्निग्धवर्णामनोहरेति परपुष्टः कोकिलः मनुः नोद्वहेत्कपिलांकन्यां
नाधिकांगीं नरोगिणीं नालोमिकां नातिलोमां नवाचालां नपिंगलां रोगिणीमपस्मारादिमहारोगयुक्तां
वाचालांवकुनिष्ठभाषिणीं नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीं नांत्यपर्वतनामिकां नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीं नविभीषणनामि
ऋक्षः ऋक्षजः वीथापनः यास्मिस्थूलारोमशांचयमलांश्यावदंतिनीं सन्नतभ्रूयुगांचैवपिंगाक्षीं चैवनोद्व
हेत् सन्नतभ्रूयुगां संलग्नभ्रूयुगलां श्यावांतनपः दीर्घकुत्सितरोगार्तांव्यंगांसंसृष्टमैथुनां दृष्टान्यगतभा
वांचकन्यांदोषाः प्रकीर्तिताः इति दीर्घरोगोऽपस्मारादिः कुत्सितरोगो गलकुष्ठादिः संसृष्टमैथुना कृतव्य
भिचारा विष्णुपुराणे नचर्चरस्वरांक्षामां नथाकाकस्वरांनच नातिबद्धेक्षणां नद्वहेत्तांदीनोद्वहेद्बुधः क्षा
मांकृशां अतिबद्धेक्षणां निमीलितप्रायलोचनां वृत्ताक्षीं वक्र्रलाक्षीं यस्याश्चरोमशे जंघे गुल्फौयस्यास्तथो
न्नतौ गंडयोः कूपकेयस्याहसंत्याश्चैवजायते नोद्वहेत्तादृशीं कन्यां प्राज्ञः कार्यविचक्षणः नातिरूक्षच्छविं पांडु
करजामरुणेक्षणां आपीनहस्तपादांचनकन्यामुद्वहेद्बुधः पांडुकरजां पांडुरनखां भविष्यपुराणे नोद्वहे

लक्ष. ५५

५५

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कापिलां कन्यां नाधिकाङ्गीं न रोगिणीं न नीलोष्ठीं न निर्लोमां नासत्कूपां न पिंगलां आसत्सत्कूपां कपोलग
र्तयुक्तां ह्रस्वनासादीर्घे रोगिणीं चैव वर्जनीयां समरोगाकुलसंभवां अतिकेशामकेशां च वाचालां नैवोद्वहेद्बुधः
अत्र कन्यामित्यनुषंगः कोपनां वामनां चैव दीर्घदेहां विरूपिणीं न्यूनाधिकाङ्गामुन्मत्तां पिशुनां नोद्वहेद्बुधः
स्थूलगुल्फां दीर्घजंघां तथैव पुरुषाकृतिं श्मश्रुव्यंजनसंयुक्तां विकारिणीं नोद्वहेद्बुधः वृथाहास्यमुखीं चैव
सदान्यगृहवासिनीं विवादशीलां भ्रमितां निष्ठुरां नोद्वहेद्बुधः वक्राशिनीं स्थूलदंतां स्थूलास्थीं च घर्घरस्व
रां अतिह्रस्वां रक्तवर्णीं भूर्णीं नैवोद्वहेद्बुधः सदा रोदनशीलां च पांडुवर्णां विकुत्सितां कासश्वासादिसंयु-
क्तां निद्राशीलां च नोद्वहेत् अनर्थभाषिणीं चैव लोकद्वेषपरायणां परापवादनिरतां तस्करां नोद्वहेद्बुधः
दीर्घनासां च कितवां तनूरुहविभूषितां गर्वितां बकवृत्तिं च सर्वथा नोद्वहेद्बुधः इति श्रीचंद्रोदयेऽप्यासो
प्याह ह्रस्वा दीर्घाः कृशाः स्थूलाः पिंगाक्षी गौरपांडुराः न ह्येषा न वसेयास्ता पतनोमस्तुकाः स्त्रियः इति गरु
डपुराणे वक्रकेशा तथा कन्या मंडला दीर्घवपा भवेत् भर्ता च म्रियते तस्या नियतं दुःखभागिनी यस्याः स्तने
मध्योपादौ रोमशौ च पयोधरौ उन्नतौ चाधरोष्ठौ च क्षिप्रं मारयते पतिं यस्याः न नामिकाङ्गुष्ठौ पृथिव्यां नैव ति
ष्ठतः पतिं मारयते क्षिप्रं स्वेच्छाचारेण वर्त्तते इति नागरखंडेऽपि तथा विभिन्नैर्नैर्ऋकांऽष्टावर्जकसंयुतां दरि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्वेष्यति दुःस्थोपि कुलहीनोपि नोद्वहेत् दीयमानां च तां वैषः प्रतिगृह्णाति कश्चन तेभवत्पतिभर्त्तारं वृणोत्या
साभ्यंतरे हि सा यस्याः स्तु हि गुणादेनापत्यामद्विकाजगुः त्रिस्तनी कन्यकापाता तु स्वश्वशुरस्य कुलत्रयं सा
पतेनात्र संदेहस्तस्मात्तां हरतस्त्यजेत् शङ्खावर्त्ता भवेद्यस्याः प्रसूती सा भवेद्ध्रुवं बहुपापसमाचारा तस्मा-
लक्ष° त्तां परिवर्जयेदिति अथ याभ्यंतराणि तान्याश्वलायनोक्तानि यथा दुर्विज्ञेयानि लक्षणान्यष्टौ पिंडान्कृत्वा
५८ ऋतमग्रे प्रथमं जज्ञ ऋते सत्यं प्रतिष्ठितं यदियं कुमार्यभिजाता तदियमिह प्रतिपद्यतां यत्सत्यं तद्दृश्यतामि
46 ति पिंडानभिमंत्र्य कुमारीं ब्रूयादेषामेकं गृहाणेति क्षेत्राच्चेदुभयतः सस्याद्गृह्णीयादन्नवत्यस्याः प्रजा भवि
ष्यतीति विद्याद्गोष्ठात्पशुमती वेदिपुरीषाद्ब्रह्मवर्चस्विन्यविदासिनो ह्रदात्सर्वसंपन्ना देवनात्कितवी चतु
ष्पथाद्द्विप्रव्राजिनी इरिणादधन्या श्मशानात्पतिघ्नीति अस्यार्थः लक्षणानि दुर्विज्ञेयानीति कृत्वा एवं परी
क्षेत क्षेत्रादिभ्यो मृदमानीय अष्टौ पिंडान्कृत्वा ऋतमग्रे इत्यनेन मंत्रेणामून्पिंडानभिमंत्र्य कुमारीं ब्रूयादेषामेकं
गृहाणेति क्षेत्रादिति उभयतः सस्यात् क्षेत्रादानीतं मृत्पिंडं गृह्णीयाच्चेत् अन्नवत्यस्याः प्रजा भविष्यतीति वि
द्यात् उभयतः सस्यं क्षेत्रं नाम एकस्मिन्संवत्सरे द्विः फलतीति तत् गोष्ठादिति गोष्ठं नाम गवामवस्थानदेशः
तस्मादाहृतं मृत्पिंडं यदि गृह्णीयात्तदा पशुमती ज्ञेया वेदिपुरीषादिति वेदिपुरीषं नाम अग्न्याधाने कर्मणि या

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेदिस्तस्या मृत्तिका तस्मादाहृतं मृत्पिंडं परिगृह्णीयात् तदा ब्रह्मवर्चस्विनी अविदासिनो ह्रदादिति अविदासी ह्र-
दो नामाशोष्यो ह्रदः तस्मादाहृतमृत्पिंडग्रहणे सर्वसंपत्प्राप्तेण देवनादिति देवनं नाम दीव्यन्तेऽत्रेति द्यूतस्था-
नं तदाहृतमृत्पिंडग्रहणे कितवी चतुष्पथादिति चतुष्पथाहृतमृत्पिंडग्रहणे द्विप्रवाजिनी द्वौ प्रव्रजती-
ति द्विप्रवाजिनी ईरिणमूर्वरं यत्रोप्तं न प्ररोहति तत् तदाहृतमृत्पिंडग्रहणे अधन्या श्मशानादिति श्मशा-
नाहृतमृत्पिंडग्रहणे पतिघ्नी ननु त्वयोदाहृतेषु शीललक्षणेषु भ्रूजनपरापवादनिरतत्वादीनां केषांचिल्लक्षणानां
बालभावेन विवाहात्पूर्वं विशिष्यज्ञानासंभवाल्लक्षणानि परीक्ष्यादौ ततः कन्यां समुद्वहेदित्युक्तं तत्कथमिति चे-
त् सत्यं येषां लक्षणानां विवाहात्पूर्वं ज्ञानसंभवस्तद्विषयकमिदं वचनं यानि तु लक्षणानि विवाहोत्तरकालेऽपा-
गल्ये ज्ञायंते तेषु परिणयादूर्ध्वमपि सर्वथा तां परित्यजेदिति तथा च स्त्रीचिह्नोदये दृष्टास्त्रीयवचनमपि बाल-
भावादविज्ञातस्वभावामुद्वहेद्यदि सा गत्वेऽप्यगुणा ज्ञाता सर्वथा तां परित्यजेदिति ननु च ऋद्ध्यपापासादिमा-
याः स्त्रियाः किमर्थं त्यागः इति उच्यते अशुभलक्षणान्वितत्वात् वर्जयेत्सर्वथा भूतस्त्वशुभलक्षणोपेयाः भर्तृगा-
युर्दायनेनाल्पसात्परीक्षिताः निवोढ्याघ्नवचने भर्तुर्मरणाद्यनिष्टफलश्रवणान्नाशुभलक्षणान्वितभार्यात्याग-
विधानात् ननु च यद्यनिष्टफलेन किं विवाहेन उत केवलेन तत्संसर्गेणेति नाद्यः विवाहोत्तरकालेऽमनायामपि भार्या

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लह· ५०
47

यां स्वमरणाय निष्फलो व शंभावापत्तेः न च तयास्ति तोष्यः दुर्लक्षणायुक्तसामान्यादिस्त्रीसंसर्गेनापि स्वमरणा
यनिष्टफलमात्मिप्रसंगात् अथोच्यते कोपनां वाममनां चैव दीर्घदेहां विरूपिणीं न्यूनाधिकांगामसन्तांपि पिशुनां
नो द्वहेत्तु यः इत्यादिपूर्वोदाहृतवचनैः अशुभलक्षणान्वितकन्योद्वहनेनैव इष्टफलं भवतीति प्रतीयते तदप्य·
निष्टफले भार्यायां विद्यमानायामेव न त्वविद्यमानायां विद्यमानो हि शत्रुरपकारं जनयति नाविद्यमानः यथा व
शाल्यग्रामगतात्मादेर्विद्यमानस्यैव शुभाशुभफलसूचकत्वं नाविद्यमानस्य एवमत्रापीति न त्वानिष्टभार्यात्या
गेनापीति यथा मूलाश्लेषाशिशुजनितपित्रादिमरणायनिष्टं वचनात्त्यागेन शान्तिकादिना वा नश्यति तथात्रापि
दुर्लक्षणान्वितकन्योद्वाहजनितस्वमरणाद्यनिष्टं भार्यात्यागेन नश्यति सर्वथा तां परित्यजेदिति पूर्वोदाहृत
वचनात् यच्चोक्तं सामा— दिस्त्रीसंसर्गेण स्वानिष्टफलं न तद्युक्तं भर्तुराग्रहेणैवात्र आलस्यादपरीक्षिताः सुल
क्षणाः सदाचारा यस्तु रूपहीनाविरुद्धयेत्यादिवचनैर्भार्यायाः भर्तुः शुभाशुभफलं प्रतीयते अतस्तासु भार्यात्वाभावा
त्तासां च तस्मिन् भर्तृत्वाभावादेव फलाभावः अथात्र योग्यभार्यात्यागः स किं सर्वथाहृतिः काशनादिरूपः
न त्वा तन्न प्रतिपादकः उत तत्संसर्गादावेवेति न तु सर्वथा परित्यागः कर्तव्यः पूर्वोक्तवचनादिति चेन्न सर्व
था परित्यागे कृते स्वानं द्रष्टणानया स्वरापानादि दुश्चारित्र्याचरणे कृते पतत्यर्धशरीरस्य यस्य भार्या स्वरापि वेदि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वचनैर्भार्यीकृतमहापातकादिजनितः प्रत्यवायो भर्तुः स्यात् न चेष्टापत्तिरिति वाच्यं वृश्चिकभयात्पलाय
मानस्याशीविषमुखनिपातन एव न च स्वमरणादिरदृष्टफलनिवृत्तौ क्रियमाणायां निरयपातादेरदृष्टफल
प्राप्तिर्न दोषायेति वाच्यं उभयत्रापि दुःखक्लेशाद्यसहत्वेन दृष्टफलत्वात् एतेन कन्यापितापि विवाहपतिः पुत्रास्तु
वार्धके अभावे सन्तानस्य तेषां न स्यात् एवं च विना हि पापान्यादिनाश्रयाः स्यात् तेन अनिषेधाच्च अतः संसर्गादावेव
त्यागः इति सिद्धान्तः अन्यास्तानावनम्र प्रसक्तात्प्रसक्तं चिन्तयेति अचलक्षणपरीक्षाया वश्यकत्वमाह बोपाय
नः वर्जयेत्सर्वथा भूमौ सर्वशुभलक्षणोज्झिताः भर्तारं पुरुषं चैताः आलस्यादपरीक्षिता इति विवेकविलासेऽपि
नापरीक्ष्य स्पृशेत्कन्यां अविज्ञाताः कदाचन निघ्नन्ति येन योनेस्ताः कदाचिद्दत्तनिर्मिनेविनि उत्तमशुभलक्षणान्वि
तकन्यापरिणयेन विशेषफलमपि श्रूयते भविष्ये ईदृग्लक्षणसंपन्नां कन्यामुद्वहते नु यः ऋद्धिर्वृद्धिस्तथा
कीर्तिरनुनिशं निनिश्चलेति स्कान्दे काशीखण्डेऽपि लक्षणानि परीक्ष्यादौ ततः कन्यामुद्वहेत् सुलक्षणास
दाचारा पत्युरायुर्विवर्धयेत् सुलक्षणैः सुचरितैरपि मन्दायुषं पतिं दीर्घायुषं कुर्वन्ति प्रमदाः प्रमदास्पदे अतः
सुलक्षणा योषाः परिणेया विचक्षणैरिति सदा गृही सुखं भुंक्ते स्त्रीलक्षणवती यदि अतः स्वावसरप्रथमा
दौ लक्षणमीक्षयेत् तच्च लक्षणमष्टविधं वीतेन तथा च स्कान्दे काशीखण्डे वपुरावर्तगंधाश्च छायामनंसरो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गतिः वर्णिस्फुटस्पष्टथाप्रोक्ता बुधैर्लक्षणभूमिका लक्षणभूमिका लक्षणं च लोकनस्थानं वपुः शरीरं तस्य लक्ष
णं तच्चापादतलकेशांतं वसने चरणतलं तदंगुष्ठांगुलीनखं तत्गुल्फपार्ष्णिर्जंघारोमजानूरुकटिनितं
बस्फिक्भगजघनबस्तिनाभिकुक्षिपार्श्वोदरमध्यवलित्रयरोमावलीहृदयवक्षःस्तनचूचुकजत्रुस्कंधांसकक्षाबा
हुमणिबंधकरतलपृष्ठतलतलनखांगुष्ठांगुलीनखपृष्ठकृकाटिकाकंठचिबुकहनुकपोलवदनाधरोत्तरोष्ठ
लक्ष. दंतजिह्वाघंटिकातालुहसितनासानेत्रपक्ष्मभ्रूकर्णभालमौलिसीमंतकेशक्रमेण ग्रंथमेव क्रमः स्कांदे
५८ काशीखंडे स्कंदेनोक्तः सयथा आपादतलमारभ्य याक्मौलिदर्शनात् शुभाशुभानि वक्ष्यामि लक्षणानि मु॰ के
58 नेश्वर आदौ पादतले रेखा तनोंगुष्ठांगुलीनखाः पृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णी जंघे रोमाणि जानुनी ऊरू कटिर्नितंब
स्फिग्भगजघनबस्तिके नाभिः कुक्षिद्वयं पार्श्वोदरमध्यवलित्रयं रोमाली हृदयं वक्षो वक्षोजद्वयचूचुके जत्रु॰
स्कंधांसकक्षादोर्मणिबंधं करद्वयं पाणिपृष्ठं पाणितले रेखांगुष्ठांगुलीनखाः पृष्ठकृकाटिकाकंठचिबुकं च
हनुद्वयं कपोलौ वक्त्रमधरोत्तरोष्ठद्विजजिह्विकाः घंटिकातालु हसितं नासिका क्षुतं नमहद्दृशि पक्ष्मभ्रूकर्णभा
लानि मौलिसीमंतमौलिजाः षष्टिः षडुत्तरापो षिदंगलक्षणाद्दर्शनादिति अत्र यद्यपि स्कांदे काशीखंडे पादतलक्ष
णं इत्यप्रोक्तं तथापि नारदपुराणादिषु पादनलक्षणस्पष्टत्वेनाङ्गस्यते भविष्यपुराणे प्रतिष्ठितत्व॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ला: समग्रक्रांभोजसमत्विषः नाहशाङ्खरागाय स्यायोषितो भोगवर्द्धना: प्रतिष्ठितनतलाः समकंसलयम्भ्रभागप
पादाथस्तलाः करालेश्तनिनिर्मांसैरूक्षैरथशिरानतै: दारिद्र्यडुभगत्वपामृत्वेतिनसंशायइति करालोमयंकाः
गरूडपुराणे यस्याः स्निग्धौसमौपादौतनुताम्रनखौतथा स्निष्टांगुलीचोन्नताग्रौतांप्राप्नपतिर्भवेत निगूढ
गुल्फौपविनौपद्मकांतितलौसुभौ अस्वेदनौमृदुतलौमत्स्यांकुशयवांकितौ वज्राब्जहलविह्नौचदास्याः पादौ
ततोन्यथेति हलेनांगले विलुप्तमौनरे समग्रभूस्यशोयस्याः स्याङ्गणांकमलोपमा विनिनाप्रशस्तेम्नतुषगः वरा
हसंहितायां स्निग्धोन्नताग्रतनुताम्रनखौकमार्थाः पादौसमौपचितचारुनिगूढगुल्फौ स्निष्टांगुलीकमला
कांतितलौचयस्यास्तामुद्वहेद्यदिभुवोधिपतित्वमिच्छेत मत्स्यांकुशाब्जयववज्रहलासिविह्नावस्वेदनौमृदुत
लौचरणौप्रशस्ताविति इतिपादतलं अथपादतललक्षणं स्कांदेकाशीखंडे स्त्रीणांपादतलेस्निग्धमांसलंम
ड्डलंसमं अस्वेदमुष्णमरुणांबहुभोगावितंस्मृतं रूक्षंविवर्णंपरुषंखंडितंप्रतिविंबकं शूर्पाकारंविशुष्कंचडुः
खदौर्भाग्यसूचकमिति सामुद्रतिलके असितेदौर्भाग्याय स्वेतेदुःखायपीठाणां शूर्पाकृतिभिस्ते यः कुटि
लैः सुईभगास्थरणतलैरिति योषास्त्री इतिपादतललक्षणं अथपादरेखालक्षणं जगन्मोहने समुद्रः यस्याः
पादतलेरेखा तर्जनीगुप्रकाशते भर्तारंलभनेशीघ्रंप्रियाभर्तुस्सजायते चक्रपद्मध्वजंच्छत्रैः सलिकंर्धमानकं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष. ५१
49

यासां पादे च दृश्यंते तेयास्त्या राजपोषिताः पद्मं मालांकुशं छत्रं नंद्यावर्त्तं प्रदक्षिणं पाणिपादेषु दृश्यंते राज्ञी वदं
तितां बुधाः इति स्कांदे काशीखंडे चक्रस्वस्तिकशंखाब्जध्वजमीनातपत्रवत् यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपां
गना भवेदखंडभोगाय ऊर्ध्वमध्यांगुलिसंगता रेखाखुसर्पकाकाभा दुःखदारिद्र्यसूचके आखुर्मूषकः गरुडपुरा
णे पादतलमुपक्रम्य वानि कुंजरश्रीवृक्षयूपेषुयवतोमरैः ध्वजचामरमालाभिः शैलकुंडलवेदिभिः शंखातप
त्रपद्मैश्च मत्स्यस्वस्तिकसद्रथैः लक्षणैरंकुशाद्यैश्च स्त्रियः स्यू राजवल्लभाः इति गर्गसंहितायां शंखांकुशपद्मद
लातपत्रैः स्त्री चैव तत्रमयादिरूपं चक्रं शशी दिनकृत्स्वामरेखा नयावज्रं ध्वजनेत्तोरणांच सिंहो वत्सस्त्वरगः स्व
स्तिकं चमत्स्योहंसः पूर्णकुंभस्तथा च पुरं महद्वारणपर्वतापि तथा समुद्रो मकरः पताकातले च येनानि भवं
ति यासां पादांगुलीष्वेव च संस्थितानि ता भोगवत्यः सुसमृद्धवंश्याः प्रजान्विताश्चैव भवंति नार्यः इति सामुद्रति
लके श्वसृगालमहिषकाककोलूककादिकोकककारभायाः चरणतले जायंते यस्याः सा दुःखमाप्नोतीति कोकश्च
क्रवाकः ऊर्ध्वरेखा च्छिन्नतले या च मध्यांगुलिगता यस्याः सा लभते पतिमाद्यं विपाशुनर्भवतिन स्यापीति अत्र च
क्रादि सर्वलक्षणसद्भावे पूर्णफलं कल्पनीयं नेकृषस्य कस्यचित्सद्भावेनदत्तमारेणेति तथा च सामुद्रतिल
के चक्रादिचिह्नमध्ये स्यादेकं वह्नि वा यासां पेश्वर्यसौख्यं वानां सामयितदत्तमानेनेति इति पादरेखालक्ष

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णं अथांगुष्ठलक्षणं स्कांदे काशीखंडे उन्नतो मांसलोंगुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगदः वक्रो ह्रस्वश्च विकटो दुःख
दो भीरुसूचकः विपुला विपुलांगुष्ठा दीर्घांगुष्ठेन दुर्भगेति सामुद्रतिलके ह्रस्वश्चिपिटो वक्रः कुलक्षयाय पृथु
वंशीणामिति अत्रांगुष्ठस्यतुबंधः वैधव्यं विपुलेन हेष्यातं स्वल्पवर्तुलेन स्यात् रमणावमानना पुनरंगुष्ठे
नातिदीर्घेणेति इत्यंगुष्ठलक्षणं अथांगुलीलक्षणं भविष्यपुराणे अंगुल्यः संहताश्चाकृत्वाः सूक्ष्मनखो
स्तथा कुर्वन्त्यनेनमैश्वर्यंराजभोगवयोषितां संहताः अविरलाः राजभोगंराजभोगोपमंभोगं ह्रस्वाश्चजीवि
तं ह्रस्वं विरलावित्तरानये दारिद्र्यंमूलभुग्नासप्रेष्यत्वंस्थूलाश्च मूलभुग्नाः प्रथमपर्ववक्राः परस्परसमानेऽत्र
विपरीता स्तनुभिर्दृढपर्वभिः बहून्यपि पतीन् हत्वा दासी भवति वै हिताः अंगुष्ठोन्नतपर्वाणस्तु गायाः कोमलाः समाः
रत्नकांचनलाभाय विपनपडृति स्कांदे काशीखंडे मृदवोंगुलयः पाला घनाः ह्नुन्नाः समुन्नताः दीर्घांगुलीभिः
कुराङ्कुशाभिरतिनिर्हीना कुलटा वेश्या ह्रस्वा पुष्पावहस्ताभिर्भुग्नाभिर्भ्रामिभिः प्रवर्त्तिनी भुग्नाभिर्वक्राभिः
विपिटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिर्दरिद्रिणी परस्परसमारूढा पादांगुल्यो भवंति वै हत्वा बहून्यपि पतीन् परप्रे
ष्यात्तदा भवेत् परप्रेष्या दासी यस्याः पथि समायान्त्या रजो भूमेः समुच्छलेत् पांसुला सा प्रजायेत कुलत्रय
विनाशिनी पांसुला वेश्या यस्याः कनिष्ठिका भूमिं न गच्छेत्साः पतिस्थिष्टेन् अनामिका मध्यमा च यस्या भूमिं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष॰
५०
५०

नसंस्पृशेत् पतिहृयंतिहंत्याद्याद्वितीयाच पतिद्वयं पतिहीनत्वकारिण्येपाहीनेनेहेऽहेऽस्मेयदि प्रदेशिनीभवे
यस्याअंगुष्ठादतिरेकिणी कन्यैवकुलटासास्यादेषएवविनिश्चयइति विस्तुधर्मोत्तरे भुवंकनिष्ठिकायस्या
नस्पृशेनकथंचन नतांकुर्वीतभार्यार्थेमनस्युःसकर्षितोवधेदिति गरुडपुराणे कनिष्ठिकाऽनामिकावाय
स्यानस्पृशतेमही अंगुष्ठंवागतानीत्पनर्जनीकुलटानसेति पराशरोप्याह एकापियस्यानमहीसंस्पृशेद्वर
णांगुलिः नलमध्यमयोर्यस्याअप्रमाणौविनिर्दिशेत् पादेप्रदेशिनीयस्याअंगुष्ठंसमतिक्रमेत् दुःखिता
दुर्भगांचैवकन्यांतांपरिवर्जयेत् पादेमध्यमिकायस्याःक्षितिंनस्पृशतेयदि नसारमतिकौमारेस्वच्छंदाकार्य
कारिणी पादेऽनामिकायस्याःक्षितिंनस्पृशतेयदि नसारमतिकौमारेद्वितीयेसमतिष्ठिता पादेकनिष्ठि
कायस्याःक्षितिंनस्पृशतेयदि द्वितीयेपुरुषंहत्वानत्तीयेसप्रतिष्ठितेति जगन्मोहनेसमुद्रः यस्यानस्पृश
तेभूमिमंगुलीचकनिष्ठिका भर्त्तारंप्रथमंहत्वाद्वितीयेनसहस्थिता यस्यानस्पृशतेभूमिंकनिष्ठाविरलाद्वि
जाः संत्रनभ्रुकुटीरोगंश्चपुंश्चलीचाप्यभागिनी यस्याअनामिकाह्रस्वातांविद्यात्कलहप्रियां अंगुष्ठंतत्रअतिक्रम्य
यस्याःपादेप्रदेशिनी कुमारीकुरुतेजारंयौवनेसेवकाकथेति विवेकविलासे यस्यादंगुलिरेकापिभवेद्धी॥
नाकथंचन येननापिसासार्धंपायः कलहकारिणीनिश्चितिपदांगुलीलक्षणं अथनखलक्षणं गर्गसं॥

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हिनायां क्रूरोशयाः पद्मपत्रावर्णा रूपप्रभा विद्रुमसंनिभाश्च स्लक्ष्णाः सुजाताश्च भवंति यस्याः स्त्रीणां नखाः प
द्मरागप्रभाश्चेति पद्मपलाशवर्णाः पद्मपत्रसदृशाः विद्रुमप्रवाले पद्ममणिः पद्मरागः भविष्ये सुभगत्वे
नखैः स्निग्धैरताम्रैश्च धनाढ्यता पुत्राः सुवृत्तैरेभिः सूक्ष्मैश्चापि राजता पांडुरैः स्फुटितैस्तद्वैर्नीलैर्भूमैस्तथा
त्वैरैः निःस्वता भवति स्त्रीणां पीनैश्चाभक्ष्यभक्षणमिति स्कांदे काशीखंडे स्निग्धाः समुन्नतास्ताम्रा वृत्ताः पादनखाः
शुभा इति अथ चरणांगुष्ठलक्षणं स्कांदे काशीखंडे राज्ञीत्वसूचकः स्त्रीणां पादांगुष्ठः समुन्नतः अस्वेदमसिरापंचम
सृणं मृदुमांसलं दारिद्र्यमथ्यनिम्नेन शिरालेन सदाध्वगा रोमाढ्येन भवेद्दासी निर्मांसेन च दुर्भगेति इति चरणांगु
ष्ठलक्षणं अथ गुल्फलक्षणं भविष्ये गुल्फाः स्निग्धाश्च गूढाश्च समा गूढशिरास्तथा यस्याः साधुनायेनं बांधवायेः
समाप्नुयादिति स्कांदे काशीखंडे गूढगुल्फौ शुभौ यो कावशिरालौ सुवर्तुलौ हृद्यौ स्यातां दौर्भाग्यसूचकाविति जग^ द्विवमोशिथिलौ
न्मोहने समुद्रः गुल्फैश्च महिमाकारैर्वधनं वध्यमाप्नुयात् निगूढगुल्फा या नारी सा मंते सुखमेधत इति गर्गः अनु
न्नताभ्यंतरतः शिराला गुल्फा विशालाश्च भवंति यासां मनाग विंदंति धनं न चापि स्ता गुल्फदोषैर्विधवा भवंति इ
ति गुल्फलक्षणं अथ पार्ष्णिलक्षणं स्कांदे काशीखंडे समपार्ष्णि शुभा नारी पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा कुलटोन्नत
पार्ष्णिः स्याद्दीर्घपार्ष्णिश्च दुःखभागिति जगन्मोहने समुद्रः उन्नतपार्ष्णि दुःशीला महापार्ष्णिस्तु बंधकी दीर्घपा^

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष. ५१ 51

ष्णिः परिक्लिष्टा नाम सपार्ष्णिस्तथोभवेनेति बंधकीच व्यभिचारिणी विवेकविलासे कृपणाः स्युर्महापार्ष्णिर्दीर्घपार्ष्णि-
स्तु कोपना दुःशीलोन्नतपार्ष्णिः स्त्री लिंगाविषमपार्ष्णिके इति इति पार्ष्णिलक्षणं अथ जंघालक्षणं गरुडपुराणे
जंघे च रोमरहिते सवृत्ते विशिरे शुभे इति विशिरे शिरावर्जिते भविष्ये अशिराः शरकांडाभाः सुवृत्ता लतनूरुहाः
जंघाः कुर्वंति सौभाग्यं यानं च गजवाजिभिः क्लिश्यते रोमजंघा स्त्री भ्रमस्तु हृद् पिंडिका काकजंघा पतिं हंति वा
चाटा कपिला च येति वाचाटा वङ्मलपनशीला स्कांदे काशीखंडे रोमहीने समे स्निग्धे यज्जंघे क्रमवर्तुले सा रा-
जपत्नी भवति विशिरे सुमनोहरे इति सामुद्रतिलके मृक्केरस्थूले विशाले शिराचिते स्थूलपिंडिके परुषाः जंघे
मांसोपचिते सूक्ष्मे मूले पांसुला सा स्यादिति इति जंघालक्षणं अथ रोमलक्षणं भविष्ये अनेकंकुटिलैर्हृत्तैः
स्फुटिताग्रैरुद्रप्रभैः अनेकजैस्तथा रोमैः केशैश्चापि तथाविधैः अशंतं पिंगला नारी विधवत्वेति निश्चिता समा-
ह्याभंते रोपा पापतिं हत्वा त्वसंशयः इति स्कांदे काशीखंडे एकरोमा राजपत्नी हि रोमापि सुखास्पदा त्रिरोमा रोम-
कूपेषु भवेद्वैधव्यदुःखभागिति इति रोमलक्षणं अथ जानुलक्षणं गरुडपुराणे अनुल्बणं संधिदेशसमं जा-
नुद्वयं शुभमिति भविष्ये जानुभिः स्त्रैवमार्जारसिंहजानुवृकारिभिः प्रियमाप्य सुभागपत्नेशासुवंति सुतां तथा
घटाभैरधगमनार्ये निर्मांसैः कुलटास्त्रियः शिरालैः पिंडितैः सुर्विश्लिष्टैर्धनवर्जिता इति स्कांदे काशीखंडे वृ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नैविरिणतसंमग्रंजानुयुग्मंप्रशस्यते निर्मांसं स्वैरचारिण्याः दरिद्रायाश्च विज्ञेयमिति उत्पले समुद्रः स्निग्धैर्जा
नुनी यस्याः शिरारोमविवर्जिते इति इति जानुलक्षणं अथोरुलक्षणं भविष्ये हस्तिहस्तनिभैर्वृत्तैरंभास्तंभोकरभोप
मैः समुद्रवत्ह्यूरुभिः प्रशस्तस्त्रियः सततमनेगजे दौर्भाग्ये स्थूलमांसाभिर्वैधव्यं रोमशोरुभिः तनुभिर्वैधव्यमिवाऽरुमि
व्याक्षिप्तैरल्पनीशानेति गरुडपुराणे ऊरुकरिकरैः पीवरैश्च समैः शुभाविति स्कांदे काशीखंडे विशिष्टैः करभाका
रैरूरुभिर्मसृणैर्घनैः सहतैः रोमरहितैर्भवेयुर्भूपवल्लभाः वैधव्यं रोमशैरुक्तं दौर्भाग्यं चिपिटैरपि मध्यच्छिद्रै
र्महादुःखं दारिद्र्यं कठिनत्वचैरिति इत्यूरुलक्षणं अथ कटिलक्षणं स्कांदे काशीखंडे चतुर्भिरंगुलैः शस्ता
कटिर्विंशतिसंयुतैः समुन्नतनितंबाया चतुरस्रा मृगीदृशी विनता चिपिटा दीर्घा निर्मांसा संकटा कटिः ह्रस्वारो
मयुता नार्या दुःखवैधव्यसूचकेति इति कटिलक्षणं अथ नितंबलक्षणं स्कांदे काशीखंडे नितंबबिंबो नारी
णामुन्नतो मांसलः पृथुः महाभोगाय संप्रोक्तस्तदन्यो शर्मणो मतः इति सामुद्रतिलके वि - - - - - रोन
तिमान् निर्मांसो रोमशः खरः सूक्ष्मः कुरुते नितंबफलको दरिद्रतां दुःखदौर्भाग्यमिति इति नितंबलक्ष
णं अथ स्फिक्लक्षणं स्कांदे काशीखंडे कपित्थफलवद्वृत्तौ मृदुलौ मृदुलौ मांसलोच्चनौ स्फिजौ वलि
विनिर्मुक्तौ रतिसौख्यविवर्द्धनाविति भविष्ये कपित्थफलसंकाशः पीनो वलिविवर्जितः स्फिक्प्रश

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष. ५२

52

ग्रस्तो हि नारीणां निंदितो ह्यन्यथा हि नाशः इति ॥ इति स्फिकलक्षणं ॥ अथ भगलक्षणं भविष्ये ॥ ऊर्ध्वरोमभगे यस्याः स
मेतस्मिश्च संस्थिते ॥ अपि नीचकुलोत्पन्ना राजपत्नी भवत्यसौ ॥ अश्वत्थपत्रसदृशः कूर्मपृष्ठोप्यचूलिकः ॥ अ
चूलिकः शशिखण्डः शशिबिंबनिभः स्थूलस्तथा च कलशाकृतिः ॥ शकटाकृतिरितिपार्थानरांभगः शस्तन
मः स्त्रीणां रतिसौभाग्यवर्द्धनः ॥ तिलपुष्पनिभो यस्या यस्याश्च खुरसंनिभः ॥ द्वावप्येतौ परप्रेष्यां कुर्वीते च दरिद्र
तां ॥ उलूखलनिभे शोकं मरणं विवृतानने ॥ विरूपे याति निर्मांसे गीताश्वनिभे रोमभिः ॥ दौःशील्यं भगनिच
दारिद्र्यं चाधिगच्छतीति ॥ गारुडे ॥ अश्वत्थपत्रसदृशो विपुलं गूढमुन्नतमिति ॥ स्कांदे काशीखंडे ॥ शुभः कमठपृ
ष्ठाभो गजस्कंधोपमो भगः ॥ वामोन्नतस्तु कन्यादः पुत्रदो दक्षिणोन्नतः ॥ आखुरोमा गूढमणिः सुश्लिष्टः संहृ
तः पृथुः ॥ तुंगः कमलवर्णाभः शुभोऽश्वत्थदलाकृतिः ॥ कुरंगखुररूपो यश्चुल्लीकोटरसंनिभः ॥ कुरंगो हरिमाः
रोमशो विवृतास्यश्च दृश्यनासोऽतिदुर्भगः ॥ शंखावर्त्तो भगो यस्याः सा गर्भमिह नेच्छति ॥ चिपिटः कर्पराकारः
किंकरीपदभोगदः ॥ कर्पूरः कठरः ॥ वंशवेत्रसपत्राभो गजरोमोच्चनासिकः ॥ विकटः कुटिलाकारो लंब
गल्लः स्फुटोऽशुभ इति ॥ विष्णुधर्मोत्तरे ॥ पुत्रप्रदं दक्षिणावर्तमश्व—दलसंनिभमिति जघन्योत्ते सदृढः
आवर्त्तस्तु भवेद्यस्याः भगस्योपरि मस्तके साचेद्वर्धयते पत्रैर्धनधान्यैः समन्विता ॥ अश्वत्थपत्रसंकाशं गुह्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यस्याः प्रजायते सा भवेत्सुभगा नारी यदिश्वरोमशाभिर्भवेत् कूर्मपृष्ठो गजस्कंधः समरोमाल्पनासिकः विस्तीर्णः
पद्मवर्णश्च पृष्ठेनेत्सुभगा भगाः कठोरः खररोमश्च श्मश्रुकस्य दीर्घनासिकः संकटो विरलश्चैव पृष्ठेनेदुर्भगा म
गा इति सामुद्रतिलके मृदुविस्तृतः स्निग्धो नोगो जिह्वाकर्कशोथ वा मृदुलः अतिसंवृतः स्निग्धोपि सतभगा व
हूयंतिरतिमिति इति भगलक्षणं अथ जघनलक्षणं भविष्ये सव्यावर्त्तसमं चारु सूक्ष्मरोमचितं दृश्यु ज
घनं यस्य तस्ते स्त्रीणां रतिसौख्यकरं द्विजा इति स्कांदे काशीखंडे भगस्य भालं जघनं विस्तीर्णं तनु मांसलं पृथु
लं मृदु रोमाचं दक्षिणावर्त्तमीरितं वामावर्त्तं च निर्मांसं भुग्नं वै धव्यसूचकं संकटं स्यात्पुटं रूढं जघनं दुःखदं स
देति अप्ले समुद्रः जघनं विपुलं यस्याः स्वस्पर्शरोमवर्जितं स्वर्णाभं गौरं भूकाराजपत्नी भवत्यसाविति
इति जघनलक्षणं अथ वलिलक्षणं स्कांदे काशीखंडे वलिः प्रशस्या विपुला म्हा लोकस्य सुनता रोम
शा च शिरालाचैरेखाकानैव शोभनेति लोकसमृद्धनाईषड्वा इति वलिलक्षणं अथ नाभिलक्षणं गरुड
पुराणे विस्तीर्णमांसोपचिता गंभीरा विपुला शुभा नाभिः प्रदक्षिणावर्त्तेति स्कांदे काशीखंडे गंभीरा दक्षि-
णावर्त्ता नाभी स्यात्सुखसंपदे वामावर्त्ता समुत्ताना व्यक्तग्रंथिर्न शोभनेति गर्गः संछन्ननाभ्यस्तु विवर्णनाभ्यः
प्रदक्षिणावर्त्तविहृतनाभ्यः स्त्रियः प्रशंसंति विशालनाभ्यः प्रमापयनाभिश्च समं डलाभिरिति नाभिरिति शेषः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जगन्मोहनेसमुद्रः गंभीरनाभीयानारी सामेवमकुरुषप्रिया पद्माकारा भवेन्नाभिर्न्नूनं सा सुखमेधत इति इतिना
भिलक्षणं अथकुक्षिलक्षणं भविष्ये विपुलैः सुकुमारैश्च कुक्षिभिः सुबहुप्रजाः मंडूककुक्षिर्या नारी राजा
नं सा प्रसूयत इति स्कांदे काशीखंडे स्तनेस्तनान्वरूद्धारी ष्यूककुक्षिः सुखोस्पदं ह्निनीशं जनयेत्सुतं मंडूकाभन
लक्ष· कुक्षिणा इत्यनेन वलीभाजा सा वर्जनापि कुक्षिणा वेष्याम्भत्रजितादासी कुमायोषा भवेदिहेति इति कुक्षिल
५३ क्षणं अथ पार्श्वलक्षणं स्कांदे काशीखंडे समैः समांसैर्मृदुर्योषिन्मग्नास्थिभिः शुभैः सौभाग्यसुखयोर्निधा
53 नं स्यादसंशयं यस्याहृश्यशिरेपार्श्वे इत्यनेन रोमसंयुते निरपमावह्नःशीला सा भवेत् दुःखभवेवपीरिति शव
धिर्निर्यद्धः खस्यानामिन्पार्श्वः गर्गः पार्श्वानि यासां मृदुलान्विनानि मृदुत्विणा वर्जनानि स्निग्धान्यरोमाणि
तं न राणि स्त्रीणां यशोसनि सुसंहितानीति इति पार्श्वलक्षणं अथोदरलक्षणं स्कांदे काशीखंडे उदरेणाति
तुच्छेन विशिरेण मृदुत्वच योषिद्भवति भोगाया निसमिष्टान्नसेविनी कुंभाकारं दरिद्राया जठरं च मृदंगवत्
कूष्माण्डाभं यवाभं च दुःशं जायते स्त्रियाः सुविशालोदरी नारी निरपत्या च दुर्भगा सर्वांग जठरा ह्नंति श्वश्रूं चा
पि देवरं मिति गर्गसंहितायां यासाममनिम्नानि नतोन्नतानि सूक्ष्माण्यरोमाणि तयोदराणि ता भोगवत्यो ह
येश्च सुखैः सनाथिताश्चापि भवंति नार्य इति इत्युदरलक्षणं अथ मध्यलक्षणं भविष्ये पयोधरभरानम्रः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुसमस्त्रिवलीयुक्तः मध्यः स्त्रीभावदक्षिणो रोमराजीविभूषितः पणवाभे मृदंगाभे मल्लयामध्ये यवोपमैः प्राप्नु-
वंति मध्यवासं क्लेशदैः शीलमीदृशैरिति उत्पले समुद्रः मध्यं वलित्रययुतं तनुस्पर्शं रोमवर्जितं यस्याः सा
राजमहिषीकन्यास्यान्नात्र संशय इति इति मध्यलक्षणं अथ वलित्रयलक्षणं भविष्ये उत्तमैर्वलिभिर्मध्याः
सावर्तैः कुलटाः स्त्रियः परकर्मरताश्चस्युः मत्र्यां च समामधुरिति गारुडे अंगे मात्रिवलीनार्या इति स्कांदे का-
शीखंडे भोगाया सवलित्रयेति इति वलिलक्षणं अथ रोमराजिलक्षणं स्कांदे काशीखंडे अजीनवीचरो-
माली यस्याः सा शर्मीनमिभूः कपिला कुटिला स्थूला च्छिन्ना रोमराजिका च या देवमदीर्भाग्यं विद्यादिह
योषितामिति जगन्मोहने समुद्रः रोमराजी भवेन्नृणांश्रुस्तावक्रासमन्वता अर्थोद्वेनतभर्तारं हता भवतीति नि-
र्हेना रोमराजी पुनर्यस्यास्त्रिवलीभिर्विराजिता गंभीरा नाभिका यस्याः सा प्रशस्ता निगद्यत इति इति रोमरा-
जिलक्षणं अथ हृदयलक्षणं भविष्यपुराणे उन्नताचननैः तद्वा विषमैर्विषमाशयाः आपदैश्वर्यसंपन्नाः व-
निताः हृदयैः समैरिति स्कांदे काशीखंडे निर्लोम हृदयं यस्याः समं निम्नत्ववर्जितं ऐश्वर्यमप्यवैधव्यं प्रियमे-
व च सा लभेत् विस्तीर्णहृदया योषा पुंश्चली निर्दया तथा उद्भिन्नरोमहृदया पतिं हंति विनिश्चितमिति सामुद्र-
तिलके निर्लोमव्रणरहिते हृदयं यस्याः समं मनोहारि ऐश्वर्यमवैधव्यं पतिप्रियात्वं भवति नस्याः पिशितवि-

५१ पु.पु.

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वर्णितमुन्नतविनतंहृदयंव्रणान्वितंविषमं कर्मकरीणांनतुनैववनितानांनह्याणादेवेति इतिहृदयलक्षणं अ

ल०ल०

थवक्षोलक्षणं भविष्यपुराणे समंमांसलंचारुशिरारोमविवर्जितं वक्षोयस्याभवेत्वार्यभोगान्भुंक्तेयथेप्सिता

५५

न हिंस्राभवतिवक्षेणदोः शीलंरोमशेनतु निर्मांसेनतुवैधव्यंविस्तीर्णेनकलिप्रियेति विस्तीर्णपरिमाणमपि

५६

के तत्परिमाणंचोक्तं स्कांदेकाशीखंडे अष्टादशांगुलततमुरः पीवरमुन्नतं सुखायपुंसःखायभवेद्रोमशंवि

षमंश्रि ति वराहः रोमप्रहूणितमुरोमृदुचांगनामिति मृदुनातिमृदु सामुद्रतिलके पीवरमुन्नतमायत

मुरःस्थूलेनमृदुनकठिनंविशिरं अष्टादशांगुलततंरोमविहीनंशुभंस्त्रीणामिति इतिवक्षोलक्षणं अथस्तन

लक्षणं भविष्यपुराणे सुवृत्तमुन्नतंपीनमस्फोटनयाघनं स्तनयुग्मं सदाशस्तमतोन्यदसुखावहं उन्नतिःप्र

थमगर्भेहृदयोरेकस्यभूयसी वामेनतुजायतेकन्यादक्षिणेनभवेत्सुतः स्तनैःसर्पफणाकारैःश्वजिह्वाकृतिभि

स्तथा दारिद्र्यमभिगच्छन्तिस्त्रियःपुरुषचेष्टिताइति स्कांदेकाशीखंडे घनौवृत्तौदृढौपीनौसमौशस्तौपयोध

रौ स्थूलाग्रौविरलौशुष्कौवामोन्नतौनशर्मदौ दक्षिणोन्नतवक्षोजापुत्रिणीष्वग्रणीर्मता वामोन्नतकुचासूतेकु

न्यांसौभाग्यसुंदरी अश्वत्थदलरीतस्तोकचौदोः शीलस्त्वचुकौ पीवरास्यौसांतरालौदृढपीनौनशोभनौ मूले

स्थूलौक्रमकृशावग्रेतीक्ष्णौपयोधरौ सुखदौसर्वकालेतुपश्चाद्दमंतदुःखदाविति गरुडपुराणे अरोमशौ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्तनौ पीनौ घनावविषमौ शुभाविति गर्गोपि स्त्रियाः समाश्चापि भवंति यासामत्राश्चमांसोपचिताश्च वाससाः
रक्तायतंत्रशः परिमंडलाश्च स्त्रीणां स्तनाः पिंडिन वक्षवथस्याः इति वासावदनयोग्याः इदं तेऽन्यर्थः इति स्तनलक्षणं
अथ चूचुकलक्षणं भविष्ये दीर्घेन चूचुकेयस्याः स्त्रीधूर्तास्तिनिषिद्या प्रविष्टेन पुनर्यस्या दृष्टिसा पुरुषं सदे
ति स्कांदे काशीखंडे स्तनशां चूचुकयुगं शस्तं श्यामं सुवर्तुलं अंतर्मग्नं च दीर्घं च कृशं तत्क्लेशाय जायते इ
ति इति चूचुकलक्षणं अथ जत्रुलक्षणं स्कांदे काशीखंडे पीवराभ्यां च जत्रुभ्यां धनधान्यनिधिर्वधूः श्लथा
भ्यां च निमग्नाभ्यां विषमाभ्यां दरिद्रिणीति इति जत्रुलक्षणं अथ स्कंधलक्षणं स्कांदे काशीखंडे अवक्राव
नतौ स्कंधावदीर्घावकृशौ शुभौ वक्रौ स्थूलौ च रोमाढ्यौ प्रेष्यत्वे च यशस्वकाविति भविष्यपुराणे उन्नतावनत
स्त्रीवनातिस्थूलौ लोमशौ सुस्कंधस्तु सदा स्त्रीणां सौभाग्यारोग्यवर्द्धनः स्थूले स्कंधे वहेद्भारं रोमशे व्याधिनी भवेत्
वक्रे स्कंधे भवेद्वंध्या कुलटा चोन्नते भवेत् इति स्कंधलक्षणं अथांसलक्षणं स्कांदे काशीखंडे निर्गूढसंधी स्त्र
स्ताग्रौ शुभावंसौ सुसंहतौ वैधव्यदोसमत्वांगो निर्मांसावतिदुःखदाविति इत्यंसलक्षणं अथ कक्षालक्ष
णं कक्षे स्वल्परोमाणोन्नते गंभीरे च मांसले शस्तेन शस्ते गंभीरे शिराले स्वेदमेदुरे इति गर्गसंहितायां
उन्नतानतपास्त्र तरोमशुकवर्णौ पञ्चाः परिमंडलाश्चाप्रदक्षिणावर्तसमन्विनाश्च कक्षाः प्रशंसंति विप्रा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लसत्त्वा इति सामुद्रतिलके कलाप्रांतसंगं धिम्निगं च समुन्नतं पिशितपूर्णं प्रशस्तमिति शेषः इति कत्नालक्षणं
अथ बाहुलक्षणं भविष्यपुराणे अनुन्नतशिरासंधिपीने दोषविवर्जिते गोपुच्छाकृति नारीणां भुजयोर्युगलं शुभं
निगूढग्रंथयो यासां कूर्परा रोमवर्जिताः बाहवो ललिता यासां प्रशस्तास्ते जनकोमला इति स्कांदे काशीखंडे मृणालो
दोषौ स्तुनिर्दोषौ निगूढास्थिग्रंथिकौ कोमलौ विशिरौ च विरोमाणौ सरलौ हरिणीदृशां वेधवंस्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ दौ
र्भाग्यसूचकौ परिक्लेशाय नारीणां परिह्रस्वशिरो भुजाविति गर्गः न चातिलंबा न कृशा न च ह्रस्वा भुजंगव-
(लक्ष· ५५ 55)
एणिः स्थूला लोमवर्जिताः निर्ग्रंथिला हतन निश्चलेवाः सुबाहवस्त्रीषु भवंति पद्मा इति इति बाहुलक्षणं
अथ मणिबंधलक्षणं भविष्यपुराणे मणिबंधोऽव्यवच्छिन्नो रेखात्रयविभूषितः ददाति नचिरादेव मणि-
कांचनमंडनमिति इति मणिबंधलक्षणं अथ करलक्षणं स्कांदे काशीखंडे अंभोजमुकुलाकारसंश्लिष्टा-
ङ्गुलिसन्नखं करद्वयं मृगाक्षीणां बहुभोगाय जायत इति गरुडपुराणे निगूढमणिबंधौ च पद्मगर्भोपमौ कर
रौ शुभाविति शेषः क्रव्यादरूपैर्हस्तैश्च वृककाकादिसंनिभैः क्रव्यादाः आममांसादनशीलाः व्याघ्रादयः
करालैर्विषमैः शुष्कैर्वित्तहीना भवंति हि इति जगन्मोहने समुद्रः पद्मपत्रनिभा यासां नारीणां पाणिपल्ल
वाः मृदवः स्वेदरहितास्तासां भवति संपदेति वराहः निगूढमणिबंधनौ तरुणपद्मगर्भोपमौ करौ न

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पतियोपितां न नु विकृष्टपर्वाङ्गुली क्रव्यादरूपैर्ह्रस्वकाककंकसरीसृपोलूकसमानचिह्नैः शुष्कैः शिरा
लैर्विषमैश्च रूक्षैर्भवंति नार्यः सुखवित्तहीनाः इति करलक्षणं अथ करपृष्ठलक्षणं स्कांदे का-
शीखंडे विरोमविशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतं वैधव्यहेतुरोमाढ्यं निर्मांसं स्नायुमज्जनेदिति सामु
द्रतिलके रोमशिरापरिहीनं घनमांसं पाणिपृष्ठमवनतं स्निग्धसममवलानां समुन्नतं शस्यते प्रायः इति
अथ पाणितललक्षणं भविष्यपुराणे मृदुमध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररंध्रकं प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यम
ल्परेखं शुभं स्त्रियं विधवा बहुरेखेण रेखाहीनेन निःस्वता भिक्षुकी सुशिराढ्येन नारी करतलेन चेति गारुडे नाति
न्निम्नोन्नतं स्त्रीणां भवेत्करतलं शुभं रेखान्वितं च विविधं कुर्यात्संभोगिनी प्रियमिति वराहसंहितायां न
निम्नमतिनोन्नतं करतलं सुरेखान्वितं करोत्यविधवां चिरं सुखार्थं संभोगिनीमिति इति पाणितलल
क्षणं अथ कररेखालक्षणं भविष्यपुराणे घनस्रोरक्तगभीरा रेखाः स्निग्धाः करे स्त्रियाः यदि स्युः सुखमा
मोति विच्छिन्नाभिरनीशता समरेखायवायासामंगुष्ठांगुलिपर्वसु नासां हि विपुलं सौख्यं धनं धान्यं तथा-
क्षयं श्रीवत्सध्वजशंखाब्जगजवाजिनिवेशनैः चक्रस्वस्तिकवज्रासिशरांकुशभेर्यांकुशैर्निवेशनैरहं
प्रासादकलशच्छत्रैः हारकेयूरकुंडलैः शंखवनोरणानि कुंडैर्हस्तमध्ये नृपस्त्रियः यस्याः पाणितले रेखाः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.सा.
५६
56

पस्रुकदंडकुंडकाः यस्याः पाणितले रेखाः स्रुकदंडकुंडकाः इति पाठांतरं स्रुक् यज्ञपात्रविशेषः कुंडमेव कुं-
डकमिति स्वार्थे कप्रत्ययः दृश्यंते च राणी चास्याः यज्ञपत्नी भवत्यसौ यज्ञपत्नी याज्ञिकपत्नी दीक्षापाणितला
मानभोगसुरादिभिस्त्रियः जायंते वणिजां पत्न्यो रत्नकांचनशालिनः आपणः क्रयविक्रयस्थानं दात्रयोक्त्र
प्रगावर्तेहललोलूखललांगलैः भवंति यत्र याम्यायाः कृषीवलजनांगनाः दात्रं धान्यादिच्छेदनसाधनं कृ-
षीवलशास्त्रे योक्त्रं युगमनेन बध्यतेऽनेनेति योक्त्रः गारुडे रेखायामणिबंधोत्थायागतामध्यांगुलीकरे गता पाणि-
तले पादयोरूर्ध्वं पादतले स्थिता स्त्रीणां पुंसां तथा सा स्याद्भाग्याय च सुखाय च अंगुष्ठमूलगतरेखास्तु पिक्र
स्थाकं तैव हृत्स्थाः पुत्राः स्वल्पायुष्मतः परिकीर्तिताः स्वल्पाश्चोल लघुश्छिन्ना दीर्घाश्छिन्ना मृत्युप्र
इति स्कांदे काशीखंडे रेखाश्चक्राचं गंभीरा स्निग्धा शोणा च वर्तुला करे रेखांगनायाः स्यात् सुभाभाग्यायु
ष्मतः मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन च सुप्रजा पद्मेन भूपतेः पत्नी जनयेद्भूपतिं सुतं रेखाकृतिः स्त्रियाः
पाणौ नंद्यावर्तः प्रदक्षिणाः शंखातपत्रकमठा देवमातृत्वसूचकाः तुलामानाकृती रेखे वणिक्पत्नीत्व-
सूचके गजवाजिवृषाकाराः करे वामे मृगीदृशां रेखाः प्रासादवज्राभा ब्रूयुस्तीर्थकरीं शुभां कृषीवल
स्य पत्नी स्यात् शकटेन युगेन वा चामरांकुशकोदंडैः राजपत्नी भवेद् ध्रुवं अंगुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा या ।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिकनिहिकौ पदिसापतिहृद्वीसाहूवनस्तांमनेनस्तुधीः त्रिशूलासिगदाशक्तिदंडभ्याकृतिरेखया नितंविनी
कीर्त्तिमनीमार्गेनपृथिवीतले मार्गेनदानेन काकजंबुकमंडूककपूककच्छकभोगिनः रासभोष्ट्रविडा-
लाभाः करस्था दुःखदास्त्रियाइति गर्गोपि मत्स्यः समुद्रीवस्तुपायनेच ध्वजस्तथासिर्दिनकृच्छशीच शं-
खः पुरंचक्रमथोवनेचद्विपस्तथाम्बुजंनेतोरणंच छत्रंपवः पद्ममथांकुशंचसिंहोहयः स्वस्तिक
पवचापि कूर्मः पताकामकरः पुमांश्चदंडोशनिः पूर्णघटस्तथाच अथानिर्विन्नं पाणिमध्येनभिभवेति
यासमिकंनथाद्वेचवहुमिचापि अथंनसौख्यंवजपुत्रनाचसौगांनथालक्षणोरादिशेचेति इतिकररेखा
लक्षणं अथकरांगुष्ठलक्षणं स्कांदेकाशीखंडे शुभदः सरलोंगुष्ठोवृत्तोवृत्तनखोमृदुरिति इत्यंगुष्ठ
लक्षणं अथांगुलीलक्षणं भविष्यपुराणे संहताः समपर्वाणस्तीक्ष्णाग्राः कोमलत्विषः समाश्चांगुल
योयस्याः सानारीभोगवर्द्धनीति स्कांदेकाशीखंडे अंगुल्यस्समपर्वाणोदीर्घावृत्ताः क्रमात्कृशाः चिपि
टास्थूलावक्राः पृष्ठरोमयुजोशुभाः अतिह्रस्वाः कृशावक्राविरलारोगहेतुकाः दुःखायांगुलयःस्त्री
णांवक्रपर्वसमन्विताइति इत्यंगुलीलक्षणं अथनखलक्षणं भविष्यपुराणे बंधुजीवारुणास्तुंगानखे
श्वर्यमाप्नुयात् खेरैश्चविवर्णाभैःश्वेतपीतैस्त्वीशनामिति स्कांदेकाशीखंडे अरुणाःसशिखास्तुंगाः क

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रजाः स्वल्पशो शुभाः निम्नाविवर्णाः शुष्काभाः पीतादारिद्र्यदायकाः नखेषु बिंदवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणी
स्त्रियाः पुरुषाश्चापि ज्ञायंते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैरिति गर्गसंहितायां अन्यत्राः सुवर्णाः लतनप्रभाश्च वैडूर्य
मुक्ताफलसंनिभाश्च पुष्पान्विताः सौख्यकरा भवंति केशपाशाभाश्च नखाः करेषु अत्र समुदितानां शुभफ
लक्ष० लेवकत्वं अन्यथा स्कांदे पुष्पितनखो नाम शुभफलस्यावर्णादि ह तु शुभफलस्य वर्णादिरोपः सम्यगेव इति
५२ नखलक्षणं अथ पृष्ठलक्षणं स्कांदे काशीखंडे अंतर्निमग्नवंशास्थि पृष्ठं स्यान्मांसलं शुभं पृष्ठेन रोमयु
57 केनैव धनं लभते ध्रुवं भुग्नेन विनतेनापि सशिरेणातिदुःखितेति भविष्यपुराणे अभग्नमांसलं पृष्ठम
रोमशं सुसमाहितं नानाश्चर्यकरं तिसौख्यकरं परं कुब्जमद्रोणिकं पृष्ठं रोमशं यदि पोषितः स्त्रीणां तेपि
ष्ठं वितस्तानास्ति हस्तानां निवसेत्ति अद्रोणिकं द्रोणिकाष्ठं त्रिवल्गीनं ह हिशालं न भवति अत्रैव शामनि
षे सामुद्रतिलके भुग्नवलितेन नरा दासी भर्तृघ्नी द्रोणिका विशालेनेति इति पृष्ठलक्षणं अथ कृकाटिका
लक्षणं भविष्यपुराणे अत्युन्नता समांसा च समा यस्याः कृकाटिका सुदीर्घमायुस्तस्यास्तु विरंभश्री च जी
वति निर्मांसा वक्रमांसा च शिराला रोमशा तथा कुटिला विकटा चैव विस्तीर्णा च न शस्यते इति स्कांदे काशी
खंडे अत्युन्नता कृकाटिका श्रेष्ठा समांसा च समोन्नता शुष्का शिराला रोमाढ्या विशाला कुटिलाशुभेति इति कृ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८८

कारिकालक्षणं अथ कंठलक्षणं स्कांदे काशीखंडे मांसलो वर्तुलः कंठः प्रशस्तः कंबुतरंगलः शस्ताग्रीवा त्रि
लेखा कास्तु ब्धता स्थिः सुसंहता निर्मांसा चिपिटा दीर्घा स्थपुटा न शुभप्रदा स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा
च किंकरी वंध्या हि चिपिटग्रीवा ह्रस्वग्रीवा च निर्धनेति भविष्यपुराणे सुसंहतो वृत्तपीनस्या ग्रीवा या च तत्र र
गुल्ले मणिकांचनरत्नाद्यैः सा दधाति विभूषणं अथ मा स्त्रीकृशग्रीवा दीर्घग्रीवा च वंध्यकी ह्रस्वग्रीवा मृतापत्या
स्थूलग्रीवा च दुःखितेति गर्गोपि स्पष्टत्रिलेखा सुभगोपपन्ना सुस्निग्धमांसोपचिता सुवृत्ता न चातिदी
र्घा चतुरंगुला च ग्रीवा च दीर्घा भवतीह धन्येति इति कंठलक्षणं अथ चिबुकलक्षणं स्कांदे काशीखंडे चिबु
कं द्व्यंगुलं शस्तं वृत्तं पीनं सुकोमलं स्थूलं द्विधा संविभक्तमायतं रोमशं त्यजेदिति इति चिबुकलक्षणं अथ हनु
लक्षणं भविष्यपुराणे न स्थूलो न कृशो न लोमलो न वक्रो न च रोमशः हनुरेवंविधः श्रेष्ठलतोन्मानसशस्तनर॰
ति स्कांदे काशीखंडे हनुश्चिबुकसंलग्ना निर्लोमा सुघना शुभा वक्रा स्थूला कृशा ह्रस्वा रोमशा न शुभप्रदेति
इति हनुलक्षणं अथ कपोललक्षणं भविष्ये ईषदापांडुरा गंडाः सुवृत्ताः सर्वतः स्त्रियाः प्रशस्ता न पुनर्दृष्टा रोम
कूपकरूषिता इति स्कांदे काशीखंडे शस्तौ कपोलौ वामाक्ष्याः पीनौ वृत्तौ समुन्नतौ रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मां
सौ परिवर्जयेदिति इति कपोललक्षणं अथ मुखलक्षणं भविष्यपुराणे सुसदृद्यं शशांभोजसदृशं विंबं ऽसवि

८८
५५

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मं वदनं वरनारीणामभीष्टफलदं शुभं मालतीवकुलाभोजनीलोत्पलसुगंधि यत् वदनं स्वयनेनैव पद्मनालं
लभोजनैः चक्रवरस्मुखी पुत्रिमंडलास्या च या भवेत् अथ प्रजावाजिवक्त्रा स्त्री महावक्त्रा च दुर्भगा खरवराहवृके
लूकमर्कटास्यास्त्रियः स्त्रीयः क्रूरास्ताः पापकर्मिणः प्रजावंधुविवर्जिता इति स्कांदे काशीखंडे समंस
मांसेस्तु स्निग्धं सामोदं वर्तुलं मुखं जनेनत्व वदनकार्यं धन्यानामिह जायत इति जनेनत्व वदनकार्यं येन मुख
सदृशो गारुडे मांसलं वर्त्तुलं मुखमिति इति मुखलक्षणं अथाधरलक्षणं भविष्यपुराणे ताम्राभः
लक्ष॰ किंचिदानम्रः स्थौल्यकार्श्यविवर्जितः अधरो यदि तद्गच्छनारीणां भोग्यदः सदा स्थूले कलहशीला स्या
५८ द्विवर्णो चातिदुःखिनेति स्कांदे काशीखंडे पाटलावर्तुलः स्निग्धै रेखाभूषितमध्यभूः सीमंतिनीनामध
58 रो धराजानिप्रियो भवेत् कृशः प्रलंबः कुटिलो रूक्षो दौर्भाग्यसूचकः श्यामः स्थूलोऽधरोष्ठः स्याद्वैधव्य
कलहप्रद इति गारुडे आरक्तावधरौ श्रेष्ठाविति वाराहसंहितायां वंधुजीवकुसुमोपमोऽधरो मांसलो
रुचिरविंबरूपभृदिति उपलेस मृदुः अधरो विंबसंकाशो मांसलो ॰ स्फुटिनस्तथा यस्याः सा राजमहि
षी कुमारीनाव संशय इति अधरलक्षणं अथोत्तरोष्ठलक्षणं स्कांदे काशीखंडे मसृणोन्नमकामिन्याश्चो
त्तरोष्ठः सुभो मलः किंचिन्मध्योन्नतो रोमा विपरीतो विरुद्धकृदिति भविष्ये उत्तरोष्ठेन नीलेन वनिता

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संतकोपनेति गारुडे यास्तरोमोन्नरोष्ठी स्यात्तस्य भामर्तेरेवहीति इत्यन्नरोष्ठलक्षणं अथ दंतलक्षणं भविष्यपुरा
णे शंखकुंदेन्दुधवलैः स्निग्धैस्तैर्गैरसंधिभिः मिष्टान्नपानमाप्नोति दंतैरेभिरनुत्तमैः लक्ष्मैरति कृशैर्ह्रस्वैः स्फु
टितैर्विरलैस्तथा रूक्षैश्च दुःखिनानित्यं विकटैर्विमतिर्भवेदिति गारुडे कुंदपुष्पसमा दंता इति शुक्ला
इति शेषः करालाविषमा दंताः क्लेशाय च भयाय च चौर्याय कृष्णमांसाश्च दीर्घाभर्तृघ्नमत्सवरति स्कांदे
काशीखंडे गोक्षीरसंनिभाः स्निग्धाः द्वात्रिंशद्दशनाः शुभाः अधस्तादुपरिष्टाच्च समाः स्तोकसमुन्नताः पी
ताः श्यामाश्च दशनाः स्थूला दीर्घा द्विपंक्तयः शुक्त्याकाराश्च विरलाः दुःखदौर्गत्यकारणं अधस्तादधिकैर्दंतै
र्मातरं भक्षयेत्स्फुटं पतिहीना च विकटैः कुलटा विरलैर्भवेदिति जगन्मोहने समुद्रः अनुपमा भवेन्नारी दंता
नां चलनं यदि निधनं वै तदा तस्य तत्स्यात्स्वैव विनिर्दिशेदिति इति दंतलक्षणं अथ जिह्वालक्षणं भविष्य
पुराणे जिह्वानन्तुतनलाः वक्रा नातिदीर्घा च शस्यते स्थूलाऽस्मा विवर्णिया वक्रा भिन्ना च निंदितेति स्कांदे का
शीखंडे जिह्वेष्टमिष्टभोक्त्री स्याच्छोणा महीनया सिताः दुःखायमध्यसंकीर्णा पुरोभागे सविस्तरा सितया
तो यमरणं श्यामया कलहप्रिया दरिद्रिणी मांसलया लंबया भक्ष्यभक्षिणी विशालया रसनया प्रमदातिप्र
मादभागिति जगन्मोहने समुद्रः श्यामा यस्याः कलहो नित्यं करोत्येव मवाप्नुयात् जिह्वायामितस्तु षेगः गर्गः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नचापितन्वी न भुजंगवक्त्रसुविद्रुमाभाः तनवग्रभाग्य जिह्वाः प्रशस्ता विमलाः सुलक्षणा स्त्रीणां तथा मांससमप्रभा
श्चेति इतिजिह्वालक्षणं अथघंटिकालक्षणं स्कांदेकाशीखंडे कंठेस्थूलासूक्ष्मा च नातिक्रमनीलाग्रसुलो
हिता प्रशस्तेवाम्रभा च घंटी स्थूलाकृष्णा च दुःखदेति इतिघंटिकालक्षणं अथतालुलक्षणं स्कांदेकाशी
लक्ष॰ खंडे स्निग्धंकोकनदाभासं प्रशस्तं तालुकोमलं सितेतालुनिवैधव्यं पीते प्रव्रजिता भवेत् कृष्णे पत्यविहो
५८ नात्तीरूक्षे वैरकृद्विनीति गारुडे तालुश्वेतापधनं दूत्यं कृष्णा च परुषा चेति जगत्मोहनेसमुद्रः श्वेतेन
59 तालुना दासी दुःखिता कृष्णतालुका हरितेन च रूक्षेण प्रव्रज्यामनुगच्छतीति गर्गसंहितायां यासामवि
वर्णानि स्वमांसलानिरक्तोत्पलाभानि सदारुणानि तालूनि भद्राणि भवन्ति चापि ताः पुत्रवत्यः सुभगास्त्वना
र्यः इति इति तालुलक्षणं अथहसितलक्षणं स्कांदेकाशीखंडे अलक्षितद्विजं किंचित्किंचित्फुल्लकपोलकं
स्मितंप्रशस्तं सुदृशामनिमीलितलोचनमिति गारुडे स्मितेकूपौ गंडयोर्यस्याः सा भवेद्व्यभिचारिणीति इतिहसि
तलक्षणं अथनासालक्षणं भविष्यपुराणे नस्थूला न कृशा वक्रा नातिदीर्घा समुन्नता ईदृशी नासिका
यस्याः सा धन्या न शुभकरीति गारुडे नासासमपुटा स्त्रीणां नरुचिरा शुभे स्कांदेकाशीखंडे समवृत्तपुटा
नासालघुच्छिद्रा शुभावहा स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न प्रशस्ता समुन्नता आकुंचिता रुणाग्रा च वैधव्य क्लेशदायिनी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परप्रेष्याच विकटा ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रियेति जगन्मोहने समुद्रः दीर्घेणानासिकाग्रेणानारी भवति कोपना ह्रस्वे
णाच भवेद्दासी परकर्मकरा स्मृता विपिटा नासिका यस्या वैधव्यमपि गच्छतीति इति नासिकालक्षणं अथ स्त
नलक्षणं स्कंदे काशीखंडे दीर्घाग्रः स्तनद्वन्द्वं दीर्घचूचुकहृद्विपिंडितमिति सामुद्रतिलके दीर्घदीर्घाग्रःस्त
नद्वन्द्वे सत्कहि विपिंडितं स्यादि अत्युन्नतं पृथु ते शस्तं ततोन्यथा भवति विपरीतमिति इति स्तनलक्षणं अथ नेत्र
लक्षणं भविष्ये नीलोत्पलदलप्रख्यैराताम्रैः स्वायतैरभिः वनितानयनैरेभिर्भोगसौभाग्यभागिनी शशका
क्षी मृगाक्षी च वराहाक्षी वरांगना पद्मपत्रसमप्रख्या महान्तं भोगमाप्नुयात् गंभीरैरसंहितैर्वक्रैः रेखाविभूषि
तैः राजपत्न्यो भवंतीह नयनैर्मधुपिंगलैः वायसाकृतिनेत्रा या दीर्घापांगा नियोषिता अनाविलानि वाह्यत्राभ
वंति ह्रि विभ्रनयेर्गंभीरैः पिंगलैश्च वृद्धः खिताश्चाविरायुषः वयोमध्येत्यजेत्प्राणान्नृत्तलीचपांगना रक्ताक्षी
विषमाक्षी च धूम्राक्षी मलिलोचना वर्जनीया सदा नारी श्वेतत्रा चैव हंसनैः उद्भ्रांतकेकरैश्चैव नर्तनैर्गजनासिर
मध्यमांसाध्यानिसंचपलाक्ष्मैव सर्वत इति चपलाः परपुरुषरता ः परपुरुषरता ः गारुडे नीलोत्पलनिभं चक्षुरि
ति अथ स्त्रीभ्यस्तुवंगः स्कंदे काशीखंडे ललनालोचने शस्ते रक्तांते कृष्णतारके गोक्षीरवर्णविशदे स्नि
ग्धे कृष्णपक्ष्मणी उन्नताक्षी न दीर्घायुर्वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षी न शोभना का

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष. ६०
60

मद्यहिङ्गुलानितरांगोपिंगाक्षी सदुर्जना पारावताक्षी दुःशीला रक्ताक्षी भर्तृघातिनी कोटराक्षी नयनाढ्या गजनेत्रा न
शोभना पुंश्चली वामकाणाक्षी वंध्या दक्षिणकाणिका मधुपिंगाक्षी रमणी धनधान्यसमृद्धिभागिति वराहेण्या
हृ नेत्रे यस्याः केकरे पिंगले वा सा दुःशीला श्यावलोललेक्षणा चेति उमले समुद्रोऽपि नीलोत्पलसवर्णाभे नेत्रे
लावण्यसंयुते सुगीभवेत्तु सा कन्या धनधान्यविवर्द्धिनीति सामुद्रतिलके यस्याः पिंगलनेत्रे हि तयसा सुवन
कौशलं लभते दुःशीलत्वेन समं वैधव्यं वा ध्रुवं रमणी गोपिंगलनेत्र पुत्रापि नेरश्वश्रूरच माता लं पुत्रं भ्रातरम
प्यपिगच्छति कामयथ्यिनेव मोहपरेति इति नेत्रलक्षणं अथ पक्ष्मलक्षणं स्कांदे काशीखंडे पक्ष्मभिः स्वच्छ
नैः स्निग्धैः कृष्णैः सुभाग्यभाक् कपिलैर्विरलैः स्थूलैर्निंद्या भवति भामिनीति इति पक्ष्मलक्षणं अथ भ्रूलक्ष
णं भविष्यपुराणे अभिन्नाग्ररोमाणो रेखाः सुद्धान संगताः भ्रुवोर्द्धवक्रास्तन्मास्त्र्येयोषितां च सुखावहाः च
न्नैलाभिस्त्रसो भाग्यं वंध्यास्या दीर्घरोमभिः पिंगलाः संगताः स्फुटा दरिद्रायाः न संशयः इति स्कांदे काशीखंडे भ्रु
वौ स्तवर्त्तलेन न्योन्य स्निग्धे कृष्णे असंहते प्रशस्ते मृदुरोमाणौ सुभ्रुवः कार्मुकाकृती खररोमा च स्थूला विकी॰
र्णा सरला स्त्रियाः न भ्रूः प्रशस्ता मिलिता दीर्घरोमा च पिंगलेति इति भ्रूलक्षणं अथ कर्णलक्षणं स्कांदे का
शीखंडे लंबौ कर्णौ शुभावर्त्तौ शुभंदौ सुखप्रदौ शष्कुलीरहितौ निंद्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशाविति गारुडे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समांसलेकर्णापुरमंसममंरडसमाहितमिति भविष्यपुराणे शुकराकृतयः कर्णाः नतस्कंधानसंस्थिताः नरं
तिविलसत्कांतिहेमरत्नविभूषणं खरोष्ट्रनकुलोलूककठिनश्रवणाः स्त्रियः प्राप्नुवंतिमहद्दुःखं विशयशः
ल प्रव्रजेतिरीति इतिकर्णलक्षणं अथललाटलक्षणं भविष्यपुराणे अर्धेंदुप्रतिमाभोगमरोमशमनायते
ततश्चाभोगकरंश्रेष्ठंललाटंवरयोषितामिति आभोगोविस्तारः स्कांदेकाशीखंडे भालःशिराविरहितोति
लोमार्द्धेंदुसन्निभः अनिम्नस्त्र्यंगुलोनार्याःसौभाग्यारोग्यकारणं व्यक्तस्वस्तिकरेखंचललाटंराज्यसंपदे प्रते
वमल्लिकंयस्यादेवरंहंतिसाध्रुवं रोमशेनशिरालेनयोम्रत्नागोपिनामता गोपिल्ललाटं भालगेनत्रिशूलेन
निर्मितेनस्वयंभुवा नितंबिनीसहस्राणांस्वामित्वंयोषिदाप्नुयादिति गारुडेललाटमधिकृत्यप्रभ्रर्धेंदुसंस्था
नमनंगस्यादरोमकं जगन्मोहनेसमुद्रः ललाटंत्र्यंगुलंयस्याःशिरारोमविवर्जितं निर्मलंस्वसमंदीर्घंमा-
प्नुःसौख्यधनप्रदमिति इतिललाटलक्षणं अथशिरोलक्षणं भविष्ये हिरण्यपरिणाहेनललाटात्रिगुणोव
यत् शिरःप्रशस्तंनारीणांस्तथमाहस्तिमस्तिकेति स्कांदेकाशीखंडे मौलिःशस्तःसमुन्नतः गजकुंभनिभो
न्नतः सौभाग्यैश्वर्यसूचकः स्थूलमूर्धाचविधवादीर्घशीर्षाचबंधकी विशालेनापिशिरसाभवेदौर्भाग्यभा
जनमिति गारुडे स्त्रीणांसमंशिरःश्रेष्ठमिति इतिशिरोलक्षणं अथकेशलक्षणं भविष्ये सूक्ष्माःकुसा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मृदुस्निग्धाः कुंचिताग्राः शिरोरुहाः भवंति श्रेयसे स्त्रीणां अमेयस्तुः केशशोकराः कुंचिताग्राः अंगरभंगिभाजः
गारुडे स्निग्धा नीलाश्च मृदवो मूर्द्धजाः कुंचिताग्रकाः इति शुभाः स्मृताः स्कांदे केशाश्चालिकुलच्छायाः सूक्ष्माः
स्निग्धाः सुकोमलाः किंचित्कुंचिताग्राश्च कुटिलाश्चातिशोभनाः परुषाः स्फुटिताग्राश्च विरलाश्च शिरोरु
लक्ष. हाः पिंगलाः लघवो ह्रस्वाः दुःखदारिद्र्यबंधदाः इति इति केशलक्षणं उक्तदेहस्यापादतलकेशांतलक्षणान्यु
५९ क्तानि सैव व्यंजनादिलक्षणान्युच्यंते सामुद्रतिलके व्यंजनमथ प्रकृतेर्योमिश्रकमेतदपि भवति संस्थाने
संदेपाललक्षणमनुक्रमेणैव वक्ष्यामः संस्थाने शरीरारूपितलक्षणं जन्मांतरविरचितमिह शुभाशुभ
व्यक्त्यै ध्रुवं येन तन्मशकादिव्यंजनं समस्तं जगत्यायतने सद्भिः एकः ह्रस्वो धूम्रो विंदुसमो मशक एव विशेषः
तिलकं तिलकाकारं तनोर्यदपि लांछनं स्त्रीणामिति भविष्यपुराणे यस्याः कंठे ऽथवा वामहस्ते कर्णे स्त
ने ऽपि च मशकं तिलकं चापि सा ऽसर्वान् जनयेत्सुतानिति स्कांदे काशीखंडे भ्रुवोरंतर्ललाटे वा मशको
राज्यसूचकः वामे कपोले मशकः शोणो मिष्टान्नदः स्त्रियाः + तिलकं लांछनं शोणं यस्या वामे कुचे भवेत्
एकं पुत्रं प्रसूयादौ ततः सा विधवा भवेत् यस्याः दक्षिणे भागे तिलकं यदि योषितः तदा हि निपतेः पत्नी
स्तने च हि निपंक्तं नासाग्रे मशकः शोणो महिष्या एव जायते कृष्णः स एव भर्तृघ्न्याः पुंश्चल्या वामकीर्तितः
+ तिलकं लांछनं वापि हृदि सौभाग्यकारणं यस्याः दक्षिणवक्षोजे शोणे तिलकलांछने कन्याचतुष्टयं सूते सूते सा च सुतत्रयं

५९

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कौ

नाभेरधस्तात्तिलकं मषौ लांछनं शुभं मशकस्तिलकं चिह्नं स्तनदेशे दरिद्रकृत् कर्णे कर्णे तथा कंठे वामेऽथ
स्याः स्फुरेद्यदि प्रथमं त्रयाणामेकं तु भाग्यं पुत्रदं भवेदिति जगन्मोहने समुद्रः स्तने वामे तु हस्ते वा भाले लां
छनं तिलकोपि वा शीघ्रं तु विधवा सा स्त्री जायतेऽतीव दुःखिता स्तने तु दक्षिणे यस्या लांछनं तिलकोपि
वा कुंकुमोदकसंकाशं सा भवत्यतिशोभना लभते वित्तसंपत्तिं भर्त्तारं वशवर्त्तिनं पुत्रत्रयं प्रसूयेत
तथा कन्याचतुष्टयं गुह्यांते तिलको यस्या रक्तकुंकुमसंनिभः अथवा दक्षिणे भागे प्रशस्ता सा निगद्यते
स्तनमध्ये तु नारीणां कुंकुमोदरसंनिभं लांछनं दृश्यते यस्याः प्रशस्ता सा निगद्यते ललाटे दृश्यते यस्याः
हस्ते तिलकमुज्वलं पंच सा जनयेत्पुत्रान्धर्मसौभाग्यभागिनी यस्यास्तु हृदये नापि रक्ताभस्तिलको भवेत्
लांछनं वापि रक्ताभं सा नारी शोभना भवेत् लभते वित्तसंपत्तिं भर्त्तारं वंशवर्द्धनं पुत्रत्रयं प्रसूयेत तथा क
न्याचतुष्टयं यस्याः पयोधरे वामे मशकं तिलकोपि वा हस्ते कर्णे च कंठे च सा कन्या पुत्रभागिनीति उक्तस्था
नेष्वेव मशकादिलक्षणं शुभमन्यत्राशुभमिति तदुक्तं सामुद्रे तिलके मशके तिलके लांछने मुक्तस्थाने वि
नाऽशुभं स्थाने अंगे पुनरपसव्ये दृश्यांक्लेशावर्द्धवज्रशशशंति इति श्रीमन्मल्लसामंतचक्रचूडामणिम
रीचिमंजरीनीराजितचरणकमलश्रीमन्महाराजाधिराजप्रतापरुद्रतनूजश्रीमन्महाराजमधुकरसा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हस्तन्यस्तरुद्रथिवलयवसंधसारदर्पपुंडरीकविकासदिनकरश्रीवीरसिंहदेवो योजितश्रीहंसपंडितमनुज
रभुरामसिश्रसूनुसकलविद्यापारावारपारीणजगद्धारिश्रमहाराजपारींद्रविद्वज्जनजीवातुश्रीमन्मि
त्रकृष्णामिनेवीरमित्रोदयाभिधनिबंधेलक्षणप्रकाशेश्रुकृषलक्षणं॥ अथस्त्रीणांप्रकृतिलक्षणं सा
लक्ष. मुद्रतिलके प्रकृतिर्द्विविधागदिता स्त्रीणांश्लेष्मादिकासमभावाख्या प्रथमासापित्रेधाद्वादशधाभ
६२ वतिपुनरन्या नारीश्लेष्मप्रकृतिः स्निग्धप्रियभाषिणीस्थिरस्नेहा फलिनीप्रसूननीलोत्पलदलह
र्वीकुरश्यामा स्निग्धनखदंतलोमनखकेशविलोचनाक्षमायुक्ता सुविभक्तसमावयवावज्रसन्तापनवी
र्यधृता अल्पतृड्वाचिरश्रमपुष्पसूनमाल्यानुलेपनासुभगा धर्मार्थिनीकृतज्ञादयान्विताप्रमतनदानमुखी प्र
कृत्यभूतदोषाद्यन्नरसोपसत्त्वमात्रयोपेता मितवचनयानभोजनकोपापसलघुस्थूलजघना साधारणास्थि
तेच्छानिद्रालशेणामासलश्रोणिः जलदजलाशयगजलजसीरादीनीक्षतेस्वप्ने योषित्पित्तप्रकृतिर्गौरी
कृत्स्नायथवावह्नस्वेदा श्रान्ताम्लनयनकरहदस्सनाप-- णितात्रनला तरुणदृष्टा तरुणातत्दोलात्भीरुशीत
मधुररसा मृदुविमलकपिलमूर्द्धजरोमामेधाविनीपापः प्रियशुचिनिवसनमाल्यानुलेपनासुश्लथशिथिल
मृदुगात्राग्रमिमानिनीसुचरितासुविराश्रितवल्लभाश्वरा दृतवलिपलितदन्ता-- दृतवीर्यामृदुलमोहनक्री

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्र किंशुकदिग्दाहतरिहदहनादीन्पश्यन्ति स्वप्नो वनिता वातप्रकृतिः प्रस्फुरितकचाग्रपादतला रूक्षेक्षणा
नखदशना चलचित्ता चंचलप्रकृतिः अजितेंद्रिया स्वरागी गंधर्वविलासहासकलहरतिः बहुभोजनाल्प
निद्रा बहुला पानितरां भ्रमणशीला भूस्वर्वर्णच्छाया विहितमधुरसशिशिरा किंचिद्धनादिमुखे शेते प्रल
पति निशि त्रसति कटुकाम्ललवणातिकस्निग्धकषायप्रिया स्वरनकदिना उद्यानवनक्रीडारतिरस्तुल
प्रियास्थिरक्रोधा न रूपवर्णा पिरोहस्वमे कुरुते न भोगमनं प्रायेणैषा प्रकृतिः स्वप्नेपि च विलोकयते स्फुटं कापि
भेदाः पुनरेतासां बहवोपि भवंति मिश्राणामिति विवेकविलासे पुष्पाः केशांशुकस्पर्शान्म्लायंति कुसुम·
स्रजः स्नानांभसि विपर्ययं नेवहवः तद्रजं नवः स्रियंते मत्कुणास्तल्पे न यास्यकाश्चवाससि वातस्येषकथा
युक्तास्मा च पित्तोदयान्वितेति अत्र श्लेष्मापित्तवातप्रकृतीरभिधाय ग्रथनास्वभावाभिधा प्रकृतिर्निरूप्यते सा
द्वादशधा सुरविद्याधरगंधर्वयक्षराक्षसपिशाचनरकपिसर्पखरमार्जारसिंहभेदैरिति तथा च सामुद्रतिल
के सुरविद्याधरगंधर्वयक्षराक्षसपिशाचनरकपिभिः अहिखरविडालसिंहैस्तुल्यानां प्रकृतिरत्रैवेति क्रम
णेता उक्ता भविष्यपुराणे नित्यं स्नानासुगंधा च नित्यं च प्रियवादिनी अल्पाहारी अल्परोमा च देवतानां विनिर्दिशे
त् चंद्राननांबुजभोगी च मनोवास्याणगामिनी आरक्तमुखहस्ता च विद्याधिया धरीतथा वीणावादित्रशब्देन सर्व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संगीतवेणाना पुष्पधूपेच युक्ता च गांधर्वीं तां विनिर्दिशेत् वक्राशिनी वक्रवाक्या नित्यं चाप्रियवादिनी पतिवीभ
त्सते यानरा दंसीं तां विनिर्दिशेत् शौचाचारपरिभ्रष्टा रूपभ्रष्टा भयंकरी प्रस्वेदमलपंकाया पिशाचीं तां विनि
र्दिशेत् असंहृष्टितचारित्रा गुरुभक्ता पतिव्रता देवब्राह्मणभक्ता च मानुषीं तां विनिर्दिशेत् कोपना चंचला
चैव नित्यं वीद्दे दिग्शास्तथा चलंच भाषते लज्जावानरीं तां विनिर्दिशेत् प्रतिकूलकरी नित्यं वधूनां भर्तुरेव च
लक्ष. स्वछंदं ललिता चैव सर्पिणीं तां विनिर्दिशेत् येनकेन विदन्नेन मांसं यस्याभिवर्धते रासभीं तां दर्शी वियात्मा
६३ कलाणमर्हति प्रछन्नं कुरुते पापं मायावादे च हृष्यति हृदये चैव दुष्टा सा मार्जारीं तां विनिर्दिशेत् हसते कौ^
63 तुते चैव कृष्यते न प्रसीदति नीवे शुश्रमते नेव सैहीं तां हि विनिर्दिशेदिति सामुद्रतिलके विशेषः सहते प
रीभिभूतिं वरमे शुनसे विनीत मलनादा अन्नेन येन केन विद्युपचितगात्रा वरप्रकृतिः अप्यच्छिद्रान्वेषण
परायणा कुटिलगामिनी रौद्रा शूनवैरा क्रूरमना^ हिंसभावा च वनिता स्यात् एकांतस्थानरतिश्छिद्रेणामे
थुननिषेवणासांता निद्रालसा गगनभया सिंहप्रकृतिर्भवति युवतिरिति इति प्रकृतिलक्षणं अथ मिश्र
कलक्षणं भविष्यपुराणे निस्वस्वरे काश्रीवाया चैदीर्घलोचना यस्य सा रहमागच्छेन्न गृहीसा स्वमेपते
राजहंसगतिर्या तु मृगाक्षी मृगवर्तिका समश्लक्ष्णाग्रदंता च कन्या तां मनुजमो विदुः मंडूककुक्षिर्या नारी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मग्रोयपरिमंडले पर्कंजनयतेपुत्रंसोपिराजाभविष्यति हंसस्वरामेघवर्णायाकन्यामधुपिंगला अष्टौ
जनयतेपुत्रान्धनधान्यविवर्द्धिनी श्यायतेश्यवर्णोयस्याः सुहृत्पाचातिनासिका भ्रुवौचैवद्राघुयाकारेसास
नस्वभागिनी नचीशणामानयाकृसास्विग्यांगीमडभाषिणी शंखकुंदेंदुदशनाभवेदैश्वर्यभागिनी वि
स्तीर्णजिघनंयस्यावेदिमध्यानयाभवेत् आयतेविपुलेनेत्रेराजपत्नीनसाभवेत् वेदिमध्यावेदिमध्यवल्गु
प्रामध्याकृशोदरीनृपश्रियः गूढगुल्फांगुलिशिराश्च सग्रीवाल्पमध्यगा रक्ताक्षीरक्तचरणासात्यंतसुखभागि
नी वक्रांगुलिनलौपादौकन्यांतांपरिवर्जयेत् वृक्षचेद्रनदीऋक्षसर्पनाम्न्यश्चयाः स्त्रियः नैताःपतिश्रयंते
याचनक्षत्रनामिका यस्यास्तुहसमानायागंडेजायेतकूपकं नसारमतिकौमारेस्वच्छंदाकार्यकारिणी यस्यास्तु
गच्छमानायाःटिहिकायतिनिजंत्रिकासापुत्रंवांछतेकंतेपतित्वेनात्रसंशयः टिहिकायतियस्यागमनेजंघ
योः टिहिकाकारः शब्दः श्रूयते स्थूलपादाचयाकन्यासर्वांगेषुबलोमशास्थूलोष्ठदंतायस्याः सुविंथवांता
विनिर्दिशेत् यस्याहस्तौचपादौचमुखंचविकृतंभवेत् उत्तरोष्ठेचरोमाणिसाहिप्रेभर्तयेत्पतिं श्रोणिय
स्याःप्रलंबतेललाटमुदरंस्फिजौ श्रीश्चभर्त्तयतेसान्तदेवरंश्वशुरंपति मस्तिमडरोमाणिनास्यनेखेदनानि
च सुरभीणिचगात्राणियासांताःपूजिताःस्त्रियइति विलक्षणमंतरेपुष्करउवाच गंधेर्मधूकपुष्पाभैःस्त्रि

CC-0 Dharmartha Trust J&K: An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गेस्मदपानबद्धैः असंगतभ्रूसंश्लिष्टचरणांगुलिकुण्डला पतिप्रियापतिप्राणायानारीपतिदेवता अलक्षणा
पिसाज्ञेयासर्वलक्षणसंयुता अतिदीर्घाह्रस्वायाचचलन्मांसमयातथा सापिवर्ज्याविशेषेणनरेणहितमि
च्छता स्त्रीसर्वलक्षणास्वभिधायात्रैवांतेउपसंहृते संक्षेपतस्तेभिहितंमयैतत्स्यालक्षणंचारुनितंविनीनां १२
लक्ष. ६५ 64 स्वमेनतत्कथितंतत्रयत्राहृतिलक्षणावंसतीति स्कांदेकाशीखंडे सद्माःपरस्यंयानदंतान्किटिकिटायते
सलक्ष्मापिनसाशस्तायकिंचिन्मलपेज्जयेति जगन्मोहनेसमुद्रः स्थूलकेशीपतिघ्नीचदीर्घकेशीतथैवच क
पिलैःपरुषैःक्रूरास्कंधेकेशीनशोभना मृगाक्षीचमृगग्रीवामृगजंघामृगोदरी अपिदासकुलेजाताराजप
त्नीभविष्यति कुलेमहतिसंभूतालक्षणैः समलंकृता भार्याप्रशस्यतेलोकैरितराकलहप्रिया रक्तनेत्राह्र
ह्रग्रीवालंबोष्ठीविकृतानना तथैवोत्कटपादाचवर्जनीयाप्रयत्नतः हंसस्वरामेघवर्णासाकन्यादीर्घलोच
ना यस्यगेहेतसागाहेनरहःसुखमेधते आयतंवदनंयस्याः स्वरूपाचैवनासिका भ्रुवौचेंद्रायुधाकारेसात्यं
तसुखभागिनी अंगुलीसहितायस्यानखाः पद्मदलप्रभाः मृदुहस्ततलाकन्यासानित्यंसुखमेधते एकैके
नतुरोमेनजंघेचैवसवर्जिते धन्यामुवनीकन्यासर्वसौख्यकरीमता यानीलोत्पलवर्णाभापिंगनेत्राच.
भामिनी सुवर्णरूपारत्नानांस्वामिनीतांविनिर्दिशेत श्यामवर्णाचतन्वंगीस्निग्धांगीमृदुभाषिणी शंखकं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देंऽदशनाभागिनी विस्तीर्णजघनयस्यावेदिमध्याचयाभवेत् आयतैर्विपुलैर्नेत्रैराजपत्नीतुसाभवेत् यस्याः
कुल्माश्चस्तत्राश्वमरुडस्निग्धाश्चमूर्द्धजाः स्निग्धांगीसुकुमारीचसौभाग्यसुखभागिनी कूर्मपृष्ठोन्नतस्तायस्याः
स्निग्धभावविवर्जिताः वामांगुलिनलीपादौनांकन्यांपरिवर्जयेत् उद्वदृष्टिकायानुवराहस्वरोमृशा अपिरा
जकुलोत्पन्नादासीस्याचदिरूपिणी काकजंघावयानारीयावराहदैरोमशा नसाभवतिकल्याणीपतिदुः
खेनमोहिता यस्यास्तुगच्छमानायाः कटीकिटिकिटायते जंघाचपसतेनित्यंभर्त्तारंनात्रसंशयः उग्ररूपाच
याकन्यासर्वांगेषुचरोमशा स्थूलपादाचयाकन्यादासीतांचविनिर्दिशेत् रोमराजीभवेत्स्वंगास्याचकासतु
त्रनाः अर्द्धाहेनतुभर्त्तारंहत्वाभवतिनिर्द्दना रोमराजीपुनर्यस्यास्त्रिवलीभिर्विराजिता गंभीरनाभिकायस्याः
प्रशस्तासानिगद्यते धनाद्यारूपसंपन्नाभार्त्तारंवशवर्त्तिनं लभतेनात्रसंदेहः सपुत्रवचनंयथेति नयासमुद्रउवा
च पीनोरुःपीनगंडाममसितदशनाप्रमपत्राक्षीविंबोष्ठीनेमनासागजगतिगमनादक्षिणावर्त्तनाभिः
स्निग्धांगीचारुवेषामृदुपृथुजघनाशुस्वराचारुकेशाभर्त्तानस्याः दीनोपि भवतिचसुभगापुत्रयुक्ताचनारी
पिंगाक्षीकूपगंडाखरपरुषस्वरास्थूलजंघोर्ध्वकेशीलंबांगीवक्रनासाप्रविरलदशनाकृष्णताल्वोष्ठजिह्वा प्रु
कुंगीसंगतभूकचयुगविषमावामनावातिदीर्घाकन्येयंवर्ज्जनीयाधनसुखरहिताऽदुष्टशीलाचनित्यं नष्टा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनखवकेशेषु दंतोष्ठनयनेषु च स्नेहोत्र विद्यते यासां ताः स्त्रियः शुभकारणं अल्पस्वेदाल्परोमा च निद्राभोजनदुर्व
ला गात्रेषु च न रोमाणि नारी लक्षणमुत्तमं रक्तानिक्षा मृगाक्षी च या नारी नागलोचना कृशोदरी गजगतिः स्त्री
स्त्र. णां लक्षणमुत्तमं परान्नकुलोपरपाकिनी विवादशीलां स्वयमर्थचोरिणी आक्रंदिनी समरद्रप्रवेशिनी सजेच्च
९५ भार्या दशपुत्रपौत्रिणी मातुलिंगसमोद्दतौ लेवमानं स्तनद्वयं पद्मानदानसंदेहो द्विनीयं कुरुते पतिं मातुलिं
65 गबीजपूरं मध्यदेशभाषया बिजउरउ इति प्रसिद्धं महांगुली महानासा महामुखी महास्तनी महानखा च या ना
री सा नीदुःखिनी भवेत् नदीनामा च या नारी या नारी फलनामतः देवीनामा च या नारी स्वयं भक्षयते पतिं गी
र्थनामा च या नारी सा भवेत्पतिवर्जिनी वृक्षनामा च या कन्या तन्त्याविना - लोकेश्वर दद्यात्तस्याश्च या लापाप·
ति चितानुगामिनी कालौ विशाद्यकरो यासा लक्ष्मीरिवापरेति विवेकविलासे कुचवंगणपार्श्वे च वामे
नारी उद्वेम नाकुसति नारी प्रसविनी द्विदिशोणातनरप्रसू अतिश्यामातिगौरा च अतिस्थूलातितन्विका अतिदीर्घा
तिह्रस्वा च विषमांगाधिकांगिका हीनांगा चैव विकला रूक्षकर्कशकांगिका सचारिस्वरुगा ज्ञाताधर्मविदे
षिणी तथा धमनिसरता कोपिनी च कर्मरनापि च दुःशीला दुर्भगा वंध्या दरिद्रा दुःखिता पमा अल्पापुर्विधवा·
कन्यास्या देमि ईदृश लक्षणोगे अंगा गमध्यं गस्याद्दरी यं वक्ररोमकं वर्जयेत्ताप्रयत्नेन विषकन्यासहोदरी भो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मार्कशनिवाराणां वारः कोपि भवेद्यदि तथाश्लेषाशतभिषाकृत्तिकानां च संपदि द्वादशी वा द्वितीया वा सप्तमी वा
तिथिर्यदि तत्र लग्नसुता जाता जायते विषकन्यकेति सामुद्रतिलके मधुपिंगाक्षी स्निग्धश्यामा गीराजहंसगति
नादा अत्रैव जनयति पुत्रान् धनधान्यविवर्द्धिनी तन्वी पीवरनितंबबिंबा पीवरवक्षोजमंडला बाला पीवरकपोल
पाली सा सौभाग्यं विनाप्नुवति: पृथुनयना पृथुजघना पृथुवक्त्राः पृथुकटिः पृथुश्रोणी पृथुशीला च पु—
त्रपूजिता जायते जगति पुंश्चली स्त्री ह्रस्वरोमा ह्रस्वगात्री ह्रस्वकोष्ठा ह्रस्वशिरोरुहा रमणी नमणोपः प्रणोपरा सा
यते सद्यः दीर्घमुखी दीर्घाक्षी दीर्घभुजा दीर्घमूर्द्धजा तन्वी दीर्घांगुलिका या मोन्या दीर्घपतिसुखोपेतं वृत्त
मुखी मृतनकुचा हृतनप्रसूतो हृज्जानुगुल्फयुगा वृत्तग्रीवा नाभिर्हृत्तशिरा जायते धन्या मकाभंवति रेखाः म·
णिबंधे कंटदलेमध्ये पाणिस्तिरो यस्याः नृपस्या जायते जाया भ्रतमस्मणिकचलस्तनवचः सकलकोमलाव
यवाः लक्षसमुदायशोभाः प्रायः श्रीभाजनं सदृशाः कपिलविलोचनमलिना कपिलकचा कपिलरोमरा
जिविनी कपिलावयवा बाला सततः शासतिनप्रायः विपुलमुखी विपुलकुचा विपुलपदा विपुलकर्णा हस्ता
सा विपुलांगुलिका प्रायोभ— श्रीजायते योषित् कृशा दीर्घा सा गीकुलनार्यो हृत्सरोमराजिविना हृत्सोष्ठता
लरसना सा नियतं गर्हिता लोके लंबललाटा लंबग्रीवा लंबोष्ठनासिका न शुभा लंबपयोधरजंघा लंबस्फि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्रोवचस्याम्मणिः निःस्वरनिवदनक्रूरा लालायस्याः श्यावालायाः स्फोरे किंचिन्नेत्रे सा बाला कथ्यते कलहप्रदि
नाभ्यावर्त्तवलीरोमाहीनश्मश्रुदंष्ट्रं यस्याः दुःखेराकुलचिन्ता सा भवति निर्जायते सततं प्रसभं प्रहरति वाध्यप्रहृष्टं स्या
नेत्रकर्णयोर्यस्याः लालाचमुखान्तस्थाकौनस्याशीलरहितास्यात् युगपद्वैनियस्यादुर्गन्धाः श्वासमत्ररतनवस्त्र
लक्ष· साहादेवकुठारीसावंशविकर्तनावनिता यस्याः स्फुटेदृष्टंस्याः कपोलयोः कूपकौ सदासातां नयने नितान्त
९९ चपले सा भर्तृघ्नी भवत्यसती यान्त्याः सेरंयस्यादेववशान्नटपदायनेव सततं सततं सा कल्याणी कलयति क
66 ल्याणं वैकल्म सर्वाङ्गस्थिसन्धिर्वं यथा यस्या गमने कटकटायते सततमपि यतिं चिकीर्षति सा संगतवजयोवने
भवतिः अपराङ्गं रोमयुतं पूर्वाङ्गं रोमविरहितं यस्याः भवति विपरीतमथवा भयंकरी सा पिशाचीव फ
ल्गुप्रहसनशीला निःकारणादिदृ·रीत्ताप्रवणा निःफलवन्ध्यालापा सा नारी हरति स्याज्या अति·
ह्रस्वमुखी पृथुला दीर्घमुखी दुःखभागिनीवनिता शुष्कमुखीव क्रूरा स्यात् सौभाग्येश्वर्यसुखवर्जिता सततं विदि·
ष्टमनाः खरोष्ठकर्कशस्वरा स्युरनुकारी स्वच्छन्दाचाररतिः सा स्यात् कुलजापि न तु लक्ष्मीः पादौ यस्याः स्फुटितौ
रोमशौ चिपिटाङ्गुली निष्ठुरतलौ कक्षपृष्ठस्तनरोमवा सा दुःखदरिद्रता हन्तुः विकलाङ्गी गिर्व्याधियुता स्थूलं
ग्रीवा मनाग नथा कुब्जा नीचान्वयजा रमणी परिहरणीया सुरूपापि काकमुखी काकाक्षी काकस्वरा काकजे

९९

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

थिकानारी काकगतिचेष्टिता स्यात् स्वनंदारिय्यडः खवती संततकोपाविष्टा स्तब्धांगी चंचला महाचा-
ण्डः सा दारिद्र्यवती स्यात् पुत्रवतिर्षट्दिवान दीर्घायुः कपिवक्त्रा कपिनासा कपिकटिः कपिश्यवर्णा कपिरो
मशा मलीका मलीपक्षजायते योषित् मलीकोऽथांगं नगविहगनदीनामा हृद्दलता गुल्मनामिकानारी
नक्षत्रग्रहनामा नरस्मृतिसेविणीपस्मो शाकस्वराह्वरनामा पुत्रामानानामिकानियतं भीषणनामा रमणीष्व
केशनाप्रेतप्रायः कामस्यमननवसतिर्यस्मात्सा कामिनीति विदिता स्त्री द्वादशवर्षीहर्धकामो विस्फुर
ति पुनरधिकः नकारणात् यौवनमनंतरम सुवो भवं स्मेते वक्रोक्तिनयनलीलानि नंववविं वल्लनो द्वेराः
शुभलक्षणापि रूपाधिका विविध्यानतो ब्रजानापि सौभाग्यभागपि नथानशुभाडः श्यारिणीरमणी हृनंस्व
लक्ष्महृते रूपं हृत्वमसमयसौभाग्यं हृतं गुणादिकं पत्रहृत्वशस्यते हृद्दशां ग्रपिडलेत्वाणलसामहाचैतोशी
लंसंपुत्रायाति शीलेन विना वनितानशुभाः शुभलक्षणा अतोऽपि सत्यं यत्राकृतयस्तत्र गुणाः सततमेव
निवसंति रूपाधिकाशुभधीहृत्वादिगुणाभिविनाप्रायरति इति मिश्रकलक्षणं ॥ इह पुंसो ऽपादतलकेशा
तानि चंजनादीन्यपि लक्षणान्यभिहितानि अधुनाश्रावर्तलक्षणं स्कांदवचनक्रमेणाभिधीयते भविष्य
पुराणे आवर्तः पृष्ठतो यस्यानाभिरावर्तवर्जिता नसायस्तमवेद्भर्तानस्यापुर्त्तस्रमादिशेत गुलावर्त्तापति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स० त०
५०
67

हंतिनाभ्यावर्त्तोपतिव्रता कथावर्त्तोनु स्वच्छंदां न कदाचिद्धि रम्यतऽइति स्कांदे काशीखंडे पादे प्रदक्षिणावर्त्तो
धर्मो वामो न शोभनः नाभौ स्फुलन्नाब्रुरसिवा दक्षिणावर्त्तं ईडितः सुलावप्रदक्षिणावर्त्तः पृष्ठवंशस्य दक्षिणे अंतः
पृष्ठं नाभिसमो वक्त्राय पुत्रवर्द्धनः राजपत्न्याः प्रदेशेपतभगमौलौ प्रदक्षिणः सचेत् शकटभंगिः स्यान्नव
क्रूपन्यस्तवग्रहः शकटभंगिस्वकाकारः कटिगो गुह्यवेधे नयन्मतिपाततः स्यात्तामुद्रस्त्वेधेन पृष्ठावर्त्तो
न शोभनो पकेनहंतिभर्त्तारं भवेत्स्नेन शृंखली कंठगो दक्षिणावर्त्तोऽङ्गः स्वैवेधम्यहेतकः सामंते यललाटे
वान्यास्मोहरान्मयपत्ततः सापतिं हंति वर्षेणायस्या मध्ये कुंकाटिका प्रदक्षिणो वा वामो वा रोमाणामावर्त्तकः
स्त्रियाः पकोवामूर्द्धनि द्वौ वा वा मावामगती अपि आदशाहूपतिघ्नौ नमास्मो हूरान्नुबुद्धिना कथावर्त्तोच
कुलटानाभ्यावर्त्तोपतिव्रता पृष्ठावर्त्तु चिभर्त्तघ्नी कुलटा चाय्यजायतऽइति जगन्मोहने समुद्रः त्रिधावर्त्तोभ
वेद्यस्या ललाटउद्देभगो श्रीणां सा भवत्येन्नारीदेवरं च प्रसूयते इति आवर्त्तः पृष्ठतोयस्या नसास्त्राणभागिनीव
हून्नाऽरमते नारीऽ स्वितान्कुरुते सदेति विवेकविलासे कटीहृकाटिकाशीर्षोदरभालेषु मध्यगः नासा
ते च शुभो न स्यादावर्त्तः सव्येतरोपि सन् आवर्त्ता वाम भागेपि स्त्रीणां समेद्दाः प्रदक्षिणे नेयः न शुभास्ते शुभो भाले दक्षि
णोंगे समस्थितश्च नितम्बतिलके आवर्त्तौ नारीणां प्रदक्षिणाः पाणिपल्लवे भ्रमतः दक्षेऽधनधान्यजनको नृणा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तशास्ते: पुनर्वामि इति इत्यावर्त्तलक्षणं अथ गंधलक्षणं जगन्मोहने प्राह समुद्र: पाद्मगंधा च या नारी वि
वगंधा च या भवेत् वर्जनीया प्रयत्नेन यदीच्छेच्चिरजीवितं हीरगंधां मज्जेत्कन्यां तथा च होत्रगंधिनी रक्तगंधा
च या नारी तां कन्यां परिवर्जयेत् गोमूत्रहरिताला भोगगंधो यस्या: प्रवर्त्तते दुष्टगंधा च या नारी वर्जनीया प्रय
त्नत: हवी पुष्पसमो गंधो अथ लाक्षासमो भवेत् न सा न लभते गर्भं दुर्भगा तीव्र जायते चंपकाशोकपु
ष्पानां पद्मगंधो भवेत् स्त्रिया: सुभगा सा भवेन्नूनं भर्त्तुः स्याद्दशवर्द्धिनी या च कुकुंदरीगंधा च या भवेत् उ
ग्रगंधा च या कन्या कन्यां तां परिवर्जयेदिति सामुद्रतिलके जाती चंपक विचकिल शतपत्र वकुल केतकी त
स्स: स्वेदश्वासादिभव: प्रशस्यते योषितां गंध: गंध: सर्वांगिणो मृगनाभी सन्निभो भवति यस्या: सा योषिद
ग्रमहिषी विहीनरूपापि भूमिपेनेति इति गंधलक्षणं अथ छायालक्षणं सामुद्रतिलके छादयति ल
क्षणानि हीनाङ्गेन दृश्यते छाया लावण्यसौभाग्यं तल्लक्षणं वेदितो भुवने वस्तु तिरिक्ते किंचन महाकवी
नां यया गिरि स्फुरंति अंगे सहस्रशां तद्धन्मनोहरा लावण्यमिच्छाया सौभाग्यच्छायैव समस्तानि विलेशलक्षणान् सखी
णां यदभावे भुवि वनितायां वालीवर्त्तभोगाडी विद्म च मनकृति जननीह दृशि संतो ऽवंसन्नोति जगतोऽपि या हृष्टापि
स्पृष्टं सा हि च्छाया न प्रशस्यते सहस्रशो यासां सर्वांगीणां विराजते हृस्तनेलवाणिमच्छाया चित्रमिदं न त्रिजगति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लत्त.
६८
69

माधुर्यसत्त्वमधिकं दधते नृपाणां कारविहीने स्वमलक्षणाविरहिते नियतमंगे सौभाग्यमस्ति यस्याः सा ललनाऽले
भाभुवने यदि लावण्यकायाच्छन्नं स्वमलक्ष्मरूपमंगं स्यात् तत्तद्वयसंयोगेन हि श्वेतरूपे शर्करादेवरङ्गिति इति
छायालक्षणं अथ सत्त्वलक्षणं सामुद्रतिलके अप्यापि सप्यापि सत्त्वमभोगडः खसुखमेकं अथ गतिविहा
दर्हर्षहतशोकोत्साहमिह सत्त्वं सत्त्वोपेता प्रायाः सदयाः सत्त्वस्थिरा नितिगंभीरा कौटिल्यशल्यरहिता हित
कल्याणिभवति रमणीति इति सत्त्वलक्षणं अथ स्वरलक्षणं भविष्यपुराणे हंसकोकिलवीणाम्बुदशि
खिवेणुस्वरा स्त्रियः प्राप्नुवंति बहुभोगान्स्मानाज्ञापयंति च भिन्नकांस्यस्वरा नारी खरकाकस्वरा च या रो
गव्याधिभयं शोकं दारिद्र्यं चाधिगच्छतीति हे माऽशावयुक्तं मेघौघचक्ररसकौ बहंसडिंडिमनिस्वना कलविं
कहरिणाभयपरपुष्टस्वभाषिणी प्रशस्तेति शेषः सामुद्रतिलके गतिकौटिल्यमदीनं स्निग्धं दाक्षिण्यपु
ण्यमकठोरं सकलजनसांत्वनकरं भाषितमिह योषितां शस्तं नारी विभिन्नकांस्यकोष्ठखरोलूककाक
कंकरवा दुःखवधशोकशंकावैधव्यव्याधिभाग्भवतीति इति स्वरलक्षणं अथ गतिलक्षणं भविष्य
पुराणे हंसगोवृषचक्राह्वसिंहमातंगगामिनी कुलं तेजोतयेन्नारी महिषी पार्थिवस्य च चक्राह्वस्य
चक्राकः योनयेनप्रकाशयेत्त्वमसि हंसादीनां गत्यादिनर्थः श्वशृगालगतिर्निर्याया च वायसवद्व्रजेत् दासी भग

६८

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गतिर्नारीद्रुतगास्याद्ववंधकीति सामुद्रतिलके मृदुसंनिवेशितपदा मत्तमतंगहंसगतिस्तुल्या सुभगाग
तिः सुललिता विलसतिव सुधेशापतीनामिति इतिगतिलक्षणं अथ वर्णलक्षणं भविष्यपुराणे फ
लिनीरोचनाहेमकुंकुमप्रभएवच वर्णः शुभकरः स्त्रीणां यश्चदूर्वांकुरोपम इति फलिनीश्यामा सामुद्र
तिलके पंकजकिंजल्काभः स्त्रीणां नवतमकनकभंगनिभः चंपककुसुमसमानः स्निग्धो गौरः शुभो
वर्णः नवदूर्वांकुरतुल्यः स्मेरश्यामाजितशशुनाभः कांतः श्यामो वर्णः सौभाग्यसुखं वितनुते शुद्धोपि मध्य
मः स्यात्कुलालखिपस्त्रकजलक्षायः वायसतनुरुविर्वीपुनर्जलजयोघनविरूढः पुनिमान्योहरितालीविमि
श्रनीलीनिभो भवति वर्णः श्यामासन्निभवर्णा लावण्यगुणाधिकः स्त्रीणामिति इति वर्णलक्षणं अन्तरल
क्षणयोर्विशेषो नोक्तः स ग्रन्थान्तरादवगन्तव्यः यश्चात्र विशेषो नोक्तः स चाविरुद्धः पुरुषलक्षणप्रकरणेऽव
गन्तव्यः तदुक्तं सामुद्रतिलके यच्चोक्तं शर्वस्मिन्नारीविमानतन्त्रेपि नारीवत् यदमुष्मिन्नपि नरः सकलं तन्त्रैव
दृष्टव्यमिति अथ प्रसंगात्कामशास्त्रोक्तानि पुरुषस्त्रीलक्षणानि उच्यन्ते तत्र पुरुषः शशादिभेदेन चतुर्विधः
तदुक्तं स्मरदीपिकायां शशो मृगोथ वृषभश्चैव चतुर्थश्च हयस्तथा कथितं च क्रमात्पुंसामेतज्जातिचतुष्टयमिति प
नेषां लक्षणानि पद्मिनीप्रमाणेनैवोक्तानि तत्र शशो यथा स्त्रीजितो गायनश्चैव नारीसक्तपरः सुखी षडंगुलश

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रीरस्तु श्रीमांश्च शशको मतस्तु इति पाशीरं लिंगं मृगो यथा मन्मथप्रायधार्मिकश्चैव सत्यवादी प्रियंवदः षडंगुलश
रीरस्तु रूपयुक्तो मृगो मतः वृषो यथा उपकाररतो नित्यं स्त्रीवशः श्लेष्मलस्तथा स्वदशांगुलमेद्रस्तु मेदस्वी
वृषभो मतः हयो यथा लुब्धकः कृपणश्चैव मिथ्यावादी च निर्भयः द्वादशांगुलमेढ्रश्च कृशलो वै हयो मत इति
अथ स्त्रीलक्षणं तत्र पद्मिन्यादिभेदेन स्त्री चतुर्विधा तदुक्तं स्मरदीपिकायां पद्मिनी चित्रिणी चैव शंखिनी हस्ति श्री

लल· ५५ नी तथा शशके च वरस्त्रीणां ख्याता नेज्ञाति चतुष्टयमिति रतिरहस्येपि पद्मिनी तदनु चित्रिणी ततः शंखिनी त

69 तदनु हस्तिनी विदुः उत्तमाधममभाषिता नततो दीयते एवति कत्रवो नरेति विवेकविलासेपि पद्मिनी चित्रि
णी चैव शंखिनी हस्तिनी तथा तत्रदिष्टविधानेनानुकूल्या स्त्री विचक्षणैरिति तत्र पद्मिनीलक्षणमुक्तं स्मरदीपि
कायां शशिवदना विंबोष्ठी तन्वी तन्वंगी तथा मंदगा गलजिता षट्पदमारक्तोपांतविलोचना गायनी सुरताया
च पारावतकलस्वना स्वल्पाहारा सुकेशी च पद्मगंधा च पद्मिनीति रतिरहस्येपि कमलमुकुलमृद्वीफुल्ल
राजीवगंधा सुरतपयसि यस्या सौरभं दिव्यमंगे चकितमृगदृशाभे प्रांतरक्ते च नेत्रे स्तनयुगलमनर्घ्य श्रीफ
लश्रीविडंवि तिलकुसुमसमानां विभ्रती नासिकां चाहिजगुरुसुरपूजाश्रद्दधाना सदैव कुवलयदल
कांतिः कापि चांपेयगौरी विकचकमलकोशाकारकामातपत्रा विकसितकमलकोशाकारकामातपत्रे

५५

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुरुर्यस्यास्येति विग्रहः ब्रजति मृदुसलीलं राजहंसीव तन्वी त्रिवलिललितमध्याहंसवाणी सुवेषा मृदुशुचि
लघुभुंक्ते मानिनी गाढलज्जा धवलकुसुमवासो वल्लभा पद्मिनी स्यादिति सामुद्रतिलकेपि स्निग्धश्यामल
कांतिस्तिलकुसुमाकारनासिका सुभगा त्रिवलीतरंगमध्या हृत्तकुचाग्निपक्वसमकुचा पद्मसुरभिमधुगं
धा पद्मापनलोचना प्रियालापा विंबोष्ठी हंसगतीधर्मरतिः पद्मिनी भवतीति मधुगंधा पद्मसुगंधा इति
पद्मिनीलक्षणं अथ चित्रिणीलक्षणं स्मरदीपिकायां गौरांगीत्यकलज्जा च बाल्यसंभोगसंरक्ता उन्नतनशा
पिनिचोला पारावतकलस्वना स्निग्धांगी मांसिकागंधा सल्पकामा सुकृशोदरी सूत्रांगुष्ठनितंबा च चित्रिणी
श्रीफलस्तनीति मांसिका जटामांसि रतिरहस्येपि मृगनितंबनितदीर्घा नातिखर्वा कृशांगी स्तनजघनवि-
शाला काकजंघोन्नतोष्ठी मधुरतरगिरस्तावः कवकर्णी चकोरस्वरवचनविभागान्नृत्यगीतायुभिज्ञा मदन
सदनमस्या वर्तुलोन्नतं मंतर्मृहमदनजलाद्यं रोमभिर्नातिसांद्रैः प्रकृतिचपलदृष्टिर्बाह्यसंभोगरक्तारस्य
यतिमधुराल्पं चित्रिणी चित्ररक्ते इति चित्रिणीलक्षणं अथ शंखिनीलक्षणं स्मरदीपिकायां शंखिनी-
कोपना चोत्ससार्द्रीर्घा दीर्घशिरोरुहा हृत्तांगी तोयगंधा नातिस्थूला नडुवला गौरांगी तीव्रानसा च पीनस्तनवि
लक्षणा विशालजघनाक्रूरा सुरताया वशंखिनी रतिरहस्ये नवरतनतरपि स्यादीर्घदेहातिमध्यास्तरुणा

ल· र·
७०
70

कृतमावासः कोह्लिणीकोपशीला अनिभृतशिरसंगं दीर्घनिम्नं वहन्ती स्मरगृहमतिरोमश्लीरगंधिस्मरार्त्ति साम
द्रतिलके विषमकुचा विषगंधा दीर्घशुष्कनोरुनासिकानयना तनुकेशी खरचित्ता शंखिरवा शंखिनी योषिदिति
रतिशंखिनीलक्षणं अथ हस्तिनीलक्षणं स्मरदीपिकायां स्थूलाहृदककुचाङ्कुराकुलनासातिपीनतला खर्वा
चखर्वनासा चवक्रलोत्पलकामुखी मदगंधमत्तनिलंममत्तमातंगगामिनी लम्बापीनस्तनी श्यामा हस्तिनी
सा प्रकीर्त्तितेति रतिरहस्ये अललितगतिरुच्चैः स्थूलवक्रांगुलीकं वहति चरणयुग्मं कंधरा ह्रस्वपीना क
पिलकचकलापा क्रूरचेष्टातिपापा द्विरदमदसुगंधिः सांगकेऽनंगकेच द्विगुणकटुकषायप्रायभुग्वीतल
ज्जालल्दतिविपुलोष्ठीडःखसाध्या प्रयोगे बद्धिरपितनुरोमा मन्मनेमनेविशालं वहति जघनरंध्रं हस्तिनी गा
द्गदोक्तिरिति सामुद्रतिलके स्थूलदशनास्तमध्या गजखरनादा मदोत्कटा चपला स्थूलोरुभुजग्रीवा जंघा·
वादित्रगीतरतिः स्थिरपतनं नगितकेशापीनोन्नतहृन्तकुचकलशा मत्तमतंगजगमना मदगंधा हस्तिनी भव
तीति रतिरहस्ये पद्मिनी पद्मगंधा स्यान्मधुगंधा च चित्रिणी शंखिनी क्षारगंधा च निंबगंधा च हस्तिनी इति
हस्तिनीलक्षणं अथैतेषां योगः कोक्कः स्मरदीपिकायां शशकः परिगच्छेच्चित्रिणीं चमृगस्तथा शंखिनीं वृषभ
श्चैव हस्तिनीं च हयस्तथा रमतेनत्व भावेन तया समरतं भवेत् उवनीचारिनीचेष्ठ तथा सुखं विवर्जितं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्थानं समरत्नैवेत न हि हंसमयथा स्त्रियः स्त्रीणां विषयसाम्यं तु ज्ञात्वा मैथुनमाचरेत् समाने सुखसंपत्तिरन्यथा प्रति
घटिताः मदुरूरुलभुजोपत्रप्रियो शाक्तो द्रुतच्युतिः यत्र स्त्रीणां चकारि संतत्र नीचरतं भवेत् शूपतेचैव कर्मणि
देकांनयानिहृतः पतिः सामुद्रतिलकेन विशेषः स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः शशो वृषो हयश्चेति त्रयो भेदाः जाय
ते मनुजानां क्रमेण तल्लक्षणं विवृणोमि लिंगं षडंगुलानि स्यादष्टौ वा स्फुटं शशः सवृमान नवदशा चै
कादश वा न दपि पुनर्यस्य सहृषाख्यः द्वादश यल्लिंगस्य त्रयोदशादीनि वांगुलानि भवेत् जातोऽश्वस्समाने हया
त्मिकानि गदितः सोपि जातोऽश्वस्य जातकामस्य इति पुंशशवृषहयानां सदृशमृग्यादिभिरुक्तो विभागः प्रीतिः मेहन
वरांगनाख्योः परस्परेण प्रमाणैकात् ऊह्मभवति मृगीवडवाकरिणीभेदेन कामिनी त्रेधा तासां लक्षणमथ
नादिश्चात्र मनूयते क्रमशः यस्याः षडंगुलास्यादष्टौ वा सरोजसुकुलाभा नाडी वरांगमध्ये निगद्यते सा मृगी भवति:
सापि नवदशैकादश यस्याः स्यादंगुलानि वडवा सा सैव द्वादशपदि वा त्रयोदशादीनि साकरिणी प्रायेण मृगी
वडवाकरिणीनां नायने सदृशशाद्यैः प्रीतिः सदृजामत्र जैर्यथाक्रमं संप्रयुक्तानामिति इति श्रीलक्षणप्रका
शे स्त्रीलक्षणप्रकरणं समाप्तं अथ राजचक्रलक्षणप्रकरणं तत्र राजलक्षणं अराजके हि लोकेस्मिन् सर्वतो
विद्रुते भयात् रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुरिति ब्रह्मणा प्रजारक्षार्थं राजा सृष्ट इति मनुरुक्तवान् तत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नैरन्तैकैस्तशौरनेकैरलंकृतो भूमिपतिः स्वकार्यः संभूय राष्ट्रमवेरय यावन्न राष्ट्रस्य रक्षार्थमदीनसत्त्व इति
विष्णुधर्मोत्तरवचनेन राज्ञि मृते राज्याधिकारिणि न दीये पुत्रे द्वैर्वा सति अन्यकुलीनो राजा राष्ट्ररक्षार्थं राष्ट्र
मुख्यैः राज्येऽभिषेक्तव्य इत्युक्तं स च किल लक्षणोपेत इति न लक्षणमभिधीयते विष्णुधर्मोत्तरे पुष्कर उवाच स
लक्ष· ७१ र्वलक्षणलक्षण्यो विनीतः प्रियदर्शनः अदीर्घसूत्रो धर्मात्मा जितक्रोधो जितेन्द्रियः विनीतः विनययुक्तः
प्रियदर्शनः प्रियदर्शनीयः सः यस्य राज्ञो दर्शने जाते सर्वस्य हृष्टं भवति अदीर्घसूत्रः अवश्यकार्याणां कर्म
णामारंभे प्रारब्धानां च समाप्तौ यो मन्दतेन विलंबते नसः स्थूललक्षो महोत्साहः स्मितपूर्वाभिभाषकः सुरूपः
शीलसंपन्नः क्षिप्रकारी महाबलः स्थूललक्षो वदान्यो दीर्घार्थदर्शी महोत्साहः महानुत्साहः पुरुषार्थसाधने कर्म
ण्यध्यवसायो यस्य सः बलवान् अविसंवादी दृढभक्तिः प्रियंवदः अविसंवादी वाक्यपालनेषु दृढभक्तिरपि ब्राह्म
णादिष्वेव अलोलुपः संयतवाग् गंभीरः प्रियदर्शनः नातिदंडेन निर्दंडः स्यात् सदाचारजितश्रमः व्यवहारे समः प्राये
पुत्रे गणरिपुगणसह रथे गजे श्वे धनुषि व्यायामे च कृतश्रमः उपवासतपः शीलो यज्वा याजी गुरुप्रियः संविभा
वत्सराधीनः समरेष्वनिवर्तकः सांवत्सरो ज्योतिर्वित् कालज्ञः स्वकृतं तस्मिन् विशेषज्ञ एव च कृतज्ञः परकृतोप
कारायकारैन विस्मरतीति सः इज्यपूज्यपितानि मंदेश्य देडपितानतथा पाड्गुण्यस्य प्रयोक्ता च शत्रूपेनस्त्तेथे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वच षड्गुणाः संधिविग्रहयानासनद्वैधीभावसंश्रयाः तल्लक्षणंचविस्पष्टमौशनसप्रवर्तके संधिश्चविग्रहश्चैवयानमा
सनमेवच द्वैधीभावंसंश्रयश्चषाड्गुण्यंपरिकीर्तितं पणबंधः स्मृतः संधिरपकारस्तुविग्रहः जिगीषोः शत्रुवि
षयेयानंयात्राभिधीयते विग्रहेपिस्वकेदेशेस्थितिरासनमुच्यते बलार्धेनप्रयाणंतुद्वैधीभावंतदुच्यते उदासीने
मध्यमेवासंश्रयात्संश्रयः स्मृतइति एतेषांप्रयोगकालश्चतत्रैवोक्तः समेनसंधिरन्वेष्योहीनेनचबलीयसः
हीनेनविग्रहःकार्यःस्वयंराज्ञाबलीयसा तत्रापितस्यपार्ष्णिस्तुबलीयांत्रसमाश्रयेत् पार्ष्णिस्तुबलीयांत्रसमा
श्रयेत् पार्ष्णिःसेनापृष्ठं नसमाश्रयेत्विग्रहेनकर्षादित्यर्थः आसीनःकर्मविच्छेदंशक्तःकर्तुंरिपुर्यदाअस्मद्वया
स्तिर्बलवान्द्वैधीभावंसमाश्रयेत् बलिनाविगृहीतस्तुयोसंधेयेनपार्थिवः संश्रयस्तेनकर्तव्योगुणानामध
मोगुणः बहुत्वपृथग्घाघासंतेषांयानंप्रकीर्तितं बहुलाभकरंचस्यात्तदारामसमाश्रयेत् सर्वशक्तिविहीनस्तु
तदाकुर्यात्तुसंश्रयं एवंचबहुनापतिर्गुणानांकालेचदेशेचतथाविभागे समाश्रयेद्यागविवेशमुख्यपताबद्धक्तं
नपतस्तुकार्यमिति शक्तयःप्रभावोत्साहमंत्रजास्तिस्रः उक्तैरवकैस्तुगुणैरनेकैःस्वलंकृतोभूमिपतिश्चकार्यः
संभृयराष्ट्रमवैरेयथावत्राष्ट्रस्यरक्षार्थमदीनसत्वइतियाज्ञवल्क्यः महोत्साहःस्थूललक्षःकृतज्ञोवृद्धसेवकः
विनीतःसत्वसंपन्नःकुलीनःसत्यवाक्शुचिः वृद्धसेवकस्तपोज्ञानादिवृद्धानांसेवकः सत्वसंपन्नःसंपदापदोर्हि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्वविद्यादरहितः सुविः वा — ध्वंतरशौचयुक्तः प्रदीर्घसूत्रः स्मृतिमानहीनो परुषत्वया स्मृतिमानवगाना विस्मरण

शीलः अक्षुद्रो सद्गुणद्वेषी अपरुषः परदोषाकीर्तनः अव्यसनः व्यसनरहितः व्यसनान्याह मनुः मृगयाक्षादि

वास्वापः परिवादः स्त्रियो मदः तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूष

ल॰ द्व॰ ७२ णं वाग्दंडजं च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टक इति एषु सप्तमकष्टतमानि यथाह स एव पानमक्षाः स्त्रियश्चैव मृग

या च यथाक्रमं एतत्कष्टतमं विद्यात् चतुष्कं कामजे गणे दंडस्य पातनं चैव वाक्पारुष्यार्थदूषणे क्रोधजेऽपि गणे

विद्यात्कष्टमेतत्त्रयं सदा इति रहस्यवित् गोपनीयार्थगोपनचतुरः स्वरंध्रगोप्तान्वीक्षिक्यां दंडनीत्यां तथैव च वि

नीतस्त्वथ वार्त्तायां त्रय्यां चैव नराधिपः स्वरंध्रगोप्ता स्वस्य मन्त्रराज्यांगेषु परप्रवेशद्वाररूपशैथिल्यं तत्स्वरंध्रं तस्य

गोप्ता प्रच्छादयिता राज्यांगान्याह याज्ञवल्क्यः स्वाम्यमात्यजनो दुर्गं कोशो दंडस्तथैव च मित्राण्येताः प्रकृतयो

राज्यं सप्तांगमुच्यत इति महोत्साहः स्थूललक्षो महीपतिः स्वामी अमात्या मन्त्रिपुरोहितादयः जनो ब्राह्मणादि

प्रजाः दुर्गं धन्वदुर्गादि कोशः सुवर्णादिद्रव्यराशिः दंडो हस्त्यश्वरथपदातिलक्षणं चतुरंगबलं मित्राणि सह

जप्राकृतकृत्रिमाणि एताः स्वाम्याद्या राज्यस्य प्रकृतयो मूलकारणानि एवं सप्तांगं राज्यमुच्यते आन्वीक्षिकी आत्मा

त्मविद्या या दंडनीतिः अर्थयोगक्षेमोपयोगिन्यां वार्त्तायां कृषिवाणिज्यपशुपालनरूपायां धनोपचयहेतुभूतायां

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्र्यंबकयज्ञः साम संज्ञायां च विनीतस्तत्तदभिज्ञैः प्रावीण्यं प्रापणीतः एवंभूतो नराधिपः कार्य इति संबंधः अन्यद
प्युक्तं महाभारते मंत्रिगुणानुक्त्वा एतैरेव गुणैर्युक्तो राजा शास्त्रविशारदः एष्टव्यो धर्मपरमः प्रजापालनतत्प
रः धीरो मर्षी शुचिर्लीढाणः कालेगुरुषकारवित् शुश्रूषुः श्रुतवान् श्रोता ऊहापोहविशारदः मेधावी धार
णायुक्तो यथान्यायोपपादकः दांतः सदा प्रियाभाषी क्षमावांश्च विपर्यये दानच्छेदे स्वयंकारी साधाचारः सु
दर्शनः आर्तहस्तप्रदो नित्यमाप्तामात्यो नये रतः नाहंवादी न निर्द्वंद्वो नयकारकः न निर्द्वंद्वः प्रीतो सादिसहि
ष्णुः कृते कर्मण्यमात्यानां कर्त्ता भक्तजनप्रियः संगृहीतजनो स्तब्धः प्रसन्नवदनः सदा सदा भृत्यजनावेक्षी अक्रो
धी सुमहामनाः युक्तदंडो न निर्दंडो धर्मकार्यानुशासकः चारनेत्रः प्रजावेक्षी धर्मार्थकुशलः सदा राजा गुणश
ताकीर्ण एष्टव्यस्तादृशो भवेदिति एतैरेव गुणैर्युक्तस्यापि एष्टा गुणाः मंत्रिलक्षणे द्रष्टव्याः रामायणेपि धर्म
ज्ञः सत्यवादी च शीलवाननसूयकः दांतः सर्वहितः प्राज्ञः कृतज्ञो विजितेंद्रियः मदृश्च स्थिरवृत्तिश्च नित्यदी
नानुकंपकः प्रियवादी जितक्रोधो दीर्घदर्शी महामतिः बहुश्रुतानि वृद्धानां ब्राह्मणानामुपासिता तेनेतस्या
तुला कीर्तिर्यशस्तेजश्च वर्द्धते समस्तमस्य धनुर्वेदे हृदयं श्रेष्ठो राजेरथे लब्धास्त्रः शब्दवेधी च ह्यपानीद्दाघभूइति इति
राजलक्षणं अथ पट्टमहिषीलक्षणं अत्र एवं गुणगणोपेतानरेंद्रेण सहानेन अभिषेक्या भवेत् राज्ञो राज्यस्येन लक्षणे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वा राज्ञाग्रमहिषीकार्या सर्वलक्षणलक्षितेति विष्णुधर्मोत्तरादिवचनैः राज्ञासहाग्रमहिषी अभिषेक्तव्या अथवाग्र
भिषिक्तेन राज्ञा पश्चादग्र्यमभिषेक्तव्येत्युक्तेः तत्र किंलक्षणोपेतेति तल्लक्षणमभिधीयते विष्णुधर्मोत्तरे पुष्करउवा
च राज्ञाग्रमहिषीकार्या सर्वलक्षणलक्षिता विनीता गुरुभक्ता च दुर्मा क्रोधविवर्जिता राज्ञः प्रियहितासक्ता चा
ल.क्ष. रुवेषा प्रियंवदा भर्ता भर्तृजनज्ञा च भर्तॄणां मत्रवेश्मनि अभर्तानां जनानां च भृतिकर्मप्रवर्तिनी रागद्वेषविमु
७३ क्ता च सपत्नीनां सदैव या भोजनासनपानेन सर्वेषामन्ववेक्षणी सपत्निपुत्रेष्वपि या पुत्रवत्परिवर्तते मंत्रिसांवत्स
73 रामात्यांश्च पूजयते सदा ब्राह्मणांश्च दयायुक्ता सर्वभूतानुकंपिका कृताकृतज्ञा राज्ञां च विदिता मंडलेष्व
पि पुरराजकलत्रेषु पूज्यमाना सदान्विता हन्तादिप्रेषणाकरी राजदारेषु सर्वदा तत्स्वरूपेण नेद्गाणां कार्य
ता च विशेषतः एवं गुणगणोपेता नरेंद्रेण सहानघ अभिषेक्या भवेद्राजन् राज्यस्थेन नृपेण च एवंविधा यस्य
भवेत्तु पत्नी नरेंद्रचंद्रस्य महानुभावा श्रीर्हि तेन तस्य नृपस्य राष्ट्रं सवाहनं नात्र विचार्यमस्तीति इति पट्टमहिषील
क्षणं अथ मंत्रिलक्षणं उक्तराजलक्षणो मंत्रिमांवत्सराधीनश्च नेन राज्ञा मंत्र्यधीनेन भवितव्यं सराज्ञः सर्वकार्याणि
कुर्याद्गुरुकल्पो हि हेतिवचनेन तत्र मंत्री राज्ञः सर्वकर्माणि कुर्यादित्युक्तेः स च मंत्री कथमपेक्षित इति तल्लक्षणमभि-
धीयते विष्णुधर्मोत्तरे पुष्करउवाच सर्वलक्षणलक्षणोपेतो मंत्री राज्ञस्तथा भवेत् ब्राह्मणो वेदतत्त्वज्ञो विनीतः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रियदर्शनः स्थूललक्षो महात्मा च सत्याभिमतः प्रियंवदः महोत्साहः कृतिपाठांतरे गूढस्यत्सुशनः योकांनीति
जानाति सर्वतः रागद्वेषेण यः कार्यं न वदंति महीक्षितः लोकापवादाद्राजार्थे भयं यस्य न जायते क्लेशसहो महा
धर्मात्मा विजितात्मा जितेंद्रियः गूढमंत्रश्च दक्षश्च प्राज्ञो भक्तजनप्रियः इंगिताकारतत्त्वज्ञः परापोह विशारदः शू
रश्चाकृतविद्यश्च न च मानी विमत्सरः चारप्रचारकुशलः प्रणिधिः प्रणयात्मकः षाड्गुण्यविधितत्त्वज्ञोपा
यकुशलस्तथा उपायाः सामदानभेददंडास्तेषु कुशलः यथायोग्यं तत्प्रयोगसमर्थः उपायाश्च याज्ञवल्क्येनो
क्ता उपायाः सामदानं च भेदो दंडस्तथैव च सम्यक्प्रयुक्ताः सिध्येयुर्दंडस्त्वगतिका गतिरिति वेत्ता विधाता·
कार्याणां नैव कार्याणि पातिता समश्च राजभृत्यानां तथैव च गुणप्रियः कालज्ञः समयज्ञश्च कृतज्ञश्च जनप्रियः
कालज्ञः शकुनगणितादिप्रणयैर्भविष्यकार्यकालवेलासमयज्ञः कार्येविनावसरज्ञः कृतानामकृतानां च क
र्मणामन्ववेक्षिता यथानुरूपमर्हाणां पुरुषाणां नियोजिता राज्ञः परोक्षे कार्याणि संपराये महत्यनम कृत्वा·
निवेदिता राज्ञे कर्मणां फललाघवं शत्रुमित्रविभागज्ञो विग्रहास्पदतत्त्ववित् सराज्ञः सर्वकार्याणि कुर्यान्नृ
कुलोद्वह विदितानि तथा कुर्यान्नाज्ञातानि महीक्षितः अज्ञातानि न वेदस्य कृत्वा कार्याणि भार्गव अविवेकेनापि
विद्वेषं मंत्री समधिगच्छति करोति यस्तु कार्याणि विदितानि महीपतेः भेदो न तस्य भवति कदाचिदपि भूभुजा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

एवंगुणोयस्यभवेन्मंत्रीवाक्येचनस्याभिरतस्यराज्ञः राज्यंस्थिरंस्याद्विपुलाचलक्ष्मीर्यशश्चदीप्तंत्रिभुवनत्रयेपी
ति मभारते कुलीनंशिक्षितंप्राज्ञंज्ञानविज्ञानपारगं सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञंसहिष्णुंदेशजंतथा कृतज्ञंबलवंतंच
क्षांतंदांतंजितेंद्रियं अलुब्धंलब्धसंतुष्टंस्वामिमित्रबुभूषकं सचिवंदेशकालज्ञंसततसंग्रहेरतं सत्कृतं सततं
लक्ष· युक्तमनसंहितैषिणमतंद्रितं युक्ताचारंस्वविषयेसंधिविग्रहकोविदं राज्ञस्त्रिवर्गवेत्तारंपौरजानपदप्रियं त्रि
७४ वर्गस्यापियःप्रोक्तस्तमिहैकमनाःशृणु तत्रस्थानंचवृद्धिश्चत्रिवर्गपरमंतथा धर्मश्चार्थश्चकामश्चसेवित
74 व्योऽथकामतः इंगिताकारतत्वज्ञंयात्रायानविशारदं हस्त्यश्वशिक्षातत्वज्ञमहंकारविवर्जितं प्रगल्भंदक्षि
णंकांतंबलिनंयुक्तकारिणं चौक्षंचौक्षजनाकीर्णंसुवेषंसुखदर्शनं नेतारंनीतिकुशलंगुण·
चेष्टासमन्वितं अस्तब्धंप्रश्रितंश्लक्ष्णंमृदुवादिनमेवच धीरंश्लक्ष्णंमहर्धिंचदेशकालोपपादकं सत्कारांस्त्रि·
यं सचिवंयःप्रकुरुतेनचैनमवमन्यते तस्यविस्तीर्यतेराष्ट्रंज्योत्स्नाग्रहपतेरिवेति इतिमंत्रिलक्षणं अथपु
रोहितलक्षणं अत्रयोगक्षेमौहिराष्ट्रस्यराजन्यायत्तउच्यते योगक्षेमोहिराज्ञोपिसमायत्तःपुरोहिते यत्रादृ
ष्टभयंब्रह्मप्रजानांशमयत्युत दृष्टंचराजाबाहुभ्यांतद्राष्ट्रंसुखमेधतइत्यादिमहाभारतवचनैः सर्वराज्यंपुरो
हितायत्तमवगम्यते तत्रराष्ट्रस्यलोकार्थंहितंब्राह्मणंराजापुरोहितमथर्वणं पंचकालविधानज्ञंवरयेत्तत्वद

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्शनमितिवचनेनपुरोहितंहणयादित्युक्तंतत्रसचपुरोहितःकिंलक्षणोपेक्षितइतितल्लक्षणमुच्यते याज्ञव
ल्क्यः पुरोहितंचकुर्वीतदैवज्ञमुदितोदितं दंडनीत्यांचकुशलमथर्वांगिरसेतथेति पुरोहितंसर्वेषुदृष्टार्थेषुक
र्मसुपुरोनिहितंदानमानसत्कारैरात्मसंवर्द्धकर्पोत दैवज्ञंग्रहोत्पातनतत्कर्मनादेवोदितंनारदोदितोदितंविधानतश्च
नादिभिरुदितैः प्राप्तोत्कैरुदितंसमस्तं दंडनीत्यामर्थशास्त्रेकुशलं अथर्वांगिरसेशान्त्यादिकर्मणिचकुशलं
विष्णुधर्मोत्तरे पुष्करउवाच अमंगललक्षणोपेतमनुकूलेप्रियंवदं अथर्ववेदविद्वांसंयजुर्वेदविशारदं द्विवेदं
ब्राह्मणंराजापुरोहितमथर्वणं अथर्ववेदविद्वांसमित्याद्युक्तानेकगुणयुक्तःपुरोहितोपदानशीघ्येनतदाश्च
गुणहीनःकेवलमभिचाराद्युपयुक्तोथवावेदविदपिपुरोहितःकर्त्तव्यइत्येतदर्थमथर्वणमितिपुनरुपादानं पंच
कल्पविधानस्तेनवरयेत्तस्यदर्शनं नक्षत्रकल्पोवैतानस्तृतीयःसंहिताविधिःचतुर्थोंगिरसांकल्पःशांतिकल्पस्तु
पंचमः पंचकल्पविधानज्ञमाचार्यंप्राप्यभूपतिः सर्वान्कामानवाप्नोतिभुनक्तिवसुधांचिरं सचराज्ञस्तथाकर्माणि
संकर्मसदैवतं नैमित्तिकंतथाकाम्यंदैवज्ञवचनेरतः नत्याज्यस्तुभवेद्राजादैवज्ञेनपुरोधसा पतितस्तुभवेत्याज्योना
त्रकार्याविचारणा नत्थैवापतितौनौरामनत्याज्यौतौमहीभुजा नयोस्त्यागेनरेंद्रस्यराज्यभ्रंशंविनिर्दिशेत् इतिप
रलोकेचवज्रकालमसंशयं अपतितौनत्याज्याविति वदनापतितौदैवज्ञपुरोहितौत्याज्याविप्यनुज्ञातंभवति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सांवत्सरविरुद्धस्तस्मान्नोराज्ञा पुरोहितः पुरोहितस्तथा राज्ञो यथा माता यथा पिता अरुष्टमस्य सततं हन्यात् दैवीपञ्चा
तजे ब्राह्मणो निःकृतिस्तस्य कृतः शंकाम्बरीभुजा यो वनो राज्ञो विद्वांसो सांवत्सरपुरोहितो हस्तक्षेदेन यो राज्ञः कुलं त्रि
पुरुषं व्रजेत् नरकं वर्जयेत्तस्मात् हृतिक्षेदं तयोः सदा स्थावरेणाविभागश्च तयोः कार्यो विशेषतः स्वामी राजा यथा राम
ल॰ह॰ तथा तौ नात्र संशयः व्रजेत् नरकं वर्जयेत्तस्मात् हृतिक्षेदं तयोः सदा स्थावरेणाविभागश्च तयोः कार्यो विशेषतः स्वामी
७५ राजा यथा रामः तथा तौ नात्र संशयः एकस्मिंस्तु मृते राज्ञं तयोरेवयतः कथं स्थावरेणार्चयेद्राजा वर्तमाने विशे
75 षतः अनुरूपेण धर्मज्ञो सांवत्सरपुरोहितो भाव्यं सदा भार्गववंशजं पुरोहितेनान्य समेत राज्ञा राज्ञो यथा स
र्वजनेन भाव्यं विद्वान्सुधः स्यान्नृपतेः पुरोधा इति इति पुरोहितलक्षणं अथ ज्योतिर्विल्लक्षणं अत्र सांवत्सरं त्वयो
गत्वा वरयेत्प्रयतः शुचिरिति विष्णुधर्मोत्तरवचनेन राजा सांवत्सरं हस्तयात् स च हतः तस्तनो अभिषेकसंभारांस्तस्य कु
र्यात् स्वदेव विदित्विवचनेन राज्ञोऽभिषेकसामर्थ्यं संपादयेदिस्मकं तत्र राजा किं लक्षणं सांवत्सरं हुणुयादिति त
ल्लक्षणमुच्यते विष्णुधर्मोत्तरे पुष्कर उवाच सर्वलक्षणलक्षण्यं विनीतं प्रियदर्शनं सुरूपं वेषसंपन्नं नित्य
मूर्जितदर्शनं अदीनवादिनं धीरं धर्मनिष्ठं जितेन्द्रियं अवंगेनाधिकांगं च वेदचेदांगपारगं त्रिस्कंधज्ञानकुश
लेहादशाश्रमपारगं चतुःषष्ठ्यंगतत्त्वज्ञं मूहापोहविशारदं त्रिस्कंधाः होरागणितसंहिताः आश्रमः शद्वसंख्याता

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निहादशमेषादिराशिस्तत्पारगं प्रायुमिन्नोच्चनीचादिविवेककुशलं चतुःषष्ठ्यंगानि च यथा वेदस्य षडंगान्येवं ज्योतिः
शास्त्रस्यैतेषां तत्त्वं तत्त्वार्थं तत्त्वज्ञानार्थं तानि चांगानि गर्गेणोक्तानि यथा यथैव वेदस्यांगानि षडुक्तानि मनी-
षिभिः चतुःषष्टिस्तथांगानि ज्योतिषस्य विदुर्बुधाः ज्योतिषामयनांगानि चतुःषष्टिस्ततः पठेदिति तत्र चतु
र्विंशत्यंगानि चत्वारिंशदुपांगानि अंगान्यनुक्रमेणाह स एव येषामेकैकमंगं ज्ञेयं दमार्गस्तेनेतरं नक्षत्रकं
दर्भं चैव हि वर्गः प्रथमः स्मृतः राहोर्बृहस्पतेः शुक्रे धूमकेतोस्तथैव च अंगारके बुधे केचिच्चारान्षडेतान् ततः पठेत्
चक्रे येन तच्चक्रं च मृगचक्रं तथैव च श्वचक्रं वातचक्रं च वक्रांगेषु वर्तते वास्तुविद्यांगविद्या च वायसानां तथैव
च तेषां लिपिस्वरविद्यैता ह्यंगगर्गमताः शुभाः स्त्रीयोगमथापारोहिणीयोगमेव च कन्यानेतान्विजानी-
यायोगांश्चैव विशेषतः अगास्तिवारो जनपदव्यूहश्च सलिलं ततः इत्येवमंगानि चतुर्विंशतिर्दर्शिताः
कर्मगुणाः तिथिनक्षत्रकरणमुहूर्तानां तदुक्तं गर्गेण अथातस्तिथिनक्षत्रमुहूर्तकरणात्मकं चतुर्विधं हि कर्म
गुणं गर्गेणोक्तं यथाविधि तिथिनक्षत्रकरणमुहूर्तानां च संपदः तस्माद्गुणानामेतेषां संपदा कर्म कारयेदिति
ति चंद्रमार्गः वेदविद्यातपोवृद्धं सर्वशास्त्रविशारदं क्रोष्टुकिः प्रयतो गर्गमपृच्छत्सोमसंभ कृतः समुपस्थितः सो-
मः केन सृष्टः किमात्मकश्च आदि गर्गोक्तः नक्षत्रकेन्द्रभेकानि नक्षत्राणि ध्रुवाणि कतिमृदूनि मासादि चक्राणि स्वभ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लल. ७९ 76

शाकुनाः अंगविद्या पुंसंज्ञका अंगविशेषस्पर्शदर्शनेन भाविशुभफलविशेषकथनं वायसविद्या काकशकुनाः आ
षाढापूर्वाषाढा योगः स्वातीपूर्वाषाढरोहिणीनक्षत्रचंद्रयोगो वृष्टिसूचकः जनपदव्यूहः दिग्देशजातस्युपसर्गीये
नजायंतेनागताः तन्मेजनपदव्यूहं नैष्ठिकं गदनस्तथैव निर्गमोक्तः सलिलं सलिलज्ञाने उपांगानामप्यूहस्यपव
अतऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि उपांगानीह नामतः आनुपूर्वीविधानेन चत्वारिंशतमेकतः ग्रहकोशो ग्रहयुद्धं ग्रहशृंगाट
केततः कृत्स्नं ग्रहेश्वराणां च ग्रहपाकास्तथैव च नृपयात्राऽग्निवर्णाश्च सेनाव्यूहस्तथैव च मयूरचित्रोपनि
षडुपहाराश्च पानयः शांतिकं तु लाकोशो भवस्वेदीयकारकं सर्वभूतरुतं चैव तथा पुष्पलतां विदुः उ
पानहोमस्तथाच्छेदो वस्त्रच्छेदस्तथैव च कृत्स्नं भुवनकोशं च गर्भाधानोद्गार्गीलो निर्वाना भूमिकेणाश्च परिवे
षास्तथैव च अत्रस्वभावाः संध्येवं तथोल्काश्चोपधारयेत् ग्रहकोशो ग्रहाणामुत्पत्तिवर्णादिना शुभाशुभफ
लकथनं ग्रहयुद्धं भौमादिपंचकग्रहसंयोगः ग्रहशृंगाटकं ग्रहाणामुत्पत्तिवर्णसंस्थानरश्मिभिः शुभाशुभ
फलनिर्देशः ग्रहेश्वराणां कृत्स्नं ग्रहजन्मनिर्वचनादि ग्रहपाकाः ग्रहाणां समयविशेषफलदानत्वं नृपयात्रा
राज्ञां यात्राकालः अग्निवर्णो होमकालेऽग्नेः शुभाशुभलक्षणं सेनाव्यूहः कालविशेषे सेनारचनाविशे
षेण राज्ञो जयाजयकथनं मयूरचित्रं ग्रहोत्पातः उपनिषत् भुवनपरिमाणग्रहनक्षत्रगम्यादि उपहारो बलिः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शांतयोजननमाराद्युमानशांतयः उत्पातोनदीवृत्तवाप्यादिवैकृतं तलाकोशः अन्नादितौल्येनतत्समर्घोसमर्घ
कथनं भवस्कंदोपकारकभूतभविष्यादियुगधर्मादिकथनरूपः शिवगुहसंवादः सर्वभूतरुतंसर्वप्राणिनो·
शब्दज्ञानेशाकुनोपयुक्तोग्रुष्मलताद्वतादिपुष्पोद्गमेनधान्यवृध्यादिज्ञानोपानहोच्छेदः स्थलविशेषच्छेदेनफ
लविशेषकथनं एवंवस्त्रच्छेदोपि भुवनकोशइंद्रध्वजमेघगर्जप्रतीलक्षणादिः गर्भाधानेमेघगर्भधारणेन
वृष्टिविचारः उदगार्गलः जलवृद्धिज्ञानयमगुप्तमभिन्नरुभित्तिविचारः ऋतुस्वभावास्ततद्रव्यसाधारणलक्ष
णानि संध्याउदयास्तकालरागेणफलविशेषकथनं उल्कानभसोज्वालापातः अत्रग्रहपाकाः अष्टौ ऋतुस्व
भावाःषट् एवंचचत्वारिंशदङ्गोपाङ्गसंख्यापूरणंभवति एवंचांगोपांगमेलनेनचतुःषष्टिर्भवति ज्योतिषस्या
ङ्गानि भूतभव्यभविष्यज्ञेयगणितंतत्तविशेषतः विचंद्राशर्वरीयद्वन्नक्षत्रंचसुतोपलं गणितेनतथाहीनंज्यो
तिषंनृपसत्तम आस्तिकेष्वदयानेंचअन्नक्लेमदीपनेः सांवत्सरेनयोगानावरयेत्प्रयतः शुचि येनाभिषिक्तो
नृपतिर्विनष्टस्तुनराधिप सांवत्सरंनतंविद्वान्वरयेत्त्वपसत्तमः नहीनांगंनवाचालंनचनिःप्रतिभंनृप कु
वेषंमलिनंचंडंनास्तिकंपापनिश्चयं मित्रद्रोहिणनवृण्येदवर्येत्ससुगुणंसदा वरपितामवृत्तयः स्वयमेवमहीभुजा
यथैवाग्निमुखादेवास्तथाराजमुखाःप्रजाः यथैवाग्नेर्मुखेमंत्राराज्ञासांवत्सरस्तथा त्वमेमातापिताचैवदेशिक

लव-
७७
77

अनुग्रहस्त्वया देवं पुरुषकारस्य ज्ञातव्यः सततं त्वया देशिकः आज्ञाप्रदः मम धर्मज्ञ भद्रं ते राज्यं साधारणं हितो श
मनीयो ऽस्तु भो देव स्वस्त्येवं मम शांतिभिः यो रुषेण पदे कार्यं समरे वसदा मया अस्तु भो देवः अस्तु भारखे तेनो दिष्टो
ववरये द्राज्ञा मंत्रिपुरोहितो तेनो दिष्टो तववरयेन्म दिष्टो न्यसत्तमः ततो ऽभिषेकसंभारांस्तस्य कुर्यान्स देववित्
क्रौंजरं तरणं कुर्यात्तस्य राज्ञः परीक्षितं भद्रासनं च छत्रं च वालव्यजनमेव च खड्गं च क्रतं तथा चापरत्नानि विविधा
नि च राज्ञो मतस्य ये ना सन्सर्वं पतेन राधिप ततेकार्यानि रेद्रस्य तेन देव विद्रातदी कार्मसावत्सरः कार्यः अला
भे तस्य भूभुजा गुणाधिकस्य नो कार्या ये त्वत्राभिहिता मया मृतराज्ञो पपते प्राचीनाः पदार्था भद्रासनछत्रचा
मरखड्गप्रमुख पश्चासन ते नूतन राजेन देयाः किं तु नूतना एव कर्तव्याः देवज्ञस्य पूर्वं ज्योतिर्विद पेदा गुण
धिकस्य ते स्याप्य ते न दा प्राचीनं विद्वाय नूतनः ननूतन देवज्ञस्य गुणाधिका भावे तु पुराननः एव देवज्ञः स्थापनीयः
भद्रासनछत्रचामरखड्गादीनां तु पूर्वेषां गुणाधिके नूतनानां निर्गुणे विपि सगुणान् पुरातनान् विद्वाय नूतना
एव कर्तव्या इति ततनाना गास्तु भूतानयोधा राज्ञो न माता न पिता न वंधुः यत्रास्य कार्यं भवतीह विद्वान्सांव
त्सरो धर्मविदप्रमत्तः इति ज्योतिर्विल्लक्षणं अथ वैद्यलक्षणं अत्र प्रमाणाचार्यः स विज्ञेयो वचनेन त
स्य भूभुजा राम राज्ञाम सदा कार्यं यथा कार्यं दृष्यन्ते ने रितिविलसधर्मो ज्ञत्व वचनेन राज्ञा वैद्यो ऽकं सर्वकर्तव्यं सर्वे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वैद्यगुणैर्युक्तेन त्वकिंल तल्लक्षणो भिषगपेक्षितः तेन तल्लक्षणमभिधीयते विलम्बमानो नरे शुक्र उवाच परंपरागतो
यः स्यादष्टांगेन तु चिकित्सते अनाहार्यः स वैद्यः स्यादमीमांसावकुलोद्भवः कुलोद्भवः कुलीनः अष्टाङ्गकं च हारीते
नोक्तं शल्यं शालाक्यमगदं कुमारभरणं तथा कायभूतक्रिया वाजीकरणं च रसायनमिति नाराचकाष्ठवल्लीभिः
शक्तिकैस्तैः स्वकोमरैः त्वक्षविभिन्नगात्रस्य तत्रस्थायदि शल्यकं तस्य प्रतीकारः कर्मयत्नेन तु कल्यचिकित्सितमि
ति स्मृते न केवलं काष्ठतृणादिशल्यं विस्रष्टं हेमलदोषजं वा यत्किंचिदाबाधकं शरीरे तत्सर्वमेव शल्यं वद
ति शल्ये ऊर्ध्वजत्रुषु ये रोगाः श्रवणादिषु संस्थिताः तेषां यत्क्रियते कर्म तत् शालाक्यं प्रकीर्त्तितं स्थावराणां
जंगमानां तथा संयोगजन्मनां विषाणां यः प्रतीकारो विषतंत्रं तेन उच्यते इदं वा गदं मनोपक्रमविज्ञानं कुमार
भरणं तथा धात्रीणां लक्षणं क्षीरदोषसंशोधनोषधं योगिनीनां ग्रहाणां च लक्षणं तन्निवारणं सूतिकारोगश
मनमिति बालचिकित्सितमिति रोगदर्पणे कायस्यात्स्यापदहन स्वदोषविनिवारणं प्रोक्ता कालचिकित्से
यं तत्त्वज्ञैर्भिषजां वरैः देवासुरैर्गन्धर्वपितृभूतादिभिर्ग्रहैः ग्रस्तानां शान्तिका भूतचिकित्सा सा च गद्यते वा
जः शुक्रसमाप्यायनेन तत् पुष्टीकरणेन तेन वाजीकरणमित्याहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः रसरक्तादिधातूनां उपदा
प्यायनकारकं रसायनं तत् द्दिष्टं भिषग्भिः शास्त्रपारगैरिति वाग्भटेप्यंगाष्टकमुक्तं कायबालग्रहोर्ध्वांगश

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्वदंष्ट्राजराद्दशान् अष्टाङ्गानि तस्यायुः चिकित्सा येषु संस्थितेति आत्रेयाचार्यः स विज्ञेयो वचनं तस्य भूभुजा राम
राज्ञा कार्यं यथाकार्यं शिष्यजनैरिति चरके हेतौ लिङ्गे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे ज्ञानं चतुर्विधं यस्य सरा-
जार्हो भिषक्तमतः स्मृतः हेतुः रोगनिदानं लिङ्गं रोगज्ञापकं चिह्नं रोगपदं देहलीप्रदीपन्यायेनोभयत्रान्वेति
लत्व॰ हेमकुतूहले राजा राजगृहासन्ने प्राणाचार्यं निवेशयेत् सर्वदा सम्भवेत्सव सर्वज्ञो वा प्रमादवान् तस्माद्धेये
१२ नसततं विषादक्षो नराधिपः न विश्वसेदतो राजा कदाचिदपि कस्यचित् आयुर्वेदकृताभ्यासः सर्वत्र प्रियद
78 र्शनः अमिरैतसमापुत्रकपट्टवैद्यो मिथीयते क्रोधपारुष्यमात्सर्यमायादंभविवर्जितं जितेन्द्रियं क्षमावन्तं
शीलशौचदयान्वितं कुलीनं धार्मिकं स्निग्धं विद्यायसंभूतं सन्मते स्थितं अलुब्धमशठं भक्तं कृतज्ञं प्रियदर्शि
नं मेधाविनमसंभ्रान्तमवरं केहितैषिणं पटुं प्रगल्भं निपुणं दक्षमालस्यवर्जितं सर्ववैद्यगुणैर्युक्तं निम
सं निहितागदं महानसे प्रयुञ्जीत वैद्यं तद्विद्यपूजितं वैद्यः पुरोहितो मंत्री दैवज्ञश्च चतुर्थकः प्रातस्त्व हिद
ष्ट्वा नित्यं स्याच्छ्रेयस्तता देवज्ञो मंत्रविद्वैद्यस्तुर्यश्च पुरोहितः एते राज्ञा सदा पोष्याः क्षेमेणापि स्त्रियाय
या वैद्यविद्वज्जनामात्यायस्य राजः प्रियंवदाः आरोग्यधर्मकोशास्य प्रवर्द्धन्ते हि सर्वदा गतस्यौगिणकाङ्क्ष
ष्टिणतायुश्च चिकित्सकान् गतश्रीश्च गतायुश्च बालानां द्विभारत कच्चिद्धितेश्च चिकित्सकश्च विद्धर्मः क्व॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विषयाः क्वचिदभ्यासयोगस्तु नाफलेहि चिकित्सितं चिकित्सितशरीरं हि न निःक्रीणाति यो नरः तेनय
न्क्षिपते गुणेंतत्फलेभिषगाश्नुते संचयंच प्रकोपंच प्रसरं स्थानमेवच दोषाणांच हियोवेदसभवेद्भिष
गुत्तमः दोषाणामितिप्रत्येकंसंबध्यते बाप्यस्तत्त्वपरिज्ञानेवेदनायाश्चनिग्रहः एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वंनवैद्यः
प्रभुरायुषः कुचेलः कर्कशोदीनः स्वयामीस्वयमागतः पंचवैद्यानपूज्यन्ते धन्वन्तरिसमाअपि कुचेलः कु
चेलः कुत्सितवस्त्रः स्तुतस्तुतेनस्तुतंयेनहारीतेयेनहारितं नालोकिचरकंयेनसवैद्योवैद्यनिंदितः श्रु
श्रुतेनश्रुतेनयेनकिमन्यैर्बहुभिःश्रुतैः श्रुतचरितसमृद्धेकर्मदक्षेदयालोभिषजिनिरतवृत्तेदेहभारंनिवेश्य
भवतिविपुलतेजाःस्वच्छकीर्त्तिप्रभावःस्वकृतफलविभागीभूमिपालश्चिरायुरिति इतिवैद्यलक्षणं अथापि
यत्स्यात्कर्मसुमहत्तदप्येकेनदुष्करं विशेषतोऽसहायेनकिमुराज्यमहोदयमितिमनुवचनेन अभिषेकाद्यशिर।
सारामाराजीवलोचन सहायवरणंकार्यंनतद्राज्यप्रतिष्ठितं यदप्यल्पतरंकर्मतदप्येकेनदुष्करं पुरुषे।
णासहायेनकिमुराज्यमहत्पदं तस्मात्सहायान्वरयेत्कुलीनान्नृपतिःस्वयं शुभान्ताश्चनयाप्तुष्टाः सततंप्रति
मानिताः राज्ञासहायाःकर्त्तव्याःपृथिवीजेतुमिच्छतेत्यादिविस्मयमौनरववचनैः राज्ञाराज्यसिध्यर्थंपृथिवी
जयार्थंचसहायवरणंकार्यमित्युक्तं नचाकिंलक्षणाःसहायाःकर्त्तव्याइतितल्लक्षणमुच्यते विस्मयमौन

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लल-
१८
७५

रे श्रुतान्वृत्तसम्पन्नानीयान्बलस्यकांस्वभाविनान् रूपसत्त्वगुणौदार्यसंयुतान्क्षमयायुतान् क्लेशक्षमान्महोत्सा
हान्धर्मज्ञांश्चप्रियंवदान् हितोपदेशकान्प्राज्ञान्स्वामिभक्तान्यशोऽर्थिनः एवंविधान्सहायांस्तु शुभकर्मणियोजये
त् गुणहीनानपितथाविज्ञायनृपतिः स्वयं कर्मस्वेवनियुञ्जीतयथायोग्येषुभार्गवेति महाभारते अमात्या
न्सातिशूरांश्चकुलीनांश्चवशसज्जकान् सुसंनद्धांश्चकौन्तेयमहोत्साहांश्चकर्मसु एतान्सहायान्लिप्सेथाः स
र्वापत्सुचभारतेति इतिसहायलक्षणं इहयथार्हकाथसुभनान्राजाकर्मसुयोजयेत् धर्मिष्ठान्धर्मकार्येषु।
शूरान्संग्रामकर्मसु निपुणानर्थकृत्येषुसर्वत्रचतथाशुचीन् स्त्रीषुषण्ढान्नियुञ्जीततीक्ष्णान्दारुणकर्मसु धर्मे
चार्थेचकामेचभयेचभृगुनन्दन राजायथार्हंकुर्याच्चउपधाभिःपरीक्षितान् तत्पादान्वेषणेयत्नानध्यक्षांस
श्चकारयेत् एवमादीनिकर्माणिपापैःकार्याणिभार्गव सर्वथानेष्यतेराज्ञांलोकोपकारणात्स्वयः पापसा
ध्यानिकर्माणियानिराज्ञोभृगूत्तम संतत्वानिनकुर्वन्तिनसाज्जान्विमृश्यानृपः नेष्यतेपृथिवीशानांलोको
पकरणात्स्वयः यस्मिन्कर्मणियस्यस्याद्विशेषेणचकौशलं तस्मिन्कर्मणितंराजापरीक्ष्यविनियोजयेत् पितृपै
तामहान्भृत्यान्सर्वकर्मसुयोजयेत् विनादायादकृत्येषुतत्रतेहिसमामताः राजादायादकृत्येषुपरीक्ष्यच
कृतात्मनान् नियुञ्जीतमहाभागतस्यतेहितकारिणः इतिविष्णुधर्मोत्तरवचनैः स्वकार्येषुतत्तत्कर्माभिज्ञा

१८

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न पुरुषान् राजा नियुंजीत स्मृकं तत्र कार्यविशेषयोग्यपुरुषाणां विशेषलक्षणमुच्यते तत्र मित्रलक्षणं तु
क्तं महाभारते यस्तु दुष्यान्न तप्येत तथैवेन तरो भवेत् एतदुत्तममित्रस्य निमित्तमिति वर्तते निमित्तलक्षणं
यं मन्येत ममाभावादस्याभावो भवेदिति तस्मिन्कुर्वीत विश्वासं यथा पितरि वै तथा तं शक्त्या वर्धमानश्च सर्वतः
परिरक्षयेत् नित्यं क्षतान्नाहार्यप्रतियोधर्मेष्वपि कर्मसु हतानाज्ञीतं विजानीयादुत्तममित्रलक्षणं व्यसनान्नित्यभी-
तोयः समृध्यायो न तप्यते स्यादेवंविधं मित्रं तेन दात्मसमं स्मृतम् इति इति मित्रलक्षणं अथ शत्रुलक्षणं मनुः
प्राज्ञे कुलीने शूरं वदक्षं दातारमेव च कृतज्ञं धृतिमन्तं च कष्टमाहुररिं बुधा इति महाभारते यं मन्येत ममाभावादिमम
र्थागमः स्पृशेत् नित्यं तस्माच्छंकितव्यममित्रं तं विदुर्बुधाः यस्य क्षेत्रादप्युदकं क्षेत्रमन्यस्य गच्छति न तत्रानियतं तस्य
भिद्येरन्सर्वसेतवः तथैवात्युदकाधीनस्तस्य भेदनमिच्छति यमेवं लक्षणं विद्यादमित्रं विनिर्दिशेत् येयस्य वृत्तिमि
च्छंति तेन तस्यारिपवः स्मृता इति इति शत्रुलक्षणं अथ सभासल्लक्षणं महाभारते श्रीनिषेवाः सदा सन्तः सत्यार्जवगुणा
न्विताः शक्ताः कथयितुं सम्यक्तेन तव स्युः सभासद इति इति सभासल्लक्षणं अथ परिच्छदलक्षणं कुलीनादे
शजाः प्राज्ञा रूपवन्तो गुणान्विताः प्रगल्भाश्चानुरक्ताश्च तेन तव स्युः परिच्छदा इति इति परिच्छदलक्षणं अथ पार्थिव
र्ज्जिलक्षणं महाभारते न बालिशान् वद्धज्ञानप्राज्ञान्नाजितेन्द्रियाः नाकुलीनान्नरान् पार्थ स्थाप्यान्राज्ञा गुणैषिणा सा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पवः कुशलाः शूराज्ञानवंतोनसूयकाः अक्षुद्राः शुचयोदक्षाः सुवेशाः पारिपार्श्विका इति इति पार्श्ववर्त्तिलक्ष
णं अथ रक्षकलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे अंगशोकोव्यायताः शूराः दृढभक्तानिराकुलाः राज्ञा परीक्षिताः कार्याः सदा
क्लेशसहा हिताः इति इति रक्षकलक्षणं अथ तांबूलधारिलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे अहार्यश्चानृशंसश्च दृढभक्तिश्च
पार्थिवे तांबूलधारी भवति नारीकाप्यथ तद्गुणा इति इति तांबूलधारिलक्षणं अथ भांडागारिलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे
लक्ष· ८ लोहवस्त्राजिनादीनां रत्नानां च विभागवित् विज्ञाता फल्गुसाराणामनाहार्यः शुचिः सदा फल्गुसाराणि विज्ञातासारासा
80 रविवेकवान् निपुणश्चाप्रमत्तश्च धनाध्यक्षः प्रकीर्त्तितः आयद्वारेषु सर्वेषु धनाध्यक्षसमा नराः व्ययद्वारेषु च तथा
कर्त्तव्याः पृथिवीक्षिता आयव्ययज्ञो लोकज्ञो देशोत्पत्तिविशारदः कृताकृतज्ञो भृत्यानां ज्ञेयः स्याद्दर्शरक्षक
इति मनुः आयव्ययज्ञान् कुर्वीत धर्मशास्त्रार्थकोविदान् कुलीनान् वित्तसंपन्नान् समर्थान् कोशगुप्तये इति इति भांडा
गारिलक्षणं अथ खड्गधारिलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे स्वरूपलक्षणः प्रांशुर्दृढभक्तिः कुलोचितः शूरः क्लेशसह
श्चैव खड्गधारी प्रकीर्त्तित इति इति खड्गधारिलक्षणं अथांतःपुराध्यक्षलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे वृद्धः कुलोद्गतः प
टुः पितृपैतामहः शुचिः राज्ञामंतःपुराध्यक्षो विनीतश्च तथेष्यत इति इत्यंतःपुराध्यक्षलक्षणं अथांतःपुरचरलक्ष
णं विष्णुधर्मोत्तरे पंचाशदधिका नार्यः पुरुषाः सप्ततेः पराः अंतःपुरचराः कार्या राज्ञां सर्वेषु कर्मसु इति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पंचाशद्वर्षाधिकानार्यस्तथा सप्ततिवर्षाधिकाः पुरुषाश्चान्तःपुरे स्थाप्या इत्यर्थः इत्यन्तःपुरचरलक्षणं अथ
सूदाध्यक्षलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे अनाहार्यः शुचिर्दक्षश्चिकित्सकवचोरतः सूदशास्त्रविधानज्ञः सूदाध्यक्षः
प्रशस्यत इति इति सूदाध्यक्षलक्षणं अथ सूदलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे सूदशास्त्रविधानज्ञाः पराभेद्याः कुलो
द्गताः सर्वे महानसे कार्या नीचकेशनखास्तथेति इति सूदलक्षणं अथ धर्माधिकरणिलक्षणं विष्णुधर्मोत्त
रे समः शत्रौ च मित्रे च धर्मशास्त्रविशारदः विप्रमुख्यः कुलीनश्च धर्माधिकरणी भवेत् कार्यास्तथाविधास्तत्र
द्विजमुख्याः सभासद इति मदनरत्ने बृहस्पतिः दुर्गमध्ये गृहं कुर्याज्जलवृक्षान्वितं पृथक् प्राग्दिशि प्राङ्मुखीं तस्य
लक्षण्यां कल्पयेत्सभां माल्यधूपासनोपेतां बीजरत्नसमन्वितां प्रतिमालेख्यदेवैश्च युक्तामग्न्यम्बुनान्वितेति सैव
धर्माधिकरणमित्याह माधवीये कल्पतरौ च कात्यायनः धर्मशास्त्रानुसारेण मूलशास्त्रविवेचनं यत्राधिक्रियते स्था
नं धर्माधिकरणं हि तदिति मूले व्यवहारः शास्त्रं तत्प्रतिपादकं स्मृत्यादि इति धर्माधिकरणिलक्षणं अथ लेख
कलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे सर्वदेशाक्षराभिज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः लेखकः कथितो राज्ञः सर्वाधिकरणेषु वै
शीर्षोपेतान्सुसंपूर्णान् समश्रेणिगतान्समान् अक्षरान्वै लिखेद्यस्तु स लेखकवरः स्मृतः उपायवाक्यकुशलः
सर्वशास्त्रविशारदः बह्वर्थवक्ता चाल्पेन लेखकः स्यान्नृपोत्तम वाक्याभिप्रायतत्त्वज्ञो देशकालविभागवित् अना

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष॰
२१

नाहार्यःसमर्थश्चलेखकःस्यान्नृपसत्तमेति इतिलेखकलक्षणं अथाह्वानकलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे पुरुषांतरतत्व
ज्ञाःप्रांशवश्चाप्यलोलुपाः धर्माधिकरणेकार्याजनाह्वानकरानराइति इत्याह्वानकलक्षणं अथदौवारिकलक्ष
णं एवंविधास्तथाकार्याराज्ञोदौवारिकाविकाजनाइति एवमितिहर्त्तीकाह्वानकगुणातिदेशः अथप्रतीहारलक्ष
णं विष्णुधर्मोत्तरे प्रांशुःसुरूपोदक्षश्चप्रियवादीनचोद्धतः चित्तग्राहश्चसर्वेषांप्रतीहारोविधीयतइति इतिप्रती
हारलक्षणं अथशस्त्रशालाध्यक्षलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे स्थानेराजनितान्तःसततंप्रतिजागरतः राज्ञःस्यादा
युधागारेदक्षःकर्मसुचोद्यतइति इतिशस्त्रशालाध्यक्षलक्षणं अथशस्त्राध्यक्षलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे यंत्रमु
क्तेपाणिमुक्तेअमुक्तेमुक्तधारिते शस्त्राचार्योनियुद्धेचकुशलस्तथेष्यतइति इतिशस्त्राध्यक्षलक्षणं अथस्थ
पतिलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे वास्तुविद्याविधानज्ञोलघुहस्तोजितश्रमः दीर्घदर्शीचशूरश्चस्थपतिःपरि
कीर्तितइति इतिस्थपतिलक्षणं अथसारथिलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे शूरश्चबलयुक्तश्चगजाश्वरथकोविदःह
याश्ववेदतत्त्वज्ञोभूमिभागविशेषवित् बलाबलज्ञोरथिनःस्थिरदृष्टिर्विशारदः शूरश्चकृतविद्यश्चसारथिः
परिकीर्तितइति इतिसारथिलक्षणं अथदूतलक्षणं तत्राहमनुः दूतंचैवप्रकुर्वीतसर्वशास्त्रार्थकोवि
दं इंगिताकारचेष्टज्ञंशुचिंदक्षंकुलोद्गतं अनुरक्तःशुचिर्दक्षःस्मृतिमान्देशकालवित् वपुष्मान्वीतभी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यत इति महाभारते कुलीनः शीलसंपन्नो वाग्मी दक्षः प्रियंवदः यथोक्तवादी स्मृतिमा
न् दूतः स्यात्सप्तभिर्गुणैरिति विष्णुधर्मोत्तरे यथोक्तवादी दूतः स्याद्देशभाषाविशारदः शक्तः क्लेशसहो
वाग्मी देशकालविभागकः विज्ञातदेशकालं च दूतं यस्यान्महीक्षितः वक्तापि नस्मयः काले स दूतो
नृपतेर्भवेदिति इति दूतलक्षणं अथ चारलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे पुष्कर उवाच परराजगृहान्यामानज्ञ
नसंग्रहकाम्यया ऽष्टावाप्यथवा ऽष्टान्संप्रयेतप्रयत्नतः ऽष्टान्विज्ञाय विश्वासं न कुर्यात्तत्र भूमिपः
वृत्तिं तस्यापि वर्तेत जनसंग्रहकाम्यया राजा देशान्तरस्थानपुरुषं स्वजनपदस्थे समायं देशसंभाषावज्ञमानेन वि
नयेत् कामं भृत्याजीने राजा नैव कुर्यात्स्वजनम नैतेवा से विभक्तं तु भृत्यं कुर्यात्कथंचन शात्रवोऽग्निविषसर्पाति
स्त्रिंशमपि चैकतः भृत्यामनुजशार्दूल कुभृत्याश्च तथैकतः तेषां चारेण विज्ञाने राजा विज्ञाय नित्यशः गु
णानां पूजनं कुर्याद्विगुणानां च शासनं कथिताः सततं राम राजानश्चारचक्षुषः स्वदेशे परदेशे च ज्ञानशीला
न्विचक्षणान् अनाहार्यान् क्लेशसहान्नियुञ्जीत सदाचरान् जनस्याविदितान्सौम्यांस्तथाज्ञातान्परस्परं वणि
जो मंत्रकुशलान्सांवत्सरचिकित्सकान् तथा प्रव्रजिताकारान् चारान्राजा नियोजयेत् नैकस्य राज्ञा श्रद्द
ध्याच्चारस्यापि च भाषितं द्वयोः संवादमाज्ञाय श्रद्दध्यान्नृपतिस्ततः परस्परं ह्यविदितौ यदि स्यातां तदा उभौ त

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्याद्राजा प्रयत्नेन शूद्रांश्चापि नियोजयेत् राज्यस्य मूलमेतावद्यद्राजा स्वारक्षिता चारणमपि यत्नेन राज्ञा कार्यं
परीक्षणं रागापरागौ भृत्यानां जनस्य च गुणागुणान् शुभानामशुभानां च विज्ञानं राम कर्मणां सर्वं राज्ञा च रा
यत्नेन श्रुण्वन् सदा भवेत् कर्मणा केन मे लोके जनः सर्वोनुरज्यते विरज्यते च तथा केन किं ज्ञेयं तन्महीक्षिता अनु
लव॰
८२
82
रागकरं लोके कर्म कार्यं महीक्षिता विरागजननं सर्वं वर्जनीयं प्रयत्नतः जनानुरागप्रभवा हि लक्ष्मी राज्ञां यतो ॥
भार्गववंशचंद्र तस्मात्प्रयत्नेन नरेंद्रमुख्यैः कार्योनुरागो भुवि मानवेष्विति इति चारलक्षणं ॥ अथ नियोज्यसामा
न्यलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे कर्माण्यपरिमेयानि राज्ञां भृगुकुलोद्वह उत्तमाधममध्यानि बुद्ध्वा कार्याणि पार्
थिवः उत्तमाधममध्येषु पुरुषान्विनियोजयेत् नरः कर्मविपर्यासाद्राजा नाशमवाप्नुयात् नियोज्यं पुरु
षं भक्तिश्रुतं शौर्यं कुलं बलं ज्ञात्वा वृत्तिर्विधातव्या पुरुषाणां महीक्षिता पुरुषान्तरविज्ञानतत्त्वमात्रनिब
न्धना नरेन्द्रलक्ष्मीर्धर्मज्ञ तस्मात्प्रयत्नो भवेदूपेति इति नियोज्यसामान्यलक्षणं ॥ अथ राजसेवकलक्षणं विष्णु
धर्मोत्तरे पुष्कर उवाच यथानुवर्तितव्यः स्याद्राम राजोपजीविभिः तथा ते कथयिष्यामि निबोध गदतो मम
म आज्ञा सर्वात्मना कार्या स्वशक्त्या भृगुसत्तम आदिष्टवचनं तस्य नवकर्तव्यं तथा वचः अत्र कुलेपि यतस्य
वक्तव्यं जनसंनिधौ रहोगतस्य वक्तव्यमप्रियं यद्धितं भवेत् परार्थं तस्य वक्तव्यं स्वस्थे चेतसि भार्गव स्वार्थं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सहृद्भिर्विकल्प्यं न स्वयं तु कथंचन कालातिपातः कार्येषु वर्जितव्यः प्रयत्नतः न च हिंस्यं धनं किंचिन्नियुक्तेन च क
र्मणि नोपेक्ष्यं न स्वमानं च न तथा राज्ञः प्रियो भवेत् राजस्त्रीभिर्न तथा कार्यं विषमाषितचेष्टितं राजलीला न कर्त
व्या तस्य चेष्टां विवर्जयेत् राज्ञः समधिको वेषो न तु कार्यो विजानता द्यूतादिषु तथैवास्य कौशलं तु प्रदर्शयेत्
प्रदर्श्य कौशलं चास्य राजानं तु विशेषयेत् अन्तःपुरजनाध्यक्षैर्वैरदूतैर्निराकृतैः संसर्गं न व्रजेद्धीमान् विना पार्थिव
शासनात् निःस्नेहतां वावमानं तत्प्रयुक्तं च गोपयेत् यच्च गुह्यं भवेद्राज्ञस्तत्तल्लोके प्रकाशयेत् नृपेणाश्राहूतैः
संसर्गं न व्रजेद्धीमान् विना पार्थिवशासनात् निःस्नेहतां वावमानं तत्प्रयुक्तं च गोपयेत् यच्च गुह्ये वितथस्याकुला
गुह्यं श्रुत्वा न तन्न श्रावयेल्लोके न तथा राज्ञः प्रियो भवेत् आज्ञाप्यमाने वान्यस्मिन् समुत्थाय त्वरान्वितः अहं किंकर
वाणीति वाच्यो राजा विजानता कार्यावस्थां च विज्ञाय कार्यमेतन्न तथा भवेत् सततं क्रियमाणेऽस्मिन् लाघवं तु व्रजेद्ध्रु
वं राज्ञः प्रियाण्यभिवाच्यानि न च वाच्यं पुनः पुनः न हास्यशीलश्च भवेन्न चापि भ्रुकुटीमुखः नातिवक्ता न निर्वक्ता न च
मत्सरिकस्तथा आत्मसंभावितश्चैव न भवेद्धि कथंचन दुःकृतानि नरेन्द्रस्य न च संकीर्तयेत् क्वचित् वस्त्रं पत्रमलंका
रं राज्ञा दत्तं न धारयेत् औदार्येणापि तद्देयमन्यस्मै भूतिमिच्छता न चैवाभ्यशनं राज्ञः स्वपनं वापि कारयेत् नानिर्दिष्टं तथा
द्वारे प्रविशेत कथंचन न च पश्येत्तु राजानमयोग्यासु च भूमिषु राज्ञस्तु दक्षिणे पार्श्वे वामे चोपविशेत्तथा पुरस्ताच्च तथा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पश्चादासनं तु विमर्दितं जृम्भानिष्ठीवनं कामं कोपं पर्यङ्किकाश्रयं भ्रुकुटिं वातमुद्गारं तत्समीपे विवर्जयेत् स्वपेन्न तथा
लल. न कुर्वीत स्वगुणाख्यापनं बुधः स्वगुणाख्यापने न्यूनं नेपथ्ये नैव प्रयोजयेत् हृदयं निर्मलं कृत्वा परां भक्तिमुपाश्रितैः अ
८३ नुजीविगणैर्भाव्यं नित्यं राज्ञामतन्द्रितैः शाठ्यं लौल्यं च पैशुन्यं नास्तिक्यं क्षुद्रतां तथा चापल्यं च परित्याज्यं नित्यं राजानु
83 जीविना श्रुतेन विद्याशिल्पेषु संयोज्यात्मानमात्मना राजसेवां ततः कुर्याद्भूतये भूतिवर्धनः नमस्कार्याः सदा चा-
स्य पुत्रवल्लभमन्त्रिणः सचिवैश्चास्य विश्वासं न तु कार्यं कथंचन अपृष्टश्चास्य न ब्रूयात्कामं ब्रूयात्तथापदि हितं पथ्यं च
वचनं हितैः सह विनिश्चितं ब्रूयादिति पूर्वेण संबन्धः चित्तं चैवास्य विज्ञेयं नित्यमेवानुजीविना भर्तुराराधनं कुर्याच्चि
त्तज्ञो मानवः सदा रागापरागौ चैवास्य विज्ञेयौ भूतिमिच्छता त्यजेद्विरक्तं नृपतिं रक्ताद्वृत्तिं कामयेत् कर्मोपकारयो
र्नाशं विपक्षाभ्युदयं तथा आशासंवर्धनं कृत्वा फलनाशं करोति च अकोपोऽपि सकोपाभः प्रसन्नोऽपि च निःफलः फ
लवाक्यैः समं वदेत् हन्ति छेदं करोति च प्रदेशवाक्ये उदिते न संभावयतीत्यथ आराधनासु सर्वासु सुप्तवच्च विचेष्टते क
थासु दोषान् क्षिपति वाक्यच्छेदं करोत्यथ लक्ष्यते विमुखश्चैव गुणसंकीर्तने कृते दृष्टिं क्षिपत्यथान्यत्र क्रियमाणे च
कर्मणि विरक्तलक्षणं ह्येतच्छृणु रक्तस्य लक्षणं दृष्ट्वा प्रसन्नो भवति वाक्यं गृह्णाति चादरात् कुशलादिपरिप्रश्ने सं
प्रयच्छति चासनं विविक्तदर्शने चास्य रहस्येन च शङ्कते जायते हृष्टवदनः श्रुत्वा तस्य तु संकथां अप्रियाण्यपि वा-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कानितड्कान्यमितंदते उणापनेच हृत्तानि स्तोकमप्यादृतानया कथांतरे स्मरतिचप्रहृष्टवदनस्तथा इतिरक्तस्यकृत्या
सेवामेतकुलोद्वहः आपत्स्वनन्यजेस्मूर्वं विक्रममपिसेविते मित्रेनचापत्सुतथाच भृत्यंमजेनित्येन निशांगमप्रमेयं प्रभुंवि
वेणाचनेव जंनेति स्वर्णेदयामासुरहेहजुश्रमिति इतिराजसेवकलक्षणं अथसंधिविग्रहीतलक्षणं विस्मयमीत
रे षाड्गुण्यविधितत्वज्ञोदेशभाषाविशारदः संधिविग्रहिकः कार्योराज्ञानयविशारदइति इतिसंधिविग्रहीरल
णं अथयुद्धकर्तृपुरुषलक्षणं महाभारते युधिष्ठिरउवाच किंशीलाः किंसमाचाराः कथंरूपाश्चभारत किं
सन्नाहाः कथंशस्त्राः जनाःस्युःसंयुगेनृप भीष्मउवाच तथाचरितमेवात्रशस्त्रंपत्रंविशांपते आचरन्वीरपुरुष
स्तथाधर्मेषुवर्तते गांधाराःसिंधुसौवीराः नखरप्रासयोधिनः आभीरवः स्तबलिनस्तद्बलंसर्वपारगं सर्वश
लाः सत्ववंतोसुशीनराः प्राच्यामातंगयुद्धेषुकुशलाःकूटयोधिनः तथायवनकांबोजामथुरामभितश्चये
एतेनियुद्धकुशलादाक्षिणात्यासिपाणयः सर्वत्रशूराजायंतेमहासत्वामहाबलाः प्रायएवंसमुद्दिष्टालक्षणा
नितुमेशृणु सिंहशार्दूलवाङ्मात्राः सिंहशार्दूलगामिनः पारावतकलिंगाक्षाः सर्वेशूराःप्रमाथिनः मृगस्व
राद्वीपिनेत्राऋषभाक्षामनस्विनः द्वीपीचित्रकः प्रमादिनश्चमंदाश्चक्रोधनाः किंकिणीस्वनाः मेघस्वनाः क्रोधमु
खाः केचित्करभनिस्वनाः जिह्मनासाग्रजिह्वाश्चदूरगादूरपातिनः विधालकृजनतनवस्तत्वकेशास्तनुत्वचः शी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्राम्यपल्लहृत्ताश्च भवंति च दुरासदाः गोधानिमीलिताः केचिन्मन्दप्रकृतयस्तथा तरंगगतिनिर्घोषास्ते नराः पापि
लवः स्तसंहताः मननवो कठोरकाः सुसंस्थिताः पुत्रादिने पुहृष्यंति नन्दंति कलहेषु च गंभीरा नानिःस्वनानाः पिं
गला भ्रुकुटीमुखाः नकुला नालस्तथा चैव सर्वे भूरा लुब्धकाः जिह्वालाः प्रलल्लाटाश्च निर्मीसहनवोपि च वक्रवाङ्गु
लक्ष· गुलीवक्त्राः कृशा धमनिसंततताः प्रवेपंतीव वेगेन संपरापेक्ष्युपस्थिते वारणा इव संमत्तास्ते भवंति दुरासदाः प्र
८४ दीप्तस्फुटकेशांताः स्थूलपार्श्वहनूमुखाः उन्नतांसाः पृथुग्रीवा विकटाः स्थूलपिंडिकाः कुर्द्दगारवसुग्रीवा विनता
८५ विहगा इव पिङ्गशीर्षाति वक्राक्षा रक्तदेशमुखास्तथा उग्रस्वरा मन्युमंतो युद्धेषा भावसारिणः अथ मिश्रावलिप्ता
श्च घोरा रौद्रप्रदर्शनाः त्यक्तात्मानः सर्वथा ते अंत्यजात्यनिवर्त्तिनः युद्धकार्याः सदा सैन्ये हन्यंते ते ध्रुवंति चापि ते अ
धार्मिका भिन्नवृत्ताः सांवत्तैर्योपराभवः एवमेव प्रकुर्व्यान्निरालोक्येत सभीक्षणशः इति युद्धकर्त्तृपुरुषलक्षणं
अथ सेनापतिलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे कुलीनः शीलसंपन्नो धनुर्वेदविशारदः हस्तिशिक्षाश्वशिक्षासु कुश-
लः श्लक्ष्णभाषितः निमित्ते शाकुने ज्ञाने वेत्ता वैद्यचिकित्सिते पुरुषान्तरविज्ञाने षाड्गुण्ये च विनिश्चितः कृतज्ञः
कर्मणां शूरस्तथा क्लेशसहो ऋजुः व्यूहतत्त्वविधानज्ञः फल्गुसारविशेषवित् व्यूहः सैन्यसंनिवेशविशेषः फ
ल्गुसारवित् सारासारविवेककुशलः राज्ञा सेनापतिः कार्यो ब्राह्मणः क्षत्रियोऽथवेति इति सेनापतिलक्ष

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णे ॥ अथसेनापतिलक्षणे व्यूहतन्त्रविधानं तत्रयनेन सेनापतिर्व्यूहविदपेक्षितस्तु केन तत्र व्यूहदलगणमुच्यते
राज्ञविजये बलस्य व्यूहे ऽसौ ऽपरबलविभेदे स्यमपियद्ववेहनं व्यूहैर्भेदः पिजयेन तमबलं अतोवसेव्यूहानस
स्थतनाः सर्वममराः पराजित्य व्यूहैरुपचितबलो वीर्यमहतो बलाकापंक्तिवद्व्यूहो बलाकाख्यः कृतो र
णे काकव्यूहः काकसंयो बलाकाव्यूहभंजकः तावुभावपि भेद्येते शेषेन व्यूहेन निश्चितं एको रथोऽग्रेक
तव्यः पश्चाद्द्विरदसप्तकं त्रिंशदश्वाः खड्गशतं पार्श्वे कुन्तधरास्तथा मध्येऽष्टौ रथिनस्त्रिंशदश्वाः पार्श्वे गज
द्वयं ततश्चाष्टाष्टतः सर्वशेषेण व्यूहः स उच्यते अग्रे द्वौ षट्‌षड्गजाश्चाश्वमेकैकौ च व्यूहः स उच्यते बलाककाकौ कौ चेन
कौं वशेषेणेन भज्यते अग्रे रथद्वयं पश्चाद्गजाः सप्तमध्यवास्थिताः तत्राष्टौ विंशतिरिभाः पंचाशद्वाजिवाहकाः स
सप्तमरथाः पार्श्वे गजौ द्वौ द्वौ ततः स्थितौ तत्समागौ रथैर्वैदीवद्धस्तिनस्तगजाः स्थिताः मध्ये पदातयो चातेपार्श्व
योश्चाततुरंगमाः विज्ञेयः शाकटव्यूहो न भेद्यस्त्रिदशैरपि अग्रे रथत्रयं षट्‌षड्गजाकारे भाजनवृजः स्यन्दनाः पंचप
चैव अग्रेयाबाष्टिर्द्विन्नुषमतो मध्ये पदातयः षष्टिः पार्श्वयो रथिनो गजाः षष्टेन सकला सेना सिंहव्यूहः प्रजायते श
कटव्यूहकाले यंत्तबीव्यूहेन भिद्यते पद्मव्यूहस्तु सिंहेन सूचिकाकेन भिद्यते गजेषोडशकं मध्ये द्वत्ताकारेण
कल्पयेत् बाह्यतो रथिभिर्वेष्ट्यं तद्बाह्ये कुन्तधारकैः शरचापधरा बाह्ये खड्गचर्मधरास्ततः बाह्यतोऽश्वैः समा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेष्यं पंक्तिं चिनयतः क्रमात् पुनः पुनः प्रकुर्वीत यावद्वनिवाहिनी चक्रव्यूहः स विज्ञेयो दुर्भेद्यस्त्रिदशैरपि अन्तरे-
यमेकैकं स्थाने स्थाने प्रकल्पयेत् नदं नरे गजानां च नवाश्वान् स्थापयेत्ततः ततः पत्तींश्च दश पत्रे पत्रे कल्पयेत् ते-
लक्ष. ८५ न मध्ये स्यन्दनान् सप्त गजांश्चैव त्रयोदश पञ्चोनविंशतिरथान् पदातीन् षड्विंशतिः गजै रथैः तुरगाणि पादपस्य मध्यस्थ
कर्णिका तन्मध्ये गजमारूढस्त्वं नृपो वा नृपोऽथवा अन्तरे द्वौ गोलिकाणां तु रथाः द्विरदवाजिनः त्रयस्त्रपञ्च सर्वत्र
यस्त्रिंशत् पदातयः पद्मव्यूहः स विज्ञेयः पद्माकारः कृतो यतः रथैर्गजैर्हयैः पत्तिं मालाकारेण विन्यसेत् पु-
नः श्रेणिवैर्यान्मालाव्यूहः स उच्यते चतुर्दिक्षु रथो द्वौ नन्दृष्टेन्त द्विरदा दश चतुर्विंशतिरश्वाश्च त्रिंशत्स्वनूपरा-
स्ततः शरचापधराश्चैव खड्गपट्टिशधारिणः तेषां पृष्ठे कुन्तधराः पञ्चधारास्तथैव च सर्पाकारं रथैर्भासैः स्तुरयेते
निकैरपि सर्पव्यूहः स विज्ञेयः कृतान्तो युद्धकर्मणि समस्थाः सुः समरथा गजवाजिपदातयः रथेभाश्वाः पत्तयश्च स-
मसमगुणाः क्रमात् अग्रे योधः कल्पयेदेवमग्निव्यूहः स उच्यते सर्वोत्तमोऽयं व्यूहानामरिविनाशकारकः चतुरेकां-
कितां सेनां वैद्याकारां प्रकल्पयेत् रथैर्गजैर्यैः हयैर्वृन्दैः क्रमेणैव चतुर्दिक्षु ततश्चतुर्थं द्वारे प्रथेरथो द्वौ द्वौ ततया गजौ
अश्वावपि पदातींश्च चतुर्दिक्षु प्रकल्पयेत् तन्मध्ये नृपतिस्तिष्ठेद्याकारेन ते सुधीः विज्ञेयः खलकव्यूहः खलक-
काराः संस्थितः सोपानैः भेदनकः कार्यस्तन्नाख्याहिगुणः पुनः सार्पीश्चिवक्रमस्तत्रांश्च वृहेश्च बलवत्तराः दृढाः

85

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कारो भवेद्देहे सोमकरो मकराकृतिः स्वर्भानुः स्वर्भानुः स्वनाममरशाः पञ्चरविश्चक्रे मंडले ज्ञः स्वर्भानुमकारणेः
कुजः सुपर्णो देवबुधः शपनेगुरुर्हदशो रगेशनि । शुक्रः पञ्चवशाकृदेव्यूदेषु स्वामिनो मताः सानुकूलग्रहस्यूहः कर्तव्यो
व्यूहकर्माणि विशांप्रतिकूलस्य कार्यो व्यूहो ग्रहस्य वा बलोनेरणे रिपुणा परस्परविभेदिनेति इति ग्रहलक्षणं
अथ राज्ञां निवासस्थानलक्षणं राष्ट्रे वैराज्ञः सहायानामधिकारिरूपाणां च लक्षणमभिहितानिदानीं सहा
यसंयुक्तो राजा किंलक्षणे देशे आवसेदिति तन्निवासस्थानलक्षणमुच्यते विष्णुधर्मोत्तरे राजा सहायसंयुक्तः प्रभूत
यवसेंधने रम्यमानतसामंते पशव्ये देशमावसेत् यवसेन्धनं सामंताः भौमिकाः पशव्यं पशुहितं करं वैश्यशूद्र
जनप्रायमनाहार्यं तथा परैः किंचिद्ब्राह्मणसंयुक्तं बहुकर्मकरं तथा अदेवमातृकं कर्मसस्वरकजनान्वितं करैर
पीडितं चापि बहुपुष्पफलं तथा अदेवमातृकं नदीमातृकं वृष्ट्यपेक्षं न भवति नदीवा कुल्यात् करः करभागः अ
गम्यं परचक्राणां तथा विषयं पुनः समदुःखसुखं राज्ञः सततं च प्रिये स्थितं तथा विषयं शत्रुकृतदुःखोपो
गं सरीसृपविहीनं च व्यालतस्करवर्जितं एवंविधं यथाकामं राजा विषयमावसेदिति विषयो देशः सरीसृ
पाः व्याघ्रादयः व्यालाः सर्पाः याज्ञवल्क्योऽप्याह रम्यं पशव्यमाजीव्यं जांगलं देशमावसेदिति आजीव्यमनुजी
व्यं कंदमूलफलादिना जांगलं यद्यपि अल्पोदकतरुपर्वतो देशो जांगलस्तथाप्यत्र समसजलतरुपर्वतो देशो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तद॰
८६
86

जाङ्गलप्रायेन विवर्द्धनीयः मनुरपि जाङ्गलं सस्यसंपन्नमार्यप्रायमनाविलं रम्यमानतसामन्तं स्वाजीव्यं देशमा
वसेदिति इति सामान्यनिवासस्थानलक्षणं अथ दुर्गलक्षणं याज्ञवल्क्यः तत्र दुर्गाणि कुर्वीत जनकोशात्मगु
प्तये इति तत्र स्वीकरणोपलक्षिते देशे मनुः एकः शतं योधयति प्राकारस्थो धनुर्द्धरः शतं दशसहस्राणि
तस्मात् दुर्गं विधीयते तस्मादायुधसंपन्नं धनधान्येन वाहनैः ब्राह्मणैः शिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेन चेति वि
ष्णुधर्मोत्तरे दुर्गं च परिखोपेतं वप्राट्टालकसंयुतं शतघ्नीयन्त्रमुख्यैश्च शतशश्च समावृतं वप्रः प्राकारः दुर्गे
च पौराः कर्तव्या नानापण्यप्रसारिताः सहस्रयानितोरणमनेत्वरद्वाविधीयतामिति दुर्गद्वाराणि गुप्तानि कार्य
ण्यपि विभज्य यन्त्रायुधाट्टालचयोपपन्नं समग्रधान्यौषधसंप्रयुक्तं वणिग्जनैः शोभनमावसेत दुर्गं सुगुप्तं नृ
पतिः सदैवेति अत्रापेक्षितसर्वपदार्थानां संग्रहः कर्तव्यः इति दुर्गलक्षणं अथ दुर्गभेदाः तत्र मनुः धन्वदुर्गं म
हीदुर्गमब्दुर्गं वार्क्षमेव च नृदुर्गं गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वसेत्पुरमिति तत्र धन्वदुर्गं यथा धन्वति मरुभूमो दुर्गं कु
र्वीत निर्जलत्वादिदोषैः दुर्गमत्वादित्यर्थः तथा चोशनसे धनुर्वेदे सलिलवर्जितमतिशर्कराचितेस्थल
निराश्रये विषमे विषकीरैश्चिते विषमप्रदेशोऽडः सर्वं वलवृद्धिः पालकैरूपेतं रोगविनिर्मुक्तं धन्वदुर्गमाश्रय
सेमवेदिति अथवा निराश्रयानि हृदकाभूमिधन्वा तेन युक्तं दुर्गं धन्वदुर्गं निवासस्थानान्तरितो निर्जलेहृता

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दिरहितं च भूमिप्रदेशं कुर्यादित्यर्थः अत एव महाभारतेप्युक्तं यदा तु पीडितो राजा भवेद्राज्ञा बलीयसा तदाभि
संश्रयेद्दुर्गं बुद्धिमान्पृथिवीपतिः स्वपक्षस्याप्यनेन नरमेवाभिहितं सस्याभिहारं कुर्याच्च स्वयमेव नराधिपः
असंभवे प्रवेशस्य दाहयेदग्निना भृशं क्षेत्रस्थेषु च सस्येषु शत्रोरुपचयो भवेत् विनाशयेद्वा तत्सर्वं बलेनाथ
स्वकेन वै नदीषु दुर्गेषु महासंक्रमानवसादयेत् जलं निस्रावयेत्सर्वमनिस्राव्यं च दूषयेत् दूषयेद्विषादिने
त्यर्थः दुर्गाणां चाभितो राजा मूलच्छेदं प्रकारयेत् सर्वेषां क्षुद्रवृक्षाणां चैत्यवृक्षं विवर्जयेत् प्रवृद्धानां च वृ
क्षाणां शाखाः प्रच्छेदयेत्तथेति केचित्तु पञ्चानां धनुषां लक्षणानां विहितान्पुरुषाणां धन्विनां मेखलरूपं दुर्ग
मित्याहुस्तन्न युक्तं लक्षणादोषप्रसंगात् एतादृशदुर्गस्याकृतत्वाद्दुस्तरत्वाच्च वक्ष्यमाणेन नरदुर्गेण
पौनरुक्त्यापत्तेश्च नरदुर्गं नाम बलदुर्गं तच्च गजरथाश्वपदातिरूपैः संपद्यते न च बलदुर्गसंपादिते धनुर्दु
र्गं नान्तरीयकतया सिद्धमेवेति महीदुर्गं यथा मृदिष्टिकापाषाणादिनिर्मितं दुर्गं महीदुर्गं मरुस्थले वा
ज्जवच प्रदेशप्रधानदुर्गमिति केचित् औशनसे धनुर्वेदे सर्वोपकरणोपेतं गुप्तं चोपायसंयुतं अत्युत्सेधाति
निम्नं च महीदुर्गं तदिष्यते इति सर्वोपकरणोपेतं सर्वोपेक्षितपदार्थसमन्विते गुप्तमविज्ञातमार्गं परप्र
वेशं परमेयमिति वा उपायसंयुतं उपायाः परैरवरुद्धे दुर्गे तन्निराकरणसमर्थाः शतघ्नीयंत्रप्रमुखाः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

युक्तं अथवा प्रतिपक्षैः शत्रुभिरुपरुद्धस्य निर्गमनप्रकारा उपायाः अस्मुत्सेधः असत्वता जलदुर्गं यथा नद्यादिप्रवा
हेणाभयतः समेतेनागम्यप्रदेशो जलदुर्गं श्रीशानेसधनुर्वेदे संश्लिष्टैनैकमार्गेणासविषैस्तन्नलेचरैः सलिलैर्विष
मैः स्पर्शनखादनवधप्रियैरिति एतैर्युक्तं विषममित्यर्थः वनदुर्गं यथा घनतरगहनवेष्टितो भूभागविशेषो·
ल.स. वनदुर्गं श्रीशानेसधनुर्वेदे अज्ञानमार्गं गहनं वृक्षगुल्मलतादिभिः सकंटकैर्वनं दुर्गभूतं यस्मात्सविस्तृतमि
८१ ति बलदुर्गं यथा बलस्य स्वसैन्यस्य स्थितिविशेषेण संपादनं व्यूहादिवत् बलदुर्गं श्रीशानेसधनुर्वेदे मौ^
87 लैर्वंशपरंपरसंनद्धैः शिक्षायुक्तैः सनायकैः भीमैर्वैवाप्रमत्तैश्च बलदुर्गं प्रशस्यत इति बलदुर्गं न दिष्यत इति पाठांत
रं मौलपरंपरागतकुलीननृपतियुक्तं एतस्य श्रेष्ठं सार्प्युक्तं महाभारते दुर्गेषु च महाराज षट्स्वयं शास्त्रनि
श्चिताः सर्वदुर्गेषु प्रशस्तं तेन रदुर्गेत्तदुस्तरमिति अन्योन्यसंश्लिष्टहस्तमानुषमंडलं नदुर्गमिति केचित् तन्नहृ
दयंगमं एतादृशदुर्गस्य दुस्तरत्वाभावात् गिरिदुर्गं यथा गिरिशिरो भूभागः परिमंडलगिरिवलयवेष्टि
तो देशविशेषो वा गिरिदुर्गं श्रीशानेसधनुर्वेदे दुरारोहं परैर्दुर्वारणात्मगोचरात् सर्वसंपत्समायुक्तं दु
र्गं स्यात्पार्वतं श्रियेऽदिति एतन्याशास्त्रयुक्तं विस्तृयमीनते सर्वेषामेव दुर्गाणां गिरिदुर्गं प्रशस्यत इति एतेषु प
— दुर्गेषु नृपतिर्यत्नतं दुर्गमाश्रयेत् तदुक्तं विस्तरतो धन्वनं महीं वा गिरिं वा गिरिदुर्गाणामन्यतमं दुर्गं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

माश्रयेदिति विष्णुधर्मोत्तरेऽपि नवदुर्गं नृपः कुर्यात्स्वगणामेकतमं बुधः इति दुर्गभेदाः अथ दुर्गपरिमाणं सि
द्धान्तशेखरे चत्वारिंशत्समायुक्तं दशानां षट्शतं मतं दुर्गस्य विस्तरे दैर्घ्ये विदध्यात्प्रथमस्य च शतेस्त्रसमभिः कु
र्याच्चतुर्भिः सहमध्यमं अष्टषष्टियुतैः श्रेष्ठं दशानामष्टभिः शतैः विस्तारं चायतं कुर्यात् दुर्गलक्षणमीरितमि
ति इति दुर्गपरिमाणं अथ दुर्गाध्यक्षलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे अनाहार्यश्च शूरश्च तथा प्राज्ञः कुलोद्गतः
दुर्गाध्यक्षः स्मृतो राम प्रयुक्तः सर्वकर्मस्विति इति दुर्गाध्यक्षणं अथ ग्रामलक्षणं सिद्धान्तशेखरे स्वर्गार्थम
पवर्गार्थं यशोर्थं च धनार्थकं रत्नार्थं च जयार्थं च वसेद्ग्रामस्य लक्षणं खेटग्रामाग्रहाराश्च कर्वटं दुर्गं च पत्तनं पु
रं च राजधानीति कीर्तिता अष्टधा बुधैः शूद्रैरधिष्ठितं खेटं ग्रामः शूद्रैर्द्विजोत्तमैः विप्रैरेवाग्रहारः स्यात् कर्वटो मि
श्रितवासनः दुर्गं देशादिरत्नार्थं जलादिवनदुर्गमं चतुरङ्गबलोपेतमगम्यं सर्वशत्रुभिः द्वीपान्तरगतद्रव्यक्रय
विक्रयकान्वितं पत्तनं चेति विख्यातं पुरलक्षणमुच्यते अनेकजातिसंयुक्तं नानावायपुतं नगरं नृपमन्दिरसंयुक्ता
चतुरङ्गबलान्विता भर्तुर्दैवालयैर्युक्ता राजधानीति कथ्यते विन्यासलक्षणं तेषां वक्ष्ये शैवागमादितः देशेऽर
ण्यचतुष्कोणायष्टिश्चाप्यश्वतत्समः खेटग्रामादिकानां च प्रमाणेनेन कारयेत् आयव्ययादिकं प्रोक्तं देशे नैव स
माचरेत् वसेद्विस्तारमायाममेनीचं मध्यममुत्तमं खेटादीनां च सर्वेषां अन्येके त्रिविधे यथा नीचं ग्राममेवं च:

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वसामध्यमं द्विगुणोत्तमं तथा उत्तमं त्रिगुणोर्द्दंडैः कर्पाद्दीर्घं च विस्तृते शतद्वयेन दंडानां षड्पंचाशयुतेन च कुर्वीत खे
टकं हीनं मध्यमं वोच्यते भुना शतत्रयेण विंशत्या दंडानां सहितेन च त्रिभिः शतैः सहाशीत्या चतुर्भिः खेटमुत्तमं
ग्रामस्य चाग्रहारस्य विप्रादीनां वसत्या न्यूनाधिक्यप्रभेदेन विस्तारायाम निर्णयः कुब्जस्थापितया प्रोक्तो दुर्गस्या
लक्ष- थ निगद्यते दुर्गस्य विस्तारायामस्स्याद्दुर्गलक्षणे द्रष्टव्यः पत्तनस्याथ वसामि लक्षणं तत्र चोदितं चत्वारिंशत्स
२२ मायुक्तैरष्टयुक्तैस्त्वनु शतैः दंडानां पत्तनं नीचं कर्पाद्दीर्घं च विस्तृते सद्वादशैः शतैः कर्पात्सं चभिर्मध्यपत्तनं ष
88 ट्सप्तति समायुक्तैरुत्तमं पंचभिः शतैः एवं पत्तनमाख्यातं राजधानीति कथ्यते सार्धद्वयं त्रिशता कर्पाद्दंडाना-
मष्टभिः शतैः विस्तृतामायतां हीनां राजधानीं विचक्षणः षडशीति युतैः कर्पान्मध्यमं वाष्टभिः शतैः दंडा-
नामायतां तद्धीं राजधानीं च विस्तृतां दंडानामुत्तमं कर्पात् षष्ट्या च नवभिः शतैः एवं दैर्घ्यं च विस्तारो ग्रामा
दीनां च कीर्तितः ग्रामाग्रहारयोस्त्वाथ विप्रसंख्या निगद्यते एकादिदशविंशान्तग्रामं स्वल्पाधमं विदुः द्वादश
ब्राह्मणोपेतैर्विप्रैः षोडशभिर्युतैः चतुर्विंशतिविप्राणां स्वल्पग्राममप्रकल्पयेत् द्वात्रिंशद्ब्राह्मणोपेतं ग्राममेव
तान तथा चतुः षष्ट्याथ विप्रैश्च साशीतिसचतुष्टयं स्वल्पग्रामशतिप्रोक्तं कथ्यते मध्यमः क्रमात् शतमष्टोत्तरं
विप्रैर्द्विगुणांस्त्रिगुणोत्तमं तथा ब्राह्मणैरन्वितं ग्राममं मध्यमं परिचक्षते शतैस्त्रपंचभिर्युक्तमुत्तमं सप्तभिः शतैः स

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हस्तद्वात्रिंशतोणपेनं प्रवर्त्तते सहस्रद्वयविस्तारमग्रहारं तथाधमं सहस्रैस्त्रिभिर्युक्तं चतुर्भिरधमं विदुः पंच
षट्सप्तसहस्रविस्तीर्णमध्यमं विदुः सहस्रैरष्टभिर्युक्तं द्वात्रिंशोग्रहारकं उत्तमं दशसाहस्रं विदुः सूर्यसहस्रके
विस्तरं ख्यातसमाख्यातानात्र कुर्यात् यथारुचि शासनेनान्वितं सर्वं विस्तारेणाग्रामनामच सकरं वाकरं वापि सीमां
तेलेखयेद्बुधः एवं निश्चित्य तं ग्रामं ब्राह्मणेभ्यो निवेदयेदिति महाभारते इष्टप्राकारपरिखं हृत्स्यस्य रथसंकु
लं ऊर्जस्विनरनागं च चत्वरापणशोभितं प्रसिद्धव्यवहारं च प्रशान्तमकुतोभयं शूराद्यं प्राज्ञसंपूर्णं तसंरक्ष
यमाविशेदिति विष्णुधर्मोत्तरे गोपुरं सकपाटं च तत्रस्यात्तु मनोहरं सपताकागजारूढो येन राजा विशेत्पुरं च
तत्रस्यात्तु यानत्र कार्या त्वापणवीथयः एकस्मिंस्तत्र वीथ्यग्रे देववेश्म विधीयते वीथ्यग्रे च द्वितीये वै राजवेश्म
९९ विधीयते धर्माधिकरणं कार्यं वीथ्यग्रे च तृतीयके चतुर्थे चैव वीथ्यग्रे गोपुरं च विधीयते आयतं चतुरस्रं वा वृत्तं
वा कारयेत्पुरं स्वस्तिहीनं त्रिकोणं च यवमध्यं तथैव च अर्धचन्द्रप्रकारं च वज्राकारं च वर्जयेत् स्वस्तिहीनं कोणारहि
तं अर्धचन्द्रप्रशंसेत नदीतीरेषु तद्वशात् अन्यत्र तन्न कर्तव्यं प्रयत्नेन विजानतेति इति ग्रामलक्षणं अथ राजगृ
हविन्यासः विष्णुधर्मोत्तरे वीथ्यग्रे च द्वितीये वै राजवेश्म विधीयते स्यात्तु संधायाह राज्ञः कोशगृहं कार्यं द
क्षिणे राजवेश्मनः तस्यापि दक्षिणे भागे गजस्थानं विधीयते गजानां प्राङ्मुखी शाला कर्तव्या वाप्युदङ्मुखी वा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्नेये च तथा भागे आयुधागारमिष्यते महानसं च धर्मज्ञ कर्मशालास्तथापराः गृहं पुरोधसः कार्यं वामतो राजवे-
श्मनः मंत्रिदैवचिकित्साकर्तॄणां च तत्रैव च तथा भागे गोष्ठागारं विधीयते गजानां स्थानं द्विपवैद्यानां तथैव
च गोस्थानेन तथैव तुरगाणां स्थानमित्यर्थः उत्तराभिमुखी श्रेणी तुरगाणां विधीयते प्राङ्मुखी वापि धर्मज्ञ परिशि-
ष्टा विगर्हिता परिशेषाद्दक्षिणाभिमुखी पश्चिमाभिमुखी चेत्यर्थः ततस्तु यथास्थानं राजा विज्ञाय सारवित् द-
ल॰ द्यादावसथस्थानं सर्वेषामनुपूर्वशः इति आवसथस्थानं वासाय गृहार्थं स्थलमित्यर्थः इति राजगृहविन्यासः गृहा-
जगृहादिलक्षणमभिधायाधुना तदुपयोगिनां गवादीनामन्येषामपि केषांचिल्लक्षणमुच्यते तत्र गोलक्षण-
८९ मुक्तं वराहमिहिराचार्येण पराशरः प्राह बृहद्रथाय गोलक्षणं यत्क्रियते ततोऽयं मया समासः शुभलक्षणास्ताः
89 सर्वास्तथाप्यागमतोऽभिधास्ये सास्राविलरूक्षाक्ष्यो मूषकनयनाश्च न शुभदा गावः प्रचलच्चिपिटविषाणाः करटाः
खरसदृशवर्णाः सास्राण्यश्रुयुक्तानि आविलानि कलुषाणि रूक्षाणि चाक्षीणि यासां ताः प्रचलन्ति कंपमाना-
नि चिपिटानि शृंगाणि यासां ताः करटाः कृष्णरक्तसवर्णाः दशसप्तचतुर्दन्तः प्रलंबमुण्डाननाविनतपृष्ठाः
ह्रस्वस्थूलग्रीवा यवमध्या दारितखुराश्च श्यावातिदीर्घजिह्वा गुल्फैरतितनुभिरतिबृहद्भिर्वा अतिककुदा कृशदेहा
नेष्टा हीनाधिकाङ्ग्यश्चेति इति गोलक्षणं अथ वृषलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे मार्कण्डेय उवाच तस्याः स्वनं परीक्षे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नरवृषभलक्षणान्वितं उन्नतस्कंधककुदं मृदुलांगूलकं कंबलः सास्ना महाकटितटस्कंधवैडूर्यमणिलोचनं
प्रवालगर्भशृंगाग्रं सुदीर्घपृथुवालधिं नवाष्टदशसंख्यैर्वा तीक्ष्णाग्रैर्दशनैः शुभैः मल्लिका
क्षमोक्तयोर्हृदयेपि पनथान्मदः वर्णेन ताम्रकपिलो ब्राह्मणस्य प्रशस्यते श्वेतोरक्तश्च कृष्णश्च गौरपाटल
एवच भद्दनासे कृष्णश्च शबलः पंचवर्णकः कृष्णकर्णो महास्कंधः स्निग्धरोमाचयो भवेत् रक्तश्च कपि
लोधस्य रक्तशृंगशफो भवेत् श्वेतोदरो कृष्णपृष्ठो ब्राह्मणस्य प्रशस्यते अनुरक्तेन वर्णेन क्षत्रियस्य प्रशस्यते
कांचनाभेन वैश्यस्य कृष्णेनाप्यंतजन्मनः यस्य प्रागायते शृंगे मुखाभिमुखेसदा सर्वेषामेव वर्णानां सततस
र्वार्थसाधकः मार्जारपादः कपिलो धन्यः कपिलपिंगलः श्वेतो मार्जारपादस्तु धन्यो मणिनिभेक्षणः करटः
पिंगलश्चैव श्वेतपादस्तथैव च सर्वपादसितो यश्च हिपादश्वेत एव च कपिंजलनिभो धन्यस्तथा तित्तिरसंनिभः
आकर्णमूलात् श्वेतं मुखं यस्य प्रकाशते नंदीमुख इति ख्यातो रक्तवर्णो विशेषतः श्वेतं च जठरं यस्य भवेत्पृष्ठं च गोप
तेः वृषभः समुद्राख्यः सततं कुलवर्धनः मल्लिकापुष्पचित्रश्च धन्यो भवति पुंगव कमलैर्मंडलैश्चापि चित्रो
भवति भोगदः अतसीपुष्पवर्णश्च तथा धन्यतरः स्मृतः एते धन्यास्तथा अधन्यान्कीर्तयिष्यामि ते नृपापेते पे
न्याः कथिता इति शेषः अधन्यान्कीर्तयिष्यामि तेनैतेन संक्षेपतः कृशलतालोष्टदशना ह्रस्वशृंगशफाश्च ये अव्यक्त

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष. ९. ९०

वर्णाः कृष्णाश्च श्याम भस्मनिभास्तथैव धांशस्य सवर्णाश्च उक्ता नतनपनास्तथा नैते शुभाः प्रमोक्तव्याः नच यापि कृत्या
गृहे मोक्तव्यानां च यार्याणां भूपोवसामि लक्षणं लक्षिकाकार शृंगाश्च मेधौ च मदं प्रास्तनाः महाप्रमाणाश्च तन
या मतमातनगगामिनः मदोत्कटा मरालाश्चासा महाबलपराक्रमाः शिरः कपोलिललाटं च वालधिश्चरणास्त
था नेत्रे पार्श्वे च हृस्वानि शस्यंते चंद्रमल्लिकः श्वेतान्येतानि शस्यंते कुलस्य तु विशेषतः अमी काकुर्णनिलांशले
प्रशस्तः स्थूलवालधिः पुच्छकाण्डः पनौ नीचः श्वेतश्च विशिष्यते शक्तिध्वजयनाकाभाघेषो वाजि विराजते श्र
नह्वा हृस्वनेत्रपन्याश्च हि सिद्धिजयावहाः प्रदक्षिणानि वर्तेन स्वयं ये विनिवर्तिनः समन्तत शिरोग्रीवा यन्यास्ते कु
लवर्द्धनाः रक्तशृंगाग्रनयनः श्वेतवर्णो भवेद्यदि प्रापैः प्रवालसदृशैर्नीलस्निग्धमतरस्तनः एतेषाम्यी प्रयत्ने
न मोक्तव्याः यदि वा शुभाः धारिताश्चेत् यास्त्वकाथ न धाम्यविर्द्धनाः चरणाश्च मुखं पुच्छं यस्य श्वेतानि गोपतेः ला
क्षारसवर्णाश्चेत् नीलमिति निर्दिशेत् वृषएव समोक्तव्यो न स्यार्थी गृहे भवेत् तदर्थमेषा चरति लोके गा
याव्रतानि पद्धावहृवः पुत्राः येकोपि गां कांब्रजेत् यजेत वाश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत् गौरी वा पुत्र हहे
दितिपार्वंतांतरे एवं वृषलक्षणं संप्रप्रोक्तं रहोध्रुवं कीर्तमयापि राजन् सत्कान्तशोचेत्सरणां महात्मा मोदे विधिं
वाहमतोभिधास्यामि इति वृषलक्षणं अथ छागलक्षणं वराहसंहितायां छागशुभलक्षणमभिधास्यन

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वदशाष्टदंताश्च यस्याः स्यात्पृथ्वे यम निसंमाज्याः समदंताये दक्षिणपार्श्वे मंडलमसितं शुक्लस्य शुभफलं भवति
कृष्णनिभं कुसलोहितवर्णानां श्वेतमसितं शुभदं कृष्णो मृगजातिभेदः कृष्णो नीलाः कोलोकेसरो सदृशनिभ एव न
दतिवैयंकतं नवचनानसनवदवलवतेपः कंठे जाता नाम मणिः स विज्ञेयः एकमणिः शुभफलदो द्विमणिस्तमाद्वि-
मणयो ये मुंडाः सर्वे शुभदाः सर्वसिताः सर्वकृष्णदेहाश्च अर्धसिताः सितार्धधूम्राः कपिलार्धकृष्णाश्च मुंडाः
धूम्राः हरिताः विचरन्ति गृहस्य याथैश्चयथमंचाभोवगाहते योजः सशुभः सितमूर्धा वा मूर्द्धनि वा मृत्तिकाघस्य
एषमूर्द्धनि मृत्तिका तिलकायस्य यस्य मूर्द्धनि मृत्तिका तिलकाकृतिः स एषतकंठशिरा वा तिलपिष्टनिभः
श्वेताम्रदकृशस्तः कृष्णचरणः सितो वा कृष्णो वा श्वेतचरणो यः एषताः विंदवः ताम्रदकृष्णाः यः कृ-
स्ताउः श्वेतो मध्ये कृष्णेन भवति पदेन मध्ये कृष्णेन पदेन पलाशकृतिना युक्तो भवतीति शेषः यो वा चरति
नित्यशाद्वमंदं च सशोभनः छागः कृष्णशिरो हृदपादो यो वा प्राकृपांडुरो परे नीलः सभवति शुभकृच्छागः
स्नोकाख्याप्यत्र गर्गीतिकाः कृष्णशिरो हृत्पादः नीलशिरः केशपादः प्राकृपांडुरः पूर्वभागपांडुरः अपरे
पश्चिमभागे नीलः गर्गीतिकसोकाख्येन्यां कुटकः कुटिकश्चैव जटिलो वामनस्तथा तेच तारः श्रियः पुत्राना
लक्ष्मीकेवसंतिवै कुटकः विचरतीत्यादिना उक्तः कुटिकः सएषतइत्यादिना उक्तः जटिलः यः हसोऽउइन

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेनोक्तः वामनस्तु सम्यक्शिरो हृद्भ्रमेनेनोक्तः अथाप्रशस्ताः खरतुल्यनादाः प्रदीनपुच्छाः कृशनखा विवर्णाः निकृ
न्तकर्णा द्विपमस्तकाश्च भवन्ति ये चासितताल्वजिह्वाः वर्णैः प्रशस्तैर्मणिभिश्च युक्ता मुंडाश्च ये ताम्रविलोचनाश्च
ते पूजिता वेश्मसु मानवानां सौख्यानि कुर्वंति यशः श्रियं चेति इति छागलक्षणं अथ कुक्कुरलक्षणं वराह
संहितायां पादाः पंचनखास्त्रयोग्रचरणाः षड्भिर्नखैर्दक्षिणस्ताम्रोष्ठाग्रनसो मृगेश्वरगतिर्जिघ्रन्भुवं याति च
लक्ष. ५८ लांगूलं ससटं दृगृक्षसदृशी कर्णौ च लंबौ मृदू यस्य स्यात्स करोति पोष्टुरचिरात्पुष्टां श्रियं श्वा गृहे ससटजटिले
हृक्षसदृशीश्चारक्तेनार्थः पुष्टां महती गर्गसंहितायामपि त्रयः पादाः पंचनखाश्चाग्रगो दक्षिणस्था ष
९१ ड्नखास्ताम्रनासोष्ठस्ताम्रोष्ठः सिंहविक्रमः मंही जिघ्रन्समायाति लांगूलं जटिलं तथा सवामेव लंबौ कर्णौ
मृदू चाति पलंबिनौ स्यात्स पमस्य महतीं श्रियं यच्छति पोषितः इति इति कुक्कुरलक्षणं अथ कुक्कुरीलक्षणं वरा
हसंहितायां पादे पादे पंच पंचाग्रपादे वामे यस्याः षट्नखा मल्लिकाक्षी वक्रं पुच्छं पिंगला लंबकर्णी श्रेष्ठा रक्षा
कुक्कुरी पाति पुष्टेति मल्लिकाक्षी कृष्णनेत्रा पुष्टा पोषिता पाति राष्ट्रं राज्ञ इति शेषः इति कुक्कुरीलक्षणं अथ
ग कुक्कुटलक्षणं वृहत्संहितायां कुक्कुटस्त्वृजुतनूरुहांगुलिस्ताम्रवक्त्रनखचूलिकः सितः रौति सुस्वरमुषा
त्यये च यो वृद्धिदः स नृपराष्ट्रवाजिनां चूलाशिखा उषः प्रभाते यवग्रीवो यो वा बदरसदृशो यो पि विहगो बृह

५८

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न्मूर्द्धावर्णैर्भवति वक्त्रभिर्धूम्रछविः सशालः सुंयामेमधुमधुपवर्णाः खंजनप्रकृतशालो योनोन्यः कृशानुखः

खंजनचरणस्नुति पद्मग्रीवः पद्मसदृशग्रीवः पद्मशिलालोकप्रसिद्धः वदरसदृशोलोहितवर्णः वहन्मूर्द्धाविस्ती

र्णशीर्षः खंजनचरणः विकलपादः इति कुक्कुटलक्षणं अथ कुक्कुटीलक्षणं वराहसंहितायां कुक्कुटीचमृ

दुचारुभाषिणीस्निग्धमूर्त्तिरुचिराननेक्षणा साददाति सुचिरंमहीक्षितांश्रीयशोविजयसंपदइति इतिकु

क्कुटीलक्षणं अथकूर्मलक्षणं वराहसंहितायां स्फटिकरजतवर्णोनीलराजीविचित्रंकलशसदृशमूर्ति

श्चारुवंशश्चकूर्मः अरुणसमवपुर्वासर्षपाकारचित्रः सकलनृपमहत्त्वंमंदिरस्थः करोति अंजनभृंगश्याम

तनुर्वाबिंदुविचित्रोऽव्यंगशरीरः सर्पशिरावास्थूलगलोयः सोपिनृपाणांराज्यविवृद्ध्यै भृंगोभ्रमरः अव्यंगश

रीरः परिपूर्णशरीरः वैडूर्यत्विट्स्थूलकंठस्त्रिकोणोगूढच्छिद्रश्चारुवंशश्चशस्तः क्रीडावाप्यांतोयपूर्णेमणौ

वाकूर्मः कार्योमंगलार्थंनरेंद्रैरिति त्रिकोणः शृंगाटकाकृतिः गूढच्छिद्रः अप्रकटरंध्रः मणिकूपः उदकसमीपज

पूर्णप्रदेशः इतिकूर्मलक्षणं अथमार्जनीलक्षणं सिद्धांतशेखरेनारिकेलस्यपत्राणांसारान्सदृशीकृतान्

बहून् चतुस्तालसमायामान्मुष्टिमात्रप्रमाणकान् रज्जुनावेष्टयेन्मूले सोक्ताहर्म्यादिमार्जनीति तालस्त ना

लः स्तनोमध्यमयागोकर्णश्चेत्यनामयेतिप्रसिद्धः इतिमार्जनीलक्षणं अथशूर्पलक्षणं तत्रैव विंशांगुल

लक्ष॰
९२
92

मायानंतावद्विस्तारसंयुतं एकांगुलोछ्रसंयुक्तमग्रन्यग्रुदलोपमं वेणुवेत्रादिसंवर्द्धं सूर्पं तुषविमोक्षकमिति
इति सूर्पलक्षणं अथोलूखललक्षणं तत्रैव उलूखलमथो वक्ष्ये दारुसारसमुद्भवं विंशत्यष्टादशकलामात्रैः
षोडशभिः क्रमात् कलाः षोडशमात्रमंगुले त्रियोनमात्रिके दैर्घ्ये त्रिगुणं परिणाहके कंठमूलपरीणाहमुत्से-
धार्थप्रमाणतः चतुर्भागीकृते दैर्घ्ये गर्तं मध्ये त्रिभागतः द्व्यंगुलं पादपादोनं ओष्ठः षोडशमात्रिके उलूखलमि-
ति ख्यातं वक्ष्ये मुसललक्षणं अथ मुसललक्षणं तत्रैव पंचतालं चतुस्तालं त्रितालं वाधिसंयुतं मुसलस्योन्नतिः
प्रोक्ता श्रेष्ठमध्याधमाः क्रमात् लग्नाष्टांशमात्रैः षोडशमादिपरिणाहके वराः सप्त रंध्राणि नव अग्रे वलयसंयुक्तं मू-
ले चैकांगुलेन तत् कीर्तितं मुसलं शैवमिति इति मुसललक्षणं अथ जलद्रोणीलक्षणं सिद्धान्तशेखरे द्रोण-
द्वयेनामेयं विस्तारामितलेन वा चतुर्भागजलैः पूर्णा हस्तं वा चतुरस्रिका द्रवणीरूपा पार्श्वयोर्वलयोपेता
मोष्ठकेन विवर्जिता जलद्रोणीति विख्याता जलाधारमथोच्यते इति इति जलद्रोणीलक्षणं अथ जलाधारल-
क्षणं तत्रैव उदारस्य वक्त्रविस्तृतिर्मता विंशत्यंगुलमुन्नत्या वदने तु कलांगुलं उत्सेधमेकांगुलं कर्णीद्व्यंगुलं वा
क्वचित्सम यवत्रयेण वक्षाम्यांकुपीडरं वधनमिति इति जलाधारलक्षणं अथ दीपलक्षणं वराहसंहिता-
यां वामावर्तो मलिनकिरणः सस्फुलिंगोल्पमूर्तिः क्षिप्रं नाशं व्रजति विमलस्नेहवर्त्यन्वितोपि दीप॰पा

५३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पंकयपतिफलेशाड्वान्वेपनस्यव्याकीर्णोर्वि विलभमरुयस्यनाशंप्रयाति स्फुलिंगाग्निकणाः विशालभमरुत
शालभवाङ्मुपद्रवरहितः दीपः संहतमूर्त्तिः रापतनं नु निर्वपनो दीप्तिमान्त्रिः शस्त्रोरुविस्पदहिणगतिर्वैडूर्यहेम
द्युतिः लक्ष्मीहितप्रमभिमनकिंस्तचिरंयस्योच्चकैर्दीप्यते शेषलक्षणमग्निलक्षणसमं योज्यं तथा युक्तितः इति
दीपलक्षणं अथ शय्यासनलक्षणं वराहसंहितायां सर्वस्य सर्वकालं यस्मादुपयोगमेति शय्यास्यमिदं
राज्ञां विशेषतो तः शयनासनलक्षणं वक्ष्ये असनस्पंदनचंदनहरिद्रासुरदारुतिंदुकीशालाः काश्मर्यंजनप
मकशाकाश्वा शिंशपा च शुभाः असनः जीवकः विजयसारइति प्रसिद्धः स्पंदनस्तिनिशस्तिनसइति प्रसिद्धः
शालः सर्जकः सालइति प्रसिद्धः काश्मरी श्रीपर्णी कंभारीति प्रसिद्धा अंजनं सौवीरं बदरमिति प्रसिद्धः अ
शनिजलानिलहस्तिप्रपातिकामधुविहंगकृतनिलयाः चैत्यश्मशानपथ्यजोर्ध्वशुष्कवल्लीनिवद्धाश्च अश
निर्वज्रं मधुविहंगकृतनिलयाः मधुमक्षिकाभिः पक्षिभिःकृतनिलयः यस्या नैयक्षुते चैत्यः प्रसिद्धवृक्षः श्म
शानः शैहदेवायतनस्थितस्थ पथ्यजाः मार्गस्थिताः ऊर्ध्वशुष्का ऊर्ध्वभागे शुष्काः वल्लीभिः लताभिः नि
बद्धवेष्टिताः कंटकिनो ये च वस्तुर्महानदीसंगमोद्भवा ये च सुरभवनजाश्च न शुभाये चापरयाम्यदिक्पति
ताः अपरप्रदेशाः प्रतीचीदिक् याम्यदिक् दक्षिणादिक तत्र पतिताः प्रतिषिद्धवृक्षनिर्मितशयनासन

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰त॰ ६३ ९३

सेविनांकुलविनाशः व्याधिभयव्ययकलहाभवंत्यनर्थाश्चानेकविधाः सर्वछिद्रंपरिवादाःप्रभवेन्नमरीत्समारंभे
यथारोहेतस्मिन्कुमारकः पुत्रपशुदंनन् सितकुठममत्तवारणरणाद्यप्लवनशरणिकंभरत्नानि मंगल्यान्य
मानिचहट्टारंभेतेयं कर्मांगुलेयवाष्टकमदरासक्तांतुषैः परिमितैरंगुलशतैर्नृपाणांमहतीशय्याजया
यकृता अयमर्थः निस्तुषोदरासक्तयवाष्टकंमानांगुलं तच्छतांगुलपरिमिताशय्यानृपाणांकार्या नवतिः
सैवषड्भिर्द्वादशहीनात्रिषड्भिर्हीनाच नृपपुत्रमंत्रिबलपतिपुरोधसांस्युर्यथासंख्यं अस्यार्थः नृपपुत्राणांन॰
वत्यंगुलपरिमिता मंत्रिणांषड्नानवतिः चतुरशीत्यंगुलानितत्परिमिता बलपतयः सेनापतयस्तेषांद्वा
दशहीनानवतिः अष्टसप्ततिः तत्संख्यांगुलपरिमिता पुरोधसां त्रिषड्भिर्हीनाअष्टादशहीनानवतिः द्विसप्त
तिः तत्संख्यांगुलपमिता शय्याकार्येतिसर्वत्र संबंधः अर्धमतोष्टांशोनंविष्कंभोविश्वकर्मणाप्रोक्तः आया
मत्र्यंशसमः पादोच्छ्रायः सकुक्ष्यशिराः अस्यार्थः उक्तपरिमाणादष्टांशोनमर्धंविष्कंभोव्यासः परिणाहइत्य
र्थः आयामत्र्यंशसमः उक्तदैर्घ्यस्यतृतीयांशेनसमानः पादोच्छ्रायः पादोन्नेयः कर्तव्यइत्यर्थः पादमस्तकानिच
कुक्ष्यवर्जितानिकर्तव्यानि कुक्ष्यंहेमरत्नाद्यातिरिक्तंताम्रपित्तलकादि अयमत्रविवेकः नृपशय्यायाः दैर्घ्यंशतां
गुलानि व्यासस्त्वष्टचत्वारिंशदंगुलानि पादोच्छ्रायस्त्रिंकिंचिन्न्यूनयवत्रयाधिकत्रयस्त्रिंशदंगुला

६३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नि नृपपुत्रशय्यायास्त्वायामः नवत्यंगुलानि व्यासस्तस्य चत्रयाधिकैकोनचत्वारिंशदंगुलानि पादोच्छ्राय
स्त्रिंशदंगुलानि मंत्रिशय्यायाः आयामः चतुरशीत्यंगुलानि व्यासस्तस्य षडंशन्यूनसप्तत्रिंशदंगुलानि पा
दोच्छ्रायस्त्वष्टाविंशत्यंगुलानि सेनापतिशय्यायास्त्वायामः अष्टसप्तत्यंगुलानि व्यासस्त्वेकषष्ठांशाधिकच
तुस्त्रिंशदंगुलानि उच्छ्रायस्त्वषड्विंशत्यंगुलानि पुरोहितशय्यायास्त्वायामो द्विसप्तत्यंगुलानि व्यासस्तस्य चत्व
त्वष्टयाधिकैकत्रिंशदंगुलानि उच्छ्रायस्त्वचतुर्विंशत्यंगुलानि यः सर्वैः श्रीपर्णीपर्यंको निर्मितः स धनदाता
सन् कृतो रोगहर्ता तिंडुकसारेण वित्तकरः यः केवलशिंशपया विनिर्मितो बहुविधः सबुद्धिकरः चंदनमयो
रिपुघ्नो धर्मयशोदीर्घजीवितकृत् पद्मकपर्यंकः श्रियमायुर्दीर्घमतनुमंद्रते कृतनेयालेनकृतः कल्या
णोघाकरचितस्य केवलचंदनरचितेकाचनगुप्तेविचित्रतनुस्त्व गृह्यसनपर्यंके विद्यदेरपिकुतेननृपतिः श्र
न्येन समायुक्तानतिंडुकी शिंशपा च शुभफलदा नश्रीपर्णीनचदेवदारुहरितानचाप्यसनः शुभदोनशाकस्य
लोपरस्परं संयुतो पृथ्ययोग्यानद्रुमयकयशास्तो सहितो चंद्रविद्रुकदेवो सर्वसंदनरचितो न शुभः शाणगाकि
नतिंचाग्रघनः असनोमदामसहितः हितेदोपाकरो निबहून् आम्नोडवरचंदनहंस्तागोस्पदनाः शुभाः
पादाः स्यंदनाः स्यंदनहस्तकाष्ठनिर्मिताः अथवा स्यंदनामतवन्हीरिहस्तकाष्ठनिर्मितास्त्वर्थः पुलनह्मणोश

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूल

पनासनमिष्टफलं भवति सर्वेषां गजदंतः सर्वेषां शोभनतराणां प्रशस्यते योगे कार्यः लंकारश्च विधिर्गजदंतेन प्रश
स्तेन दंतस्योपरि यदि हिरायनं शोभस्य कल्पयेच्छेदं अधिकमनूपचराणां न्यूनं गिरिचारिणां किंचित् हिरायनं हि
णं अनूपं वरूद्दकप्रदेशः श्रीवृत्सवर्धमानछत्रध्वजचामराननुरूपेषु छेदेषु दृष्टेष्वारोग्यविजयधनवृद्धिसौख्या
नि वर्धमानः शरावः प्रहरणसदृशेषु जयो नंद्यावर्तप्रभवं हृदेशाप्तिः प्रहरणमाप्नुयाद्विः लोष्टेन लग्न-
ख्व॰ ९४ ९५ पूर्वस्य संप्राप्तिः स्त्रीरूपे त्वविनाशो भृंगारे भ्युन्थिते सुतोत्पत्तिः भृंगारः करकः कुंभेन निधिप्राप्तिर्यात्राविघ्न
चदंडेन कृकलासकपिभुजंगेषु सुभिक्षव्याधयो रिपुजत्वं गृध्रोलूककाकश्येनाकारेषु जनमरकः पाश
घवाकबंधे च नृपमृत्युर्जनविपत् स्नुते रक्ते स्रुते निर्गते कृष्णे श्यावे रूक्षे दुर्गंधे चाशुभं भवति शुक्लः समः
सुगंधिः स्निग्धश्च शुभावहो भवेच्छेदः अशुभमशुभकेदारे पेशयने शयिते नयाम्बुमदः श्रीयोगे दारुप्रदक्षि
णाग्रं प्रशस्तमाचार्यैः अपसव्येन दिगग्रे भवति भयं भूतसंजनितं शय्याशब्देन खट्वायाः उभयपार्श्वभागस्थि
तं पट्टिकाद्वयमुच्यते तत्र पट्टिकापादयोगे पूर्वोक्तदैकशाखायाः मूलाग्रभागेन घटितस्य पट्टिकाद्व
यस्य मध्ये या शाखाग्रभागघटिता पट्टिका सा खट्वायाः दक्षिणभागपार्श्वे योजनीया या च शाखामूलभा
गघटिता सा वामभागे योजनीया उक्तवैपरीत्येन पट्टिकायोजने तच्छय्यायां निद्राकर्तुर्भूतग्रहादिजनितं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भयं भवतीत्याशयः एकेनार्ककुशिरसा भवति द्विपादेन पादवैकल्ये शाखाभ्यां नन्दीर्यते नेत्रविचित्रवर्त्मभिः क्लेशवपवे
पाः एकेन पादेन पूर्वीकुशिरसा अधोमुखेन मूलाग्रविपर्ययस्थितेन स्वामिनः पादवैकल्यं भवति एतदुक्तं भ
वति छिन्नायाः पूर्वीकवृक्षशाखायाः यो मूलभागस्तेन पादघटनासमये पादमूले कर्तव्यं यश्च शाखाग्रभागस्तेन
पादशिरः कर्तव्यमेवं यथाशाखाया मूलाग्रभागेनैव पादमूलाग्रभागः कर्तव्यस्तेन यदि शाखाग्रभागेन पाद
मूलं क्रियते माच्या पादस्याधोमुखत्वं भवतीति सुषिरेण वा विवर्णेन यं यो पादस्य शीर्षगो व्याधिः पादे कर्मेय
स्यांग्रे यो न तस्मिन्नुदरगोः कुंभाधस्ताज्जंघातन्नष्टतो जंघयोः करोति भयं तस्याच्छायाधारे यः स्तयकृतोद्भवस्त
त्रकृतः खुरदेशयोर्यथिः खुरिणां पीडाकरः स निर्दिष्टः ईषाशीर्षपायोयस्त्रिभागसंस्थो भवेन्न शुभः पाद
स्याच्छिद्रविवर्णे वर्णा विरपुत्रक्षति अथवा नयं यो मत्तिभर्तुः शिरोव्याधिर्भवति यथिरनिकाविम्नभागः कुंभः
छिद्रयो भागः खुरिणामश्वादीनां ईषाव्याख्याना शीर्षणा शिरः काष्ठं नयोः स्वमानात्त्रिभागेन्तीयेयंश्चोग्रं
थिर्न शुभः चकारात्पादभागपट्टिकाकाष्ठतलीयोषोषितिः कर्दमश्च कोलालं वेष्टुकरनयनं चवत्मनामेचकी
लकमन्महंधुकमिति कथितः छिद्रसंत्तेयः चटवकुषिरं मध्ये संकर्दमास्येचनिकृतं छिद्रं निःपावमाष
मात्रे नीले छिद्रं चकोलाचं सूकरनयनं विषमं विवर्णमध्यार्धपर्वदीर्घं च वामावर्तं भिन्नं पर्वमितं तत्सना।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष. ५५
९५

भाव्ये कीलकसंज्ञे कुसंबंधुकमिति यद्वेदिनिर्मितं दारुसर्वाणां छिद्रं ननयापापं समुद्दिष्टं निःकुटसंज्ञे द्रव्य
लयस्त्र कोलेलक्षणे कुलध्वंसः पादभयं स्रुकेरके रोगभयं वत्सनाभाख्ये कीलकबंधुकसंज्ञे कीटैर्विद्धं च
नस्तु भद्रं छिद्रं सर्वदोषप्रदं सर्वत्र न शोभने दारु एकद्रुमेण यस्य हृदयनिर्मितं च यन्मनरं त्रिशिरा
त्मजं हृदिकं रचतुर्भिरेवायशश्चाप्यं पंचवनस्पतिरचितेपं च नं पातितं त्रयः शोने वटसमाहृतरूणां का
ष्ठैर्विंवं दत्ते कुलविनाश इति इति शय्यासनलक्षणं अथ भद्रपीठलक्षणं सिद्धान्तशेखरे कलांगुलोन्नतं
कुर्यात्तत्तीरं हस्तविनिर्मितं द्वात्रिंशदंगुलास्तीर्णदैर्घ्यं त्रिगुणं मतं कमलं कं च तत्तु पादं भद्रपीठकविष्टं
त्रितयं मध्यमं श्रेष्ठं चतुरंगुलहृदितं इति इति भद्रपीठलक्षणं भद्रासनं च छत्रं च वालव्यजनमेव च लक्ष
णानि कानि कार्याणि नूतनानि नृपस्य वितिवचनेन नूतनराज्ञो भद्रासनादीनि लक्षणोपेतानि नूतनानि कर्तव्या
नीत्युक्तं न तु किं लक्षणोपेतानि तानि कर्तव्यानीति तल्लक्षणान्युच्यन्ते तत्र भद्रासनलक्षणमुक्तं विष्णुधर्मो
त्तरे पुष्कर उवाच भद्रासनं नरेंद्रस्य क्षीरवृक्षेण कारयेत् उच्छ्रायः पञ्चहस्तो यातस्य अर्धकरसंमितः चतुरस्रं च क
र्णिकं त्र्यर्धकरः साधिकरस्तेन परिमितः हस्तत्रयं न त्याकिंतु विस्तारेण च कारयेत् आयामस्तस्य कर्तव्यो विस्ता
रेणार्धसंमितः चतुरस्रं च कर्तव्यं राज्ञो भद्रासनेन तथा अष्टास्रं च तथा वृत्तं न च दीर्घमश्रम सर्वगुणरूप्यनाभे

५५

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ष्टचित्रं कार्यं विशेषवत्‌ ॥ रत्नैः प्रशस्तैर्न तथा न रत्नप्रतिरूपकैः ॥ चत्वारः प्रहृष्टास्तत्र विन्यस्ता भद्रनंदन हि॥
गुणाश्च तथा सिंहासनं भवेत् ॥ द्विगुणास्तथा भद्रासनेन तत्र भवेत्पद्मं सकलेन मणीस्स्त्वपराद्धे वैयाघ्रचर्मास्त
णास्तु वोर्द्धं वरासनेन तस्य समासनं नीति ॥ इति भद्रासनलक्षणं ॥ अथ चामरलक्षणं ॥ विस्तपर्मीततो ॥ उक्तं च ॥ च
चमरीवालसंभूताः शशांकांशुसमप्रभाः ॥ संहताः स्निग्धदीर्घाश्च तथा तासां स्थितिबंधनाः ॥ सशङ्खास्ता मरा राज्ञो वि
जयारोग्यवर्धनाः ॥ दंडश्च चामरे कार्यो रूप्यरुक्ममयस्तथा ॥ रुक्मं सुवर्णं प्रवालैर्वैदूर्यमयो मध्ये च कनकान्वि
तः ॥ हीरवृत्तस्य वा कार्यो रूप्यरुक्मनिबंधनः ॥ रत्नैः प्रशस्तैः श्रीत्रो वा कांचनस्य प्रशस्यते ॥ चंदनस्याथ दंतेन।
सप्तशाप्यथवा भवेत् ॥ अर्धहस्तान्न चान्यूनो ह्यप्यर्धान्न तथाधिकः ॥ अप्यर्धात्तथाधिकः अप्यर्धान्तथाह्विको
नसार्वद्धस्तपरिमितो दंडः कार्यः स्मृतः ॥ कर्तव्यं चामरं राज्ञो न वंभागीवं जितं ॥ रंजितमारतो आपीनवर्णं भि
भवेन्न शस्तं संवत्सरामानसे रोहितानां नरेंद्रपत्नी प्रवराजसेनवालस्य शेषस्य जनस्य हस्तमिति वराहसंहि
ल तायां देवैश्च मर्त्यैः किल वोहहेतोः सृष्टा हिमस्माधरकंदरेषु ॥ आपीनवर्णाश्च भवंति तासां कुसाश्च लोम्मल
भवाः सिताश्च सेहोमृडवंवज्ञवालनाचवैशयमस्ता स्थितिबंधनत्वं शौक्ल्यं च तेषां गुणाः सपड्भ्का विहा
स्तल्पमानि निशोभनानि ॥ स्नेहः स्निग्धता वैशद्यं केशानां निर्मलत्वनापरस्परमसंपश्च अल्पास्थितिबंधनत्वं प

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लव·
५८
५६

ग्रास्थिकेषाः स्वल्पाल्लि हीनेन स्यात्स्वल्पकं विद्धा स्वल्पमानि विद्धाः संविदिताः स्वल्पा स्वल्पमाः परस्परस्मिन्नुष्णाः के
षायेषु तानि येषु चामरेषु संविज्ञानास्मिन्नुष्णाः केषाञ्चिद्धीनेनानिनशस्त्रानीस्पृष्टिः अर्धार्धहस्तप्रमितोस्पर्शेहस्तो
त्ववारत्निसमोपकार्यः काष्ठकुम्भाक्तं चन रूप्यप्रमाश्चत्वे विंशति श्च द्विनायराज्ञो पक्षानपञ्चांकुशवेत्रचापविनान
केभध्वजचामराणां मायीननाम्नाम पुरुषस्य वर्णाविकमेतैव द्विनापदेशः वापीनाः श्वेताः ज्ञालनस्य नाम्नाल
त्रियस्य मधुवर्णाः पीतवर्णाः वैश्यस्य कृष्णवर्णाः शूद्रस्येति अत एव राजविजये प्युक्तं पष्टिकुनध्वजछत्रवे
त्रचामरध्वजानां श्वेतरक्ताः पीतकृष्णाः देशवर्णक्रमात्कुम्भा इति मानभूपनकुलत्वयावद्धारोगमृत्युजननाशपर्व
भिः द्व्यादिभिर्द्विकविवर्द्धितैः क्रमात् द्वादशांतविरतैः समैः फलं एतद्देशः द्व्यादिभिः द्विप्रभृतिभिर्द्विकविव
र्द्धितैर्द्वाभ्यांपर्वभ्यां पर्वभ्यां विवर्द्धितैः द्वादशान्तविरतैः द्वादशांतेविरतैः द्वादशान्तविरतैः समैः फले प
तेदेशः द्व्यादिभिः द्विप्रभृतिभिर्द्विकविवर्द्धितैर्द्वाभ्यांपर्वभ्यां विवर्द्धितैः द्वादशांतविरतैः द्वादशांतेविरतैः स समासैः
मासैः समैः पर्वभिः युक्ताः मानत्वयादिफलं क्रमात् प्रयच्छेति तद्यथा द्वाभ्यां पर्वभ्यां युक्तदंडः मानत्वं प्रमात
मरणं कुर्वन्ति चतुर्भिः पर्वभिः भूमिनाशं षड्भिर्धनक्षयं अष्टभिः कुलक्षयं दशभी रोगं द्वादशभिर्मृत्युजन
नाशइति यात्रासिद्धिर्द्विषतां विनाशो लाभः प्रभूतो वसुधागमश्च वृद्धिः पशूनामभिवांछितानां सिद्ध्यैरयुग्मे ।

५८

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ष्टादशपर्वाणां पूर्वोक्तरीत्यैव आयैहिकविवर्द्धिकविनेरसमैः पर्वभिः युक्ताः दंडाः क्रमात् यात्राप्रसिध्यादिफलं
प्रयच्छन्ति तद्यथा त्रिभिः पर्वभिर्यात्रायां प्रसिद्धिर्विजयः पंचभिः शत्रुनाशः सप्तभिरीप्सादीनां वस्तुलाभः न
वभिर्भूम्यागमः एकादशभिः पशुवृद्धिः त्रयोदशभिः अभिवांछितप्राप्तिः इति चामरलक्षणं अथ छत्रलक्ष
णं विष्णुधर्मोत्तरे पुष्कर उवाच हंसपक्षैर्विरचितं मयूरस्य शुकस्य वा पक्षैर्वाथ बलाकायाः छत्रं राज्ञां
प्रशस्यते मिश्रपक्षेण कर्तव्यं हीनाधिपरिमितं तथा चतुरस्रं तु कर्तव्यं ब्राह्मणस्य भूषणम् वृत्तं राज्ञः प्रशस्ते
स्यात् शुक्लवस्त्रविभूषितं सितदुकूलसंछन्नं पताकाभिर्विभूषितं एकस्मिन् दिग्विभागे तु कार्यश्चंद्रांशु
निर्मलाः चतस्रस्तस्य धर्मज्ञ पताकाः हेमभूषिताः दंडश्चामरवत्कार्यो वैणवश्च प्रशस्यते त्रिचतुःपंचषट्स
सप्ताष्टपर्वः प्रशस्यते दशद्वादशभिर्वापि पर्वभिः परिवर्जयेत् छत्रदंडस्य पर्वाणां दंडे सर्वत्र शस्यते धारयेति
चतुर्दंडं वैणवं वृहन्मेधिनः राज्ञां प्रशस्तं षड्हस्तं छत्रदंडं प्रशस्यते अर्धपंचमहस्तं तु महिषीयुवराजयोः सेनाप
तिपुरोधस्त्सांवत्सरपुरोहितैः पंचहस्तस्तु कर्तव्यः छत्रदंडो भूषणम् चतुर्हस्तस्तु कर्तव्यो मण्डपे येन कीर्तिताः
व्यासो दंडार्धमानेन सदा छत्रस्य शस्यते छत्रं विभूषयेद्राज्ञामर्धचंद्रदिवाकरैः वज्रेन्द्रनीलस्फटिकैस्ताम्रैर्वैडूर्यमु
क्ताफलसप्रवालैः विभूषितं रश्मियुक्तं प्रशस्तं सदा नृपाणां महीपतीनामिति गर्गसंहितायां हंसकुक्कुटपक्षैश्च

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष.
९०
९१

मायूरैः सारसैस्तथा निचितं पट्टसंछन्नं मुक्तं मुक्ताफलान्वितं पट्टं दुकूलं छत्रं स्फाटिकमूलं च नवदंडं नवपट्ट
रे कारयेद्धेमसंछन्नं नवपर्वं नगान्वितं नरानपत्रं नृपतेः कल्याणविजयावहमिति नवपर्वान्वितं नगान्वितं च
नगान्वितं सप्तपर्वान्वितं इति छत्रलक्षणं अथ पट्टलक्षणं वराहसंहितायां विस्तरतो निर्दिष्टं पट्टानां लक्ष
णं यदाचार्यैः तत्संक्षेपात्क्रियते मया समकलार्थसंपन्नं पट्टः शुभदो राज्ञामष्टाष्टावंगुलानि विस्तीर्णः समन
रेंद्रमहिष्याः पट्टयुवराजस्य निर्दिष्टः चतुरंगुलविस्तारः पट्टः सेनापतेर्भवति मध्ये पञ्चप्रसादपट्टः पंचैते की
र्त्तिताः पट्टाः सर्वे द्विगुणायामा मध्यादर्द्धेन पार्श्वविस्तीर्णाः सर्वे च शुद्धकांचनविनिर्मिताः श्रेयसो वृद्ध्यै पट्टः शु
नेपीततनं यनिकषे च रक्तेव कैसुतनममतिरक्तेनरं विभाति छेदे च विक्रणं वपुर्विशदं च भंगे पन्नाडितेन मतिन
नानकं प्रशस्तं पंचशिखो भूमिपतेस्त्रिशिखो युवराजपार्थिवमहिष्योः एकशिखः सैन्यपतेः प्रसादपट्टो
विनाशिखया क्रियमाणं यदि पत्रं सुखेन विस्तारमेति वृद्धिर्जयो भूमिपतेस्तथा प्रजानां च सुखसंपत् जीवि
तराज्यविनाशं करोति मध्ये व्रणः समुत्पन्नः मध्यस्फुटितनृपस्यात्मौ विघ्नकरः पार्श्वयोः स्फुटितः अशुभनिमि
त्तैः शास्त्रज्ञैः शांतिमादिशेद्राज्ञो यस्तनिमित्तः पट्टो नृपराष्ट्रविवृद्धये भवतीति इति पट्टलक्षणं अथ रत्न
लक्षणं रत्नान्येतानि यान्यपि सर्वाण्येव महीभुजा सुवर्णांमृतविहाति जयारोग्यसमृद्धये इति विस्वधर्मो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नरश्चवचनेन रत्नानिधारयेत्कोशेभद्राणिगुणवंतिच संभूतिंचतथाजातिंगुणांस्तेषांपरीक्षांच परीक्षापरि
शुद्धानांरत्नानांपृथिवीभुजा धारणंसंग्रहोवापिकार्यः श्रियमभीप्सता रत्नेनशुभेनशुभंभवति नृपाणा
मनिष्टमशुभेन यस्मादतः परीक्ष्यैवरत्नाश्रितंतेनहैरितिसंग्रहहृद्गुरुणावराहसंहितावचनेस्माराताप
रीक्ष्यरत्नधारणंकर्त्तव्यमित्युक्तंतत्रचकिलरत्नानिरत्नानिधार्याणिकिंलक्षणानितधार्याणिकथंचतेषां
परीक्षाकर्त्तव्येत्यतोरत्नपरीक्षाप्रस्तूयते विष्णुधर्मोत्तरे पुष्करउवाच वज्रंमरकतंचैवपद्मरागंचमौक्तिकं इं
द्रनीलंमहानीलंवैडूर्यमथसस्यकं चंद्रकांतंसूर्यकांतंस्फटिकंपुलकंतथा कर्केतनंपुष्परागंतथाज्योतीर
सं द्विज स्फटिकंराजावर्त्तंचतथाराजमयंशुभं सौगंधिकंतथागंजंशंखंब्रह्ममयंतथा गोमेदंरुधिराख्यंचतथाभ
ल्लातकंद्विज धूलीमरकतंचैवतुत्थकंशीसमेवच पीलुंप्रवालकंचैवगिरिवज्रंचभार्गव भुजंगमणिंचैवतथा
वज्रमणिंशुभं टिट्टिभंचतथापिंडंभ्रामरंचतथोत्पलं रत्नान्येतानिधार्याणिसर्वाण्येवमहीभुजा सुवर्णप्र
तिबद्धानिजयारोग्यसमृद्धये तेषांशुक्लंनवरागश्चसत्कान्तंरश्मिमालिना अंतःप्रभत्वंवैमल्यसत्संस्थानत्वमेवच
गुणावंतोविनिर्दिष्टाधार्यास्तेगुणसंयुताः खंडाःसशर्करायेचनिःप्रभामलिनास्तथा नतेधार्यानरेंद्राणांजय
श्रीजीवितेषिणां समस्तरत्नवर्गेपिवज्रधारणमिष्यते श्रेष्ठमस्तारनिपद्मज्ञमभेयंविमलंचयत् तथाचशुद्धंच

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दृष्कोणं लघु भार्गवनंदन प्रभा च शक्रचापाभा यस्यार्कोभिमुखी भवेत् तं वज्रं धारयन् राजा सर्वान् जयति
शात्रवान् शुकपत्रनिभः स्निग्धः कांतिमान् विमलस्तथा स्वर्णचूर्णसंकाशैः सूक्ष्मैर्बिंदुभिरन्वितः शा
ल.त. स्तो मरकतो राम गंभीरश्चोज्ज्वलस्तथा धार्यश्च पृथिवीशानां सर्वोपद्रवनाशनः कुरुविंदाद्भवेज्जन्म तथा
९८ सौगंधिकात् द्विज स्फटिकात्पद्मरागाणां श्रेष्ठास्ते नरोत्तम रक्तरंगा भवंतीह कुरुविंदभवाश्च ये क
१४ षायरंगा निर्दिष्टा ये च सौगंधिकोद्भवाः स्वच्छाश्च रागवंतश्च विज्ञेयाः स्फटिकोद्भवाः मुक्ताफलाः शुक्ति
भवा बहवो मत्स्यजास्तथा उत्कृष्टा न तथा तेभ्यो येन घोषोद्भवा द्विज तेभ्यः प्रशस्ता विज्ञेया नागकुंभस
मुद्भवाः निःप्रभास्ते समुद्दिष्टाः श्रेष्ठाः क्रोडसमुद्भवाः तेभ्यो वेणुदलाः श्रेष्ठास्तेभ्यो भुजगसंभवाः ते
भ्योपि दुर्विदः प्राप्यं मौक्तिकं मेघसंभवं धारणात्तस्य नृपतेः सर्वसिद्धिः प्रकीर्तिता मौक्तिकानां तु स
र्वेषां हृतं वेणुजमुच्यते सच्छिन्नं च सुमुक्ताकं तमहादांतवच्च भस्महनम इन्द्रनीलस्तु यः क्षीरे राजते भाजने स्थितं
रंजयेत्स्वप्रभावेन तममूल्यं विनिर्दिशेत् नीलरक्तं तु वैदूर्यं सर्वतः श्रेष्ठमुच्यते सर्वेषामेव रत्नानां धार्यं
कर्केतनं स्मृतं पुष्परागं तथा राम येचान्ये कीर्तिता मया प्रशस्तरत्नैर्भूषानां मुकुटांगदानि च हाराणि रा
मकार्याणि केयूराभरणानि च अप्रशस्तानि रत्नानि वर्जनीयानि हरतः सर्वरत्नोत्तमे राजा सुवर्णे मलि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नैतया न धारयेद्धर्मज्ञः सम्यक् धारयेत्सदा ॥ श्रुतिः प्रशस्तामणवंशं चंद्रस्त्वोनमानो स्नते नराणां रत्नाम्बुद
गंधेन त नरस्य देहाद नर्थमाशु प्रशमं प्रयातीति ॥ इति रत्नालक्षणं ॥ अथ कस्तूरीलक्षणं ॥ निघंटराजे कपिला
पिंगला कृष्णा कस्तूरी त्रिविधा क्रमात् नेपाले पि च काश्मीरे कामरूपे च जायते ॥ साप्येका खरिका तन्न ।
स्त्र निलकान्तेया कुलिन्या पराऽपिंडन्या पि च नायिकेति च परा या पंच भेदाभिधा ॥ सा जाता मृगनाभितः क्र
मवशाद्देशात्स्थिती शोचिताय होत्पादि दिनत्रयेषु जनिता कस्तूरिका स्तूयते ॥ चूर्णाकृति स्त्र खरिकाति
लकानिलाभा कौलिन्यवीजसदृशी च कुलन्यकालि ॥ स्थूला तनः किल द्वियं किल पिंडका स्यान्नस्याश्च कि
विट् पिका पदि नायिका सा ॥ तिक्ता स्वादे पिंजरा केतकीनां गंधं धत्ते लाघवं तैलनेच ॥ या सूक्ष्मस्तानैर्वैव
र्णभेया त्कस्तूरीसा राजयोग्या प्रशस्ता ॥ या स्त्र नकेतकीनां वहति परिमलं वर्णतः पिंजराभा स्वादे तिक्ता क
दुर्वा लघुरथ ललिता महिता विक्रयणाया ॥ दाहे या नैति वर्ण्यो विभिमिथिमिकृते नैव चर्मगंधा कृता सा प्रशस्ता शो
भनीया वरमृगतनुजा राजभोज्या प्रदिष्टा ॥ या भिन्ना भूमवंगं धावहति विनिर्दिनापीततोणाघ्यसौ नर्निशेषेषा
निविष्टा भवति कृतवहे भस्मसाद्वे वस्य ॥ या चन्यस्तान्वलायां कलयति गुरुतां मर्दिनात्रूत्तनाच ज्ञेया क
स्तूरिकेयं सलक्षणमतिभिः कृत्रिमा नैव सेति ॥ हृदेन विशेषः करतलमध्ये स्थाप्य पितामहविः पुनरपि तद

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वर्णं चिंतनीयं मुहूर्त्तं भवति यदि सरक्तं तज्जलं पीतवर्णं न भवति मृगनाभिः कृत्रिमो सौ विकार इति निर्चं
टराजे वालेन्नरानिवहृदिणोहयोमेगिाणिच मदंग यथुता कामातुरे च न रुणो कस्तूरी वहलपरिमलाभ
वतीति इति कस्तूरीलक्षणं इति राजवल्लभे लक्षणप्रकरणं अथ नानायुधलक्षणप्रकरणं तत्र तथा र
क्षेत्रपोराष्ट्रं हत्याच्च परिपंथिन इति मनुवचनेन राज्ञा सर्वोपायैः राष्ट्ररक्षा कार्या तत्रकं मा च राष्ट्रपीडाकर
क शत्रुहननमंतरेण शक्नोति शत्रुहननं कर्त्तव्यमित्यवगते तत्र यद्यपि अनेकगजवाजिपदातिरथादि
भिः समेतापि कुलासेनाश्विनयापि शस्त्रैर्विना शत्रुवधः कर्त्तुं न शक्यते अतः शत्रुवधार्थं स्वशरीरसं
रक्षणार्थं च पृथिवीराज्ञा नानास्त्रायैश्च नानायुधानि धार्याणि तानि च किंलक्षणानि इत्यपेक्षितो लक्षणान्युच्य
न्ते तत्रादौ चापलक्षणमुच्यते विष्णुधर्मोत्तरे पुष्कर उवाच धनुर्द्रव्यत्रयं लोहं शृंगं दारु च भार्गव ज्याद्रव्यत्रि
तयं चर्म वंशभंगास्तथा वंशभंगस्तु कसद्दिनो वंशखंडः वंशत्वक्त्वं गाचापत्नकर्त्तव्यं भृगुनंदन अन्येषु चा
मचाये श्रुष्पेषद्वमयं भवेत् प्रमाणेनात्र निर्दिष्टं चापयोः शार्ङ्गलोहयोः दारुचापप्रमाणं तु श्रेष्ठं हस्तचतु
ष्टयं तदर्धसमहीनेतु प्रोक्तं मध्यकनीयसः तदर्धसमहीनेन स्यच तद्धस्तत्रिमितं धनुः अर्धहीनमधहस्त
हीनेसार्धहस्तत्रयमितं धनुः मध्यमं समहीने सार्धत्रिहस्तं धनुः अर्धहस्तेहीने हस्तत्रयमितं धनुः क

लक्ष.
५५
९९

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निर्दिष्टं प्रोक्तमित्यर्थः मृष्टिगाणां गणिजातानि मध्ये सर्वाङ्गीणा कारयेत् स्वल्पा कोटिस्तु वार्क्षाणां शार्ङ्गे लोहमये द्वि
जाकामिनीभ्रूलताकारा कोटिः कार्या सुसंस्कृता कोटिर्धनुषोऽग्रभागः वार्क्षाणां दारुणामित्यर्थः शार्ङ्गे लो
हमये नृपविदारुणा कोटिः कुर्यात्स्वल्पः ऋष्यवाराहमिश्रं वा लोहं शार्ङ्गं तु कारयेत् पञ्चधीरिति शेषः शार्ङ्गस्वापु
ष्टिनं कार्यं हेमबिन्दुविभूषितं कुटिलं स्फुटितं चापं सच्छिद्रं तन्न शस्यते कुटिलं अनृजु एकभागे हस्तिमप्राद्रुमा
ये च विद्युद्दाघातस्तथा च ये आरामदेवतावेश्मतापसाश्रमसंभवाः श्मशानसंभवा ये च न ते कार्याः कथंचन
प्राणिनामयः सञ्जातेन शृङ्गी पुष्पिनिपातितः न लङ्घ्य गवजं पिच्छापं नित्यं शार्ङ्गं विचक्षणः लोहानि ताम्रवतारि
प्रास्थने चापकर्मणि स्ववंशे विजनेनानाम्नं तथा कुत्साय संहितं कांचनं चापरत्नं तु सर्वत्वमपि कारयेत् मा
हिषं शार्ङ्गं गौरीजं चापि कारयेत् शरभो मृगजातिभेदः नलदाङ्गं कोङ्कणदेशे यत्कन्तं वे काश्मीरदेशे शर
भोऽष्टपादस्यादुन्नतः पृष्ठकः स्कन्धतः क्षुद्रपादः उष्ट्रप्रमाणः समहाविषाणः ख्यातो वनस्थश्च महामृगो वा इति वा
र्त्तिचंदनं जं श्रेष्ठं वेतसं धाम्वनं तथा शालशाल्मलिशाकानां ककुभस्याञ्जनस्य च शाल्मलिः पिच्छिला सैव
बिरिति प्रसिद्धः शाकः सगवन इति प्रसिद्धः ककुभोऽर्जुनः कोह इति प्रसिद्धः वंशस्य च महाभाग सर्वश्रे
ष्ठतमं विदुः शरदि हीनेः काष्ठस्तु चापं कार्यं प्रयत्नतः वंशानामपि तत्रैव श्रेष्ठं यत्र गंगा महानदी गंगानीरा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सर.
१००
100

तन्त्रवंशानां श्रेष्ठं पनुविन्मर्थः एवमयेपि ज्ञेयं शालानामपि तन्त्रश्रेष्ठं गोमतीयत्र भार्गकविनस्तां कुलजं श्रे
ष्ठं वेन सामीनयैव च एवं द्वयमयकार्यं चापि लक्षणसंयुतं व्रणानां लक्षणं चास्य भविष्यति च खड्गवत् स
त्वग्रासंदृष्टिकोनेशरमोदन्तस्त्वं नया सत्वाग्निश्रेष्ठसंस्थानं सारवंनेत्रसंहतं सत्वाग्निश्रेष्ठसंस्थाने सारवंनेत्र
संमहद्दिनिपाकांतरं अवनामिमत्वं निमंत्रेसामानिवलोकदोपनदीहशकंश्रेष्ठं चापरत्वं विडूर्बथाः राज्ञांवा
यस्य कर्तव्या सूत्रावाणावरस्य च निमंदेवकुलेरामत्वे मस्य च विशेषतः अथ सर्वापवंशस्यशरस्याथशरोभवे
त् शरवंशोशहीनयोशरकालेभरश्रृत्तम श्रुताः किरातनाश्रेष्ठाः कांचीपुरसमीपतः तेभ्योपिनेश्रेष्ठनमाः
संकटजन्ममहीभवाः स्निग्धानिमग्नपर्वाणः सारवंतः समाहिताः सत्त्ववेसमपुवर्णाभाः सुज्ञाताः शरजाहृत्याः
स्तापुश्लिष्टाः स्वनेत्रास्सस्तुवोः कलनासमाः नैलधौताश्च कर्तव्या हृतमपुत्वविभूषणाः वेलश्रेष्ठाश्चक
र्तव्याश्चनिपाकांतरे तथाविषमपर्वाणः फलेश्चव्रणवर्जितैः एकविंशत्वकर्तव्यं राजहंसच्छदेनतेरुक्मपुत्रं
सवर्णाश्मयः फलमवतनम स्तापुवद्धफलनस्य रुक्मवद्धं तु कारयेत् वर्मेश्चलक्षणोपेतैः चित्रितेनतुका
रयेत् ग्रहणांतस्य कर्तव्यं सावत्सरकरत्नपैः तस्य पूजा सदा कार्या साभिषेकसमा भवेत् यात्रायामभिषेके च
मांगल्येषु च कर्मसु समांकं तु वरं चापे समांकेन तु कारयेत् समांकसमपर्वाणि तेमंगल्येन त्रेदाणां कथि

१००

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेभ्यस्तुनंदत्त पेचापरत्नंविनतेन भूपाः सुवर्णरत्नोपचितंसदैव वाणेनसाकंपरिशत्रुजयंतिभवंतितेरामवि
पत्नतुल्याः विस्तरेणधनुर्लक्षणाष्टकेचैवपूर्वके धनुर्वेदे धनुर्विधिंप्रवक्ष्यामिश्रृणुत्वंसुयथाक्रमं यादृशंका
र्यंयच्चापंतादृशंचवदाम्यहं प्रथमंयौगिकंचापंक्रियाचापंद्वितीयकं शालाकायांततीयंचव्राद्यानेनचतुर्थ
कं पंचमंस्थामिकंचापंषष्ठंसांग्रामिकंस्मृतं सप्तमंहस्तचापंतुभूरिस्फोटंभृगोष्टमं विकर्षेनवमंप्रोक्तंफलार्थेद
शमंस्मृतं धनुर्षदशविख्यातंसर्वकर्मागमसंमते तेषामध्येसुलक्षणंस्वमानेयस्यचयादृशं अथपंचमहस्तं
तुश्रेष्ठंनिर्दिष्टंतेधनुः अथपंचमहस्तंश्रेष्ठोहस्तः पंचमोयेषांहस्तानांततःसार्धचतुष्टयहस्तपरिमितमित्य
र्थः तत्रवेदैविकंचापंशंकरेणतुधारितं ततःपरशुरामेणततोरामेणधारितं भरतेनचद्रोणेनद्रोणाचार्य
स्नेहेनच अर्जुनेनात्मार्तिकंश्रेष्ठंदेवचापंनिवर्त्तते चापंश्रेष्ठंहीदितिशेषः ततोनिवर्त्तिते ततोएकोपिनगृहीत
वानित्यर्थः चतुर्विंशांगुलोहस्तस्तत्रदृष्टैर्धनुः स्मृतं तत्रवेत्मानवंचापंसर्वलक्षणसंयुतं त्रिपर्वपंचपर्वंवा
सप्तपर्वंचवाभवेत् नवपर्वंचकोदंडंभवतीतिचतुर्विधं त्रिपर्वकंकृतेश्रेष्ठंपंचपर्वाथवाग्रगमे सर्वलक्षण
संपूर्णंसर्वपद्मयावदं नवपर्वंचकोदंडंनातिश्रेष्ठंनमध्यतः चतुःपर्वंचषट्पर्वंमष्टपर्वंविवर्जयेत् अत्र्यवै
वप्रमाणेनतेषेनवविनस्तिभिः द्वादशांगुलमानेनवितस्तिःपरिकीर्तिता इमेजिह्वाप्तमनेकूर्पांदंगुलेत्रयम्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रते ईदृशं कारयेच्चापं चापानां चैव नायकं ॥ व्याख्यातं विविधं चापमस्त्रं कोदंडमेव च ॥ कुमार उवाच ॥ विस्तरेण श्रुणु
देवेश धनुषं तु प्रमाणतः ॥ ब्रूहि मे विविधं चापं प्रमचापं च कीदृशं ॥ श्री ईश्वर उवाच ॥ श्रृणु पुत्र कसेरुत्रिषु
लोकेषु दुर्लभं ॥ सर्वेषां चैव चापानां प्रमाणं कथयाम्यहं ॥ चतुः सर्षपो यवः प्रोक्तः कंडिका च चतुर्यवा ॥ माषक ^
लव. तौ स्त्वष्टौतैलो द्वादशमाषकैः ॥ चतुरोष्टौ द्वादशांके डिकामाषस्यार्थः ॥ पंचतोलाः पलं चैव नस्मतैस्सपलं श
१९ ते तेन शास्त्रेण चापानां प्रमाणं चैव लभ्यते ॥ न तेन सिध्यते चापं गुणो भारं प्रदापयेत् ॥ चापं गुणेन सिध्यते गुणे-
नाकर्षणं योग्यं न भवतीत्यर्थः ॥ भारं विनेत्यर्थाडुक्तं भवति ॥ ततः कारणाद्भारं प्रदापयेदित्यर्थः ॥ बलात्तरु-
।८। पं यथाक्रमं भारं दद्यादित्याह ॥ तावद्भारः प्रदातव्यो यावद्भारसहं भवेत् ॥ द्विशतं यौगिके चापं त्रिशतं च कि-
याधनुः ॥ चतुःशतं शलाकायां धनुश्चैव तदाश्रतं ॥ वामे समशतं चापं दद्विशंद्विशताधिकं ॥ उभे सव्याप-
सव्ये च नाभ्यां चैकादशक्रमं ॥ उभे सव्यापसव्ये धनुषीत्यर्थः ॥ संग्रामेषु धनुर्वेदे कृत्वा समशतैरपि ॥ दृढ ^
स्फोटे सहस्रेणाधिकं षड्द्वादश ॥ शतैः द्विसहस्रं चैव पुत्र फलार्थं कारयेद्धनुः ॥ ईदृशं च प्रमाणं च धनुषां की-
र्तितं मुयेति ॥ वीरचिंतामणौ धनुर्वेदे ॥ प्रथमे यौगिकं चापं पृष्ठचापं द्वितीयके ॥ निजबाहुबलोन्मानात् किं-
चिदूनं शुभं धनुः ॥ वंशाधिकोधन्वीनतमाधिकं धनुः ॥ धनुषा पिडमानस्तु धन्वीलक्षेण पश्यति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अतो निजबलोन्मानं चापं स्याच्छुभकारकं देवानामुत्तमं चापं ततो न्यूनं च मानवं अतिजीर्णमपक्वं च जातिभ्र-
ष्टं तथैव च दग्धं छिद्रितं कर्णे स्ववात्याभ्यंतरे हस्तकं गुणहीनं गुणाक्रान्तं काण्डदोषसमन्वितं गलग्रंथिनक-
र्वंथं नलमध्ये तथैव च अपक्वं भगमायाति अतिजीर्णे तु कर्कशं जातिभ्रष्टे तु सोद्वेगं कलहो बांधवैः सह
दग्धेन दह्यते गेहं छिद्रं युद्धविनाशनं बाह्ये लक्ष्यं न लभ्येत तथैवाभ्यंतरे पि च हीने तु संधितो बाणः संग्रा-
मे भंगकारकः आक्रान्ते पि ध्रुवः कापि लक्ष्ये न प्राप्यते दृढं गलग्रंथिन लग्रंथि धनहानिकरं धनुः एभिर्दोषै-
र्विनिर्मुक्तं सर्वकार्यकरं शुभं शार्ङ्गं तु नवधा दिव्यं विश्वेशः परमायुधं वितस्तिसप्तसंमानं निर्मितं विश्वकर्मणा
न स्वर्गे न च पाताले न भूलोकस्य चित्करे नरस्तु वंशमायाति शृंगैकं पुरुषोत्तमं कोनरुषे पं तु वध्या कार्ये व ऊनं मरे
शोभिते वितस्तिभिः सार्धषड्भिर्मितं सर्वकार्य्यसाधनं प्रायो योग्यं धनुः शार्ङ्गं गजारोहाश्वसादिनां रथिनां च पदा-
तीनां वांशं चापं प्रकीर्तितमिति राजविजये शार्ङ्गं वांशं दारवी येन गणराजोद्भवं धनुरिति प्रशस्तमिति शेषः
न गणराजोद्भवे वैनसे इति धनुर्लक्षणं अथ गुणलक्षणं ज्ञेयं चक्रे धनुर्वेदे गुणानां लक्षणं चैव पारशेकार-
षेकण तु हस्तनक्षत्रनं तु पट्टसूत्रं लविसमदेश्वराः गुणस्यान्तेषोज्ञेयाद्वे शृंगाच्चषण्मात्र प्रथमा हरिणी त्वा
पुलकाभावे तु माहिषी कर्तव्या महिषाभावे गोलांगूलसाधयेद्बुधः एते गुणाः प्रशस्ताः उत्तमा मध्यमाधमाः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मार्गे भाद्रपदे मासे अथवा श्रावणे प्रवर्त्तते तस्मात्तत्रैको गुणः कार्यः पवित्रः स्याद्वै रोहण इति धनुर्वेदे वीरचिन्तामणौ
गुणानां लक्षणं वक्ष्ये यादृशं कारयेद्गुणं पट्टसूत्रो गुणः कार्यः कनिष्ठामानसंमितः धनुःप्रमाणो निःसंधिः सु
दृढस्त्रिगुणनैस्त्रिभिः वर्त्तितः स्याद्गुणः श्रेष्ठः सर्वकर्मसहोऽपि च अभावे पट्टसूत्रस्य हारिणी स्नायुरिष्यते गु
णार्थमथवा ग्राह्याः स्नायवो महिषीगवां तत्कालहतनागकाणां चर्मणा छागलेन वा निर्लोम्ना तन्तुरूपेण क
ल० यो हि गुणस्तन्तुमं पक्वं वंशत्वचः कार्यो गुणस्तस्य वै रोहणः पट्टसूत्रेण संबद्धः सर्वकर्मसहोऽपि मार्गे भाद्रप
९२ दे मासि वर्गके स्पर्श भास्यते तस्मात्तत्र गुणः कार्यः पवित्रः स्याद्वै रोहणः वृत्ताकृतिस्त्रिवर्णं ततो दृढसाल दश
102 स्मृताः नेष्टं जेत्रिगुणं कार्यं प्रमाणेन यथा गुणः स्मृत इति राजविजये सूक्ष्मः स्थूलो दीर्घः स्वमुष्टेरमहीश्च कः त्रि
धः स्मृताः स्वस्य स्वगुणसात्वो गुणाः स्मृता इति इति गुणलक्षणं अथ बाणलक्षणं धनुर्वेदे वीरचिन्तामणौ
अतः परं प्रवक्ष्यामि शराणां लक्षणं शुभं स्थूलेन चातिसूक्ष्मेण नापक्वेन नकुभूमिजं हीनपर्वविदीर्णं च व
र्जयेदीदृशं शरं गुणानुपयोगिनं सपक्वं चपावंतसममयाहतं समये शरदि शरहीनं शरवंशो ग्रहीतव्यो ग्रहकाले भद्र
द्रमेतिनिविस्तुपर्मान्नतेरजकत्वात् कटिनवर्जितं काण्डग्रहीयात्सुप्रदेशजं दोहलोमशिखितो नोचवैदैर्घ्यो स्यात् स्वक
निष्ठिका विधेया शरमानेषु येषां काचिद्यतः काकहंसशशादानां मत्स्यादक्रौञ्चकेकिनां श्येनानां

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रणेणं च पक्षा ये ते ह्यशोभनाः शशादश्येनः मत्स्यादाः मत्स्यभक्षकाः जलगताः पक्षिणः एकैकस्य शरस्यैव
चतुः पक्षाणि योजयेत् षडंगुलप्रमाणेन पक्षच्छेदं च कारयेत् दशांगुलमिताः पक्षाः शार्ङ्गचापस्य मार्गणे
योज्याः स्तास्त्रयः संख्याः संनद्धाः स्नायुतंतुभिः शरास्त्रिविधा ज्ञेयाः स्त्रीपुंनपुंसकभेदतः अग्रे स्थूलो भवेन्ना
री पश्चात्स्थूलो भवेत्पुमान् समं नपुंसकं ज्ञेयं नलक्ष्यार्थं प्रशस्यते दूरपाते स्त्रियं बाणं च पुरुषो भेदयेद्दृढमिति रा
जविजये भग्नं स्फुटं तथा वक्रं चलितं नूतनपर्वकं अतिदीर्घं लघुपर्वाणं वर्जयेद्विशमीदृशं रथध्वजलाण्णो विस्तु
थं तु दैवो महेश्वरः एतेषां स्मरणादेव सर्वपापैः प्रमुच्यते इति इति शरलक्षणं अथ नाराचनालीकलक्षणं
धनुर्वेदे वीरचिंतामणौ सर्वलोहास्तु ये बाणा नाराचास्ते प्रकीर्तिताः पंचभिः पृथुलैः पक्षैर्युक्ताः सिध्यं
ति कस्यचित् नालीका लघवो बाणा नलयंत्रेण नोदिताः अत्युच्चदूरपाते च दुर्गयुद्धेषु ते मताः इति इति नारा
चनालीकलक्षणं अथ फललक्षणं वीरचिंतामणौ धनुर्वेदे फलं तु शुद्धलोहस्य स्याद्धारं तीक्ष्णमग्रकं योज
येद्दृढलेपेन शरे पक्षानुमानतः आरामुखं क्षुरप्रं च गोपुच्छं चार्धचंद्रकं सूचीमुखं च भल्लं च वत्सदंतं द्विभल्ल
कं कर्णिकं काकतुंडं च तथान्यान्यप्यनेकशः फलानि देशभेदेन भवंति बहुरूपतः आरामुखेन वै चर्मच्छे
दयेणच कार्मुकं सूचीमुखेन कवचं भर्द्धचंद्रेण मस्तकं भल्लेन हृदयं वेध्यं द्विभल्लेन गुणः शराः लौहं च का

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कर्त्तेनलत्वं गोपुच्छकेनच अग्रमध्ये पुच्छकं ज्ञेयं शुद्धकाष्ठविनिर्मितं सुवेचलोहकंटेनविद्धं अंगुलसंमिति
तमिति वैयेवकेधनुर्वेदे विशेषः अर्धचंद्रेणबाणेनशिरःछेदंतकारयेत् भुजछेदंधनुःछेदंगुणछेदंतथा
क्षितः छेदत्रयं क्षुरप्रेणकारयेत् क्रूरमुष्टिनेति इतिफललक्षणं अथप्रसंगादन्यदप्युपयुक्तं किंचिल्लिख्यते
लव.
वीरचिंतामणौ यजुर्वेदे फलस्यपायनं वक्ष्ये दिव्यौषधिविलेपनैः येनदुर्भेद्यवर्माणिभेदयेत्तरुपत्रवत् पिप्प-
१५
लीसैंधवंकुष्ठंगोमूत्रेणतुपेषयेत् अनेनलेपयेच्छस्त्रं लिप्तंचाग्नौप्रतापयेत् अतिशीतमनाविद्धंपीतंनष्टंत
103
थौषधं ततोनिर्वापितंतैले लोहंतत्रविशिष्यते पंचभिर्लवणैः पिष्टैर्मधुसिक्थैः ससर्पिषैः एभिः प्रलेपयेच्छ-
स्त्रंलिप्तंचाग्नौप्रतापयेत् शिखिग्रीवानुवर्णाभंतप्तपीतंतथौषधं ततस्तद्विमलेतोयेपापयेच्छस्त्रमुत्तममि-
ति इतिफलपायनविधिः अथधनुर्वेदः तत्रस्थानमुष्ट्याकर्षणलक्षणानि स्थानान्यष्टौविधेयानियो-
जनेभिन्नकर्माणि मुख्याः पंचसमाख्याताः व्यापाः पंचप्रकीर्तिताः अग्रतोवामपादंचदक्षिणंजानुकुंचि-
तं आलीढंतत्प्रकर्तव्यंहस्तद्वयसुविस्तरं प्रत्यालीढेतुकर्तव्यंसव्यंचैवानुकुंचितं दक्षिणंतुप्रसारितंहस्त-
द्वययानेप्रसार्यस्थानेपादौसुविस्तीर्णौकार्यौसमौहस्तप्रमाणतः विशाखंस्थानकंज्ञेयंकूटलक्षसवेधने स-
मपादेसमौपादौनिःकंपौचसंगतौ असमेवपुरोवामोहस्तमात्रेणलंबपुः अग्रांकुचितोहृदोयत्रजानु

१०३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ष्मांथरंणीगतौ – डिक्रममित्याद्यः स्थानकं हटभेदने सर्वंज्ञात्वागतं भूमौ दृढितिणं चसकुंचितं अथातोऽ
त्रदानवं नैवियाद्गलडक्रमं पद्मासने च सिंहं तत्र उपविश्य यथाक्रमं पंचविंशांतं तु विज्ञेयं पंचस्थानकं सुभल-
लमिति इति स्थानानि अथ मुद्रालक्षणं पताकावज्रमुष्टिश्च सिंहकर्णी तथैव च मुसलीकाकतुंडी चैषा
जनीया यथाक्रमं दीर्घांगुलतर्जनी यत्र अग्राश्रितांगुष्ठमूलकं पताका सा च विज्ञेया नालिका हस्तमोक्षणे तर्ज-
नीमध्यमामध्यमेंगुष्ठो विशते यदि वज्रमुष्टिश्च सा ज्ञेया स्थूलेनाराचमोक्षणे अंगुष्ठनखमध्ये तु तर्जन्यग्र-
सुसंस्थिते सिंहकर्णी तु सा ज्ञेया शराणां लक्ष्यवेधने अंगुष्ठनखमूले तु तर्जन्यग्रं सुसंस्थितं मुसली सा च
विज्ञेया चित्रलक्ष्यवेधने अंगुष्ठाग्रे तु तर्जन्या मुखं यत्र निवेशितं काकतुंडी तु सा ज्ञेया सूक्ष्मलक्ष्ये तु योजि-
ता इति मुद्रालक्षणं अथ धनुर्मुष्टिसंधानं संधानं त्रिविधं प्रोक्तमधऊर्ध्वसमं तदा योजयेत्त्रिःप्रकारं हि कार्ये-
ष्वपि यथाक्रमं अधस्थं दूरपाति स्यात्समं लक्ष्ये सुनिश्चले दृढस्फोटं प्रकुर्वीत ऊर्ध्वसाधनयोगतः इति धनुर्मु-
ष्टिसंधानं अथ छायाः कौशिकः केशमूले च शीर्षः भृंगेव सात्विकः ध्वजेणो वत्सकर्णश्च ग्रीवायां भरतो भवे-
त् अंसके स्कंधनामा च छायाः पंच प्रकीर्तिताः कौशिकश्चित्रयुद्धेषु शब्दयोलक्ष्ये तु सात्विकः वत्सकर्णश्च
विज्ञेयो भरतो दृढभेदने दृढभेदे च हनने च स्कंधनामानमुद्दिशेत् इति छायाः अथ लक्ष्यं लक्ष्यं च त्रिविधं चे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ प्र॰ १४
104

च स्थिरं चैव चलं तथा चलाचलं द्वयचलमिति प्रोक्तं मनीषिभिः आत्मानं तु स्थिरं कृत्वा लक्ष्यं चैव स्थिरं पुनः एवं
यो वेत्ति प्रकारं तु स्थिरवेधी स उच्यते चलं तु वेधयेद्यस्तु आत्मना स्थिरसंस्थितः चललक्ष्यं तु तत्प्रोक्तमाचार्येण
तु धीमता धन्वी तु चलने यत्र स्थिरलक्ष्ये समाश्रितः चलं भवेत्तत्र श्रमप्रमेयमनिन्दितं उभावेव चलौ यत्र चल-
लक्ष्यं वापि धनुर्धरः तद्द्विज्ञेयं द्वयचलं श्रमेणैव हि साध्यते श्रमेण स्ववलितेन लक्ष्यं हरेच्च वडुभेदनं श्रमेण
स्ववलिना दृष्टिः शीघ्रसंधानमाप्यते श्रमेण चित्रयोधित्वं श्रमेण प्राप्यते जयः तस्मात्तु सततं हि श्रमः
कार्यो विजानता प्रथमं वामहस्तेन तु यः श्रमं कुरुते नरः तस्य चापक्रियासिद्धिर्विनादेव जायते वामहस्ते तु से
सिद्धे पश्चाद्दक्षिणमारभेत् उभाभ्यां च श्रमं कुर्यान्नाराचे स्वशरे तथा वामेनैव श्रमं कुर्यात्तु सिद्धे दक्षिणे करे
विशालेनासनेनैव तथा च्यापे च कौशिके उदिते भास्करे लक्ष्यं पश्चिमायां निवेशयेत् अपराह्णे च कर्तव्यं लक्ष्ये
पूर्वदिगाश्रिते उत्तरेण सदा कार्यं प्रशस्तमविरोधकं संग्रामेण विना कार्यं न लक्ष्यं दक्षिणामुखे षष्टिधन्वन्त
रे लक्ष्यं ज्येष्ठं लक्ष्यं प्रकीर्तितं चत्वारिंशन्मध्यमं च विंशतिश्च कनिष्ठकं शराणां कथितं सेन नाराचानामथो
च्यते चत्वारिंशच्च विंशच्च षोडशैव भवेत्ततः चतुःशते श्वकांडानां यो हि लक्ष्यं विसर्जयेत् सर्वेदपि चाप
मनं सर्वेषां धन्विनां भवेत् विंशतैर्मध्यमश्चैव द्विशताभ्यां कनिष्ठकः लक्ष्यं च पुरुषोन्मानं कुर्याच्चदकसंयुतं ॐ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दृढवेध्ये श्रेष्ठो नाभिवेधी च मध्यमः ॥ यः पादवेधी लक्ष्यस्य स कनिष्ठो मतो मम ॥ इति लक्ष्यं ॥ अथ श्रमक्रिया ॥ क्रियाक
लापान्वक्ष्यामि श्रमसाध्यान्धनुष्मतां ॥ येषां विधानमात्रेण सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥ विज्ञानमात्रेण निपाठंत
वे प्रथमं चापमारोप्य चूलिकां बंधयेत्ततः ॥ स्थानकं तु ततः कृत्वा बाणेन परिकरं न्यसेत् ॥ तूलनं धनुषश्चैव
कर्त्तव्यं वामपाणिना ॥ आदानं च ततः कृत्वा संधानं च ततः परं ॥ सकृदाकृष्य चापेन भूमिवेधं च कारयेत् ॥ न॰
मस्कृत्य शिवं विघ्नराजं गुरुं धनुः ॥ क्रमात् याचितव्या गुरोराज्ञा बाणस्याकर्षणे सति ॥ प्राणवायुं प्रयत्नेन बाणेन
सह पूरयेत् ॥ कुंभकेन स्थिरं कृत्वा हुंकारेण विसर्जयेत् ॥ अभ्यासक्रिया कार्या यत्नेन सिद्धिमिच्छता ॥ बाणमा
सान्निध्येन मुष्टिः धाराः संवत्सरेण तु नाराचास्तस्य सिद्ध्यंति यस्य तुष्टो महेश्वरः ॥ पुष्पवद्धारयेद्बाणं सर्पवत्तो
लयेत् धनुः ॥ धनवच्चिंतयेल्लक्ष्यं यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ क्रियासिद्धेर्यथाचार्या हरसिद्धेति भार्गवाः ॥ ज्ञानोद्
ध्वसिद्धेति लक्ष्यसिद्धेति चेतनाः ॥ जनानां रंजनं येन लक्ष्यघातात्प्रजायते ॥ हीनेनापि गुणेन स्यात् सम्यग्लक्ष्यस्य
वेधनं ॥ इति श्रमक्रिया ॥ अथ चलस्यास्थूलनविधिः ॥ विशाखस्थानके स्थित्वा समसंधानमाचरेत् ॥ गोपुच्छमु
खबाणेन सिंहकर्णेन मुष्टिना ॥ आकर्षेत्कौशिकव्यायेन शिखां चालयेत्ततः ॥ पूर्वापरौ समौ कार्यौ समौ स्तोनि
श्चलौ कार्यौ समौ श्रेयौ स्कंधौ योषयोस्तौ ॥ चक्षुषी संदधीतैव दृष्टिं लक्ष्ये नियोजयेत् ॥ मुष्टिनाच्छादितं लक्ष्यं शरस्या॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग्रेनियोजयेत् मनोदृष्टिगतेज्ञात्वाततः कांडं विसर्जयेत् स्खलत्येवं कदाचिन्न लक्ष्ये योधो जितश्रमः इति ल
क्ष्यस्खलनविधिः अथ शीघ्रसंधानं आदानं चैव तूणीरात्संधानं कर्षणं तथा क्षेपणं च त्वरायुक्तो बाणस्य
कुरुते नु यः निमेषाभ्यासवशात्तस्य शीघ्रसंधानता भवेत् इति शीघ्रसंधानं अथ दूरपातित्वं प्रत्यालीढे
कृते स्थाने ऽथ यः संधानमाचरेत् सुस्थापनाकया बाणं क्षीचिकृद्दूरपातनं इति दूरपातित्वं अथ दृढप्रहा
रिता दृढस्थानमास्थाय ऊर्ध्वसंधानमाचरेत् स्कंधव्यायेन वज्रस्य मुष्ट्याग्रे मार्गणेन च अनेन सोऽश्ववाहाढोज्जी
लक्ष. १०५ 105 यते दृढभेदिता इति दृढभेदिता अथ हीनगतयः सूचीमुखो मीनपुच्छा भ्रमरी च तत् तोयका शराणां गतयः
तिस्रः प्रशस्ताः कथिता बुधैः सूचीमुखगतिस्तस्य सायकस्य प्रजायते यत्र विलोलितं यस्य अथवा हीनयत्न
के कर्कशेन त्वचापेन यः कृष्टो हीनमुष्टिना मत्स्यपुच्छा गतिस्तस्य सायकस्य प्रकीर्तिता भ्रमरी कथिता ह्येषा सद्वि
त्वश्रमकर्मणि ऋजुत्वेन विनायाति लक्ष्यमानस्तु सायकः इति हीनगतयः अथ बाणानां लक्ष्यस्खलनगत
यः वामगा दक्षिणगाश्चैव ऊर्ध्वगाधोगमास्तथा चतस्रो गतयः प्रोक्ता बाणस्खलनहेतवः कंपते ऽग्रामुष्टिस्तु
मार्गणस्य हि दृश्यतः संमुखी स्याद्धनुर्मुष्टिस्तदा वामे गतिर्भवेत् ग्रहणं शिथिलं यस्य ऋजुत्वेन विवर्जितं
पार्श्वतो दक्षिणां याति सायकस्तु न संशयः ऊर्ध्वं भवेच्चापमुष्टिर्गुणमुष्टिरधो भवेत् समुन्नतो मार्गणो लक्ष्याद्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्धयातिनिसंशयः मोक्षणेचैववाणस्यचापमुष्टिर्यथोभवेत् गुणमुष्टिर्भवेद्दृष्टंतदायोगामिनीगतिः इति
लक्ष्यस्खलनगतयः अथमुद्गतयः लक्ष्यवाणाग्रदृष्टीनांसंगतिस्तुयदाभवेत् तदानीमुष्टितोवाणोल
क्ष्यात्रस्खलतिध्रुवं निर्दोषः शब्दहीनश्चसममुष्टिर्द्वयोस्थितः नरनागाश्वकायेषुनस्खलतिष्ठतिमार्गणः यस्य
त्राणसमावाणस्यसंधानसमंधनुः यस्यप्राणसमामौर्वीसधन्वीधन्विनांवरः इतिमुद्गतयः अथदृढचक्र
कं अथचर्ममयंचस्यैवमत्स्यिंडंचचक्रद्वयं योभिनत्तिदृढंतस्यपूर्वंकृत्वेणापिनधार्यते सार्धांगुलप्रमाणेनलो
ह्ययंत्राणिकारयेत् तानिभित्वैकवाणेनदृढघातीभवेन्नरः चतुर्विंशतिचर्माणियोभिनत्तिगुणेनरः तस्य
वाणोगजेंद्रस्यकायंनिर्भिद्यगच्छति भ्रमत्नजलेघटोवेध्यश्चकेमत्स्यिंडकस्तथा भ्रमंतंवेधयेद्योहिदृढवेधीस
उच्यते अथयस्तुकाकतुंडेनचर्मचारामुखेनच मत्स्यिंडंचघटंचैवविध्येत्सचीमुखेनहि इतिदृढचक्रं अथचि
त्रविधिः वाणभंगोकरावर्त्तकाष्टभेदनमेवच विंडकंगोलकपुंगंयोवेत्तिसजयीभवेत् लक्ष्यस्थानेधृतं
कांडंसंमुखंछेदयेन्नरः किंचिन्मुष्टिंविधायशांतिर्यक्कृद्धिफलकेषुणा संमुखंचसमायांतंतिर्यग्वाणंतमेवहे
णयः किंयाद्वाणछेदीसजायते लक्ष्यस्थानेधृतंकांडंसंमुखंछेदयेन्नरः इतिवाणभंगः काष्टेचकेशंसंयम्य
त्रबध्वावराटिकां हस्तेनभ्राम्यमाणंचयोहंतिसधनुर्द्धरः इतिवराटिकावर्तः लक्ष्यस्थानेमसंकाष्टंसंह्गोप

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क्षसंनिभं यः छित्वा तं तत्र योगात् काष्ठच्छेदी स जायते ॥ इति काष्ठभेदः ॥ लक्षे विंडं न्यसेत् सूक्ष्मं सुप्तं वं धूकपुष्पवत् ॥ हंति
तं विंडकं यस्तु चित्रवेधी स जायते ॥ इति विंडकं काष्ठगोलकं गंत्विमं सूक्ष्मं ऊर्ध्वं पुरःस्थितं ॥ असंशयं यः काष्ठेन तद्गोपुच्छ
मुखेन हि ॥ यो हंति शरपुंखेन शीघ्रसंधानयोगतः ॥ सः स्याद्धनुर्भृतां श्रेष्ठः स जितः सर्वपार्थिवैः ॥ इति गोलकपुंख
प्रभृति चित्रविधिः ॥ रथस्थेन गजस्थेन हयस्थेन पदातिना ॥ धावता वै श्रमः कार्यो लक्षे हंतुं सुनिश्चितं ॥ इति धाव
लक्षं ॥ अथ शब्दवेधितं ॥ लक्षस्थाने न्यसेत् कांस्यपात्रं हस्तपात्रं हस्तद्वयांतरे ॥ ताडयेत् कैराभिसततशब्दः संजाय
ते यथा ॥ यत्रैवोत्पद्यते शब्दस्तं सम्यक् तत्र चिंतयेत् ॥ कर्णेंद्रियसमायोगात् लक्षं निश्चयतां नयेत् ॥ पुनः शाकेर
पातत्त्वनाडयेत् शब्दे तेन वे पुनर्निश्चयतां नेयं शब्दस्यानानुसारतः ॥ ततः किंचित्कालं दूरे निसं निसं विध्यात् ततः
लक्षं समभ्यसेद् ज्ञाते शब्दध्वनत देतवे ॥ ततो बाणेन हन्यात् तद्वधानेनंती ज्ञाधीः ॥ पतत्त्वं दुष्करं कर्म भाग्यैः क
स्यापि सिध्यति ॥ इति शब्दवेधितं ॥ एकोपि यत्र नगरे प्रसिद्धः स्याद्धनुर्धरः ॥ ततो यांत्यरयो दूरं मृगाः सिंहगृहा
दिव ॥ इति धनुर्धरप्रशंसा ॥ इति धनुर्वेदः समाप्तः ॥ अथ खड्गप्रशंसा ॥ औशनसे धनुर्वेदे जमदग्निमतिश्रुतौ भग
वानुवाच ॥ असिरेव परं शस्त्रं खड्गस्तेनितरो शाःगं त्वं अमोघाकारसदृशं सर्वशस्त्रेषु प्रवरः ॥ सर्वप्रकारेणत्वप्र
प्रदः शत्रूणां दायकारकउत्पथः ॥ ज्ञात्वा नेत्वाथ कुंजेवाबलेसा वीराने पिवा संविशेद्वापि विशेच खड्गपवणतायणं

लक्ष. १०६

106

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संकटे च विषमे गिरिदुर्गे निम्नगानि सिकतास्थगिते वा कंटकद्रुमसंहृतेपि च देशे खड्गप्रवशारणां जनमदन्ते द्वितीयर
थे वाजिनि कुंजरे वा नृहेद्रुमे नागरके प्रमादे सर्वत्र सर्वस्य च मार्गविंद्र्पराषणांस्पाद सिद्धेव निसं धनुरिहशरपाता
देववैहृतिशत्रून्हति रिपुसमूहं वाजिवह्निजिवेन सुभटकरगणनखड्गहिप्रमध्यासमात्रे शमयति रिपुसेनां पानः
योगेन खड्गः मत्तेगजस्थो रथवाजिगो वा शरवहे घशास्त्रगणान् हयेच समस्थितो वा विषमस्थितो वा नरोसिनाम
ईयतीन्द्रा सर्वान् सर्वदेवाप्यंगोचविरथस्य विराजिनः शत्रुमध्यावतीर्णास्यनान्तनखड्गमराषणामिति नक
लेनाप्युक्तं खड्गः लक्ष्मीस्तथाराज्यं यशः खड्गादवाप्यते खड्गाद्वैरिविनाशं च तस्मात्तमभिद्यमहेद्यति इति खड्ग
प्रशंसा अथ खड्गलोहोत्पत्तिः विस्मयधर्मोजातो पुष्करवाच पुरा मम हि शिखरे कांचनेरत्नपर्वते स्वर्गगंगातटेव
लायत्तं यजति भार्गव तस्मिन्यज्ञेसदहसो विघ्नार्थी लोहदानवः विघ्नस्य शमनं तेन संचिंतयामास तत्र विन्ब
ह्यचिंतयतस्तस्य पुरुषः पावकादभूत् नीलोत्पलदलश्यामस्तत्रस्त्रावासिते व्रणाः प्रांशुः स्ववदनः श्रीमान्बले
नाप्रतिमो भवि स चवंदेतदागत्वा देवं कमलसंभव श्रभ्यनंदतज्जातेन तेन देवाः सर्वा सर्वाः तस्मात्तस्य नंदको
नाम खड्गोरत्नसमुद्भूतदा तं दृष्ट्वा भगवान्ब्रह्मा केशवं वाक्यमब्रवीत् खड्गमहुष्णीष्व गोमारं पम सज्जनगतं प
ने यत्तविघ्नकरं मन्यखड्गेनानेन केशव निपातनयमस्त्रागाद्देवस्तिनं लोहदानवं इत्येवमुक्तो जग्राह हृषीकायां

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लख· ८०
(10)

तेजनार्दनः एतस्मिन्नंतरे तत्र खरप्रवततदा महान् करालकोलवदनः शातवाङ्गमहोदरः प्रांशुः सुदृढदंष्ट्रा
श्रोबलवान् लोहदानवः एतद्विघ्नार्थिनं यामं संदृष्ट्वा लोहदानवं खड्गमादाय वेगेन यत्रैनं प्रतिकेशवः सके
शवमनाहत्य देवान् शक्रपुरोगमान् विद्रावयामास तदा गदया भीमवेगया तदा भग्नेषु देवेषु युद्धं कृत्वा हरि
स्त्विरं खड्गेन तस्य गात्राणि विच्छेद मधुहा रणे खड्गच्छिन्नानि गात्राणि नानादेशे तु भूतले निपेतुस्तस्य यमित्र।
शतशोथ सहस्रशः नेदकस्य तु तस्य यानि तानि गात्राणि भागीव लोहीभूतानि सर्वाणि प्रसादात्केशवस्य तु हता
यामेवं प्राह भगवान्मधुसूदनः त्वदंगानि पवित्राणि भविष्यंति महीतले आयुधानि च तैर्लोके करिष्यंति हि मा
नवाः एवमुक्त्वा हरिर्देवो ब्रह्माणं वाक्यमब्रवीत् विना विघ्नं मखमिमं कुरुष्व शीघ्रं जगद्गुरो एवमुक्तस्तदा ब्रह्मा य
ज्ञेन मधुसूदनं आत्मनापूजयामास सहस्रमभिष्टमनोरथः उत्पत्तिरुक्ता लोहस्य खड्गस्य च मयानघेति इति खड्गलो
होत्पत्तिः अथ खड्गलोहलक्षणं लोहार्णवे लोहानां लक्षणं वक्ष्ये यथोक्तं मुनिपुंगवैः निरंगसांगभेदेन ते लोहा द्वि
विधा मताः निरंगाः कांतिपाण्ड्यादिभेदाद्बहुविधा मताः रमकर्मसु ते शस्ता नानाव्याधिविनाशनाः शस्यते प्रा
यशोयस्मात्सांगाः खड्गादिकर्मसु नामभेदेन विज्ञाति लोहानामभिदध्महे तदंगं सुदृढं यस्य नीलमीषत्प्र·
तीयते रौहिणं तन्तु विजानीयात्तद्गुणावज्रवेदना नीलपिंगसमांगं च नीलपिंगं विदुर्बुधाः मयूरकंठसंस्थान

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मंगंयस्यप्रतीयते मध्यग्रीवकं लोहं तत् विद्रुमं निश्चंगवाः नागकेसरपुष्पाभमंगं यस्यप्रतीयते मध्यवज्रकं शाङ्ग
लौहं शास्त्रविदो जनाः यस्मिन्तित्तिरपक्षाभमंगं लोहे प्रतीयते दुर्लभं तन्महामूल्यं तित्तिरांगं स्वपाकजं सुवर्णसदृश
कारान्तं गभूमिः प्रतीयते सुवर्णवज्रकं विद्याद्धेमभूल्यं महागुणं मृणालनालप्रतिमं विवरैरुपसंश्रितं: केको
लवज्रकं प्राक्स्वर्णांगं वज्रचित्रकाः अंगं प्रतीयते यत्र वक्रग्रंथिसमन्वितं दुर्लभं तन्महामूल्यं ग्रंथिवज्रकमुच्य
ते इति खड्गकोषे धारामुग्धाभवेद्यस्य मध्ये कज्जलसंनिभं कृष्णरंगेश्रितं गात्रे विद्यात्कज्जलवज्रकं निरंगे रोप्यप्र
भाभं रीष्यत्रीलनिभं वपुः दुर्लभं तन्महामूल्यं कांतिलोहं प्रचक्षते अंगं दमनपत्राभं गंगे यस्मिन्प्रतीयते विद्या
द्दमनवज्रं त्वतीक्ष्णधारं महागुणं कृष्णांगं कपिलाभासमंगं यस्मिन्प्रतीयते नवकलांगं तन्न हि यास्पर्शैस्तस्मा-
द्विनाशनमिति इति खड्गलोहलक्षणं अथ खड्गलक्षणं विलसधर्मीजरे पुष्कर उवाच अतः परं प्रवक्ष्यामि ख
ड्गलक्षणमुत्तमं प्रधानदेहसंभूतैर्दन्तास्थिभिरविंदम लोहं प्रधानं खड्गार्थं प्रशस्तं न हि शेषतः खटीकाह्न
रुऋषिकवंगसूर्पारकेषु च विदेहेषु न यांगेषु मध्यमग्रामचेदिषु सहग्रामेषु वीनेषु तथा कालंजरेपि च लोहं प्र
धानं तज्ज्ञानो खड्गानां शृणु लक्षणं खटीकुहरजाता ये दर्शनीयास्तथैव च समताः कापलिदस्ताघिकायेमर्मग्राग्रु
रवसूपया नीलाच्छेदसहावंगाहृढाः सूर्पारकोद्भवाः सरूक्ताश्चैव विज्ञेयाः प्रभावंतो विदेहजाः अंगदेशोद्भ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

खङ्ग.
९८
108

वास्तीव्राः सहस्राः सहदास्तथा वेगवंतस्तथातीव्राणामध्यमग्रामसंभवाः ऋषसारालघवस्तीव्राश्चेदिदे
शसमुद्भवाः सहग्रामोद्भवाः खङ्गाः स्तीक्ष्णालघवस्तथा निर्व्रणा निर्मलास्तीव्राश्चीनदेशसमुद्भवाः
कालंजराभास्सहास्तेषां वृत्तामिलत्वाणं शतार्द्धं मंगुलानां तु श्रेष्ठः खङ्गः प्रकीर्तितः श्रेष्ठः खङ्गः प्रमाण
तश्चाप्यधिकविस्तरः तदर्धं मध्यसंज्ञोपस्तस्माद्धीनं न धारयेत् प्रमाणाभ्यधिके देवच्छिन्नं वेशानश्चैव च ख
ङ्गविधादितिशेषः उक्तप्रमाणान्यूनाधिकखङ्गधारणे वंशच्छेदो भवेदित्यर्थः दीर्घः सुमधुरः शब्दो यस्य ख
ङ्गस्य भार्गव किंकिणीसदृशस्तस्य धारणं श्रेष्ठमुच्यते खङ्गः पद्मपलाशाग्रो मंडलाग्रो मंडलाग्रश्च शस्य
ते करवीरपलाशाग्रसदृशाग्रश्च विशेषतः महीघृतसुगंधश्च पद्मोत्पलसुगंधिकः वर्णेनश्चोत्पलाकारः स
वर्णो गगनस्य च समांगुलस्थाः शस्यंते व्रणाः खङ्गेषु भार्गव श्रीवृक्षपर्वताकारलिंगपद्मनिभाश्च ये मंग
लानां तथान्येषां सदृशाये च भार्गव काकोलूककबंधाभा विषमांगुलिसंस्थिताः वंशानुगाः प्रभूताश्च
न शस्तास्ते कदाचन वंशः खङ्गस्य मध्यभागस्तत्र ये स्याकृतयोऽपि व्रणास्ते ध्यशुभदा ज्ञेयाः खङ्गेन पश्येद्वद-
नं तथा विहृणुयान्न च हस्तान विहृणुयात् विगतावरणं न कुर्यात् हस्याकोशात् खङ्गं नोद्घाटयेदित्यर्थः न
वास्य कथयेन्मूल्यं जातिदेशं कथंचन उच्छिष्टो न स्पृशेत् खङ्गं निशि कुर्यात्तु शीर्षके दिवा च पूजयेदेनं गंध

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

माल्यान्नसंपदा खड्गप्रशस्तमणिहेमचित्रं कोशे सदा चंदनचूर्णयुक्तं संस्थापयेद्भूमिपतिः प्रयत्नाद्देवेन तस्थैर्यं ।
स्वशरीरवच्चेति देवीपुराणे खड्गस्खलनं वसे त्रिशिखे स्पष्टसंदर्शी नान्यशस्त्रोद्भवं कार्यं मण्डलोद्गमयु-
तया स्फुटितं विदितं ह्रस्वं सव्रणं संपिहितं तथा मण्डलोद्गमस्थस्वस्थसंपिने मरणं भवेत् सव्रणे चापि — द्रो-
गस्फुटिते पातकी भवेत् भार्या माता तथा पुत्रो म्रियते विदिते नन्तु ह्रस्वेन लाघवं लोके दीर्घगापि — स्निग्धे
अन्यशस्त्रोद्भवेनापि संभवेन्मरणं ध्रुवं पंचाशदंगुलं खड्गं त्रिशिखं विचतस्रोऽष्टौ ईदृशं कारयेच्छास्त्रज्ञः प्रसि-
द्धिफलप्रदमिति वराहसंहितायां तु विशेषः अंगुलशतार्धमुत्तम ऊनः स्यात्पंचविंशतिः खड्गः अंगुलमाना-
ज्ज्ञेयः समांगुलस्थो व्रणः शुभदः श्रीवृक्षवर्धमानातपत्रशिवलिंगकुंडलाब्जानां सदृशा व्रणाः प्रशस्ता-
ध्वजायुधस्वस्तिकानां च कृकलासकाककंकक्रव्यादकबंधवृश्चिकाकृतयः खड्गे व्रणा न शुभदा वंशानुगा-
ताः प्रभूताश्च स्फुटितं ह्रस्वं कुंठं संछिन्नेन दृष्टनोत्तुगानं अश्रवनमिति वानिष्टं प्रोक्तविपर्यस्तमिष्टफलं क्व-
णिते मरणाय पराजयाय प्रवर्तने कोशात् स्वयमुद्गीर्णे युद्धं ज्वलिते विजयो भवति खड्गे कोशात्प्रवर्तने प्र-
निर्गमने बहिः स्वयमुद्गीर्णे खड्गे स्वयमेव बहिर्निर्गते नाकारणं विवृणुयान्न विघट्टयेत्पश्येन्न तत्र वद-
नं न वदेच्च मूल्यं देशं न चास्य कथयेन्नानिमानयेन्नैव संस्पृशेन्नृपतिरेव यतोऽशुचिः न विघट्टयेत् चालयेत्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नयन्तिमानयेत्क्रांगुलैर्भिनुयात् गोजिह्वासंस्थानो नीलोत्पलवंशपत्रसदृशाग्रः करवीरपत्रमूलाग्रमंडलाग्रः
प्रशस्तास्तुः निष्पन्नोनक्षेयो निकषैः कार्यः प्रमाणयुक्तः सः मूलेऽपिपतनेस्वामीजननीतस्यायनः छित्रे निष्प-
न्नः सिद्धः खड्गेनक्षेयः प्रमाणाधिकक्षेतनिकषैः वर्णैर्णोः प्रमाणयुक्तः कार्यः छेदनेतु दोषः मूलेऽपिपतनर
सादिनोक्तः यस्मिन्नरूपदेशेव्रणोभवेत्तद्देवावेद्धेऽपि वनितानामिवतिलकोपगुलवाच्योमशेवेहञ्च खड्गस्य
याशिवोसुष्पारूपतेसान्सकृशाहेनोच्यतेवेद्धग्रहणभागत्वर्थः अथवास्पर्शनियदंगंस्पृष्टानिस्त्रिंशाभ्रमदव
धार्य कोशस्यस्यादेशेव्रणोस्तिशाखंविदितैवं अस्यार्थः कोशस्थंसकोशंखड्गंहस्तेदृष्टोनाप्रस्मिन्वदेव्र-
णोस्तिनवेतिस्पृष्टाप्रश्नकर्तासौयंपदंगंस्पृशतितदंगमवधार्यविलोकाकोशस्यस्यकोशोनर्गनस्याखड्गस्य
प्रश्नकवव्रणोस्तीतिव्रणादेशः कार्यः हस्तकमसिशास्त्रंविदिना तन्नाहसपव शिरसिस्पृष्टेप्रथमेंगुलेद्वितीयेल
लाटसंस्पर्शे भ्रूमध्येचतृतीयेनेत्रेस्पृष्टेचतुर्थेचन नासोष्ठकपोलहनुश्रवणग्रीवांसकेषुपंचाया: ३२सिद्धादश
संस्था स्वयोदशैकत्रयोर्णैयः स्तनहृदयोदरकुक्षीनाभीषुचतुर्दशादयोत्तेषा: नाभीमूलेकयांगुलेविंशेकोन-
विंशतितः ऊर्वोर्द्वाविंशेस्यात्रूर्वोर्मध्येव्रणस्त्रयोविंशो जानुनिचचतुर्विंशेजंघायांपंचविंशेच जंघामध्येतु
लेकण— पादेनस्यांगुलीषप्तविंशाष्टविंशादिनिमेननगर्गस्य पुत्रमरणायनाभिधनहानिः संपदश्चवंपस्वप्रका

सल०
१०८
109

१०८

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

55

ङ्गुलसंस्पर्शे वर्णितः फलं निर्दिशेत्क्रमशः सुतलाभः कलहो वा गजलाभः पुत्रमरणं धनलाभः क्रमशो विना
शवनितामिति चित्तदुःखं तानि षट्प्रभृति लब्धिर्हानिस्त्रीलब्धिर्वधो वृद्धिर्मरणपरितोषाः ज्ञेयाश्चतुर्दशादिषु
धनहानिश्चैकविंशेव चिन्तामित्रनिर्वाणं धनागमोऽम्लसम्पदोऽसत्वं ऐश्वर्यमनन्तराण्यानि चक्रमात्रिंशति
यावत् अयमर्थः प्रश्नकर्त्रा स्वभावादेव प्रश्नसमये स्वशिरःस्पृष्टे कोणान्तर्गतस्पर्शस्य मूलादेव प्रथमेङ्गु-
ले वर्णो वाच्यः स्वेदस्वामिनः फलं च पुत्रमरणं निर्देश्यं ललाटसंस्पर्शे द्वितीयाङ्गुले वर्णो निर्देश्यः फलं च ध
नप्राप्तिः भ्रूमध्यस्पर्शे तृतीयेङ्गुले फलं च धनहानिः नेत्रस्पर्शे चतुर्थाङ्गुले फलं च संपदः नासास्पर्शे पंचमा
ङ्गुले फलं वधः ओष्ठस्पर्शे षष्ठेङ्गुले फलं च सुतलाभः कपोलस्पर्शे सप्तमाङ्गुले फलं च कलहः स्पर्शेऽष्ट
मेङ्गुले गजलाभश्च फलं कर्णस्पर्शे नवमेङ्गुले पुत्रमरणं च फलं ग्रीवास्पर्शे दशमेङ्गुले धनलाभश्च फलं अंस
स्पर्शे एकादशाङ्गुले फलं च विनाशः मरणमित्यर्थः उरःस्पर्शे द्वादशेङ्गुले फलं च स्त्रीप्राप्तिः कक्षास्पर्शे त्रयोद
शे फलं च चित्तदुःखं मनसः खेदः स्तनस्पर्शे चतुर्दशेङ्गुले फलं च लब्धिः अर्थलाभ इत्यर्थः हृदयस्पर्शे पंचद-
शे फलं च हानिः अर्थनाश इत्यर्थः उदरस्पर्शे षोडशे फलं च स्त्रीप्राप्तिः कटिस्पर्शे सप्तदशे फलं च वधः नाभीस्प-
र्शे अष्टादशे फलं च वृद्धिः द्रव्यादेः नाभीमूलस्पर्शे एकोनविंशे फलं च मरणं कटिस्पर्शे विंशे फलं च संतोषः गु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष- ११०
110

स्यस्पर्शे एकविंशे फलं च धनहानिः ऊरुस्पर्शे द्वाविंशे फले च वित्ताभिवृद्धिः प्राप्तिरित्यर्थः ऊरुमध्यस्पर्शे त्रयोविंशे फ
ले च निर्वाणं मृत्युरित्यर्थः जानुस्पर्शे चतुर्विंशे फले च धनागमः जंघास्पर्शे पंचविंशे फले च मृत्युः जंघामध्यस्प
र्शे षड्विंशे फले च संपदः गुल्फस्पर्शे षड्विंशे फले च संपदः गुल्फस्पर्शे सप्तविंशे फले वा स्ववनिर्हननादारिद्र्यमि
त्यर्थः पार्ष्णिस्पर्शे अष्टाविंशे फले च पैश्वर्यं पादस्पर्शे एकोनत्रिंशे फले च मृत्युः अंगुलीस्पर्शे त्रिंशे अंगुले व्रणानि र्दे
प्यस्यतिप्रत्येकं संबंधः फले च राज्यं वदेत परतो न विशेषफलं विषमसमसंख्याश्च पापशुभफलदाः परतः त्रिंशदन
न्तो नैवं विशेषफलं किं तु विषमांगुलस्थाः अशुभाः समांगुलस्था व्रणाः शुभा इति सामान्यफलमेव केश्चिदफ
लाः प्रतिष्ठा त्रिंशदन्यस्ततो प्रमिति यावत् केश्चिन्मयाशिरादिषु निमित्तं त्रिंशदन्यस्तो व्रणानि फलाः उक्ताः तथा चोक्तं प
+ वान्धारयेत् मूलाम्यमन्येगुलानिरितेषु व्रणेषु नाकृतिषु यावत्त्रिंशदंगुलं तावत्क्रमात्फलनियमः पुत्रनाशो ऽ
र्थागमो ऽर्थनाशः संचयो गृहदाहो मित्रलाभो व्याधिभयं स्त्रीलाभो मित्रोतिर्विषभ्रान्तः सधानं विपत्नोत्पत्तिर्वीहन
लाभः शोकः प्रव्रज्यास्थानंत्यातिकलहं दोमाहात्म्यं बललाभः संतापः क्लेशः पुत्रलाभो धनागमः शोकः मामा
एण्माधिपत्यमुपभोगो भयं दौर्भाग्यमैश्वर्यं श्रीनाशो ज्येति परतः सर्वे प्रशस्तं विद्यादिति श्रीशानसेवीनुत्रेवैदैतु त्रिंशदन्य
तो ऽपि विशेषफलमुक्तं तद्यथा तथा एकत्रिंशदंगुले संभ्रान्तिर्वाहनं भर्तारं विनाशयति द्वात्रिंशदंगुले पराजय
+ राशरेण स्वजनहरणमधिकृत्य नेषांप्रमाणानि जयन्त्यमंगलानि पंचविंशतिर्मध्यमं त्रिंशदजन्मचत्वारिंशदतो हीनमतिरिक्तं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मरिभिः करोति त्रयस्त्रिंशदंगुले पैरैर्भर्त्तारं पीडयति नीचस्य च कर्मणा वशगं करोति चतुस्त्रिंशदंगुले धनधान्य
मभाजनं पंचत्रिंशदंगुले मरणं भयः करोति षट्त्रिंशदंगुले पुत्रजयं भर्त्तुर्ददाति सप्तत्रिंशदंगुले पराजयमरिभिः
करोति अष्टत्रिंशदंगुले शत्रुमर्दनं करोति नवत्रिंशदंगुले कलधनैरेव क्लेशं नयति चत्वारिंशदंगुले कन्यालाभ
मरिजयं च प्राप्नोति व्रणेन खड्गस्थिते तथैकचत्वारिंशदंगुले शत्रुपीडनाज्जयं लभते द्विचत्वारिंशदंगुले स्वराष्ट्र
वर्धनं त्रिचत्वारिंशदंगुले दुःखं प्राप्नोति सेनापति रेव भर्त्ता भवति चतुश्चत्वारिंशदंगुले श्रियं विपुलां लभते पं
चचत्वारिंशदंगुले व्रणो भयंकरः स्यात् षट्चत्वारिंशदंगुले व्रणः सुखावहो भवति सप्तचत्वारिंशदंगुले स्वपर
पीडयति परपक्षं वर्धयति अष्टाचत्वारिंशदंगुले राजश्रियं भुङ्क्ते एकोनपंचाशदंगुले राज्ञो विजयं लभते पं
चाशदंगुले कलहवृद्धिर्भवति केचित्तु नराङ्कुमंगलं च चक्रवर्त्तित्वं नृपतेर्भवतीति करवीरोत्पलगजमदघृतकुं
कुमकुंदचंपकसमगंधः शुभदो निष्ठो गोमूत्रमेदः पंकामिषसमगंधः कूर्मवसासृक्क्षारोपमश्चाशुभप्रदः खेदो भ
वति गंधः पंकः कर्दमः आमिषं मांसं वैदूर्यकनकविद्युत्प्रभो जयारोग्यविवृद्धिकृ इदमोशनसंतत्रशास्त्रपानं
रुधिरेणाश्रियमिच्छतः प्रतीमां हविषाग्रेणावनुताभिलिप्ताः सलिलेनात्मयमिच्छतस्त्र विन्नं प्रदीमान्न्नेष्ट
वडवोष्ट्रखरेभदुग्धपानं यदि पायेन समीहते र्थसिद्धिं जषपित्तमत्स्याविवसादुग्धैः करिहस्तच्छिदये सततास्त्रगर्भैः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पायेन शत्रुवधारिना ~ घर्षितं मत्स्यपित्ते वल्मच्छागः एतेषां सर्वेषां कुरुपैः तालगर्भस्तालवृन्तनिर्यासलस्तस्य रि
तैः गजहस्तच्छेदनकामः पानं कारयेत् आर्कपयो ऽजविषाणमषीसमेन पारावतालिनावघृतः प्रलेपः शास्त्रस्य
तैलमथितस्य ततो स्यपानपश्चात् सिनस्यन शिलास्तम्भवेदियान्तः आर्कपयः अर्कक्षीरं ऽजविषाणमेषशृंगत
ल ख· स्यमषीनपारासमेन क्षारैः कदल्यामथितेन युक्तैर्दिनोषितैः पायिनमायसंपत् सम्यक्कृसितं वा रमनिनैतनि भ·
गेनचाम्लेनोहे घर्षितस्य कोद्य मथितेन युक्ते कदल्याः क्षारैस्त्रिन्वयः मथितेनके सम्यक्स्तिनं तीक्ष्णीकृते
कौयकुंठत्वं लोहरत्नाकरे यस्य यस्य यदा विंदन्तन्वेत्सर्वांगसुंदरं न खड्गमुत्तमं प्राज्ञः सर्वसंपत्तिकारकं ग्रंई
चंद्राकृतिर्यस्मिन् खड्गे स्वाभाविकी भवेत् अपि दोषसहस्राणि हन्ति चंद्रस्तमो यथा गदाचक्रेनयाशूलेऽमहर्मेर
लेनतथा यत्र स्वाभाविकं खड्गे स खड्गो नृपदुर्लभः एकवर्णो भवेद्यस्तु लक्षणैकेन संयुतः स खड्गराजो नृपमे वि
ज्ञेयः शुभकारकः निष्कलंको भवेद्यत्र रात्रे दिव विलेपितः मधुरो मधुवर्णाभः स खड्गो देवदुर्लभः आहते
यत्र मधुरो ध्वनिः समुपजायते शुभः स खड्गो नृपतेः शत्रुसंचयनाशनः कांस्यस्वनस्वाभाति यस्मिन् खड्गे
ते ध्वनिः खड्गोत्तमं तं वदति गिरिशः शुभवर्धनं खड्गेषु लक्षणान्यष्ट्येषु प्रकाशिते न खुरं शुभसंपद्यै सिध्यिते रा
त्रुसंपदे यस्याथो दर्पणे विम्बमथो मैव प्रदर्पणे स हितार्थिनः लक्षणानि तं खड्गं नरपुंगवाः यस्यायेदर्पणे ऽस्मत्प्वेना

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

योपि दृश्यते खड्गं मध्यगुणं प्राज्ञः खड्गशास्त्रविशारदाः अथोर्ध्वलक्षणं यस्य पदार्थे नैव दृश्यते अधमः स भवे
त् खड्गः क्षितिपानां भयावहः अहीर्ध्वलक्षणं यस्य नाधोर्ध्वलक्षणं भवेत् तं खड्गं मध्यमं प्राज्ञः खड्गशास्त्रविशा
स्त्रविशारदाः तिर्यक् यस्य भवेच्चिह्नं सपि सर्वांगगोचरं खड्गाधमं तं नरपतिर्दूरादेव विवर्जयेत् तिर्यक्चिह्नम
योर्ध्वं स्यादपर्यर्धेन वा भवेत् नापकृष्टं न प्रकृष्टं ज्ञेयं प्राज्ञः खड्गकोविदाः अथोर्ध्ववर्ण एकः स्याद्द्वौ वर्णौ भिन्नव
र्णिकः वर्णसंकरवान् खड्गो नृपाणां भयवर्धनः आहते यत्र खड्गे स्यात् ध्वनिः काकस्वरोपमः अकारो ध्वनि
र्वा स्यात् स वज्रे निरगुणो वै इति अथ विस्तरेण खड्गवर्णादिलक्षणमुक्तमौशनसे अथर्ववेदे जमदग्निप्रति शुक्रो भ
गवानुवाच अथ प्रशस्तान् वर्णान् वक्ष्यामि निबोध मुक्ताफलस्फटिकवर्णः सदृशास्तरुणादित्यकिरणसप्र
भो वैडूर्योत्पलवर्णः समुद्रसलिलसंनिभो नीलनीरदाभो भिन्नवैडूर्यनीलसच्छायो मयूरग्रीवावर्णो विमला
काशसंकाशः कांस्यनीलसवर्णः स्वर्णरजतवर्णसंवादी महानीलमणिवर्णानुकारी वेति खड्गानां वर्णाः
प्रशस्तो भवेत् श्वेतवर्णानुवर्णः खड्गो ब्राह्मणस्य पूजितः सहितस्तव वंशकरः सर्वसंपत्करश्च तस्य स्यात् रक्त
वर्णानुवर्णः क्षत्रियस्याभिपूजितः सहितस्थानवंशकरः सर्वकामार्थकरस्तस्य स्यात् हेमवर्णानुवर्णो वैश्यस्य पूजि
तो भवति सहितधनधान्यकरः सौभाग्यकरश्च तस्य स्यात् नीलजलधरवर्णः पि शूद्रस्य भवति सहितस्थानापुष्टिकरः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शुभकरस्त्वस्याश्च नीलवर्णानुवर्णास्तु धनस्य सर्वकामार्थसाधको भवति वैडूर्यो नलवर्णेन नृपस्य विजयावहो नि
र्दिष्टो यस्तु श्वेतवर्णः पीतो रक्तो वा तद्वर्णं शूद्रो न धारयेत तेषामन्यतमं वर्णं धारयतो वै शपस्य व्यापादो भवति
यत्तु समुद्रसलिलवर्णं खड्गं धारयतस्स्वकं भवतीते वै यपस्य वनीलजीमूतसदृशवर्णः कुलवर्धनो भवति
तेत्वं संप्राप्य महीपतिः सदा हृष्टहृद्दिसाम्नुयात् एवं च यदि वैश्यश्चावहेत तदा तस्य धनधान्यसमृद्धिस्तु मूला
खड्ग. स्यात् शूद्रो ऽपि यदि दैवयोगादेनं लभेत ततो महदैश्वर्यं प्राप्नुयात् इन्द्रनीलान्वक्ष्यामि दिनीपतिः सार्वभौमो भ
११२ वति मयूरग्रीवावर्णः खड्गी विधारितः परराष्ट्रं पीडयति दुर्धर्षं स्वं राष्ट्रं च कुलं च वर्धयति यद्यसौ ऽपि कश्चित्तं ल
भेत दासो ऽपि महतीं श्रियमाप्नुयात् तथा निर्मलनभस्तलवर्णः कांस्यनीलसप्रभः सुवर्णरजतपुष्पस्य खड्गो ·
विधृतो भूमिलाभं विपुलां श्रियं च दद्यात् महानीलवर्णो ऽपि धनरत्नप्रदो भवति नृपस्य च विजयं सहर्षं च ते न नि
हिंस्यात् द्विजः कृष्णं न धारयेत् क्रूरो ऽपि श्वेतं न धारयेत् वैश्यस्य रक्तेन धारयेन्नरपतिश्च पीतं न धारयेदित्येते सफला व
र्णा ऽभिहिताः इति प्रशस्ता वर्णाः उक्ता निंदितावसंते केशवर्णो मषी मलिनः सीससन्निभः समानस्थलो ह्रव·
र्णो नमक्षिकापत्रसमसन्निभवर्णो धूम्रसवर्णो हलः कलापोनिः प्रभश्चेति वर्णाः समासतो विगर्हिताः त
त्र केशवर्णाभः खड्गः क्लेशकरो मषीसवर्णो भयप्रदो भवति सीसवर्णाभस्ते विनाशाय कुलविनाशाय च लो

११२

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रवर्णो मात्तलस्य कुर्तिव्याधिकरो मल्लिकापत्रसवर्णो भयंकरस्तस्य च भोगविनाशाय धूम्रसवर्णो वह्निभयं व
धाति शुद्धधूम्रसवर्णः कुलक्षयं करोति कल्माषो रूक्षो निःप्रभश्च दौर्भाग्यपार्थिवनाशाय च कल्प्यते स्वरः इति व
र्णास्त्रुभाशुभाः कथिताः स्वरा वक्ष्यन्ते मृदंगवीणाघण्टाकोकिलध्वनिमनोहरो वृषभजीमूतहिरण्यस्वनसदृ-
शो वेदघोषसमानः शङ्खः स्वरसम्पूजितः समासाद्भवति शुष्कलेनवेदध्वनिनाननस्य विद्रुवास्तेजायते त
स्याश्रियं विमुञ्चेद् विच्छिन्नस्वनादिनगंभीरं शङ्खं यतः सोऽपि सूजितः स्वरः समो विशदश्च सूजितेनामे कार्य-
मेकं फलं वस्यते मृदंगध्वनिगंभीरेणाभ्युदयो भवति घण्टाघोषेणयावद्दः स्याद्वीणाकोकिलशङ्खः सौभाग्यकार
कः पुत्रलाभं विजयं च दद्दाति वृषस्वनः स्वरो जीमूतनिस्वनस्त्वान्यर्थलाभाय भवेत् हिरण्यघोषो वञ्जविध
नप्रदो वह्निरुद्दिनघोषो ग्रामलक्षणस्य चौक्तिनार्थसिद्धिदो एकवंसंस्थानमस्सर्धां नं करोति स्निग्धः शङ्खः परिजन
प्रियपदमाप्नुयात् स्वरोऽपि वलं गंभीरो हृद्विं स्वनादेन सारस्वनो स्निग्धः समः स्यान्सं पत्तिं विशदः सिद्धिमतिगं
भीरो विजयमिति स्वरशङ्खः कुरुते स्वलक्षणफलं यतद्विपरीतः स्वरो विगर्हितो भवति स्वर उक्तः शुभः स्पर्श-
स्तम्मसृणो वस्तने श्लक्ष्णचर्मसमानस्तालपत्रध्वनिर्जर्जरनिस्वनो भिन्नकांस्यसदृशाश्चेते शङ्खाः समासतो निं
दिता भवंति तत्र यः श्लक्ष्णचर्मसदृशास्वनः स्वरः स निःस्वं भर्तुर्व्याधिकारः छिन्नचर्मनिस्वनः क्लेशमात्रं वदति ता

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लव- ११३
113

लपत्र भाति निर्धननाशकरो लिनिर्जरशाखोतिनाशाय लिङ्गं भवेदिति कांस्योपमशब्दो वित्तनाशाय कल्पते खड्ग
स्येते खड्गशस्त्रविशारदैः श्रमस्तु सर्वं खड्गग्रंथादिलक्षणं श्रीशौनकसादि पत्रवेदेषु रूपं विस्तरभयान्न लिख्यते इति
खड्गलक्षणं अथ खड्गभेदाः श्रीशौनकमेथ पत्रवेदे अतः परं खड्गनाम वक्ष्यते क्रियामरकोमार्गस्थो ग यथि त्रता-
लिनइति पंचैते पंचैव सन्नाख्याः खड्गाः कनीयांसो वेदितव्याः स्वल्पसंचाराः स्वल्पसंज्ञाख्यो मध्यमोत्तमश्चेति
पंचमध्यमाः खड्गा भवंति दुर्दर्शविजयः स्वमंदोनंदनः श्रीदः पंचोत्तमाः खड्गा भवंति तेषां मध्ये द्वाविंशमंगु
लः प्रथमः खड्गो भवति ततः परेषां चतुरंगुलादिवृद्धि तत्तरोत्तरा भवति तथा विंशतिपलिकप्रायः शेषाणां
मष्टपलादिवृद्धिः पलानां चतुरंगुलानां न प्रशस्तो भवति अष्टाष्टपूर्णमूलष्टाः संहितममध्यः समकाय
श्चेति खड्गाश्चतुर्विधा वेदितव्याः पंडितैः पत्रं इति तेषां द्विविधः कायो भवति एकधारो द्विधारश्च सुवानि
तद्वादशभवंति शूलाग्रः शिखराग्रः समाग्रो मंडलाग्रो गोजिह्वाग्रः पार्श्वाग्रो वक्रकुटिलाग्रः सद्रूकारपत्राग्रो-
मंडूकाग्रोथ कमलदलाग्रः पद्मोत्पलपुष्पफलोपम सुवो अहि सुवो शमसुवोन्येवमस्य खड्गस्य द्वादशभवंति
द्वांगुलोपमस्य विस्तारो मध्यमस्य चतुरंगुलो विस्तारो भवति इति खड्गभेदाः अथ चक्रलक्षणं श्रीशौनन
मेथ पत्रवेदे नमदयिंशतिमुक उवाच वक्ष्ययथा प्रभ मपदिश्य मानं निबोध तत्रोत्तममध्यमाधमभेदेन चक्रं ।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिविधं भवति संयुक्तमष्टभिरारैरुत्तमं षडारं मध्यमं चतुर्भिरारैः संपन्नमधमं भवति तत्र श्लोकः अष्टारमुत्तमं चक्रं षडा
रं मध्यमं भवेत् जघन्यं चतुरारं स्यादिति चक्रं भवेत्त्रिधा द्वादशपलमुत्तममेकादशपलं मध्यमं दशपलमधमं चेति बा
लानां चक्रे अबालानां तु पंचाशत्पलमुत्तमं चत्वारिंशत्पलं मध्यमं त्रिंशत्पलं कनिष्ठमिति तथाष्टांगुलमुत्तमं सप्तांगुलं
मध्यममधमं तु षडंगुलं भवति बालानां अबालानां तु षोडशांगुलमुत्तमं चतुर्दशांगुलं मध्यममधमं द्वादशांगुलं भव
ति तत्र श्लोकौ द्वादशैकादशदशपलानि क्रमशः शिशोः त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पंचाशत्प्रतिलोमतः बालानां त्रि
विधं चक्रमष्टसप्तषडंगुलं अबालस्य द्विरष्टौ सप्तद्विः समद्वादशापि च त्रिविधं च नेमिप्रमाणं श्रेष्ठमध्यकनिष्ठं चे
ति तत्र त्र्यंगुलाप्रथमाऽप्रथमानेमिः सार्धद्व्यंगुला मध्यमा नेमिः द्व्यंगुला तु कनिष्ठा नेमिः नेमिरुत्तममध्यमकनी
यसां मध्ये परिमंडला नेमिः स्यूतमणिरत्नालंकृता स्थूलमूला च या नेमिः सा चक्रे पूजिता भवति तत्र शिल्पिभि
र्विचित्रमनेकविधसंस्थानमतिमनोहरं सुधारमव्रणं च चक्रं कर्तव्यमिति इति चक्रलक्षणं अथ परशुलक्ष
णं औशनसे धनुर्वेदे जमदग्निं प्रति शुक्रः प्रोवाच यथोपदेशमुपदिश्यमाने निबोध परशोरेवं प्रमाणं चोत्त
ममध्यमाधमानां नराणां स्वपाणिः पाणिमुक्तश्चेति द्विकर्मा परशुर्भवति तत्र पंचाशत्पलिकः श्रेष्ठश्चत्वारिं
शत्पलिको मध्यमस्त्रिंशत्पलिकः कनिष्ठ इति ज्ञातप्राणस्य पुरुषस्य सर्वोपसमयात्त्रिविधः परशुर्भवति श्रेष्ठस्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सार्धचतुरंगुलं मूले सार्धत्र्यंगुलं मूले मध्यमस्य सार्धद्व्यंगुलं निकृष्टस्य मूले विस्तृतं भवति तथा मध्यं सार्धपंचां
गुलं विस्तृतं चोत्तममध्यमकनिष्ठानां भवति तथाग्रमपि पंचदशांगुलमुत्तमस्य सार्धत्रयोदशांगुलं मध्यमस्य
द्वादशांगुलं निकृष्टस्येति परशोः फलं तथोत्तमं द्वादशांगुलायामं मध्यमं दशांगुलायाममधममष्टांगुलायाम
लक्ष· मित्येवमपि त्रिविधं भवति कणपदंडप्रमाणमुत्तममध्यमकनिष्ठत्वभेदात्त्रिविधं सल्लकीयवाशोकार्जुनशि
११५ रीषशिंशपासनराजवृक्षेंद्रवृक्षतिंदुकप्रभृतीनां द्रुमाणां दंडः प्रायो भवेत् यस्तु सपाणिः परशुः स यथाका
मं येयो ध्यः इति राजवृक्षः शोणाकः धनवृक्षः इति प्रसिद्धः इंद्रवृक्षः देवदारुः इति परशुलक्षणं अथ तोमरल
क्षणं श्रीशनसे धनुर्वेदेषु क्तो भगवानुवाच जमदग्निप्रति वत्स निकोधय यथाप्रश्नमुच्यमानं तत्र दंडान्वितं सर्व
लोहं चेति तोमरं द्विविधं भवति यत्तोमरं सदंडं तल्लक्षेपाते च भवेत् यत्तोमरं सर्वायसं तत्कार्ये याते प्रयोजयेत्
तच्च निकृष्टमध्यमोत्तमं भूपत्रिविधं भवति तत्र चतुर्हस्तप्रमाणं निकृष्टं सार्धचतुर्हस्तप्रमाणं मध्यमं पंचह
स्तप्रमाणमुत्तमं भवति तथा च कलनाग्रोचाग्रं द्वितीयतृतीयं चेति त्रिधा मध्ये द्व्यंगुलकलितमेकं स्यात् स्म
ध्यात् ऊर्ध्वं त्र्यंगुलकलितं द्वितीयं स्यात् मध्यात् ऊर्ध्वं षडंगुलकलितं स्यात् कलनया तृतीयं स्यात् तत्र एकं निकृष्ट
अंगुलं मध्यमं षडुत्तमं कलनाग्रा तथा तोमरास्त्रस्य परिणाहः परः षडंगुलो भवति सार्धपंचांगुलो मध्यमः पंचांगु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लः कनिष्ठ इति त्रयाणां देशानां त्रयः छेदाः छेदस्यान्योप्यर्थः छेदनपात्रमावंत्यो मागधो दाक्षिणात्यश्चेति तत्रावंत्यं
पत्रोमरं तनत् शाणसंस्थानं भवति मागधं तोमरं प्रोक्तं संस्थानं भवति शाणः करपत्र तेषां मुनिनिर्देशतो वेदितव्या
निर्दंडस्तु सर्वेषु समयुलाश्चमयो वेश्ममध्यश्चेति त्रिविधो बोध्यः कालेक्षुतन इति इति तोमरलक्षणं अथ कर्णपल
क्षणं श्रीशानसे धनुर्वेदे जमदग्निं प्रति भगवान् शानाः प्रोवाच साधु पृष्टं कर्णपानां विधानं यथोपदेशं कथया
मिश्रण विंशत्यंगुलो ऽष्टादशांगुलः षोडशांगुलश्चेति श्रेष्ठमध्यमाधमभेदेन कर्णयोंगुलमानेन त्रिविधो भवे
देवं पलमानेन विंशतिपलः षोडशपलो द्वादशपलश्चेति बालयोग्यानामेतत्प्रमाणमुक्तं अबालानां तु क।
र्णयस्त्रिंशत्पलः श्रेष्ठः पंचविंशतिपलो मध्यमो विंशतिपलस्तु निकृष्टः स च त्रिंशत्यंगुलः श्रेष्ठो द्वाविंशत्यंगु
लो मध्यमः कनिष्ठस्तु विंशत्यंगुल एव भवेत् खेटकमपि कर्णयस्य त्रिविधमुत्तमं द्वादशांगुलं दशांगुलं मध्यमम
त ष्टांगुलं तु निकृष्टं बालानामेतत्खेटकं अबालानां तु निर्बोध विंशत्यंगुलमुत्तमं अष्टादशांगुलं मध्यमं षोडशांगु
लं निकृष्टमिति अन्त्रकर्णयो मन्त्रः संकुचितकोणश्चेति त्रिविधा भवंति कर्णाः मन्त्रः समानश्च व्यर्थः कर्णपाः
नां तया निशाताग्राणि तानि बलवंति निर्व्रणानि च कर्तव्यानि तेषां मुखानि वेदितव्यानि च तत्र संकुचमाग्रे व्रीहिव
क्रं शिखराग्रे चेति यः पीनाग्रो निर्व्रणो बलाद्यः सज्जातो दृढो ऽस्त्रत्रयः स भयशाद्वाल्यः प्रियदर्शनश्चेति ज्ञातव्याणि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुष्पस्य प्रशस्तः कृपाणो भवतीति ॥ इति कृपाणलक्षणं ॥ अथ शक्तिलक्षणं ॥ औशनसे धनुर्वेदे जमदग्निं प्रति भृगुरु-
वाच ॥ वत्स जमदग्ने शृणु यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ उत्तमा मध्यमा कनिष्ठा चेति तिस्रः शक्तयो भवन्ति तासां दैर्घ्यमतविधिः
वैणवो दारुमयो दंतमयो वा श्चेति ॥ सशिखप्लवं निर्व्रणत्वं व्रणपूजितत्वं चेति दंडगुणास्सुस्लास्युः पंचहस्तास्तूत्तमाम-
ध्यमा द्विवितस्तिहीना त्रिवितस्तिहीना तु अधमा भवन्ति तासां कलाह्वयाय चतुस्तिलक्षणं भवतः ॥ फलद्वयं भवति द-
स्तमात्रमतितीक्ष्णाकायभेदनसमर्थमतिघनं सुदृढं तत्र निस्त्रिंशाकारं कार्यं संदिम्रमध्यभागं भवति ॥ मूध्यफल
मितराभ्यां कलाफलाभ्यां युक्तं श्रितं वा भवति ॥ तच्च द्विविधं मूलयुक्तं मूलाश्रितं मुखयुक्तं चेति ॥ तत्र दंडे पत्रमे
गादिचित्रान्वितं नागवेधैर्वैर्भीयात ॥ अथोत्तमायाः शक्तेः फलाये गुणशतपलवर्द्धितं गौरवं भवति मध्यमायास्त-
शीतिपलं कनिष्ठायाः षष्टिपलमिति शक्तिलक्षणमुक्तमिति ॥ इति शक्तिलक्षणं ॥ अथ चोम्यकलक्षणं ॥ औश-
नसे धनुर्वेदे जमदग्निं प्रति भृगुः प्रोवाच ॥ शृणु वोल्कानां लक्षणं वोल्कस्यार्थे दंडं सुपकल्पयेत् तस्य ग्रहण-
विधिर्वक्ष्यते ॥ नातिबालो नातिवृद्धो न कीटैः कर्षितो न छिद्रो न भिन्नो न सव्रणो न सगर्भाधानकाले नापि फलका-
ले न पुष्पकाले गृहीतः प्रोक्तद्रुमाणां मध्ये द्रुमोऽन्यतमः प्रशस्तो ग्राह्यः स्थानस्य दंडस्त्वमेवं विधं द्रुमस्तु क्रमेण ॥
गृहीतास्समादितो नात्युस्नेनातिशीतले च देशे विन्यस्य विपर्यासेन संस्थाप्य द्वयं प्रशान्तोऽरण्ये तनोऽग्निकर्मणि स्व

लद्व ११५ 115

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समाह्निंतं विधायवत्सरसेवं कृत्वा पुनरष्टांसंयोऽश्मांस्तं चकृत्वानमवर्णमयं कारयेत्समंतादिति दंडकल्पः एतेनै
वच विधिना सर्वान्प्रकल्पयेत् दशहस्तो दंडः श्रेष्ठो नवहस्तो मध्यमः कनिष्ठस्त्वाष्टहस्तो भवति तस्य दंड
स्योभयोः पार्श्वयोः सम्यक् प्रयोजयेदागमानुरूपमयोमयमंभोजकर्णिकासंस्थानेष्टनवा चत्वारस्त्वेवा प्रमाणेन
यच्चेष्टं फलद्वयं तथा हस्तमात्रप्रवेशेन प्रमाणेनाष्टौ कोशौ स्यातां षडंगुलहीनो मध्यमस्य चत्वारंगुलहीनो कनि
ष्ठस्य तेषां त्रयाणामपि मध्ये कलना भवति वोन्छ्केकानां पलमानेवक्ष्यते तत्र पलानां शतमुत्तमस्य नवतिः पला
नि मध्यमस्याशीतिपलान्यधमस्य भवंतीति इति वोन्छ्कलक्षणं अथ गदालक्षणं श्रीशनस्य पत्र्वेदे जमदग्निं प्रति
शुक्रउवाच गदालक्षणं वक्ष्ये तत्समाहितो निबोध तत्र गदा पंचाशदंगुलायामा श्रेष्ठा चत्वारिंशदंगुलायामा म-
ध्यमा त्रिंशदंगुलायामा निकृष्टा भवेदिति त्रिविधा गदा बुधैरुपदिष्टा पलानां सहस्रमुत्तमायाः शतानामष्टौ मध्य-
मायाः षट्शतानि कनिष्ठायाः इति गदायाः त्रिविधं गौरवं भवति सैवलक्षणलक्षिता गदा प्रयोक्तुः शास्त्रेनोरहीन-
त्वा यस्तु बलदर्पितो समर्थं गौरवोदेवदेववशाधिष्ठितसंतोष्टलक्षणानि तस्य प्रयुक्तस्य च दोषाः संभवेयुः तथा या-
गदालघीयसी भवति न सा संग्रामेषु हविशास्त्रैः प्रशस्यते तस्मात्समासर्वेषां प्रशस्ता भवति पाहिश्यती चोरमहा
रेचारिकासच संचारमोक्षसमेता अभिधीयते अस्ताभ्यन्तरात्मलिखी हगात्रावणा रहिता सुविहितापियदर्शिना।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कर्त्तव्या गदो दशांगुला या मोदशांगुलपरिणाहस्तत्र याणां पुरुषाणां मूलनः सुदृढ्याणि यमगर्भोपमं स्त्रीणां चं
द्रोपमं वा अग्रमूले विवृत्तैः श्वित्रितं भवति स्थूलाग्रा विशिष्टा चेत्तस्यां मध्यमा तालमूलाकृतिर्निकृष्टा भवति तम·
कांचनपदैरजतपदैर्वा वज्रविचित्रितरूपैर्मूलमध्याग्रवंधनैर्विचित्रीकृता गदा श्रेष्ठा भवति सर्वशस्त्रेषु साहिक्रिया·
लद· विधो वपुष्मला ह्ललवन्ना च सर्वयोग्या भवति नानाविचित्ररत्नैः कृता सर्वेभ्यः शस्त्रेभ्यः श्रेष्ठा तथा साहि गदा शस्त्रं चैरावत
११९ वेत्यभिधीयतइति राजविजये पंचाशदंगुलो दंडो दलेषु र्कोणुला गदा दला निषोडशो वसुः कलशोंगुलमात्रक
।।८ इति इति गदालक्षणं अथ कुंतलक्षणं श्रीशमनस्य धनुर्वेदे एकाकुंतोन्यविरनेनतरं कुंतद्रव्यं वक्ष्ये वेणवे
त्रनालचंदनशिंशपासनखदिरदेवदारुश्चेति कुंतस्य दंडद्रव्याणि तत्र दंडः सप्तहस्तप्रमाणः श्रेष्ठः षड्ढस्ते
मध्यमः पंचहस्तश्च निकृष्टो भवति लोहस्याकारो द्वौ भवतः एकं पुष्कलावर्त्तं द्वितीयं वीनोच्छितं चेति तत्र वीनोच्छि
तं पलोहं नीलाग्रयत्तु पुष्कलावर्तं कुंतलोहं मध्ये तयोस्त्रिपंचपरीक्षायत्ताशिनेनदतिनत्नीलांणयत्रिः शद्धृतनमध्ये निपा
नेच पद्मसनेनत्त वीनोच्छितं नीलां यत्र मतितनुष्कलावर्त्तमध्ये भवेत् कुंतस्य च फलेन तन्मध्ये नालोहेन कर्त्तव्यं
नीलाग्रन लोहेन तथा शाकार्यातयोरेलाभे शेषाणि लोहानि शोधयित्वा कुंतफलानि तैः कारये तत्र समयणि शाक
खर्जूरीवेत्रकरवीरवेणुनालानां केतकाः स्तस्याः एवाकारं कुर्यात्रसन्निभं तया कर्णसंस्थानं वा कर्त्तव्यं तत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निर्व्रणंमनोहरंशिरस्त्रीलिंगंशुभंच श्रेष्ठंचषोडशांगुलायामं मध्यमंचतुर्दशांगुलायाममधमंद्वादशांगुलायामंभ
वति षडंगुलविस्तारंसार्धपंचांगुलविस्तारंपंचांगुलविस्तारंचक्रमाद्भवति हिंगवबाहल्येसार्धैकपञ्चबाहल्यमेकप
ववाहल्यंच तत्रश्लोकाः वैराग्यादिक्रमजातीनांकार्योदंडः सचत्रिधा समषट्पंचहस्तोमात्तुंगमोमध्यमोध
मः तस्याकरौचदौस्यातांचीनपुष्कलावर्तकौ तत्रैकलौहलोहस्यहिनीयोमध्नलया ततःफलेमध्लोदे
नयात्तांनीलोनकारयेत् समपर्णादिपत्राणांसमाकारंफलंभवेत् षोडशांगुलमायामेषडंगुलंचापिविस्तरे
यवहीनयवाङ्गुल्यंश्रेष्ठंकेनफलंभवेत् मध्यमाधमयोर्हीनिद्व्यंगुलार्धांगुलेनच आयामोविस्तरेवत्सबाहु
ल्येचयथाक्रमम् सुगंधतैलसमत्वंसुवर्णत्वंब्राणशब्दजिततत्वंछायाशब्दजिततत्वंचेतिफलगुणाः चंपकोत्पल
चंदनागरुपद्मश्रीरसुगंधदाफलस्यगंधसंपत् तयायुक्तेफलंभवति वसागंधिविषगंधिमांसगंधिवि
गंधिचनिंदितंभवतिमधुरंयशःखम्लयत्कषायंभवतितत्फलंपीतवर्णंतं पलवर्णंकटुतिक्तंनिंदितंभवति
शाहस्तरिरणस्थालीशब्दवत्घंटाशब्दवत्प्रशस्तः भिन्नपात्रशब्दवत्खरीशब्दवत्खशब्दोनिंदितोभवति वैडू
र्यचंद्रसमानवर्णोनीलोत्पलसदृशवर्णोनिर्मलाकाशसवर्णोमनःसोपुष्पनिभंवाकेफलंप्रियंभर्तुर्ददाति
मधुकेशमषीसमानवर्णोसितनीलोत्पलमृद्धिकावर्णोचनिंदितंभवति हंसमधुकमयूरताम्रचूलवहद्दनेया

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वर्तकूर्ममत्स्याः अन्ये च मंगलप्रशंसिनः परार्थाः कृतव्रणेषु यदि दृष्टं पतेन दानेन धर्मकामार्थसाधकानि निर्दिष्टाः पा
डुकोलूकवायसश्वश्वगृध्रजंबूकशृगालकृकलाशाः अन्ये च निंदिताः परार्थाः दृष्टं पतेन व्रणेषु नेष्टाः श्रियमपहरं
ति वन्सेनि व्रणलक्षणं छाया वस्त्रेन ध्वजपताकाचामरछत्रतोरणशिबिकावेशमांकुशवर्धमानभृंगारगज
तन्त्र. त्वरंगायस्मिन् कृतफले दृष्टं पतेन पीतकाषायांतरगताः सकृतः प्रशस्तमव्रणपकृत्तो न लभेत भृंगारः कारकः
१२ वानरकुरकुलतेहकल्लकरमदिष्टवायसोलूकाः अन्ये च निंदिताः यदि कृते स्युः पीतेव्यकालदासकृतः श्रियं
भुज्यमानामपि विनाशयेत् यस्मात् दशांकृते विभ्रमान्सवधंवर्धयेत् अलभेत महिषीचर्मक्वाथेन तस्य सम्युक्तिचूर्णानि
११ वर्षवि ते तिसमभागानि कारयेत् चूर्णितं कृत्वा तेन चूर्णेन फलं वेष्टितं कृत फलं निर्मलं भवति दुर्गंधं न भवेत् यामलेन
नलिप्यते न तत्र चर्मकोशसमन्वितं समादितं कारयेत् नालिकां निर्व्रणां सुदृढां पयामेन अन्न वर्धे स्वसप्तांश्चैहेटैः स
वर्णामयेरजतमयेर्वा मणिरत्नालंकृतैर्नालिकाकर्तव्या तथा वोत्थके कृते सम्यक्कर्तव्यं नालिका सहजं वा नालिका
त्रासिष्टाकार्या हरीतकीसदृशा तले बिल्वफलाकारे कपित्थफलसदृशे वा सुदृढमष्टाङ्गे वा कलशामलकाका
रे वोन्छकसमभवे सर्वोपस्करान्वितं कृता पुं पंचदशपलं श्रेष्ठं पंचाशत्पलं मध्यमं चत्वारिंशत्पलं निकृष्टमिति प्रव
लरिपु विनाशकं चक्रं कारयेत् नन्तसप्रमाणादधिकं गोरवयोः हि सम्यग्बलमविदिता कृतमायुधमवहेत्सा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दीनस्याजीर्णमजानतोथवृहद्वस्येवातिभक्तमग्रानं कुंतानासुखं विधीभवतीति राजविजये एकादशाकारः कुंतोनवहस्त
लस्त्रयार्धलः सममहस्तोभवेद्बलः तेप्राणिपंचहस्तिकोति इति कुंतलक्षणं अथ प्रसंगात्पताकादिलक्षणमु
च्यते राजविजये त्रिकोणान्वृहस्तावसेन्यस्यास्यात्पताकिका राजस्यैकादशाकरासमहस्तान्तथोपरि पंचहस्ता
पताकीनांयष्टिः स्यात्तन्मात्रिकाश्वेताः रणक्रमात्तीनाकुस्तावर्णचतुष्टये नीलोत्पन्नजानोविज्ञानतुरवेव
रणित्रयेषुभेति इति पताकालक्षणं अथ डिंडिमलक्षणं राजविजये मूलेवितस्तिभिः सार्धहस्तसुविस्त
ते हस्तत्रयसमन्तेयस्यातस्य बिलोद्रजः यमलैः कीलकैर्बद्धमाहृतंसार्द्रचर्मणा उष्ट्रस्यंवादनेदहेनाहतेषु
णपत्रस्यगिति इति डिंडिमलक्षणं इति नानायुधलक्षणप्रकरणं अथ राजलक्षणप्रकरणं तत्र रिपुविज
यः फलमेषांनागानांनाथलक्षणोत्कानां संचरणसाहसनिरतस्य भवति निर्भ्रमेन वेदस्य सांग्रामिकाद्विपा राज
नूनमप्यकलक्षणलक्षिताः राज्ञा तथापि लक्षणवर्जितो वर्जनीयश्च सर्वलक्षणसंपूर्णो यो भवेद्गजउत्तमः
संग्रामादिषु कार्येषु पार्थिवस्तं समारुहेदित्यादिवार्हस्पत्यसंहिता वचनैः सुलक्षणगजैरेव रिपुविजयो भव॰
तीत्यतो राज्ञा लक्षणहीनं गजं विहाय संग्रामादिषु सुलक्षणमेव गजमारोहेदित्युक्तं तत्र च किंलक्षणोभिमत
इति तल्लक्षणमुच्यते तत्रादौ गजप्रशंसाऽभ्यते विसुधर्मोत्तरे पुष्कर उवाच कुंजराः परमाशोभा शिविरस्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

व आपतः कुंजरेष्वेव विजयः पृथिवी द्विता शिविरं गृहं तेषां समर्जने पतं पालने च भस्मूतम यथा वज्रपतिः कुर्या
न्मथर्वाः कुंजरा मताः तावं तेष्व न यावार्फा यावता यो ष्वणे स्थले कंतेशाकं न धार्यास्ते द्व पिताड्ःखिनास्तथा ड्ः
खिनास्तेन रणाह्वसुः कुला निमग्न सज्जनम तस्मात्तेषां महत्वे कार्यं यशः श्रीविजयप्रदं सेनद्वयरुषारूढैः सुसंनद्धै
लव॰ स्तुरंगमैः अनस्तैरपि यत्युक्तं बलं परबलप्रणुत तद्देवस्यापि समरे कुंजरस्य विचर्मणः न शक्यं युध्यते स्यातं
११८ वेगाद्दापन तो हि ज भिन्नानां रामसंख्यानां संहतानां च भेदने एकः कुद्दोरणे कथं कुंजरः साधुचोदितः मदक्लि
118 न्नकपोलस्य किं चिद्वं विनव लक्षः षट्पदाभोगगंधस्य कः क्षोभां कथितं तस्मः वेगेन धावमानस्य प्रसारित क
रस्य च कः समर्थः पुरः स्थातुं लब्धकर्णस्य दंतिनः यस्य फूत्कारमात्रेण तुरंगमशतान्यपि स्वाङ्गच्छायामपि वेगे
न विद्रवंति दिशो दश तत्से मक्रमायत्र सन्नपोपस्य कुंजराः मूर्तिमान् विजयो नाम कुंजरो मदगर्विताः स
पताकादेवता व्यास्तेम तज्जानामपदकाः वाहनार्थं कृता राम स्वयमेव तवेयम् दृष्ट्वा पताकाभिरलंकृतं तन्ना
गेंद्रसैन्यं प्रबलं यथा द्विं पतंति शीघ्रं हृदयानि रीणां तस्मात्प्रधानाः सततं नरेंद्रा इति पालकाप्ये प्रसव
देवतानां गादेव जानामापन्नृलतः स्वामिनश्च भवंत्येते न तस्मात्स्यो कार्यास्तु भूमिदाः राज्ञा रूढवेगजो भाति गज
स्थः शोभते नृपः उभयो रविशेषत्वाद्राज्ञां मान्याः समागजाः द्व पितास्तु पिता स्वापि व्यापन्न समहती श्च नम

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जेतिनृपंयस्मात् वांथवास्तेनचारणाः पुत्रदारान्मसंदेहे संयौचैवात्रभूभृतां वितयेऋषिभिस्तस्माःकुंद्दाना-
गास्तरात्तसाः निस्त्रिंशात्पिकनाभुशस्तेनागामहीपतेः भूपंयुध्यंतिरक्षंतिवहंतिरणमूर्द्धनि भूपंरणमूर्द्ध
निवृद्धंतिरक्षंतीतिसंबंधः प्राणांस्त्यजंतिकृच्छ्रेणस्थ्यांगास्तेनवारणाः प्राकारगोपुराट्टालकपाटोद्घाटनादि
षु भंजनेमर्दनेचैवनागावज्रोपमाः स्मृताः स्वमैसंपरिरक्षंतिपरसैन्यविमर्दनाः घटाभिरन्वितानागाःप्राका
रास्ववद्दुर्जयाः सरसैवागतंसैन्यंघटास्थावारणाः पुनः घटागजसमूहः नृपतेःप्रतिसंधतिसेतुवंधरवाणिवं
सहस्रोन्यतिते कार्यंनागात्स्रोमहीपतिः एकांगविजयंकुर्यादेकस्त्रविजयःस्मृतः प्रारजालावितमुखैःको
म:प्राकृःपरगजात् हंनंप्राकारमन्नमथ्यरथाश्चनरकुंजरं एकप्राक्षिप्रहारेणम्रियतेष्वोनरोपिच सहेछ्रि
प्रहारणशतेपुर्हैवारणाः मोहान्मरणागतिनीास्तिवदान्मरास्मृतिः नास्तिकुलाम्परंभूतंनास्तियानंगजात्प
रं शृथिव्याभूषणंमेरुःशार्वर्याभूषणंशशी नराणांभूषणंविद्यासैन्यानांभूषणंगजः तस्मात्सेवकिलनद्वामि
धार्मिकोपत्रपार्थिवः तस्मिन्नयत्रविख्यासस्तस्मैस्थंयत्रकुंजराः शीलान्नशोभतेरूपंवाविभ्रमःशोभतेकुले
कुलेजनपदः प्रक्षिन्नशोभतेरण्ये शोभतेसगजेवलं नासौपुमानयस्याहितानभार्यानासैन्यंयोपस्यमाप्रभान
नागाःयद्दहनमसिंहं तुयद्दशाहमपार्थिव यद्दतनत्शोर्यमयाहतेनेढसैन्यमकुंजरं यतःसमंतनोपमीय

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तद॰ ११९ 119

नोऽधर्मस्ततः फलं यतो रूपं ततः शीलं यतो नागस्ततो जयः। खड्गतोमरचक्रैस्तु नागस्कंधहता नराः हणन्त्यंगेन गच्छं
ति तस्मात्सर्वोपमा गजाः। प्रासादासनशय्यासनिषण्णाः शिविकास्य च। वर्द्धन्ति प्रमदा राजन्नुद्याने शुसरस्सु च। कीड
न्तु च नरेन्द्राणां जले पुष्पितपंकजे। स्त्वपयन्ति गजाः ह्रस्तैर्लम्बपुष्करपुष्करैः। पुष्करः कराग्रं पुष्करं कमलं। स्त्रियो व-
नार्यंते तेन मन्मथ इव निष्फलाः। नास्ति हस्तिसमो बंधुर्नास्ति हस्तिसमो रिपुः। नास्ति हस्तिसमः कायो नास्ति हस्ति
समो बली। कारणेन तु सामर्थ्यविशेषेण हरस्पृते त्रयाणामपि सैन्यानां विद्यंते नैव ते गुणाः। हस्त्येनेपि स हि राज
न् हितेष्वपि चैवं धुर्य चंद्रहीना यथा रात्रिः सस्यहीना यथा मही। नागहीना तथा सेना विस्तीर्णापि न शोभते। ये चै
वान्ये च बहवो वारणानां गुणास्तथा। तस्मात्प्रयत्नाद्देतेन सुप्रज्ञा निवृत्तिमत्सु। तेषाममितसत्त्वानां कर्तव्यमनु
पालनमिति। इति गजप्रशंसा। अथ गजोत्पत्तिः। पालकाप्य पुरा ह्यासन्वारणा राजन् कामगाः कामरूपिणः
चरंति मानुषे लोके देवलोके च पार्थिव। अथांतरे हिमवति महान्न्यग्रोधपादपः। द्विपोजनशतं राजन् छिन्नस्त
द्वाघतः ऋषिर्दीर्घतमा नाम तस्यासीत्स परिग्रहः। न्यग्रोधे तु कदाचित्तु समाजग्मुरनेकशः निपेतुस्तस्य शा
खायां सर्वे ते सहिता गजाः। अतिभारेण तेषां तु सा शाखा शतयोजना। विदारयंती तं देशं निपपात महीतले। ते
चापि वारणाः सर्वे शाखामन्यां समाश्रिताः। ततः कोपसमाविष्टस्तान्गजानृषिरब्रवीत्। मददर्पोद्धताय

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सान्यमभतः परिग्रहः विमुक्ताः कामचारेण भविष्यथ न संशयः नराणां वाहनेत्वे च तस्मात्यास्यथ वारणाः अ
यांतरिक्षान्महतीं वाणीं राजन् विनिर्गता यैः ह्वयंदानवानीनां तान् हित्वा मुनिसत्तम वारणीस्थ वा शुभा मेतामेव
मस्तिति सोब्रवीत् अथते वारणाः श्रुत्वा शापमात्मापराधजं पदैस्मस्तु पागाम्य ब्रह्माणमुपतस्थिरे अथ तान्
र्वमेवाह ब्रह्मा लोकपितामहः मनुष्यवारणाः प्रोक्तं न हि शापं मदन्यथा कर्तुं यत्नेन मुनिना वचनं समुदाहृतं प
नष्टाकांतं ततः श्रुत्वा प्रत्युच्छ्ले दिशां गजाः अस्माकमन्वयानां तु गजानां ग्रामवासिनां रोगाः प्रादुर्भविष्यंति विष
माभ्यशनादिभिः दिग्गजानां वचः श्रुत्वा प्रत्युवाच पितामहः न विषादे मनः कार्यमस्त्वप्रतिमते गजाः इमस्त्व
नेचिरेणाथ गजानं वपुर्महामुनिः आयुर्वेदस्य विज्ञाता मन्त्रतस्य भविष्यति तेषां रोगान्समुत्पन्नान्हरिष्यत्योष
धीबलात् एवमुक्तान्दिक्कुनागान्विससर्ज यथादिशं ततस्ते प्रययुः स्थाने स्वस्वमैरावणादयः दिग्वारणान्वया
स्तेत्र लोके मानुष्यमाश्रिताः विचरंति मंदरोत्कंतां पद्भिः सागरमेखलां शतशाखापृथ्वीं सत्वोत्तमिः प्रहृष्टाश्च सहस्रशः
राजन् हिमवतः पार्श्वे महर्षिः सामगायनः सागरप्रतिलोहित्यं तत्पत्नी ब्रमतनय्यत तस्याश्रमपदाभ्याशे माज
गामयहच्छया सहस्द्वालेस्य महत् गजयूथंप तं हृष्ट्वा मेथर्षयामास पत्नी गणिकामनूपिणी कांश्चित्पंशायनात्मनेण
त्पिनः सस्य चिंतयन् आश्रमादाभितः क्रम्य प्रतिनिर्मूत्रं चकार सः तस्य मूत्रेण संसृष्टेन तेनैवे द्विपमस्तवत प्रविष्टमा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लव· १२०
120

त्रैनिलयं तस्मिंस्तु मुनिसत्तमे अथाजगाम तं देशं गजहस्त्यैस्सहस्यैर्यं देवकारणसंयुक्तेन तत्र तद्देन सान्वितं अपि च
हस्तिनीमूत्रं तेन तो गर्भमधत्त सा तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजा वचनमब्रवीत् कथं केन सत्त्वकं पीता गर्भमधत्त सा
को हेतुः कारणं किं वा भगवन्वक्तुमर्हसि तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पालकाप्यस्ततोऽब्रवीत् शृणु सर्वं महाराज मूत्रकं
पीतवती च सा गर्भवती पदर्थं च सा मूत्रकेण च हस्तिनी ब्रह्मणा विहिता मूर्त्तिः हविरा नाम देवता आदिकाले प्र
जासर्गे विजित्य भगवान्प्रभुः देवानां मानुषाणां च गन्धर्वाणां च रक्षसां शृङ्गातासोसृजत्ततः स्वयं स्वायंभुवो मिव
तां दृष्ट्वा हविरां देवा ऋषयस्तपोधनाः स्तम्भित्वमनेनाप्य विस्मयं सर्वपारगाः हविरेत्यभिविख्याता लोके प्रभ
विता विष्णुः अचिंतपिता सा देवाः प्रजापतिपुरोगमान् यौवनस्यैव गर्वीदा केवले लीलया पिवा तत्रैवं मुनिभिः
ख्याता कीर्त्यमाना यदा तदा तारुष्टो भगवान्ब्रह्मा शशापैव सत्यपापिप भविष्यसि करेणुस्त्वं कदाचिद्धस्तपाततेले
हविरोवाच मम शापवशान्नासि भूमिश्चू दिनाथ हस्तिनो तदा स्तुत्वा ब्रह्मणः मातृपादयोरपतत्तदा तामु
वाच स्वयं शृणीत्वीप्सयमदां प्रमदां मुग्धां करेणुभावो मेदिन्यां मतंगानेमभविष्यति प्रसूत्य भार्गवाख्यानेव सर्वेशो व
कन्यका भविष्यसि तदा भद्रे पुनः शापवशात् सामगणावरकुले जन्म कामयते तदा उपायं चिंतयत्स्वं ब्रजन्मा
यो पश्चिमां गता महर्षेर्भार्गवस्याथ स्वल्पकालनिषेवितं आश्रमं मुनिभिः श्रेष्ठैः शोभितं ब्रह्मनिःस्वनैः ब्रह्म

१२

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सम्यनिभं चित्रं सिद्धगंधर्वसेवितं शैलराजस्य पार्श्वस्थं मणिराजिविराजितं अप्सरोभिः समाकीर्णं किंनरीगीतना-
दितं आकुलेयस्तथूमैश्च नानाप्रसवसंयुतैः पावकादित्यसंकाशैरशोकस्तवकैरपि शोभितं हरितैर्वैडूर्यैर्नीलैस्तथापरा
यरोपमैः कमलोत्पलनद्धैश्च सरोभिरुपशोभितं ददर्श तत्र धीमतेन पावकोपमतेजसं सुवर्णस्तंभवर्णाभं जटा
मंडलधारिणं नमेरुशिखराकारं श्रिया विगतकल्मषं उवाच वदतां श्रेष्ठं कृत्वा मूर्ध्नि चांजलिं अभिशापं भग
वञ्श्रेष्ठ कोपस्यांते कदा भवेत् इत्युक्त्वा ब्रह्मणस्तस्य सा पपात प्रपादयोस्तदा मा भैषीः केन वित्रस्ता कल्याणि वाग्शुभा
नने तामुवाच महाप्राज्ञो वस्थावित्तन्वी तदा ददर्श सर्वं निर्दिष्टं दिव्यचक्षुः समन्वितः वसुतामुत्तमे वंशे जन-
ननं ते भविष्यति तत्र वर्षसहस्रांते नीता शापमशेषतः पतत्ते कथिते राजन् मुनिश्रेष्ठे दिगावनत इति विस्मयमेत्तरे
मार्कंडेय उवाच पुलस्त्यस्य पुलस्त्यर्गसत्वागंधर्वसत्तमः भूयः पप्रच्छ तं विप्रं गजोत्पत्तिं सुविस्तरात् शैल उवा
च कुंजराणां समुत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि विस्तरात् कुंजराद्धि महाभागा अशोच्य पितामह नारायण उवाच यदाप्र
स्तं नामार्तंडमदितिर्भास्करात्मणिः तदा तदंडमुद्धृत्य दृष्टवान् कश्यपः स्वयं तेजोधिकत्वाद्दंडस्य नापश्यत यदा शि
रं उवाच देव्या चंडेस्मिन् किमसौ बालको मृतः ततः स भासः सकलं तेजसा भासयन् जगत् तेन मार्तंडनाथस्य क
थितो द्विजसत्तमैः ततस्तदंडकपाले द्वे गृहीत्वा तु प्रजापतिः रथंतरं बृहद्गगं च गायत्र्या रथंतरं समगायत रथंतरं साम

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनुः प्रवेशयामास स इरायास्तौ ब्रह्मणा उदरे प्रलक्षणेन जनयामास सागजान् अष्टौ महाबलान् नागान् तेषां ना
मानि मे शृणु ऐरावणस्तथा पद्मः पुष्पदंतस्तु वामनः सुप्रतीकोंजनो नीलः कुमुदश्च मतंगजाः शक्रायानां दि॰
गीशानां घ्यास्सृजिनवाहनाः चत्वारो जातयस्तेषामेकैकस्यान्वये स्मृताः भद्रा मंदा मृगाश्चैव संकीर्णा च नराधिपे
ति इति गजोत्पत्तिः अथ गजजातिनिर्देशः तत्र गजा भद्रमंदमृगामिश्रजातिभेदेन चतुर्विधा जायंते तदुक्तं पयश
लक्ष॰ रसंहितायां तत्र जातयश्चतस्रो भवंति भद्रा मंदा मृगा मिश्राश्चेति तथा च भद्रो मृगो मिश्रश्चतुर्धा जायते गज इति
१२२ विष्णुधर्मोत्तरे ऐरावणाद्यष्टौ दिग्गजाननुक्रम्य चत्वारो जातयस्तेषामेकैकस्यान्वये स्मृताः भद्रा मंदा मृगाश्चैव सं
१२ कीर्णा च नराधिपेति एतासामुत्तममध्यमकनिष्ठत्वमपि स्मर्यते तत्रैवाभद्रा तेषां भवेज्ज्येष्ठा मंदा मध्या कनीयसी
मृगा ज्ञेया च वाङ्गल्यान्संकीर्णा पार्थिवोत्तमेति पराशरसंहितायामपि भद्रा श्रेष्ठा भवेत्तासां मंदा मध्या कनीयसी मृ
गा मिश्राधिकैर्ज्ञेयाः गुणदोषैः समासत इति इति गजजातिनिर्देशः अथ भद्रादिगजलक्षणं तत्र भद्रगजलक्षण
मुक्तं विष्णुधर्मोत्तरे वृत्तोच्चमस्तको मध्ये ह्यायतमुखोद्गतिः उदग्रश्चापि सत्वश्च समसाध्यो महाकरः ताम्रताली
लक्षणः स्निग्धः संहतिस्तु सासनस्तथा अन्वर्थवेदी बलवान् भद्रो ज्ञेयो मतंगजः इति वृत्तोच्चमस्तकः विपुलोच्चशि
राः उदग्रोत्तुङ्गः अन्वर्थवेदी संकेताभिज्ञः पालकाप्ये मनिमाने सुविपुलश्चारुदृष्टायतानतः सुविस्तरभित्तिः॰

१२।

स्यास्तस्याश्च निरीक्षेत् तालुकः तथास्य तस्य संस्थानैर्दन्तौ शुभ्रौ विशेषतः मधुपिंगलनेत्रश्च महाकायो महाबलः
पुरस्तादुन्नतस्याथ पश्चादवनतोपि यः पृष्ठविनतवंशश्च मण— लः शुभः विंशत्या च नखैर्युक्तो यो ह्यष्टादशभिरेव
च विद्युद्धवाग्निसिंहेभ्यो न बिभेत्यंकुशादपि अन्वर्थवेदी शूरश्च दृढमानश्च कर्कशः कल्याणमेधास्तेजस्वी स भद्रः प
रिकीर्तितस्त्विति पराशरसंहितायां तत्र भद्रजातिश्चारुदृष्टः आयतमतकोवृद्धोच्चमस्तकः उदशोयस्तनोतुद्धनकरः श्रो
त्रादीर्घपृथुककराङ्गुलिवालधिर्मिद्दामनोरोग्रीवः स्थूलमेढ्रोदरस्ताम्रतालुजिह्वोष्ठः सुपार्श्वः स्निग्धः सवर्णमन्दरोमाकूर्म
पादस्तनुस्थितिः दृष्ट्वासनः सुच्छविः सूक्ष्मविंदुचित्रोवक्त्रगरोमोपचितश्रोत्रः स्तनखोपतः दृष्टवंशो मधुवर्णवान्
दृष्ट्याभिरक्षितासद्भिस्तुरन्वर्थवेदी बलवान्नामातिरोमन्दनो पायेन साध्यश्चाप्रदेशग्राहीच भवतीति अनुदृनक
रः अन्त्रक्रमेणाहतेभेश्वरदन्तः मध्याकंधरा वित्रत्वं वाङ्कशिरसोनानमणिगतनतथा दंतयोर्मधुवर्णत्वं नेत्रयोर्मधुपिंग
ताः आसनस्य दृष्टत्वं वशीनाङ्कद्विपार्श्वयोः दृष्टत्वं दृष्टभागस्य बनत्वं समसंधिता स्निग्धच्छायात्वं मायामपरिणाहे
छ्रयौ तथा सश्रीकत्वं गुरुत्वं च कायस्यैते गुणाः स्मृताः इत्यादिचवचनैः शरीरस्यैते गुणा उक्ताः सर्वलक्षणसंपूर्णो दृश्य
तेन मतंगजः श्रीमनेन च सल्लक्षणसंपूर्णावयवगजस्य दुर्लभतस्तु कमतः शरीरगतगुणाज्ञानार्थ कानिचिदंगलक्षणा-
न्युच्यते तत्र बार्हस्पत्यसंहितायां भद्रगजलक्षणमुपक्रम्य हीनेङ्कुसं च कल्माषं पुष्करेन प्रशस्यते संपूर्णमांसलं रक्तं सकु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष·
१२२

मारेस्थभंस्यते यंगुलेनभवेद्धीमंहीनेपतिविनाशनं हृस्वेभर्तृर्विरोधायकल्माषंभर्तृरोगदं संश्लिष्टांगिरायंदभर्तृः पु-
ष्कारेचतर्जन्यंगुले सौभाग्येमासमलेकुर्यात्स्कुमारेतथार्थदं रक्तेपद्मदलच्छायेतथामिष्टान्नपानदं अतःपरंस्थभर्तृपेश्या
नसीघाटलोदरेस्वोन सीतालुमध्यगतोप्रदेशो पंचांगुलप्रमाणेनवर्तुलत्वेनचार्थदे अतोमण्डवतामेवकस्ता-
स्वस्वप्रदं अतःपरंप्रवक्ष्यामिक्रमेणकरलक्षणं नकरादीर्घमिच्छंतिबालधिंयासवपंडिताः नबालधिसमंहस्तंना
तिदीर्घंविक्रमायतं नतनुनातिकायंचनहृस्वमहृतनत्रणं नाक्रमेणकृतोत्सेधनहीनंदशनांतरे नहृस्वांगुलिसंयु
क्तंनातिसंकटपुष्करे एतल्लक्षणसंयुक्तेकरेशंसंतिकोविदाः बालधिस्तसमोहीनःसमोवादनिडःखिदःसमः
करेणत्वनुगः अतिदीर्घोभवेद्भर्तृराष्ट्रनाशकरःकरः नतुक्षापिकरोभर्तृरतिकायोर्थनाशनः हृस्वोव्याधित्र
णांकुर्यात्यानत्रणंकृतोव्यया प्रतिलोमेनचस्थूलोगजस्यप्रावनाशनः असमंजसहीनस्त्वअसमंजसवर्तुलः
दुःखशोकभयायासकर्त्रीभवतिनिम्नशः दशनांतरहीनस्त्वजायतेदंतरोगकृत् कथितंसर्वमेवेतन्मुष्करां
गुलिलक्षणं अतोमयानेकथितंसांप्रतेकरलक्षणं निर्वलीदीर्घरोमाचक्रमहृत्तोतसंयुतः अणविद्वविवि
त्रश्चैदैर्घ्येनपंचांगुलः वादित्यपुष्करंयावद्याथामोजात्मपेलया अरत्निश्चयनाशस्यहीनोहीननरःक्रमात् पु
ष्कलत्वेनमानेनकरःस्यादुत्तमोभवेत् निर्वलीकस्त्वसौभाग्यंदीर्घरोमार्थदःस्मृतः क्रमवृत्तोजयंकुर्यादाण·

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विद्युतोपमं सुप्रमाणे भवेद्दन्तः शान्त्यायुःपरिवर्धनः आनाहवांश्च सततं राज्यस्फीतिकरो भवेत् करस्य की
र्तितं — नलक्षणं शुभसंज्ञितं अतःपरं प्रवक्ष्यामि लक्षणं दन्तवेष्टयोः कर्चरीनावतिस्थूलौ शिथिलौ विष
मौ तथा दन्तवेष्टौ सदाभर्त्तुः प्रमाणमभ्यामसौख्यदौ दन्तमूले सुसंवद्धौ स्वकचौ किंचिदुन्नतौ दन्तवेष्टौ सदा भर्त्तु
र्हितदौ परिकीर्तितौ अतःपरं प्रवक्ष्यामि लक्षणं तु विषाणयोः विषाणयोः दन्तयोः सत्त्वता संकटत्वं च तनुता
भस्मधूम्रता वक्रत्वं रूक्षता चैव धूसरत्वं च रूक्षता मृदुता चोन्नतित्वं च हीनता मूलमध्ययोः अग्रयोः स्थूलता चैव
दीर्घता चातिमात्रयोः सर्पच्छत्रककान्तित्वं दोषास्त्वेते चतुर्दश दन्तास्त्वेते समाख्याताः फलं चैषां निबोध मे अ
सौ च संकटौ दन्तौ महाहानिकरौ तनौ दन्तिनस्तनुताप्युक्तौ व्याधिदौ परिकीर्तितौ भस्मधूम्रौ तथा भर्त्तुर्मरणे शोककरौ
मतौ वक्रावर्थविनाशाय रूक्षौ च परिकीर्तितौ धूसरौ रूक्षताप्युक्तौ गजस्यायुर्विनाशनौ मृदुत्वयुक्तौ नागस्य शल्य
व्रणकरौ मतौ स्थूलावधोगतित्वं मूलमध्ययोः सर्पच्छत्रककान्तित्वं दन्तयोर्दुःखदं मतं अतिदीर्घौ नयाद्दन्तौ भर्त्त
र्यान्तश्च दुःखदौ अशुभं लक्षणं सेन दन्तयोः कथितं मया शुभं च संप्रवक्ष्ये यथावदनुपूर्वशः स्निग्धौ समौ सुनि
ढौतौ संस्पर्शौ व्रणवर्जितौ मुकुलाग्रौ दृढौ वापि तौ ग्रहणाग्रहलोपमौ दक्षिणस्मुन्नतौ किंचित् मृणालकुमुदप्रभौ
दुग्धकुन्ददलच्छायौ हेमचंपकपिंजरौ मधुपिंगौ हृतच्छायौ पीयूषसदृशप्रभौ केतकीकुसुमाभौ च मृगांककिरणप्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भौ अध्यर्द्धीरत्निमानौ चतुर्द्धानाहसंयुतौ अध्यर्द्धीरत्निमानौ सार्द्धारत्निदीर्घौ तदर्द्धानाहसंयुतौ पादोनारत्निप
रिमितस्तु अगर्भस्थूलौ अरत्निलक्षणां च पूर्वोक्तमानलक्षणाद्वर्गनवं अभीभिर्लक्षणैर्युक्तौ दंतौ नागस्य संमतौ
स्निग्धौ घनश्वेतौ भर्त्तुरायुष्यकरौ समौ अरिघ्नौ तु सुनिःक्रान्तौ संग्रामे राज्यदौ मतौ निर्व्रणौ राज्यलाभाय सुकला
ल.प्र. ग्रौ जयप्रदौ दृष्टौ रोगविनाशाय तनायच्छूडादलोपमौ अरिराज्यविनाशाय कीर्त्तितौ शास्त्रपण्डितैः दक्षिणाभ्युन्नतौ
१२३ भर्त्तुः कीर्त्तिशोभाकारकौ मृणालकुमुदच्छायौ सुभिक्षारोग्यकारकौ हेमचंपकसंकाशौ वस्त्राभरणदौ स्मृतौ कु
123 रुतौ मधुपिंगौ च निःसपत्नं महीतले पशुलाभकरौ ज्ञेयौ घृतपीयूषसन्निभौ केतकीकुसुमाभौ च भर्त्तुर्वृद्धिवि
वर्द्धनौ अध्यर्द्धारत्निकौ दंतौ सुतमृत्युजयप्रदौ ध्यानाहमानसंयुक्तौ सदा स्फीतिकरौ मतौ कृष्णकंदलच्छायौ पीषि
यूषसदृशप्रभौ चंद्रांशुसन्निभौ दंतौ सर्वसौख्यप्रदायकौ रक्तेशुभकरौ राजन् दंतयोर्लक्षणं मतं अथ कुरुतौ मधु
पिंगौ च निःसपत्नमहीतल इति पूर्वमुक्तं तत्र मधुपिंगलक्षणमुक्तं तत्रैव मूले च दारुशुभ्रस्यात्त्वक्के च ज्वलनप्र
भं वज्रकांचनसंकाशं कालदंडस्फुलिंगकः अग्निकणसदृशः कालदंडः एतेषां च समायोगे दंतानां मधुपिंग
ता जाता गजविषाणानां मतो मधुनिभाः शुभाः छायापंचकमेतद्धि दंतयोस्तु शुभस्तते भद्रजातिर्गजस्य
तन्मंदस्य मृगदंतयोः घृतपीयूषशंखेंदुकेतकीछविपंचके एवं जातित्रयस्यापि सामान्येशोभनं मतं कपोतत्व

१२३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मभस्मास्थिसर्पछत्रकसन्निभाः दंतयोस्तुशुभाराजन् छायापंचविधाअपि अध्यर्धारत्निकाराजन् प्रमाणं दंतयोः
शुभं पुच्छकर्णिणानागानां प्रयोजनकरं भवेत् अप्रमाणप्रमाणादीर्घायेहस्तायेचनराधिप प्रतिनागप्रभेदेषुनतेदंता
स्तुपूजिताः अतःपरंप्रवक्ष्यामिनेत्रयोरपिलक्षणं मार्जारनकुलक्रौंचशशस्वामृगनिभेक्षणान् सर्वदोषकरान्ना
न्हेरेणपरिवर्जयेत् स्निग्धेमधुनिभेदीनेकलविंकाक्षिसन्निभे रक्तपद्मदलछायेपद्मरागमणिप्रभे निर्धूमाग्निशि
खाकारेइंद्रनीलसमप्रभे सौम्यदृष्टिसमायुक्तेअंगुलेलोचनेशुभे स्निग्धेहृष्टिकरेभर्त्तुर्मधुपिंगेजयप्रदे दीप्तेदीप्तिकरे
चैवप्रतापनयनेप्रिया कलविंकाक्षिरूपेचचनयाम्यविवर्द्धने चामीकरकरेनित्यंरक्तपद्मदलप्रभे पद्मरागनिभेचै
वरत्नालंकारकारके निर्धूमाग्निशिखाकारेप्रतिपत्तयंकरे इंद्रनीलनिभेनेत्रेसर्वसौख्यप्रदायके मानयुक्तेचसौ
म्येचलोचनेवलहृने प्रदिक्कूटकरोदेपोनिम्नोराज्यविनाशनो संपूर्णौचवलोत्साहमहर्ष्टिकरोमतौ दंतौद्व
मेभवन्निर्सिताल्लकंपोगुले षडंगुलेशस्तेनचेशमप्यगतेभवेत् तथाशुभाशुभंचैवलक्षणैःप्रकीर्तिते ह्रस्व
परिदग्धंचह्रस्वंकल्माषमेवच चतुर्विधमनिष्टंस्याद्यथावदभिधीयते ह्रस्वमधीर्घस्मज्ञेयंकल्माषंह्रस्वलोहि
तं मांसलेधूम्रवर्णंचपरिदग्धंप्रकीर्तितं ह्रस्वंचतिलच्छायंकथितंशास्त्रवेदिभिः गर्भस्थस्यापिनेत्रजायतेता
लुकेभृशं ह्रस्वताल्लुस्तथानागोजायतेपापलक्षणः व्याधिभिःपीड्यतेनित्यंवातपित्तकफोद्भवैः तृतीयोवाचत

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लल॰
१२५
125

र्थौं वा दशांसा प्यविनश्यति संग्रामे वा पलायेन वज्रशास्त्रकृतव्रणः सामुसेयान शृंगिणः कृतो न भवन्नुमेत वान॰
पितकषायसञ्चयं कुर्वन्ति नालके गर्भस्थस्येव कल्माषं नालकं न स जायते कृष्णतालनिषेदोषाः रक्तेपे च गुणाः स्म
ताः कल्माषनालन सो न भवति च हृदयोरपि रक्तच्छायं यदा वंशे पार्श्वयोस्तु सितो भवेत् तदा मध्यफले ज्ञेये गुणदोष
समाश्रयात् यदा वंशे च कृष्णे स्यात्पार्श्वयोस्ताम्रता भवेत् भर्तृहृद्वेगजननं कल्माषं नालकं तथा किंचिन्सिते
नयनालपरिदग्धे तज्जायते नागस्याघोरणस्यापि वल[illegible]करं हि तत् आघोरणो हस्तिपकः कृष्णं च यदा तालुपि
त्रोत्कर्षसमुद्भवं महामात्रविनाशाय वारणस्योपजायते महामात्रो हस्तिपकः कृष्णतालो रपि यदा दक्षिणावर्तने
भवेत् दर्पणे निम्नमेवं स्थितदाऽसौ दोषवर्जितः यथाश्रुत्वाऽनिरागेण दोषान् लोकः समाहितः गुणान्करोति हृ
द्येन तथा कथितानपि दोषब्रह्मलक्षणं यास्ते यदा चार्यैर्हृदाहते तत्तथैवावगन्तव्यं नान्यथा ऋषिभाषिते एवं निरूपि
तेतथा नालकः समलक्षणा अरत्निमात्रादैर्घ्येण विस्तारे षडङ्गुला मता अशुभं लक्षणं हि तत् नालकस्य मयोदितं
शुभं च संप्रवक्ष्ये लक्षणं शृणु तत्वतः रक्तं श्वेतं च पीतं च कषायं नालकं शुभं रक्ते वृद्धिकरं भर्तुस्तथा वा पुर्विवर्द्धनं
किंशुकाशोकपुष्पाभं रिपुक्षयकरं मतं श्वेतं पुष्टिकरं चापि वारणस्योपजायते चंपका॰॰ तथा भर्तुरायुष्य श्च वि
वर्द्धनं कषायं सर्वदा नालं समानं शोकवर्धनं एवं निरूपितं कामा मासर्वसौख्यप्रदा मता अतः परं प्रवक्ष्यामि रक्त

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

माप्तिमल्लहानां निंदितेमानहीनेनत्वरकिणीमांसवर्जिते रुक्तिणि — ह्रस्वेषी मावर्तरोगकरेनिम्नपदिते: परिकीर्त्ति
ते सर्वसौख्यप्रदेनस्यसंस्पर्शोद्वादशांगुले अतःपरंप्रवक्ष्यामिलक्षणांचिबुकोष्ठयोः अरोमस्पर्शवलीसकमता
खलत्वेनयथा गजस्योष्ठेनप्रोक्तं निम्नतयोदंतरोगदं दीर्घरोमाह्वसंस्पर्शोष्ठः पद्मदलप्रभः षोडशांगुलनाहस्य
ह्रस्वार्थचायतःशुभः भर्तुराष्ट्रः करोदीर्घोदीर्घरोमाचकीर्तितः स्पर्शः स्फुरयतेकोशरंकः सौभाग्यदोभवेत् अ-
रोमशंतयाहीनेचिबुकेनप्रशस्यते नहिवारणानाथस्यसद्वावर्तरोगकरंमतं चतुरंगुलमानेनस्थूलेरोमाविलेच्य
न् नत्यशालेगजेंद्राणामवालंकारकारकं निम्नेचविषमेचैवहीनेचैवाशुभंमतं महद्धानिकरेनिम्नसपादक
णीरोगदे सगदेकपोलाधःप्रदेशौ स्फुरत्तिनादयुक्तेचसमेवहत्वदेसदा मानेचकर्णपाल्यास्तुमूलाधारण्य
गृह्यते वाहिन्येवानकुंभेचहीनेनिम्नेचमहितं मावर्तरोगकरेनिम्नहीनेहानिकरंचैयत् स्पर्शिचैवोन्नतंसाधुहस्त
मात्रायतंभवेत् चिरत्निपरिणाहंचकरिणांसत्वशालिनं रत्निस्त्रवहमष्टिः करोरत्निरितिप्रसिद्धः वामनेहस्त
हीनेवपरिणाहविवर्जितं अवमंचनशंसन्तिवानकुंभेविपर्यये द्वादशांगुलविस्तारेदैर्घ्येणाष्टादशांगुले व्यके
श्रक्तिप्रटाकारंभवेद्भूलाभकरंरकं गर्भाकारेचनिर्याणेकठिनेचातिकुत्सिते शिरसोरोगजननेगजस्यारोह
कस्यच संस्पर्शेसकुमारेचसम्प्रशस्तंप्रकीर्तितं गजहृद्धिकरेनित्यंभर्तुर्विजयकारके उद्दमेवहृद्विवित्तेपलद

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णौकटपार्श्वयोः अतः परं प्रवक्ष्यामि लक्षणं कुंभयोरपि विषमत्वमरोमत्वं देहच्छायाविवर्जितं समतां कटस्थाभ्यां स
माधिकाश्रणिता वक्रतावामनत्वं च परिणाहविहीनता तनुभावः शिखरयोः कुंभदोषा दश स्मृताः भर्तृस्थापक
रौ ज्ञेयौ विषमौ रोमवर्जितौ देहच्छायाविशीर्णौ तु शत्रुशोकविवर्द्धनौ कटस्थसमौ चैव प्रमातुः प्रविनाशनौ मा
ल॰प्र॰ तुः प्रविनाशनौ मानाधिकौ च हीनौ भर्तृरुच्छेदकारकौ वक्रौ च वामनौ चैव भर्तुः कीर्तिविनाशनौ परिणाह
१२५ विहीनौ च कोशक्षयकरौ मतौ शिखरस्य तनुत्वेन पुत्रौ कुंभौ तु रोगदौ अथ शुभलक्षणं सेतन्सां प्रतं च शुभं स्मृतम्
175 समौ दीर्घकचाक्रांतौ विस्तीर्णविवरौ तथा कर्णमूलात्समारभ्य हस्तार्धं जनितौ कुंभौ सुसंहतौ च पीनौ च कामि
नीकुचसंनिभौ समाक्रांतललाटौ च देहच्छायासमप्रभौ आरोहकशरीरार्धदर्शनावरणक्षमौ सश्रीकौ च सुसंहतौ
च शुभौ कुंभौ प्रकीर्तितौ समौ च दीर्घरोमाणौ भर्तुः श्रीसौख्यकारकौ समानौ विस्तृतौ शायतौ चैव च समुन्नतौ सुसं
हतौ च पीनौ च वरस्त्रीलाभकारकौ शत्रुनाशकरौ ज्ञेयौ कामिनीकुचसंनिभौ समाक्रांतललाटौ च सप्रभौ रोग
नाशनौ आरोहकाच्छादनार्थौ सश्रीकौ जयप्रदौ हृष्टौ च हस्तिनां कुंभौ शुभालंकारकौ अतः परं प्रवक्ष्यामि कर्णयोरपि
लक्षणं निर्लोमत्वौ लसमाकीर्णौ तनुच्छिद्रौ तनुत्वचौ लसशिरासंकटौ विषमौ ह्रस्वौ तु दिनायोस्तु निष्ठुरौ लब्धौ च वर्त
लौ चैव कर्णौ नागस्य निंदितौ फलं च सांप्रतं वक्ष्ये यथावदनुपूर्वशः निर्लोमत्वे लसाकीर्णौ गजस्य करोगदौ नि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हृष्टौ वृद्धिनाशे वयान्तकोशहरौ मतौ स्तब्धौ च वर्ततौ चैव गजस्यायुर्विनाशनौ नतत्वचौ तनुच्छिद्रौ संकटौ विषमौ त
था रूक्षौ कर्णौ तु नागस्य भर्तुर्यान्तस्य दुःखदौ अतः परं प्रवक्ष्यामि शुभं कर्णविनिश्चयं हिरत्तिमानसंयुक्तौ शिरा
जालविवर्जितौ समत्वचौ महाच्छिद्रौ स्निग्धकायासमप्रभौ कपोलमंडलास्फालकृतशब्दौ मृदुर्द्धकः कर्णौ चामर
संकाशौ मृदुरोमकृतार्द्धतौ अजर्जरमृदुप्रान्तावीषद्दीर्घगणचूलिकौ मयूरतालवृन्ताभौ सुविस्तीर्णौ समौ शुभौ हिरत्ति
मानसंयुक्तौ भर्तृराज्यकरौ मतौ स्नसाजालविनिर्मुक्तौ शिरोरोगविनाशनौ समत्वचौ महाच्छिद्रौ गजलाभकरौ मतौ
स्निग्धौ कान्तिकरौ नित्यं जयदौ दुंदुभिस्वनौ शत्रुनाशकरौ प्रोक्तौ मृदुरोमकृतार्द्धतौ अजर्जरमृदुप्रान्तौ प्रमातः सौख्य
कारकौ गजस्यापचयायैव ईषद्दीर्घगणचूलिकौ मयूरतालवृन्ताभौ तरंगबलवर्धनौ सुविस्तीर्णौ समौ भर्तुर्भूमिलाभकरौ
मतौ कर्णयोर्लक्षमाख्यातं मयैतत्तु शुभलक्षणं फणिमार्जारमंडूकसृगालेश्वसमप्रभं वानरस्य समं चैव मुखं ना
गस्य निन्दितं स्थित्यानत्वा पूर्णगंडनिर्गिरिकूटनिभानि च आपूर्णमेघरूपाणि प्रसन्नानि मुखानि वै रोमहीनं कृशं रूक्षं
वा दीर्घं निःप्रभं तथा वराहलोचनाक्रान्तमरष्टचिबुकं तथा ललाटतटपर्यन्तं गण्डीकृतिभिरन्वितं मृगदाहीनतता
युक्तं मुखं नागस्य निन्दितं मुखस्य लक्षणं सम्यक्कथितं तव सुव्रत कंठस्य साम्प्रतं वक्ष्ये यथावदनुपूर्वशः वक्रो हीन
स्थदीर्घश्च कंठस्त्वशुभदो भवेत् आरोहकप्रभूणां च क्रमशः कुंजरस्य च अवक्रः परिणाहेन समपक्षाधिकं शतं अंगु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लानां तथायामे द्वादशैवांगुलानि तु संपूर्णविंशतिर्नोदरस्यांत मणिविभूषितः कंठो वारणनाथस्य एवं भूतस्तु ह
जितः स्मृतः प्रमोदजनः संपूर्णः कार्यसिद्धिदः अरूक्षो जयकृन्नित्यं कीर्तितः पूर्णपिंडकः उरश्चैवं शहृद्धि चयता
पंकृतेन तथा अंतर्मणिसमायुक्तो मणिरत्नप्रदो भवेत् करालं चातिनिम्नं च आसनं न प्रशस्यते करालयान्तरश्रु
भं निम्नं च व्रणाकारकं दैर्घ्येण हस्तमात्रं तु विस्तीर्णं तु शुभं स्मृतं विस्तीर्णं विस्तृतं राज्ञः संपूर्णं कुरुते जयं वंशस्याथ
लक्ष. १२६ ते करालयान्तरश्रुभं निम्नं च व्रणाकारकं दैर्घ्येण हस्तमात्रं तु विस्तीर्णं तु शुभं स्मृतं विस्तीर्णं प्रवक्ष्यामि लक्षणं तु
शुभाशुभं अस्थिकृतो निम्नपरो ह्रस्वो वंशो न शस्यते राज्ञश्चोदररोगाणां कर्त्ता च स भवेत्सदा षट्नवांगुलायाममा
सनाच्छ्रिमासने यावत्पूरितपार्श्वश्च वंशश्चापलताकृतिः शुभोऽसौ योगजेंद्राणामायामः कुरुते सदैव संपूर्ण-
पार्श्वो लाभाय पत्रुरूपोऽन्नमे भवेत् अरत्निद्वयमानेन तु पेचकाप्तश्रिमासने पेचकः पुच्छमूलप्रदेशः घनास्थिवि
षमं निम्नं गर्हितं पुच्छरोगदं मांसोपचयपूर्णं च विस्तीर्णं च शुभं मतं जघनोपरि रोगाणां तद्विनाशकरं मतं पेच
कः पुच्छमूलाच्च अतिदीर्घो नितलवितः करोति महतीं पीडां राज्ञश्चाधोरणाच द्व्यंगुलस्तु पृथुत्वेन दैर्घ्येणाष्टाद
शांगुलः संस्मृतः पेचकोऽसौ योगजभर्तुः सौख्यप्रदः वक्रं स्थूलं च ह्रस्वं च पुच्छकेन च विवर्जितं समानान्यं हस्तिनागस्य सर्व
दोषकरं भवेत् अवक्रोऽरुजदीर्घश्च ग्रंथिहीनः स पेचकः गोपुच्छनालह्रस्वनामः कचप्रांतविभूषितः भूमिं तनस्य

126

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शेफस्तु चतुर्भिश्चाङ्गुलैः सदा शुभोयं बालधिर्ज्ञेयो गजभर्तुः सुखप्रदः अतिप्रमाणं ह्रस्वं च कर्बुरं विगतप्रभं
शिरालं चाशुभं मेढ्रं गजभर्तुर्दुःखदं त्रिंशत्षडङ्गुलायामं नाहतः षोडशाङ्गुलं शिराजालविनिर्मुक्तमाश्वप
ल्लवसमं घंगुलस्रोतसा युक्तं रक्तविंदुविवर्जितं मेढ्रं प्रशस्तं विज्ञेयं भर्तुर्जीवितवर्धनं अतः परं प्रवक्ष्यामि ल
क्षणं गात्रयोरपि गात्रे गजानां जंघादि भागः सार्धारत्निर्द्विरत्निश्च त्रिरत्निश्च शतांगुलः सदान भागः क्रमशः प
रिणाहस्तु कीर्तितः आयामो द्विविरत्निः स्यात्समत्वं कच हीनता मांसलत्वं च नत्वं च गात्रयोस्तु गुणाः स्मृताः
स्तनादेव स्तूयामेव भर्तुरारोग्यकारके समे चकच हीने च गजे लाभकरे तथा गजस्य पुष्टिदे नित्यं मांसले च वृ
ने स्मृते गात्रे वारणनाथस्य एवंभूते शुभे मते विपिटे चांसफलके गात्रे गकरे सदा संपूर्णे रामदे भर्तुर्गजस्य च
सुखप्रदे नैवैवोरोमणि हीनो गजस्य गलरोगकृत् कायोपचकर्ता च संपूर्णः क्रमशस्त्विति अतः परं प्रवक्ष्यामि
नखानां च शुभाशुभं हीनाः ह्रस्वाः सवक्रास्त्रुरूक्षास्तु नखाः शुभाः सदा च रोगदा हीनाः ह्रस्वा भर्तुर्विनाशकाः
विशुद्धास्तु त्रस्तपादश्चाथि विवर्द्धनाः स्निग्धाः शुद्धार्धमेकाशा मानेनैव पुरो नखाः सम षट् पंच संख्यानि
अंगुलानि क्रमेण हि एवं विधा नखाः शास्ता भर्तुरारोग्यकारकाः अतः परं प्रवक्ष्यामि पादयोरपि लक्षणं ही
नोमडुतलो नतो च रणे दंतिडुः खदौ हस्तप्रमाणौ दैर्घ्येण कूर्माकारौ सुखप्रदौ अतः परं प्रवक्ष्यामि लक्षण

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चापराश्रितं अभुक्तिनेव हीनेच निंदितेवापरेनन् संहर्षौ च शुभे ज्ञेये पतयाश्रयामसंयुते निंदिते रोगदे भर्तुः
पूजिते पभुसो ऽवेदे द्वादशांगुलहीनेन आसनात्स्त्रिमासने अपरापादयोश्चापि आयामो ऽरत्निमात्रकः नखानां च
तथा मानं षट्पंचचतुरंगुलं यथा नावयवानां तु लक्षणं कथितं तेन च कचानां संप्रति भेदान् वक्ष्यमाणान्निबोध मे
ल·प्र· नेत्रयोः पुटपालिस्थाः कचाः पक्ष्माणि कीर्तिताः वालधेः प्रांतसंस्थाश्च वाला इति हि संज्ञिताः मस्तकस्थाश्च केशाः
१२२ स्युः शेषा देहगताश्च ये ते रोमशब्दवाच्यास्तु भेदास्तेनेकधाश्रिताः नसंख्या नैव मानं तु रोम्णां वै वपुः कीर्तितं देह-
127 च्छायासवर्णं नम्रं तु तच्च तथापरं अनाविलं तु घनं तातं यथा वा स्फुरितां शता ऋजुताचैव सूक्ष्मत्वं रोमांसं सम्मगुणाः
स्मृताः दोषाश्च स्तम्भसंख्यास्तु गणानां च विपर्ययात् शुभानि शुभकर्माणि दुःखदान्यशुभानि च अतः परं प्रव
क्ष्यामि लक्षणं पक्ष्मसंश्रयं वालो ज्ञानानि स्थूलानि दीर्घाणि पिचनानि वा सूक्ष्माणि पिंगवर्णानि पक्ष्माणि करि-
णः सदा भर्तुर्वतः शुभं तनोः खं कुर्वन्ति मानसे स्निग्धच्छायानि कुल्मातिसमानि च हस्तानि च अघनानि च ह्रि-
ष्टाणि पक्ष्माण्यशुभानि च गजानां स्वामिनः सोख्यं कुर्वन्ति रमाणि पत्नो हरीः स्निग्धाः प्रलेवाश्च स्फुरन्ताः षट्पद
प्रभाः तालहंतसमाकारा वाला भर्तुर्जयप्रदाः स्थूलाः पुच्छसमाहूताः कपिलाः स्फुरितास्तथा घनत्वातिशयो
येनाः सावर्णास्तु निंदिताः भर्तृघातगजानां तु निस्नेहत्वकरास्तु ते अतः परं प्रवक्ष्यामि केशानामपि लक्षणं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अभित्राङ्गजवः स्निग्धाङ्गानामेव समप्रभाः केशा वारणानाथ स्वदेमहद्धिकारणमताः ह्रस्वाश्च मिश्रगाः पिंगाः स्फु
टिताश्च जगुप्सिताः कुर्वन्ति दंतिनां नित्यं केशा भर्तुर्हि वाशुभं एतस्य वालकेशरोमणां लक्षणं कथितं मयेति
इति भद्रगजलक्षणं अथ मंदगजलक्षणं विस्तुधर्मोत्तरे गंभीरवेदी निःशंकस्तीक्ष्णाः साध्यो महोदरः दीर्घमे
द्राङ्गुलिश्चैव स्वविभक्तशिरोधरः स्थिरः कचछिलः स्थूलो दीर्घवालधिपुष्करः हर्षितः सत्वमनाभिस्त्रंमतगजन्द्र
ति हर्षितः सिंहटक्र सैंहीवरकमंदमनंगजस्येति वृराहोक्तेः पालकाप्ये महाग्रीवो महावक्षो महाशोथो महोद
रः पीनो हवंशः सांद्रत्वकुविभक्तमहाशिराः वहलेमेंढ्रमिदीर्घपुच्छः स्निग्धेस्त्र नृहृदैः स्थिरा कृतिनलैः पा
देश्चश्यथुभिः समैः स्थिरस्निग्धे विशाले च पीने चापि प्रकीर्तिते विषाणे तस्य विहद्विगोष्ठो दीर्घश्च रोमशः कृ
मिसंस्थानगमनो मंदो मंदगतिक्रमः संमीलितलोचने नित्यं निद्रां च परमां गच्छति धीरोन्नरतोऽहस्तिन्यां गतो हेगा
जितश्रमः निर्भयो मंदबुद्धिश्च श्रुतिमात्र मंद उच्यते इति अथ मृगलक्षणं वार्हस्पत्यसंहितायां नकुलश्च उवाच सां
प्रतं श्रोतुमिच्छामि सर्वशास्त्रविशारद सर्वमुक्तं विशेषेण लक्षणं मृगमंदयोः सर्वमुक्तमपि सांप्रतं मृगमंदयोर्ल
क्षणं विशेषेण श्रोतुमिच्छामि संशयः तच्छ्रुत्वा तु महातेजा बृहस्पतिरुवाच तं नोक्तं पतन्त्र ऋषिभिः सर्वगजज्ञान
दैवरपि लक्षणं मंदमृगयोस्तच्च ते कथयामि ते भद्रस्य सदृशाः केचित्केचिदामधिकाः स्मृताः मांसलत्वेन मंदस्य भेदे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रामरश्गव सारनान्नेत्रयोरेवमप्युमंललहाणांमृणां पनोहिबारोणांहाणांसत्वंनेत्रेषुसंस्थितं स्निग्धेमधुनिभेदी-
मेकलविंकाहिसन्निभे रक्तपद्मदलच्छायेपद्मरागमणिप्रभे नीलच्छायेनितीक्ष्णेचमंदस्यापिहिलोचने मजो
त्वानरादीनांसहशेलौचनेर्गजाः हीनसत्वाश्चजायंतेमितिक्तेयमात्रपि अधिकंपुष्करेतस्यमांसलत्वेनजायते
लक्ष· प्रमध्यापनकषायस्यान्मानेनांगुलपंचके किंचिद्दस्वेदविशेषश्चोनसीचतुरंगुले दस्तोपिपूर्वमानस्यस्थूलत्वेना
१२८ धिकोभवेत् रोमशोनातिदृढश्चदृढश्चस्थूलःषड्गुलेः आयामेनचहीनःस्यात्पूर्वमानात्सडंगुलेः नातिरो
128 पुच्छमस्यानोक्तस्तविंदुविभूषितः आनाहेदशमात्रोवुमाधिदस्तहयायुतो पीतपद्मकसूदच्छायोकिंचिच्चपक
पिंगलो स्निग्धोवाथोन्नुतौचैवदंतौमंदस्यकीर्तितौ दंतवेष्टावतिस्थूलौकचाक्रांतौसुनिष्ठुरौ सेगुलौतुकरौजे
यौमांसोपचयशरिलो ज्ञेयेकरोपरिनाथश्रोतसीषडंगुले स्थिरेपकाशीत्यंगुलोवाहस्तोविंशत्यंगुलायतः किंचिन्नते
कचाक्रांतेनवाहित्यंतुपकीर्तितं प्रतिमानंतुविज्ञेयंहस्तः सचतुरंगुलः प्रतिमानंगजदंतद्वयांतराले आयामे
नतुविज्ञेयस्तस्यरस्तुदशांगुलः विंशत्यंगुलमानस्तुपरिणाहोभिधीयते पंचांगुलेतुविवुकेसक्किणीतुनवां-
गुले षट्त्रिंशदंगुलायामेसमदेपरिकीर्तितं अध्यक्षीरत्निकोकर्णोविस्तारेणकचाविलौ कषायपल्लवौस्थूलौ
कृत्स्नविंदुविचित्रितौकर्णाभ्रकर्णांतरंयावत्षण्णवत्यंगुलंशिरः वातकुंभतथाज्ञेयस्थूलसमदशांगुले अंगुला

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नांशतेन सार्धमानाद्धि हंगुलादिकं आयतनं च कंठस्य दशांगुलमितिस्मृतं भद्रस्यैवासनं ज्ञेयं ततो वंशस्तु रत्नि
कः षडंगुलोक्षितः स्थूलस्तस्यो लांगूलतो भवेत् पुच्छमूलाद्धि हस्तेन ज्ञायते वक्षिमासने उच्छ्रायेण तु हीनेन स्याद
सने षट्त्रिंशगुलैः पेचकोष्टांगुलायामो लंबनेनांगुलत्रयं विंशत्यंगुलमानाद्धि भवेत्पुच्छस्तथोत्तमे मंते पावकक्रमे
णैव कथ्यते वांगुलत्रयं दैर्घ्यं वास्तु सविज्ञेयो भूमेरष्टांगुलस्थितः इदं वालधिमानं तु मंदस्य परिकीर्तितं सार्ध
हस्तत्रिके मूले अपरे संप्रकीर्तितं इदं चातिमात्रस्यान्मेद्रं हस्तद्वयायतं विंशत्यंगुलमानाद्धि कुंभस्कंधायसदा भवेत्
पंचचत्वारिंशच्छीर्णान्यंगुलानि नखाः क्रमात् आपांडु विसकेदाभा भवेत्परपादयोः अनेनैव तु मानेन गात्रपादस
मास्मृताः नखा मंदस्य विज्ञेयास्त्वरणाश्चक्र चाविलाः अतिस्थूलः पृथुत्वेन सार्धमधिकः करः अरत्निके च दैर्घ्येण
मार्गगात्रयोरपि उरोमणिस्तथा ज्ञेयो रत्निमात्रोतिमांसलः विंशत्यंगुलमानस्तु अंते गलमणिर्भवेत् अनेनैव
हि मानेन वा तत्क्रमः प्रकीर्तितः एते प्रशस्ता मंदस्य भूनायक कथितास्तव नोक्ता ये तेपि भद्रस्य विज्ञेयाः समलक्ष
णा इति इति मंदगजलक्षणं अथ मृगगजलक्षणं विस्तृतपर्मोन्नत ह्रस्वमष्कोदीर्घदंतत्रुभौरूर्ध्वह्रस्वशवस्तथा ह्र
स्वं पांस्वडमेंधाह्रस्वस्यानचालस्तथा दीर्घजिह्वाविषाणाश्च दीर्घकुस्नासनस्तथा लेशादमश्रुशीघ्राशीघ्राशी
मृगोज्ञेयो मतंगज इति पालकाप्ये ततुमकर्णपादायस्तत्वास्यस्तनुमेहनः ततुवंशोदरश्चैव तनुत्वक्कानतनूरुहः

दीर्घजिह्वाविषाणश्च दीर्घगात्रस्तथोरसः । मध्यस्तरोमकालिन्त्यकृष्णरक्ताश्चापि संवृतः । निपाने गोचरस्थाने शाय्यायां
चाप्यनिर्ह्नितः । रूपाभिभवशंकी च नित्यमेवानवस्थितः । ह्रस्वश्रवणलोमश्च लो दीर्घविक्रमते क्रमैः । पुनः पुनश्च विनद-
नु दुर्मतिश्चापि धावतीति ॥ अथांगलक्षणे बार्हस्पत्यसंहितायां बृहस्पतिरुवाच । मृगस्य संप्रवक्ष्ये प्रदेशान्लक्ष-
लद॰ णान्वितान् । येऽश्वतैक्ष्णीनचपलाः ध्वंसितेमोहजंतवः । चपलश्चोरः ह्रस्वाह्रस्वतराः । केचिन्नेविदीर्घतरामताः । अतो
१२५ न घटते यस्य लक्षणं भद्रमंदयोः । अंगुलेषु करतेनस्यांगुलेसोनसीनया अंगुलानि च चत्वारि कीर्तितानि तस्य चांगुली-
129 नत्रः करस्था रत्निः स्यादानारे सार्धरत्निकः । बार्हिस्य पुष्कं रेषां च मानं संप्रदिरुदाहृते । तथा नत्रतोरोदंतोदंष्ट्रः सार्धद्वार-
त्निकौ प्रतिमानं तथाज्ञेयं निम्नं पंचदशांगुलं । अंगुलविवृकं तस्यादधरस्तु षडंगुलः । अष्टांगुलस्तथानाहे हस्तिकिणी तु षडं-
गुले मृगदंगुलविंशत्यौ कपोलौ निम्नमध्यगौ । कर्णौ द्व्यंगुलमानौ तु निर्याणे चतुरंगुलौ नेत्रे चापि तथा स्यातां नि:-
प्रभे स्थूलतारके नातिव्यक्तसमांसे स्याद्दानं तु भेदशांगुलं । गर्भाकारं च निम्नं च कटकुंभांतरं भवेत् । अष्टांगुलांतरौ
कुंभौ चायामे षोडशांगुलौ । विंशत्यंगुलकौ कर्णौ लब्धौ ह्रस्वौ च वर्तुलौ । षण्णवत्यंगुलानाहा ग्रीवायामे षोडशांगुला
ग्रीवा मृगस्य विज्ञेया करालं चासनं भवेत् । सार्धद्वयरत्निकायामः कुंभस्तु गोतिमात्रया । वंशो मृगस्य विज्ञेयो निम्नतलस्य
निम्नमध्यमः स्थूलास्थिविषमं निम्नं पृष्ठकादर्ध्यर्धरत्निके । आसनेन समं चैव मृगे स्यान्नाभिमानतः । पंचांगुलस्तु विज्ञेया-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पेचकोगुदसंसक्तः वक्त्रोग्रंथिसमाकीर्णः स्थूलोह्रस्वश्चवालधिः अपरापादयोःस्फिग्भ्यांहस्तमात्रसमुच्छ्रयः अपरे
दीर्घैर्नतनूरुदेहिसमसंगुलायते तन्मात्रेणतथागात्रेणतस्तुटेवापिनिःप्रमे चरणाश्चगानक्तापेक्षतहिंसंगुले
नंखैः संयुक्ताः स्फुटितानिम्नामानेनाष्टादशांगुलाः एवमुद्देशमात्रेणकथितंमृगलक्षणं विशेषएवमयाश्रुतः
अन्यदप्यत्रनमविरुद्धंभद्रलक्षणोक्तंशास्त्रमितंशयः इतिमृगगजलक्षणं अथमिश्रगजलक्षणं मिश्रगजस्त
भद्रमंदमृगलक्षणैर्युक्तः सर्वसंकुललक्षणोभवति तथाचपराशरसंहितायां मिश्रत्वेतेषांपरस्परसंयोगजा
सर्वसंकुललक्षणोति मिश्रएवसंकीर्णइतिकथ्यते विलक्षधर्मांतरे संकीर्णलक्षणोनागः संकीर्णश्चनिगद्य
तइति पालकाप्ये बहुाशीबहुलीकश्चदंतपातेषुवालमः गच्छेन्मकृद्वेगश्चभारंप्राप्यावसीदति कुक्षावा
प्यायतेनागः क्षिप्रंचपरिहीयते कर्कशत्वलवणेष्वेवकृतेश्चातुरतांव्रजेत् नित्यंचसांत्वयेदेनंनचैनमभिताप
येत् सर्वपालक्षणैः कैश्चिद्युक्तोमिश्रोभवेद्गजइति बार्हस्पत्यसंहितायांविशेषः अतःपरंप्रवक्ष्यामिसंकीर्ण
स्यचलक्षणं पश्चात्त्वावर्णेरुष्णोगच्छतोचविधानिषु येतुकास्तुभवंत्येतेगजाः संकीर्णलक्षणाः भद्रोमंदो
मृगोवाथप्रबुद्धजातिः प्रजायते तस्मान्मिश्राणिरूपाणिगदतोमेनिबोधत आनंत्यान्मिश्रभेदानांनिश्चयोनोप
पद्यते तथापिकिंचिदुद्देशान्मिश्रलक्षणमुच्यते भद्रमंदोभद्रमृगोभद्रमंदमृगास्तथा इहभेदत्रयंमंदमृगयोरपि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जायते भद्रादीनां च सर्वेषां तु रूपं संकीर्णसंज्ञितं ऊर्ध्वाधः कायभेदेन तत्पुनर्भिद्यते द्विधा त्रिधा च भिद्यते भूयो यत्के-
केनचिद्यथाक्रमं एवमष्टादशविधं कीर्तितं मिश्रलक्षणं शुभाशुभविभागेन सांप्रतं निगदाम्यहं भद्रमंदो भवेच्छ्रेष्ठो
मृगमंदस्तथाधमः भद्रमंदमृगश्चैव मध्यमः परिकीर्तितः भद्रजातिर्महाकायो गजो मध्येन्दुदंतितो मंदावयवले-
लक्ष. शेन सम्पृक्तो भवति द्विपः मृगस्यापि द्विरूपेण किंचिद्यात्तु गतेन वै अशुभं तं न भद्रस्य जायते शोभनो द्विपः लोचना-
१३० नाप्रधानत्वं यस्माद्ब्रह्मा स्वयं कीर्तितं तस्मान्मृगाद्विसंसक्तो भद्रोपि द्विनशायते भद्रेणापरिकायेन मंदेनायोगितेन च
130 उन्नतो द्विगजानां तु भद्रमंदो भवेद्गजः अनेनैव द्विरूपेण विपर्यस्तेन यो गजः सोपि शोभन एव स्यान्मंदभद्र इति स्मृ-
तः एवं मंदमृगे वापि लक्षणैर्मिश्रलक्षणं मंदावयवबाहुल्यान्मृगरूपस्य लेशतः भद्रावयवनिर्मुक्तो मध्यमो
सो गजो भवेत् कायेन यो भवेद्भद्रो मंदो वापि मतो गजः मृगगात्रायस्यैव समभवेद्ध्रस्वगात्रान्गजः मृगरूपाधिकं तु
चरणे तेयस्य दंतिनः अधमस्तु स विज्ञेयः सत्वशक्तिविवर्जितः करदंतादिकं भेश्च यो मृगो जायते गजः शे-
षावयवभद्रोपि हीन एव भवेदसौ एवमुद्देशमात्रेण मिश्रभेदा मयोदिताः नोदितापि पितेष्वत्र मिश्रा ज्ञेया मनी-
षिभिः मिश्रलक्षणसंयोगे उत्कृष्टं यस्य दृश्यते रूपं तन्नामधेयो सौ नागस्ते हिमतेगजः इति इति मिश्रगजलक्ष-
णं अथ वनविशेषेण गजविशेषलक्षणं विस्तृपर्माप्ते रे अतः परं प्रवक्ष्यामि गजानां वनाष्टकं हिमवत्प्रया

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गलौ हिमगंगामध्ये मूहट्टने प्राच्यैरावणस्योक्तं वनेयत्र मतंगजाः किंचित्कमवर्णाभाऽस्वपलाः पृथुमस्तकाः कु
नवान् पूर्वतस्थानयामदमहागजाः अन्तरंगा त्रिपुरी दशार्णमेकलास्तथा तेषां मध्ये करूषाख्यं वनं पद्मस्य की
र्तितं ह्रस्वास्थ्यायतया श्यामाः शीघ्रोदग्रा महास्वनाः सूक्ष्मविंदुविनास्तत्र भवं च त्वर्थवेदिनः विंध्यशैले वेत्रवती
दशार्णा च महागिरि तेषां दशार्णकं मध्ये त्र्यध्यदंनस्य कानने सुहूनजव्वनश्यामाः सूक्ष्मविंदुविविचित्राः
स्थूलह्रस्वशिरोग्रीवास्तत्र जाता मतंगजाः पारिपात्रकवैदेशपनर्मदाब्रह्मवर्धनं वामनस्य वनं मध्ये तेषां वैमा
गिरेयकं स्वप्रमाणाश्च मधुवृत्ताः शीघ्रगाश्च सुविग्रहाः मधुत्ताः मृदुत्वचः करेणूनामदेयाश्च तनोकाश्चाल
योधिनः विंध्यस्योत्कलानां च दशार्णावस्य च वनं च मध्ये कालेशं सुप्रतीकस्य कीर्तितं चापवंशाद्यतन
यवाः पीनाह्रस्वशिरोधराः तनुत्वगुदरादीर्घाः पद्माभास्तत्र दंतिनः सेवादेशाः समुद्रस्य पूर्वे महाराष्ट्रं च नर्मदा तेषांम
ध्ये जनाख्यस्य वनं त्वपरांतिकं पीतायतविषाणाश्च श्यामा महाकाया बलाधिकाः रक्तताल्वोष्ठजिह्वाश्च जायंते तत्र
त्र दंतिनः कुशस्थली महीपालश्चावंत्योर्बुदनर्मदाः तेषां मध्ये तु सौराष्ट्रं वनं नीलस्य कीर्तितं कुशस्थलीद्वार
का द्वारकार्बुदावंति नर्मदान्तरतः सौराष्ट्रकं वनं क्षितिपराशरोक्तेः तस्य वंशे तु जायन्ते चञ्चलैकल्पदेहकाः स
स्मरूक्षत्वचश्चैव वनथाश्रितास्तज्जो गजाः हिमवत्कालिकासिंधुकुरुजांगलमेव च तेषां पंचनदं मध्ये कुमुदस्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

महद्वनं स्फुरिताग्रहस्तास्तत्र जायंते केवलद्विषः ध्यानशीलाश्च भूताश्च दुर्विधेयाश्च वारणाः एतत्रवोक्तं च म
तंगजानां कुलाष्टकं चैव वनाष्टकं च अतः परं किं कथयामि तन्मेनन्मेवद त्वापतलोहिताद्देति वार्हस्पसंहि
तायां विशेषः तदष्टानेव वनानां मध्ये प्राच्यं कालिंगकमपरांतिकं चौणिवमानि शोभनानि त्रयाणामपि प्राच्यं
लक्ष· वनं शोभनं तत्रकृतयुगोत्पन्नाः ऐरावतकुलप्रसूतिसंभवाः प्रायेणाम्रगामिस्त्र भद्रलक्षणाः महाकायाः का
१२१ रिणो भवंति नातिक्रोधनसमुद्वेजिताः सर्वदर्शीयति तेच ह्रद्वकवलैः कायोपचयातिशयेन महामिसुखोः क
131 लिप्याः कालिंगके चापरांतिके च त्रेतायुगोत्पन्नाः सुदमहागजा वंघवाः गजा मंदाभिधानाः प्रायशो मृगा वंघवाः सं
कीर्णा गजाः समुत्पद्यंते नात्सदयाजलदप्रभानातिमहाबुद्धिधियाश्च गजा भवंति तथा च करूषदशार्णकमार्गि रे
यकाभिधानेषु मध्यमा गजाः समुत्पद्यंते मृगमंदजातयः ते च मध्यमबलाः मध्यमप्रमाणाः स्थूलरोमाविलशरीरा
मंदजातयः तथा च सौराष्ट्रपांचनदाभिधाने द्वापरयुगोत्पन्ना मृगमंदगजान्वया मृगप्राया गजा भवंति भीरवः कु
त्सितमदाना अतिचंडा दुर्दमा दुर्हृताश्च एवंविधा गजाः समुत्पद्यंते वनाच्च वनांतरगजेषु दुर्हृतेषु येतु कासंपर्केण
प्राच्यवनेपि कालिंगकेपि अपरांतिकेपि कृत्सासनश्च भीरुश्च बलवान् हीनमस्तकः हीनाग्रभोगो दुःशीलश्च संहत
शरीरमत् समुत्थितस्तनायामपरिणाहविवर्जितः भारभीरुर्विलंबिनाततनाश्री विवर्जितः मृगाख्यरूपो हीनश्च

१३१

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मृगजातिर्गजाधमः ॥ श्रेष्ठवने सुपित्र्यवनान्तरस्थदुर्दृष्टिनगजसंपर्कैर्गणा गजाः ॥ प्रथमउत्तमयन इत्यर्थः ॥ इति वनशोभेनागा
जविशेषलक्षणं ॥ अथ गिरिनद्युभयचरगजलक्षणं बार्हस्पत्यसंहितायां ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि लक्षणं गिरिचारिचा-
रिणां ॥ तथा नदीचराणां ॥ महाबला महाकायाः समस्तगुणसंयुताः ॥ स्वपार्श्वाश्वाहृदिग्धांगा दृढपादा गतक्लमाः ॥
उदग्रा निर्भयाश्चैव सल्लकीकवलप्रियाः ॥ नदीयातविभिन्नाग्रदन्तदारितभूतलाः ॥ शार्दूलादिमहासत्त्वसंस्फोटन
कवर्जिताः ॥ मदस्रावकृतोत्साहा दुर्दमा वारिभीरवः ॥ पांसुक्रीडागता नित्यं संहृष्टोन्मूलनतत्पराः ॥ विषाणवेष्टनासक्ताः
शूरा गिरिचरा गजाः ॥ स्निग्धच्छाया नवैः स्निग्धैः पृथुपादा महोदराः ॥ दीर्घहस्तविषाणाश्च नगा ज्ञापरास्तथा
अस्थिराभिन्नशीलाश्च खेदसंतापनाशकाः ॥ कराग्रस्फोटनिरताः शीत्कारकरणप्रियाः ॥ अन्तर्दग्धाघनप्रभाः सी
करोद्गिरणप्रियाः ॥ तोयकर्मणि विज्ञैः पंकात्ते गजाश्च नदीचराः ॥ उभयेषु चरन्त्येते नदीपर्वतसानुषु ॥ ये गजा हृष्टम
नसस्ते भवंत्यतिशोभनाः ॥ इति गिरिनद्युभयचरगजलक्षणं ॥ अथ गजाङ्गलक्षणं बार्हस्पत्यसंहितायां ॥ संप्रत्येत
त्ववसेहमाङ्गलक्षणमुत्तमं ॥ आभ्यन्तरं च बाह्यं च लक्षणं द्विविधं स्मृतं ॥ आभ्यन्तरं योगसाध्यं बाह्यं किंचिच्चलं स्मृतं ते
नांतरं परित्यज्य बाह्यलक्षणमुच्यते ॥ देहावयवसंस्थानि दश द्वे त्राणि दंतिनां ॥ छायासत्त्वसमायोगाद्दंतिनां द
शैव हि ॥ एकं हस्तगतं द्वे त्रि दंतिनीयं वदनाश्रितं ॥ तृतीयं च विषाणस्थं चतुर्थं शिरसि स्थितं ॥ पंचमं नयनस्थं च षष्ठं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करागिस्थितंभवेत् कंठस्थंसप्तमंचैवअष्टमंगा-संस्थितं नवमंचोरोविज्ञेयं शीर्षगंस्यद्दिपंचकं एकादशंचकोटि
स्थंद्वादशंस्तनसंस्थितं एवंद्वादशलेशांशमाततेगानांभवंतिहि द्वादशेचदशाज्ञेयादशवर्षाभिलक्षिताः वि
शांतरंविंशशतंभद्रस्यायुःप्रकीर्तितं अष्टाप्यशीतिर्मंदस्यचत्वारिंशन्मृगस्यच मिश्रस्यचायुषःसंख्याज्ञातिभा
लक्ष. वेनजायते प्रदेशजातितत्वज्ञोनातिसम्यगुपलक्षयेत् सर्वैःक्षेत्रैस्तुसंपूर्णैःसंपूर्णायुर्गजोभवेत् हीनेष्वहीयते
१३२ चायुर्यत्नाग्वदभिधीयते दशाष्टानांक्षयंकर्णौहस्तोलक्षणवर्जितः विंशात्यष्टविनाशश्चहीनेक्षेत्रद्वयेभवेत् क्षे
134 त्रत्रयेविहीनेचत्रिंशत्यष्टपरिक्षयः चत्वारिंशत्समानाशोहीनेक्षेत्रचतुष्टये समाःसंवत्सरः पंचाशदष्टाहीयंते
हीनेतुक्षेत्रपंचके षट्क्षेत्रहीनतायांतुषष्टिवर्षविनाशनं सप्ततिरष्टविनाशायसप्तमक्षेत्रविहीनता अशीतिरष्ट-
भिर्हीनैर्वर्षाणांचविनश्यति नवतिर्नवभिर्हीनैःक्षेत्रैर्नाशंप्रयातिच दशभिस्तुतथाहीनैर्नवत्यष्टशतंध्रुवं द
शांतरंचाष्टशतंहीनाब्दायाविनाशयेत् विंशांतरंचाष्टशतंहीनेसत्वेविनश्यति एवंदशाष्टनाशांतक्षेत्रंकुर्यादल
क्षणं एवमायुःक्षयंविद्यात्गजस्यगजकोविदः सामान्यलक्षणंह्येतत्जीवितस्यपरीक्षणे विशेषलक्षणंयाव
न्महलक्षणज्ञानिनः एवमुद्देशमात्रेणगजायुर्लक्षणंनवेत्ति कथितमितिशेषः इत्यायुर्लक्षणं अथदोषना
शाकलक्षणं बार्हस्पत्यसंहितायां नखाःस्निग्धाःसिताःशस्ताविंशतिस्तनरेश्वर अष्टादशचनागस्यशेषास्त्वशुभ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संस्थिताः पादेदोषक्षयंकुर्यात्रत्वानांसुभलक्षणं पादानांलक्षणंचैवगात्रदोषहरंभवेत् पुष्करस्यगुणेनदोषान्ना
शयन्संगुलिस्थितान् लक्षणंचांगुलिगतंनैकदोषविनाशनं हस्तस्यलक्षणंसम्यक्छेदनदोषंप्रनाशयेत् दंत
योर्लक्षणंहंतिदोषान्वाहिन्यसंस्थितान् वाहित्यलक्षणेसम्यक्कुनेत्रदोषक्षयोभवेत् नेत्रयोर्लक्षणंहंति
दोषांस्तात्रसमाश्रितान् सृक्किदोषविनाशश्चक्रियतेनालुलक्षणैः सृक्किणीलक्षणंकुर्यात्तद्गतदोषना
शनं कपोलकटदोषंचनाशयेत्तद्गतोगुणः निर्याणवानकुंभानांदोषघ्नःकटयोर्गुणः कुंभदोषविनाशा
यतेषामेवगुणोभवेत् कर्णदोषविनाशश्चक्रियतेकुंभलक्षणैः कंठदोषविनाशायकण्ठलक्षणमेवहि
आसनस्यहियेदोषास्तान्हरेत्कंठजोगुणः वंशदोषक्षयकरआसनस्यगुणोभवेत् गुणोहंतिचवंशस्यदो
षान्नलसंस्थितान् नल्वलः पृष्ठवंशोभयपार्श्वप्रदेशः पश्चिमासनदोषघ्नंलक्षणंनल्वलाश्रितं कु
क्षिपेचकदोषघ्नंपश्चिमासनलक्षणं गुणः पेचककुक्षिस्थाः पुच्छदोषविनाशनाः मेढ्रदोषक्षयंकुर्यात्पुच्छलक्ष
णमेवहि मेहनस्यगुणोहंतिदोषांश्चैवापराश्रितान् अंडिकोशगतंदोषमपरालक्षणंहरेत् नाभिदोषक्षयंकु
र्याद्दंडिकोशस्यलक्षणं नाभेर्गुणोश्वहंत्येदोषांस्तत्रसमाश्रिताः रोमणिगतान्दोषान्नाशयेत्स्तनलक्षणं
चिबुकस्यहरेद्दोषांस्तुरोमणिगुणोदयः यथादोषक्षयोराजन्लक्षणैःक्रियतेशुभैः एवंदोषातिरेकोपिप्रदेश

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गुणनाशनः प्रदेशोनंतरस्यैव प्रदेशस्य गुणान्वितः कुरुते दोषनाशं हि स दोषो गुणनाशनं करकुंभविषाणादि
कर्णौ लक्षणसंयुतः सर्वैर्न्निर्वैः शुभैरन्यैर्लक्षणैश्च शुभो गजः इति दोष- लक्षणं अथ गजमानलक्षणं वा-
ह्यस्यन्यस्य हितायां गुत्तैथायामनारहानां संप्रते कथयाम्यहं समतं तत् समाश्रुकं सत्वं कृतास्त्र वर्तिनं सप्तशस्तेदि
नेनित्यं मानं कुर्वीत मानवित् समारत्निर्गजेंद्राणां प्रधानं कुलजन्मनां आसनं यावदुत्सेधस्तलसंधिस्तु कीर्तितः
लक्ष. १३२ 132
तलसंधि पिपीवदासनमुत्सेधमिति संबंधः तलसंधिस्तले पादतले संधिः संधानं संस्थानं यस्य सः पादतलमारभ्या
सनपर्यंतं समारत्निरुत्सेधो द्वे हस्ते इत्यर्थः एवकान्यतिमानं तु आयामो रत्नयोनवः मध्यदेशे तथा नाहो द्वेशार-
त्रिः प्रकीर्तितः मानमेतद्धि भद्रस्य मुनिभिः परिकीर्तितं सप्तमेन तु भागेन हीनं मंदस्य जायते मंदाद्धीनं मृगा
ख्यस्य षड्भागेन प्रकीर्तितं एवं क्रमेण योक्तव्यं मानं मानविशारदैः किंचिन्न्यूनेधिके वापि न दोषः प्रतिपद्यते दो
षाणां च गुणानां च वृद्धिरेव फलप्रदेति इति गजमानलक्षणं अथ देवलक्षणं पालकाप्ये गजहृदये देवताः
हस्तो रदस्त्वदं नौ शीर्षं वचचक्षुषी कर्णौ ग्रीवा वगात्रं च वलः कायस्त्र भेदतः एतानि दशदेवानि दशदशान्तरप
देगं शुभ अशुभलक्षणप्रत्नं यत्नतेतांतगीतं तद्दशायामेव तत्र शुभाशुभफलं भवति तथा च पालकाप्ये गजहृदे
दशायां च तदाख्यातं प्रभूतमिति सूरिभिः लक्षणं दक्षिणांगस्थं हस्तिनः पुण्यपापदं तथा वामांगगं तत्र ह

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्निग्धाः फलदं मतं दशनायां लक्षणं शुभं तत्फलदं मम मितिसंबंधः लक्षणविशेषोपि सम्यग्लेनैव महद्युक्तं भवे
यच्च लक्षणं तन्महाफलं यदल्पमप्रकाशं च तदल्पफलदं मतं मध्यमेन फलं मध्यं लक्षणेन समादिशेत् शुभा
शुभेन मिश्रेण च ज्ञानेनादिशेत्फलमिति इदं च गजलक्षणफलं राज्ञां भवति करेणुलक्षणफलं च राज्ञः
स्त्रीणां तदप्युक्तं पालकाप्येन गजहृदये लक्षणं तु गजानां यस्याः फलं भूमिभुजां मतं फलं भूपावरोधानां करे
णूनां गस्य लक्षणादिति गजानामशुभलक्षणमपि राज्ञां रोहणोऽशुभफलं भवति तदुक्तं पालकाप्येन गजहृद
ये कदाचित्शुभं देवास्य गजानामप्यलक्षणं शुभकर्मणामासाद्य राजानमथवा द्विजं यथा हि सर्वसरितः
समुद्रं समुपेत्य हि स्वरसेन विशुध्यन्ते भवंति लवणांभसः एवमासाद्य नृपतिं स्वकुलक्षणान्वितं भवंति
वाधितानीह दुर्लक्षणफलानि च राजा दृष्टेन यानि स्युः पापविघ्नानि हस्तिनां विघातान्यफलान्येवं गीयते
सोमसूनुना राजाधिरूढस्य गजस्य यानि भवंति पापानि तु लक्षणानि सर्वाणि तानि प्रलयं प्रयांति राज्ञा हि
लोके परमं पवित्रमिति इति दोषलक्षणं अथ छायालक्षणं बार्हस्पत्यसंहितायां सर्वेषामेव नागानां छाया
लक्षणमुत्तमं न यथा जायते यस्य तत्तथैवाभिधीयते सन्नाशकं तदा इस्य पाटला भवति प्रभा नवसंगफ
लच्छाया स्निग्धा नवतनुरुदा न यातमोंशकना चक्रसामदस्य जायते नरुणांबुदसंकाशा स्थूलकुलकचा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विस्ता रजोंशकताच्च तथा मृगस्यापि हि धूसरा मलिनांबुदसंकाशास्तद्वत्तनूरुहा एवंछायाविशेषास्तु भद्रादीनां म
योदिताः छायासंमिश्रभावाच्च मिश्रा भवति दंतिनां सत्वं रजस्तमश्चेति क्रमोऽयं श्रूयते किल भद्रमंदमृगाणां च क्र
मेणैव हि गृह्यते नैश्चवयतस्तयाशोकं यतो मंदस्तमोंशकः रजोंशको मृगश्चेति मामेदं वक्तुमर्हसि ततः फलाव
वनं तस्य प्रमुखाच्चहृदस्थितिः वनजातिगुणैरेव भद्रः प्रोक्तो नरोत्तम तमोंशकत्वं मंदस्य तेषु केनि वोधमे ड
लक्ष॰ १३५ गीति त्वं तथालस्यं निद्रालुत्वं च मूढता गंभीरवेदिता चैव दुष्टत्वं च तमोगुणाः एते मंदस्य जायंते तेन मंदस्तमों
शकः तेजस्विता च चंडत्वं चंचलत्वं तथैव च शीघ्रत्वं क्रीडितत्वं च तथा चाज्ञानवेदिता एते रजोगुणा राजन्मृ
135 गस्तेन रजोंशकः धैर्यं स्थैर्यं पटुत्वं च विनीतत्वं सत्कर्मता अन्वर्थवेदिता चैव भयस्थानेषुमूढता सुभगत्वं वधी
मत्वं सत्वस्यैते गुणाः स्मृताः अतः सत्वांशको राजन्भद्रजातिरुदाहृतः इति हस्तिहृदयप्रबंधे भूयोऽयं त्वमु
हज्जातानामेवं छायाविभाषिणां प्रशस्ताश्चाप्रशस्ताश्च सफलानिःफलापि च छायायाः संभवः पूर्वपरतः परि
तःप्रभा छाययापि हि दृश्यते देहं प्रभा तस्मात्ततः स्थिता वर्णमात्रमतः छायाप्रभावर्णप्रकाशिनी उत्कृष्टेलसते छा
यानिकृष्टेभाप्रकाशते स्निग्धतासांद्रतास्थैर्यप्रकाश्च प्रभवर्णिनां दीप्तताचेति कथिताः छायायाः षड्गु
णा बुधैः लक्षणानि तु नागानां पापानि विभानि च छायावशात्फलेन्नेवं छायायामतिलक्षणं यस्मात्तु॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क्षणं यस्य स्याल्लक्षणं भद्रं छाया भद्रा भवेत्तु न नैवासौ शुभदो हस्ती छायायो यत्र न लक्षणः पापलक्षणयुक्तोऽपि शु-
भच्छायायुतो गजः फलं लक्षणजं हित्वा छायाफलमवाप्नुयात् नीराजनेऽभिषेके च ध्वजोच्छ्राये रणोदये ते-
षु तेषु च कालेषु भवेत् छायावलोकनं वक्तास्मिपतिमाने च कुंभकर्णकटेषु च निर्याणमस्तकस्थाने वेष्टयोश्च
कपोलयोः पिंडिकाजघनाभोगे तेषु तेषु प्रदेशेषु च मोदितेषु प्रधानेषु छायाया वीक्षणं भवेत् शस्यते पार्थिवी
छाया वह्निजा जलजापि च नेष्यते व्योमजा छाया मानविभ्रमवत्स च पार्थिवी स्निग्धगंभीरा सर्ववर्णविभाव्यते
छाया स्या सांद्ररक्ता च स्निग्धजंबूनिभा प्रिया छाया नीलांबुदाभासा स्निग्धा सलिलसंभवा अव्यक्तपरुषा तस्य
छाया वगमने तथा धवलानूक्षा च वायव्या भस्माभा निःप्रभा तथा एताः छायाः परीक्षासु मतं गेराजस्य जिने नी-
लांबुजेंद्रनीलाभा नीलांजननिभापि च कापुत्रका पार्थिवी छाया स्निग्धद्धेमकारिणी बालार्कपद्मकिंजल्क
शक्रगोपकसन्निभा ज्वालाभा तप्तहेमाभा वह्निजा विजयप्रदा छाया स्फटिकपयः शंखकुंदरूप्यविसद्युतिः सौम्या
च्छाया प्रतीता च भर्तुरर्थप्रदा सदा जलबुद्बुदसंकाशा धूम्रा चपलतिरस्थिरा जिह्मा च व्योमजा छाया निःस्नेहगक-
रीमता सर्ववर्णैरुपेतापि निःप्रभा भस्मसंनिभा विच्छिन्ना विकृता छाया वायव्या नर्थवपावहा वैरिंची वैष्णवी
शांकरी तथा चैव हि शांकरी कौमारी राक्षसी सार्पी गांधर्वी च तथासुरी पैशाची चेति याम्या नाः छायादिव्याः कथि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष० २२५ 135

तप्रभाः भूतोमलत्वणेनासाममभेदान्नेदकीर्तितं तेजोतिसत्का मद्रस्य पाटला भवति प्रभा छायारक्तारुणरुचिः पद्म
रागनिभापि वा कृष्णा वामेदकरिणः छाया च मृगहस्तिनः मलिना वर्धूम्रैव गीर्वाणगुणदर्शनादिति इति छाया
लक्षणं अथ वर्णलक्षणं बार्हस्पत्यसंहितायां अतऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि गजानां वर्णलक्षणं आहारस्य विशेषेण वात
पित्तकफैस्तथा देशजातिगुणैश्चैव बीजयोनिवशेन च ग्रहालोकनवक्षत्रलग्नराशिवशेन च पूर्वकर्मवशाच्चापि
धातूनां च विपर्ययात् भवंति कारणैरेभिर्वर्णा नानाविधा नृप दिव्यसत्वाः शुभे भेदैस्त्रिविधास्ते भवंति हि सिंदूरसं
त्विवैदूर्यविद्युज्जाम्बूनदप्रभाः इंद्रनीलोत्पलादित्यहरितालनिभाश्च ये अतिश्वेताश्च रक्ताये शुकबर्हिणसप्रभाः बर्हि
णो मयूरः एते देवगजाः सर्वे भूतलेन भवंति हि दैवयोगाद्धनेशस्य तेषां कश्चिद्यदा भवेत् वंदनीयस्य सर्वस्य नासौ
ग्राह्यो नराधिपैः दिव्यवर्णास्त्रिभेदोक्ताः प्रशस्तान्शृणु सांप्रतं अलोहितस्य कृष्णस्य श्यामो वर्णत्रयं शुभं स्निग्ध
छायासमायुक्तो भवेद्भूतलदंतिनां गोमूत्रांगारभस्मास्थिपंकमांजिष्ठसन्निभाः म्लानपुष्पसवर्णाश्च गजास्ते च गजा
स्त्वेते निंदिताः एवं वर्णविशेषास्तु कथितास्तव सुव्रत गजमेकादशगुणं वक्ष्यमाणं निबोध मे मधुसन्निभदंत
श्च श्यामो मधुनिभेक्षणः इदे पांडुवर्णश्च वक्त्रे च कमलप्रभः द्विरेफसमवालश्च कृतें दंड सदृशैर्नखैः द्विरेफो भ्र
मरः बालाः पुच्छस्याः केशाः छूतपल्लवमेद्रश्च शेषे षगे षु पीनकः विचित्रं च मनावपस्यरकः श्वेतेश्च विंदुभिः स्तना

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गोगजस्थानांमध्येराजा न तु जायते तेषामप्यनपतिर्भुंक्ते सागरांतं महीतले नीलःसवर्णसंस्थानः सगजोगजना
थनः सुविभेदे वृहत्से च कर्णौ दरशिरःसृथः केशैः सुभैश्च हृष्टुलैः विंदुभिः परिमंडलैः सवर्णौर्योभवेद्दस्तिः
किलासःसोमिधीयतइति हृदयप्रबंधे तत्रापिश्वेतवर्णेन मुक्तवर्द्धमणिविभा सुहृद्देमरुचाचेताः स्वराद्दीनन
रेणुचानन्तरायःहृस्वाः श्यामाश्च कनिराः स्मृताः स्वेस्ववर्णे च स्वविन्यासैः संदिग्धाश्चश्वेसिताः हरिमधुस
वर्णः स्यान्नूत्पलश्चांजनसंन्निभः नकालोन हरिर्नागो मध्यमः श्यामइष्यते एतेषु वत्रिवर्णेषु हरिवर्णो वरोमतः
मध्यमःश्यामवर्णश्च कनिष्ठः कृलविद्युतिः श्वेतेस्तनुरुद्दैरामःसमेतादेकरूपजैः सूक्ष्मविंदुचितोहस्ती हरिव
र्णोमहावरइति इतिवर्णलक्षणं अथगंधलक्षणं हेमाद्रौ हृदयप्रबंधे आस्याक्षिकुंभकर्णेषु मदनिश्वाससवा
युषु ग्राह्यं हस्तमसृग्मूत्रेषु गंधान्समुपलक्षयेत् वमथुर्गजकरसीकरः इष्टगंधान्विषेवेत वारणानवनीश्वरः अन
भिप्रेतगंधांश्चयत्नतः परिवर्जयेत् सर्पिर्मधुयवालाजादधिक्षीरानुरूपकः यरामृत्तिका मालतीकेतकीजाती
चंदनादिकसौरभः वचासवफलामोदोगंधोनागस्य संपदे अस्कृन्मूत्रशकृत्स्वेदवसाकुणपकुत्सितः पद्मिनीउ
त्पलाह्लादिसमपर्णादिसंन्निभः त्वरोष्ट्रसूकरसमःश्वानमेषादिसंन्निभः मीनमत्कुणतैलश्चगंधोनागस्यदुःखदः
आमोदवासितजलाय वगोहेषु वारणाः तेनभीतिभिरिष्यंते सागरांतधराभुजा येष्वामोदवासितजलास्तेगजाः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष.
१३९
136

भूभङ्गं भवेन्नीत्यर्थः कुञ्चितं गन्धास्तु भयायज्ञेयास्त्वर्थः इति गन्धलक्षणं अथ निश्वासलक्षणं वार्हस्पत्यसंहितायां
अतः परं प्रवक्ष्यामि निश्वासस्य तु लक्षणं निश्वासो द्विविधो ज्ञेयः शुभश्चैवाशुभस्तथा शुभः स्वराभिगन्धः स्यात्
दुर्गन्धस्त्वशुभो मतः विशेषेण तु नश्चैव लक्षणं चास्य कीर्त्यते सूक्ष्मनादीर्घता चैव समता च सुगन्धिता सौकुमा
र्यं मृदुत्वं च निश्वासस्य तु षड्गुणाः स्थूलता ह्रस्वता चैव दुर्गन्धत्वं तथोष्णता पारुष्यं विषमत्वं च दोषाश्चापि भवे
न्ति षडिति इति निश्वासलक्षणं अथालोकितलक्षणं वार्हस्पत्यसंहितायां अतः परं प्रवक्ष्यामि राज्ञालोकि
तलक्षणं स्निग्धं स्थिरं च सौम्यं च वारिजोत्फुल्लतारकं सलज्जं प्रतिनागं तु प्रेक्षितं करिणां शुभं उद्विग्नं चैव लेढीन
मविकासिततारकं ऊर्ध्वाधः पार्श्वदृष्टिं च निर्लिखं निन्दितं भवेदिति इत्यालोकितलक्षणं अथ गतिलक्षणं वा
र्हस्पत्यसंहितायां अतः परं प्रवक्ष्यामि मातङ्गगतिलक्षणं समा चलत्ध्रुपादा च वेगप्रतिशुभा मता दीर्घक्रमा
नुवोन्निमा गात्रसंचारशालिनी शुभलक्षणसंयुक्ता पुरुषस्य गजस्य च मातङ्गवृषसिंहानां गतितुल्या शुभा ग
तिः अत्र मातङ्गवृषसिंहानां गतितुल्या गतिः पुरुषस्य शुभा वृषसिंहानां गतितुल्या गतिर्गजस्य शुभेति विभ
ज्य व्याख्येयं अन्यथा अतः परं प्रवक्ष्यामि मातङ्गगतिलक्षणमित्यादिना गजगतिलक्षणकथनप्रस्ताव एव माते
गगतितुल्या गतिर्गजस्य शुभेति विरोधः प्रसज्येत एवं चाविरोधः ननु अतः परं प्रवक्ष्यामि मातङ्गगतिलक्षण

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मित्यादिनागजगतिलक्षणमुपक्रम्यमध्येपुरुषगतिलक्षणमुक्त्वा कथितंनवराजेंद्रगजानांगतिलक्षमित्युप
संहृतं एवंसति उपक्रमोपसंहारभंगः स्यादितिचेन्न गजगतिलक्षणकथनप्रसंगात् पुरुषगतिलक्षणमुक्त
मितिनविरोधः आर्षत्वाच्च नहिऋषीणांनियोगः कर्तुंशक्यतइति क्लेशचालितगात्राधाविषमास्खलत्क्रमा
वेगेपिमंदसंचाराविशेषांदोलितासना मृगस्यकृकलासस्यजंबूकस्यखरस्यच गमनेनसमायानस्याधमादं-
तिनांगतिः कथितंनवराजेंद्रगजानांगतिलक्षणमिति हृदयप्रबंधे शृगालकृकलासादिसमानीविकटास
मा उद्भूतास्खलितावक्रासंकीर्णानेष्यतेगतिरिति इतिगतिलक्षणं अथवेगलक्षणं बार्हस्पत्यसंहितायां सो-
प्रतंच यथाशास्त्रंकथ्यतेवेगलक्षणं तिसृणामपिजातीनांशृणुष्वावहितोभव नवालेनचषड्ढंचद्विपंच
पदसंस्थितं गजोत्थानसहोत्थानेनरंवेगेनधाविते द्विपंचपदसंस्थिते दशपदस्थिते गजोत्थानसहोत्थाने
गजधावनसमसमयधाविते पंचाशत्क्रममात्रेतुपरस्परहस्तानिवारणः कोपाविष्टेनमनसासवेगोनोत्त-
मोमतः परस्परहस्तानिवेगेननरंसमपदांतरं पदानांशतमात्रेतुसममध्यमजवोभवेत् यस्तुपंचदशस्वहितनरं
हस्तानिवेदितः पदानांतुशतेसार्धेसहीनजवउच्यते शतद्वयेवापतुषांगच्छेदुत्तमितानतः द्वाविंशतावमा
त्राभिःसउत्तमजवोभवेत् मात्रालक्षणंचपुरुषलक्षणप्रकरणेनिमेषलक्षणकथनावसरेणाभिहितमतो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेष्टोच्यते पंचाशताच मात्राभिर्यो याति च शतद्वयं समध्यमोऽधमोत्तेयो मात्राणां च शतद्वयात् एवं परीक्षते राज
न्वेगो वीथीषु दंतिनामिति हृदयप्रबंधे द्वात्रिंशत्संख्या मात्राभिर्यो याति पन्नुगोमहत् सउत्तमगतिर्नागो गतिज्ञैः
परिनिष्ठितः मात्रापंचशतामध्योहीनोऽशीत्याच गच्छतीति इति वेगलक्षणं अथ शब्दलक्षणं बार्हस्पत्यसंहि
लक्ष· तायां स्थानान्यष्टौ नपतेर्भवंति शब्दस्य वारणेंद्राणां तालोष्ठशिर उरःकण्ठजिह्वामूलं गलकपोलौ च च गंभीरसौम्य
५२ हृष्टाः स्निग्धाश्च गर्जितास्तथा स्निग्धाः नादाः शुभा नराधिप षडेव कथिता गजेंद्राणां चत्वारस्त्वशुभास्तेरौद्रास्त्रयम
137 यशोकसंगमोत्सन्नाः एवं शुभाशुभमनादशप्रकाराः स्वराज्ञेयाः अन्येपि वक्रकाणगतानिलास्फालनोद्भवा बहवः
शब्दा भवंति करिणां शुभाशुभं तैर्नेसंभवति निश्वसितं चतुकापित विरूहित कूजित खरोष्ठनादनिभाः वायस
जंबुककपिकाष्ठभंगसदृशाः स्वरास्त्वशुभाः ज्ञेयानि शुभानि सदा मृदंगजीमूतडिंडिमिनि पोताणित फेनायित गर्जि॰
तहसितानि हंदितानि नागानां पोतायितं च तालोष्ठसंभवं गर्जितं च कंठेन जिह्वामूलसमुत्थं फेनायितमित्यभिख्या
तं हसितं कपोलजनितं पुष्करविवरोद्भवं च नागानां भवति यन यान्म्बाहनमूलामकरेन रेद्रस्य हस्तेन मृदंगर
वं कर्णाभ्यां डिंडिमिनिस्वनं चैव दईरवंगलेन च करोति यो जयकरः सगजः सर्वस्थानसमुत्थाः शब्दा नरनाथ वार
णेंद्राणां आचार्यैः सर्वैर्हृदितसंज्ञाः शुभास्तु विज्ञेयाः एते च जयपराजयकथनसमार्था भवंति भूयानां गर्हितश्च

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भग्नदेशन्यानोगंपरिवह्हितानादाः शुष्कतृणकाष्ठकंटकवल्मीकास्थिश्मशानदुष्टाश्म पाषाणांगारादिभूमि
प्रदेसंस्थिताः करिणः बृंहंतिदीनलतगमसकृद्दर्जंतदाजयोनास्ति जयदास्तुशार्दूलादिशरभोदेशास्थि
तानिमं स्पर्शीतिकरायेणांयदानराधिपस्यविजयस्तदाराजन् सेनामध्येचयदाबृंहतिशार्दूलवत्गजोहृष्टः
भवतिस्वसैन्यस्यतदाविजयःसंख्येनरेंद्रस्य संख्येःसंग्रामः कुलहंसनादमधुरंकिंचिच्चोद्दितिमपुष्करस्तुतदा
बृंहतिवारणनाथस्तदाजयंनरपतिर्लभते दशनविवरनिर्हस्तस्तुरंगगंभीरशंखनादसमः बृंहतियदाचहस्ती
स्तीतदाविजयोभवेद्भर्तुः मुखविवरकपोलगतंशुंडाग्रसकृद्दनोपदाहृष्टः मधुरंगासिहजंततनजयप्रदंभति
भूपानां क्रौंचरवंहंसरवंनागोबृंहितंयदाकुरुते एतदपिनागहसितंजयप्रदंभवतिभूपानां गर्जतिकेदेनयदा
यथाघ्ननोवारणः प्रहृष्टमनाः मुखरंध्रनिविष्टकरस्तदाजयोजायतेभर्तुः जलधरशब्दीतसलिलंसंसीकरंबृं
हितंयदाकुरुतेभवतितदानरनाथस्यशत्रुविनाशःस्वर्षेणैव कथितान्येतानिमयाशुभानिगजबृंहितानि
नरनाथस्य अशुभानिचनागानामतःपरंसंप्रवक्ष्यामि संकोचापिततयनोवराहघुषितवान्निः स्वनंकुरुतेयदि
नागोभवतिभयंतदारोगनपतिवलनून भूतलविस्तृतहस्तोनदतियदाधरणिकंठनादसम नरपतिराष्ट्रविना
शोभवतितदाशत्रुसैन्यकृतः जायेतविजयविघ्नंशांतेपुरराष्ट्रपीडनंचतया मदमुदितकरःखरवमस्पर्शोतिस्व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेपदिकरीकुरुते वलिभुक्कनिस्वनसदृशं यदि हुंहृति विनमिताननो हस्ती म्रियते तदास्य यातामासस्रां ते चतुर्थस्य
वलिभुक्कम्बा भूमौ वलितनिवेशिथिलकरो हुंहृति यदा करुणं मीलितलोचनयुक्तो गजो भर्तृविनाशनं तदाकु
रुते सततं दुःखितहृदयो रोगाणामागमे विभुभयं च खरपारावतरुतसमं हुंहृतिं मुखरः हस्ती कुरुते रूक्षं नादं
लक्ष. १३८ हुंहस्य सहूत्रस्थ्याहृयेयदा हस्ती हस्तिपसहितस्तदा सपवपं चतमपयाति आघ्राताननविवरो हुंहृति च यदा
स्तदुःसहंहंती सहसाभि— नजनितस्तदा भयं भवति भूपानां चीत्कारं यदि कुरुते प्रकर्षसंग्रामकाल्सितो हस्ती
138 चरणैः धरणीतलमस्तकरस्तदा भयं जायते भर्तुः यातारं सैन्यपतिं कुद्धो भीतश्च यत्नेन कुरुते गजपरिवर्जित
मुखः सनाशयेद्वारणः संविग्नशनिस्फूर्जितसदृशं द्विरदो यदि हंहते रणारंभे धरणीतलगतवदनस्तदा जयो
नास्ति भूपस्य विश्वसति दीनवदनो जंबुकनादानुकारिहृत्तप्राहुः योनागोरणसमये न नस्य भर्तो जयं लभते यः
किंकिणिस्वनसदृशं नादं करोति कुपितोपि साज्जो सो नरपतिनासितापक्रियाकरो भवति हर्षिततनूरुहो यदि हे
वृतिपर्यस्तलोचनो हस्ती पीलुः पतिपातनाशं तदा कुरुते ऽवश्यमेवासौ पीलहस्ती वामां दोलितचरणा
यदा करी हुंहृते सति ःस्वासं आलानगतः कुरुते तदा तयं यातृपीलुपतेः एवं प्रकृतिस्थाय दिमतंगजाहेष्टिता
निकुर्वंति आत्यंतिकानि राज्ञस्तान्येव भवंति नान्यानीति इति गजहल्लक्षणं अथावर्तलक्षणं हृदयप्रवंधेश्व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वर्त्तः षट्प्रदेशेषु त्वग्जो दशन मंगजः केशजः पक्ष्मजातश्च वालजो रोमजोपि च केशरोमभवो शस्तो दंतकुक्ष्य
नजः शुभः शोकानर्थप्रदाः प्रोकास्त्वजपक्ष्मजवालजाः भूमिदो रोमजावर्त्तो केशावर्त्तो जयप्रदः दंतभंगभवा
वर्त्तः स्तनदस्तथा कर्त्तनः पक्ष्मजावर्त्तस्त्वक्जातश्चानयप्रदः व्रणाकृद्वालजावर्त्तः शोकमारणसंभवः प्रशस्तो
दक्षिणावर्त्तो वामावर्त्तो विगर्हितः मतः शास्तो मरुङ्गु स्निग्धः सवर्णः पीनरोमकः वामेपि दक्षिणावर्त्तो वामाव
र्त्तश्च दक्षिणे आवर्त्तास्तेपि नाभीष्टा राजपुत्र मतेयथा शुभोप्यत्र तेजातस्त्वशुभं नैव प्रयच्छति अशुभः स्त्रेत्रजा
तश्चनानिष्टफलदः स्मृतः आवर्त्तै दैः ग्रहस्तेवस्तनयोरंतरे तथा ग्रीवायामस्त्रिकूटे च कुंभाभ्यंतरेन तथा नलस्तले दं
तवेष्टे च कर्णमध्ये च वक्षसि आवर्त्ता वारणानां हि निष्फलाख्याः शुभप्रदाः अवग्रहः कुंभोपरितनप्रदेशः अवग्रह
स्तः करागस्सोभयपार्श्वगतः प्रदेशः स्तनांतरे शिरोमध्ये कुंभांतः श्चूलिकांतरे वक्षसावर्त्तयोगेन कुंजरः पंच
मंगलः चूलिकाकर्णपिप्पल्युपरितनो भागः शीर्षावर्त्ताभिषेकापस्तनावर्त्तो जयाय च स्नावायष्ट्रजिकावर्त्तः कुं
भोरान्तः प्रियाय च वेशोप्रोष्ठवाह्निस्थेमन्यायां सगुदे कटे कर्णे त्रिकूटे नाभौ च कक्षपार्श्वास कुक्षिषु वालधौ पेच
केमे प्रसंधिकलास च आवर्त्ता न प्रशस्यंते कर्णभागेषु तेषु चेति वेशाः मुखदंडवेशाः नष्टवेशः संधिर्निर्याण
समीपप्रदेशः इत्यावर्त्तलक्षणं अथ पुष्पलक्षणं हृदयप्रबंदे स्वस्तिकादिषु संस्थानं पुष्पं दशनदेहजे स्निग्ध

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष. १३९ 139 भवेत्सुभच्छायमच्छिन्नं वांछितप्रदं कबंधादिकसंस्थानं विगतप्रभमस्फुटं रूक्षवर्णं चक्रकस्तम्भं तन्नोऽनर्थकरं म
ते दर्पणसदृशं सितं पुष्पं स्निग्धं पीतं च हेमदं नीलोत्पलेंद्रनीलाभं स्निग्धं काले च हृतिदं यच्च स्यात् पूजिते भागे कु
सुमं स्निग्धपांडुरं शुभाय च शुभाकारं न ज्ञेवेन्नृपतेः शुभं शक्रचापनिभं पुष्पं दंतोपरि च दंतिनः दिशो हृष्टं समिते
च देमं च तितिरक्षिणः श्वेतान स्निग्धरक्तं च पुष्पं रणासद्रो भवेत् पुष्पं श्वेतांतकाले च दानवृद्धिं विनिर्दिशेत् श्री
वृक्षादिनिभाकारैर्वैजयंतीध्वजोपमैः शैलप्रासादसदृशैः छत्रचामररूपिभिः सोमसूर्यसमाभासैः शिविकायान
मूर्तिभिः पुष्पैर्दशनरोमस्थैर्यथायोग्यं विनिर्दिशेत् बहून्यनेकवर्णानि कुर्युः पुष्पाणि ऽदुःखितं पुष्पं वर्णसंस्था
नेहसाद्दिसदृशाकृति श्वक्रव्यादनिभाकारं रणे मरणकारणं धूम्राभं पुष्पमिक्षेतिमत्यवेः श्रीभयाय च हस्तपुष्पा
दयेनापि हि षट्नागमोच्छ्रतमिति इति पुष्पलक्षणं अथ बलपरीक्षा बार्हस्पत्यसंहितायां अतः परं प्रवक्ष्या
मि तेषां बलपरीक्षणं गजेन बलहीनेन सद्रूपेणापि किं रणे गुणेभ्योपि बलं श्रेष्ठं तस्मात्परीक्षेत पंडितः शरीरं तु ग
तः प्राणो बलं शोद्धेनकीर्त्यते क्रियते वारणास्मात्स्मनसोपायैः परीक्षणं जांबूनदस्य ताम्रस्य पलानां रजतस्य
च अष्टादशसहस्राणि तत्वासं हृत्य वेगवान् जांबूनदं सुवर्णं दशयोजनमप्रधानं गच्छति श्रमवर्जितः योगजो
गजमध्ये तु सद्गतमबलः स्मृतः यश्चानर्दशसाहस्रं भारमादाय गच्छति सप्तयोजनमप्रधानं समव्यमबलो मतः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दशसाहस्रकं भारं दृढीन्वा पंचयोजनं अध्वानं यो द्विसं याति स हीनबल उच्यते अथवाश्वादिस्तंभं शिंशपामयमे
व च निर्ग्रंथिलं च वक्रत्वहीनं द्वादशहस्तकं सत्रिभागद्विहस्तेन परिणाहेन संयुतं चेन्दृस्तनिखातं तत्र यो भिनत्ति त
मो द्विसः अथवोत्पाटयेद्वापि बलेन महता पुनः सार्धत्रिहस्तनिखातं सप्तहस्तोच्छ्रितं तथा पंचाशदंगुलीकेन
परिणाहेन संयुतं भिनत्ति यो गजः शीघ्रं द्विपस्तु हत्पवा पुनः स गजानां तु सर्वेषां मध्ये मध्यबलो मतः हस्त
त्रयनिखातं तु षट्हस्तोच्छ्रयमेव च पुंकेस्थलतया चैव स्वैर्वसंख्यार्धमात्रया भिनत्ति हेलया यस्तु उत्खातं वा करो-
ति च स्तंभं कुंजरं मध्येन स हीनबल उच्यत इति इति बलपरीक्षा अथ सत्वपरीक्षा वार्हस्पत्यसंहितायां गृहीते
तु पुनः श्रेष्ठं कृतादधिकं वाले बलादप्यधिकं सत्वं तस्मात्सत्वं निरूपयेत् शुद्धस्फटिकसंकाशं सत्वं हृदि शरीरि
णां दुर्लक्ष्यं विद्यते सम्यग्रूपायैस्तद्विलक्षयेत् पाषाणैरिष्टिकाभिर्वा वारणः फलकैर्घनैः सुसंकल्पितमूलैस्त
कारयेच्चत्वरं दृढं क्षुण्णं येणा त्रिहस्तस्यायामेन चतुर्दशहस्तमुद्धृष्टं च तेन परिखा कृतकर्णिका वारणयानहया
यामं पार्श्वे शोधितभूतले मानेगं मंत्रमस्तेन प्रोक्षयेत्सलिलेन हि मंत्रः ईशानमलसंभूतविघ्ननाथगणाधिपग
जाननं गजवक्त्रकरूत्वविनिर्णयं सुप्रशस्ते दिने लग्ने गजो गैरिकमंडितो कर्णचामरशंखादिसर्वाभरणभूषितो
पादांदोलनसंजातघंटाघंटालनिस्वनो आरोहककरास्फालकृतोत्साहोऽत्रनानननो अन्योन्यटोकया क्षिप्यो पार्श्वे

कोलाहलाकुलो दैकागजदृष्टपश्चाद्गागारूढनरहस्तगतो गजपुच्छप्रदेशात्ताडलसाधनंकादृष्यो मुद्गरः वेगोत्थान
कृतास्फोटं दंतसंघट्टभेदनैः कृतांकौ स्थूलहस्तस्वेदनां योनमन्यते गजो दंतकृतास्फालैश्चनवं रभेत्तुमिच्छति
नापसर्पति घातेन प्रतिघातं करोति च कंठगर्जितनादेन परिशून्यदिङ्मुखः निवर्तिते च डः खिन्नसम्भवेत्स नवा
लक्ष: न्गजः पदात्यश्वसमूहं वा गजमालां निभीषणां वेगोत्थानसमुद्भूते गंभीरकलहाकुले उत्थानसमवेगेनशे
२५० घरेजितलोचनः दंतदारणरागेण प्रतिनागगतेक्षणः प्रसारितैरतितस्त्वैर्निःशंकः कर्णपल्लवैः योभिनम्य
140 तिवेगेन सम्भवेत्स नवानुगजः शार्दूलादिकसत्वानां त्रासवर्जितमानसः कृतकंचनथ्या नागं योभिनत्युत्तमो
द्विपः दावानलशिखाविश्रेणी शत्रुसंत्रासवर्जितः वनेषु विचरेयस्तु स सत्वसहितो गजः कृतशंको बलायस्तु न
चारोहणमीषते संकुचन्विरसो दीनो मंदा मंदतरो भवेत् आलोकयति पार्श्वानि वीत्कारकरणप्रियः आलो
कयति दीनाभ्यां लोचनाभ्यां प्रतिद्विपं पदात्यश्वसमूहं वा ज्वलंतमिव मन्यते अथ मस्तु सत्विज्ञेयो गजः संग्राम
वर्जितः पश्च संघट्टनेमंदं चटितश्चापसर्पति न थापसर्पवेगेन दंतघातं प्रयोजयेत् किंचित्तिर्यङ्मुखो भूत्वा
कृतचीत्कारनिस्वनः ऊर्ध्वेन दंतसंघट्टसमसत्वस्तु स द्विपः एवंविधैः प्रकारैस्तु ज्ञातव्याः सत्वाधिकं गजं दंतघाते
षुकुशलेकार्ये युद्धपंडितैः धनुर्वेदाधिकैः शस्त्रैर्नरा युद्धविशारदाः बलान्नरसहस्राणि घ्नंति संग्रामभूमिषु एवं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गजास्तु राजेन्द्र कुशला युद्धकर्मणि परानीकेतु हृंदानां कुर्वन्ति बलनाशनं बलसत्वगुरुत्वादिगुणयुक्तोपि वार-
णः दंतघातान्नजानाति योऽरणोनिः फलोद्रिमः संपातस्थतथोलेखः परिलेखस्तथैव च कर्त्तरीतलघातश्च पा-
र्श्वघातस्तथैव च आराघातश्च सूचीच नाडितः संधितस्तथा एतेयुद्धेन नागानां दंतघाता दशस्मृताः अन्योन्यमुख
संस्फोटः संपात इति कीर्त्तितः ऊर्द्धलेपस्तु दंताभ्यामुल्लेख इति संज्ञितः तिर्य्यग्रधःकृतलेपः परिलेखो विधीयते
उभयोः पार्श्वयोश्चैव दंतघातस्तु कर्त्तरी तलघातस्तु दंताधः क्रियते योमुखेनवा पार्श्वघातः सविज्ञेयो यः स्थू-
लेन प्रयुज्यते आराघातस्तु विज्ञेयः संमुखोपस्तु लक्ष्यते मुखेविषाणाघातानां प्रतिमानं गदारकः एतौ सप्रति
घातस्तु दंते नैकेन यो भवेत् करमध्यप्रदेशोत्तस्तु सूचीघातः स उच्यते अन्योन्यदंतसंघट्टजनितस्ताडितो मतः संधि-
तस्तु सविज्ञेयो उपर्युपरियो भवेत् एतेषां च समायोगे यो भवेन्मिश्रलक्षणः दंतघातस्तु नागानां गर्हितः सोभिधी-
यते परिहृत्य गजो वेगात्याक्षिपोः कुरुते दृढं दंतघातेहि यस्यापपरिहृतः स उच्यते आर्द्रद्रुमहतेनेतं भेषचो देस-
रोपिते निर्जने प्राय्याघ्रं कृत्वा नागं बुधाः समाहितः रत्नासनेोर हठकर्म सव्यासव्योरुपीडनात् अंकुशोल्लेखनाद्वापि
दंतघातान्प्रयोजयेत् एवं संसक्तदंतस्तु लाभवः क्रीयते मजः टोकयाच कृतोत्साहोपरिहृत्य पुनः पुनः एव-
मभ्यस्तघातस्य कुंजरस्य महारणे मदाक्लिन्नकपोलस्य प्रतिरोधं करोति कः अतैव विशेषः दिव्यापमसत्वानां

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
१५१
।५।

लक्षणमथ सांप्रतं वक्ष्ये निहतद्विपदचतुष्पदकारणान्नरस्य शान्तियोनष्टलक्षणानि नच जिघ्रति मूत्रादीन् स वारणो दिव्यसत्व
स्तु दन्ताच योऽतिमांसं सत्वानां सर्वगतं च लोभेन जिघ्रति मूत्रपुरीषादीन् पिशाचसत्वः स विज्ञेयः एवं सत्वपरीक्षा क्रि
यते नरस्याथ वारणेन्द्राणामिति इति सत्वपरीक्षा अथानूकलक्षणं हृदयप्रबंधे यत्पूर्वं संभवेभ्यः स्त्री सत्वेनूपगतिः
स्वरः तस्मादनुकरणानुक्रममनूकमिति कोविदैः सत्वरूपवाराङ्गैः शुभैरनुकृता गजाः देवर्षिनरगंधर्वनागानूकाम
ताः शुभाः एवमेव च सत्वाद्यैः ईषैरनुकृतैर्युताः दैत्यरक्षःपिशाचानामनूकैः परिवर्जिताः व्याघ्रसिंहतुरंगादिसमा
नूकामता द्विपाः नेष्टाः स्वरस्वरादिसमानानूकयोगिनः इति इत्यनूकलक्षणं अथ वेदितलक्षणं वार्हस्पत्यसं
हितायां सत्वस्य संभवं ज्ञात्वा तन्जपरस्त्रमहामुनिं गजानां वेदितं कोपवेगगुणान्प्रपृच्छति उच्चैःश्रवाधिपगुरुः प्रहृष्ट
हृदयस्तदा राजन् पंचविधं चैव गजानां वेदितं मतं अनर्थं प्रथमं तत्रे यं मत्यर्थं च तथापरं अन्वर्थं चैव गंभीरं ज्ञानं
पंचमं भवेत् प्रतोदाङ्कुशदण्डैर्यो हस्तादुद्विजते त्वघः तीव्रसंकुचितः स्पष्टः सस्मादत्यर्थवेदिता पञ्चस्लोकवत्कृत.
याघः कृतं तेन्यतेगमनः वागङ्कुशादिभिर्नित्यं सोहि मत्यर्थवेदितः ज्ञानात्संक्रुशनोदार्यै यथा तत्तथैव हि कृते को
पभये मुक्तो योन्वर्थज्ञस्तु सो भवेत् अंकुशादिकृतान्यस्तु विरोधैर्वावगच्छति तीव्रानपि स गंभीरवेदी भवति वारणः
रोमणामग्रतन्त्रेणापि स्पृष्टं वेत्ति तथा गुरु ज्ञानवेदितं तं गजं विद्धि महाभुज सर्वाणि वेदितान्यानि भद्रादीनां भ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेत्तिवैप्रकृतिस्थाःस्वसन्ततेभद्रस्यान्वर्थवेदिता गंभीरवेदिताचापिमंदस्यैवप्रकीर्त्तिता उत्तानवेदितानित्यम
गस्यैवमभवेद्रूप वेदित्वमेवंजातीनांनिसर्गमपिजायतइति हृदयप्रबंधे वेदितानिचवेद्यानिवारणानांविशे
षतः अज्ञातवेदितोनैवनागमारोढुमर्हति पंचधावेदितंचैवविज्ञेयंसामजन्मनां सामजन्मनांगजानां साम-
गायनअवयवेभ्योजातत्वात्पालकाप्ये विस्तुपमेतिरेत्वगजोत्पत्तिसमयेब्रह्मणारथंतरसामगाने कृतमेतत्सर्वं
प्राग्भिहितगजोत्पत्तौदृष्टव्यं अन्वर्थोत्तानगंभीरमन्वर्थान्वर्थभेदतः यस्तुयन्ताडहितेनेहरादेवांकुशादिकंस
म्यक्प्रयच्छते सम्यक्सगजोन्वर्थवेदितः योपित्वक्स्पर्शमात्रेणरोमस्पर्शनेनच वियाहृत्वांकुशादीम्यमगजोत्तानवे
दितः त्वाभेदात्शोणितस्रावात्तीव्रचव्यथनादपि अंकुशादीन्विजानीयान्गजोगंभीरवेदितः शनैर्हतोभृशंवे
त्तिशनैर्वेत्तिभृशाहतः विपरीतगतिर्नागोत्तेयः समृर्थवेदितः शनैर्हतोभृशोवेत्तिभृशंवेत्तिभृशाहतः प्रवेत्तिप्र-
तिबिंबस्वोपमानस्यगच्छति यथासंत्तेविदध्यात्स्वसर्वकर्माणिकोद्रुतं अन्वर्थवेदितंनागंजानीयान्नेस्वभंगजमिति
इतिवेदितलक्षणं अथकोपलक्षणं वार्हस्पत्यसंहितायां कोपोपिद्विविधोज्ञेयः शिष्यस्यैवाशिष्यस्तथा द्विविधस्या
पिनागेंद्रयथावत्स्वमलक्षणं गृहेजितोपिकालेनकोपंवधातिमध्यमं निवार्यमाणस्थानयाशीघ्रंकोपान्निवर्तते
एवंविधस्तयोरस्तीमशिष्यकोपउच्यते मध्यमस्तुभवेच्छायांगजः संग्रामकर्मणि द्विषंशत्रूणातिथः कोपंडर्निवारोच

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रू.प्र.
१५२
152

डुः सहं वार्यमाणोपियत्नेन न शमं याति मूढधीः सत्त्वेयस्तु शिशुर्ज्ञेयो योगजो राजन् रणप्रिय इति स्थितिज्ञो पलक्ष
णं अथ शुभलक्षणं वार्हस्पत्यसंहितायां अतः परं प्रवक्ष्यामि गजस्य शुभलक्षणं कल्याणजातिरायोतः
शांतो बहुहितः भर्तुर्हितो वातपित्तस्यार्जितो न पराधतः रात्रौ वा दिवसे वापि निर्विकारस्तु यो भवेत् कल्याण-
शीलः सत्त्वेषामान्ते गोगजलक्षणः विकारं कुरुते यस्तु पीड्यमानः क्षुधादिभिः तमकल्याणिनं राजन् गजेन्दु-
ष्टं प्रकल्पयेदिति इति शुभलक्षणं अथ स्थितिलक्षणं वार्हस्पत्यसंहितायां स्थितानां च यथायोगं सोमतल्ल
क्षणं शृणु पंचस्थितसमस्थितनवस्थितद्वादशस्थिताश्चैव पुण्यवना जायन्ते राज्ञां गैरिकसन्निभाः करिणः
लक्षणसहितैः स्त्रियेः करकुंभविषाणकर्णनयनैश्च संपूर्णो भवति गजः सुखदः पंचस्थितो नागः परि-
णाहायामोत्कृष्टबलविक्रमधैर्यकांतिसंपन्नः भर्तुः प्रतापजननो ज्ञेयः समस्थितो हस्ती उत्साहवेगसाहस-
मदसत्त्वगुरुत्वदक्षतायुक्तः कार्दनकर्मकुशलो नवस्थितः कुंजरो भवति बुद्धिर्मेधा सत्त्वं दंतौ कुंभौ तथाक्षि-
णी हृदयं रोमाणि छविः पादास्तथासनं पृष्ठवंशश्च द्वादश चैतानि सदा स्थितानि नागस्य हृष्यन्ते सद्वादश
स्थितो वै भवति गजः सर्वसौख्यकरः चत्वारः स्थितिभेदाः कथिता गुणसम्मिता गजेन्द्राणामिति विष्णुधर्मोत्त
रे राम उवाच श्रोतुमिच्छामि धर्मज्ञ कुंजरं समहास्थितं यं प्राप्य किल राजानो जयंति वसुधां नृप पुष्कर उवाच

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वर्णसत्वंबलंरूपंकांतिः संहननंजवः सप्तैतानिसदायस्यसगजः समस्तुस्थितः इति इतिस्थितलक्षणं अथप्रश
स्तगजलक्षणं विलयमीनरे उद्धरश्चवाच नागाः प्रशस्तायमितप्रमाणाधिकास्तथाये दीर्घहस्तामहोच्छ्रासास्त्रा·
सनाश्चविनोषिताः निगूढवंशामधलाकूठोच्चमस्तकाः कूठाःविपुलाः विंशत्यष्टादशनखाः शीतकालमदा
श्चये येषांचैवकराः पादादीर्घालांगूलमेवच दक्षिणंचोन्नतंदीर्घंहस्तिनंजदोषमं अनर्थवेदनायेचसूराःशब्द
सहिस्नवः कर्णौचविपुलौयेषांसूक्ष्मविंदुचिताश्चये तेप्रशस्ताःस्मृतानागायेनतथासमस्तुस्थिताः दंतच्छेदेषुद
श्यंतेयेषांस्वस्तिकलक्षणं भृंगारंवालव्यजनंवर्धमानांकुशास्तथेति येषांभवेद्दक्षिणपार्श्वभागेरोमाणांतयो
जः पिटकोथवापितेनागमुख्याविजयाययुद्धेभवंतिराज्ञांनहिसंशयोत्रेति वराटसंहितायां नाम्नोष्ठनाल
वदनाः कलविंकनेत्राः स्निग्धोन्नताग्रदशनाः पृथुलायतास्याः चापोन्नतायतनिगूढनिमग्नवंशास्तन्वेकरोम
चितकूर्मसमानकुंभाः विस्तीर्णकर्णहनुनाभिललाटगुह्याः कूर्मोन्नतैर्द्विनवविंशतिभिर्नखैश्चरेखात्रयो
पचितवृत्तकराः सुवालाधन्याः सुगंधिमदपुष्करमारुताश्चेति इतिप्रशस्तगजलक्षणं अथाप्रसदुष्टग
जलक्षणं विलयमीनरे तेयार्थीवामनायेचमत्कुणाः तेयार्थीइतिपदंपूर्वोक्तप्रशस्तगजैःसंबध्यते हस्ति
न्योपायश्चगर्भिण्योयेचमूठामतेगजाः अप्याकलाश्चकुब्जाश्चमदंतायेचभागीव कृदंताश्चतथावर्ज्यावामकूटा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अपन्नतः अग्रकस्तुशाश्वकूटाश्च खंटाश्च विकटाश्चये श्रीरामउवाच वामनाद्याश्च ये नागाः प्रोक्ता निंदितलक्षणाः
तेषां त्वं श्रोतुमिच्छामि लक्षणं वरुणात्मज पुष्करउवाच अनाहायामसंपूर्णो यो तिह्रस्वो भवेद्गजः वामनस्तु स
माख्यातो मत्कुणो दंतवर्जितः नारुः स्थूलता आयामो दैर्घ्यं दशांचतुर्थी संप्राप्य वर्धते यस्य तु हिजो स्थूलाव॰
ल॰द॰ नायतो स्यानीसमूढाख्यो गजाधमः अपाकलो विशालेन दंतेनैकेन वारणः संक्षिमवहोजचनः पृष्ठमध्यसमु
१५२ न्नतः प्रमाणहीननाभिश्च सकर्णो वारणाधमः अवनताभ्यां सदंतः कुदंतः स्यांतो वहिः वामदंतोन्नतो नागो वामह व
153 स्तकथ्यते दंतावग्रकस्तुशो यस्य सो ग्रकस्तुकीर्तितो गजः एकदंतस्तथा नागः कूटदस्तु मिथीयते पादयोः स
त्रिकयोः स्याद्यस्य नागस्य गच्छतः संघटो ध नियुद्धे च लक्षणैर्नर्हूजितः अरत्न्यभ्यधिकं यस्य विस्तरेण स्तनान्त
रं विकटः स विनिर्दिष्टो दुर्गीतिर्निंदितो गजइति वराहसंहितायां निर्मदाभ्यधिकहीनत्वांगान् कुब्जवाम
नकमेषविषाणान् दृश्यकोशफलपुष्करहीनान् श्यावनीलशबलासितताल्वन् दृश्यमानकोशफलेह
वणो येषां ते स्वल्पवक्त्ररुहमत्कुणाषंदाः हस्तिनी च गजलक्षणयुक्ता गर्भिणी च नृपतेः परदेशप्रापयेदा
ति विरूपफलास्तु इति स्वल्पाः वक्त्ररुहो दंताः मृखलोमानि वा येषां ते पराशरसंहितायां आस्य स्तुशो विशाल
स्य विषाणोपार्श्व उन्नतो अपाहस्तो विशालेन दंतेनैकेन वारणः अवनताभ्यां सदंतः कुदंतः स्यान्नतावधः व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्गास्तेश्वभकामेन सर्वयत्नेन विगर्हिताः अथ दूष्येन स्त्रीजानां पंचमेदे वनौकसां अथ यंते हि नागानां दंताग्रे वनसंश
यरति तथा च अनाहार्याप्यसंयुक्तो निकृष्टो भवेद्गजः वामनः ससमाख्यातो भर्तुर्नाशीय शप्रदः सर्वलक्षणसंहर्षणो दंते
स्तु परिवर्जितः मत्कुणाः समाख्याताः संग्रामे प्राणघातकर इति वार्हस्पत्य संहितायां नऊषंश्च निहृद मुनिरुवाच ५
ष्टगजानां प्रथमं लक्षणमेव तेवचि सकलकृष्णतनुर्वलिवदनो महाशिरा लंबकर्णश्च नातिस्थूलाधोमुखवालस्तथा
वनिरंकुशो हस्ती लोचनयुगलस्तब्धनयनःअंतरिनताकंपस्य विषमं चपेचकं स्याल्लेविनः पेचकोतरस्य मेढ्रंकि
लासिवर्णसन्निभानि चगात्रवदनरोमाणि व्यासः समवति हस्ता रुक्षशीलश्च स्थूलातिपांडुरुलदीर्घ विषाणेनाश्रित
मुखश्रीश्चाप्यष्टपादो वक्रनखो वक्रेण पुच्छदंडेनाविस्तृतकुचिलं वोदरश्च कलोवराहनयनश्च ज्ञेयो वकीलनामा
व्यालोयसर्वदोषकरः अनिकृष्टोपरगाश्चोर्ध्वहस्तमुखः काककुलनयनश्च स्थूलनराधोमुखवदनमुशलस्फुटितनवहिर्वि
रवपादः स्थूलनखः स्थूलपुच्छकरश्च वामन संज्ञो योगजाधमो योहि निर्गणोचाहिहे कृष्णोपरिमंडलो नत्याकर्णो
वदने वमांसले स्यादयोगनः स्थूलनयनश्च समांसलवपुकोऽकृष्णोकृष्णांगुलिः करोयस्य नाम्ना च विश्वरूपस्सवि
नाशोयपंडरुमानेगः बधिरश्चभ्रुवक्षवर्णः कपिंजलकलोचनो निर्विकृततनुः पापात्मा यद्धस्ती राज्ञां मानुष्यः अपन्नेन
दिवसमपि यत्र तिष्ठति तं देशं दहति पावकरव नीनाविंध्यवनेवापरराष्ट्रे वा समभोमत्यः पेन्वासट शत्रुविषयः कणि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कच्चायस्य कर्कशाश्च दन्ताः रोमभिर्यो युक्तो गात्रैः काकाक्षो दीर्घवक्त्रश्च स्थिरह्रस्वकर्णश्च गलः स राक्षसो हस्ती रूपे-
लक्ष. १५५ ण निर्यक्क्रमेदाणानिरतो दुर्गंधः काकतुल्यवदनश्च मूत्रपुरीषाघ्राणे समुन्नतको भवति चंडालः कुंभो यस्य विशा-
लो विचित्रमस्थूलताराकेनेत्रे तन्वीवलितानावक्त्रस्यान्तवालधिवालाश्च वक्ररूपाः राजीपे च ककारा मेढ्रो परि संस्थि-
तो दंतं च मरहृत वलयं च वहन्नस्य हस्ती सम्भवति नाम्ना महाइष्टः अंगं प्रसार्य वदनं विधूय वा यो रणे निपातयति स
जले स्थले च सहशो विवर्जनीयः प्रयत्नेन ह्रस्वकरांगुलिवालस्तनुदशनश्चाल्परोमगात्रश्च मन्दक्रमणजातिः मृग-
जः स्वदुष्टशीलश्च भीरुश्च त्वबोतिविह्वलप्रस्ताध्यानपरः शाद्वकरणानिरतश्च द्विगुणिक्रमकराग्रताडयति च
भूतले नित्यं वामे न चलति वितिमं हीपादेन कं विनाथेण जर्जरविरूपकर्णः पापो सो वर्जितो हस्ती मृडतामेढ्रेण
तो नेष्टमदः कोशमेहीच मंदालोकननिरतो महाशिराः इष्टुविषमाणनयश्च हस्ती नपुंसको सो विवर्जनीयश्च स-
ग्रामे अलाभुको भवति हिंसकाल जिह्वोष्टतालुकानागाः नरपतिभिस्त सततं विवर्जनीयाः प्रयत्नेन आयामेप
रिहीनेसंनादो कूपेमुखेनतमितं उद्धितवक्त्रं कुम्भं कुम्भहीनेच एवंभूतेनागराजाहरेणवर्जयेन्मतिमान् श्वेताग
तिमंदवहिर्यस्तस्यकुलतयो भवति लाक्षामंजिष्ठाभोतित्वोमशोहीनकर्णिकरवालः हस्ती विवर्जनीयो हीननखः
स्रतनोनाम ज्वलनहुतेशानतेदुर्भित्तहंतेमहद्भयंकुरुते यस्मिन्देशेनिवसतिनाशयतिचर्तसदुष्टात्मा यस्मन

१५५

भवन्तोदंतौ कुलनूपवतो पितृभिदोषेण । सगजो मत्कुणनामा नन्तं रणे यो जयेद्राजा । कुंजरस्य यदागतो सोहरति
राज्ञां नौबलं वसनं च । अत एव समरकाले नराधिपैर्वर्जनीयस्य । अहिभ्यामसृजतं निषेति नागस्य यस्य निसंहि
नयनव्याधिविमुक्तः सन्तस्य भर्तारणे म्रियते । कर्णौ दंतौ च समौ मानेन च भवतो यस्य नरनाथ । स नराधिपचलना
प्राकरः करिर्जायते समरे चित्रीरोमचितो वा स्थूलो वा तिमलं विनाशो वा । कोशः कोशविनाशं स करोति नागस्य
भूपानां । सितविंदुविचित्रवा स्वैनेवा यस्य नायनेमेदं सगजः शक्तिविनाशं करोति भूपस्य संग्रामे । एकोनविंश-
तिनखो युवराजविनाशनं कुर्यात् । सप्तदशनखस्तु गजो नरपतिपत्नीविनाशनसमर्थः । षोडशनखमानगोना
यकनाशं स एवं कुरुते । पंचदशनखस्ततथा सेनापतिनिधनकृज्जो भवति । कुरुते च चतुर्दशनखो व्याधिं पुरवासि
नां नागः । हस्ती त्रयोदशनखो राष्ट्रविनाशं करोति भूपस्य । द्वादशनखस्तु कुरुते पदातिनरगणं च समं । एकादशनखे
युक्तो गजहानिकरो भवेत्सगजः । पुरदाहं तु दशनखः करोति हस्ती ऽडवालाके । चतुरंगमस्यापि बलस्य नाशनं नवनखो
गजः कुरुते । अष्टनखस्तु परोहितवंशोन्मूलनसमर्थो हि । सप्तनखः प्रतिहारनाशे पटुः षट्नखो मातंगं । पंचनखो भ-
क्षचारं चतुर्नखो हारयाल्लंब । त्रिनखो विषये वै कुरुते द्विशावस्थांतः पुरात्तव ह च । एकनखो नखरहितो राज्यविना
शं स एवं कुरुते । एवंभूतनखो पे नरपतिनाते गजानसंग्रहाः । स्ससमोस्थिनस्यवदनाग्रस्य गजेंद्रस्य गलतिरुधिरजः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्तं ज्वलनकरणं मं चलति वा स गजः द्विपं स्वभर्तृनाशकरः इति कथितः नवनरनाथ इडुस्मात्तेन गजलक्षणं सम्यगिति
रत्नशुभ इड्रहगजलक्षणं अथ समरकाले राज्ञा रोहणयोग्यगजलक्षणं पराशरसंहितायां शरशक्तिधनुस्रुक
शूलपट्टिशलक्षणः दन्ताग्रे राज्ञो यो यस्य स समरे नृपं वोढुमर्हतीति बार्हस्पत्यसंहितायां नद्रुष उवाच रिपुविजयः
फलमेषां नागानां नाथ लक्षणेक्षकानां संचरणं साहसनिरतस्य भवति नितान्तं नरेन्द्रस्य ये च समरविजयकरणाद
ल·श· मा गजाः सकलदोषविनिर्मुक्ताः तांस्तांश्च ये सदोषास्तु नःस्तान् श्रोतुमिच्छामि ततः श्रुत्वा वचनं तस्य गुरुः
१४५ मन्यत्रवीन्नृपं तान् गजान् स्वात्र क्रमात्तु रोषात् पूर्वमेवोक्ताः समरयोग्याश्च्युते चलं कंठे स्थितं नितं कुञ्जराणां
145 नरेश्वरेश्वर अतः संपूर्णकंठस्तु शिखिपिंगललोचनः घनमांसपुष्टांसस्त्वद्दिशा वृद्धारणतत्परः वराहजघन
श्चैव स्तविषाणवराननः सुप्रतिष्ठितपादस्तु यः सोऽदगरुमस्तिकः प्राजापत्यो गजो ह्येष संग्रामार्हः प्रकीर्ति
तः मधुपिंगलदंताग्रः किंचिच्चामीकरच्छविः रोमाणि वैकजातानि स्निग्धं च कमलप्रभं रक्तोत्पलदलच्छायस्तु
ल्लेतो ल्लाग्रावलोचनो पेंद्रो गजस्तु विज्ञेयो रिपुवृंदविनाशनः ताम्रतालुकजिह्वोष्ठः सुजानुनिचिडपरः पीनोन्न
तशरीरस्तु कंदामलनीलच्छविः आयतेनानुवृत्तेन करेण सुवशोभिना पीयूषपिंगदंतस्तु गजः कौबेर उच्यते
तरुणांबुदसंकाशो हृतमभविषाणभृत् संपूर्णकंठपादस्तु संपूर्णासनमस्तकः मदगंधनिर्गंभीरस्तादशरित

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्विस्रवः आयतेनचहस्तेनसीकरोत्किरणप्रियः वारुणोयंगजोराजन् संग्रामेषुनिषूजितः कटस्त्रिवलिसं
क्रान्तः संपूर्णोपस्पर्शपणते लोचनेताम्रपिंगेचदंतौकेतकसप्रभौ पादौचवलिनौस्थूलौपीनगात्रसमांसलौ
हस्थूलौविंडचित्रौचकर्णौचातात्मलवौ कौवेरोयंगजोराजन्रणकर्मणिपूज्यते नात्युम्पुरसिवक्रेचयत्तयोरुभ
योरपि आनाम्नायस्पृष्टरूपेनच्छायामण्डलनूरुहा असौसोम्यस्तुविज्ञेयः कुंजरः समरीचितः अर्चिः पिंगलरो·
मायः केशैर्वीलैस्त्रपिंगलः पिंगलाक्षिविषाणश्चरक्तपुष्करतालुकः आग्नेयःसगजोज्ञेयस्तेजसाग्निसमप्रभः
राज्ञातुहिमनानित्यंकार्यः समरकर्मणि कृष्णवर्णस्तनाम्राणिम्रुवेषोनांस्निग्धलोचने निर्धूमाग्निसमाछायाभू
लेभश्चकरस्तथा कायश्चपीनमांसः स्याद्वैगोवाजिसमःशुभः अन्येवायव्यमिच्छंतिनेगजेशास्त्रकोविदाः वाय
व्यंशोऽत्ववेन्वयेनमिच्छंतिमहाराज्ये नागाःसंग्रामपुलकश्चनाशयेद्विषुवाहिनी निरंकुशात्वचजत्वेनस्पृष्टोघद्दयं
भवेत् निरंकुशत्वेनिर्याणेः प्रयत्नैश्चोपशामयेत् चंडत्वचतथानित्यंसंक्रमारकियादिभिः रोमाणेजनरू
पाणिनखाः शंखसमप्रभाः निस्त्रिंशविमलाछायासभवेद्वैस्लवोगजः तरुणायोजयेद्राजारिपुसैन्यविमर्दने
कुंभवक्षगदावज्रनिस्त्रिंशायध्वजःसंनिभैः विंडुभिश्चित्रितयस्यसुरविचित्रस्तुसोगजः तेनसंग्रामकर्माणिकृ
त्वेयोनराधिपः नित्यंचविजयंतस्यसराजाफलमश्नुते सुदंतोदीर्घहस्तश्चहृदंगुलिपुष्करः घनमांसशरी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.प्र.
१५५
146

रस्तुकूर्म्मीकारोहिस्तुक्रमः सांग्रामिकोगजोऽप्यजीवस्यपिसमाः शतं संग्रामेविजयीनित्यंशत्रुपराजननक्षमः
महाशिरामहाकायोमहामेढ्रोमहाकरः महादंतोदरश्चैवमहागात्रापरासनः महानेत्रोमहोरस्कमहाकर्णोम
हाखुरः महाकंठोमहामेदोभवेत्सांग्रामिकोगजः यदङ्गलक्षणैःसर्वैर्युक्तैनेशुभमेवहि मदस्त्रापिद्विशलस्या
हावेतौचमहागजौ संपूर्णलक्षणोराजन्ननभवेच्चमहीतले अनयोरेवभेदास्तुनागानांसमुदाहृताः सांग्रामि-
काद्विपाराजन्संपूर्णलक्षणलक्षिताः कथितास्तवतत्वेनराजसौख्यकरागजाः ततस्तावचनंसमस्तनक्षुषो
हृष्टमानसः अष्टकोनकाविष्टहृदयस्तंमहामतिं ततःसांग्रामिकानाथसामान्येनमयाश्रुताः विशेषेण
लक्षणैर्हीनस्तोतमिच्छामिसुव्रत ततःश्रुत्वामहातेजाबृहस्पतिरुवाचतं शृणुराजन्गजोराज्येयाहग्भूतःश्र
भोभवेत् पीनमांसचितोमस्तकूर्म्मीकारनरवस्तथा समसेवचितोसरस्तुहस्तहस्तचनापरः लागकुदिःस्तुपा-
र्श्वश्चकेठनाहसमन्वितः ज्वलनोज्वलनेत्रश्चस्तुविषाणोमहाकरः संपूर्णचिबुकश्चैवकूर्म्मपादोजयान्वि-
तः बलसत्वसमायुक्तः स्निग्धविमनोरमः संग्रामिकोभवेद्राजन्नाममभिषेकोचितोगजरति इतिसमरकाले
राजेरोहणायोग्यगजलक्षणं अथसमरकालेजयादिसूचकशुभाशुभलक्षणं वार्हस्पत्यसंहितायां यदि
रिपुनरगजाभिमुखोनिवार्यमाणोपियातिरभसेन विंशतिपदानिनागस्तत्रापिजयोभवत्येव अमदोऽहङ्का

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिमदंडुर्गंयमदक्षस्तरभिमदगंधं नागोपरिनुम्नायदि तदा विजयो भवेद्राज्ञामिति हृदयप्रवंधे दक्षुगि
एनभिमुखान्वा यमागणोपि चेद्धज्ञः ब्रजेन्न हि जयो चतंयदि वा सवनेव शान् उल्लांनरतेनागोयदिनोप
मशंकितः ततस्तुभेण दिवाम्पनेन स्वरवमयधिगच्छति दक्षिणेनाग्रपादेन हिनि मृत्पाटयेयदि ग्रोथयेद्रा ॥
मपादं च नदा जयमृदीरयेत् पश्चात्कुरिलंकृत्वा केरंजिघ्रति चेद्दिशः यहस्रु हृदयो नागलदा मुदयमादि
शेत् दक्षिणेनाग्रपादेन दंतो मुमुद्रिनेंद्रियः परिघजंति हस्तेन नदा स्यान्त्रियसंगमः अथ हस्तंयदा नागो मु
खे मस्तकं संस्थितेः निक्षिपमाणो दर्पेण तदा भद्रं जयो भवेत् लभमानो मदं युद्धे विजयं प्राप्नुयाद्धेम नल
चनलसपिंचप्रकोणपरामर्शन् उद्योगमुपययाने तु वारणी विनिवेदयेत्तूनं हि दक्षिणपादवामपादेन
वेष्टं विलिखेद्वारणः स्त्रियं हि यादान्मराजकं यदा तु दुर्मना वामं दंतेन हस्तेन शोधयेत् तदा म्मनो वेद
नाशंपानवीयनिषादिनः कर्णेन वामेन नागश्चेत् गत्रिगोगात्रं प्रमार्ष्टि पतन् तदा निष्ट भवेद्वर्तेरन्त्यया च शुभं
विभोः अकस्माद्देवकुप्यति भ्रमंति च पतंति च करिणो यदि तद्विद्यात् हंससमुपस्थिते यदा परूपति मानेगो
विद्वंवापराजयं मृत्यासंपरागच्छवान्नदा भवति दुर्मना इति इति समरकाले जयादिसूचक शुभाशुभ लक्ष
णं अथ यानि गजानां शुभाशुभ लक्षणानि उक्तानि करीणां पिंपियोज्यानि तदुक्तं वार्हस्पत्यसंहितायां य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्षणं मयोक्तं भद्रादीनां शुभं चाशुभं च तत्करिणीस्थपि योजं जातिविभागेन प्रोक्तावेति इति करिणीलक्षणं इति
पूर्वं राज्ञां गजसंग्रहः कर्तव्य इत्युक्तं तत्र तेषां समर्जने पालने च श्रुतमय यथावन्नृपतिः कुर्यादित्यर्थवीः कुं
जरा मताः तावत्तस्य तथा यथार्थोपावत्तास्तोषणं स्वत्वं कर्तुं शक्नोति तथा यो हि तेऽधिता दुःखिनास्तथा दुःखिनास्ते
नृणां हन्युः कुलानि भृशमतम तस्मात्तेषां स्वत्वं कार्यं प्रशास्त्री विजयप्रदमिति विस्तरयमीनत्वचनैः पंचवाम्
ववहृवो वारणानां गुणाः स्मृताः तस्मात्प्रयत्नाद्दते त्तस्वपुत्रानिव नित्यशः तेषामभिन्नसत्वानां कर्तव्यमनु
पालनमित्यादि पालकाप्यवचनैश्च गजानां स्वभावस्थानसंरक्षणादिराज्ञो भिहितेन न चैतदभिज्ञाधिकारि
पुरुषैर्विना न संभवतीत्यतस्तज्ज्ञाभिज्ञाः पुरुषा राज्ञा नियोक्तव्यास्ते च किल लक्षणा इति तल्लक्षणानि निरू
प्यन्ते तत्र तावद्गजरक्षाधिकारिलक्षणमुक्तं पालकाप्ये प्रोच्यन्ते यादृशाः प्रोक्ता गजरक्षाधिकारिणः धा
र्मिकाः शुचयः सर्वे गुणवन्तो निरामयाः सताभिजनसंपन्नाः सर्वव्यसनवर्जिताः गजभक्तिदृढिने युक्ताः सम
यज्ञाः प्रियंवदाः अन्नाह्वलेख्यज्ञाः कृतज्ञा लोभवर्जिताः मौलास्त्वहार्या दक्षाश्च ज्ञानिपत्त्रादितेरताः
नृपादेशस्य कर्तारस्तत्क्रियान्वेषिणः परं मंगलनामधेयाश्च गजशास्त्रा विशारदाः गजाधिकारिणः
कार्याः गजायुर्वेदविशारदाः इत्यपालकाप्यमते विशेषप्रोक्तामिष जां च विशेषतः भोजनस्थानगमननिर्वाणगम·

लक्ष· १५०
147

१५०

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेत्रुच दृष्टव्याः सहवैद्येन शास्त्रनैरपि वारणाः यस्य यत्करणीयं तु तन्निवेद्यं महीपतेः गजाध्यक्षेन च तु न स्वकार्यमभि
षजा सहेति इति गजरक्षाधिकारिलक्षणं अथ गजवैद्यलक्षणं पालकाप्ये शिष्यविनीतो मेधावी ग्रन्थार्थप्रतिप
त्तिमान् सत्यवत्सलः प्रियाभाषी महाभोगपरिग्रहः वाग्मी प्रगल्भः शान्तात्मा स्मृतिमान् धार्मिकः शुचिः मौलोऽनु
रक्तो मधुरः कुलीनश्च प्रशस्यते इति इति गजवैद्यलक्षणं अथ गजामात्यलक्षणं पालकाप्ये शास्त्रार्थमार्ग
कुशलो शुचिर्मौलो निरामयः गणितज्ञश्च दक्षश्च गजामात्यः प्रशस्यते इति इति गजामात्यलक्षणं अथ ग
जाध्यक्षलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे हस्तिशिक्षाविधानज्ञो वनजातिविशारदः क्लेशक्षमस्तथा राज्ञो गजाध्यक्षः
प्रशस्यते इति पालकाप्ये गजाध्यक्षो नीतिमतिमान् शारण्यः संयतेन्द्रियः विनीतः सत्त्वसंपन्नो वयस्याप्रतिप
त्तिमान् नृपवत्सलः प्रियाभाषी महाभोगपरिग्रहः गजजीवी गजानां तु हितकार्यरतः सदा स्वामिभक्तः शुचि
र्दक्षो धार्मिकश्च प्रशस्यते इति इति गजाध्यक्षलक्षणं अथ गजारोहलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे एतैरेव गुणैर्यु
क्तः स्वाधीनश्च विशेषतः गजारोहो नरेन्द्रस्य सर्वकर्मसु शस्यते इति पालकाप्येपि रहस्यरक्षकः प्रियः शूरो धृति
मान् सत्यदृढेन्द्रियः स्वशरीरस्य रोगाणां यन्त्रांकुशविभागवित् निमित्तोत्पातकुशलः चिकित्सितविशारदः द
क्षस्तत्कुशलोत्साही गजभर्तुर्हिते रतः बाल्सणः शीलसंपन्नो यन्त्रकर्मप्रतिष्ठितः शास्त्रस्य सुहृन्नागानामा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रोदात्तप्रशास्यतऽइति ॥ इति गजानां लक्षणं ॥ इति श्रीमत्सकलसामंतचक्रचूडामणिमरीचिमंजरीनीरा
जितचरणकमलश्रीमन्महाराजाधिराजप्रतापरुद्रतनूजश्रीमन्मधुकरसाहसूनुचतुरुदधिवलयव
सुधराहृदयपुंडरीकविकासदिनकरश्रीमहाराजाधिराजश्रीवीरसिंहदेवोद्योजितश्रीहंसपंडितात्मज
परशुराममिश्रसूनुसकलविद्यापारावारपारीणधुरीणजगद्दारिद्र्यमहागजपारींद्रविद्वज्जनजीवातुश्री
मन्मित्रमिश्रकृते वीरमित्रोदयाभिधनिबंधे लक्षणप्रकाशे गजलक्षणप्रकरणं समाप्तम् ॥ अथाश्वल
क्षणप्रकरणं ॥ तत्र तस्याष्टरूपिणो लक्ष्मीर्धर्मकामार्थसंपदः ॥ वाजिनो यत्र तिष्ठन्ति सर्वलक्षणसंयुताः ॥ कुंजर
तुरंगकुर्यात्तस्य राज्ञः परीक्षितं सर्वलक्षणसंपूर्णमारुह्य वाजिनं नृप इत्यादिवचनैः सुलक्षणैरेवाश्वैर्धर्म-
कामार्थादिसुभूफलं प्राप्यते अतो राज्ञा सेनायात्रादिकार्येषु परीक्ष्याश्वलक्षणमश्वं विहाय सल्लक्षणमश्वमेवाह
रेदित्युक्तं तत्र किं लक्षणोऽभिमतः किं लक्षणो निषिद्ध इत्यश्वलक्षणमुच्यते ॥ अतएव जयदेवेनोक्तं ॥ अश्वैर्भैर्ल
क्षणैर्युक्तादश्यानयहणं विना ॥ अतो लक्षणमेवादौ तेषां वक्ष्यामि देहजमिति ॥ तत्रादावश्वप्रशंसोच्यते ॥ विष्णु
धर्मोत्तरे पुष्करउवाच ॥ राज्ञां तुरंगमा यत्ने विजयं भृगुनंदन ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन तुरगाणां समार्जने ॥ राज्ञा यत्न-
वता भाव्यं पालने च विशेषतः ॥ तावन्न स्वरगाथार्थी यावन्नो योधगांस्तव ॥ कर्दमशकं नन पायासि स्वेडः खिताः दृष्टि

लक्ष. १५८
148

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाम्नतया दुःखितास्तेश्रियंल्लोकानितिनिन्द्यंनिजयंतनया पारणीयाः सुविहितविधिनायएवमादिश विश्रुतास्ते
तयाकुर्यल्लोकहृदयजंयंतनया मंगलास्तेपविशास्तेरजस्तेषांनथैवच केवलस्यैवतेभक्तादेवस्यपरमेष्ठिनः श्रु
तिमेध्यतयातेनवानुज्ञातादिवौकसां ततोऽश्वमेधतुरगास्तस्यैवैकस्यहयने सर्वरत्नाधिकोजातस्तुरगोऽमृतम
थनात् अश्वैः श्वावास्तेनहयाः सर्वरत्नोत्तमाः स्मृताः सपत्नादेववास्तेमानवाणामपत्नकाः छन्नताशालि
होत्रेणवाहनार्थंपुराकृताः नीराजयंतितेदेशाङ्कृषितैर्बलशोभिनः गंधर्वास्तेविनिर्दिष्टाः श्रियः पुत्राजित
श्रमाः अथानमंगंसैन्यस्यशोभाचपरमाहयाः स्नहरगमनेपुदेयानश्रेष्ठास्तुरंगमाः बलंतस्यश्रेष्ठंस्तुरंगत्ताम
रापीडयारिणा आहूतयाभवेत्तुष्टिनेसारामुविशिष्टये संन्नद्दष्फुरुषाहृदेः सुसन्नद्देस्तुरंगमैः हृष्टैरेवारिसैन्य
स्यपतंतिहृदयान्यलं तुरंगपादोद्धतधूलिदंडं यस्यातपत्रान्तुकृतिंकरोति नभः समग्रावसुधातुतस्यशैलावर्त
सामवतीहवशेषंति विशेषलक्षणोगणाकुतेषु आयुर्वेद धर्मार्थकामसिद्धिर्यथातुरंगैर्भवेत्तथाशर्वंकथितैव
महामतिभिस्तथापिवक्ष्येसमुद्देशं अश्वैर्हस्तगतायस्यश्रीश्रीरश्वैर्विपुलंयशः विजयश्चभवेदश्वैरश्वोहर्षविभूष
णं तस्माद्राष्ट्रंपरोलक्ष्मीर्धर्मकामार्थसंपदः वाजिनोयत्रतिष्ठंतिसर्वलक्षणसंयुताः तस्यसागरपर्यंताहस्तेति
ष्ठतिमेदिनी एकाहमपियस्याश्वानिवसंतिगृहाजिरे विश्वोवैलक्षणस्थलंसकालश्रीस्तस्यगृहेस्थिरा निवसंतस्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संग्रामे: संसर्गो यस्य वाहिनी तेऽश्वा: शत्रुलक्ष्मीनां हठादाकर्षणक्षमाः येवाजिनः सुसंचाराः सव्यासव्येषु शिक्षि·
ताः तेविपक्षदर्पघ्नत्वात्प्राप्नुयुः श्रियमुत्तमां कोन्यस्तुरंगमं हित्वा प्रविशेद्द्विषुवाहिनीं श्येनवन्मृगनद्येति हत्वा पर
पराभवं स्वामिनो वाजिनस्त्रुक्का को निर्वीहयितुं क्षमः पवित्रं परमं स्थानं मांगल्यमपि चोत्तमं हयाधानं गमयतां त·
थासंग्रामकर्माणि श्रेष्ठेभ्यः परमं नास्ति राज्ञां विजयसाधनं यस्यैकोपि सुपुष्टोश्वो वहस्तिष्ठति वेश्मनि तस्यापि विरा·
लक्ष· १५९ 149 त्तोत्साहाभीतास्तिष्ठंति शत्रवः स्वदेशांतरस्थोपि रिपुस्तिष्ठति शंकितः त्वरगा यस्य शालाया का विवर्जितमहीतले
श्राम्यकार्याणि भूयांसो यथाश्वाः पृथिवीतले कुर्वती हतया शीघ्रं नगजान पदातयः पदातिगजमुख्येष्वश्वश्रेष्ठो
यमस्तस्वशः वेष्टितो पि वजनस्सोषयेच्छपक्षिराडिव सुगाहतोपि तु रणे देशकालाद्यपेक्षया पुनः प्रतिनिवृत्ता
स्मुहं तिशत्रुं चमूहंति त्वरणादेकमात्रयाति लक्षणयाति सहस्रताः त्वरणान्मुख्यरिपुं वीक्ष्य नयति स्वस्य सादिनं त्वरण
मेव नः त्वरणमेतुः त्वरां हरेक्षणेनैव नाति रिपुं प्रति इंद्रजालिकवत्तिष्ठे कोन्यस्तुकांतरंगमं तेविपक्षदर्पघ्नत्वात्प्राप्नु
युः श्रियमुत्तमं त्वंशीघ्रतः परिपुष्टहृद्विवर्तंति तुरंगमाः स्वरूपाशपतुरंगस्ताः संग्रामे दुर्जयानराः जितशीतातपा
येवजितत्रासाजितासनाः युध्यमानाहयारोहाः देवानामपि दुर्जयाः तस्मादरिजयाकार्या हयसंदोहसंवृता
चंद्रहीना यथा रात्रिः पतिहीना पतिव्रता हयहीना तथा सेना विस्तीर्णापि न शोभते युध्यंते येपि मातंगा भिन्नाः शै

१५९

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लैङ्गसन्निभाः दुर्धराङ्दुर्विवाराश्चैते यानिरन्नैस्तुरंगमैः तस्मादश्वास्त्वशंसन्ति सेनांगेषु महर्षयः अश्वैर्विहीनाः पा
लं ते छिन्नमूलाद्रवद्रुमाः तस्यान्तरकाः श्रुतदृष्टविग्रहा महारिलक्ष्मीरणवासमस्त्रवि द्दृष्टाननासाप्यभिषा
रिकाभेवतुरंगमायस्य वलेशीयते: सर्वाभोनिधिमेखलां सुरसरिद्दामावलीभूषितां तुरंगाद्विपयोपरी पुर
वरप्रकारंगेजलं निःशेषप्रतिपक्षदोषरहितां विद्वज्जनैर्योजनानन्तरस्थां सांवरकामिनीमिव विरंभकेः श्वे
नापतिः एतेचान्येवराजन्स्त्रकटगुणगणाः सन्तिमर्त्ये हयानां सर्वेप्येते गुणायेस्तुरपतिसहिताः सूर्यचंद्रा
दयस्तु देवाजानंतियेषां प्रवरगुणावनां रोगनाशस्पृहेतु सिद्धैः सम्यक्क्रयोगैर्मुनिवरगदितैरप्यपीडां चिकि
त्सामिति इत्यश्वप्रशंसा अथाश्वानां मरवाहनत्वसंभवः नकुलउक्तो अश्वशास्त्रे सपक्षावाजिनः पूर्वसं
जाता व्योमचारिणः गंधर्वाभ्यो यथाकामं गच्छंतिवसमन्ततः तान्दृष्ट्वातवसंपन्नान्बलाध्यान्वाहनोचितान् शा
क्रःप्रोवाचपार्श्वस्थं शालिहोत्रं मुनीश्वरं नासाध्यं च मुनेः किंचिन्नवास्ति भुवनत्रये तस्मात्करुण्यावाहेयोग्यान्ने
ताःरूपोत्तमान् यथाम्बरप्रपतः सैन्ये प्रवहंतिरथं सदा अशक्यादानवेंद्रस्यनित्यं च बलगर्विताः इषीकास्तेस
मुत्पाज्य पक्षच्छेदं व्यधत्तसः वाजिनां शक्रवाक्येन शालिहोत्रो मुनीश्वरः छिन्नपक्षास्ततेसर्वेगत्वातमृषिमब्रुवन्
दीनाः दुःखसमायेतारुधिरेणपरिप्लुताः भगवन्किंनिमित्तेनपक्षच्छेदः कृतस्त्वया अपराधविहीनानां नचहिंसेति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पेक्षिताः तस्माद्गतिर्भव प्राज्ञ सर्वेषामिह वाजिनां यथा स्यात्सर्वदा सौख्यं तथा शिक्षय मुनिसत्तम अतो सौ कृपयाविष्ट
स्तान्वाच सहर्षः विनान् इंद्रादेशात्कृतं सर्वं भवतां पद्मभेदनं तस्माद्वः प्रकृतिरिष्यामि भविष्यति यथा सदा वः पुष्टिर्
न्नाप यथा देहो मै रवं च जगत्त्रये प्रयं शक्रादिदेवानां वाहनत्वं करिष्यथ तथा भूमिपतीनां च गौरवेण समन्वितं यो
गा जा भवतां पुष्टिर्वोन पानादिभिः सदा करिष्यंति न संदेहो भविष्यंति सदुर्जयः न च सज्जनितं लक्ष्मीः कदा
लल· चित्त्वपलक्षणा अपि सर्वशो लीनवक्रुशत्रुभिराहृते तथा चैवं विधास्त्वामि परमं च विकित्सितं तस्पर्श्य रोग
१५· नाशार्थं नराणां विहितं यथा तस्माद्भवंतु भूर्लोके पाताले च तथा परो स्वर्गे चास्मदादेशायेन शांतिः परा भवे
150 त एवं विसृज्य तान्सर्वान् शालिहोत्रस्तुरंगमान् चक्रे द्वादशसाहस्रीं तदा सा संहितां तदा ततः प्रभृति लोके
स्मिन्वाराणां जातास्तुरंगमाः ततश्चिकित्सितं तेषां शालिहोत्रप्रकाशितमिति इत्यश्वानां नरवाहनत्वसंभवः
अथाश्वजातिविभागः शालिहोत्रे हयस्वरूपं तज्ज्ञतमं नियतेंद्रियं शालिहोत्रं महाप्राज्ञं मित्रजित्परिपृच्छ
ति चातुर्वर्ण्यं महातेजा जानीयाद्वाजिनां कथं केषु च्छायं जनाकारैस्तथा ऽ वक्तुमर्हसि व्यंजनं चिह्नविशेषः
एवं पृष्टो महाचार्यः शालिहोत्रोऽभ्यभाषत इ विस्तरेण तु वाहानां चातुर्वर्ण्यं निबोध मे अभिजातेन रूपेण शीले
ना भिजवेन च स्वरसंस्थानवर्णैश्च गंधैश्चाप्युपलक्षयेत् चातुर्वर्ण्यविभागेन तये चाश्वाननुलोमजाः अनुलोमजपदं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रतिलोमजानामप्युपलक्षणार्थं तान्विशेषेण गदतः शूराश्चैवोपपन्नश्च रूपोपपन्नाः श्रीमंतोविनीताचारशी
लिनः प्रशंसनीयाश्चार्याश्च स्तनितमंतः सुमेधसः गुरूणां चैव राज्ञश्च यत्नान्निर्देशकारिणः प्रदक्षिणाः समर्था
श्च शुचयः शुचिसेवनाः तथासत्वा भीरुसत्वाः सकोपाः सुप्रसादिनः गंधमाल्यप्रियानित्यं भूषणवेषाय यानतथा
पूजिताः संप्रहृष्यंति भवने चाग्रगाः सदा नित्यं प्रसादिनाश्चैव भवने वा हृदर्शनाः मनस्विनस्तेजस्विनः सर्वकर्मानु
पायिनः यानासादनभोज्यानि उच्छिष्टानि मज्जनानि च तथा चैवाम्बुधिसर्वपुरीषमूत्रमेवच मधुलाजाज्वलातृप्रपाय
साय्यभिलाषिणः गंधमाल्यसुमनसः स्नानमंगलकानि च प्रद्वेषमाणा जिघ्रंति सुखमाः प्रियदर्शनाः सुनिपा-
सासहाः शूराः स्तनितनादामहास्वनाः पीतश्वेतारुणागौराः श्यामश्यामधूपिंगलाः उदग्रगामिनो हृष्टाः स्निग्धानु
ध्वनिनः स्थिराः स्निग्धवर्णास्तनुत्वचाः श्लक्ष्णाः सर्वमंत्रिणः हिमप्रसुमाश्चवध्यंतिलाभेनत्दुशीरसंभिनः देव
गंधर्वसत्वास्तेनतत्वाचारशालिनः एवमाचारतत्वैर्विज्ञेयाब्राह्मणा हयाः क्षत्रियादुःखशीलास्तुकोपनाश्च
लवर्चसः तीक्ष्णाप्रकृतयः शूरामहागंभीरनिस्वनाः वर्मवंतोमहासत्वाः शुद्धसत्वाबलवत्क्रियाः वर्णप्रमा-
णा सारसंहननोपेताविविक्तांगास्तनुत्वचः सारोबलसंहननं संहति वर्णादिजलसंस्पादेनाङ्नेसवनेभरेक
केशस्पर्शनेचैवनिर्भयाद्रुमसंकटे निरोधविषमोच्चेषु तनविधीदंतिनेहयाः कल्याणाभिजवाः पानेः कल्या

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णाः प्रियदर्शनाः रथनेमिनिनादेषु शंखतालस्वनेषु च हृंहिते ब्रह्मणागानोचंदाखोडुवरास्व च हृंहिते शाहिते उ
त्कुर्वंतामे हेलिताकृष्टनिनदैः प्रतप्तानाचरेषितैः शंखभेरीनिनादैश्च वेणुडिंडिमनिस्वनैः छत्रध्वजपताका
यैर्मिहत्सूदेषु गर्विताः महाव्यूहोमहान्सेनासमूहः वालधिप्रकिरनश्च हृष्यंतो मुदिते लक्षणाः सम्प्रयुक्ताः प्रथा

लक्ष्म. १५१ वंति मेदिनीं धारयंति च खुराग्रैर्दारयंतश्च ते पिद्देषंति मेदिनीं खेदमूत्रपुरीषाणि सृजंत्यन्वर्थमेव च आक्रीडे
नित्यद्वेषंति मक्षेपतः पुराकृयान् मुदितास्तेवगाहंति च तुरंगवलेखा सानुनादस्वरं स्निग्धं हेषंते सूरयंति च अ
151 मेधांत्रष्टनोः स्थानोनेकनिगमनेसदा शब्दरष्ट्राग्रहृष्यंति महारौरैर्निश्वसंति च आहवेषु पराक्रान्ताः शूरास्ते द्विप्र
कारिणः मणिमल्लिकपिंगाश्च नानाविवर्णा विवर्णिनः सर्वकर्मसहास्निग्धाश्च तोनाल्पप्रमादिनः देवगंधर्वस
त्वास्ते कल्याणाभिजनस्वनाः एवमाचारवंतश्च विज्ञेयाः क्षत्रियाहयाः वैश्यायानक्रियामदर्परूमेधास्तज्ञानयः
न कुप्यंति न हृष्यंति स्थिरात्मानो जितेंद्रियाः विनीताचारवंतश्च जितक्रोधानुमानिनः मृदवः सामशीलास्ते वेद
नोस्तत्वपासहाः भारापगमनयानास्थिरामध्यजवाश्चते मध्यसारवलाश्चैव हरिपिंगेक्षणास्तथा क्रौंचनेत्राः
सिताः शोणापरपलवरोमकाः नातिवीर्ययुताः पश्चाद्वेगाश्च भवंति ते मत्स्यविस्रावगंधाश्च तथोच्छिष्टास्त्र
गंधिनः समाः प्रसादिताः शांतामात्रपंपसत्वमास्थिताः एवंविधसमाचारा वैश्याख्यास्तुरंगमाः अविशुद्धे यदि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मत्स्यं ते परेषां पानभोजनं पुण्याशनमपि क्लिष्टं रुष्टाः सेवंति ते सदा श्वगणाः बलीवर्दाय स्तेषामशनं भोज्यं कटंग
रादि शोणिताक्षरक्तनेत्राः स्वपादैर्भूमिं लिखंति च पुरीषमूत्रे जिघ्रंति मस्तयं विजृंभंते मत्सरिणश्च सर्वजनेनिन्म
नि परिपालकान् आत्मानं खरपुच्छैर्वदनैस्त्वर्षयंति च सर्पश्चकुष्ठकाः संति भयत्रस्तान विषादिनः कृशाः श्याव
र्णाः कंबलाः सुचिवन्नगृहस्तितिनावारस्त्वेपश्यते चत्तेः पश्येश्वदारेषु शुरीषं चोन्मृज्जंति ते धूम्राश्च मलवर्णाश्च
स्थूलवक्त्राः सितानना: वृत्ताभिन्नस्वराः क्रूरानमपशास्त्राङ्रासदः पिशाचाराक्षसेव सर्वेसमाः प्रमादिनः एवमा
चारसंस्थाश्च शूद्रानस्थान्विनिर्दिशेत् वितानमवलोमानो जनामाचारं च मेरूणा ब्राह्मणो जनयेद्गर्भं क्षत्रियायां क्ष
त्रियो भवेत् क्षत्रियायां हि वैश्यवाजिन्यां वैश्यो वाहः प्रजायते वैश्येन चैव शूद्रायां वैश्य अयनेतर्यः अत्र अनुलो
मामातृसमानजातीयाश्च स्मादितो ब्राह्मणात् क्षत्रियायामुत्पन्नो क्षत्रियः क्षत्रियाद्वैश्यायामुत्पन्नो वैश्यस्तस्मात् शू
द्रायामुत्पन्नः शूद्र एवेति वक्तव्ये वैश्याच्छूद्रायामुत्पन्नो वैश्य एवेति पठितेन तु शूद्रापेक्षया उत्कृष्टत्वज्ञापनार्थमि
त्यविरोधः अपि च ब्राह्मणात् क्षत्रियायामुत्पन्नः क्षत्रियस्तत्र यत्र क्षत्रियपदं क्षत्रियजात्यस्य चेष्टादिसाहश्यार्थं
र्णादिकार्यान्तरयोग्यतार्थं चेति एते द्विजसमाचारा यथा वर्णाहयाः स्मृताः परिभ्रष्टास्तत्र स्वस्य शूद्रत्वलाभं
तिते वैश्यायां ब्राह्मणाज्जातस्तं वैश्यमिति निर्दिशेत् क्षत्रियेणात् शूद्रायां तत्र मुत्पन्नमादिशेत् अथवाविभिरण्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मैर्निषादसाहिजन्मभिः शूद्रायामित्यनुषंगः अनुलोमाख्याः ख्याताः प्रतिलोमानिमां शृणु ब्राह्मण्यां जनयेत्
भिद्विविधः सूतमारटतं कर्काः कुरंटगोराश्चदंतगौराहृणप्रभाः कर्कीः श्वश्वाः प्रायशः हयसन्नाहाः सौत्रनादा
मद्रास्वनाः पानमाल्यसुगंधास्तेन च निर्हारगंधिनः समप्रमादिनः शौनाश्चेयाहि वपिराहयाः ब्राह्मण्यां तु पदा
वैश्येन जनयेन्मागधस्तु सः भारतमाः सवहीनाम्बजाहीनाः नेह्षणाः अनवस्थितशीलाश्च न च तु संतिकस्य
ल.वि. चित् हयश्चहीनसदृशाश्चैव गाहसनिहताः निर्वर्णवर्णाः प्रायेणापेशाचं समवमास्थिताः पापाभिजनितः कु
१५२ गवसाकुणपगंधिनः अनाचारप्रवणाश्च मायायादीनदर्शिनः ब्राह्मण्यां तु यदा म्बाधीशः शूद्रात्सादयेत्स तं सर्वं
152 डालइतिज्ञेयः पापाभिजनगोचरः नाभिजानेति कर्माणि प्रमत्ताः खरनिस्वनाः स्तहाभिन्नवर्णाः कृशाश्च प्रशस्ता
डगसदः उपदग्धाः प्रपासैस्त्वव्यजनावर्तलक्षणाः पुष्पैः पुंड्रैश्च विविधैर्निंदितैः परिमंडिताः पुष्पैः शरीरोप
विनन्नविंडुभिः पुंड्रैस्तिलकैः पुरीषंमूत्रमत्कोहेखादंतिनन्नगुप्सिताः भिन्नागारेषु सुविपुलस्यागारेषु मोदनाः
शृगालवृककवर्णाश्च धूमवर्णाविवर्णिनः कृशस्वनाः पूयगंधाः पिपमांससुरोदनाः पिशाचरतोभिजनाश्चंड
लाश्चंडरासदः पभिर्व्यंजनलिंगैस्तु चानुवर्णाविनिर्णयेदिति किंकणाकृतसारसमनुवपे शीलान्वितोभा
रसदः स्वगंधः शुद्धैकवर्णाः सममोहरश्च नामीरदेषशुचिमशुकोयामातरो ब्राह्मणजानिरस्त्रः शूरः सनीला

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्त्वभिमानयुक्तः क्रोधान्वितो वातभयः सुदेहोतिदीर्घकायः स्खलत्क्रमः स्यात्स क्षत्रियोऽश्वो द्युतिसत्वयुक्तः
मध्यस्थितो मानविवर्जितश्च स्वदेदनाभारसहः सुसत्वः वेगान्वितः शौर्ययुतोभिमानी पिंगेक्षणो वैश्यहयः प्र
दिष्टः क्लिष्टप्रहारो लघुविप्रियश्च स्यात्क्रूरदृष्टिर्लघुकायवांश्च क्रोधाभिमानातिशयेन युक्तः शूद्रः स्मृतोऽतिज
न्मप्रसिद्ध इति नकुलकृते अश्वचिकित्सिते वाजिनो जलजाः केचिद्वह्निजातास्तथापरे समीरप्रभवाश्चान्ये स्थल
कामगजास्तथा जलोद्भवा द्विजा ज्ञेयाः क्षत्रिया वह्निसंभवाः प्रभंजनभवा वैश्याः पाण्णोल्लकाश्च शूद्रकाः का:
पुष्पगंधः सदा विप्रः क्षत्रियोऽगरुगंधकः घृतगंधोद्भवो वैश्यो मीनादीनां च शूद्रकाः विवेकी सहणो विप्रस्ते
जस्वी क्षत्रियः स्मृतः इष्टभावलक्षणो वैश्यः शूद्रो निःसत्वकातरः विप्रस्य वाहनाः सर्वे त्रयो भूमिपतेः सदा हो वै
श्यस्य च शूद्रस्य एकएव स्वाभावहः केचिदिच्छंति भूपानां सर्वे अश्वा वाहनोचिताः तदर्थं भूतले यस्माच्छालिहो
त्रेण निर्मिताः ब्राह्मणाः देवकृत्येषु सिद्धिं गच्छंति वाजिनः क्षत्रिया युद्धकार्येषु वैश्या भव्याजने सदा शूद्रा
श्चान्येषु कार्येषु ज्ञात्वैवं वाजिनः सदा आरोहेत्सर्वकृत्येषु यश्छेच्छास्तु तोषिप्रियमिति इत्यश्वजातिविभागः अथा
श्वोत्पत्तिदेशाः नकुलकृते अश्वचिकित्सिते चतुर्धा वाजिनो भूमौ जायंते देशसंश्रयात् ताजिकाः खुरसाणाश्च
तुषाराश्चोत्तमा हयाः गोजिकाणाश्च केकाणाः पोद्धाराश्च मध्यमाः गाह्वाः साउराणाश्च सिंधुवाराः कनी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लक्ष· १५२ 153

यसः अन्यदेशोद्भवायेचनीचनीचास्तथापरइति जयदेवकृतेअश्वायुर्वेदे अश्वानांजन्मदेशांस्तुप्रवक्ष्याम्यनुपूर्व
शः उत्तमानांचमध्यानाम‒मानांचतत्वतः उत्तमास्त्वधिकाःप्रोक्तास्तथापारसिकाश्चये केकाणाश्चैवयेवा·
ह्लाः पृष्टनायेचकीर्त्तिताः उत्तमानाश्चकाराश्चभूपृष्टामाअजाश्चयेपरजाः सैंधवामध्यास्तथापारहताहयाः
संभलाश्चाऊलाश्चैवजरादेशोद्भवाश्चये अधमाद्दक्षिणाः सार्थयेचप्रागदक्षिणाहयाः हृतदीर्घोचितग्रीवरू
क्षकर्णीमहाहयाः महाकायामहोरस्कानिस्तामांसलेऽधिकामताः अत्यंतेविनतेघोणानिर्मांसवमुखंभवेत्
पीतेनकटिदेशेनमुखराश्चभवंतिये अधन्याश्चमहासत्वाः सर्वामेवाभिपूजिताः अपिशावहस्तांगाश्चनै
वमुचंतिसादिनं पारसीकाधिकाःप्रोक्ताः केकाणाः किंचिहूनकाः स्थूलाःस्थूलशरीराश्चपृष्टनादीर्घपृष्ठ
काः केकाणदेशजातानामधमानांचवाजिनां नाविकेः सदृशवक्त्रंवाकुलेनविनिर्द्दिशेत् सहजदेहस्ती^
त्ताश्चस्वप्रमाणेनमध्यमः कुरुजातः समुद्दिष्टः किंचित्स्थूलोमनाक्जवः अतिस्थूलोतितीत्ताश्चह्रस्व
ग्रीवनतुस्तथा तुरुष्कः कीर्तितोवाजी स्थूलवक्रमुखश्चयः केकनाकरदेहस्तुभवेन्मांडलिकोहयः शा^
त्याचैवप्रमाणेनकेवलंनैवनत्समः सिंधुदेशोद्भवोवाजीपृष्ठमांसलकारकः आननंचापिदीर्घंचनतपृष्ठ
ष्टचकीर्तितं सत्वेनैवजवेनापिरणशूरत्वयानतः सादिभक्तोयतश्चापिताजिकादधिकस्तथा परिमंडल

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देशास्त्वतीत्ताकर्णीमुखाश्रयाः एकदेशोद्भवाहृष्टास्तथासारस्वतात्मके लंवकर्णाजदक्षैव ब्रह्मालः परिकीर्ति-
तः संभवेस्मिन्नजातश्चायदाप्रश्नाहृलोपमः वर्त्तुलश्चापि कृत्स्नश्चटंकोनाम सकीर्तितः दक्षिणात्संभवं हृ-
दयोथन्यः सर्ववाजिनो जवहीनामहाडम्बाः सर्वदेशसमुद्भवाः वाजिवद्देसराणां च देशं विद्याद्विचक्षणः
ति इत्यश्वोत्पत्तिदेशाः अथाश्वकुलविभागः शालिहोत्रं आसीनं चहयागारे वेदवेदांगपारगं सिद्धजित्वम-
त्वाः सुश्रुताः शिष्याश्च गुणसंमताः प्रपच्छुर्हयवेदज्ञं हयशिक्षाविशारदं भगवन्सागरान्ते पर्वतस्तथा शैलमालिनी
पत्तनागारदेशेष्वनेकेष्वप्युपशोभिता तेषां विभागान्तरगा भवन्ते कामचारिणः वदंति विविधाकारा उत्तमा-
धममध्यमाः व्यामिश्रेषु चरंत्यश्वा भ्रंशं विस्मयते मनः तेषां च जननेयानि कुलान्युपकुलानि च देशाल्लिंगा-
भिजननैर्वर्णैर्वास्वलोजसा पृथक् पृथक्कुलानां तु वित्तानानि वदेदिमे स्थानसंकीर्णदेशानां छोटकाज-
ननानि च अन्यजाश्च गुणोपेता गुणैर्हीनाश्च देशजाः भवंति कस्मात्तत्सर्वं भगवन्वक्तुमर्हसि ततः प्रोवाच भग-
वान्सुश्रुतं मुनिसत्तमः कुलाभिजनवर्णाश्च रूपाचारजवोत्तमाः कविसंस्थानगंधैश्च गमनाद्यैः कर्म्मसत्वैस्तथा सर्व-
मेतत्प्रयोदिष्टं शालिहोत्रकुलोद्भवाः आदिसर्गे तु हृष्टास्मदिव्या गंधर्वमानवाः कर्क्की शोणाश्च काला वधूम्रास-
तिलपाटला अव्यासारावसहिंग्गीता देशेषु विभाजिताः एतएव च नावंतेला सांसदृष्टा हयोत्तमाः इंद्रसोमयमा-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ स्वायुनावहरणेन च हयानां पतय: स्थावक्रिनापेन देन च भूमौ दिक्षु विभक्तास्ते दिह्याख्या: कुलाकरा: प्रसू
कास्त्वेवमेवैते सृष्टास्तेऽस्मरोत्तमे: पृथिव्यां प्रविभक्तास्ते दिक्षु जनपदेषु च मारेंद्र दृष्टा: केकाश्च अपराश्च यथाक्रमं
तासां पुत्रैश्च पौत्रैश्च व्याप्ता सर्वा वसुंधरा: समुद्रमाश्रिता: केचित्तथान्ये सिंधुमाश्रिता: श्रिता यवनकां वेजान्व
नाह्येव चापरे पुन: शतद्रूं च विपाशां च चंद्रभागां सकाश्मिरां सरस्वतीं कौशिकीं च गंगां मेघवंतीं तया महानदी
नामेतासामंतर्हिमाश्रिता: परे कुल्वके हिमवंते च मलयं गोरथं गिरिं गंधमादनकं गिरिं कैलासमभिवाश्रिता:
सुराष्ट्रान् सूरसेनांश्च काश्मीरान्मद्रभूमिकान् पंचालान् कुरुसालवंगान् गांधारं च नर्वरान् दशार्णानन्य
देशांश्च सौवीरान् विविधानपि पूर्वावहकलिंगांश्च विदर्भकृथकैशिकान् दिशो जनपदश्चैव पृथिव्यामाश्रि
ता हया: तेषां विभक्ति: कुलतो नामतस्त्वापि वक्ष्यते दशावैशेष्यतस्तेषां विभक्तिं त्रिविधामपि जानीयादि
ति शेष: सरस्वतीं तेषु कुले तथाभिजनितास्तथा ये नानाजननसंभूता: विपाकान् जननोत्तमान् अथ पंचदहि
णो कुले श्वेतो तो नदीचरा तेसारवल तेजोभिर्मध्याश्चवर्षत: पाश्चात्पटभूमीषु मंद्रसौराष्ट्रकेकया: कै
शिकाकोशवंगेषु मगधेष्वपि ये हया: तेजकायबलैर्हीना हीनसत्वा जवौजसा एतानि जननान्याहु: समुद्र
नानि वाजिनां चतु:पंचाशदेतानि कुलान्युपकुलानि च सुपाउसंकीर्तिमानानि देशतो दियनामभि: तत्र चता

ल॰दे॰
१५५
155

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अंतस्थाः उपमेवकाः अंतस्थाः कुलजाः अंतस्थाः उपकुलजाः अंतस्थाः त्रैगर्त्तीस्तदन्तस्थाः आर्जुनेयास्तदन्तस्थाः सावित्रेयाः + ५
स्तदन्तस्थाः योधेयाः

रिकुलानि चत्वारि उपकुलानि चत्वारि अंतस्थानि चत्वारि तदन्तस्थानि पंच पंचस्थानि पंच विषमेयस्थानि चत्वारि अनू
पजानि चत्वारि अपरांतानि चत्वारि शूद्रजानि चत्वारि दाक्षिणात्यानि चत्वारि वैशिमानि चत्वारि वेसराणि द्वाविंशो
कुक्कुसोपकसुत्तरे हैमवतमेकं मागधं नवषोटककुलानि चतुःपंचाशदेतानि कुलान्युपकुलानि च नामत
स्तानि च सामिषोटकाज्जनतेर्विना तत्र कांबोजकुले वानायुजकुले आरट्टजकुले सैंधवकुले कांबोजानां वा
ह्लिकेया उपकुले वानायुजानां गांधारा उपकुले आरट्टजानां चापेया उपकुले सैंधवानां नैत्तिला उपकुले मेवकाः +
स्तदन्तस्थाः पावनायाः पंचस्थास्तषाराः पंचस्थाः विषमेयाः पंचस्थाः कांदेरेयाः पंचस्थाः वार्मिनेयाः पंचस्थाः
आवेयाः विषमेयाः अंतसा विषमेयाः काश्मीरा विषमेयाः सकावका विषमेयाः पार्वतीया विषमेयाः उत्तरांतमा
द्रेयाः अनूपजाः दक्षिणांतमाद्रेयाः अनूपजाः अंतर्द्वीपका अनूपजाः कैकया अनूपजाः अंबष्ठका अपरांतकाः
वासंतका अपरांतकाः सौवीरका अपरांतकाः दरदा अपरांतकाः सैंधवाः शूद्रकाः तद्रकाः शूद्रकाः मालकाः
शूद्रकाः पैरावताः शूद्रकाः आवंतका दाक्षिणात्याः कालिंगका दाक्षिणात्याः मौकुला दाक्षिणात्याः मौकु
ला दाक्षिणात्याः वानवासिका दाक्षिणात्याः तैलंगा वैशिमाः कथना वैशिमाः अपाहनका वैशिमाः सौराष्ट्रा
वैशिमाः साल्वेया वेसराः कुरुक्षेत्रजा वेसराः पंचालजा वेसराः वोम्यजा वेसराः अभिसारजा कक्कुसाः स्राव

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

काकुकुसाः हिमवमन्तरेयाः मागधाः मंतावकाचोटकाः अश्मकेषाचोटकाः मौलिकाचोटकाः चकोरकाचोटकाः
श्रमशैलजाचोटकाः वैदर्भिकाचोटकाः पूर्वहैमयाचोटकाः दक्षिणहैमेयाः चोटकाः सामेयकाचोटकाः इति
देशविदेशोश्चरक्तान्यायतनानिच आहारोनामतश्चैषामुक्तोदेशकालान्वये अतः परंवंजनेभ्यः प्रत्येवैकस्यव
ल०प्र० स्यते विस्तरेणतुरंगाणांयथावदनुपूर्वशः यथोदिष्टानकलगणानशृणुष्वचपृथक्पृथक् कांबोजानांतुवि
१५५ ज्ञानमंगालिंगैःप्रवर्त्तते कांबोजास्तुरगाः श्रेष्ठाः कुलेश्च महास्कामहाप्रोथामहोत्साहाश्चतेहयाः महाहनु
155 ललाटाश्चशंकुकर्णमहामुखाः महासमुन्नतादाश्चउच्चपादांतपार्ष्णयः समकायोदराहृतामहाजघनवालिनः
मंडूकात्ताः स्पष्टमुखादीर्घग्रीवाः समुत्थिताः समस्थिताः भृंगारतनुकेशाश्चमहास्कंधामहोरसः दीर्घैः सुजातै
श्चभुजैः सपूर्णासमवक्षसः पीनहृतोरुजंघाश्चहयास्तेस्थिरकुक्षिकाः कुक्षिकायंगविशेषाः अननरेवक्षमाणा
श्चांगप्रदेशानिर्दिशेदृष्टव्याः तनुस्निग्धसुरोमाणोमृदुरोमतनुत्वचः रूक्षमेदफलाश्चैवनदीनानित्यनिर्हताः रूप
तेजोजवैः श्रेष्ठावर्णवंतः सुसंहताः विनीताचारवंतश्चश्रीमंतः प्रियदर्शनाः स्वेनाः शोभगाश्चकुलाश्चनविवर
र्णाभवंतिते दृष्ट्वातेनाभिदेशंतेवडवामश्वमेवच सत्तूपाजवनाः श्रेष्ठाः सरतेजोबलान्विताः शीलवंतः सदा
चाराः सत्ववंतोनकर्कशाः स्वामिनोहितकर्त्तारोमनोज्ञाः प्रियदर्शनाः शुभानुका समरसाः कांबोजाः संप्रकी

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्तिताः तेषामपकुले जातानां वाह्लिकेयास्तुरंगमाः अल्पांतरादर्शनतो दुर्ज्ञेयास्ते विज्ञानता कांबोजा वाह्लिकेया·
श्च तुल्यसंस्थानसंस्थिताः समानकारिणरूपाश्च तुल्यतेजोजवाश्रये समानि तेषां लिंगानि विशेषोपलक्षते श्रुण
दीर्घग्रीवा मदवल्ले वदीर्घपृष्ठखुराश्च ते आयामपरिणाहाभ्यां किंविदश्चतराश्च ते सृष्टपृष्ठस्कंधजघना विदुर्वनोरु
कृष्टिकाः पृष्ठांतोन्नतग्रीवाः सर्वकायसमुन्नताः द्विजैः कृशास्त्वभिमंतिश्चदीना भर्तृवत्सलाः महासत्वाः स्थि
राः स्मृता भूयिष्ठपिंगलाश्च ते तवस्तजेतिपतितेसकटेश्च थसादिनं एतावदेव विज्ञानं वाह्लिजानां प्रकीर्तितं
वानायुजानां निस्कस्तानमहान्तः सुसंस्थिताः मध्यप्रमाणाः कोलाल्ताः सर्वकायसमुन्नताः शंकुकर्णा स्कंसमुखो
न्नताग्रा तुंगनासिकाः हृतायतकायसमाः ह्रस्वपृष्ठत्रिकाश्च ते ह्रस्वमेढ्राजकोशास्तेस्तने त्राश्चारुगामिनः
चारुगात्राः समाश्चैव नदीनाटछकुक्षिकाः खुरैर्गर्दभसंस्थानैर्गंभीरयरिमंडले: स्थिराः कर्मसु सर्वेषु भारे धनि
पारगाः स्वल्परस्विनः शीघ्रापुरकमिड्रासदाः येवातिज्ञानने कर्मते भवेन्नुत्तमा हयाः कूलान्तु वर्णाभूयिष्ठम
ध्यकाश्च भवंतिते सत्वतेजोबलोपेता हया वानायुजाः स्मृताः तेषामपकुले जातागांधारास्तान् श्रुणु श्रमे कृ
स्नकुकटकाधूम्राकृस्लासाराविवर्णिन शोणाश्च वकुवर्णाश्च कायवंतः सुसंस्थिताः दटपश्चार्धकायाश्चद
मोदयाः पुरस्तनः पश्चार्धविषमाश्चं ज्ञावलिनः स्थूलकेसराः तव्वापतमुखाश्चैव गांधारकुले जाता हयाः आरट्ट

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ज्ञानं विज्ञानं कीर्तिमानं मृगाश्च मे कृष्णपृष्ठाः सुमुखास्तनुवालाः शुभेक्षणाः उरस्यापनस्कंधीयमध्ये सन्नतास्तनू-
रुहाः तनुत्वचो ह्रस्ववर्णा मृदुग्रीवाः सुसंस्थिताः सुसंहिताः शंकुकर्णा दृढमध्याः सुकुक्षिकाः शोणा मृष्टपृष्ठाः शी-
घ्राः उच्चरोमांतपार्श्वाः हरिवर्णास्तु वर्णोस्य हरिसाराश्च प्राप्ताः उच्चपाणिविहाराश्च न च विहिसवारिणः महा-
ल.च. जवाः सुविक्रांताः पादांतरविहारिणः आरट्टजकुलास्ते वं विज्ञेया बलिनो हयाः तेषामुपकुले जाताश्चोपेया-
१५६ स्तान्मृगाश्च मे परिमंडला कृष्णपृष्ठाः सुगंधाः सुप्रतिष्ठिताः प्रगजंघास्तनूपादा गात्रवंतः सुविक्रमाः बलवंतः
156 सुविक्रमाः बलवंतः सुरोमाणस्तेजसा रजवान्विताः स्थूला त्रिकूटघातास्ते स्थिरपादाः सुकुक्षिकाः सुमांसपृ-
ष्णिकायाश्चोपेयास्तुरगाः स्मृताः सैंधवास्थिरपादाश्च विपीनजघनाः स्थिराः दीर्घग्रीवाः सुवास्यास्ते स्थूला-
ह्वास्तनुकेसराः शंकुकर्णा महाकाया महोरस्कास्तनुत्वचः तनुस्कंधा महाघोणा हयास्ते वृत्तोदराः लघुमेहनमु-
ष्कास्ते पृष्ठवक्रा महौजसः सुविस्पष्टे च कलाणा हयास्ते जस्विनस्तु ते शीलवंतो बलोपेताः सर्वकर्माभियायिनः स-
त्ववंतश्च तुरगाः सैंधवाः समुदाहृताः तेषामुपकुले चास्मास्ते त्तिलामंदमेधसः स्थूलग्रीवाः सहनवः स्थूलवाल-
धिकेसराः स्थूलमेढ्रफलाः कांता बलवंतो जवान्विताः सारवंतः सुगात्राश्च समुच्छ्रितशिरोधराः संस्थानवंतो
लघवो दृढपादाः सुकुक्षिकाः पृथुवक्षोललाटास्ते विशालजघनेक्षणाः भारायनिक्लेशसहाः वनिपासा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सद्दाश्वने सत्ववंतश्चतुरंगास्तैत्तिलाः संप्रकीर्त्तिताः ससंस्थानाश्चतर्ईनामेवकाः स्थूलवक्षसः शंकुकर्णाः सु
वृत्तखोस्तनुत्वचकामदेतणाः दीर्घायतविडग्रीवाः पृथुजंघमहोरसः महाशनाः पृथुग्रीवास्तनुहनो हजेवकाः ह्र
स्वकुक्षिकाह्रस्ववालेनतनुमध्यामिनोदराः रोमशाः पूर्वसर्वांगाः समशीलाः नकर्कशाः वज्रवर्णाः पराश्चित्राहयाः
पाटलपुष्पकाः मध्यमाधानचपलामध्यसारबलास्तथा सत्वतेजोजवैर्मध्यामेवकास्तुरगाः स्मृताः तत्रोपमे
चकाह्रस्वाः स्थूलवालधिकेसराः मृदुगात्रबलशफास्तनुगात्राः स्तब्धकुक्षिकाः उच्चैर्वहशिरोग्रीवाः पृथुखोवह
लैःकटैः ह्रस्वोरस्काविरूपाश्चहयास्तद्रूपमेवकाः कलजादीर्घपृष्ठाश्च ह्रस्वमेढ्रफलालसाः हृतग्रीवायतवृ
त्वास्तनुमध्याः स्तब्धकुक्षिकाः दीर्घवालधिकेशास्तुः ह्रस्वरोमतनुकेसराः तनूरस्कास्तुतुरगाः कलजाः समपाट
नाः अम्बोपकलनाह्रस्वा — तुग्रीवोरुकुक्षिकाः दीर्घवालधिकेशाः स्युः कलजैः समलिंगकाः मंदशाणाल्पते
जस्काः कर्कशाह्रस्वविक्रमाः अल्पसत्वाल्पमेधाश्चतुरगास्तूपकुलजाः नदन्तुस्यास्तद्वेगात्तीवलवंतोनकर्क
शाः ह्रस्वग्रीवामहोरस्काश्चदत्तवालधिकेसराः शारवर्णास्तेहठपादशफास्तथा प्राग्राकोडाः शशामुखाः शश
वालधिकेसराः कोपनानातिसूराश्चवेगतोऽडः खवाहिनः आर्जुनयामहोरस्काः स्थूलानाः स्थूलकेसराः सु
खाः स्तब्धकुक्षिकालंबमेढ्रफलास्तथा उपस्कंधविडुग्रीवाः कुसवर्णानुवर्तिनः आजानेयानवाक्रूरास्त्वार्जुनेया

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
१५०
151

स्तुरंगमाः आर्जुनेयाप्रव आजानेयाश्च सुच्यंते सावित्रेयाह्रस्वहृष्टाविलोणिजघनाटठाः नृष्टास्यावक्रननाःस्थूलवाल
पिकेसराः दीर्घहृष्टोरुशफास्तेस्थिरमांसस्नायविनः महंगाश्चसुनेत्राश्च हृष्टग्रपादामहौजसः दीर्घसक्थ्यश्चसंहृ।
ष्टास्तेस्थिरमांसामहोरसः वर्ष्मवंतश्चशूराश्चसावित्रेयास्तुरंगमाः योधेयाह्रस्वकर्णोष्ठाः सारतेजोबलान्विताः
हृत्तायतोन्नतग्रीवाहृतमध्योरुकुक्षिकाः दीर्घवालपिकेशाश्चखुरानातिपिंगलाः श्रेष्ठाप्रतस्वरोस्कंधाः सु
विभक्ताः सुवलसः ततुनकुरुत्वरोमाणोविभक्तामयसंधयः योधेयाश्चभवंत्यश्वाभारेषुनिचपारगाः क्लि
नोरुतनवसाम्पनः पीं सुललाटाः सुनेत्रांगास्तनुहृष्टाप्रनैर्मलैः तनुत्वक्तूस्तरोमाणः शोककर्णालत्रुक्रमाः
सुहृष्टजघनोरस्कावर्ष्मवंतः सुमेधसः वज्रवर्णाःसुवर्णाश्चमनोज्ञाःप्रियदर्शनाः सारवंतः सुगंभीराःसुब
नेजोबलान्विताः सुस्निग्धिकखुराःशीघ्राःसुस्थिराः सर्वकर्मसु प्रवनाश्चास्तुवोह्वयाहृतांगादीर्घवाहवःवि
क्रैरन्नेप्यवसंतेयावनाख्यास्तुवाजिनः सुभावतोह्रस्वकायाः सत्ववंतोबलान्विताः हृष्टांगास्तुविभक्तांगास्त
न्वंगास्तेसुसंहताः मनोज्ञशफाःसुमुखाःसुवर्णाःप्रियदर्शनाः सुरोमकेशवालानाः सुभगाःशुभमेधसः
भारार्धनिक्षेपसहाःशुभान्वकामनस्विनः सुविक्रांताहठशफास्तुषाराःवाजिनःस्मृताः तुषाराश्चैवविज्ञेयाः
केशैःसूक्ष्मतरैस्तथा जवोपेताविषमेयाहृतांगाह्रस्वकुक्षिकाः प्रहृष्टांगशिरोग्रीवासुबद्धागात्रवर्तिनः स्निह

१५०

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दशावर्त्तमध्याः पृथूरस्काल्पसृक्क्रमाः श्वेतसाराः सुरोमाणो विषमेयाद्रयाः स्तनाः कांदरेयास्तथैवाहास्तेषांश्च
णतलक्षणं कायवंतः समेहहाटपादाः सुकुक्षिकाः स्थूलतनुसूक्ष्मरोमाणः स्थूलवालकिकेसराः प्र
कोपनाः सुशीलाश्च कांदरेयास्तुरंगमाः वार्ष्मनेयाधनुर्ग्रीवाह्रस्वांगाह्रस्वकुक्षिकाः पश्चार्धकायेषुसमाः
पूर्वकायेषुचस्थिराः तनूदराह्रस्वपृष्ठाः स्पर्शवंतः सुसंहताः पीलवंतश्च विज्ञेया वार्ष्मनेयास्तुरंगमाः वि-
षमेयास्तथा वेन्याः स्थूलांगा हठकुक्षिकाः गात्रवंतो निरुदराः सुवृत्ताश्च शिरोधराः शोणानुवर्णाश्चतथा
वृत्तमध्याः पृथूरसः आवंत्याः सूक्ष्मरोमाणो महाजवनवत्सः अतसावलवंतोश्वावीर्यवंतोमितं महोरस्काः।
स्थिरोग्रीवाः पृथुजंघोरुकुक्षिकाः मडमेगाद्रकेशास्तेहदपादामनोहराः विरोधाश्चतसारेवंश्वेतवर्णानु-
वर्णिनः काश्मीरकावर्ष्मवंतस्तेजोवंतः सुभेंद्रियाः पृथ्वायतललाटास्ते सुश्रुताम्लल्वविक्रमाः नरद्वशंकु
कर्णास्ते सुरोमाणस्तनुत्वचः सुछायतनुखोः शूराः सुविभक्ताः सुसंहताः रथांगतलसंपन्नाः हठपादामन
स्विनः शोणवर्णानुवर्णाश्च हृयाः काश्मीरकास्तुते सकानकानामश्वानां लक्षणं तन्निबोधमे महानदीस
कानामप्रभूतयवसोदका शूराश्च रूपवंतश्च तत्रोत्पन्नाः सकानकाः पूर्वकायसमुदग्रास्ते पश्चार्धेषु समन्नताः
तन्वायतविडग्रीवा दीर्घवालधिकेसराः कृद्दादंतैः प्रार्थयंति पूर्णमश्वैर्दत्त्वाणाहयं वीतमाणाश्च दृष्टैर्घातेश्चतस्त्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·श्व·
१५८
158

वङ्कामपि शंकुकर्णाः सुहृन्मुखास्तन्वहत्तायतश्चते दीर्घकेशाः सुदीर्घातालवपार्श्वोदरस्फिजः शोफेस्तले
श्वस्तरष्टैः कूर्चरोमाननपार्श्वयः उष्ट्रगाश्रोरुजघनाहयाः साकानकाः स्मृताः पार्वतीयास्तनुशाखामहाजघन·
वक्षसः प्रथलश्ववृषगास्ते दीर्घवालधिकेसराः महाजवावलोपेताः प्राणाः सर्वकर्मसु पृष्ठाश्वहटपादा
श्वपार्वतीयास्तरंगमाः अनूपोत्तरमाद्देयादीर्घवालधिकेसराः पृथुग्रीवामहाकर्णाहयास्ते दीर्घगामिनः
नचकर्मणियोग्यास्तेनचशीलान्विताहयाः उग्रासदादुःखशीलाः प्रेयासोमधुपिंगलाः हरिवर्णास्तुवर्णाश्च
हृढपादखुराश्चते एवंदक्षिणमाद्देयाविज्ञेयालघुवाजिनः हयादक्षिणमाद्देयास्तामसाश्चालसाः स्मृताः श्वे
तद्वीपेश्वपेजाःपावर्त्तनेतान्निबोधमे पेरावतीविपाशयोः शान्तद्रुवेद्रभागयोः अन्तर्द्वीपेश्वपेजास्तेनद्वीप
कसंज्ञिताः अन्तःस्थापेसरस्वत्याः नादेयास्तुतरंगमाः कल्याणांगजवोपेतादीर्घग्रीवाः सुखोछ्रिताः सुज
घनाःसुहृष्टास्ते अन्तर्द्वीपोद्भवाहयाः केकयकावर्षिवेनोमहाहोयमुखाहयाः दीर्घग्रीवामहोछ्रुमादीर्घ
केसरवालधिः समार्षीलेचनेधानेपारगामुखराश्मरश्च सुवाक्रुरष्ठपादास्ते केकेयापवैनेः समाः अवष्टका·
श्चतुरगामहास्कंधामहाबलाः हृत्तग्रीवामुखेविभक्तसंगाडविकराश्चये महोरस्कामहावक्त्रालंवश्रवणामेहनाः
महन्स्कंधफलाश्चैवहनेकृषीरुकाहिकाः वाजिनोवष्टकाज्ञेयास्तानेवमभिनिर्दिशेत् वासंतकाःसुविको

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नातिदीर्घग्रीवमुखा हयाः मृगोदरा ह्रस्वपृष्ठा ह्रस्वश्रवणमेहनाः सर्वशौर्यवंतश्च संतोताश्च दृढपादाः सकुक्षि
काः महोरस्कास्तु चपला महाजघनवत्समः पर्वतासंतकास्ते यास्तुरगाः शीलकर्कशाः सौवीरकाह्रस्वपृष्ठा
दृढगात्राः क्षमान्विताः उदग्रगामिनो हंसाः पादांतरविदारिणः सदस्यमानाः शीघ्रास्ते स्थिराचारेन तथा धनि स
मसंहरणि सर्वांगा हयाः सौवीरकाः स्मृताः दरदा ह्रस्वजघना ह्रस्वकूर्चास्तु मेधसः महोदरशिरस्कंधा महाकाल
पराक्रमः सारवंतो दृढपादा वर्णवंतो जवान्विताः ह्रस्वादिपृष्ठलोमूलादरदा वाजिनः स्मृताः सैंधवाः स्थू
लकालास्थूलरोमत्वचस्तथा विकटा वर्णवंतश्च बलवंतो जवान्विताः महोदरस्कंधजघना महोन्नूसा मह
बलाः स्थूलकटिकजंघाश्च सैंधवास्तुरगाः स्मृताः त्रुटकावर्णवंतश्च बलवंतो जवान्विताः चलरेखास्तु
जवनाः स्नायुताः सुप्रतिष्ठिताः दीर्घश्रवणमेढ्राश्च सबुराः त्रुटकाः स्मृताः मालवावर्णवंतोश्चाविस्ती
र्णजघनास्तथा पूर्वकायोन्नताः रमालोहिताश्यामनोरमाः लंबोष्ठा लंबकर्णास्ते ह्रस्वग्रीवामनोहराः ते
जोवंतो निजवना मालवा वाजिनश्च ते पेरावना ह्रस्वकर्णमंदमेधा जवापराः स्थूलसर्वास्थिमांसास्ते
हयाः पेरावनाः स्मृताः श्रावंतकादातिर्णाःस्यादीर्घवर्णमहाशिराः महाकायविडग्रीवा महाजघनवक्ष
सः भग्नास्यालत्रपाश्च स्निविडह्रस्वाः सुपीलिनः दीर्घकेशामडलामध्यसारजवाः स्थिराः सुविनो वङ्ग

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.च.
१५९
159

वर्णाश्रमहंगामायशस्यते एवमावंत्यकाज्ञेयाः सवर्णानानकर्कशाः कालिंगकाःस्थूलपादामहाकर्णाहदैःस्वरैः
प्रायताविगतालज्जापश्चाधाविषमास्तने कन्नादंशयतश्रीवाभग्रास्थालेवमेदनाः अस्पतेजोजववालाः हयाःका
लिंगकाःस्मृताः मौकुंलाःस्थूलरोमाणोऽमेधाः क्रोधनालसाः कृशपृष्ठांगजघनाः स्थूलकाष्टिकजानवःभा
रेवाल्पवलामंदाहीनतेजोजवाश्चते वक्रासुताननिरुत्साहामौकुलाःस्वरगाःस्मृताः दाक्षिणात्येचतर्थतवसते
वानवासिके कृशपृष्ठोरुजघनाः पूर्वकायेषुसंहताः पश्चार्धविकृतामंदाहृष्टपादः लमभन्विनाः मध्यमाणाश्चा
ल्पजीवाःसत्वतेजोजवाःपराः वानवासिकजातानामेतद्भवतिलक्षणं वैशिमाल्पथतेलेगाः क्रोधनास्तुकलस्व-
राः क्रूरकर्माभिनितान्तविकृतांगाशिरोधराः महोरस्कामहास्कंधाः पश्चार्धेषुसंहताः दृढकाटिकपादाश्चहयास्ते
लिंगिकाःस्मृताः कृथनादीर्घकर्णाश्चदीर्घोरुजघनावलाः उदग्राः सर्वकायेषुपश्चार्धविहतास्थ्ये हीनचर्मा
ल्पतेजस्काःलंबगात्रामहोदराः स्थूलकाटिकलांगूलाः कृथनास्तेहयाःस्मृताः अयोपाहुतकामंदाःस्थूललांगूल
लांगूलकाटिकाः लंबकर्णाविडस्कंधालेवस्थकोष्टमेहनाः महापृष्ठाश्चकञ्जाश्चलवसंक्थिविषाणिनः स्निग्ध
लातात्र्यमृपिष्टसुपार्श्वनाहयाःस्मृताः सौराष्ट्राःस्थूलपादाश्चदृढरोमांतपार्ष्णयः दीर्घविस्तीर्णसक्थ्यंगादर्शनीयाः
पुरस्ततः पश्चार्धविकृताश्चैवस्थूलजानूरुकाष्टिकाः एवंसौराष्ट्रिकाज्ञेयाः सुपादानचसंहताः साल्वेयावेसरा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ज्ञेयाः स्थिरांगा ह्रस्वकुक्षिकाः तन्वायतविरुग्रीवा दीर्घकर्णा महोरसः पश्चार्धविकृता ह्रस्वास्तनुवालधिके
सराः साल्वजास्ते वै विज्ञेयास्तु दुरासदाः कुरुक्षेत्रे जातास्तु पश्चार्धे पृथुरुक्रमाः पंचालानांतु विज्ञानं वे स
मग्रं निबोध मे पंचालजा दीर्घस्कंधाः स्थूलांगाः स्थूलकुक्षिकाः वितन्वायतपृष्ठास्ते मध्यगात्रास्तेजसः सु
प्रतिष्ठितपादास्ते विषमाढ्यपाणयः आरोहणे दुरारोहाः पंचालेषु हयाः स्मृताः बाल्हीका स्थूलसर्वांगा दीर्घ
पृष्ठतनूदराः सूक्ष्मकर्णा दृढैर्लोमैर्महामाः खशिरोधराः कायोपचितमांसास्ते सुविभक्ताः दृढाः भृशं मांसे स्थिता
कन्नूपाश्च जाता लेदेशमाश्रिताः मंदतेजोजवाश्चैव वाल्यजा वे स्मराः स्मृताः अभिसारजानां विज्ञानं कुकु
सानां तु वदाम्यते परिमंडलह्रस्वकाया भुजैः स्थूलैः संस्थिताः ऊर्ध्वकर्णाश्च सम्यक्खोजवनातिस्निग्धा हिताः
दुरामदा दुराकारा हया स्तुरभिसारजाः खोचकास्तनुरोमाणो ह्रस्वरा ह्रस्वमेहनाः ह्रस्वपृष्ठतनुग्रीवा ह्र
स्वमेढ्रफलाश्च ते स्थिरपादास्तेजस्का मंदसत्वजवास्तथा तन्ह्रस्वपाकृतिन खोचका देशजा हयाः ह्रस्वगा
त्रतराः किंचित्सानतकाश्च स्तब्धवाहनाः ह्रस्वायाम परीणाहास्ताखोचकाः ह्रस्वकोशलाः एतावत्तु वल्ल विज्ञानं हि
नीये ह्रस्वकुक्षिसे हिमवत्सुत्तरे याश्च दीर्घांगास्तनुकुक्षिकाः महाकायशिरःपादाः स्वर्वकायेच संस्थिताः पश्चा
र्धकाये विकृता जवना विषमायतः दृढपादाश्च राश्चैव तरगा लेप्रकीर्तिताः हिमवत्सुत्तरे या स्तु विज्ञेयाः सर्वतः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·श·
१६०
160

समाः एषूक्तेमागधंस्येकंकुलेतदपिश्रूयतां मागधास्तन्वरोमाणोदीर्घग्रीवानतकुक्षिका निर्मांसास्तस्थिरबलानिह
सादाल्पतेजसः अल्पाहारानकर्माहाः कुक्षेजीवंतितेभुवि लंबोष्ठकर्णामेदाश्चतुरंगामागधाः स्मृताः दक्षिणोहिमव
तार्श्वेमागधान्पूर्वपश्चिमे जायंतेनत्रयेवाहाविज्ञेयास्तेधमागधाः हीनाः सर्वांपरार्द्धेषुप्रमाणेनावराश्चते कृशेभुवे
भुवेः पिंगलास्तेनाभिजानंतिकर्मस्व भारवाहाबलाः क्लीबाः त्वपिनोथपिपासिनः एतेहिमागधास्तेयानयोग्य
हयकर्मस्व प्रमाणहीनानत्वसत्वंवंतस्तेजोवराः कर्मसुचाप्ययोग्याः भवंतिमंदानचमालिनस्तेहयास्तपेवोटक
वेशजाताः कलानियोदकानांतुक्वसामितत्वनः मेनावकाएल्पकायाः विभक्तांगाः सुसंहताः सुनेत्राह्रस्वमुखा
श्चसुपादाः सुमुखाश्चते तसामंतावकैरेवश्रश्माकेषुभवंतिये स्थूलादिक्रूरयाराश्चमौलिकाः स्थूलसंधयः मं
तावकगुणोपेताः किंचिद्ध्रस्वनराःखराः एवंचकोरकाज्ञेयाः शुभश्रवणवालधिः चकोरगुणोस्तसाः शुभगात्र
नराः स्थिताः ह्रस्वातुवर्णिनस्तीक्ष्णाविज्ञेयाः श्वेतशोलजाः वैदर्भिकाः कापवंतः सोत्साहावाग्मिनः स्थिराः
अमर्षिणोवेगवंतः सत्वोपेतशरीरिणः पूर्वदक्षिणभागयेहिमवंतंसमाश्रिताः भद्रह्रस्वायतस्थूलजंघोरुकुक्षि
काः ह्रस्वास्यतेजसोसारबलहीनानसंस्थिताः पूर्वदक्षिणहैमेयाः समाः सामेयकाः स्मृताः पूर्वदक्षिणहैमे-
याः दक्षिणहैमेयाइतिव्याख्येयं एवंचसनिनवचोटककलानीतिसंख्यातुगनाभवतिअन्यथावाप्येत नेभ्योवि-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शेषण्यंवात्रकिंविद्दीर्घेनराः स्थिराः सुभ्रूकूर्च्चवृत्तरोष्ठस्त्वेवतुवर्ण्णाः सृक्कान्विकाः एवंसामेयकान्तेयाचोटका
नवमेकले वक्त्रः पंचाशदेतानिकलास्तुपकलानिच तथार्धमागधाश्चैवव्याख्याताचोटकात्तथेति एतेषा
मुक्तानामष्टकलानामन्तमादिभेदोपुक्तस्तत्रैव श्रेष्ठमध्यजघन्यानिकलाख्यानिस्तुएतत्स्फुत काम्बोजादी
निश्रेष्ठानिकलास्तुपकलानिच तथापरक्कलानीह्यश्वेनस्थानिचयानितु तुल्यान्येतानितान्नुमध्यमानिवि
निर्दिशेत् अवशिष्टानिकनिष्ठानि इत्यश्वकलविभागः अथांगप्रदेशनिर्देशः जयदत्तकृतेऽश्वशास्त्रेवेदे
प्रदेशान्वाजिदेहस्थान्नोनवेत्तिविभागतः नसजानातिमूढात्मालक्षणंचचिकित्सितं अतः परंप्रदेशानांना
नमादौप्रकीर्तितं एतदन्येनवोहव्यंवाजिनोहितकाम्यया अतिप्रसिद्धाजिह्वानलस्तासूनामवेदयः ऊर्ध्वता
लभवेनस्यात्तनोग्रेदंतपीडकांततोदंताः समुद्दिष्टाः ऊर्ध्वदंताभवेत्तथः चिबुकंचापरेभागेतेषांप्रोक्तंविचक्ष
णैः चिबुकस्योपरिष्टात्तअधरोष्ठः प्रकीर्तितः चिबुकात्पार्श्वभागेतुहनुभागोविधीयते सृक्किद्वयंविजानी
याद्धन्वग्रपार्श्वगतंत्रयः उत्तरोष्ठंप्रयानाख्यंततः हर्षघोणमुच्यते नासाछिद्रेतथापार्श्वेप्रोधेसैवसंव्यवस्थितेना
साछिद्रादिमध्येतुघोणाख्यंसमुदाहृतं घोणापार्श्वगतौगंडौतौस्तीरिकेचततः परं नेत्रयोरपरेभागेअश्रुपातः
दाहृतः कर्णांतंचैवनेत्रांतमपांगंत्ववतेवधाः कनीनिकाख्याविज्ञेयायश्चनासासमीपगः सितासितंचयन्म

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ प॰
१६१
161

ध्येनेत्रयोर्मंडले हि तत् प्रच्छादनं भवेद्धर्म्मे चातिकूटमतः परं तस्मादूर्ध्वं भ्रुवोर्लेखो ललाटं च तदुत्तरं ऊर्ध्वं ल
लाटदेशाल्लकेशांतं च ततस्तु वै ततः शिरो विजानीयात्तु वाहूर्ध्वगतं बुधः शिरःपार्श्वगतौ कर्णौ तयोर्मूले श
कुंतले अपांगद्व्यंगुले चैव शंखं विद्याद्विचक्षणः शंखकर्णांतरे चैव करात्तः समुदाहृतः विहूमर्मविदश्चैव
कर्णस्याधः षडंगुले शालिद्रोवैत कर्णयोः पृष्ठतः पार्श्वे विहूसमुपलक्षयेदिति शेषः घंटावंधसमीपस्थो
निगालः परिकीर्तितः अधस्तले निगालस्य गलमाहुर्मनीषिणः ततः कंठं विजानीयादधोभागेन तं बुधः ग्री
वालोकप्रसिद्धा तत्तस्याश्चोपरि केसरः ग्रीवास्कंधांतरे चैव वहं प्राहुर्मनीषिणः वहस्योपरि जत्रुः स्यात्का
कसे ककुदं च तत् ततः पृष्ठं विजानीयादासनं पृष्ठमध्यगं अंसकोककुदश्चैव निवहोपरिकीर्तितो स्या
नामंसादधो बाह्वोस्तयोर्वा हि षडंगुले बाह्वोरभ्यंतरे विद्यात्किणं चातिप्रकीर्तितं अधरे च ततो जानुर्निर्दिष्ट
स्यात्तत्कोविदैः मंदिरः पश्चिमो भागः कलापी जानुनोऽग्रिमः जानुनस्त्वापरे भागे जंघां विद्याद्विचक्षणः जं
घापार्श्वे कलां विद्यात्संधिं वै षिकसंज्ञकां अग्रतः पलिहस्तः स्यात्पश्चात्कूर्चमुदाहृतः किणं तत्रैव मध्यस्थं पो
भागे चक्रकिकां खुरसंधिं ततो विद्यादधोभागे ततः खुरं खुरस्य पार्श्वपालिः स्यादग्रभागेन खो भवेत् खुरस्या
धस्तले चैव मंडूकीतलमध्यतः खुरमांसं विजानीयात्तलौरिकां च विचक्षणः हृदयाभ्यंतरे ऊक्वीपार्श्व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तस्य विभागतः जठरपार्श्वमध्यस्थं तस्य नाभिस्थमध्यतः रोमराजी ततो विद्यान्मूत्रकोशमतः परं आकचा
पश्चिमे भागे पृष्ठे स्फिजौ च कीर्तितौ रंध्रे चापुष्परंध्रे च तु तेरंध्रं तरे स्मृते पुच्छमूलतः तस्याधः कीर्तितः पायुः
सीवनी च ततः परं मुष्कौ च करिसंधिं च ततो विद्यात्परं बुधः अथ स्नानकरिसंधेपेस्तक रुसंधि दाहतः सक्थिनी
तलसंधिस्तु ऊरूपादाभिदायकः ततः स्थूरं विजानीयात्तस्याधो मंदिरं भवेत् किणश्चैव ततो विद्यान्मंदिरे एणस्तु
ते स्थितं ततः परं विजानीयात्कलां कूर्चं च कुष्टिकां खुरांतसंज्ञां मङ्कीनं ततो विद्याद्धि च तद्गणः अग्रे जंघाद्व
यं चैव वक्त्रो ग्रीवा शिरो मुखं पूर्वकायः समुद्दिष्टः पृष्ठदेशस्तु मध्यमः आकटेः पश्चिमे भागे खुरांतस्यापर
स्मृतः इति प्रदेशाः व्याख्याताः पूर्वशास्त्रानुसारतः इति प्रदेशनिर्देशः अथायुःपरिमाणं शा-
लिहोत्रे यथा नरे वर्षशतं विंशति वर्षशतं गजे चतुर्विंशत्तद्वांचैव खरोष्ट्रे पंचविंशतिः शुनि षोडश व
र्षाणि द्वादशाथाजपङ्के विंशतिवर्षाण्यायुर्यथा चाश्वनरे स्मृतं मृगाणां षोडश समा रोहितानां तथैव च
रोहितो मृगजातिभेदः द्वाविंशत्कर्हिषस्यापि सृगालः पंचविंशतिः कुमयः समवाद्वानि मद्विकाच चतुर्द
श तथा हयेषु द्वात्रिंशत्परमायुर्विधीयत इति इत्यायुःपरिमाणं अथायुःपरीक्षा जयदत्तकृते अश्वायुर्वे
दे आयुर्लक्षणमश्वानामतऊर्ध्वं प्रवक्ष्यते शालिहोत्रादिनिर्दिष्टं यथा पूर्वं तपोधनैः उक्तमिति शेषः स्तसंह

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाश्चयेवाह्यहस्वकर्णास्तथैवच स्वरनेत्रस्वभावेषुनदीनाश्चिरजीविनः महावोरणमहाकायाः येवाश्वाः श्रणु
वदतः तेषांदीर्घंभवेदायुः स्निग्धांगाश्चैवयेसदा कर्णाग्रेपीडितेयेषांसिहराभस्यदर्शनं शोणानसतस्यभवेच्चैवतेम
नाश्चिरजीविनः विनिःकिरंतियेचाश्वास्सप्रासापतरंगमाः नवाजिन्नंतियेवापितेपिदीर्घायुषोमताः प्रतिस्रोतःपिबंतस्य
भोयेचतेचिरजीविनः पद्मपत्रसमाकारजिह्वाग्रयदिवाजिनः दंताश्चसौक्तिकाकारालिंगंयेषांचनिर्मलं सीत्कार

ल॰श॰ १९२ 168

श्चभवेयेषांलोहलेचालितेपुनः पुसेदःप्रसेदःशुभगंधस्तनरवोवैदर्पणोपमाः येषांचहृदरोमाणिनेसर्वेचिर
जीविनः स्निग्धागंभीरदीर्घाश्चघोषजायस्यवाजिनः भवंतिविपुलारेखास्तवियाद्दीर्घजीविनं छत्रचामरभृंगा
रवज्रशंखांकुशप्रभाः मुक्तिवज्रगदाकाराः ध्वजचक्रसमोपमाः ऊर्ध्वचोष्ठस्थितारेखायस्यवामेनचाननाः श्री
वृक्षस्वस्तिकाभासाः घोषरेखाश्चिरायुषः ह्रस्वावायस्यवाहस्यनचिरंतस्यजीवितं ऊर्ध्वघोषसमारेखादृश्यतेय
स्यवाजिनः तस्यमृत्युःसमुद्दिष्टोदशमेप्राप्यवत्सरे द्व्यंगुलास्तुदशाब्देचवर्षाणांतस्यजीवितं त्रयोदशसजीवेत्त
यस्यस्युस्त्र्यंगुलाः घोषरेखास्त्यनुषंगः तिर्यग्गेवोर्ध्वगेचैवद्विरेखेयस्यवाजिनः घोषजेयस्यवाहस्यतेवियाच्च
चतुर्दश अत्रवर्षाणित्रयोदशचतुर्दशजीवतीतिप्रश्नेकंसर्वथः दक्षिणेनचपार्श्वेनयःशेतेसर्वदाहयः वज्रभृ
त्रश्चचिरंजीवतिसोहयःविनतः पूर्वकायेनस्थूलजानुश्चयोहयः स्थूलाद्यकूटस्तवाहः स्वल्पायुःसप्रकीर्तित

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इति हस्त्यायुःपरीक्षा अथवर्णलक्षणं नकुलकृताश्वशास्त्रे सप्तवर्णा भवंतीह सर्वेषां वाजिनां ध्रुवं तान
हं संप्रवक्ष्यामि भेदैर्जातान नेकधा श्वेतो रक्तस्तथा पीतः सारंगः पिंग एव च नीलः कृष्णोथ सर्वेषां श्वेतः श्रेष्ठ
तमो मतः यद्यसौ भूपते वाजी सर्वश्वेतः प्रजायते तदभावे यथा प्रोक्तास्तथा श्रेष्ठाः क्रमेण ते श्वेतः प्रालेय
संकाशो रक्तः कुंकुमसन्निभः प्रालेयं हिमं हरिद्रासदृशः पीतः सारंगः कर्बुरः पिंगस्तु पिंगलाकारो नीलो
दूर्वाग्रसंनिभः कृष्णो जंबूफलाकारः शास्त्रज्ञैः समुदाहृतः पीताभः श्वेतपादो यस्तथा स्यात्सितलोचनः च
क्रवाकः स विज्ञेयो राजार्हो वाजिसत्तमः मुखे चंद्रकसंयुक्तो जंबूफलसमाकृतिः श्वेतपादः स विज्ञेयो मल्लि-
काक्षः सुपूजितः सर्वश्वेतो हयो यस्तु भवेत् श्यामैककर्णकः स वाजी वाजिमेधार्हः श्यामकर्णः प्रकीर्तितः
चत्वारोप्यसिताः पादाः सर्वश्वेतस्य वाजिनः भवंति यस्य स त्याज्यो यमदूतस्तु हयनः यस्य पादाः सिताः सर्वे पुच्छं
वक्त्रो मुखं तथा मूर्द्धजाश्च सिता -- यस्य तं विद्यादष्टमंगलं भस्याभवाजिनं जस्यान्सुरसेन राधिपः ॥ दिवा
छतिकर्माणि यदि वाश्चीस्मरत्वं यस्य रोमविभेदेषु जायंते मधुबिंदवः पुष्पाढ्यः स परिज्ञेयः सर्ववाजिनृपा
वहः यस्य पादाः सिताः सर्वे तथा वक्त्रं च मध्यतः कल्याणपंचकः प्रोक्तः सदा कल्याणकृद्विभुः विमिश्रवर्णकाः
सर्वे प्रशस्ता वाजिनः सदा कृष्णनीलस्य मिश्रत्वमेकं मुक्त्वा सहस्रनः यस्योत्कृष्टतरा वर्णा हि दृश्यंते शनैः शनैः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सनाशयतिनीचांश्चकरोत्यश्वोत्तमान्बहून् पश्चायमेनवर्णेनभवेद्युक्तस्तुरंगमः विवृद्धिंचैवगच्छन्सःकरोति
हयसत्तममिति जयदत्तकृतावश्वशास्त्रे यस्यगौराणिपीतानिगात्ररोमाणिवाजिनः सभर्त्तुःश्रियमाधत्तेयस्य
शुक्लानिवीर्णाणिच पुच्छकेशमुखानिवीर्णाणिशुक्लानीत्यर्थः प्रभूतासिततारास्यप्रशस्तास्तुनिभिःस्मृताः यस्तु
पीतसितैस्तारैःसधन्यःकीर्तितोहयः श्वेतपार्श्वेष्टितेकुक्षौरेखयानारकंचयत् मल्लिकाख्यःसविज्ञेयःस्वामि
लःप्र. नःसुखवर्द्धनः सिततारोऽप्रशस्तश्चस्वामिनःक्लेशवर्द्धनः सर्वश्वेतश्चकृष्णश्चरक्तःपीतस्तथैवच एतेसा^
१६३ 163 मान्यकाःप्रोक्तास्तुरगाःसुनिसत्तमैः हरिताःकिलजायन्तेवाजिनःपुण्यदर्शिनां अनेनोद्दिताम्नेरेद्धाणामायु
रारोग्यश्रीप्रदाःरक्तास्यमेदनःशस्तःश्यामकर्णश्चयःसितः कपोतेनचवर्णेनयोहयःशुक्लकेसरःपाण्डुरा
यस्यरेखाणान्तृष्टेवशानुयायिनी श्वेतकृष्णःशिरोयस्यनेवयन्यःप्रकीर्तितः अन्यवर्णाशिरोयस्यपुच्छेवायस्य^
वाजिनःपुच्छेनयोरक्तावापिनानावर्णेननिंदितः अव्यक्तवर्णायोवाहस्तथातित्तिरसन्निभः कृष्णितोवानरा
सश्चनयावाद्भावलीढकइति गणहृतेऽश्वचिकित्सिते सर्ववर्णाःशस्तास्तुरगाणांसुप्रभास्थिराःस्नि
ग्धाःतेषांश्वेतःश्रेष्ठोयतोध्रुवश्चात्मत्वयश्चासौ— सर्वेषांवर्णानांसंयोगःश्वेतसंयुतःशस्तः सर्वश्वेताःशशि
नोहरयःकनकप्रभाःखरेंदस्य कुल्मायमस्यवाहाःकर्काःशुभलक्षणाविसौः शुकगात्रनिभाभानोःकिंशुक

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वर्णो हयाङ्गनाशस्य असिताभ्रनिभा वरुणस्य कुमुदवर्णाः कुबेरस्य एभिर्वर्णैरश्वाः शुभस्वरा वर्जिकायवर्ज
कायसर्वाश्च एतेषां देवानां पृथक्पृथग्वाहनाः कथिता इति इति वर्णलक्षणं अथ गतिलक्षणं जय
दत्तकृते अश्वायुर्वेदे हंसमहिप्यय: पादांस्ते मार्गान्तस्मात्रिव स्तनेयाति सम्हृष्टो वाजी भद्रगतिस्तु सः ह
जिताहूयमानं गसिंहशार्दूलगामिनः अतो मृगगतयो नेष्टाः सर्वमुदास्तुरंगमाः संकीर्णविक्रमाश्चाश्वा वक्रा
सौष्ठववर्जिताः अनर्थैश्चैव विख्याता वाजिनां निन्दिता गतिः घोडशाच्छोटिकादयाः करतालेन जानुनि प्रात
दिक्षिणान्तं गत्वा हस्तानां पुनरेति यः स शीघ्रगतिरित्युक्तो वीजीय यस्तपोयनैः दशादीनाभवं स्येनेमध्यगाय
मगाहयाइति अथमर्थः जानुमात्रद्विगुणेन करतालेन षोडशाच्छोटिकादानेयावान्कालस्तन्मध्ये यो ऽश्वः शतह
यहस्तपरिमितां भूमिं गत्वा पुनरायाति सोत्तमः ॥ यस्तु दशहस्तोनशतहयहस्तप्रमाणां भूमिमतीत्य पुनरा
याति स मध्यमः यस्तु विंशतिहस्तोनशतद्वयप्रमाणां भूमिं गत्वा पुनरायाति सोऽधम इति किञ्चिदन्यत्राश्व
सारसमुच्चये उक्तं: पद्मासम्पूर्णा गतिः स्यात् सौष्ठवायामसम्पूर्णा हयस्य विभक्तपादा च मनोहरा याहिता स
दा सादिप्रसाद प्रशस्ता सादी अश्ववारः मत्तद्विपव्याघ्रमयूरहंसशार्दूलमृगेन्द्रगतैः समाना यास्यात्तुरङ्गतिर्य
स्तुरंगमस्य भर्तुः श्रियं सा नित्यतनोति याश्च या खरोष्ट्रगोवानरैः संकीर्णविक्रमा विषमा क्षिप्तपादा निःसौष्ठवा वाह्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प्र·
१६५
165

शफास्खलंती यास्यहतिः सप्रदिष्टनम्रशालाङ्गः क्वोनिमन्त्रः करुते सदैवायः शीघ्रगामी सविलासमुच्चैः फञ्जां
व्रजेत्स्वाग्रशिरोप्यधुन्वन् संस्थानतोश्वेन कलोपपन्थे वसानाकलानस्यगतिः प्रदिष्टा हृत्स्ने स्पृशन्मो विकटैः खुरा
ग्रैः पश्चिलसज्जिस्खरोणैः प्रयाति सांगात्प्रभूमावितनस्य जातं स्यात्तिनिरंतरेत्निरवद्यस्य उपमर्चक्रं तुरगः प्रया
तिस्थ्रासोसितः सुस्थिरपाद्वालः मयूरवपुः सविलासगामी माधुरकीतस्यगतिः प्रदिष्टा सुभागतिर्यस्य
तुरंगस्य नं माप्यराजाजयतेऽरिसंघान् मामोति लक्ष्मीमतुलं यशश्चकीर्त्तिं चनिरंससहम्रमित्रैः स्वगतिस
हितमश्वं लक्षणैर्नैवहीनेश्वभनरमपिचोकंशालिहोत्रेणसम्यक् पदिश्वभतरलसंध्याविनेनयस्य शुभर
वसर्नियः संगराखेस्कादाविति इतिगतिलक्षणं अथप्रसंगाद्वाहनविधिर्निरूप्यते जयदत्तकृतेश्वशा
स्त्रेवैदे ब्राह्मणोचयथोदिष्टोवाहनेविधिः सारं तस्य समुद्धृत्य सर्वं तत्कथयाम्यहं ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रविधः
स्ववरिकीर्त्तितः शूरस्पष्टदमस्तुष्टस्त्रियस्तुरगः स्मृतः पापिनः पापनूपाश्च दुष्टा वैश्याः प्रकीर्त्तिताः विरु
पाविषमाश्चैव शूद्राश्वैस्तदाहृताः ब्राह्मणान् भक्तदानेन साम्ना चैव तु हारयेत् वैश्यं दंडेन शाठ्येन शूद्रं दंडेन
वाहयेत् प्रत्यूषे वाहयेद्विप्रं क्षत्रियं मध्यदिने गते वैश्यं संध्यागते काले शूद्रं रात्रौ च वाहयेत् सर्वे च त्रिविधे।
प्रोक्तस्तत्रमाधममध्यमं उत्तमं चोपगामेन साम्नादंडेन मध्यमं शाठ्यागेन वदंडेन वाहयेदधमं त्वथः सह

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जेनिर्मलेवाहेनैलडप्यस्यस्यपवत्‌ पार्ष्णिश्च द्विविधा प्रोक्ता बलदौर्बल्यसंभवा वलिष्ठो दुर्बलत्वेन दुर्बलोपि
वलेनवा छलेनोपधिनावापि सततं ताडनाच्चवाहयेत्‌ सार्द्धसप्तकठिनां चैव पाषाणोदकसंयुतां तृणकाष्ठ
समायुक्तां रंगभूमिं तु वर्जयेत्‌ समां च विपुलां चैव किंचित्सिकतासमन्वितां एकांते विजने रम्ये रंगभूमिं तु का
रयेत्‌ स्थूलः कोपी च मूर्खश्चविनीतो लकचलासनः अस्थाने दंडपातीयत्तस्य वाजी न सिध्यति अचलेन तु यस्य
तु कटिरूर्ध्वा दुर्विभेतियः मचलेयस्य तु कटिरूर्ध्वा दंडपातक्रमतिपाहांतरे ततस्य वाहनेवाजी दुर्लभ वाजि
वाहिने ह्रासनोयत तज्ञो हृष्टपुष्टो निरालसः अविरागी स्थिरश्चापि षंडेनेवाजिवाहकाः चित्तं योनैवजानाति
तुरगस्य समासतः न वहंति हयास्तेच दंडपातेन ताडिताः कुपिते वलिते भीते तथा चोन्मार्गगामिनि कुपिते भ्रां
तचित्ते वा पश्चाद्दंडनिपातयेत्‌ कुपिते ताडयेत्‌ मूर्ध्नि जानुभ्यां वलितेन तथा कुपिते उरसि हंतव्यो भ्रांतचित्ते तथो
दरे भीतं च ताडयेत्पश्चात्पृष्ठे चोन्मार्गगामिने ज्ञात्वा दोषं च रूपं च स्थाने स्थाने प्रताडयेत्‌ अस्थाने ताडितो वाजी
यावज्जीवं न सिध्यति न जहाति च तद्दोषं यावज्जीवमसौ हयः धाराः पंच प्रवक्ष्यामि ऋषिभिर्याः प्रकीर्तिताः धारा
शब्देन धावने अतिवरितेगति विशेष उच्यते प्रथमा विक्रमा धारा द्वितीया पुलकाभिधा तृतीया धौरिकं पीत
चतुर्थी त्वरितानाम्ना पंचमी चैव या धारा निराजं वा प्रकीर्तिता षष्ठी चैव तु या धारा भूपतेन तु दृश्यते विक्रमा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गतिधाराचवनस्कापुलकामना स्रुवेपादसमायुक्ताहुणिकंठीतुसाभवेत् छ्यानविनाधारानाधारानाडिनाचैवपं
चमी षष्टीचैवनुयाधारानर्गलोकेषुगीयते नवकोननयोनानोनकोणानाप्ययोमुखेः नभवेन्नत्रगात्रस्तुसंभवेदश्व
वाहकः स्थिरोरुः स्थिरपादश्च त्रिकोन्नतः स्थिरासनः त्रिकेशष्टुवंशाधोभागः श्रुश्रवाराः समाख्याताः शेषा
ल.प्र. स्तुभरदायकाः श्रीष्मादिषुनुकर्तव्यंशरत्सुत्रिषुवाहनं हेमंतादिषुकर्तव्यंसादिभिः शास्त्रवेदिभिः प्रतिपन्तु·
१९८ त्रयोदश्यांपंचम्यांवासिनेदले धृतिसिद्ध्यादियोगेषुवासरेचंद्रसूर्ययोः मूलरोहिणिहस्तेषुपुष्येचैवोत्तरासु
166 च एवंविधेदिनेसादीवाहनंवाहयेत्शुभे रंगभूमौचरेवंतंस्थापयेत्पूजयेत्ततः पुष्पैधूपैःप्रदीपैश्चचंदनैःपाय
सैस्तथा पक्वान्नाद्यैर्भक्ष्यभोज्यैःपानैःशुचिस्त्रवस्त्रकः रक्तांबरधरोभूत्वारक्तपुष्पधरस्तथा — नमोरेवंतायश्व·
श्वहृदयायंफ्रीं क्लीं — नमोश्वेतायसौम्यरूपायममसर्ववर्धयवर्धयवश्यंकुरुमहावीर्यायरेवंतायनमः एतन्म
त्रंजपेन्मासोहयस्यदक्षिणेश्रुतौ एकविंशतिवाराश्चततः पर्याणयेद्धयं क्रोशमेकंतमारुह्यईशानीतुशनैर्नये
त् दिशामितिशेषः नातिस्थूलंकृशंनातिनलघुंनातिकर्कशं समांगुलप्रमाणंतुखलीनंकारयेद्बुधः खलानेवला
ग्रानहस्तादिकांभूमिंसमहस्तावसामिकां भ्रामयेद्वाजिनंसादीसर्वंचैवापसव्यके दयाद्भयमभीतस्यभीतस्यापि
हरेद्भयं रहस्यंसादिनामेतद्वाहनेसिद्धिवेदितं दश्यमानस्यअश्वस्ययोदोषःसादिदोषतःजायतेसौनिराकर्तुं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सादिनानैवशाकाने एवंशास्त्रविधानेनयः सादीवाहयेद्धयान् हयास्तस्यसिध्यंतिभवंतिफलदायकाः अ
स्थिभिर्दशनैश्चैववृहत्कानांचतथात्वचः विषमकरंदकृष्टाभिर्धूपयेच्चैवसर्पिषा एलांमृगमदोशीरंनागकेसरचं
दनैः सर्जिकातैलसंयुक्तैर्धूपयेद्दुष्टवाजिनं सर्जिकामध्यदेशेसाजीतिप्रसिद्धा विल्लिलागोमयैःपानर्नि
शीथेसर्वसंयुक्तं अष्टम्यांचविशेषेणदुष्टाः सिध्यंतिधूपिताः कासीसंचंदनंकौंतीसिद्धार्थमरिचानिच
सैंधवंवचामूत्रेकणाजंमलं कासीसंलोकेकोसीसइतिप्रसिद्धं कौंतीरेणुकेतिप्रसिद्धा सिद्धार्थाः सर्षपाः
मूत्रनिर्गुमानिपिष्टानिकणायासवचानिच अंजनंसर्वदुष्टानांदेयंपर्वाणिपर्वाणि कणापिप्पलीयासीजवासा
इतिभाषयाप्रसिद्धः अनेनाभ्यंजितोवाजीनिर्वाणमधिगच्छति कोपमोहंभयंत्यक्त्वावश्यः स्यात्सादिनोभृशं
प्रातःसादीशुचिःस्नातःशुक्लांबरधरस्तथा उपोषितोपतिर्भूत्वाजपेन्कर्णेवदक्षिणे हयगंधर्वराजस्त्वंशृणुष्व
चवचनंमम गंधर्वकुलजातस्त्वंमाभूयाः कुलदूषणः द्विजानांसत्यवाक्यानांसोमस्यगरुडस्यच रुद्रस्यवरु
णस्यैवपवनस्यबलेनतु हुताशनस्यदीप्तस्यस्मरजातिंतुरंगम स्मरराजेंद्रपुत्रस्त्वंसत्यवा
क्यमनुस्मर स्मरत्वंवारुणींकन्यांस्मरत्वंकौस्तुभंमणिं क्षीरोदसागरेचैवमथ्यमानेसुरासुरैः तत्रदेवकुलेजातः
स्ववाक्यंपरिपालय कुलेजातस्त्वमश्वानांमित्रंमेभवशाश्वतं शृणुमित्रत्वमेतद्धि सिद्धोमेभववाहनः विजये

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मेघरां चैव संग्रामे सिद्धिमावह नवहर्षं समारुह्य हता दैत्याः सुरैः सुरैः पुरा अधुना तां समारुह्य जेष्यामि रिपुवारि
णी मंत्रजापं ततः कृत्वा मंत्रेणानेन बुद्धिमान् विसृजेत् सर्वदेवांश्च ततः पर्याणयेद्धयमिति इत्यश्ववाहनविधिः
अथ स्वरलक्षणं शालिहोत्रः सतं प्राह हयानां स्वरलक्षणं हंसभेकुररक्रौंचमेघडुंडुभिनिःस्वनैः जलौघस
दृशैर्येचतेऽश्वनिस्वं विज्ञविदाः रभोगजः स्वकाकवानरोलूककाहपाषाणसन्निभैः शनैरशनिस्वलैस्वपापाः
ल.प्र. १९० 167 स्ववाजिनो मताः अशनिर्वजं नाम स्वरं हयं प्राप्य दिग्भ्रमात्यनवाप्नुयात् आप्यं वांछितं हेषमथो मृग्धो वाजी य
स्तु भर्तुरनर्थदः वामनिरीक्ष्य पार्श्वं च कुलनाशकरो भवेत् दृष्ट्वा द्रव्यममंगल्यं प्रायशोयस्त्रु हेषते अलक्ष्मीतनुते
अलक्ष्मीतनुते सोऽश्वो भर्तुईः खेकरः स्पृतः खरवद्धेषते यस्तु सो लक्ष्मीकस्तु रोगमः भर्तुर्बुद्धिकारः सेऽश्वो पुनर्या
त्मविवर्द्धनः विलोक्य लक्षणं पार्श्वं स्वभावापस्तु हेषते नमस्त्वमभिहस्ता छराजाजयति मेदिनीं वहूनां हेष
माणानां सूयते यस्य हेषितं सोनुनादो हयो नाम भर्तुः सर्वार्थसाधकः एकस्य हेषमानस्य बहूनामिव हेषि
ते गंभीरहेषी सोऽश्वः स्यादाज्ञां विजयवर्द्धनः स्फुतानुहेषिते तस्य अन्ये हेषंति वाजिनः अश्वानां वर्धते सोऽश्वोरा
ज्ञां शतसहस्रशः अन्यस्य हेषितं श्रुत्वा यः पश्चादनुहेषते नमस्त्वमभिहस्तायमित्रवृद्धिमवाप्नुयादिति जपद
तकनेअक्षाघुर्वेदे देषितं मधुरं चैव तुरगस्य प्रशस्यते अविच्छिन्नमदीनं च गंभीरं सानुनादि यत् दृष्ट्वा हिरण्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पात्रेचव्रालणांकुसुमानिच दधिवापिसमालोक्यवाहानांहेषितंशुभं वादित्रध्वनिमाकर्ण्यहेषंतेयदिवा·
जिनः शास्त्रसर्वाणिसर्वाण्येवतदाभर्तुर्जयोभवेत् ध्वजाग्रेचैवसूर्येचपश्यंतोवाजिनोयदा हेषंतेवहवोहृष्टाल
दाविद्याज्जयप्रभोः अतोविपरीतेनहेषितेनकुत्सितंततः मिश्रितेनगंभीरंदमूकंविदूरेकाशजर्जरं वाले
चनिर्गतेहृष्टहस्तयिनेवापिपासिते भीतेभीतेनतथावाहेनशास्त्रेस्वरलक्षणमिति इतिस्वरलक्षणं अथछाया
लक्षणं शालिहोत्रे पंचभूतात्मिकांछायांपंचधालक्षयेदिमां वायोरग्नेरपांभूमेर्नभसश्चापिपंचमी सर्वरो
मसुदंतेषुवालकेशनखेषुच वर्णःस्यादधिकोभूतोछायामश्वस्यलक्षयेत् भूतंपंचमहाभूतात्मिकां वाय
व्यापरुषादीनाभस्मवर्णाहयप्रभा रक्ताचाथस्तास्त्रिग्धाग्नेयीज्ञेयान्नप्रभा असितांबुदसंकाशाजलजास्त्रिग्ध
सुप्रभा हृष्टानन्दीननियताऽनिर्देशान्नरेंद्रजागंभीरास्त्रिग्धवर्णाचसर्ववर्णाचपार्थिवी जलजापार्थिवाः
ग्नेयीप्रशस्तानिंदितेतरे निंदितावाप्रशस्तावाकाथितिहतियावित्रे छायाचलक्षणंतस्यविपुलेफलमश्नुते रा
ज्यलाभंयशश्चैवस्त्रियंशांतिंतथैवतथा रणेचविजयंनित्यंप्रशस्तानभिनिर्दिशेत् हिमप्रभैश्चर्यमाग्नेयीछाया·
भर्तुःप्रयच्छति अज्ञावकृतरोकीर्तिसंपदंहिप्रयच्छति पार्थिवीसर्वकामार्थयुक्तमैश्वर्यमक्षयं निःसपत्नम·
हाराजंछायाभर्तुःप्रयच्छति वायव्याचांतरिक्षाचसृष्टानेत्ररोगंयदा तदापराजयंभर्तुर्वधंपंचनिर्दिशेत्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.प्र. १९८ 168

व्यसनं चैव बंधं वा रोगं मरणमेव च अप्रशस्तास्तु ज्ञानीयाद्दुर्गंधस्य नरस्य चेति इति छायालक्षणं अथ गंधलक्ष
णं शालिहोत्रं परीपृष्टेन तत्त्वज्ञं शालिहोत्रं जितेंद्रियं ज्येष्ठः पुत्रोपसंगम्य मित्रजिन्मरिहंति गंधा मनोज्ञाः पुण्याश्चये
वं गंधास्तथाशुभाः तेषां मे ब्रूहि विज्ञानफलमेषां शुभाशुभं एवं पृष्टस्तु पुत्रेण शालिहोत्रः प्रभाषत शुभेगंधं विजा
नीयात्त्रिः स्थानेस्थाणसंस्थितं घ्राणसंस्थितमाभ्यंतरस्थितं अहिकालदेषु वनचामृत्रायिनेपुनः स्वेदमूत्रपुरी
षेषु स्वकेनाभीनयापुनः सर्वमेनमवसामिश्रकवाशृत्तोपपादय चंदनागरुगंधाश्च तथा सर्पिस्तगंधिनः दधि
क्षीरसमागंधास्तथा साजकमूत्रलोः ह्रीवेरस्य मृणालस्य केसरोशीरयोस्तथा ह्रीवेरमुशीरं ग्रंथिमोशीरप
देनकुसुमपुष्पोरंगास्ते जंबूबिल्वकपित्थानां पक्कस्याम्रफलेच कंदंवार्जुननीपानां पाटलाशोकगंधिनः काङ्क्षा
रस्य शिरीषस्य मल्लिकामालतीनांच कुटजस्पंदनानांच पुन्नागनागशोकगंधिनः सुगंधाः करवीराणांयेचकर्डुरगं
धिनः चंपकस्य तमालस्य पत्रस्य तगरस्य च वसंतवनराजीनां वारणानां मदस्य च येचगंधामनोज्ञाः स्युः सर्वे
पुष्पफलान्विताः तेषां समानगंधा ये मतास्ते हयोत्तमाः नित्यं प्रमुदिताश्चैव सर्वस्य च मनोहराः सर्वार्थसि
द्धिप्रकराः सौभाग्यकुलवर्द्धनाः पृथिवीमचिरात्तैस्तु लभंते पार्थिवा हयैः तथा मनोज्ञगंधास्ते मनोज्ञाधिकरास्त
था पूजनीयाश्च ते वाहाः प्राशस्ताः सर्वपुत्रदाः आहवे जयिनो नित्यं यशोदाः पुत्रपौत्रदाः एवं पुण्यसमागंधाः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आख्याताः शुभाश्चापरान् । मत्स्यांकुणपगंधाश्च वसादुर्गंधितगंधिनः । दुर्गंधितोऽधमः काकः मत्स्यपुच्छाण्डगंधा
श्च मलस्य पूयगंधिनः । मार्जारोष्ट्रवराहाणां सर्पाणां मूषकस्य च । श्वशृगालेभ्यने वल्मानपूयगंधमाश्रिताः
ते हयाः प्रतिकूलाः स्युरेतैर्दोषैः समन्विताः । अतिह्रस्वाः कराराला मगलास्तथैव च । नचदीर्घाश्च पृष्ठले स्युर्निंदि
ताश्चैव कर्मसु । अत्यग्रशस्तगंधाः स्युः प्रशस्ताश्च प्रकीर्तिताः । फलमिष्टमनिष्टं च यथावदनुपूर्वशः । इति
हस्माह भगवान् शालिहोत्रोऽनुशासनमिति । इति गंधलक्षणं । अथ सत्वलक्षणं । शालिहोत्रे वसने विविधं
सत्वमुहृत् राजससत्वामस सुदृसात्विकं धीमंतः सत्वभाजश्च सात्विका दीर्घदर्शिनः । आपूर्वतस्त्र विज्ञेयाः स
मावंतश्च नेहयाः । दुःखभाजोऽमस्त्विणः तनीहणाः साहसप्रियाः । कृत्साघ्नुषोदोषणाश्च विज्ञेया राजसा हयाः
कृत्साघ्नुषोदोषणाश्च विज्ञेया राजसा हयाः । नेद्रिणः स्वल्पशीलाश्च प्रज्ञाहीनास्तथैव च । दुर्मेधसोऽलसाश्चैव वि-
ज्ञेयास्तामसा हयाः इति । जयदत्तकृते अश्वायुर्वेदे अनेकर्दमे चैकनास्तिमुञ्च विशेषतः । ह्यणाय सात्विकाद्
स्यदेवसत्वः प्रकीर्तितः । पिशाचसत्वोऽमंतव्यो व्याप्येन तुरंगमः । देवसत्वः शुभो भर्तुः पैशाचश्चाशुभः स्मृतः
इति सत्वश्रेसंसा च कि स्वगणकृतसारसमसुचवर्णेऽका वर्णहतिगतिर्गदेवदेषिताऽस्फुरितासभा प्रभायाश्चततोज्ञा
निर्जानेः सत्वविशिष्यतइति । इति सत्वलक्षणं । अथानूकलक्षणं । गणहृतेऽश्वायुर्वेदे अनकूर्ध्वपवसामिश्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ मु॰
१६९
169

नूकंतच्चतुर्विधं गन्धसारेणरूपेणसत्वेनच शुभाशुभं तत्रसत्वगतंज्ञेयमनूकंसत्वलक्षणं त्रिविधस्यतस्यसत्वस्यशुभे
तरः कार्त्स्न्येनकीर्तिताः तेष्वनूकानिज्ञेयानिप्रशस्तानीतराणिच परदेहाकृतिनिभंरूपंकायेभावयेत् शुभाशुभ
त्वेनानूकंषड्जंस्वरलक्षणं गन्धानूकमितिज्ञेयंस्वरानूकंयथातया एवंचतुर्विधंतेनतदनूकंशुभनिर्मितं
सिंहादिनाविशेषेणस्वरानूकाःशुभावहाः तेवर्द्धयंतिनृपतेःकोष्ठागारंवसूनिच धान्यादिनाविशेषेणयेचये
चाप्यशुभलक्षणाः सिंहादिगतयोयेतुगन्धानूकेनतेशुभाः विपरीतानशस्यंतेनृपतेश्चानूकलक्षणमिति अ
नूकलक्षणं अथसारलक्षणं शालिहोत्रेयस्यत्वक्सारेहृसंपन्नास्निग्धरोमावलीतथाशोभनेगुह्यदेशेस्य शु
भावर्तश्चयोभवेत् मेधावीजवनोदग्रःशुक्रःप्राजनवेदिना त्वक्सारःसतुविज्ञेयःसुस्निग्धत्वक्हृदयोभवेत्
प्राजनेकशा मानोन्मानविभक्तांगःसर्वगात्रसमाहितः शोणःशोणाभवर्णोवारक्ताक्षश्चारुदर्शनः ते
जस्वीचमनस्वीचमेधास्मृतिगुणान्वितः रक्तसारोभवेत्सोश्वस्ताम्रमेढ्रांडतालुकः स्निग्धदंतास्युनयनःस्नि
ग्धवालतनूरुहः मृदुस्निग्धायतैःकेशैर्लम्बदीर्घशफस्तथा जिह्वाम्रदीयसाचैवपद्मपत्रनिभापुनः सुसं
हतैर्घनैर्मांसैश्लक्ष्णादितालुकः मांससारस्तुविज्ञेयोबलवान्रूपवांस्तथा रोमश्रवणपस्नीकाशोहृष्टजमेढ्र
घनस्तथा दृढांगसंधियुतोवारोमांसैर्घनैःसमेडरेः सुसंहतैर्विभक्तैश्चस्निग्धवर्णादितालुकः मेदःसारस्तु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गंतं विद्यात्तं स्निग्धवर्णिनं शुक्लावाद्दीर्वर्णीवां संहतीः श्रवनार्मसमाः दंतास्वर्यस्य दंष्ट्रा स्तत्वक्शफाश्च वि
शेषतः त्वचनानि विभक्तानि हृद्गान्यस्थीनि यस्यतु नवनाद्यनि भारेणासो स्थिसारस्तु रंगमः हृतमेंडनि
भाम मज्जास्थिरा उर्वी शुभमशुभा त्वक्स्निग्धानि च मांसानि सवाद्यामंतराणि च समभे च सिते नेत्रे स्निग्धरोम
त्वमेव च मज्जासारः स विज्ञेयो बलतेजोगुणान्वितः स्निग्धं च नमद्रुग्गंधि वदतीरोयमं च यत् सातस्त्रे
क्रयस्यतं सारंश्रुणकीर्त्यते मम सारवान् बलवान् दृमो हृष्टो दृढोजवान्वितः त्वाखरश्चोरुसर्वांगो मेघगं
भीरहेषितः त्ववहः सर्वगात्रेषु सुसंधिः सर्वकर्मकृत् त्वाशुसारो भवत्येषः सत्वसारमिमं श्रृणु शूरोः वि
षादी सम रेमेधा स्मृतिगुणान्वितः स्निग्धवर्णो यवादीपः स्मृतः अजनवेदिना प्राणामोत्सेधनादेन शुक्लः
सर्वगुणाचितः सत्वसारस्तु गोजवसारवचनोपमः सद्बुभूमिशुशाक्रस्य सर्वकर्मसुपूजितः कोपितोदर्पि
तो वापि न कुप्यति न हृष्यति एवं साराः समाख्याताः श्रुणु तेषां गुणानिमान् सद्गुणाः माज्ञनस्तत्त्वस्यानुका
रोजवान्वितः रक्तसारस्तु तेजस्वी मनस्वी बलवांस्तथा मांससारस्तु बलवान् रूपवांश्च तुरंगमः स्यान्मेदसार
स्तु तेजस्वी मनस्वी बलवांस्तथा मांससारस्तु बलवान् रूपवांश्च तुरंगमः स्यान्मेदसारस्तु रंगो भारेषु निच पार
गः अस्थिसारस्तु बलवान् हर्षवान्सर्वकृत्तथा मज्जासारस्तु विज्ञेयो बलतेजोजवान्वितः शुक्रसारस्तु भगवा॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्यात्स्थिरात्माचक्रमनः भवति स्वाप्नसारो स्थोजितनिद्रो जितश्रमः स्थिरात्मा च जितात्मा च सत्वसारस्तु सर्वकृ
दिति इति सारलक्षणं अथ प्रकृतिलक्षणं गणाकृते अश्वापुर्वेद श्रीमान् भद्रः सत्वभागापुष्मान्नात्विकोवा
जी रूक्षाग्रपः सतीक्ष्णामत्सरिणो राजसाहृयात्तेयाः दुर्मेधसो लसायेक्षयालितामसाः शोकाः अलसा मंदाः
ल·प्र· स्त्रियपवग्रोमतनुः सत्वसंचारः स्थिरहः शूरः नत्रासीनविषादी सत्व हिमानेष भद्रो मृः नतुकुष्टिकोनरोमा
९· न्वकृशीच्छ्रोत्याथीवशीघ्रवेगीच अलोनिरीक्षतेयः परिनसीक्षणोभवेन्सो मृः अत्रासितेविमूढस्थूलत्वक्
170 वालकुष्टिकं चैव दीनंमडअयाणामेदंतरंगं विजानीयादिति इति प्रकृतिलक्षणं अथांगमानलक्षणं कि
ष्कणाकृतसारसमुच्चये षष्ठ्याधिकशतमाङ्गुलीनीद्रुलायतिमानमथांगुलमानेः उच्छ्रायमेकशतं परिणाह
सप्तमवाजि - तस्य द्विमेयं एकंशतं विंशतिपुक्रमेवमायाममस्त्वेषुकनीयसेष्ठ उच्छ्रायनाहेपुनरंगुलानां
मशीतिरेवंकथितं मुनीद्रैरिति नकुलकृतेअश्वपणोस्य सप्तविंशत्प्रमाणेन सुखमध्यस्यशास्यते अंगुला
नामिति शेषः कर्णोषडंगुलो प्रोक्तो तालुकं च चतुरंगुले चत्वारिंशच्च समायाम स्कंधस्य परिकीर्तितः षट्त्रिंश
च्च तु विंशत्सप्तविंशत्तथा कटिः अतिरुक्तं तथा त्रिंशं पृष्ठं हस्तद्वयायतं लिंगंहस्तप्रमाणं तु नयांडेचवृ
विंशाद्दयं षोडशांगुले कटिकर्णांतरं प्रोक्तं चत्वारिंशत्प्रमाणतः मणिबंधद्वयं चैव वृत्ताद्वनरंगुलाः अ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रीतं यत्नतउन्नेथादेर्घ्यं वहाधिकं शतमिति इत्यंगमानलक्षणं अथ प्रत्यवयवलक्षणं शालिहोत्रे नवलक्ष
णमात्यामिथस्त्रांगानां पृथक् पृथक् आस्यतु संहतं श्रेष्ठं समदन्तं सगंधि चाननदास्यं शस्यते यत्र लाला
यैवेवपाटिते दशनास्तु समा हृता: परिपूर्णा घना: स्थिरा: अविकारा नविरला: स्निग्धाग्र्याभ्यंतरोन्नता:
श्वेता वामघ्रुवर्णा वा न रामास्मिन् पूजिता: दंष्ट्रा दंतसवर्णा स्यात्तीक्ष्णाग्रा आभिपूजिता: चतुरस्रा ह्रष्टै:
स्निग्धा: सूक्ष्मा: समाहिता: जिह्वा नन्नीन चोद्वद्धा सम्नदीर्घा समाहिता मृदु: सूक्ष्मा चरक्ता वा स्पष्टा जिह्वेव प्र
शस्यते सूनाचपुरकोपविनाम्बलगारक्ता समाहिता स्थिरा निरूपदंत्या च स्निग्धवर्णा च पूजिता गंभीरं ता
यतं रक्तं न तुले लेखं समं मृदु स्पष्टानि निरुपदं यथ च स्पूजितं तालु वाजिनां ओष्ठौ सूक्ष्मत्वचौ न तु वलिनौ मृदुकौ पी
नसंस्थितौ न तु लंबौ न चोद्बद्धौ हरादांष्ट्राच्छादनौ शुभौ चतुरस्रं समं वृत्तं प्रधानं शुभमिष्यते ऊर्ध्वौ कुसौ महांतौ च स
वृत्तौ मृदुकौ समौ हनौ स्पष्टौ च विज्ञेयौ प्रशस्तौ नासिकापुटौ ऋजु: समाहित: स्निग्धो नासावंशो घनस्तु य:
प्रोच्य: समो मृदुर्दीर्घतनुः स्पष्टा: समाहित: नतु मध्यान्नतश्चैव स स्निग्ध प्रशस्यते आपनश्च विशालश्चा
प्रोथस्तु पूजित: समे समाहिते चैव निर्मांसे ... चने स्निग्धे तु महती श्वेते न तु रूक्ष विवर्जिते अनुपूर्वायतौ
गंडौ नि:छिद्रौ नोत्वणौ शुभौ मध्ये हि वलु निर्मांसा घोणाभवति पूजिता घोणांतरे प्रशस्येते अनुपूर्वायते

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चेने मग्नमांसशिरास्नायुस्तस्युपातः शुभो मतः नेत्रे तु महतीयुक्ते विशाले मधुसन्निभे स्निग्धे मणिसवर्णाभे हरि-
णसदृशे स्थिरे मल्लिकाभे मयूरोष्ट्रकलविंकाहसन्निभे क्रौंचतित्तिरकृष्णाभे वारणाहिनिभे तथा कुरंगहंस
नेत्राभे टिट्टिभादिनिभे तथा दीर्घा तु वदपतेच मशशस्तेरवलोचने अस्थूलास्त्विकुटानि शुभान्यविषमाणि
च परिमंडलस्निग्धमंसोमग्नस्नायुकतोस्तुभो मग्नमांसशिरास्नायुः शंखो शस्तोहि वाजिनां ललाटं कापनोन्ना-
ल·ग्र· ते निर्मांसं स्थूलं समं अनूर्ध्वायतं चैव निर्वलीकं च भूषणं आयते तु हनू चक्रे दृढे चैव घने स्थिरे शुक्रा तु दृ
१२१ के पचिते स्निग्धमांसास्थिसंधिनी स्थिरं निरुपद्रवं च सर्वतश्च समाहितं अरोमशौ च विस्तीर्णौ चिबुके तु रागस
171 तु अन्त्रास्य सदृशं चैव चिबुकं तु प्रशस्यते इसौ वर्तनु हनौ च कर्णौ शिष्टुनि भोसमौ अरोमशौ च वृत्तिनौ·
नीरुगागौ वाभिसजितो समं च पृथुलं चैव समाहितम पिंडितं मस्तकं चोन्नतं किंचिदृश्यते सर्वताजिनां स
ख्यातपांडुभिः केशैर्विशदैर्मंडभिस्तथा हृतदीर्घैस्तनुस्निग्धैः हृयेन स्वभिसृजितः मंडकास्ते स्निग्धा वालाः
सुपूजिताः स्तनास्निग्धा न जटिलास्तेकजाता नतथैव च केशपंक्तिः शुभा अस्यन रूक्षा नापि चोत्थिता तनुम
डचने स्सलांगरथमूलेन थैकजे अविवर्णाश्च स्निग्धं च रोम वास्य सम्पूजितं शिरोग्रीवांतरे स्निग्धे स्म दोषा हृते
समाहितौ नोल्वणौ हितया चैव विहृवाट्सयपूजितौ सवहोनापदरायस्मन तथा च विमलः शुभः अन्नहन्तस-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मत्स्येवगलः समशिरस्तथा कंठोहनुः समः स्निग्धः पूजितस्त्वतरोहृदयः ग्रीवाचैवहिस्तस्निग्धाहनुसंधीस
माहिता ऽस्त्रेहेहृद्वाचऽहृंमांसयाशिरसिचोपनतानिगालेचापिनिर्मांसाम्रुहीसंकुचतीभृशं स्निग्धमांसासव
हाचतनगस्तुप्रशस्यते कुथत्प्रतिसंहतः स्निग्धमांसः ऽश्रुस्तथा वक्त्रमांसस्तुसंस्निग्धः स्थिरमांसस्त्वथस्तनि-
नः अंसौतस्थूलौपीनौस्निग्धसंधीसमौस्थिरौ स्तवद्धपीनफलकौऽग्रौवद्धौसुपूजितौ ऽरस्त्वव धूलोनानम
ति शृंगीमहास्थिरौ हृतेचनतपीनेचस्निग्धमांसेचपूजिते बाहुदीर्घौचपीनौचयनौहृतौतथासमौ विमुक्तौ
चानुपूर्वौचस्निग्धसंधीचपूजितौ जानुनीचसमेवृत्तेनिर्मांसेसुस्थितेचते समाहितेप्रतिष्ठेतेसमेस्निग्धेच
पूजिते जंघेहृतेचदीर्घेचनिर्मांसेसन्नकेघने मग्नस्नायुशिरःस्निग्धेविमुक्तेचाभिपूजिते ऽर्वौमहद्रुप्रति
स्तब्धौवृत्तौहृद्वौसुसंस्थितौ अस्थूलाःसुसंधिकाप्रशस्तालघुस्पृश्य दीर्घिकातद्वाप्रतिष्ठिताकलास्नि-
ग्धाचपूजिता कर्णिकातुसमावृत्ताह्रस्वास्निग्धासमाहिता ऽच्छिन्नमध्योन्नताचैवप्रतिष्ठिताशिरास्तथा खुरा
स्तवध्रुलास्तंगाह्रस्वास्फटायताः समवृत्तमतस्निग्धवराः खुरास्तेचप्रशस्यात्तथा अवलीकाः समास्निग्धातत्वे
डाः स्फुरितास्थिराः एकवर्णाः सितास्रक्ताः कृष्णावाप्यभिपूजिताः तलमध्येतुगंभीराः पिलानलनिभाः खु
रैः दीर्घिकाभिः सुजाताभिः समाभिस्तुसमन्विताः निमग्नकूर्मंकूर्मोविज्ञेयाः खुरास्तेच कठिनाश्चैक

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल-प्र- वर्णास्त्ववाकायः सन्निभाघनाः समाः स्निग्धाः ह्यज्ञातास्थिपादरोगैर्विवर्जिताः स्थिरा निरुपद्रवास्त्विषवर्णास्त
१२२ पूजिताः परिशुष्कौ समं पीनं ककुदं समभिष्यते आपतं स्थूलश्लिष्टं च पूजितं दृढमस्त्रस्तविनतमीषद्वंशस
172 मन्नतं निचितं च प्रशस्तं स्यान्नितम्बेतरं दृढं दीर्घं च पार्श्वे निश्छिद्रे प्रतिष्ठिते स्थिरे समे हृदेस्मदंगवक्षोव
क्लिष्टमांसेन तु पूजिते उदरं यत्तु मृन्दमुग्रस्तोपचितं यथा अच्छिद्रं दृढमक्लिष्टाल्पं समकुक्षि वह पूजितं ज।
घनं च महाहृतं च नरं तं पृथुलकं संहतं च समं छिद्रं उद्वेवं दं च पूजिते अच्छिद्रकक्षिणी चापि समे स्यात्स्व
जिते दंष्ट्रौ न लम्बौ नच्छिद्रौ समा वर्णाभिपूजितौ पृष्ठेन स्त्रं तृतं च वद्धमध्ये: समाहितं हनुर्वर्णिके चैव।
दीर्घं वालं च पूजितं समाहितं स्वप्रवोद्दं मण्डवालं तु पूजितं मूले निमग्ना दीर्घा च तन्वी दृढानाव वर्णिका अक्ष
त्वपायुर्गभीरो महांश्च संवृतः शुभः स्वश्लिष्टो निर्वलीकस्तु जगन्यभिपूजितः स्फिक्पिण्डौ दृढौ घनौ चैव समौ।
वृत्तौ समाहितौ अपिण्डितौ न विद्धिमांसेहनौ वाभिपूजितौ अक्षः समाहितास्त्वणसमादीर्घौ च स्यौवनौ नपिं
डितं न विह्लमंडवोर्ध्वं घनं रं शुभं शुभांडकोषं संश्लिष्टं न तु मध्यं च पूजितं वृषणौ न समौ स्कंधो वृत्तौ लिंगौ स
मादितौ अरोमशौ नवलिनौ सहितौ चाभिपूजितौ सहितौ परस्परमंलग्नौ समाहितः स्वजानस्त्वनलेवो न च।
विस्तृतः मध्यकोशः शुभोऽस्वस्पष्टजः स्वश्लिष्टमहनः मेढ्रं स्वमण्डस्थूलं हृजं स्महत्तां समं स्थिरं महाप्तवं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चैकवर्णा सिंहतं चाभिहूजितं नाभीहृत्ता शुभभ्रित्रियाउत्रिचाचैव हूजिता वटवापांगवेशिष्यस्रांवेगेशुचि
केन्नयत्न मध्नी हृष्वीचनांचोष्टीसंचिता संहृताघना नयाशुभाननेत्रेयायोनिदोषैर्विवर्जिता स्निग्धमांस
शिराबाहुपाणिपादुर्भिर्गसमत्रनौ घनौचजंघौ संजातौ चवहावसाक्ष्महूजितौ घनः संजातौ विपुलौ नलेवौ
पः प्रशस्तेन श्रयः अथाभागः वहयोरेव घनाः स्थिराः सुमाहृताः सतीरा स्वसुभासनाः श्रजनीत समेह
नैप्रनिष्टगीथ्य सविधिनी श्रनुष्ठैव वह्न्ये तेस्थूलेवाप्यायते शुभे जंघाययवयवाश्वे वर्हवस्रुका विशेषतः
नसेवायरवायां कायस्य वोद्व्या सैर्गुणान्विताः ननिम्नानोल्वणाः स्निग्धाः संधयोसाम्प्रहूजिताः सव
ह्रानि विभक्तानि विभक्तानि नोल्वणानि समानि च प्रशस्तेते गमगानि सु स्निग्धानि चलानि च यत्किंचित्तु भ
वेदंगं गुणैरेतैर्विवर्जितं दुर्जातं विकृतं हीनं अधिकं वा न तत् शुभं यथोक्तगुणयुक्तांगा विभक्तांगाः सुसं
हताः सुसंहताः देशोपचितमांसांगा मानोन्मानसमान्विताः कान्ताः सुरूपाः सुभगा मनोनयननंदनाः शु
भवर्णा श्रविद्धिमाः सवश्या स्वाहदर्शनाः समुन्नतशिरः स्कंधा मद्यवद्धिन्नशिरोधराः महाबलो ललाटाश्च
महानयनलोचनाः हस्वश्रवणा मुकाश्च तन्वायत मुखास्तथा नतनखरोमवालाश्च सुकेशा स्कंधवाहना
मृदुचित्तसमास्थूलाः स्निग्धवेशाः सुकुन्तयः सुसंस्थाना भवंत्येते सर्वदोषविवर्जिताः पनैर्गुणैर्विप

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घोणौ द्वौ संस्थानान्निर्दिशेत दीर्घायुत्वं प्रशस्यते पार्श्वे ग्रीवामुखं विदुः गाहनि क्राचनालस्कंधं चा बाहोरस्य
सत्त प्रोथकर्णौ च पृष्ठं च हृदयं गोकुक्षिकाः खुराः गुदामेढ्रं च रुहस्वानि पुच्छं नेत्राणि हि स्थितिः पायुजंघादि भागाये
जानुनी खुरकर्णिका वर्णिकोत्पलं चदंष्ट्रा च वंशागं हनुमिष्यते ललाटमासनं नेत्रे स्कंधौ वक्षस्तथा कटिः उदरं च
ल.प्र. नितंबानि प्रशस्यंते पृष्ठानि जिह्वा प्रोथोष्ठः स्कंध च वालरोमाणि केसरं स्तनाचेत्यपृष्ठं प्रशस्यंते तनूनि च मह्
१७३ नि च दंता नेत्रे च वर्णश्च खुरा स्नायवस्वरस्तथा स्निग्धामेतानि प्रशस्यंते सदा पंचैव वाजिनो नासापुटे पायुपृष्ठकोश
173 स्यंते परिमंडलाः नीतिश्रेष्ठानि नीलाश्रेष्ठानि ललाटं दंतवक्त्रिरः शिरासंजघनं वक्षो नेत्रे नासापुटे तथा षडे
तानि तुरंगाणां शुभानि समहांति च सक्थिनी च हनू केशः ह्निनयं शुभमायते घोणा चाटेललाटं च जानुकूर्चौ
च पूजितौ निर्मांसाश्च प्रशस्यंते द्विजाः खुरास्तथोन्नताः यदर्थं प्रशस्यंते तेन फलं संभवस्यते अष्टदीर्घो भवेत्
श्रेष्ठः सदा भवति नीरोगः अरोगप्रकृतिश्चाष्टह्रस्वो भवति निश्चलः आयुष्मानष्टतनुर्भवेत् एवमष्टमहाउच्छ्रायि ह्रस्वस्तनेनस्य ष्ट
तथा समष्टशुवर्ती पंचस्निग्धस्तदाश्वस्तु नितीलाश्वापि वीर्यवान् सुविनीतश्च मेधावी षट्तिमांसस्त्रिमंडलः
भवेच्च पंच निर्मांसो भारे धनि च पारगः समहत्स्वनसंपन्नः शीलवांस्तु तुरंगमः शरीरे पूजितं यस्य रूपलक्षणाचे
ष्टितैः तस्य सत्त्वमपि श्रेष्ठं विपरीते विपर्ययः शरीरसत्वमिति संस्थिते अतः सम्यग्वक्ष्ये विधावर्त्तसंते सत्वजा गुणाः
निवर्णदंताः कलास्तथा खुराश्चनालः पायुश्चागंभीरे पूजितं त्रयमिष्टं शिश्नमासं च पायुश्च शीर्षस्तनान्नानि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

महाबुद्धिरसंमोहः शौर्यं विचेष्टितैः औदार्यं च तथैवं च कर्मस्वभिरतिः सदा सौमनस्यमसंतापः शीलवृद्धिः स्मृति
धृतिः स्वशुश्रूषामावमानं च ग्रहणं धारणं तथा आत्मनोऽध्यवसायश्च सर्वकर्मसु नित्यदा इति पत्तिरितित्तेयानांस
त्वजा गुणाः तीक्ष्णता नाशोऽनाशो च दृढता ध्यवसायता अविषाद इति त्रेयाह्यानां सत्वजा गुणाः सत्वस्य तापना
दैवं विधास्यात शुभाशुभा दृष्ट्वा कदृष्टं जानीयात् संस्थानेन वलेन च एवं विध शरीरा ये मानोन्मानसमाहिताः
यशोऽर्थकलत्रनानां स्वामिनस्ते विवर्धनाः विपरीतगुणास्त्वन्ये भर्तुः सर्वार्थहारकाः इति इतिप्रसंगलक्षणं अ
थपुष्पलक्षणं शालिहोत्रे स्वस्थतः अतःसंपन्नं शालिहोत्रमपृच्छत बहुवर्णानि पुष्पाणि पश्यामो ह्याचार्य
वाजिषु तेषां धन्यमधन्यं च पुष्पमिच्छामि वेदितुं किं वाचार्य शरीरस्थं पुष्पमित्यभिधीयते एवं पृष्टो महाचार्यः
शालिहोत्रोऽभ्यभाषत विवर्णानि विंदवो नूनं ये भवंति शरीरजाः अव्यक्तरूपाः स्थानेष्वनेष्वानापुष्पसंज्ञिताः
वर्णे सवर्णे पुष्पं तु पुष्पं नाडुपलक्षयेत् स्नेहाद्धैवात्मसादाश्च रोमसंहननेषु चाविशेषेना निपुष्पाणि स्वरेषु पि
तथैव च प्रसादोऽतिसवछता रोमसंहननेषु रोमसंज्ञातेषु धन्याधन्यागमं कुर्युः पुत्रोत्पत्तिं च स्वामिनः धन्याः व
ह्माणप्रदेशविशेषविद्यमानपुष्पाः अधन्यास्ते भर्तुर्धनायागमं कुर्युः तानेवाहास्वपानेत्वन्नपानायप्रोथेशत्रुव
यायच ललाटे धनलाभाय भ्रुवोराज्यविहृदये सृक्किण्योश्चिबुके चैव वित्तेयस्त्वन्नपानदः भर्तुः शुभाधिकोऽसौ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वधनयान्मलावहः देहेविवर्द्धनेनस्य विपिलाभश्च हृदयेते यशास्त्रानियथोक्तानिनिंदितानिपथ्याश्रुणवोणाश्च
येशास्त्रमस्त्सुर्गरिपुत्रवधः स्तनः गलमध्येत्वपानस्यग्राथनेशोकवधोः ह्लयं उपसर्गोऽस्यपानस्यैकटवायगनेवधः मो
जनाच्छादनेवित्तंस्याद्विगालेनपुष्पिते सर्वेककर्णोस्वनोन्यनिर्मित्रवृद्धिस्तदहिणे वामकोऽशोहस्कंधे पुष्पिते·
स्व॰ १२५ 125 नृपनागमः टागानुपूर्वोस्थलमनेकर्णोपूर्णं नयस्यत श्रेमयोः पुत्रलाभायनथाण्यामत्ववृद्धये ज्ञात्वोस्लकुलचा
नायवाह्नोः शत्रुवधायच कृच्छिकलापदोमस्तुमध्यग्रीवोष्टयोर्वधः स्कंधेयनागमं वियात्केशांतेमित्रवर्धनं र
भ्रयोः पुष्पिनेवाहेवित्तंभर्तुः प्रवर्तते हृक्षोकोवधयंवधश्च हृदयेपुष्पितेहृये वामेनपुष्पिते पार्श्वे स्त्रीलाभंस्वा
मिनोविदुः किरणवित्तलयं वियात्सौभाग्यमपिवोरसि दृष्टेस्थाने समृद्धिंचउदरेवृद्धयंतथा मुष्कयोः पुष्पितेवाहे
पुत्रोत्पत्तिं विनिर्दिशेत् नाभ्यांश्रेयत्वापिपीडांजघनेदारहर्षणं अपानेवालमूलेच सर्वद्रव्यविनाशने जंघयोः
पुष्पितेवंधनस्त्याचवालकूर्वयोः स्त्राभुदोषंविजानीयान्मूत्रकोशेन पुष्पिते स्फिक्देशेपुष्पितेवाहेतीव्रंभयंभ
येभवेत् नथैवकुलनाशः स्यात्रवेदनेनवाजिना सर्वांगपुष्पितोवाजीभर्तुः सर्वार्थसाधकः मित्रवृद्धिक
रोयस्मोपशोदःकुलवर्धनः कर्कश्वेतानियस्यानिसवर्णानितथापुनः पीतकेशश्चसंग्रामोवालार्कसदृशेपुच
हलेषु पृष्ठेवियात्नयात्नश्चापभयंपुपितीव्रंभयंवियाद्रलेषविषमेषुच उष्ठेषुपुष्पमस्वसश्स्ववर्णानवर्णाजे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राजायस्यस्वप्नेस्थानाद्राष्ट्रकोपश्चजायतेश्वेतैश्वेतानिवासांसिस्निग्धानिचसमानिच पुष्पाणिशस्तरूपाणिराज्य
लाभायनिर्दिशेत् सराजाराज्यमाप्नोतिपुत्रपौत्रैश्चवर्द्धते सत्वानांचप्रशस्तानामाप्लुयानारोणश्चच तथाध्वज
पताकानांवेदीशूयाकृतीनिच तथावर्जितवस्त्रकाणांतथाशंखोत्कृतीनिच पुष्पाणिशस्तरूपाणिवर्णाढ्याणि
तमानिच स्निग्धानिसमरूपाणिशस्त्राणिचवाजिनां तास्याङ्गधनलाभायप्रत्येपश्यतिमहीपते राज्यमाप्नो
यतेराज्ञःपुत्रपौत्रैश्चवर्द्धते श्रृगालश्वानकाकानामाकृतीनिचयानिच विविधानांचसत्वानामप्रशस्ताकृती-
निच विवर्णानिविकीर्णानिरूक्षाणिविषमाणिच दुःसंस्थितानियानिस्युस्तथापश्यान्नखानिच तानिराष्ट्र
विनाशायराज्यध्वंसकराणिच विनाशयतितद्रूपेतस्मानिकोशंबलंस्तुतान् यथात्रैवेषुदशधाविभक्तेलक्ष-
णेष्वपि एवंपुष्पेषुतत्फलंतत्त्वविद्यान्निमित्तजं तस्मान्निमित्तवज्ज्ञात्वामादेशश्चनिमित्तवत् एवमुक्तानि
पुष्पाणियथाप्रक्रमशेषतः इतिस्माहभगवान्शालिहोत्रोऽश्वशासनमिति तथा कुसुमभोगेयथाकुसुमंश्वेतं
वलक्षयेत् भातिपुष्पंतथामूर्त्तिंतुलवर्णोपिवाजिनि श्वेतमेवयदापुष्पंश्वेतस्यास्यसदाश्रपने सर्वेतोमतिर्जयश्चैव
यात्रासिद्धिकरस्तथा भवतीतिविशेषः स्वामीभवेतस्यभर्त्तापुत्रपौत्रैश्चवर्धते रक्तमेवयदापुष्पंरक्तस्यास्यसदा
श्रपने महीस्वामोमहीमुक्तेभर्त्ताचारोग्यमाप्नुयात् कृष्णमेवयदापुष्पंकृष्णस्यास्यसदाश्रपने तस्यभर्त्ताविवर्धतीव

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मायशीघ्रं विनश्यति श्वेतस्य तु यदा स्कंधे पुष्पमश्वस्य दृश्यते तेन तस्य भर्त्ता हि वेश्मे ह्येति ग्रं वध्येत शत्रुभिः श्वेतस्य तु यदाकु
ल्ले पुष्पमश्वस्य दृश्यते अचिराद्धर्म्ममाप्नोति भर्त्ता तु समरे गतः शोणस्य तु यदा श्वेतं पुष्पमश्वस्य दृश्यते कीर्त्तिभ-
तीस तु लभते समरे शत्रुवीहिनः कृष्णस्य च यदा स्कंधे पुष्पमश्वस्य दृश्यते तस्यापि समरे भर्त्ता लभते कीर्त्तिमुत्तमां
ल॰ अ॰ यानि सेपि शुदृश्यंते तेन तथा ममस्तु वाजिनां अत्युक्तानि पुष्पाणि निंदितानेव तानि निविति जयदत्तकृते तु विशेषः
१२५ स्कंधे पीतेन तथा कृष्णं सर्वत्र नेष्यते सर्वांगपुष्पितो वर्ष परिमाणेन संशयः इति शम्बुस्तु प्रसंगः इति पुष्पलक्षणं
175 अथ पुंड्रलक्षणं पुंड्रस्तिलकः शालिहोत्रे अथातो ऊर्ध्वस्तु वोथ लालाट श्वेतस्वेततरं तु यत् तं पुंड्रमिति विज्ञेयं त
स्य संस्थानतः फलमिति जयदत्तकृते अश्वायुर्वेदे अतऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि पुंड्राणां लक्षणं शुभे आवर्त्तवीर्य-
योर्हि दृष्टमुनिभिस्तार्थवेदिभिः शुक्तिशंखगदापद्मस्वस्तिकांकुशोपमः शिरोललाटवदनेषु पुंड्रो व्याप्यति
दृति सधनः पूजितो नित्यमश्वापि हि योऽश्वे भवेत् पर्वते ऽपताकाभा येव स्त्रग्दामसन्निभाः ते सर्वे पूजिताः
पुंड्रा धनधान्यफलप्रदाः इति पुंड्राः समाख्याताः सर्वशास्त्रानुसारतः अशुभांश्चैव वक्ष्यामि यथायोगं समास-
तः काककंककबंधादि शृगालोमार्जारसन्निभाः असिताः पीतकास्तकाः पुंड्रकानच पूजिताः तिर्यग्गता विचित्रा
श्चक्षुं खेलापाशशोभिताः शूलाधावामदेहस्थाः पुंड्रकानशुभाः स्मृताः जिह्मकृलानि रूक्षाणि भस्मवर्णानि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भानिच पुंड्रकानि विनाशाय भिन्नवर्णानि वाजिनः इति शालिहोत्रे यत्र स्तनपुंड्रं नृपते र्भूमिलाभाय निर्दिशेत्
स्कंधदेशे धनुर्वज्रे लांगले सदृशे गदा ध्वजः पताका शक्तिर्वा यस्य पुंड्रा कितं भवेत् सोऽश्वो राजेंद्रवाहः ।
स्याद्धितो यो विजयावहः नमाकृत्य नृपः श्रेष्ठः सर्ववैरिगणान् जयेत् यशः पुत्राश्च पौत्राश्च वित्तं वाप्यस्य व
र्धन इति इति पुंड्रलक्षणं अथ ललामलक्षणं शालिहोत्रे ललाटमध्ये यत्कुंतं तं ताराह्रूपमिवोत्थितं ल
लाममिति विज्ञेयं नक्षत्रैर्भाविद्बूवकं धन्याधन्यानि वक्ष्यामि ललामानि हृपेक्षिद्र यस्त्वेतस्य ललाटस्य श्वेतं पस्य
ललामकं पुंड्रवच्चापि विज्ञेयं ललामेष्वथ लक्षणं भ्रूमध्यस्थानसंस्थानादि शेषैस्तु शुभाशुभं प्रवक्ष्यामि लला
मेषु तन्मूलेषु यथाक्रमं वेद्यार्थचंद्राभं सूर्यभद्रासनं क्वचित् कर्मभाराकृतिं चापि ललामं यस्य वाजिनः
तस्य भर्त्ता ललमेद्राज्यं पुत्रपौत्रैश्च वर्द्धितो नेयावर्त्ताकृतिनिभं तथा ललामं तस्य भावत्स्यात् सौभाग्यवर्द्धनं ह
यस्य तस्य भर्त्ता तु प्रभूतं धनमाप्नुयात् यस्य मध्ये ललामोऽश्वो भर्त्तुर्मित्रप्रणाशनो भवेत् गजाश्ववालव्यजनभपद्म
तोमरदशाकृति ललामे यस्य वाहस्य सोऽश्वस्याप्यावरणोयतः चतुरंगसहः श्रीमान् पुत्रपौत्रविवर्द्धनः ललाट
मध्योपरियत्स्वदक्षिणभागिके ललामं तन्मशस्तं तु यात् सौभाग्यवर्द्धनं इस्तुकानि प्रशस्तानि स्मृणप धमानि
यानि तु ललामे चक्राकपदं तथा गोमेदकाकृति तस्य भर्त्ता दुःखी भूत्वा सहाश्वेन विपद्यते विच्छिन्नानि विव

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प्र·
१८६
176

णानि श्रद्धीनि च तनूनि च विमिश्राण्युपदग्धानि पानि डः संस्थितान्यपि अव्यक्तानि विवर्णानि परुषाणि पाविला
नि च तानि वित्तविनाशाय पललाशानि विनिर्दिशेत् इति ह स्माह भगवान् शालिहोत्रो ऽनुशासनमिति इति तिल
लामलक्षणं अथावर्त्तलक्षणं जयदत्तकृते अश्वायुर्वेदे अत: परं प्रवक्ष्यामि आवर्त्तानां विनिश्चयं शुभा
शुभविवेकाय यथाशास्त्रं व्यवस्थितं विंशतिस्तु शुभा: प्रोक्ता: षडेव स्यात् अशुभा: स्मृता: ललाटे प्रयाणं सा
तत्रावर्त्त: शुभावह: रुक्मिणीश्च तथा प्रोक्ता: सर्वकामफलप्रदा: अथ श्रेष्ठावथ चत्वारो वाजिनो यस्य रोम-
जा: द्वौ वा ललाटजौ यस्य स तु धन्यतम: स्मृत: आनुपूर्व्याव्यवस्थितास्त्रयो वोर्ध्वं ललाटजास्त्रय: निश्रेणि नाम
सा ख्याता भर्तु: सर्वार्थसाधिनी शिर: केशान्तयोर्मध्ये ध्रुवो नाम्ना विधीयते तत्रावर्त्त: स्थितो श्वस्य भर्त्तुर्जी
यविवर्द्धन: चंटावंधसमीपस्थो निगाल: कीर्त्तितो बुधै: तस्मिन्देवमणिन्नमिरोमज: शुभकृत्स्मृत: कर्ण
मूले तथा आवर्त्ता: पूजितानि तं विशेषेण तु मस्तके आवर्त्ता यस्य चत्वारो वाजिनो वक्षसि स्थिता: एकः स्क
न्धे भवेद्यस्य हंस धन्य: सर्वकामद: रथे चैव सदा भर्त्तु: शंसितार्थप्रदो मत: उपरं प्रोह्न बुद्धे वरोमज ख्याति-
पूजित: शंखचक्रगदापद्मशक्तिवज्रोपमाश्चापि विशेषेण शुभा: प्रोक्ता रोमजा: शुभदेशजा: अतऊर्ध्वप्र
वक्ष्यामि रोमजानशुभोदितान् भर्तु: क्लेशावहान् सर्वान्धनप्राणापहारकान् नासिकापुटयोर्मध्यप्रदेश:

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रोथश्चोच्यते तत्रावर्तो भर्तुर्विनाशाय रोमजोऽस्य प्रकीर्तितः ऊर्ध्वं च नासिकाच्छिद्रात्स्वामिनः क्लेशकारकः गंडजश्चै
व भर्तारं हन्त्यावर्तो ऽडुशसदः अश्रुपातः प्रदेशश्च सृक्वणोरपि तत्रावर्तो भवेद्दीनः स्वामिनः कुलनाशनः अपांगा
ङ्गुले चैव प्रदेशः शंखश्चोच्यते तस्मिन्भर्तुर्विनाशाय भवेदावर्तरोमजः भ्रुवोर्देशे समुद्भूत आवर्तो नैव पूजि
तः सुहृद्वियोगकृत्स्यादावर्तो रथ्याविषादकः सक्थ्रीवां शिरोविघातस्त्वावर्तस्तु भ्रमितः कर्णयोश्चापि संग्रामे स्वा
मिनं वाश्ववानयेत् चिबुकस्य समीपस्थो वामदक्षिणभागतः प्रदेशस्तु हनुर्नाम तत्रावर्तो हि दारुणः अधरोष्ठ
निगालस्य मध्ये वा गलश्चोच्यते तत्रावर्तः स्थितो भर्तुः संग्रामे जीवितान्तकृत् कूर्चादधो गलं चोर्ध्वं पार्श्वतश्च क-
लासतः तत्र भर्तुः शराघ्रातैर्जीवितान्तस्य रोमजः ककुदं वृषभस्येव स्याबकन्धपलस्थने वाजिनोऽपत्र तत्र
स्य आवर्तस्तु विनाशकृत् ककुदस्याग्रेभागसमीपे वक्त्र उच्यते भर्तुः संततसमेतस्य तस्मिन्नाशाय रोमजः का
कसेसतु यस्य स्यादावर्तोऽश्वस्य दारुणः रोगोद्भवः समं भर्तुर्ज्ञव्यादेः स विलप्यते क्रोडे चैव वासने वापि हृदये च
स्य वाजिनः आवर्तः स्वामिघाताय भवेत्पूर्वन संशयः पार्श्वयोरोमजो यस्य सचाशोत्पनिन्तपं सपत्नैर्वाश्च
भर्तारं नीहारं तु पश्चात्तु जं कूर्चस्याधः प्रदेशस्तु कटिश्चापरिकीर्तितः अथ अन्यस्तत्र वा हृज्जं च यो जानुनो
स्य यः नाभिजो मुष्कजश्चैव त्रिकजश्च विशेषतः पुच्छमूलगतश्चापि नैव धन्यः प्रकीर्तितः कटौ वापि स्थितो यस्या

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·अ·
१७७
177

त्तिरोमत्ताकृतिसंभवाः पादुत्रिवलिमध्यस्थानेवयमाः प्रकीर्तिताः स्फिजिजेब्जिरजेवैवपुस्यावर्त्तौद्विदारुणाः
ननावर्त्तस्थलेरोगोभर्त्तुःसर्वार्थनाशनः शतपादीतिविख्यातस्तथावैमुकुलोपरः आवर्त्तस्यैवसंचानः पादुका
चार्धपादुका शुक्तिश्चैवावलीढस्तथावर्त्तः कीर्त्तितोबुधा वाजिदेहगतः सम्यक्शुभाशुभनिवेदकः शतपादस
माकारः शतपादीप्रकीर्त्तितः जातीमुकुलसंकाशोमुकुलःसमुदाहृतः आवर्त्तोभ्रमितोवालैःसंचालेरोम
पुंजकः पादुकापादुकाकारस्तथावैवार्धपादुकः शुक्तिश्चशुक्तिसंस्थानोरोमभिर्युक्तलक्षणैः एतेषामवलीढ
स्तुअवलीढःप्रकीर्तितः वालैर्विशेषसंस्थानैर्निर्दिशेन्मतिमान्भिषक् शालिहोत्रमार्गानुसारेणयथाओक्तेनपोप
नैः एतेषामेवसर्वेषामावर्त्तानांविचक्षणैः रोमजेनिष्ठितासेत्तावाजिलक्षणवेदिभिः शुभाशुभोत्पत्तिस्थानेवै
कोनफलप्रदः एकेहेम्नादहेनाप्यंतेनदोषोनडुष्यति अथवावाजिनोमुख्यानवादिश्यणासिंधवः दन्तायालाःक्षयेत्रे
वडावर्त्तस्तकाकदी श्रीवृक्षोरोमजश्चैवरोवमानस्तथैवच अंगदीमेखलीनामराजरत्नप्रदासदा श्रीवृक्षादित
लक्षणमध्यवसाते मयानेमास्तंविद्यात्ललाटेवक्रनाशने उरसिचाश्विनौदेवौचंद्रसूर्योचमूर्धनि रंध्रेस्कंदविशाखौ
चउपरंध्रेहरिहरौ इत्येवंपूजितानायेनेदशावर्त्तास्तुवाजिनां अथैकेनविहीनायेभवेयुरशुभावहाःइति गणाहुते
अश्वायुर्वेदे आवर्त्तःशुक्तिसंचानमुकुलान्यवलीढके शतपादीपादुकार्धपादुकाचाष्टमीस्मृता आवर्त्ताःकृ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तयश्चैताश्चाष्टौ संपरिकीर्त्तिताः । रूपमासां विशेषेण पुनश्च कथयाम्यहं ॥ तत्र प्रधानो ललावर्त्तः शुक्तिस्थापितसु
भामता शतपादी पादुका च शुक्तिस्थापितद्वंद्वला पादुकार्धगला चैव शुकलेन हद्रुयाते विभागोऽग्रलमाव
र्त्तमानमेषामितिस्मृतं । तत्र प्रधानो ललावर्त्तः शुक्तिस्थापितसुभामता श्रीहल्लो वहसितिप्रोक्तो ललावर्त्तः पंचभि
र्भवेदिति । आवर्त्तौ मस्तकस्थौ सुश्रीवायस्य वाजिनः । स्यातां प्राप्नोति मिष्टमन्नं भर्ता पुत्रांश्च पौत्रांश्च । यस्याश्व
स्य भवेतां ललाटजौ द्वौ प्रदक्षिणावर्त्तौ तस्य स्वामी विजयी वज्रप्रजो जयति रिपुसैन्यं यस्यैतनाग्निनिभाः प्र
दक्षिणावेत्रयो ललाटस्थाः । तस्य स्वामी विजयी संतिष्ठति मूर्ध्नि शत्रूणां । निश्रेणीयस्य भवेत्त्रिभिरावर्त्तैर्ल
लाटमध्ये तु । राज्ञा तेनाश्वेन लभते विजयं धनं तथान्यं । सव्यावर्त्तैर्वाजी चतुर्भिर्लसत्स्थितैर्ललाटे तु । कुरुते ^
स्वामिनमचिरान्महीपतिं पुत्रवंतं च । आवर्त्तो मस्तकेलोवास्त्युवप्रदेशे प्रदक्षिणो यस्य । तस्य तुरंगस्य भर्त्ता सं ^
ग्रामे जयति रिपुसैन्यं । आवर्त्तो वृषभाख्यो ज्ञेयो ज्वरस्य कर्णमूलस्थः । नाम्ना स्वामी विजयी लभते^ लंकारनिक
रं स्वा आवर्त्तस्तु निगाले देवमणिः । सर्वकामदस्त्वामी सोरोष्णु हतकोशसंपत्सौख्यानि ददाति विजयं च । आव ^
र्त्तो हृन्मसुभानथिमकायेक क्रुज्वं सुक्ता । तत्रारूढो नृपतिर्जयति रणे शत्रुसैन्यानि । यस्योपरंध्रभागे हेमावर्त्तः
प्रजायते श्रीमान् तस्य स्वामी विजयी रणमूर्ध्नि भवति शत्रूणां । आवर्त्तः कंठस्थः शुक्तिवेरोचमानस्तुकः । प्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्तस्तेनाश्वेन तत्कोशो मित्राणि वर्द्धते रोचमानस्तु पूर्वार्द्धे निःश्रोणीशिरसि स्थितः पश्चार्द्धे मेखली सर्वान् शुभा
न् हन्ति रोमजः केशांतयोश्च शुक्ती द्वे तुरगस्य यस्य दृश्येते तस्य स्वामी विजयी वर्द्धते पुत्रपौत्रैश्च आवर्त्तौ वा
र्भस्याः चतस्रश्चापि दिक्षु यस्य चत्वारः कंठे च रोचमानः सोऽश्वः श्रीवत्सकी नाम तेनाजौ रिपुसैन्यं विजित्य
ल·प्र· निवर्त्तते राजा भानोऽन्यथान्त्वबलात् राष्ट्रं सोऽयं यशश्चैव वक्षसि यस्यावर्त्तौ च तारलस्य वाजिनः स्वामी श्रीमे
१२८ 128 निरणा निरणो विजयं विजित्वा निःकंटकं राज्यं शुक्रयोर्वक्षसि तिलौ यस्य सस्तु सर्वकामदः सोऽश्वः तेनाश्वो विजितारि
स्तस्यो विनिवर्त्तते राजा बाह्वोर्यस्यावर्त्तौ शुक्तीवासौ गदीहृयः शोकः शमोऽति तस्य भर्त्तार रत्नान्याभरणानि करा
श्च आवर्त्तौ स्कंधोपरि यस्य स्तो मूर्द्धि मेखलीनाम तेनैश्वर्यं भवति हि पुत्राः पौत्राश्च वर्द्धते एते शुभाः प्रशस्ताः से
मत्रिंशद्रोमजाः कथिता इति शालिहोत्रेपि आवर्त्तस्त्वथरोऽहस्थः स्वामिनो मातृघातकः स्वामिनः पितरं हन्या
त्स्थानोपरि दक्षिणः वामे भ्रातृवधं विद्या -- रमध्यसंस्थिते प्रोथावर्त्तौ प्रोथपतिभर्त्तारं सकुलं दहन् नासा
पुटस्था वावर्त्तौ भर्त्तुर्द्दिन विनाशकौ यस्यावर्त्तौ च दृश्येते गंडयोरुभयोः स्थितौ स्वामिनं मे ष्टपुत्रं वासत्वाद
न्ति तुरंगमः आवर्त्तौ वाश्रुपातस्थौ दृश्येते यस्य वाजिनः नित्याश्रुपतनं विद्यात्कुले यस्य स टशो हयः कूटयो
र्यस्य चावर्त्तौ दृश्येते व्यक्तरूपिणौ भर्त्तुः कुलेपानपतिपावद्गोत्रपरिग्रहं दृश्येते यस्य चावर्त्तौ भ्रुवोर्मध्यगतौ च

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भौ सहयोश्चक्रकरैर्नामसत्पातिमित्रविरोधकृत् शंखयोरुभयोर्यस्य हृष्टपेनेरोमजानुभौ कलंसभवत्वयेत्सर्वंभर्त्तु
र्धसनदोहदः मन्यायांदंतचक्रेचपोःस्कंधसंधिषु अवर्त्तायस्य हृष्टपेतेकत्ताववर्त्तितरोमजाः शरयानीभवेदर्त्तेः
स्कंधभागकलादिषु अग्रकर्णाश्रितोयस्य हृष्टपेतेरोमजानुभौ मंत्रविश्रावणाकृतेर्दीर्घैर्भर्त्तविषयते आवर्त्तौ
विंडमभिस्थोरुष्टपेतेयस्यवाजिनः नार्थसिद्धिकरोभर्त्तुर्मर्मावर्त्तोत्तुरंगमः यस्यावर्त्तःप्रहृष्टपेनगलमध्ये
प्रतिष्ठितः स्वामीनस्याप्यनेत्रस्थनानपानस्यभाजने यस्यावर्त्तौवृहस्थोत्तसहयोघातयेद्युधि स्वामिनंचैव
नेतारंनचकर्मसुसिध्यति यस्यावर्त्तस्तककुदेककुदीसःप्रकीर्त्तितः भर्त्तारंसान्वयंहन्याद्यथाभर्त्तःकलो
हहं वाहनानांविनाशायपराजयाशुभवधायच सर्वार्थनाशनेदोऽइंजानमात्रविवासयेत् नतंशालासुवध्नी
याद्दृष्टंवेयविगर्हितं अवतीर्यचसंग्रामंसजीवन्नाभिवर्त्तते हस्तस्पर्शनचद्वन्द्वभ्यौहरतःपरिवर्जयेन्नृदि
जेभ्योवाप्रदातव्यःपरराष्ट्रेप्रवोत्सृजेत् दृष्ट्वासूर्यनिरीक्षेनस्यष्टाविरायानवासरा प्रघोणावर्त्तरूपेणाश्रम
केतद्विवोस्थितः काकसावर्त्तिनोयस्यवायसैर्भक्ष्यतेपतिः नानासवैरनिहैश्चहदनसंस्पोऽणोहतः पार्श्व
योर्यस्यचावर्त्तौभर्त्तानस्यसवाधवः तयमायान्यकालेषुग्रीष्मकालेयथाजलं आसनावर्त्तिनोभर्त्तस्थलेन
वधमर्हति पृष्ठजावर्त्तिनोभर्त्ताग्राममध्येस्यवाजिनः अथहृषणाहृषार्थद्विमंशस्त्रेणवध्यते यस्यावर्त्तस्तु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रश्येनकोऽङ्गमध्ये प्रतिष्ठितः भर्त्तारं सपरीवारं रणे सोऽश्वस्तु घातयेत् संध्ये हि यस्य केसमाकुलः राजचौराग्निदं
ष्ट्रस्य कुले भर्त्तुर्विनाशयेत् संध्ये संग्रामे दंष्ट्रिव्याघ्रादिभिर्द्दंष्ट्रिभिः तत्र विद्धि महादोषं जान्वावर्त्तस्तुरंगमः सप
नयति भोगान्वस्त्रानश्ववत्तथाधिपं जंघयोरुभयोर्यस्य रश्येन रोमजावुभौ निगडैर्वध्यते तस्य भर्त्ता तु सहबांध
ल.प्र. वैः कक्षिकावर्त्तिनोऽश्वस्य भर्त्ता विध्येत संयुगे सततं वक्रुभिः क्लिष्टो व्यसनैरतिदारुणैः हृदयावर्त्तिनोऽश्वस्य हृ
१२५ क्षोकपरिपीडितः वधबंधपरिक्लिष्टः सान्वयस्तु विनश्यति भर्त्तैनिशोषः हयस्तु कक्षसंस्थितः संग्रामे वध्यते
179 परैः सहयो यस्य भर्त्तीस्य वल्लिमात्रा निवर्धते कक्षसंस्थितः कलावर्त्तः संग्राते संग्रामे एककक्षोत्सदोषस्तु गाहि
तश्चोभयोः स्मृतः उभयोः कक्षयोरावर्त्तैकः संस्पर्शिदोषः एकवालस्त्विति नाम्नामावर्त्तरूपेन तु रश्येन यस्य वाजि
नः भर्त्ता तस्य ससंतानो व्याधिभिः पीड्यते भृशं आवर्त्तौ मूत्रकोशस्थौ भर्त्तुर्दारिद्र्यकारणौ वक्षपजानवाप्नु
ष्वयस्यावर्त्तौ तु मुष्कजौ त्रिकावर्त्तिनमास्थाय संग्रामे योऽवजेन्नरः सपालस्त्यजति प्राणानसादीव ससहायवान्
आवर्त्तौ पुच्छमूलस्थौ रश्येन यस्य वाजिनः कलवान्नीभवमेवनात्र कार्या विचारणा पायुप्रदेशकक्षीवसीव
नीभागमाश्रितः कहिवापिकोऽभर्त्तुः कपित्वचस्तावहः स्फिक्पिंडयोरुपरिजो यस्यावर्त्तौ तु वाजिनः स
पिंडपातौ विज्ञेयौ भर्त्तुरश्वः कलनाशनः स्थूलावर्त्तौ च यो वाजी नित्यमश्वनियुज्यते शास्त्रवध्यो भवति च सहभर्त्रा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तुरंगमः जंघादिभिः सर्वमुक्तं व्याख्यातं तेष्वष्टनः फले स्तप्रशस्ता व्याख्याताः प्रशस्तानपरान् शृणु ललाटे
यस्यावर्तौ स्यातां समौ तौ प्रदक्षिणौ संग्रामे तेन जयति पुत्रपौत्रैश्च वर्धते प्रदक्षिणाः प्रमाणस्थाः त्रयो यस्य
ललाटजाः नैकाकृतिविशेषास्तं प्राग्निहोत्रनिभास्तया नैकाकृतिविशेषाः सदृशाकृतयः क्षत्रियस्याह
शीलब्राह्मणानां मूर्द्धनि यज्ञोऽश्वमेधसमाधत्ते विपुलान्भूरिदक्षिणान् ललाटे यस्य दृश्येत पंक्तिरूर्ध्वामितास
मा त्रिभिः प्रदक्षिणावर्तैर्नित्यःश्रेणीमभिसेविता तयात्व निःश्रेणिका यज्ञपेद्रानारिषु रणे नित्यं हि विजय
श्चैव लभ्यते चास्य वर्तते पुनर्यान्यसमद्विजैर्नाश्वेन समामृयान् ललाटे यस्यावर्तास्त्वतारः सुष्वन्तु दिशा
नाम सत्वाः समा व्यक्ताः शक्तः वंशे निर्मितं विदुः तेन राजा विजयते नित्यः सपत्नान्वृहस्पतिः रणे च विजयी नित्यं वसु
वान् पुत्रपौत्रवान् आवर्तौ मुकुलौ वापि स्त्रवे यस्य प्रदक्षिणाः यस्तेन याति संग्रामं जित्वा शत्रून्निवर्तते आवर्तौ
कर्णमूलस्थौ दृश्येते यस्य वाजिनः वृषभाविति तौ ज्ञेयौ भर्तुरिष्टौ सकामदौ अलंकारेश्च भर्तास्य वर्धते पुत्र
पौत्रवान् आवर्तस्तु निगालस्थो मुकुलः स प्रदक्षिणः सर्वदेवमणिर्नाम सर्वकामार्थसाधकः निहन्ति वा
शुभान्सर्वानावर्तान्पूर्वकायजान् नमाहनस्तु यः संपिलभते शास्त्रेन पदं कठे - याघता सुक्तिरावर्तौ वापियो
भवेत् सरोचमानो विज्ञेयो भर्तुर्मित्रविवर्धनः केशान्ते यस्य शुक्तिर्देहे हे प्राची नमायते क्षत्रियस्तेन जयति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल· १८० 180

पुत्रपौत्रैश्च वर्धते यस्यावर्तास्तटप्रपने वक्षस्थाः स्वस्थिताः स्वयः प्रदक्षिणाव्यक्तरूपाः शुक्तयोर्द्धगरोमजाः भर्त्तारम
रणे घ्नाकृतञ्जित्वा सस्यो निवर्तते गङ्गेयो यस्यावर्तौ शुक्तीस्थानं हयस्य तु सोंगदीनामतत्र योगो भर्तारो भरणाश्रदः
रश्मयोरुपरिष्टात्तु यस्यावर्तौ प्रदक्षिणौ समेखली वर्धयते कोष्ठागारं वसूनि च वित्तं चाप्याययते तस्य पुत्रपौत्रै
श्च वर्धते श्रीवृक्षः स्वस्तिकः पद्मं वर्द्धमानं गदाङ्किताः येष्यावर्तौ हलं चक्रं शंखो वज्रमसिर्धनुः मत्स्यश्च ध्वजश्चैव चंद्रो
वा पताका मुशलं तथा एवमाद्याः शुभावर्ताः दृश्यन्ते यस्य वाजिनः वक्षसि स्फुलिंल्लाटे वा राज्ञो राज्यमवाप्नु·
येत् इत्यावर्ताः प्रशस्ताः स्वर्व्याख्यातानि हितानि श्रेयेरति इत्यावर्तलक्षणं अथ महादोषलक्षणं विस्तुधर्मोत्त
रे शुक्र उवाच अश्वानामृषिभिः प्रोक्ता महादोषा मनुजोत्तम पैरन्विताः परित्याज्यास्तान्मे निगदतः शृणु हीनदन्तो
धिदन्तश्च करालीकृष्णतालुकः कृष्णजिह्वश्च यमजो जातमुष्कश्च यस्तथा द्विशफश्च तथा शृंगी त्रिवर्णो व्याघ्रव
र्णकः खरवर्णो भस्मवर्णो जातवर्णाश्च काकुदी श्वित्रीवकाकसादी च खरसारस्तथैव च वानरादः कृष्णसटः कृ
ष्णसटः कृष्णमुष्कस्तथैव च कृष्णप्रोथश्च कस्याय यश्च प्रतित्तिरसन्निभः विषमश्वेतपादस्तु ध्रुवावर्तविवर्जितः अ
शुभावर्तसंयुक्तो वर्जनीयस्तुरंगमः ध्रुवावर्तलक्षणमुक्तं तत्रैव रंध्रोपरंध्रयोर्द्वौ द्वौ द्वौ मस्तकवक्षसोः प्र
याने च ललाटे च ध्रुवावर्ता दश स्मृताः एकोऽपि न भवेद्यस्य ध्रुवावर्तस्तु वाजिनः नतेशसंनियर्मत्तास्तस्मात्तं प

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विवर्जयेदिति विशेषस्तत्र पदन्तकृते अश्वापूर्वेदशकः आवर्त्तो यस्य एककद्देककदीसउदाहृतः करालाश्चाथरादंता
जायते यस्य चोत्तरे सकरालीत्युक्तो भर्तुः पुत्रादिभक्षकः चतुर्भिः पंचभिश्चैव हीनदंतः प्रकीर्त्तित सप्तभि·
श्चाष्टभिर्दन्तैर्जातस्त्राधिकदंतकः अंगुष्ठपर्वसंकाशं छागशृंगोपमं तथा जंबूवदरूपं च तथा चामलकोप
मं आम्रास्थिसदृशं चापि हरीतकीफलोपमं द्वयचर्मनिभं चापि वालसंस्थानमेव च कीलकर्णीतरेय·
स्य केशांतेवापि दृश्यते येरेषः सर्वपापानां वाहः शृंगीसकीर्त्तितः एवंविधेन संगेन शृंगीराष्ट्रं नवासयेत् नाभि
तिशेषः एकतो लंबमानेन मुष्केनैकांडसंज्ञकाः अस्यंतोनासमाभ्यांतत्ताभ्यां जातांडउच्यते स्कंधेवक्तासिवाक्को·
श्वस्य देशे तथैव च अन्यवर्णो भवेद्वाजी कंचुकी स प्रकीर्त्तितः यस्यान्यवर्णोरेखा च पादे कृष्णैव वाजिनः मार्जा
रपादः प्रोक्तोसावधमः कुलनाशनः द्विरेखरीगोखुराकारे रेखैर्तैर्यो विचक्षणैः अथवा त्रिवलीयुक्तो निम्नमध्ये·
श्च निर्दिशेत् खुरैस्तत्रुंघगः द्वृषणाभ्यां सत्तनाभ्यां जातस्त्वभिधीयते त्रिभिः कर्णौशिकर्णौ च यात्राभोमात्रच
मिकः एकेनांगेन हीनेन न निम्नेन च विशेषतः यमजं वाजिनं विद्याद्वामनं वामनाकृतिं वर्णादेकेन पादेन अन्य
वर्णेन यो हयः मुशलीति स विज्ञेयो नो भर्तुः कुलविनाशनः अथ चेद्वृजनवापान्तविरोधमपि गच्छति निरूढह
षणा श्वेतस्तु सर्वव्यापिकरः सदा विरोधं येन वै यानि दृष्ट्वा स्वान्मुष्कवर्जितः रेदहृदिः सविज्ञेयो नो भर्तुः कुल

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विनाशनः द्विवर्षं तु समारभ्य यावत्स्यात्संचवार्षिकः दंतानां सृक्कयोश्चैव संभवो वाजिनः स्मृतः अतः परं न जायंते न
क्षौरं दंतास्य वाजिनां अप्रभंगफले वा च मभावेन न तनस्तयोः एते दोषान्विता वाहास्त्याज्या वै भूतिमिच्छता धनप्राण
हरा ह्येते नैव धुर्विग्रहकारकाः स्वरथस्य गतेराज्ञः कंकदंसैव दूषणात् इतः केचित्किभिः कर्णाभ्यां पिकदंतैश्च पांसवाः
ल॰प्र॰ सर्वेणगत्तनदोषेण मुत्तलनीसंगरेलयं जान्वावर्तीयदोषेण पंचत्वं रावणो गतः इति इति महादोषलक्षणं अथ
१८१ राजयोग्याश्वलक्षणं शालिहोत्रे शालिहोत्रमृषिश्रेष्ठं कौरव्यः परिपृच्छति अश्वं कीदृशमारुह्य राजा विजयते
181 मही हुतिहितपो वा कोश्वे यो राज्ञो राष्ट्रमेव वा कथं वलं कोशसत्याद्धं वर्धते द्युसते पिवा कीदृग्लक्षणयुक्तेन मित्र
प्रकृतिरंजनं एवं पृष्टस्तु पुत्रेण कौरव्यं मुनिरभाषत श्वेतपाटलगौरा ये ये च श्वेतानुवर्णिनः एते यदि भवंत्य
श्वा कालालफलतालवः कालैः खुरैः कालवाला यस्यातिवेश्मनि एतेश्वराष्ट्रं कोशश्च गोष्ठागारे च वर्द्धय
ते मित्राणि चापरं सैन्ति विजं वा स्वविनश्यति यो सेतैर्यातिसंग्रामस्खलितमात्रनिवर्त्तते कालः कपिलकेशांतो
हयः कपिलवालधिः जलादनर्थसंपन्नकलमुखादये कथं शिरोवालस्य केशाश्च यायं तर्द्दयपचमिवत् २
हमयियिर्पतस्य यस्यातिष्ठतिवेश्मनि कपालदग्धवर्णाभो निष्प्रभश्चत्वरंगमः उलूकपिंगलो रोझो यस्य तिष्ठ
निवेश्मनि वर्तिकामर्थदीर्घाव सोन्मादयनितन्कले स्त्यप्रशस्ता व्याख्याताः प्रशस्तानपरान्शृणु अर्क

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पत्रसवर्णास्यदंनाम्नविरलाःसमाः लालारसमाजिह्वास्तेनोचोनरनालच मणिवैडूर्यवर्णोचनेत्रेयस्यनखो·
लयाः सशुक्लवाहनोवाहोविषयेयस्यतिष्ठति विषयोदेशाःकोप्येपृथिवीतस्यचतुरंतासमागरा आज्ञाविनि
र्जितातिष्ठन् यस्याश्वस्ताहृशोभवेत नशास्त्रमग्निडिंभिरंरोगवंधमरीभयं भवेत्तस्मिन्जनपदेसहृयोयत्रगच्छ
ति संग्रामेविजयीचैवसर्वकामार्थदः सदा शुकपत्रसवर्णास्यपद्मरक्तेभवेच्छिराः स्निग्धसर्वसमंवाहिनाम
वर्णेनवाहनं तेनराष्ट्रंचकोशश्चकोष्टागारंचवर्धते मित्राणिवानुरज्यंतेशत्रुश्चैवापितिष्ठति गोरोमणि
निभश्चैनास्यस्ताश्वतालुकः वलेकोशौर्यमित्राणिप्रजाश्चैवतेनवर्धते यस्माद्देवब्रजेतेनसर्वोन्ताद्राशयेद्री
न् श्वेतोश्वस्तालुरक्तश्चमधालोलोहितैःसृटैः आवर्तैःसुहुंवाहंराजावेश्मनिवासयेत् तेनराष्ट्रंचकोशश्च
कोष्टागारंचवर्धते यजतेचाश्वमेधेनपृथिवींचानुशासति कुसुमेवमभोवाजीमेचकंडिभिनिस्वनः कुसुस
र्श्वेवोदरःसुभसवगातिष्ठरः एतेनाश्वश्चयातस्यचक्रेनप्रतिहन्यते शंखश्वेतोभवेद्वाजी शंखवर्णोवसमु
नः सशीलंदसवकुक्षेतास्यैथविनतोन्नतः तेनराष्ट्रंचकोशश्चकोष्टागारंचवर्धते मित्राश्चैवानुरज्यंतिशत्रुश्च
णवतिष्ठति यजतेचाश्वमेधेनपृथिवींचानुशासति अरिष्टवर्णोविनतस्ताम्रोष्ठस्तोश्वतालुकः पराभूताश्च
तिष्ठतिशत्रवःकामदोहितः शुक्लंपृथिवीमालांचडोवैलोगरा ध्वजःशंखःपताकावालनलाटेयस्यदृश्यते शुक्ल

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रेकुमलं सर्वमङ्गलानि कौरवनन्दन पार्थिवलक्षणं श्वेतपादश्च नरराः श्वेतजंघयोर्हयः आनंदं तं विजानीयाद्राष्ट्रसम
र्द्धन वर्द्धनं वायुदिवावृन्ने माघनेवायत्तु भवेत् वर्णास्तेन तेन कौरवनन्दन पार्थिवलक्षणं तेन मित्राणि रूमं तेनकोशागा
रं च वाजिनां संग्रामे विजयी चैव कामदस्तु रणोत्तमः एतद्विलक्षणं राज्ञायेश्ववर्णीषुलक्षयेत् तेषामालक्षणं ले
पशिरः स्नानानुलेपनं अन्नमालाग्रहणं थाश्वभोजनार्थं तथैवच देयं नित्यं सदाश्वेभ्यः कर्तव्याश्च प्रदक्षिणाः नर
ल·प्र· गाः पूजिताः सम्यक्पश्यन्ति हंतिवे प्रमति वर्द्धने पुत्रपौत्रैश्च मित्रैः शत्रून्जयत्यथ अगदस्य निष्ठानि तस्मैते पू
१२२ जितेसदा पूजयेत्तु रंगं तस्माद्यज्ञानि मित्रसुसदृतः देवसत्वाश्च वदवोयत्तु सत्वाश्चवाजिनः गंधर्वा रागसत्वाश्च
182 तस्मात्तान्पूजयेत्सदा धर्मार्थकामैर्नृपतिः पूजिताः पूजयंति नरं इति राजयोग्याश्चलक्षणं अथ रणाश्रम
येशुभाशुभसूचकलक्षणं नकुलकृते अश्वचिकित्सिते सदा सत्याभवे तेनेवाजिनो ये च भूतले जायंते निसंग
देशानेककर्कश्च भवन्ति प्रवृत्ताः कथयंत्याशु शुभं वायदि वाशुभं स्वामिनोहंगजेस्त्रिपूर्वलादिजेयं विचक्षणैः
यः संनद्धो हयो राजन्वमूर्द्धवज्ञं करोति च स्वरायते लालिबिन्दूर्मि स शंसति रणेजयं यः करोत्यसकृन्मूत्रं पुरीषं चाश्रु
मोचनं स शंसति पराभूतिं न भवेत्तु रणेजयः निरामिषं निशीथे हेपो षारावं करोति च परचक्रागमाशंसीवि
ज्ञेयो हयपंडितैः निरामिषं निर्निमित्तं पुलकांकितपृष्ठो जायते भूपतेर्हयः स शंसति फलं वनं त्रास्थिरस्यापिश्च

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

याणकं स्फुलिंगाग्रस्य दर्शने पृच्छतोऽस्य स्यवह्निजाः निर्गच्छतः प्रभोनीशं नेवदंतिनि शागमे स्फुलिंगाग्र
ग्निकणाः विशेषांनरस्तु केज यदेव हते ऽस्माप्रवेदे अतः परं प्रवक्ष्यामि ज्वलनं गणं विभागज्ञ ज्वलितेनय।
योगेन फलेवाच्यं शुभाशुभं यदा ज्वलति वाहस्य सर्वगात्रं ऋता शावत् तदाविषादनाहुर्हिमहत्मेकेन संनसं
शयः अतः ऊर्ध्वविनाशस्तमे हत्तेन ज्वलितेन भवेत् उदरेपि नं नाशस्तपायोऽश्च केपराजयः उत्तमांगेचवक्रेचस्कं
धैचैवासनेतथा भर्तुर्नेपायवाहानां ज्वलनपत्रनेचके नूनं ललाटेवा क्रोश्चतथावत्तसिनिंदिते नेत्रेवज्व
लनेशांत यथानासासमुद्भवं यदा व्याधिविनावाजीयासंत्यजतिदुर्मनाः अश्रुपातं च कुरुते तदा भर्तुः शो
भनं स्वामिनाऽष्टमात्रेण दक्षिणं भागमात्मनः तुरंगमोयदा नमेत्तदा भर्तुर्जयो भवेत् पृच्छं वहन यदा वाहो
वामतो विकिरेद्यदि तदा भर्तुः प्रवासः स्याद्दक्षिणे विजयं तथेति इति गणसमयशुभाशुभसूचकलक्षणं
अथदशालक्षणं गणकृते ऽस्माप्रवेदे त्रीणि वर्षाणि मासौ द्वौ दिनानि द्वादशैवहि द्वात्रिंशद्वायुषोऽस्य स
नस्यैवाधिनादशा आयुषो दशभागेन दशमो कामनीषिभिरिति जयदेवकृतानाश्वाप्रवेदेतुविशेषः दशाद
शकमस्थानां जीवितेपरिकीर्तिते प्रवरं वाजिनामेतद्लक्षणं सज्जनाप्रजाः वासराः समतिश्चैव वर्षाणि च
तथात्रयं दशाप्रमाणं वाहानां शालिहोत्रेणकीर्तिते अत्रसर्वगणकृते नेद्वादशदिनाधिकमासद्वयसहि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नववर्षत्रयेणैकादशोक्ता एवं दशार्द्धकं तत्र सर्वमेलने द्वात्रिंशद्वर्षमायुर्भवति अत्र तु सप्ततिदिनाधिक
वर्षत्रयेणैकादशोक्ता एवं दशदशामेलने विंशतिदिनन्यूनद्वात्रिंशद्वर्षाणि भवन्तीत्येवं च दोष इति चेन्न तत्र
सान्तरत्वान्न दोषः प्रथमे प्रथमा चैव द्वितीया च द्वितीयके दशा एवं क्रमेणैव भवेद्देहे फलप्रदा प्रथमे देहे प्र
थमा दशा फलदा भवेदित्यन्वयः प्रयाणादाललाटं तत्प्रथमे देहे समुच्यते ललाटान्मस्तकं यावत् द्वितीये स
ल॰ प्र॰ मुदाहृते ग्रीवा हृदयावधि देहे तृतीये परिकीर्तितं जठरो जानुनया संचकक्कुदं काकसनया चतुर्थे विहिते
१८२ देहे पंचमे चासनं भवेत् कटिं विदेन षष्ठे च सप्तमे स्फिगुदाहृतं स्थूलकोऽष्टमे देहे जंघा च नवमे स्मृतं कू
183 र्चे संधिखुरं चैव दशमे परिकीर्तितं एवं बुधाभिषक् क्रमात्तु सदशाफलमादिशेत् कक्कुदावर्तिनोऽश्वस्य तथा
शृंगाल्पिनस्य च सर्वकाले समुद्दिष्टं दशा न च निरर्थके इति दशालक्षणं अथ दन्तैर्वयोज्ञानं किञ्छा
कृतसारसमुच्चये - द्विपादयोत्ताम मुपांति वै यावासंततयोऽभ्यंतरतो हयानां गात्रं शरीरे वद्धितः अदिष्टमाभ्यंतरे
दंतसप्तकमेनत् अथ पतयोर्धनरगस्य वक्रे स दशामध्ये विड्रतेनयोऽस्य पार्श्वस्थौ मध्यमकौ क्रमेणादंतौ त
योरेव च पारिभद्रौ जरीदयोर्दंतयुगं प्रजातं मासद्वयेनैव किशोरकस्य आयं चतुर्भिस्तु तथैव मध्यौ मासैस्तु
षड्भिः क्रमशोऽश्ववृद्धिः मासैः शिशोरष्टभिरायदंतौ स्वैतौ च मध्यौ दशभिश्च मासैः अन्त्यौ द्वादशभिः क्रमेण ।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णमेषो केसुनीदेणाद्दिनस्थमेनन श्वेताद्विजास्युः प्रथमेन्तवर्षेन्तयाद्वितीयेपिकषायकाले वर्षेत्तृतीयेत्तनया
स्थितैनान्तसंदंशकौनभवनोह्रयस्य वर्षेचतुर्थेपतितौ स्थितौनान्तस्यानौन्तमध्योदशनौनथैव अंत्योनंदंतौपति
तौ स्थितौन्तवर्षेन्तयापंचमकेह्रयस्यासंदशदंनेषु चषष्ठमेवृष्णान्तसमेवृत्तलमध्यमेनन अंत्येषुदंनेषुनया
मेवृक्रमेणानरेखाकथिताह्रयानां आयेन्तुलसानवमेन्तवर्षमध्येरदैवेदशमेनयाहे अंत्येनथैकादशमेन्त
वर्षेपीतानरेखाहरिणीप्रदिष्टा आयेत्वैद्वादशमेन्तवर्षत्रयोदशेमध्यमध्यमकाद्विजेषु तेषांतत्यांत्येषुच
तुर्दशेवृष्णान्तरेखादशनायसंस्था आयेन्तुवैपंचदशेनवर्षेस्यान्तषोडशेमध्यमदंतसंस्थे काचास्तयांसमस
प्तन्तुवात्येकाचानुमानेनविभावनीयाः आयेषुचाष्टादशमेदेषुएकोनविंशेपिचमध्यमेषु अंत्येषुवैविंश
तिमेनयाहे स्यान्मल्लिकामल्लिकपासमाना आयेषुदंतेषुनथैकविंशेद्वाविंशतोमध्यमकद्विजेषु वर्षत्रयो
विंशतिमेचशंखः स्यान्माविभातेषुचशंखवत्तस्य: वर्षेचतुर्विंशतिमेह्रयानामायेषुमध्येषुचपंचविंशे षड्विंश
केभवन्तदेषुछिद्रमन्तल्लवलायं प्रवदंतितज्ज्ञाः संदंशमुग्मेषुनसप्तविंशेमध्येषुलसद्दिनयाष्टविंशे ए
कोनत्रिंशेदशनानिकेषुचालंवलनान्यदिष्टं आयास्तदंताः प्रपतंतित्रिंशेमध्यास्ततोस्य स्पतथैकत्रिंशे द्वा
त्रिंशकेचनरदाः क्रमेणाद्वात्रिंशदायुः कथितंमुनीन्द्रैः अश्वांगमेतत्कथितंह्रयानां योलक्षणं वेत्तिसभाम्यु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भंवै सर्वैयत्नात्पोषयेत्कोविदोनृपः दानेनमानेनचसंप्रहृष्टइति वराहोपि षड्भिर्दन्तैः सिताभैर्भवति हयशिशु
स्तैः कषायैर्द्विवर्षः संदंशैर्मध्यमान्यैः पतितैःसमुद्गतैः त्रिवर्षस्तुपंचकः स्यात् संदंशानुक्रमेणात्रिकपरि
गणिताः कालिकापीतशुक्लाः काचामाक्षीकशंखाभावस्वचलनमतोदन्तपातंचविद्धीति इतिदन्तैर्वयोज्ञानं
ल·प्र· अथदन्तसंख्या शालिहोत्रे उत्तरस्याथराश्चैवदन्ताद्वादशचाग्रतः दृष्टास्ततोविज्ञेयास्तस्मात्तापरोन
१२४ राः तथाचैवचतत्रविंशत्तार्थदशनाः स्मृताः दन्तसंग्रहश्चाप्येवचताविंशकश्चान्तेइति नकुलकृतेअश्व
154 चिकित्सिते अश्वानामेवसर्वेषांदन्ताद्वादशकीर्तितिइति इतिदन्तसंख्या अथाश्वशालालक्षणं नकुलकृ
तेअश्वचिकित्सिते मंडुरांतेसदाधार्योरक्तवर्णोमहाकपिः सर्वामयविनाशायवाजिनांचविवृद्धये मंडुरावा
जिशाला विस्तयर्मीनरेपि तुरंगार्थंतथाधार्याः प्रदीपाः सार्वरात्रिकाः कुक्कुटाश्चानरोश्चैव मर्कटाश्चनराधि
पः वारयेदश्वशालासुसवत्सांधेनुमेवच अजाश्चधार्यापत्नेनतुरगाणांहितैषिणेति अत्रशणमसुखरक्तमु
खभेदेनवानरमर्कटभेदो अवगन्तव्यः अजोमेषः विशेषान्तरमप्युक्तं गोमजाश्चाविशालास्तनसुरीष
स्यनिष्क्रमं अश्वसंगमेनकर्तव्यंदेवदेवे दिवाकरेइति गणहृतेनतुविशेषः तित्तिरमयूरलावकचकोरसितमे
षवानरशुकांश्चसितकंकुक्कुटंमयथाखलुविभ्रयादेवाश्वशालासु दीपोहयशालायांप्रयत्नतः सार्वरात्रिकः का

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्यः कार्यः प्रभयाप्रतिष्ठायां नेत्रहोमगणनत्कारायाश्चेति इति वाजिशालालक्षणं अथाश्वायुर्वेदलक्षणं विलय
मौत्तरे हयशिक्षाविधानं तस्य लब्धिं चिकित्सितं पारगः अश्वायुर्होममहीभर्तुः स्वासनस्य प्रशस्यते इति अश्वायु
र्वेदलक्षणं इति श्रीमत्सकलसामन्तचक्रचूडामणिमरीचिमञ्जरीनीराजितचरणकमलश्रीमन्महाराजा-
धिराजप्रतापरुद्रतनूजश्रीमधुकरसाहसूनुचतुरुदधिवलयवसुंधराहृदयपुंडरीकविकासदिनश्री
मन्महाराजाधिराजश्रीवीरसिंहदेवोयोजितश्रीहंसपंडितात्मजश्रीपरशुराममिश्रसूनुसकलविद्यापारा
वारपारीणजगद्दारिद्र्यमहागजपारींद्रविद्वज्जनजीवातुश्रीमन्मित्रमिश्रकृते वीरमित्रोदयाभिधनिबंधे लक्ष
णप्रकाशेऽश्वलक्षणप्रकरणं समाप्तम् अथ शालग्रामशिलामूर्तिलक्षणप्रकरणं तत्र तावत् शालग्रामशि-
लाचक्रे पूजनीयत्वमाहतैः शालग्रामशिलापूजां विना योऽश्नाति किंचन स चांडालादिविष्ठायां आकल्पं जा
यते कृमिरित्यादिवचनैः शालग्रामशिलापूजाया नित्यत्वाभिधानात् लाञ्छनैर्विविधाकारैर्लांछितेन यथेश्वरस्य
ते चक्रांकितं हरेश्चापि शालग्रामस्य लक्षणं यथायोग्यं विचार्यैवं षड्हीनं संप्रयत्नतः इत्यादिवचनैः सुलक्षणा
नामेव शालग्रामशिलामूर्तीनां पूजनविधानात् वृद्धचक्राथवा या स्याद्यमचक्राथवा मृतावी पूजयेद्यः प्रमा
देन दुःखमेव लभेत सः शोषान्नगर्हितत्वोक्तानात् षड्हीनं तन्न पूजयेदित्यादिवचनैस्तत्फललक्षणमूर्तीनां दुःखदा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प्र·
१८५
186

तत्त्वेनदेयत्वात् सलक्षणएवशालग्रामशिलामूर्तयः सम्यक्तत्रकानिस्वलक्षणानिकानिदुर्लक्षणानीतिशा-
लग्रामलक्षणान्युक्तंते तत्रादौशालग्रामपदंविचार्यते केचित् शालग्रामस्यत्रतालव्यशकारंपठंति केचिद्द-
न्त्यसकारंतत्रकिंयुक्तमिति वराहपुराणे मयादेवप्रसादेनअज्ञानंमंदारवासिनं मंदारात्परमंस्थानंविलोत-
द्भक्तमर्हसीतिधरण्यापृष्टे वाराहउवाच शृणुतत्त्वेनमेदेवियन्मांत्वंपरिपृच्छसि कथयिष्यामितेगुह्यंशा-
लग्राममितिस्तनमित्युपक्रम्यशालग्रामतीर्थस्यतत्रविद्यमानानांगंगकादिनदीनांसोमेशादिलिंगानांच
उत्पत्तिप्रशंसाद्युक्त्वासालंकायनकोपाख्यानेतेनस्मिन्मरेमम शालग्रामेमहत्तीर्थमास्थितःपरमंतपःइमा-
दिनाकश्चित्सालंकायननामामुनिः शालग्रामतीर्थममाराधनंकुर्वन्महत्तपश्चकारसतिवराहरूपीवि-
स्तुर्धरामस्तुकवानितिशर्वकथासंबंधः ततोभगवन्देवदेवेशसालंकायनकोमुनिः किंचकारतपःकुर्वन्न त-
वत्वेत्रविमुक्तिदर्शनिपुनःधरण्यापृष्टे वाराहउवाच अथदीर्घेणकालेनसत्वऋषिः शंसितव्रतः तप्यमा-
नोयथान्यायमपश्यत्शालमुत्तमं अभित्रमतलक्ष्णांविशालंपुष्पितंतथा मनोज्ञंचसुगंधंचदेवानामपि
दुर्लभं ऋषिस्तीव्रपरिश्रांतःसालंकायनकोद्भुतं पश्यतेचपुनःशालंशुभानांशुभदर्शनं ततोहृष्टमनाः-
शालंपरिश्रांतोमहामुनिः विश्रामंकृतवांस्तत्रउत्सुकामोयथामुनिः शालस्थानस्यपूर्वेणस्थितःपश्चान्म-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोमुनिः मायया मामनूतात्मा शाकोद्द्धं नमामभूत् ततः पूर्वेण पार्श्वेन तस्य शालस्य संदर्शिवे शालमा
सहाद्दर्शनं महादर्शनमुपागतः दृष्ट्वा मां तत्र संमुनिस्तपसी ग्रासितव्रतः तदा च वैदिकैः सूक्तैः प्रणम्य च
पुनः पुनः ततो हं स्तूयमानो वैश्वाधिषु ख्येनसुंदरि प्रामस्कपरमो शीतिनमवोचमृषिं तदा साधु वत्स न मह्या·
भागसालंकायनसत्तम तपसा नेन संतुष्टस्तुष्टा चैवानया तव वरं वरय भद्रं ते संसिद्धस्तपसा भवान् एव
मुक्तः सत्तमया सालंकायनको मुनिः शालवृक्षं समाश्रित्य निभृतेनांतरात्मना ततो मे भाषितं देवि समृ
षिः शंसितव्रतः नवैवाराधनार्थाय तपस्तप्तं मया हरे इति तद्वचः समाकर्ण्य तस्मै श्रुभिलषितं वरं दत्वा तेन प्रम
हमिस्यवोच अन्यच्च गुह्यं च सा मिसालंकायनतत्कुरु तव प्रीत्या प्रवसामिये नेन तत्र देवमुत्तमे शालग्राममि
ति ख्यातेन न त्रिविष्टपमन्ने भुभं योयं दृष्टस्त्वयाद्य वृक्षः सोहमेव न संशयः एतत्कोपि न जानाति विना देवं महेश्वरं मा
यया हं निगूढोस्मि त्वत्प्रसादात्प्रकाशितं एवं तस्मै वरं दत्वा शालंकायनकायवै पश्यतस्तस्य वक्ष्येण तत्रैवांतर्हि
तो भवं हं संदर्शिणतः कृत्वा जगाम स्वाश्रमं मुनि ममतद्धेचतेस्थानं गिरिकूटशिलोच्चये शालग्राममिति
ख्यातं मत्कं संसारमोक्षणमिस्तु पसंहृतं एतेश्च वचनैः शालेन हृदेनागम्यते न्यपतेयः पर्वतविशेषः सस्रा
लग्राममितिविख्यातो र्थविशेषश्च उच्यते गम्भलगता विमस्साहाते।ः अकर्त्तरि च कारके संज्ञायामिति कर्मणिघ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लव॰ १८८ 186

इष्टोदरादित्वादेकेवृक्षेच कृतापांशामस्त्वतिसंपद्यते ततश्च यथान्तामनेकार्थत्वात्तथामेस्यपित्तानार्थत्वं युक्तमे
व यानन्नामनेकार्थत्वं चोक्तंमहाभाष्ये वपिःप्रकिरणे दृष्टंछेदने वापिवर्तनइति अत्रशालशब्देदंत्यादि
सालव्यादिश्चतत्राद्यः सलगतौइत्यस्माद्ज्वलादिभ्यो णः सलतेगच्छतेइतिकर्मणिघञ् इद्धेच सारयाद्वाहाभ्
मन्दितप्रशंसास्वनिमयोगेऽनिशापने संसर्गेस्तिविवक्षायांभवंतिमतुवादयइतिवार्तिककारवचनात्मत्वति
शायुनेअर्शआद्यचिकृतेरलयोरेकत्वस्मरणात्सालइति तथाचराघवपञ्चके ध्वंसिभूरुहमात्रेपिसालोवरणः
सर्जयोरितिदंत्यादौरभसादेः सालकान्तत्रशोभिनीतिदर्शिच सालः पादपमात्रेस्यात्प्राकारेसर्जकद्रुमेइति
विश्वः सालोहृद्दांतरेडुगौइत्यनेकार्थः द्वितीयस्तुशलगताविन्यस्माद्यातोः शलतिवायुनाचलतीतिकर्त
रिज्वलितिकसंतेभ्योणइतिणोकृतेसिध्यति शालोहालेनपेमत्स्यप्रभेदेसर्जपादपेइतिविश्वः अत्रराघवप
कृते अनोकहः कुटः शालइत्येतदमरस्योकव्याख्यानावसरेसलगतौसालोदंत्यादिः सलतिवायुनाचलति
ज्वलतिकसंतेभ्योणइतिणोवाध्वंसिभूरुहमात्रेपिसालोवरणसर्जयोरितिदंत्यादौरभसादेः इतिप
डकेतालिभंदंत्यादेः सलधातोश्चज्वरादावपिपाठादिति एवंचदंत्यादिस्तालव्यादिश्चशालशब्दः सिद्धः ततश्च
शालइत्युपलक्षितः पर्वतविशेषः शालग्रामतीर्थमितिसिद्धं शालग्रामतीर्थपरिमाणंचोक्तंवाराहे एतत्ते

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सर्वमाहात्म्यं तेत्रंगुह्यं वसुंधरे आरभ्य मुक्तिक्षेत्रं तत्क्षेत्रं द्वादशयोजनं शालग्रामस्वरूपेण मया यत्र स्वयं स्थित
मिति तत्रोत्पन्नाः शिलाः शालग्रामाभिधानाः तत्रदंष्ट्रादिलांछनादिविस्मयविधोपि शालग्रामशब्दप्र
प्रयोगः साधीयानिति सिद्धांतः तास्त्र सर्वा अपि शिलाः पूजने प्रशस्ताः तथा चोक्तं वाराहे महादेवेन शाल
ग्राम गिरिर्विष्णुरहं सोमेश्वराभिध इति तत्रैव विस्तारेणोक्तं तस्मिन् क्षेत्रे हरिहरो देवो मत्स्वरूपेण संस्थितः शाल
ग्रामे गिरौ तस्मिन् शिलारूपेण तिष्ठति अहं तिष्ठामि तत्रैव गिरिरूपेण नित्यदा तस्मिन् शिलाः समग्रास्तु मम
तत्स्वरूपा न संशयः पूजनीयाः प्रयत्नेन किं पुनश्चक्रलांछिता इति चक्रलांछितानां तु प्रशस्ततरत्वं तत्तद
तर्गततीर्थविशेषोत्पन्नत्वात् तदप्युक्तं सालग्रामार्थमुक्तं वाराहे गुह्यानि तत्र वसुधे तीर्थानि दश पंच च ना-
यापि केचिद्विजानंति मुच्यंते यैरिह स्थिताः तत्र विष्णुप्रभं नाम गुह्यं क्षेत्रं मम प्रियमित्युपक्रम्य चक्रस्वामीति
विख्यातेनास्मिन् क्षेत्रे परं मम चक्रांते च कृतस्तत्र चक्रांकितशिलाश्चात्र दृश्यंते वरवर्णिनि तदेतद्धि द्विवसत्रये स
मेताद्योजनत्रयमिति अत्र गंडकीनदीजलमध्योत्पन्नाः शालग्रामशिलाः प्रशस्ततमाः तत्र गंडक्यां शालग्राम
शिलारूपी विष्णुस्तिष्ठतीति हेतुः एतदुपाख्यानं च वाराहपुराणे श्रूयते पूर्वं गंडकी महत्तपस्तप्तं तेन तपसा स
तुष्टो विष्णुर्वरं ब्रूहीति तामाह ततः सा विष्णुमित्यादेनमूचे सा मम प्रसन्नो देवः सोमस्कंदः देवदेवः शंकरः ततो हि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मां प्रोमा सा देवी गंडकी लोकतारिणी प्रांजलिः प्रणता भूत्वा मधुरं वाक्यमब्रवीत् यदि देव प्रसन्नोसि देयो मे वांछितो व
रः मम गर्भगतो भूत्वा विलोमस्त्वं ततो व्रज ततः प्रसन्नो भगवान् चिंतयामास गोपते चिंताचित्ते निम्नगया नितांम
त्वंगत्वया दास्यामि या चिंतये न लोकानां भवमोचनं एवं रूपया देवो निश्चिंतमनसा स्वयं गंडकीमवदत्प्री
तः शृणु देवि वचो मम शालग्रामशिलारूपी नित्यं गर्भगतः सदा स्थास्यामि तव पुत्रत्वे भक्तानुग्रहकारणात् मत्सा
ल॰ प्र॰ १८७ 187 न्निध्यान्नदीनां त्वमतिश्रेष्ठा भविष्यसि दर्शनात्स्पर्शनात्स्नानात्पानाच्चैवावगाहनात् हरिष्यसि महापापं वाङ्म
नःकायसंभवं एवं दत्वा वरान्देव्यै तत्रैवांतरधीयत ततः प्रभृति तिष्ठामः क्षेत्रेस्मिन् शश्वल्लोकेन अद्यैव भग
वान् विष्णुर्भक्तोपात्तविग्रह इति या मे कार्तिकमाहात्म्ये तत्रैवोपाख्यानं श्रूयते तद्यथा कश्चिद्दशशिरानाम महा
मुनिर्गंगानीरे तीव्रं तपश्चकार ततस्तत्तपसा भीतः शक्रो मंजुवाग्निम् अभिधानां कांचिद्देवकन्यां तत्तपो विघ्नार्थं प्रे
षितवान् ततः सा मंदं मंदं प्रेक्षिता वेदशिरस्तपो विघ्नं कुर्वती क्रुद्धेन तेन मुनिना त्वं नदी भवेति शप्ता ततस्तया म
हता प्रयत्नेन विज्ञापितो मुनिस्तामित्यवोचत् तदोवाच मुनिः शांतो नदी भूत्वा जनार्दनं सोदरे त्वं धारयंती
कृतकृत्यं जनं कुरु शालग्रामशिलारूपी त्वयि जातो जनार्दनः त्वद्यशः प्रसरेल्लोके मुक्तिदानान्नृणामिह से
यं वै मंजुवाग्देवी गंडकी सरितांवरा तस्यां विष्णुः शिलारूपी ह्यदापापहस्तु केशवप्रतिमो ग्राजद्वार हे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दाशरथोपाख्यानं तत्र नैवेद्यस्त्वमित्यास्तां तावत्प्रपंचेन इति दंत्यादितालव्यादिशालग्रामपदविचारः अथ
शालग्राममाहात्म्यं पाद्मे माघमाहात्म्ये यः पूजयेद्धरिं चक्रे शालग्रामशिलोद्भवे राजसूयसहस्रेण तेनेष्टं प्र
तिवासरं यदामनंति वेदांतास्तद्ब्रह्म निर्गुणमच्युतं तत्प्रसादो भवेन्नृणां शालग्रामशिलार्चनात् महाकाष्ठस्थि
तो वह्निर्मथ्यमानः प्रकाशते अपि पापसमाचाराः कर्मण्यनधिकारिणः शालग्रामार्चका वैष्णवा नैव यां
ति यमालयं न तथा रमते लक्ष्म्यां न तथा स्वपुरे हरिः सालग्रामशिलाचक्रे यथा स रमते सदा अग्निहोत्रं हुतं
तेन दत्ता पृथ्वी ससागरा येनार्चितो हरिश्चक्रे शालग्रामसमुद्भवे कामैः क्रोधैर्मदैर्लोभैर्व्याप्तो योत्र नराध
मः सोपि याति हरेर्लोकं सालग्रामशिलार्चनात् यः पूजयति गोविंदं शालग्रामे सदा नरः आभूतसं
प्लवं यावत्तस्य च्यवते दिवः विना तीर्थैर्विना दानैर्विना यज्ञैर्विना मतैः मुक्तिं याति नरो वैश्य सालग्रामशि
लार्चनात् नरकं गर्भवासं च तिर्यक्त्वं कृमियोनिकं न याति वैश्य पापोपि सालग्रामे च नार्चकः दीक्षाविधा
नमंत्रज्ञश्चक्रे यो बलिमाहरेत् स याति वैष्णवं धाम सत्यं सत्यं मयोदितं नैवेद्यैर्विविधैः पुष्पैर्धूपदीपैर्विले
पनैः गीतवादित्रस्तोत्राद्यैः शालग्रामशिलार्चनं कुरुते मानवो यस्तु कलौ भक्तिपरायणः कल्पकोटिसह
स्राणि रमते सन्निधौ हरेः लिंगैस्तु कोटिभिर्दृष्टैर्यत्फलं पूजितैस्तु तैः सालग्रामशिलायास्तु एकेनापीह तत्।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्थले सकृदभ्यर्चिते लिंगैः शालग्रामशिलोद्भवैः मुक्तिं लभंते मनुजा नित्यं सांख्येन वर्जिताः शालग्रामशिलारूपी य
त्र तिष्ठति केशवः तत्र देवासुरा यक्षा भुवनानि चतुर्दश शालग्रामशिलायां च यः श्राद्धं कुरुते नरः शालग्राम-
शिलाग्रे तु यः श्राद्धं कुरुते नरस्तृप्तिपावांतरे पितरस्तस्य तिष्ठंति तृप्ताः कल्पशतं दिवि शालग्रामशिलापत्रतत्ती
ल·प्र· र्थ्ययोजनत्रयं तत्र दानं च होमश्च सर्वं कोटिगुणं भवेत् शालग्रामसमीपे तु क्रोशमात्रं समंततः कीकटेपि
१८८ मृतो याति वैकुंठभवनं नरः शालग्रामशिलाचक्रं यो दद्याद्दानमुत्तमं भूचक्रं तेन दत्तं स्यात्सशैलवनकानन
188 मिति स्कांदे कार्तिकमाहात्म्ये श्रीशिवस्कंदसंवादे शालग्रामशिला यत्र तत्र त्रैलोक्यं सचराचरं मया सह महा
सेन लीनं तिष्ठति सर्वदा दृष्टा प्रणमिता येन स्नापिता पूजिता तथा यज्ञकोटिसमं पुण्यं गवां कोटिफलं लभेत्
कामासक्तोपि यो नित्यं भक्तिभावविवर्जितः शालग्रामशिलां पुत्र संपूज्यैवाच्युतो भवेत् शालग्रामशिलाबिंबं
हत्याकोटिविनाशनं स्मृतं संकीर्तितं ध्यातं पूजितं च नमस्कृतं शालग्रामशिलां दृष्ट्वा यांति पापान्यनेकशः
सिंहं दृष्ट्वा यथा यांति वने मृगगणा भयात् मनः करोति मनुजः शालग्रामशिलार्चने पापानि विलयं यांति त
मः सूर्योदये यथा कामासक्तोथवा क्रुद्धः शालग्रामशिलार्चनं भक्त्या वा यदि वाभक्त्या कृत्वा मुक्तिमवाप्नुयात्
वैवस्वतभयं नास्ति न यामरणजन्मनोः यः कथां कुरुते विप्रः शालग्रामशिलाग्रतः गंधमाल्यादिनैवेद्यैः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पैधूपैस्त्रलेपनैः गीतैर्वाद्यैस्तथा स्तोत्रैः सालग्रामशिलार्चनं कुरुते मानवो यस्तु कलौ भक्तिपरायणः क
ल्पकोटिसहस्राणि रमते विष्णुसद्मनि सालग्रामे नमस्कारो भावेनापि नरैः कृते भयं नैव करिष्यंति मद्भक्तास्ते
न संभुवि सालग्रामनमस्कारः शाठ्येनापि यतः कृतः मानवाः किं करिष्यंति मद्भक्तास्तेन राधवीत्वपि कचि
त्पाठः मद्भक्तिवलदर्पिष्ठा मत्प्रसुनं नमंति ये वासुदेवं न ते ज्ञेया मद्भक्ताः पापिनो हि ते सालग्रामशिला
पां तु सदा पुत्र वसाम्यहं दत्तं देवेन तुष्टेन स्वस्थाने मम भक्तितः कल्पकोटिसहस्रैस्तु पूजितेमपि यत्फले न
त्फलं कोटिगुणितं सालग्रामशिलार्चने पूजितोहं न तैर्मर्त्यैर्नमितोहं न तैर्नरैः न कृतं मर्त्यलोके यैः सालग्रा
मशिलार्चनं सालग्रामशिलाबिंबं नार्चितं यदि पुत्रक पोह्निमादेश्वरोभूत्वा वै सर्वलिंगमनुत्तमं हेहेषि वैष्णानि न
रकं यावदिंद्राश्चतुर्दश सेसारङः वेकोनभै विमज्जंति नराधमाः वर्षकोटिसहस्राणि कुंभीपाकेन वर्जिताः स
कृद्यार्चिते विंबे सालग्रामसमुद्भवे मुक्तिं प्रयांति मनुजा नूनं सांख्येन वर्जिताः मल्लिंगैः कोटिभिर्दृष्टैर्यत्फ
लं पूजितैः स्तुतैः सालग्रामशिलायां तु एकेनापीह तद्भवेत् तस्मात्कुमार मद्भक्तैः प्रीत्यर्थं मम पुत्रक कर्तव्यं
सततं भक्त्या सालग्रामशिलार्चनं सालग्रामशिलारूपी यत्र तिष्ठति केशवः तत्र देवासुरा यक्षा भुवनानि चतु
र्दश सालग्रामशिलाग्रे तु सकृत्पिंडेन तर्पिताः वसंति पितरस्तस्य न संख्या तत्र विद्यते प्राप्य श्रीजे सस्यर्ये किं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दाने: किमुपोषणै: चांद्रायणैस्तुतीर्थैस्तु पीत्वा पादोदकं शुचिः प्रज्ञाणाममग्नि सर्वस्य स्तुकृतस्य द्विपुत्रक फलं समा
णाहीनं तु सालग्रामशिलार्चने यो ददाति शिलां विप्रे: सालग्रामसमुद्भवां विप्राय विप्रमुख्याय तेनेष्टं क्रतुभिर्म
खैः मानुष्ये दुर्लभा लोके सालग्रामशिलोद्भवा प्राप्यते न विना पुण्यैः कलिकाले विशेषतः सधर्मः पुरुषो लो
के सफलं तस्य जीवितं सालग्रामशिलामुद्रा गृहे यस्य च पूजिता सन्निधौ द्वादशग्रामसालग्रामशिलार्चनं यः
ला.म. कुर्यान्मानवो भक्त्या स याति परमं पदं भक्त्या वा यदि वाभक्त्या यः करोति स पुण्यभाक् दंभेनापि वा लोभेन दं
१२९ भेन कपटेन वा सालग्रामोद्भवं देवं दृष्ट्वा पापात्प्रमुच्यते अशुचिर्वा दुराचारः सत्यशौचविवर्जितः सालग्राम
169 मशिलां स्पृष्ट्वा सद्यः पूतः शुचिर्भवेत् तिलप्रस्थशतं भक्त्या यो ददाति दिने दिने तत्फलं समवाप्नोति सालग्राम
शिलार्चनात् पत्रपुष्पफलैर्मूलैस्तोयैर्दूर्वांकुरैस्तथा: सत जायते मे हृष्णतुल्य सालग्रामशिलार्पितं विधिही
नोपि यः कुर्यात् क्रियामंत्रविवर्जितः वक्रस्त्वामवाप्नोति सम्यक् शास्त्रोदितं फलं स्कंधे कृत्वा तु यो ध्यानं वह
ते शैलनायकं तेनोढं तु भवेत्सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरं ब्रह्महत्यादिकं पापं यत्किंचित्कुरुते नरः तत्सर्वं निर्द
हन्त्याशु सालग्रामशिलार्चनं ग्रामे कार्तिकमाहात्म्ये सालग्रामशिलायां तु येनैरैः पूजितो हरिः संशोध्य
तेषां पापानि मुक्तये सिद्धिदो भवेत् कार्तिके मथुरायां तु सारूप्यं दिशते हरिः दृश्यते हरेरिति पाठांतरे सा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लग्रामशिलायांवैपितनुद्दिश्य शुजितः कृत्सः समुद्दरेन स्थापितनैनान् सेलोकनामिति गरुडपुराणे सा
लग्रामशिलायत्रदेवोद्दारावतीभवः उभयोः संगमोयत्रतत्रमुक्तिर्नसंशयः सालग्रामोद्दारकाचनैमिषंपु
ष्करंगया वाराणसीप्रयागंचक्रकहलेत्रंचसूकरं गंगाचनर्मदागोदाचंद्रभागासरस्वती पुरुषोत्तमोमहाका
लस्तीर्थान्येतानिशाकर सर्वपापहराण्येवभुक्तिमुक्तिप्रदानिवैद्वति वृहन्नारदीयेयज्ञध्वजोपाख्यानोनाम सा-
लग्रामशिलारूपीयत्रतिष्ठतिकेशवः नबाधन्तेसुरास्तत्रभूतवेतालकादयः सालग्रामशिलायत्रतत्तीर्थंत
त्तपोवनं शतवाप्तिनाभक्त्यातदास्यादधिकंफलमिति तथाचहेमाद्रौ कश्चिद्विशेषःस्मर्यते सूर्यचंद्रग्रहेग्रा
मेयत्किंचित्क्रियतेनरैः तीर्थकोटिगुणंपुण्यंसालग्रामशिलाग्रतः निमंचपुष्करंतत्रप्रयागंचपृथूदकं प्रभासं
चक्रकहलेचैवतथापिंडारकेपुनः कोटितीर्थमितिप्रोक्तंशुक्लतीर्थंतथैवच वाराणसीगयाचैवमथुरानैमिषंतथा गं
गाद्वारंसोकरंचगंगासागरमेवच ओंकारंनर्मदायांचकेदारंचाविमुक्तके अवंतीद्वारकाकांतीयमुनाचसरस्वती
गोदावरीतुंगभद्रागंगाचनर्मदातथा नदीरूपवतीपुण्यानदीवेत्रवतीतथा अट्टहासंमहाकालंदेवंविश्वेश्वरं
तथा महादेवंमहानादंदेवंरामेश्वरंतथा रुद्रंमहालयंचैवयवनथैवशशिशेखरं भैरवंभूतनाथंचभीमनादंतथै
वच भूतेश्वरंभस्मगात्रंयानिलिंगानिभूतले स्वर्गेचयानिपातालेचांतरेदेवपृथिवीर सालग्रामशिलायांतुप्रस

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हं निवसंति च ब्रह्मतीर्थानि सर्वाणि ह्यर्धतीर्थानि यानि च सरस्सिद्धमुनीन्द्राणां त्रिषु लोकेषु यानि च वसंति तत्र
राजेंद्र ममहं पांडुनंदन सालग्रामशिलायां तु समीपे केशवस्य हि वेदास्त्रयो मखाः सर्वे यज्ञश्चमे पादपस्त्वये व्र
तानि यान्यनेकानि पुराणानि तथागमाः तपांसि नियमाः सर्वे त्रिदशाः पांडुनंदन सालग्रामशिला यत्र तत्र
ल·प्र· तिष्ठंति ममहं तीर्थायेतानि तत्रास्ति यत्र द्वारवती शिला सालग्रामशिला मुद्राय चक्रांकिता भवेत् कुरुक्षे
१९· त्रेण किं तस्य संग्रामे ग्रहणे रवेः सालग्रामशिलायत्र स्पृष्टे चक्रेलांछिता प्रभासे यत्फलं प्रोक्तं ग्रहणे राहोर्नि
१९० शाकरे कृतेदाने भवेत्पुण्यं सालग्रामशिलाग्रतः सालग्रामशिलां दिव्यां योभ्यंथर्ममपेक्षते कलिकाले विशेषे
ण मनुष्यः सोपापनलैः सलभं किं न सेवेत सालग्रामशिलाजलं यस्य स्पर्शनमात्रेण पूतो भवति मानवः यो
ददाति शिलां विप्राः सालग्रामशिलोद्भवां वैष्णवो विष्णुभक्ताय तेनेष्टं क्रतुभिः शतैः सालग्रामशिलादाने
यः करोति हि पार्थिव अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैस्तेनेष्टं तु दिने दिने सालग्रामशिलादानं कृतं येन च पार्थिव स्वर्गे
मर्त्ये च पाताले पूज्यते वै स पार्थिव सालग्रामशिलायां वा नास्ति नास्ति पुनः पुनः नराणां दुर्लभा लोके साल
ग्रामोद्भवा शिला प्राप्यते न विना पुण्यैः कलिकाले विशेषतः स धन्यः पुरुषो लोके सफलं तस्य जीवितं सा
लग्राममयी मुद्रा गृहे यस्य सुपूजिता जलमन्नं हविष्यं च पत्रं पुष्पं फलादिकं यत्किंचिद्दीयते गेहे वस्त्राभरणमा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्वर्षं गोमहिष्यादिकं यच्च कृमिकीटादिकं तथा सालग्रामस्य सांनिध्यात्सर्वे यान्ति सुरालयं सोऽपि वाहनशृंगाग्रे
भिद्यते न स्थितो न तु: सोऽपि यमः मनिश्चजायते यस्मात्सालग्रामशिलार्चने आश्चर्यंति च पापानि हन्तानि सुबह
न्यपि व्रजंति न पथ्यं सौरेः सालग्रामशिलाश्रयात् सालग्रामोद्भवे शैले शूद्रेय स्यनवियते ससीदति न संदेहः
पंकेमग्नोयथागजः सालग्रामशिलायां तु सर्वदा वसते हरिः अन्यद मर्चितस्तेन देवदेवो जनार्दनः साल
ग्रामोद्भवे लिंगं पूजितं येन भूपते दक्षाहुतेन पयसा मधुना तीर्थवारिभिः यः स्नापयति देवेशं सालग्रामस
मुद्भवं तस्य पुण्यं प्रवक्ष्यामि शृणु वत्स निबोध मे वैश्वकोटि महाभाग सदा भागवतप्रिय मन्वन्तरं तु वसतां वा।
गणास्यां तु यत्फलं वासरैकेन तत्पुण्यं स्नानं दत्वा तु केशवे द्वादश्यां शतसाहस्रं पर्वकाले ततोऽधिकं पंचाम
तेन कर्तव्यं तस्मात्स्नानं प्रयत्नतः मधुदग्धाभ्यभावेन हतस्य च नराधिप तीर्थस्नानेन चैकैन सर्वसंपूर्णतां व्र
जेत् सालग्रामशिलास्पर्शं ये कुर्वन्ति दिने दिने वांछंति कुरसेस्पर्शं तेषां देवाः सवासवाः यः पश्यति नरो भ
क्त्या सालग्रामशिलार्चनं जन्मायुतसहस्राणां कृतनाशं न संशयः प्रायश्चित्तसहस्राणि कृत्वा व्रतशतानि च
कलौ गच्छंति पापानि न विष्णोः स्मरणं विना कालेवा यदि वा काले सालग्रामशिलार्चनं भक्त्या वा यदि वा भ
क्त्यायः करोति स पुण्यभाक् द्वेषेण वाप्यलोभेन दंभेन कपटेन वा सालग्रामोद्भवं देवं दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.प्र.
१५१
।१।

अशुचिर्वाप्यनाचारः सत्यशौचविवर्जितः सालग्रामोद्भवं देवं दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते अशुचिर्वाप्यनाचारः सत्य
शौचविवर्जितः सालग्रामोद्भवे शैले स्पृष्ट्वा सोपि शुचिर्भवेत् पत्रं पुष्पं फलं तोयं भक्त्या हर्यावकिरेन्नृप जायते मेरु^
णा तुल्यं सालग्रामशिलार्पितं विधिहीनोपि यां कांचित्क्रियां मन्त्रविवर्जितां कुर्यादिति विशेषः चक्रांकस्यानेनान्त
न्यफलं भैक्ष्याद्यादितं फले चक्रांकितशिलाग्रे तु कुर्याज्जागरणं हि यः एकादश्यां नरश्रेष्ठ देवास्तस्य वरप्रदाः य
त्र तिष्ठति चक्रांको देवो द्वारावतीभवः तीर्थकोटिसहस्राणि तत्र संनिहितानि वै यत्र यत्र नृपश्रेष्ठ देवश्चक्रांक
चिह्नितः तत्र गच्छ महाभाग संसाराब्धिं तरिष्यसि कलिकालकृतं तेनस्य को विभेति नराधिप चक्रांकितशि
लायस्य हृदयात्रापसर्पति सालग्रामोद्भवं दृष्ट्वान्स्ते ह द्विजनाधिप नावेदितं तु शकुर्वन्ति सर्वे ते यमकिंक
राः सालग्रामोद्भवे शैले द्वारकायां समुद्भवे कलिकालेपि राजेन्द्र नन्दत्येव जनार्दनः यदिच्छसि हि दुःपारं तर्तुं संसा
र सागरं सालग्राममये शैले भक्त्यार्चय महीपते अर्चितः पूजितो ध्यातः संस्तुतः मौलनायकः पापिनामुपकारा
पर्किप्तनर्धर्मशीलिनां जन्मप्रभृतियत्पापिः कृतानि तनेकशः इमां मुद्रां समभ्यर्च्य मुच्यते सोपि तत्क्षणात्
स्वमंत्रेणाद्वयेः शुद्धैः स्वकैर्ध्यानैः समुद्रया हरिस्तत्र समाविष्टः सर्वदा नात्र संशयः लक्ष्मीर्मेधा स्वधा कांतिः
तुष्टिः श्रद्धा सरस्वती सिद्धिर्ऋद्धिस्तथा सर्वा मुद्रायां नित्यसंस्थिताः सततं चैव यत्नेन तं हरेर्दर्शं समाश्रितः प्रा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेष्टन्नमन्यादानमग्निकार्यंजपादिकं तस्मात्तत्रत्वयः कुर्यात्तत्सर्वमक्षयंभवेदिति तथा दक्षाह्नोविघ्नंचैववन्हि
चौरभयंतथा सर्वाणिप्रशमंयांतियत्रचक्रांकितोभवेत् द्वारवत्याः शिलादेविसद्दयाममसुद्रिता यत्रापि
नोपतेनतस्यातीर्थंद्वादशयोजनं सालग्रामशिलायत्रतत्रसन्निहितोहरिः तन्मिन्निधौनत्रजेन्मात्राणान्विल
लोकेमहीयतइति पुराणसंग्रहेपि शालग्रामसमीपेत्वक्रोशमात्रंसमंततः कीकटेपिमृतोयातिवैकुंठभ
वनंनरइति इतिसालग्रामशिलामाहात्म्यं अथसालग्रामचक्रमाहात्म्यं वैखानससंहितायां हरिरुवाच
इदानींकथयिष्यामिदेवंदेवनमस्कृतं सर्वंख्यातंमयासम्यक्सकाशाच्चक्रपाणिनः आयासात्कृतकानांचह
प्रयत्नेदेवतानांकृतं मानोन्मानविहीनस्तुमानोन्मानविवर्जितः स्वयंजातःप्रभोदेवःपरब्रह्मस्वरूपकः एकस्मि
न्पूजितेचैवत्रैलोक्यंपूजितंभवेत् संवत्सरंतुयःकश्चित्कुर्यात्स्पर्शनदर्शने विनासांख्येनयोगेनमुच्यतेनात्र
संशयः ममचक्रविशेषोयंकथ्यतेतेनवैनारद लोकपालांकितंचक्रंपंक्तिलीकृतलांछितं अनेकसलिकेदिव्ये:
पद्मलांछनलांछितं सालग्रामोद्भवंचक्रंरहेयस्मिन्नपूज्यते योजनानिद्वादशैवचक्रतीर्थंप्रदाहृतं सर्वपापहरंचैवसर्व
दुःखविनाशनं ब्रह्महत्यादिसंयुक्तालाःशाकिन्यःस्मरणेनच ज्वररोगाविनश्यंतिचक्रस्यपूजनात्तुवै स्मारोऽपस्मारःप
वंभेदःसमाख्यातोहरिणापरिकीर्तितः अथाप्युदाहरंतीमंसालग्रामसमुद्भवं चक्रंहिरण्यसंयुक्तंरहेयेषांप्रश्नि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ते तेषांवरप्रदोनित्यंहरिःसायुज्यमोक्षदः आयुरारोग्यमैश्वर्यंराज्यंपुष्टिंयशोधनं लभतेनात्रसंदेहस्वक्रराजस्यसेव
नात् नारदउवाच केचक्रादुर्लभादेवकेचक्राःसुलभाभुवि एवंमेसंशयोदेवप्रसादात्कथ्यतांहरे हरिरुवाच
पुरुषोत्तमोवैकुंठःश्रीधरोहरिरेवच दुर्लभामूर्तयःप्रोक्ताःसुलभानभवंतिच एतेचक्राःसमाख्याताद्देवाःसं
पूजयंतिवै सुलभाःसुप्रसिद्धाश्चअल्पपुण्यःपूजयंतियान् केचिच्चक्राःप्रपूज्यंतेमानुषैःकिलनारद हरितीर्थभ
ल·पु· वेचक्रैनाभिचक्रसमन्वितं सकृत्पूजाजपहोमाद्विसोःपदमनामयमिति इतिसालग्रामचक्रमाहात्म्यं अथसा-
१९८ लग्रामशिलामूर्त्तिसामान्यलक्षणं स्कंदपुराणे स्निग्धाकृष्णापांडुराचपीतानीलातथैवच रक्तारूक्षाचवक्रा
चमहास्थूलावलांछिता कपिलादर्दुराभग्नावहुचक्रैकचक्रिका बृहन्मुखीबृहच्चक्रालग्नचक्राथवापुनः
बद्धचक्राथवायास्यात्भग्नचक्रात्वधोमुखी स्निग्धासिद्धिकरीमंत्रेकृष्णाकीर्तिंददातिच पांडुरापापदहनीपी
तापुत्रफलप्रदा नीलासंदिशतेलक्ष्मीरक्तारोगप्रदायिनी रूक्षाचोद्वेगदानित्यंवक्रादारिद्र्यदायिका स्थू-
लानिहंतिचैवायुर्निःफलातुअलांछिता कपिलादर्दुराभग्नावहुचक्रैकचक्रिका बृहन्मुखीबृहच्चक्रालग्न
चक्राथवापुनः बद्धचक्राथवापास्यादग्नचक्रात्वधोमुखी पूजयेद्यःप्रमादेनदुःखमेवलभेन्नरःइति ब्रह्मपु
राणे सर्वकर्मप्रदासौम्याकरालाभयदुःखदा स्त्रिग्धाचश्रीकरीनित्यंरूक्षादारिद्र्यदायिनी भक्तामोक्षैकफ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लदारक्तामोक्षफलामये रक्ताऽर्द्धपद्मका नस्याः प्रशस्तत्वात् अतिरक्तान्तनिषिद्धा पीताधनकराज्ञेयारक्तारा
ज्यप्रदाशिला अतिरक्तारोगदाचकृष्णाकीर्त्तिप्रदाप्रभेति पुराणसंग्रहवचनात् अतोभयत्रापिमोक्षैकफ
लत्वेवर्णभेदान्नदोषः पीतादारिद्र्यनाशायमिश्रामिश्रफलाश्रये सुसुखीश्रीकरीनित्यंतथानीलान्नदायि
नी कपिलाहरतेणापंब्रह्मचर्येणपूजिता दर्शनात्स्पर्शनाच्चैवध्यानयोगेनपूजिता शालग्रामशिलाचक्रेस
स्थितोभगवान्हरिः निर्दहिष्यतितत्पापंज्वलितोग्निरिवेंधनमिति विशेषस्तुप्रयोगपारिजातेसमर्थने
श्रीभगवानुवाच शृणुब्रह्मन्प्रवक्ष्यामिशालग्रामेस्थितंहरिं हरिस्तत्रस्थितोनित्यंप्रादुर्भावैरनेकधा लो
कनैर्विविधाकारैर्लीढितैर्यच्चदृश्यते चक्रांकितेहरेश्चापिसालग्रामस्यलक्षणं यथायोग्यंविचार्यैवप्रदी
तव्यंप्रयत्नतः आदौशिलापरीक्षेतग्राह्याग्राह्यविभागतः स्निग्धास्नाताहुताचफलाकारायवाननाह्रस्वाच
पांडुरापीतानीलाश्यामाधूम्रकका कपिलाभाचकाचाभाहरीभारक्तपिंगला एताःशुभाःशिलाग्राह्यामिश्राश्च
वविशेषतः स्निग्धासनापरित्याज्यारूक्ष्यामनस्तुखप्रदा हुतासहृतदाप्रोक्ताफलाकाराफलप्रदा यवाननाच॰
विज्ञेयावाक्यैश्वर्यप्रदायिका कीर्त्तिभोगप्रदाहृस्वापांडुरापापहारिणी पीतापुत्रप्रदानित्यंलक्ष्मीशांतिप्रदातथा॰
नीलावक्त्रप्रदाज्ञेयातथावैकांतिदायिनी पुष्टिवृद्धिप्रदाश्यामाश्वेतासात्विकदायिनी नेत्रेउन्मीलितेयस्याप्रदक्ष

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कमंडलुः कपिलाख्या भवेन्महाज्ञानैश्वर्यप्रदायिका कामप्रदायी काचाभा हर्षाभा पशुदायिका रक्ता रोगप्रदा
नित्यं मिश्रा मिश्रफलप्रदेति ताम्राख्यापि शिलास्तत्रैवोक्ताः ताम्रां शिलामतो वक्ष्ये पुराणब्रह्मन्समाहितः तिर्य
क्चक्रा परिज्ञाता ताम्रवद्दचक्रा तथैव च कूरापि संपरिज्ञाता स्फोटाद्दृश्या तथैव च कद्रूपा निष्ठुरा ऽज्ञाता करालाविक
रालिका कपिला विषमावर्त्ता व्याला स्या कोटरा तथा आसने च लना भग्रा महास्थूला विगर्हिता आसने स्वपि वेश्य
ल॰प्र॰ १६३ 193 स्याद्भक्तेरोकेन संयुता दंष्ट्रावक्रचक्रा लग्नचक्राप्यधोमुखी छिद्रादाया स्तब्धका च ब्रह्मचक्रा विभीषणा चक्रेणाद्य
न चक्रा च ह्रस्वचक्रा प्रकीर्त्तिता वक्रैवासमा युक्ता भग्नचक्रा तथैव च दीर्घचक्रा परिज्ञाता पङ्क्तिचक्रा विशेषतः म
स्तकास्या स्याच्चिरूपा च वर्ण्यहेतोः सदा बुधैः कूरादंष्ट्रा समायुक्ता स्फोटा या च बद्धदरसंयुता अविराल् शुष्कतोयातिश
यालिमं तत्र वंदने सा त्याज्येति विशेषः कद्रूपा कुत्सिताकारा निष्ठुरा निर्द्दवा स्मृता सर्वेष्टनं तदीयांशमात्रेण
स्याः शुभादिसा तस्मादधिकचक्रा च करालेति प्रकीर्त्तिता तदीयांशस्य तर्यांशः तदीयांशस्य संयुक्ता विकरा
लिका संख्याता स्यात्परिज्ञेया वेष्टनद्याष्टभागः व्याला स्याच्चाधिके ज्ञेया ह्रस्ताधिकेन तु कोटरा स्थूला लालनष्टांगुला
यामा स्वजकसांगुलेन तु अधिके तु महास्थूला तां स्पृष्टीन तु पूजयेत् अधोमुखी तु पत्ता स्यात् ऊर्ध्वास्या चापि निंदिता
तिर्यक्चक्रान्विता दयाद्भ्रमणक्लेशसंयुतं कूरा रोगप्रदा नित्यं स्फोटा दाचापु विनाशिनी लग्ना चोद्वेगदा नित्यं दः

१६३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

खवाभिष्टदायिका कुरूपादैन्यदाचैवनिष्ठुरापुण्यनाशिनी भग्नासंतापमोक्षा छिद्राचैवकरालाभयदायिका पे
ह्लिकामुक्तिकंदंतिविकरालासभावतः कपिलापतिहानित्यंज्वालासाजयनाशिनी कोटराश्चजकंदंति
तथाबंधुविनाशिनी आसनेवलनानित्यंप्रवासदुःखप्रदायिनी भग्नाधनहरानित्यंमहास्थूलाक्षयप्रदा गर्भि
नाधापदाप्रोक्ताकिर्तिहासुषिरासना एकचक्राकुलश्रीमामलकासाचपुत्रदा दंष्ट्राकुत्सदाज्ञेयावज्रचक्रा
भयप्रदा वज्रबिंदुनाप्रदाछिद्रालयावोपापप्रदाहिंसा अधोगतिप्रदाज्ञेयानथैवाधोमुखीनसा वज्रचक्रान्वपंह
तिपशोत्त्रीवक्ररेखिका एकिचक्रापतिदंतिसुदूरचक्राश्रदूरवपी अविफ्लानिष्फलाज्ञेयानिराशांचप्रदायिनी
पृषाणगर्हिताप्रोक्तानांशरीतेनपूजयेदिति अत्रवहुचक्रायत्वाधापाउग्रचक्रान्वधोमुखि पूजयेद्यः प्रमा
देनदुःखमेवलभेनसततायुक्तशालग्रामशिलादोषप्रतिपादकानिवचनानिसकामार्चनविषयाणि क
गालंचतिर्यक्चक्रेविदिक्मुखमिमुपक्रम्य पूज्यायावर्जनीयंस्यात्रिःकामस्यतेडष्यतीसंनेबलांडपुराणेउ
पसंहृतवान् ततोत्तममूर्तिपूजनेनैवफलप्राप्तेस्तु स्त्रियापूज्यमानन्थाप्रमुक्तातथाचसमचक्रिका कोणिमू
र्त्तिरंतेताख्यागंभीरासंपदातथा तथाचसत्समूर्तिश्च सम्मुखीसिद्धिदायिका धात्रीफलप्रमाणाप्याकारेण
भयसंप्रदा पूजनीयाप्रयत्नेनसर्वसिद्धिप्रदायिका पूजिनेफलमाप्नोतिइहलोकेपरत्रचेइति शिवार्चनचंदि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कायामग्निपुराणवचनात् अथवा गृहिविषयत्वेन योज्यानि भग्नं विषममानं चलं ग्रवक्रैकचक्रकं कपिलं न॰
सिंहं च वर्जयेद्ब्रह्मसदा गृहीति वृद्धपुराणवचनात् अधिकेन महास्थूलानां गृहीतेन पूजयेत् शेषाणां गर्हिता
प्रोक्तानां गृहीतेन पूजयेदिति स्मृत्यन्तरवचनाच्च अथवा सम्यक्शालग्राममूर्तिसंभवविषयत्वेन योज्यानि न
ल. प्र. १९४ 195 हि संभवेत् शालग्रामपूजायामनिष्टजनात् तत्त्वायाः निंदिता अपि शालग्राममूर्तयः पूज्याः सम्यक्शिलाद्य
लाभे सम्यग्लक्षणादयो मताः सम्यगभावे त्वसम्यगपि पूज्या अस्य च अन्ते पूज्यैरिति वचनात् खण्डितं स्फुटितं भग्नं पा॰
र्श्वभिन्नं विभेदितं शालग्रामसमुद्भूतं शैले दोषावहं न हीत्यादिवचनैः खंडितस्फुटितादीनां शालग्रामशिला
नामनन्तमशिलामूर्त्यभावे दोषाभावस्यैवोक्तत्वादित्यास्तां तावत् इति शालग्रामशिलामूर्तिसामान्यलक्षणं
अथ शालग्रामचक्रलक्षणं वैखानससंहितायां नारद उवाच मन्त्राचलपरं रूपं चक्राणां लक्षणं शुभं सर्व
सिद्धिकं चैव सर्वकामार्थसाधकं वैखानस उवाच दिव्यवर्षसहस्रं तु हरिराराधितो मया ततस्तुष्टो भग
वान् विष्णुस्त्रिभुवनेश्वरः वरं वृणीष्व प्रीतोस्मि तपसा तव सुव्रत इत्याकर्ण्य मया देवो विज्ञप्तो भुवनेश्वरः
शालग्रामसमुद्भूतचक्राणां लक्षणं प्रभो कथयस्व प्रसादेन यदि तुष्टोसि माधव ततस्तु तान् वचो मह्यं
स्मयमानोब्रवीदिदं विष्णुरुवाच लक्षणं यत्तु चक्राणां तच्छृणुष्व महामुने धर्मार्थकाममोक्षाणां पुरः॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पार्श्वेकदंबकं केचिल्लांछनसंयुक्ताः शंखाकारेण संस्थिताः केचिल्लिंगसमोपेताः केचिच्चक्रेण संयुताः
दशयोजनविस्तीर्णमिमं सेतुं द्विजोत्तम उत्तरे चैव दिग्भागे प्रमाणं योजनं तथा नीलपर्वतनाम्नात्र चक्रना
मा किनानदी विस्तृता मांशकोट्यानि मम रूपाणि सर्वतः त्रिकालशिखराकुठेप्सरोगणसेवितः त्रय
स्त्रिंशत् चक्रकोटिभिर्दैवतानां निषेवितः शैलमूर्ध्नि स्थितं तत्र अव्यक्तात्मिचपूर्विडः मंदारपुष्पसहितैर्विलो
रंजीविधायवे उपचारैरितिशेषः गंधर्वैर्विविधैश्चैव सत्यमधुसूदनं गंधर्वैः गीतनृत्यादिभिः भोजनैश्च
बलिंदत्वा चक्रमालाहृदे विति मत्स्यांकितास्त्वये चक्राश्चापुष्टीः पुष्टिदानृणां सदापूज्या गृहस्थेन संनिधा
नेत्रकेशवः कूर्मांकितास्त्वये चक्रा महासंततिकारकाः महार्थकारकादिव्या हरिस्तत्र व्यवस्थितः वरा
हमूर्तिसंयुक्तं यदि चक्रं तु दृश्यते पूजनाल्लभते राज्यं पृथिव्यामेकराजकं नरसिंहांकितं चक्रं दुर्लभं भुवि
मानवैः शत्रूणां नाशनं हृद्धि क्लेशघ्नं परिकीर्तितं लभनंभपरसैन्यस्य महामस्तुहरपरं श्रीकितवामनेन
एणाच्चक्रं परमशोभनं नानावृद्धिकरं चैव तदनायं तथ भवेत् चक्रमध्ये तु दृश्येत परशुरामस्वरूपकं तत्त
न्नामांकितं चक्रं जामदग्न्यप्रकीर्तितमिति इतिशालग्रामचक्रलक्षणं अथशालग्राममुद्रालक्षणं वैखा
नससंहितायां ब्रह्मोवाच भगवन्देवदेवेश शंखचक्रगदाधर संशयं मे समुद्भूतं छेत्तुमर्हसि वै विभो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ प्र॰ १९५

195

शालग्रामस्यमूल्यंहेदेवत्रैलोक्यविश्रुतं तत्रतिष्ठेद्धरिः साक्षात्सर्वदेवैः समन्वितः तत्रोत्पन्नाः शिलावि
ष्णोः सूक्ष्माः सूक्ष्मतरास्तथा प्रादुर्भावैश्चविविधैराकारैश्चसमन्विताः आपूर्वाः कामदाः श्रेष्ठाभोगमोक्षप्र
दास्तथा शस्ताश्चाशस्ताश्चतथापन्नदाख्यातुमर्हसि श्रीभगवानुवाच शृणुब्रह्मन्प्रवक्ष्यामिशालग्रामगि
रिर्हरिः यस्मात्हरिः स्थितस्तत्रप्रादुर्भावैरनेकशः लक्षणैर्विविधाकारैर्लांछितैश्चैवषट्पदे शैलसू
क्ष्मंवास्मदैकापरिकीर्तिता एकापद्मांकितायातुदक्षिणावर्तसंस्थिता चक्रलांछनसंयुक्ताभोगमोक्षप्रदा
शुभा पद्मयुग्मेसंस्थितेद्वेनाभ्यांचसंहतेस्थिते केनापिलांछनेनैवचतुर्वर्गफलप्रदा लांछनेनयुक्तेति
श्यामार्धसंश्रयः चक्रेणकेवलेनायाचपद्मेनगदयांकिता तत्रश्रीः सम्प्रहृष्टातिष्ठेत्सदासंपदमाविशत् के
वः शंखः लांछनेनविनायासादप्रशस्तातुसास्मृताचक्रेवाकेचलेपद्मपद्मेवाप्यथवागदा लांछनेवन
मालावाहरिर्लक्ष्म्यासहस्थितः तस्मिन्गृहेनदारिद्र्यंनशोकोनोरोगाद्भवं नचौराग्निभयंनत्रयहैडिष्टैर्नवाप्य
ते श्रुंतेमोक्षोभवेत्तस्यपूजनाद्देवनिश्चयः केवलंपद्मसंयुक्तायासावैकुंठउच्यते योगाकृतिर्वराहाख्या
चक्रलांछनसंयुता चक्रेणदृश्यतेलिंगंतदानवन्तशोभना वाराहमूर्तिसंयुक्तासर्वकामफलप्रदा दृष्ट्या
त्सामोक्षसंसिद्धिंब्रह्मचर्येणपूजिता वनमालांतवैयस्यामत्स्यचक्रमंडलः कपिलाख्याभवेन्मुद्रायते

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्वर्यप्रदायिका कोटराख्या सविकृता नृसिंहमुखलांछना पाशांकुशगदाचक्राण्येषामेकेन लांछिता ना
रसिंही भवेन्मुद्रा भोगमोक्षप्रदायिका दर्शनात्क्षयते पापं ब्रह्महत्यां व्यपोहति सांनिध्यान्मंत्रसर्वेण स्रज
नेन फलाधिका स्थूलचिह्नांकिता या च कलशेन समन्विता स्थूलचिह्नमुखं यस्याः कलशेन समन्विता त्र
तिपादांतरं वैनेनेयाः सदा तत्र केन चिल्लक्षणान्विता साजया व्योपरा मुद्रा चतुर्वर्गफलप्रदा मीनादिकूर्म
संयुक्ता सर्वकामार्थसंयुता पद्मासनस्था या मुद्रा सर्वकामप्रदा शुभा एकैकेनैव चिह्नेन लांछिता तेन शास्यते
अष्टाकृतिस्तथा मुद्रा साक्षमालासपुस्तका पद्मांकिता भवेन्मुद्रा हयग्रीवेति विश्रुता भूयः शंखोद्भवो यस्मको
नरः पापान्मुच्यते श्रद्धया च भवेत्तस्य लक्ष्मीरैश्वर्यमुत्तमं श्याउकलांछनाः सर्वे यस्यामेकत्र संस्थिताः सर्व
यस्यामेकत्र संस्थिताः सर्वत्र सर्वदा मुद्रा मुच्यते सर्ववंधनैरिति पुराणसंग्रहे मत्स्याता कूर्मसंयुक्ता कू
र्मी व्योमन्स्यसंयुता पद्मासनस्था सा मुद्रा अर्थकामफलप्रदा ततो नाम्नूर्जितस्तोम्यलांछिता नैव शास्यते यो
गा रूपैर्वराहाद्यावतारैर्लांछनसंयुता दयात्सामोत्क्षसंसिद्धिर्बलचर्पणमूर्जिता नेत्रे संमीलिते यस्या पद
त्वंकमंडलुः कपिलाख्या भवेन्मुद्रा ध्याने श्वर्यप्रदायिका स्थूलचिह्नमुखं यस्याः कलशेन समायुतं वैन
नेया भवेन्मुद्रा लांछनैश्च समन्विता पूजिता सा भवेन्नूनं भुक्तिमुक्तिफलप्रदेति प्रयोगपारिजाते पि किंचि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ प्र॰
१६८
198

त्समर्चयते पांचजन्यांकितायातपद्मेनगदयायुता तत्रश्रीः प्रत्यहं तिष्ठेत्सदासंपदमादिशेत् पांचजन्यः शंखः
जपाख्यापरमामुद्राचतुर्वर्गफलप्रदा एषोवैकेनचिह्नेनलांछितावैवदृश्यतइति इतिशालग्राममुद्रालक्ष
णं अथक्षेत्रलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे कपिलेनारसिंहेत्ववामनेत्वसितप्रभो दामोदरेत्तुनीलाभमनिरुद्धंतथै
वच प्रद्युम्नेनारायणे क्षेत्रे कृष्णवर्णेतुवैलवं वज्रवर्णमनन्तेश्रीधरंपीतमुच्यते नृसिंहपुराणेपि वासुदेवे
सितंज्ञेयंरक्तंसंकर्षणेतथा दामोदरेतुनीलाभं अनिरुद्धंतथैवच प्रद्युम्नेनारायणे क्षेत्रमेवंचमुनिपुंगवेति
नारदंप्रतिब्रह्मणोवचनात् पुराणसंग्रहेपि वासुदेवेसितेविद्यात्रक्तंसंकर्षणेतथा दामोदरेचनीलाभम
निरुद्धंतथैवच प्रद्युम्नेनारायणेतद्वत्तथाकृष्णंचवैलवं हृषीकेशमनन्तेचश्रीधरंपीतमुच्यते इतिक्षेत्रल
क्षणं अथशालग्रामचक्रलक्षणं हेमाद्रौपुराणान्तरे वृत्तस्त्वाष्टमोभागउत्तमंचक्रलक्षणं मध्यमंतच
तुर्भागः कनीयस्तुत्रिभागिकमिति इतिचक्रलक्षणं अथशालग्राममूर्तिविशेषलक्षणप्रकरणं तत्र
तावत्स्थूलचक्रोभवेद्विलमौत्तेकफलदोर्चितः लक्ष्मीनारायणः श्रीमान्भुक्तिमुक्तिफलप्रदः दधिवाम
नसंज्ञः स्याज्ज्ञेयोमूर्धात्प्रधनप्रदः सःस्यात्सनातनगोपालः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदइत्यादिवचनैर्विष्णुलक्ष्मीनाराय
णदधिवामनसनातनगोपालादिविशेषमूर्तीनांनानाविधफलविशेषदातृत्वेनतत्तत्कामनयापूज्यत्वात्ता

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सांच स्थूलचक्रो भवेद्विस्तरिन्यादिवचनोक्तमूर्त्तिविशेषसूचकलक्षणैर्विना दुर्ज्ञेयत्वात् मूर्त्तिविशेषज्ञा
नमंतरेण च पूजनासंभवाच्च तत्तन्नानार्थं विशेषलक्षणमुच्यते तत्रादौ मत्स्यादिदशावतारमूर्त्तिलक्ष-
णमुच्यते तत्र मत्स्यमूर्त्तिलक्षणमुक्तं चाग्नेये दीर्घा चक्राच वर्णा या बिंदुत्रयविभूषिता मत्स्याख्या सा शि-
ला ज्ञेया भुक्तिमुक्तिफलप्रदेति हेमाद्रौ पद्मपुराणे अथो मत्स्यादयः प्रणामाः द्विचक्राः सांकसंयुताः तेषां
संदर्शनादेव सर्वकामानवाप्नुयात् तथा मत्स्यरूपं तद्देवस्य दीर्घाकारं सुपूजितं बिंदुत्रयसमायुक्तं काच-
वर्णं सुशोभनमिति ब्रह्मांडपुराणे दीर्घाहारा सुता स्निग्धाद्वारमध्ये द्विचक्रयुक् चक्रमेकं पुच्छभागे दक्षिणे श-
फराकृतिः वामे मद्दर्शने रेखा मत्स्यमूर्त्तिः शुभप्रदेति पुराणसंग्रहे बिंदुत्रयसमायुक्ते चक्रे वा शंखलांछ-
भागे दक्षिणे शफराकृतिः वामे मद्दर्शने रेखा मत्स्यमूर्त्तिः शुभप्रदेति पुराणसंग्रहे बिंदुत्रयसमायुक्ते च
क्रे वा शंखलांछने दीर्घं दक्षिणमास्यं तु मात्स्ये चक्रसमीपगामिति इति मत्स्यमूर्त्तिलक्षणं अथ कूर्ममूर्त्ति
लक्षणं पद्मपुराणे कूर्माकारा चक्रांका शिला कूर्मः प्रकीर्त्तितः इति आग्नेये कूर्मस्तथोन्नतः पृष्ठे वर्त्तुलः
पवित्रितः हरितं वर्णमाधत्ते कौस्तुभेन च चिह्नितः इति पुराणसंग्रहे तन्नलक्षणसंयुक्तं भानोर्वलयपंचकं
कूर्मरूपमवक्रं च दुर्लभं सर्वकामदमिति ब्रह्मांडपुराणे तु विशेषः चक्रद्वौ कूर्ममूर्त्तिः स्यात्पार्श्वभागे तु रेखा.

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
१८०
191

न्वितः विख्यातो दुर्लभः सर्वमनोरथफलप्रदः बिंदुत्रयान्विता शंखचक्रध्वजयुतापि वा बिंदुत्रयान्विता सौवर्णा
बिंदुत्रययुक्ता पत्रकृतापि विबिंदवः सौवर्णाः ज्ञेयाः कत्र बिंदुवचनेन राजतास्ताम्राः दीर्घदक्षिणवामास्याभानोर्व
लयपंचकैः भूषिता कूर्ममूर्तिः स्यात् दुर्लभा सर्वकामदा वर्तुलापि ता कूर्ममूर्तिः कनकच्छविसंयुता स्वदक्षिणा
कृतिर्वापि चक्रस्तोमयपार्श्वतः कूर्ममूर्तिः खगेशान सर्वकामफलप्रदा वर्तुला सुशालाकारा दीर्घद्वारा तवे^
रवा नाभिचक्रयुता रम्या कूर्माकारा तत्पार्श्वतः तथा स्थिरासना चरणाङ्कितानीललोहिता कूर्ममूर्तिरिति विख्याता
पुत्रपौत्रादिवृद्धिदेति नाभिचक्रयुतेत्यत्र चक्रद्वयमेवात्र संधेयादि चक्राः स्तोकसंयुता इति पूर्वोदाहृतप
मपुराणवचनात् इति कूर्ममूर्तिलक्षणं अथ वराहमूर्तिलक्षणं पद्मपुराणे वाराहः सोपि विज्ञेयश्चक्रे
पद्मसदृशे तस्य संपूजनाद्देही प्राप्नोति मनसेप्सितं तथा वराहकृतिर्नाम ग्रंथ्याकारादिभिरलंकृतः वराह
इति स प्रोक्त इति ब्रह्मपुराणसंग्रहविस्तरोकेच वाराहं शक्तिलिंगं च चक्रे तु विषमे स्मृते इंद्रनीलनिभं स्थू
लं त्रिलेखालांछितं शुभमिति विषमेत्र समसत्त्वगते ब्रह्मपुराणेऽत्र वाराहमूर्तेर्द्विविधत्वमुक्तं वराहमूर्ति
र्द्विविधा भिन्नलक्षणयोगतः वराहः शक्तिलिंगस्तु चक्रेण विषमे स्मृते इंद्रनीलनिभः स्थूलस्त्रिलेखालां
छितः शुभः दक्षपक्षगते चक्रे समचक्रप्रदेशतः वनमालायुतो लक्ष्मीवराहः परिकीर्तित इति इति वरा

हमूर्त्तिलक्षणं अथ नृसिंहमूर्त्तिलक्षणं तत्रादौ लक्ष्मीनृसिंहमूर्त्तिः मूर्त्तिलक्षणम् मार्कण्डेयपुराणे संग्रहे वामपार्श्वस्थि
ते चक्रे कृष्णवर्णे सबिन्दुकः लक्ष्मीनृसिंहो विख्यातो भुक्तिमुक्तिफलप्रद इति ब्रह्मपुराणे नरसिंहस्त्रिबिन्दुः स्यात्क
पिलः पञ्चबिन्दुः कवामाश्रिते पृष्ठे लेन्तु लक्ष्मीनरहरिः स्मृत इति तथा च नरसिंहपुराणे वामपार्श्वे समे चक्रे
कृष्णवर्णे सबिन्दुके लक्ष्मीनृसिंह आख्यातो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः अत्र पानसमृद्धिश्च सौख्यं सौभाग्यवर्धन इति
इति लक्ष्मीनृसिंहमूर्त्तिलक्षणं अथ कपिलनृसिंहलक्षणं पद्मपुराणे नृसिंहः कपिलो ज्ञेयः स्थूलवक्त्रो
रद्दंष्ट्रया त्रिबिन्दुः पञ्चबिन्दुर्वा ब्रह्मचर्येण पूजितः हटात्तिवाछितं न रणम चोचं चाशु नश्यति अन्यथा जायते
क्लेशो नात्र कार्या विचारणेति अग्निपुराणे नृसिंहः कपिलः स्थूलचक्रः स्यात् पञ्चबिन्दुक इति वैखानस
१५८ संहितायां कपिलो नरसिंहस्तु एकचक्रः सुशोभनः ब्रह्मचर्याधिकारोऽस्ति नान्यथा पूजनं भवेदिति ब्रह्मा
५.३. ण्डपुराणे विहृतास्यवामचक्रं वर्तुलं कपिलप्रभं नारसिंहं गृहस्थानां भीतिदं बिन्दुभिर्हीनमिति पाद्मे कार्त्ति
कमाहात्म्ये च पस्पर्शे विभुर्यत्पूर्वं कथितं लक्षणे इति रक्ताभकेसराकारो नारसिंहो मतो हि स इति तथा चैत
त्पूजने फलमपि स्फटिके विषमचक्रं नारसिंहं तु कापिलं संपूज्य मुक्तिमाप्नोति संग्रामे विजयी भवेदिति इति
कपिलनृसिंहमूर्त्तिलक्षणं अथ योगानृसिंहलक्षणं ब्रह्मपुराणे स्थूलचक्रं हृदयमध्ये ... लाङ्गलाभवर्णकं द्वा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
१९८
198

योगस्थारेत्वा नरसिंहो योगसंज्ञक इति ॥ इति योगनरसिंहलक्षणं ॥ अथ विदारणनरसिंहलक्षणं ॥ ब्रह्मचर्याविपाके न
नरसिंहो छिन्नो यदि वा दिशेत्तु भयं न सवकृन्नादस्ततेशष्टमिति ॥ अत्रापि चक्रद्वयमेव यत्र कृत्वाप्यनुकस्थले च
क्रद्वयमेव तेषमिति सामान्येनोक्तत्वात् ॥ इति विदारणनरसिंहलक्षणं ॥ अथ सर्वतोमुखनरसिंहलक्षणं ॥ तत्रैव
समचक्रं वज्रमुखं समंतात्स्वर्णभूषितं सर्वतोमुखवज्रदंष्ट्रोवर्णोत्तमो ह्ययमिति ॥ अन्यत्रापि समचक्रः
समाख्यातो नरसिंहः सर्वतोमुख इति ॥ इति सर्वतोमुखनरसिंहलक्षणं ॥ अथ पातालनरसिंहलक्षणं ॥ ब्रह्माण्ड
पुराणे वज्रचक्रं वक्त्रहीनं वज्रवर्णं महोदरं ॥ पातालनारसिंहाख्यं भित्तूणामसृतप्रदं तथा तृतीयचक्राद्या
रभ्य पार्श्वतो दशचक्रकः ॥ पूर्वोक्तविहीनस्थवक्त्रप्रधरो भवेत् ॥ पातालनरसिंहो वा वक्त्रप्रधरो भवेदिति ॥ इति
पातालनरसिंहलक्षणं ॥ अथाकाशनरसिंहलक्षणं ॥ तदप्युक्तं तत्रैव ॥ अस्पष्टचक्रमध्यस्थमलभारं महोदरं ॥ आका
शनारसिंहाख्यं वनवासिभिरर्चितमिति ॥ इत्याकाशनरसिंहलक्षणं ॥ अथ रात्रमुखनरसिंहलक्षणं ॥ तत्रैव वज्र
छिद्रं भिन्नवक्त्रं स्वर्णकनकाचितं ॥ छिद्रं तु रात्रसंज्ञेयं नरसिंहं गृहदाहकं ॥ स्वर्णशोभनो वर्णीयस ॥ इति रात्र
मुखनरसिंहलक्षणं ॥ अथ जिह्वानरसिंहलक्षणं ॥ तत्रैव ॥ द्विचक्रं द्विमुखं स्थूले ह्नामचोन्नतेशिरः दारिद्र्यफलदं पु
सा विद्युज्जिह्वानरसिंहकमिति ॥ इति जिह्वानरसिंहलक्षणं ॥ अथाधोमुखनरसिंहलक्षणं ॥ तत्रैव पुरः पार्श्वे च द्व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऐरावतैरप्युपशोभितं अधोमुखमिति विख्यातमर्चकानां विमुक्तिदमिति अत्र चक्रपत्रयं पंकपुटः पंकपार्श्वे
पंकं पृष्ठे चक्रैरित्यत्र बहुवचननिर्देशात् बहुवचनं तु कपिंजलाधिकरणन्यायेन त्रित्वपर्यवसन्नं अ-
धोमुखत्वेन सिंहस्य शिशुमारस्तथैव च त्रिविक्रमो मत्स्यमूर्तिश्चिचक्राः परिकीर्तिता इति संप्रदायवित्स्म-
रणाच्च इत्यधोमुखत्वेन सिंहलक्षणं अथ ज्वालानृसिंहलक्षणं तत्रैव स्तम्भांशे द्विचक्रार्ध्यं वनमालावि-
भूषितं तज्ज्वालानरसिंहाख्यं स्मरणात्संसारमोचनमिति इति ज्वालानृसिंहलक्षणं इति नृसिंहभेदाः अथ-
वामनमूर्तिलक्षणं पद्मपुराणे वामनाख्यो भवेद्देवो ह्रस्वोऽयः स्यान्महाद्युतिः ऊर्ध्ववक्त्रस्त्ववक्त्रो वा सोऽपि सा-
र्धचक्रोदरणमिति बालपुराणसंग्रहे विलुप्तोऽकेश वर्तुलस्थानि ह्रस्वश्च वामनः परिकीर्तितः अतसीपुष्पसं-
काशो बिन्दुनोपरिभूषितः अन्यत्रैव वामनाख्यो भवेद्देवो ह्रस्वोऽयः स्यान्महाद्युतिः ऊर्ध्वचक्रोऽथ पञ्चक्रः
सोऽभीष्टार्थप्रदो विनतः इति तथास्य पंचविधत्वमपि स्मर्यते ब्रह्माण्डपुराणे अतसीपुष्पसंकाशो बिन्दुनोपरिशो-
भितः यो वामनाभिधो देवः श्वेतबिन्दुयुतो मुखात् अपि वामनसंज्ञः स्यात् श्रीभूधान्यफलप्रदः वर्तुले त्रिगुणसमं
तस्य च वक्त्रसमन्वितं ह्रस्वमत्र तस्यैवोर्ध्वदीर्घरेखा मतिगह्वरं स्फुरद्देहावलयितं नाभिस्थाने ज्ञातो भवेत् तस्यैवो-
भयपार्श्वे तस्य दक्षिणे वा कृतिर्भवेत् केसराभं तत्रैव तार्क्ष्यदक्षिणे चक्रपार्श्वतः वामने शुद्धिलांशेष्टं सर्वसौभाग्य

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

संपदः शङ्खचक्रान्वहस्तं च मुक्ताभं दिशानिशं मध्यचक्रं वा निष्कलमतिस्त्रिपञ्चकामदं स्पष्टचक्रं वामनं च नराणां
श्रीभिनदायकं अतसीकुसुमप्रख्यं किंचिद्वृत्तमलकं तद्धामनं कामदं स्यात् किंचित्स्पष्टचक्रकं वर्तुलं नीलमे
घाभं वनमालासमन्वितं स्पष्टमर्धं शङ्खस्फोटिकं वामनं सुविद्युल्लभमिति इति वामनमूर्तिलक्षणं अथ परशु
ल॰प्र॰ राममूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे पीतस्थकपरशुलाङ्गलेन सुलक्षितः रामो रामश्च रामश्चेत्येवमस्मृहराः क्र
१९९ मादिति तथा च ब्रह्माण्डपुराणे जामदग्न्यस्तु भगवान् द्विविधः परिकीर्तितः नितकुन्तावृतोपेते दीर्घिका
199 रेखाद्वितये भितिभागगतं चक्रं वामे वा दक्षिणेऽपि वा चक्रभागे भवेद्बिन्दुः परश्वाकृतिकेन वा पृष्ठे वा पार्श्वभा
गे वा रेखा दंष्ट्राकृतिर्भवेत् जामदग्न्यस्तु भगवान् शान्ताख्यः शान्तिदो चिन्त्य इति इति परशुराममूर्तिलक्षणं
अथ राममूर्तिलक्षणं ब्रह्मपुराणे रामचन्द्रस्तथा स्निग्धो हरीमश्चक्रशोभनः पृष्ठे देशे तथा पार्श्वे रेखाद्वयेन
संयुत इति तत्राद्यो रामभेदाः तत्र सीतारामो द्विविधः स चोक्तो ब्रह्माण्डपुराणे एकस्मिन्नेव वदने च तस्य कौ
स्तुभप्रभः चापवाणाङ्कुशाछत्रध्वजचामरसंयुतः वनमालाधरो देवः सीतारामः प्रकीर्तितः सर्वसौभाग्यद
श्चोक्तः सर्वत्र विजयप्रदः हारहृदये च तस्यक्रो वामतश्चैकचक्रवान् वाणाकृतिरुचापाद्यः सीतारामः स्मृतस्त्वि
तः सर्वसौभाग्यदश्चोक्तः सर्वत्र विजयप्रद इति इति सीतारामलक्षणं अथ दशकण्ठकुलान्तकरामलक्षणं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ब्रह्माण्डपुराणे कोदंडांकुशकुठारांश भूषणमलं हृष्टमर्चितं रेखाद्वयसमोपेतं द्वारपार्श्वे त्रिवेणीमध्ये पद्माकृतिकारेखा
दृश्यते पार्श्वयोरपि वा हृष्टनाभवेद्वामो दशकंठकुलांतक इति इति दशकंठकुलांतकरामलक्षणं अथ वीरराम
लक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे बाणतूणीधनुःपाणिः कुंडली स्वक्षसमान्वितः सूक्ष्मस्तके सरचक्राद्यो वीररामः श्रियाव
ह इति इति वीररामलक्षणं तत्रैव पृष्ठभागे पंचरेखाश्चापबाणौ च पार्श्वयोः बलरामः स विज्ञेयः पुत्रदायी
न संशय इति इति बलरामलक्षणं अथ विजयरामलक्षणं तत्रैव दिव्यबाणेन संयुक्तश्चापतूणीरसंयुतः
करालवदनो यस्तु बिंदुयुक्चक्रशोभितः स स्याद्विजयरामाख्यः केसरोपेतचक्रक इति इति विजयरामलक्षणं
अथ हृष्टरामलक्षणं तत्रैवोक्तं मूर्ध्निजालयुतवर्णः पार्श्वे त्विषयुतस्तथा हृष्टराम इति ख्यातो भुक्तिमुक्तिफल
प्रद इति इति हृष्टरामलक्षणं अथ कोदंडरामलक्षणं तत्रैव धनुषैकेन संयुक्तो वर्तुलः किंचिदायतः कोदंडरा
मनामासौ स्यान्नवनीलाब्दप्रभ इति इति कोदंडरामलक्षणं अथ कवित्वप्रदरामलक्षणं तत्रैव एकचक्रस्तु वद
ने कृष्णवर्णः सुशोभनः स राममूर्तिर्विज्ञेयो पूजकस्य कवित्वद इति इति कवित्वप्रदरामलक्षणं इति रामभेदाः
अथ कृष्णमूर्तिलक्षणं पाद्मपातालपुराणसंग्रहे नृसिंहपुराणे च प्रदक्षिणावर्तकृतवनमालाविभूषिता याशि
कृष्णसंज्ञा सा धनधान्यसुखप्रदेति ब्रह्माण्डपुराणे समचक्रे द्वारदेशे कृष्णवर्णः सुशोभनः सा कृष्णमूर्तिर्विज्ञेया पु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिनाभो व्यवदायिनी तथा कृष्णः पीतः कृशतनुर्भिन्नपार्श्वे तु चक्रयुक् द्वारं तु लोमभेव नाभिः कूर्माकारस्तु पृष्ठतः
कृष्णो हन्ताकृतिर्लांछः सर्वेषां पापनाशन इति पीतः पीतविन्दुयुक्तः विन्दुश्चात्र पीतोऽत्र विन्दुरेखादिर्तेयं इति कृष्णमू
र्त्तिलक्षणं अथ कृष्णभेदाः तत्र गोपाललक्षणमुक्तं ब्रह्मांडपुराणे कृष्णो नितकृष्णो न स्थूलश्चक्राभ्यामुपशोभितः व
ल॰ग॰ २०० नमालायुतः पृष्ठे श्रीवत्सपद्मलांछनः दंडशृंगयुतः पार्श्वे वेणुनादोभितो भवेत् स गोपाल इति प्रोक्तो गोभूधाम्नप
२०० नप्रद इति इति गोपाललक्षणं अथ मदनगोपाललक्षणं तत्रैवोक्तं यो गोपालः पार्श्वभागेन रंध्रयुक्तः स्वकालिमाकृ
२०० ष्णस्तु मदनगोपालो मालाकुंडलभूषितः पुत्रपौत्रधनैश्वर्यं सर्वलोके च वश्यप्रद इति अत्र पंचमूर्त्तिभेदे च क्रमादितो
क्तं तत्र तत्कृष्णमूर्त्तिलक्षणं केशवामावं ग्राह्यं इति मदनगोपाललक्षणं अथ स्नानगोपाललक्षणं तत्रैव
दीर्घाकारः कृष्णवर्णः सार्धचंद्रनिभाननः स स्नानगोपालः पुत्रपौत्रादिवृद्धिद इति इति स्नानगोपाललक्षणं
अथ बालकृष्णलक्षणं तत्रैव काममूर्त्तिस्तु कृष्णाभो निम्नो यस्तात्रिविंदुकः स बालकृष्णो विज्ञेयो दीर्घास्यः पुत्रभा
ग्यद इति इति बालकृष्णलक्षणं अथ गोवर्द्धनगोपाललक्षणं तत्रैव वर्तुलो मस्तके निम्नः पार्श्वे रजतविंदवः
गोवर्द्धनाख्यो गोपालो दीर्घरेखा तु दक्षिणे सर्वकष्टविनाशः स्यात् गोधान्यादियनप्रद इति इति गोवर्धनगोपाल
लक्षणं अथ कालीयमर्दनलक्षणं तत्रैव रेखा स्यात् कृष्णवर्णा हि विंदुत्रयभूषितः कालीयमर्दनः साक्षात्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वैशत्रुनिकृंतनः सव्यापसव्ये खेटाभ्यां भूषितः खड्गचक्रकः पार्श्वे खेटयुतो देवो धनंजयप्रदः प्रभ इति काली
यमर्दनलक्षणं अथ स्यमंतहारिलक्षणं तत्रैव असिवर्णश्चनस्थलस्थकभागेति शोभनः वनमालापरिहृतः
वनमालापरिहृतः एवं श्रीवत्सलांछनः स्यमंतहारी विज्ञेयः पुत्रश्रीकीर्तिवर्धन इति इति स्यमंतहारिलक्षणं
अथ चाणूरमर्दनलक्षणं तदष्टके तत्रैव एकबिंदुहृदयप्रुतः प्रणम्योदंनिभुजोपमा खेटो दक्षिणेतो वामे
मुष्टिवज्रविडकः चाणूरमर्दनाख्यः स्यात्सर्वशत्रुनिकृंतनत्रुति इति चाणूरमर्दनलक्षणं अथ कंसमर्दन
लक्षणं तत्रैव पूर्वभागैकवदनः पार्श्ववबदने भवेत् कंसमर्दो भवेत्कृष्णो नीलोत्पुदनिभः प्रभ इति इति कं
समर्दनलक्षणं इति कृष्णमूर्तिभेदा अथ बौद्धमूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे अंतर्गर्भसंपुटके चक्रहीनेय
था भवेत् निर्वाणबुद्धसंज्ञः स्यात्तदानि परमेपदमिति इति बौद्धमूर्तिलक्षणं अथ कल्किमूर्तिलक्षणं ब्रह्मा
ण्डपुराणे अंतिरंके चक्रहीनं यथा भवेत् निर्वाणबुद्धसंज्ञः स्यात्तदानि परमंपदमिति सूक्ष्मबीजस्य षट्चक्रे स्थि
तासने कृपाणकृतिकारेखाहारसोपरिहृष्टके म्लेच्छनाशी भवेत्कल्किः कलौ कल्मषनाशन इति कृपाणः
खड्गः इति कल्किलक्षणं इति दशावतारमूर्तिलक्षणानि समाप्तानि अथ चतुर्विंशतिमूर्तिलक्षणमुच्यते
तत्रादौ केशवलक्षणमुक्तं पाद्मे ब्रह्माण्डपुराणेषु सौभाग्यं केशवो दद्याच्चतुः कोणो भवेत्तु स इति वैखान

सम्संहितायां नाभ्यपस्तु भवेच्छ्वेतस्त्रकं चतदनंतरं केशवः सतु विज्ञेयः सर्वकामफलप्रदइति इतिकेश अथ
नारायणलक्षणं आग्नेयपुराणे संग्रहवैखानससंहितायां श्यामोनारायणोदेवोनाभिचक्रस्तथोन्नतः दीर्घ
रेखासमोपेतोदक्षिणेस्वस्तिकान्वितइति ब्रह्मपुराणे श्यामंनारायणं विद्यान्नाभिचक्रेणतथोन्नतं दीर्घरेखा-
समोपेतंदक्षिणेसुषिरंस्थितिमिति ब्रह्मांडपुराणे श्यामोनारायणोदेवोनाभिचक्रस्तथोन्नतः दीर्घरेखात्रयो
ल॰ प्र॰ २०१ 201 पेतोदक्षिणेसुषिरंस्थितं विरजेसुशोभचक्रे मध्यचक्रः सुशोभनः नाटकनानाभरणहारकेयूरलांछनः नाराय
णः समाख्यातः सर्वसिद्धिप्रदायकइति इतिनारायणलक्षणं अथनारायणभेदास्तत्रलक्ष्मीनारायणलक्षणं
ब्रह्मपुराणे हारमेकंचतुश्चक्रं ब्रह्मादीनांचदुर्लभं शोभितोवनमालयेतिकविन्याढः लक्ष्मीनारायणोनामभु
क्तिमुक्तिफलप्रदइति पुराणसंग्रहे ध्वजवज्रांकुशंपीतंवामेचक्रेतुवर्तुलं लक्ष्मीनारायणंदेवमभीष्टफल
दंविदुः वामेश्रयः खंडेचक्राद्वयमुपर्यपि चचक्रद्वयमितिमर्थः तथाध्वजवज्रांकुशैः पीतोवामचक्रः सुवर्तुलः
लक्ष्मीनारायणोदेवश्चतुश्चक्रसमन्वितः पूजनीयः सदासद्भिर्वैस्त्रैर्मोक्षमीप्सुभिरिति ब्रह्मांडपुराणे एकवक्त्र
श्चतुश्चक्रोवर्तुलः श्यामवर्णकः ध्वजवज्रांकुशोपेतोमालायुक्तः सविंदुकः नातिह्रस्वोनचस्थूलोलक्ष्मीनाराय
णः स्मृतः तस्यदर्शनमात्रेणह्यभीष्टफलमाप्नुयादिति पद्मे चतुश्चक्रः सुलग्नहारोवनमालांकितोदरः लक्ष्मीना॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रायणः श्रीमान्भुक्तिमुक्तिफलप्रदइति वैखानससंहितायां विशेषः लक्ष्मीनारायणोदेवस्त्रिभिश्चक्रैर्व्यवस्थितः
पूजनीयः प्रयत्नेन भुक्तिफलप्रदइति पाद्मेकार्तिकमाहात्म्ये चत्वारिसूक्ष्मचक्राणिद्वारभागेभवंतिच तद्देव
नमालाचलक्ष्मीनारायणोभवेत् पूजनीयः सदाभक्तैर्भुक्तिमुक्तिफलप्रदइति इतिलक्ष्मीनारायणलक्षणं अ
थनरनारायणलक्षणं ब्रह्मांडपुराणे नरनारायणोदेवः श्वेतचक्रः सुशोभनः तमालदलसंकाशः स्वर्णपंक
विलेपनइति इतिनरनारायणलक्षणं अथरूपीनारायणलक्षणं तत्रैव मृणालापुष्पमालाभिः शंखचक्र
गदान्वितः रूपीनारायणोदेवोमुक्तिकामिभिरर्च्यतइति इतिरूपीनारायणलक्षणं इतिनारायणभेदाः अथ
माधवलक्षणं वैखानससंहितायां माधवोमधुवर्णाभोगदांकेनविलक्षितः ब्रह्मांडपुराणे मधुवर्णोमध्यच
क्रः स्निग्धसूक्ष्मतनुस्तथा माधवःसतुविज्ञेयोयतीनांमोक्षदायकइति इतिमाधवलक्षणं अथगोविंदलक्षणं
पुराणसंग्रहे गोविंदःपुंडरीकाक्षःकृष्णवर्णोमहाद्युतिः दक्षिणेनगदाचक्रेवामेपर्वतलांछनमिति ब्रह्मांडपुरा
णे नातिस्थूलःकृष्णवर्णोगोविंदःपंचचक्रकः वामकक्षोहरिद्राभउन्नतोमध्यनिम्नगइति इतिगोविंदलक्षणं अथ
विष्णुलक्षणं पद्मपुराणे स्थूलचक्रोभवेद्विष्णुर्मौलिकेकफलदोर्वितइति ब्रह्मपुराणे कृष्णवर्णस्तथाविष्णुःस्थूल
चक्रेसुशोभने हारोपवितयारेखाहरणेनमध्यदेशतः तथा कृष्णवर्णेनथाविष्णुस्थूलचक्रेसुशोभने गदाकारान

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तथा रेखा लांछनं मध्यदेशतः लांछनं चात्र पीतादिवर्णं आग्नेये स्थूलचक्रोऽसितो विष्णुर्मध्ये रेखा गदाकृतिरिति
पुराणसंग्रहे कृष्णवर्णस्तथा विष्णुः स्थूलचक्रः सुशोभनः यस्य मध्ये गदाकारा रेखा दृश्यते पंचरेखिका इति वैखानससं
हितायां कृष्णवर्णस्तथा विष्णुः स्थूलचक्रः सुशोभनः गदाकृतिस्तथा रेखा दृश्यते ह्युरुमध्यत इति ब्रह्माण्डपुराणे
ल-ग्र· सकापिलः स्निग्धवर्णो विष्णुर्विषभोगद इति इति विष्णुलक्षणं अथ मधुसूदनलक्षणं वैखानससंहितायां नाभि
२·२ पार्श्वे शंखपद्मे यस्य मुद्रा प्रदृश्यते मधुसूदन आख्यातः शत्रुहा परिकीर्तित इति ब्रह्माण्डपुराणे मधुसूदनो
२०२ महादेव एकचक्रो महाद्युतिः सुवर्णसमायुक्तो महातेजा वरदः शुभ इति इति मधुसूदनलक्षणं अथ त्रिविक्र
मलक्षणं त्रिविक्रमस्त्रिकोणः स्याद्दलमेव प्रपद्यते इति बालपुराणसंग्रहे वैखानससंहिताविष्णुप्रोक्तेषु त्रि
विक्रमस्तथा देवः श्यामवर्णो महाद्युतिः वामपार्श्वस्थिते चक्रे रेखा चैव तु दक्षिणे इति अग्निपुराणे श्यामास्त्रि
विक्रमो दक्षरेखो वामे चक्रिकक इति ब्रह्माण्डपुराणे न विशेषः त्रिविक्रमस्त्रिकोणाग्रपद्मक्रमसमन्वितः प्रयत्ने
न हि जेद्राणां सदा पूज्यः प्रयत्नेन नरैरिति इति त्रिविक्रमलक्षणं वामनो नारसिंहस्य हस्ते सप्तेऽति चयः पुरा उक्तत्वादत्र
नोच्यंते प्रभेदार्थं पुनर्भया अथ श्रीधरलक्षणं बालवैखानससंहिताविष्णुप्रोक्ताग्निपुराणब्रह्माण्डपुराणेषु श्री
धरस्तथा देवश्चिह्नितो वनमालया कदंबकुसुमाकारो रेखा पंचकसंयुतः कदंबकुसुमाकारो वर्तुलः स्मर्थः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अत्र सर्वत्र रेखाप्युक्तं तं द्वारोपरि ज्ञेयं द्वारोपरि तथा रेखा रेखात्रयं तथा द्वारे इति नत्र विशेषाभिनादिति नृसिंहपरि
चर्यायां पुराणसंग्रहे श्रीधरो मैन तथा देवश्चिह्नितो वनमालया कदंबकुसुमाकार मर्ध्वरेखाश्च पादयोरिति इति
श्रीधरलक्षणं अथ श्रीधरभेदौ द्वौ चोक्तौ ब्रह्मांडपुराणे चक्रे च मध्यदेशे तु पंकजेन समन्वितः सूक्ष्मानमः प्रणाम
लाभः सपुनः श्रीधरः स्तनः निम्नोन्नते शिरः पार्श्वे निम्ने दृष्टे नंतवर्तते निम्नवक्रमतिः सूक्ष्मं श्रीधरं सर्वसिद्धिदमि
ति इति श्रीधरभेदौ अथ हृषीकेशलक्षणं पाद्मब्रह्मब्रह्मांडपुराणेषु अर्धचंद्राकृतिर्दिव्यो हृषीकेश उदाहृतः
तमर्च्य लभते स्वर्गं विषयांश्च समीहितानिति वैखानससंहितायां सकारस्य निभाकारा रक्तस्य केशाः स्ववीसः वेश्म
कं यस्य दृश्येन हृषीकेशाः स उच्यते इति इति हृषीकेशलक्षणं अथ पद्मनाभलक्षणं ब्रह्मपुराणे आरक्तपद्म
भाश्चं पंकज छत्र संयुते तलस्थं पूजयेन्नित्यं दरिद्रस्त्वीश्वरो भवेदिति ब्रह्मांडपुराणे निःकेसरोर्ध्वचक्रस्तु अर्ध
चक्रः सकेसरः पद्मनाभ इति प्रोक्तो विपरीतो हलायुध इति एतस्यैव वक्रवचक्रवर्णसद्भावे पतनस्तु जनेउद्देफ
लं श्रूयते पद्मपुराणे वक्त्रभित्त्वयदा चक्रैः शुक्लवर्णादिशोभितं दैत्यारिः कमलाक्षश्च गदापाणिरधोक्षजः
पद्मनाभस्य देवः स्यान्नत्वदंडः खेटापकः तस्मात्त्वमानवैः पूज्यो वक्रचक्रः प्रजायत इति वर्णकमस्येस्यग्रा-
ह्याः शुक्लो रक्तस्तथा कृष्णो हि वर्णो वक्राणि कानि ति पद्मपुराणे तत्प्रकरणस्य वचनात् इति पद्मनाभलक्षणं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णं॥ अथदामोदरलक्षणं॥ पाद्मब्रह्मपुराणयोः॥ स्थूलोदामोदरोज्ञेयः सूक्ष्मचक्रोभवेत्तु सः॥ चक्रेतुमध्यदेशस्थेपूजि-
३ तः सुखदः सदेति॥ ब्रह्मांडपुराणे वैखानससंहिताविष्णुधर्मोत्तरेषु॥ दामोदरं तथा स्थूलं मध्यचक्रं प्रतिष्ठितं मध्यचक्रंप्र-
ल॰प्र॰ कीर्तितमितिकपिलपाठः॥ दूर्वाभं द्वारसंकीर्णं पीतरेखायुतं शुभमिति॥ इतिदामोदरलक्षणं॥ अथवासुदेवल-
५५ क्षणं॥ वाराहवैखानससंहिताविष्णुधर्मोत्तरपुराणसंग्रहनृसिंहपुराणब्रह्मांडपुराणेषु॥ द्वारदेशे समे चक्रे दृश्येते
203 नांतरीयके॥ वासुदेवः सविज्ञेयः शुक्लाभश्चातितेजसेति॥ शुक्लाभश्चातिशोभनइतिकपिलपाठः॥ नांतरीयके
संलग्ने अग्निपुराणेपि॥ वासुदेवः सितोद्वारिशिलालग्नद्विचक्रकइति॥ इतिवासुदेवलक्षणं॥ अथसंकर्ष-
णलक्षणं॥ वाराहवैखानससंहिताविष्णुधर्मोत्तरपुराणसंग्रहब्रह्मांडपुराणेषु॥ द्वौचक्रावेकावथलग्नौतुपूर्व-
भागस्तुपुष्कलः॥ संकर्षणाख्योविज्ञेयो रक्ताभश्चातिशोभनः॥ रक्ताभश्चातितेजसेतिकपिलपाठः॥ अथलग्नौअ-
ग्रेकिंचिल्लग्नौ क्वचित्तुद्विचक्रेपि एकसंलग्नेभागेकंलग्नेभागेकपुष्कलंभवेदितिपाठः॥ इतिसंकर्षणं॥ अथप्र-
द्युम्नलक्षणं॥ वाराहविष्णुधर्मवैखानससंहितासु॥ प्रद्युम्नः सूक्ष्मचक्रस्तुपीतदीर्घस्तथैवच सुषिरंछिद्रब-
हुलंदीर्घाकारंचयद्भवेदिति॥ ब्रह्मांडपुराणे॥ प्रद्युम्नः सूक्ष्मचक्रस्तुपीतवर्णस्तथैवच मकराभाश्चवैरेखाः
पार्श्वतः पृष्ठतोपितीप्यिचेति॥ अग्निपुराणेविशेषः॥ सूक्ष्मचक्रोबहुच्छिद्रः प्रद्युम्नोनीलदीर्घकइति॥ पद्मपु

२०३

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राणोपि प्रद्युम्नः सूक्ष्मचक्रः स्यान्नीलांबुजनिभस्तथा नीलांबुजद्युतीयश्चेति पाठांतरं सदानिःश्रेयं नृणामभ
क्तानां प्रियकृत्तिनश्यति इति प्रद्युम्नलक्षणं अथानिरुद्धलक्षणं ब्रह्मपुराणे विष्णुप्रोक्तं वैखानससंहितापुराणसं
ग्रहब्रह्मांडपुराणेषु अनिरुद्धस्तु नीलाभो वर्तुलश्चातिशोभनः रेखात्रयं तु नदावरिपृष्ठपद्मेन लांछितमिति ।
अग्निपुराणे पीतो निरुद्धः पद्मांको वर्तुलो द्विद्विरेखवान् तथा च अनिरुद्धस्तु पीनाभो वर्तुलश्चातिशोभनः
रेखात्रयपरिवृतो देवः पद्मेन लांछित इति ब्रह्मांडपुराणे विशेषः कृष्णवर्णः समहारश्चक्रं भित्तिसमीपगं
सूक्ष्मचक्रनवेदृश्यं पार्श्वचक्रेण पुष्पकृत् अनिरुद्ध इति प्रोक्तः सर्वलोकैककारणमिति इत्यनिरुद्धलक्षणं अथ
पुरुषोत्तमलक्षणं ब्रह्मपुराणे विदिक्षु दिक्षु सर्वासु यस्यांकं दृश्यते पुनः पुरुषोत्तमः स विज्ञेयो भुक्तिमुक्ति ।
फलप्रदः स देवदेवो विज्ञेयः पुराणः पुरुषोत्तम इत्यपि क्वचित्पाठः ब्रह्मांडपुराणे मध्यचक्रः सुवर्णाश्च मस्त
केप्यचक्रकः पुरुषोत्तमो भवेद्देवः सेवकस्य शुभप्रद इति पुराणसंग्रहे अतसीपुष्पसंकाशो विद्रुमापरिभू ।
षितः पुरुषोत्तमइत्युक्तो सौ सर्वसौभाग्यवर्धनः इति पुरुषोत्तमलक्षणं अथाधोक्षजलक्षणं ब्रह्मांडपुराणे अ
तिह्रस्वो रक्तरेखो हृतदेहः स्वचक्रकः किंचित्कपिलसंयुक्तः सूक्ष्मो वा स्थूल एव वा अधोक्षज इति ख्यातः सेवक
स्य शुभप्रद इति अधोक्षजलक्षणं अथाच्युतलक्षणं ब्रह्मांडपुराणे चक्रमिश्रे च चक्रे स्तो वामदक्षिणपार्श्वके ।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
२॰५
२०५

अधिष्ठितो मध्यरेखः कुंडलद्वयशोभितः शंखचक्रगदाशार्ङ्गबाणकौमोदकीधरः मुशलेषु सयुक्तेन ब्रह्मव-
त्सांकुशैर्युतः सोच्युतः कथितो नाम्ना दुर्लभस्तपसा विनेति इत्यच्युतलक्षणं अथ जनार्दनलक्षणं ब्रह्मपुरा-
णे द्वारदेशे चक्रं तु श्रक्रं जनार्दन इहोच्यते चक्रद्वयं मध्यमतं चक्रद्वयं च दृष्टं तु इति ब्रह्मांडपुराणेपि पूर्वभागे
कवदनः पश्चादेकास्यसंयुतः जनार्दनस्तु तच्छक्रः श्रीप्रदो रिपुनाशन इति इति जनार्दनलक्षणं अथ हरि-
लक्षणं ब्रह्मपुराणे कर्षमात्रं विजानीयाद्द्वारे चक्रं द्विरूपिणं कामदं मोक्षदं चैव अर्थदं च विशेषत इति तथा
कर्षमात्रं विजानीयात् श्यामाभं वर्तुलं शुभं अधो बिंदुसमायुक्तं सर्वकामार्थसाधकमिति ब्रह्मांडपुराणे अ-
ल्पद्वारसमोपेतो हरिमूर्तिरुदाहृत इति इति हरिलक्षणं इति चतुर्विंशतिमूर्तिलक्षणानि अथ प्रकीर्ण-
कलक्षणानि तत्रानंतमूर्तिलक्षणं आग्नेये अनंतो नागभोगांको नैकाभो नैकमूर्तिमानिति ब्रह्मपुराणे
नानावर्णस्त्वनंतः स्यान्नागभोगेन चिह्नित इति वैखानससंहितायां विष्णोक्तयोः नानावर्णमनंतं च नागभो-
गेन चिह्नितं अनंतमूर्तिसंभिन्नं जानीयात्सर्वकामदमिति पद्मपुराणे अनेकचक्रो वज्राभिः स्निग्धैरष्टभिरुपल-
क्षितः अनंतः स तु विज्ञेयः सर्वपूजाफलप्रदः पुराणसंग्रहे नानावर्णस्त्वनंतः स्यान्नागभोगेन चिह्नितः अनेक-
मूर्तिसंयुक्तः सर्वकामफलप्रद इति ब्रह्मांडे तु चतुर्दश्याःप्रभृतिविंशत्या चक्रैर्लांछितः नानावर्णस्त्वनंतनामा।

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नागभोगेनचिह्नितः अनेकमूर्त्तिसंभिन्नः सर्वकामफलप्रदः प्रदक्षिणावर्त्तकृतवनमालाविभूषितः कृ
ष्णवर्णस्तुनस्थापितधनधान्यसुखप्रदः पूजनीयः प्रयत्नेन स्थिरः स्निग्धस्सुवर्त्तुलः अनंतमूर्त्तिश्चक्रायइति विशे
षः इत्यनंतमूर्त्तिलक्षणं अथवैकुंठमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्मपुराणे वैकुंठोमणिवर्णाभस्सुचक्रमेकंतथांबुजं हा
रोपरितथारेखाकंजाकारासुशोभना वैकुंठनीलवर्णाभंचक्रमेकंतथाध्वजं हारोपरितथागुंजाकारासु
शोभनेतिपाठांतरं आग्नेये वैकुंठएकचक्रोनीलमणिप्रभः स्वच्छरेखकइति वैखानससंहितायां वैकुंठोमणिव
र्णाभस्सुचक्रमेकंतथांबुजं हारोपरितथारेखाचक्रचिह्नविह्नितइति ब्रह्मांडपुराणे वैकुंठोमणिवर्णाभोवाम
पार्श्वैकचक्रकः हारोपरितथारेखापद्माकारासुशोभनेति इतिवैकुंठलक्षणं अथहयग्रीवलक्षणं हयग्री
वस्सक्तेयोयोंकुशाग्रनिरूपकः चक्रध्वजसमायुक्तः पूजितः सौख्यदायकइति ब्रह्मपुराणे हयग्रीवोहया-
कारोरेखाचक्रसमीपगा बहुरूपसमाकीर्णः पृष्ठेस्यान्नीलरूपकः बहुविंदुसमायुक्तः पृष्ठेनीरदनीलकमि
तिपाठांतरं आग्नेये हयग्रीवोंकुशाकाररेखानीलः सबिंदुकः तथाच हयग्रीवोंकुशाकाररेखाः पंचभवंति
हि बहुविंदुसमाकीर्णोदृश्यतेनीलरूपकः हयग्रीवाप्यथालंबोभवेत्कायाशिलाभवेत् तथासौम्योहयग्रीवः
पूजितोज्ञानदोभवेत् अश्वाकृतिमुखंयस्यसदामालेशिरस्तथा पद्माकृतिनिभंवेद्यापिहयशीर्षाख्यसौमनेति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुराणसंग्रहे हयग्रीवोपि भगवान् रक्तपीतादिमिश्रितः अंकुशाकृतिकस्तार्क्ष्यचक्रद्वयसमन्वितः पद्माकृ-
तिस्तथा पार्श्वे कुंडलाकृतिरेव वा ज्ञानदो मोक्षदो नृणां भोगदो वित्तनाशनः इति इति हयग्रीवलक्षणं अथ परमे-
ष्ठीलक्षणं आग्नेये परमेष्ठी सौम्यचक्रः पृष्ठच्छिद्रस्त्वविंदुवानिति ब्रह्मपुराणे परमेष्ठीतु शुक्लाभः पद्मचक्र-
समन्वितः बिंबाकृतिस्तथा पृष्ठे सुषिरं वाति पुष्कलं तथा परमेष्ठी साब्जचक्रः पृष्ठच्छिद्रस्त्वविंदुवानिति ब्रह्म-
ल·प्र· पुराणे परमेष्ठीतु शुक्लाभः पद्मचक्रसमन्वितः बिंबाकृतिस्तथा पृष्ठे सुषिरं चाति पुष्कलं तथा परमेष्ठी लोहि-
२०५ ताभश्चक्रमेकं तथांबुजं बिल्वाकृतिस्तथा रेखा सुषिरं वाति पुष्कलमिति पुराणसंग्रहे परमेष्ठीतु शुक्लाभः पद्म-
205 चक्रसमन्वितः बिंबाकृतिः कृविमीतः पृष्ठे च सुषिरान्वितः कृविमीतः पृष्ठे च सुषिरान्वितः परमेष्ठीतु शुक्ला-
भश्चक्रपद्मसमन्वितः सवर्णलक्ष्मथापीतः पृष्ठे च सुषिरं ध्रुवमिति पाठांतरं वैखानससंहितायां परमेष्ठीतु रक्ता-
भश्चक्रं पद्मसमन्वितं गदाकृतिस्तथा रेखा दृश्यते वामपार्श्वत इति ब्रह्मांडपुराणे परमेष्ठी च शुक्लाभश्चक्रपद्म-
ल समन्वितः द्विधाकृतेथा पृष्ठे सुषिरं चापि वर्तुले पीतवर्णश्रुतो वापि भुक्तिमुक्तिवरप्रदः इति इति परमेष्ठीलक्षणं
अथ हिरण्यगर्भलक्षणं ब्रह्मपुराणे हिरण्यगर्भं तथा देवं मधुपिंगलविग्रहं ईषद्दीर्घं मनोज्ञं च विंशत्सकल-
कामदं तथा चंद्राकृतिर्हिरण्याख्यो रश्मिजालैर्विनिर्दिशेत् सवर्णरेखा च ऊर्ध्वे स्फटिकद्युतिशोभितमिति ब्रह्मांड

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुराणेविशेषः हिरण्यगर्भोभगवान्पवित्रोभुविदुर्लभः अंतर्धनिसमायुक्तोकलवर्णोस्वरान्तकं वर्तुलंकृ
ष्णवदनंचक्रमध्येचक्रोमलंश्रीवत्सं कमलाकारलांछनं पृष्ठपार्श्वके हिरण्यगर्भोविज्ञेयः पृथुनाभिसम
न्वितः हिरण्येनविमिश्रश्चश्रीमदःकुलवर्धनइति इतिहिरण्यगर्भलक्षणं अथचतुर्भुजमूर्तिलक्षणं ब्र
ह्मपुराणे चतुर्भुजंचतुश्चक्रंनवमेघसमद्युतिं मंडलाकारचक्रंस्यात्सर्वेषामभयप्रदमिति इतिचतुर्भुजलक्षणं
अथगदाधरलक्षणं ब्रह्मपुराणे गदाधरस्तथादेवोगुरुरूपःसमंततः चक्रस्त्रिण्योतिह्रस्वपद्मशंखवद्दक्षिणे
गुरुरूपःबृहस्पतिवर्णःपीतश्चमर्थः पुराणसंग्रहे गदाधरस्त्रिलेखाभिर्लीढितोमध्यदेशतः घनवर्णोकुशोःपी-
तोवामचक्रःसुवर्तुलइति इतिगदाधरलक्षणं अथपुंडरीकाक्षलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे पार्श्वेवामेमूर्ध्निपृष्ठेवा
चामरद्वयसंयुता पुंडरीकाक्षमूर्तिःस्यात्सर्वलोकवशंकरी कमलद्वयसंयुक्तेनिपादानंतरं इतिपुंडरीकाक्षमूर्ति
लक्षणं अथचतुर्मुखमूर्तिलक्षणं पाद्मपुराणसंग्रहब्रह्मलेषु चतस्रोयत्रदृश्यंतेरेखाःपार्श्वसमीपगाः द्वेच
क्रेमध्यदेशेचसाशिलास्याच्चतुर्मुखीति ब्रह्माण्डपुराणेपि चतस्रोयत्रवर्तंतेरेखाःपार्श्वसमीपतः द्विचक्रोमध्य
देशेतुसाशिलास्याच्चतुर्मुखोति इतिचतुर्मुखमूर्तिलक्षणं अथसुदर्शनमूर्तिलक्षणं पुराणसंग्रहे अतसीपु
ष्पसंकाशोबिंदुनापरिभूषितः सुदर्शनःस्मृतोदेवःप्रणामोभूतिसिद्धिदःइति ब्राह्मपुराणे सुदर्शनस्तथादेवःस्प

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुवर्णाभमहाद्युतिः वामपार्श्वे गदाचक्रे रेखाश्चैव न दक्षिणे पद्मपुराणे चक्राकारेण पंक्तिः सा यत्र रेखा मया भवेत्
स सुदर्शनः श्रेयो विज्ञेयो गोप्यः फलप्रद इति ब्रह्माण्डपुराणे सुदर्शनं द्विधा ज्ञेयं लक्षणेनरयोगतः एकवक्त्रं शिरो
देशे कृष्णवर्णं सुरेखस्तथा सुदर्शनः सविज्ञेयः सर्वपापप्रणाशनः पद्माकारं हृद्द्वारं निम्ननाभि सुदर्शनमिति इति
ल.प्र. सुदर्शनलक्षणं अथ योगेश्वरलक्षणं ब्रह्मपुराणे दृश्यन्ते शिवरेखे लिंगं शालग्रामसमुद्भवं स च योगेश्वरो नाम
२०९ ब्रह्महत्यां व्यपोहतीति इति योगेश्वरलक्षणं अथ विश्वपंजरलक्षणं पद्मपुराणे वज्रकीटोद्भवा रेखाः पंक्तीभू-
206 ता यत्र चैव शालग्रामशिलायां विश्वपंजरसंज्ञितेति इति विश्वपंजरलक्षणं अथ यज्ञमूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्ड
पुराणे यज्ञमूर्तिस्तु भगवान्पीतरक्तविमिश्रितः द्वारं कृष्णमयश्चक्रे सुवृत्तो दक्षिणेऽपि चेति इति यज्ञमूर्तिलक्ष-
णं अथ दत्तात्रेयमूर्तिलक्षणं तत्रैव सितारुणो सितामश्रु कृष्णपृष्ठश्च तो भवेत् अक्षमालाकृतिः पृष्ठे द-
त्तात्रेयः सुखप्रदः कृष्णायतस्थपीत दत्तात्रेयाभिधो भवेदिति इति दत्तात्रेयमूर्तिलक्षणं अथ शिंशुमारलक्ष-
णं तत्रैव शिंशुमारो दीर्घकायो बिलशाप्यतिगह्वरः पुरस्तु पृष्ठभागे तु वक्रेणैकेन संयुतः पुरः चक्रद्वय
पृष्ठभागे एकं चक्रमेवं चक्रत्रयमित्यर्थः सर्वाधारः सविज्ञेयः सर्वसिद्धिप्रदो नृणामिति इति शिंशुमारल-
क्षणं अथ हंसमूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे हंसस्तु पनराकारो नीलश्वेतविमिश्रितः चक्रपद्मसमोपेतः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

केवलं मोक्षदो भवेदिति इति हंसलक्षणं अथ परंहंसलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे परंहंसः स्वगेशानशिखंत्रि
गलसंनिभः शिखंडीमयूरः स्निग्धच्छायनखनस्त्रवर्त्तुलहारसंयुतः बिंदुमध्येन यश्चाचक्रे दशपेने स्थितिशो
भने चक्रस्य दक्षिणपार्श्वे पद्ममणिर्भास्वरो भवेत् वराहरेखेन ह्रामेदशपेने विन्नतासत मूर्त्तिः ख्यातस्य हंसा
ख्या चतुर्वर्गफलप्रदेति इति परहंसलक्षणं अथ लक्ष्मीपतिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे मुखे पार्श्वे नीलो वा
पि मयूरगलसंनिभः कृष्णवर्णः सूक्ष्मचक्रः पृथुलास्यो समप्रभः लक्ष्मीपतिरिति ख्यातो लक्ष्मीसंपत्तिदा
यक इति इति लक्ष्मीपतिलक्षणं अथ गरुडध्वजलक्ष्मीपतिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे स्वर्णश्रृंगखुरः सोम्याव
र्त्तुलः स्निग्धकेसरः वक्रमध्यगते स्निग्धकमलरेखाविभूषितः लक्ष्मीपतिर्वैनतेयगरुडध्वजसंज्ञित इति इति
गरुडध्वजलक्ष्मीपतिलक्षणं अथ वटपत्रशायिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे वटपत्रशायी भगवान्वर्त्तुलो मन
शोभनः ह्रस्वकुन्ददन्ताश्च नीलश्वेतविमिश्रितः वक्रस्य वामतः शंखो दक्षिणे पद्ममेव च वदनेकेमध्यदेशे च
तुष्टकस्त्रिविंदुकः इति वटपत्रशायिलक्षणं अथ विश्वंभरमूर्त्तिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे चक्राणां विंशति
कपायुक्तो विश्वंभरः प्रभुरिति इति विश्वंभरलक्षणं अथ विश्वरूपलक्षणं तत्रैव विश्वरूपोपि भगवान् द्विवि
धः परिकीर्त्तितः विश्वरूपो हरिः साक्षाद्धारावर्त्तपरो नमः वज्रचक्राङ्कितोऽनेकमूर्त्तिरूपसमन्वितः पंच

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
२०७
207

वक्रः स्थूलतनुः परशोर्वज्रवक्रकः श्वेतरूपोऽनंतो वा पुत्रपौत्रादिकप्रदइति इति विश्वरूपलक्षणं अथपीतांबर
लक्षणं उक्तंच तत्रैव स्निग्धगोरोचनाकारः सुचक्रो वर्तुलोऽपि वा पीतांबरधरोदेवः सौख्यदः फलदोऽर्चितइति
इतिपीतांबरलक्षणं अथसमस्रवसोलक्षणं तत्रैव सुवर्तुलो हृदयचक्रः सर्वांगे हेमबिंदवः सत्यवीरश्रवाः
प्रोक्तः सर्वसौभाग्यवर्द्धनइति इतिसत्यश्रवसोलक्षणं अथामलादरशालक्षणं तत्रैव अमलाद्दरणो देवीनी
लोत्पलसमप्रभः वर्तुलो ह्रस्ववदनो ह्रस्वचक्रोऽतिकोमलइति इतिअमलाद्दरणलक्षणं अथचक्रपाणिमूर्तिल
क्षणं ब्रह्माण्डपुराणे सर्वभागे त्रिवदनः पश्चादेकास्यसंयुतः चक्रपाणिरिति ख्यातस्सर्ववर्तितदायकः अत्र
प्रतिमुखं चक्रद्वयं ज्ञेयं इतिचक्रपाणिलक्षणं अथवज्रकपिलं तत्रैव आभ्यंतरे स्थचक्रचक्रे वज्रलास्यः सम
न्ततः वज्ररूपी समाख्यातः शत्रुतोमोक्षदायकइति इतिवज्रतलक्षणं अथजगद्योनिलक्षणं तत्रैव द्वारच
क्रोरक्तवर्णो जगद्योनिः सुखप्रदइति इतिजगद्योनिलक्षणं अथत्रिमूर्तिलक्षणं तत्रैव मध्ये धत्ते त्रिवदनः षट्
चक्रः श्यामलांगष्टक त्रिमूर्तिरिति विख्यातः सर्वसौभाग्यदायकइति इतित्रिमूर्तिलक्षणं अथहरिहरमूर्तिल
क्षणं तत्रैवोक्तं चक्रत्रयसमं तो वा चक्रद्वययुतोऽपि वा शिवनाभियुतो मध्ये शङ्खैश्चक्र वनद्वारिदंविधान्सर्वसौ
भाग्यदायकमिति इतिहरिहरमूर्तिलक्षणं अथशंकरनारायणलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे चतस्रश्चक्रो हरिहरो
रूपी लक्षणं अथपारिजातलक्षणं तत्रैव अयोध्यः पारिजाताख्यः पारिजातइतिस्मृतः वज्रचर्यावतस्थेनस्यजनीयः प्रयत्नतइति

[illegible]

२०

द्विमुखो द्विमुखोप्यथः विनायकपतिश्च हस्त्यानां धनेशेशं कुले कमात् शिवनाभिष्ठुतः पार्श्वे वामे वा दक्षिणोपि वा सव-
शंकरः सर्वाभीष्टो नारायणोऽतिरितिन इति इति शंकरनारायणलक्षणं अथ स्वयंभूलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे मूर्तिर्वर्णे
लोकेरवाभिराहृतो नीलवर्णवान् दीर्घास्यः शङ्खचक्रस्तु संयभृतिनि विष्णुतः केवलं मोक्षफलदो हार्दिकस्तु न संश-
यः इति इति स्वयंभूलक्षणं अथ पितामहलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे पितामहश्चतुर्वक्त्रो लक्ष्मचक्रसमन्वितः इति इति
पितामहलक्षणं अथ नरमूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे नरमूर्तिस्तु भगवाननन्तसीकुस्तममभः पद्मनाभिसमोपेतो ब्र-
ह्मस्त्रेच पार्श्वके इति इति नरमूर्तिलक्षणं अथ शेषमूर्तिलक्षणं पद्मपुराणे नागवत्कुंडलीभूतरेखापंक्तिः सशे-
षक इति ब्रह्माण्डपुराणे अथवा कुंडलीभूतनागभोगसमन्वितः शेषमूर्तिस्तु भगवाननन्तवर्णसमन्वितः धलेव-
ज्ञ इति ख्यातः पूजितो मुक्तिदायकः अथवा रक्तवर्णसमान्वितश्चेत्यलेवज्ञ इति संबंधः धनस्येव ड्डेष्टफलेन शेषमू-
र्तेः तच्चाग्नेयपद्मपुराणीयं वसने इति शेषमूर्तिलक्षणं अथ सूर्यमूर्तिलक्षणं ब्रह्माण्डपुराणे बाह्ये वाभ्यंतरे वापि
वक्रः द्वादशसंयुता सूर्यमूर्तिरिति ख्याता सर्वव्याधिविनाशिनीति इति सूर्यमूर्तिलक्षणं अथ हैहयमूर्तिलक्ष-
णं तत्रैवागर्भागारे तु चक्रे हैहयस्य दक्षिणतो बहिः पद्मपत्राकृतिर्वापि हेमवर्णसमाकुला हैहयस्तु सदा गोमा
सर्वसिद्धिप्रदायक इति इति हैहयमूर्तिलक्षणं अथ गरुडमूर्तिलक्षणं पद्मपुराणे पत्राकारे च पंक्तिर्हेमपद्मेले

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वाचेदेविका गरुडः सत्तविज्ञेयइति ब्रह्माण्डपुराणे द्विपद्माभ्यामुपेतेयश्चाष्टदंष्ट्रविडम्बिमं विषमचक्रेण्डलिम्बंसम-
चक्रेकलौनहि कल्मषौघविनाशी स्यादहलयाकाररेखया स्वर्णनिचयाहिविचित्तस्थ्यसमेतया संयुक्तास्युमदाश्री
स्यात्स्यामानीलासितेपिवेति गरुडमूर्त्तिरितिशेषः गरुडमूर्त्तिलक्षणं विशेषांतरमुक्तंपद्मपुराणे विलुरुवा
ल॰प्र॰ च निवासामिसदाब्रह्मेशालग्रामोऽश्मनि नत्रैववर्णचक्रादिभेदान्नामानिमेशृणु शुक्लोरक्तस्तथापीतोकृष्णो
२०८ द्विवर्णोवत्रवर्णवान् एकचक्रस्यचतथा संज्ञाः पंचयथाक्रमं पुंडरीकः प्रलंबघ्नोरामोवैकुंठएवच विश्वकेतन
208 इति ब्रह्मन् एतेवास्यार्चनेशृणु मोक्षंमस्तुविषावंचदारिद्र्यमर्चनेनतथा ददातिश्जितोनृणांतस्मान्नार्चयेन्नरः
शुक्लादिवर्णसंयुक्तोद्विचक्रः पद्मसंभव वासुदेवोजगद्योनिः कृष्णःपीतांबरोव्ययः चक्रेद्वाविस्थितेज्ञेयः सोऽप्ये
कफलदोर्चितः चक्रेतमध्यदेशस्थेनेषामाख्यानंशृणु परमेष्ठीजितक्रोधस्तथानारायणांतकः अनंतश्चेतिवि
ज्ञेयोनाममूर्त्तिस्त्रयोभवेत् राज्यंमस्तुधनंचैवहानिंवैवांछितार्थकं ददातिश्जितोलोकेतस्मान्नार्चयेन्नरइति एता
स्त्वोक्तलक्षणलक्षिताः सर्वाअपिशालग्रामशिलामूर्त्तयोद्विविधाःज्ञेयाः तदुक्तंब्रह्माण्डपुराणे मूर्त्तयोद्विविधा
ज्ञेयाजलजास्थलजास्तथा जलस्थाःकोमलाःस्निग्धाःस्थलस्थाःपरुषाःस्मृताइति सर्वोक्तलक्षणलक्षिताश्च
शालग्रामशिलामूर्त्तिशुभस्त्वाएवमूर्त्तयः फलाधिकात्पूजनीयाः तासांपूजनेमशस्ततरत्वात् तथाचोक्तंपद्मपु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मपुराणे शालग्रामशिलालक्षणमुक्ता यल्लक्षणमुक्तास्तु शालग्रामशिलाः पुनः याश्चक्रास्तु विसृष्टाः सुस्ताः
प्रशस्ततराः स्मृताः यथायथाशिलासूक्ष्मामहत्पुण्यंतथातथा तस्मात्तांपूजयेन्नित्यंधर्मकामार्थसिद्धये तत्राप्या
मलकीतुल्यामूल्याचारीवयाभवेत् तस्यामेवसदाव्वलतश्रियासहवसाम्यहमिति स्कंदपुराणेप्येवमेव अत्रव
र्णभेदेनपूजनेमूर्त्तिविशेषः पद्यतेहेमाद्रौ विलश्योक्ते ब्राह्मणैर्वासुदेवस्तुनृपैः संकर्षणस्तथा प्रद्युम्नः
पूज्यतेवैश्यैरनिरुद्धस्तुशूद्रजैः चत्वारोब्राह्मणैः पूज्याः द्वयोराजन्यजातिभिः वैश्यैर्द्वावेवसंपूज्यौ तथैकः शूद्रजा
तिभिरिति ब्रह्मांडपुराणेपि वासुदेवोविप्रजनैरुपास्यः पूजनेसदासंकर्षणः क्षत्रियस्य प्रद्युम्नोवैश्यपूजि
तः अनिरुद्धस्तुशूद्राणांपूज्यः सर्वफलप्रदः विप्राणांमूर्तयःसर्वाः पूजनीयाःप्रयत्नतः क्षत्रियस्यत्रयः पू
ज्यावैश्यस्यद्वयमेवहि शूद्रस्यैकाभवेन्नार्यःसर्वदासर्वसिद्धिदेति वृद्धगौतमे वृद्धगौतमेनतुविशेषोऽभि
हितः लक्ष्मीनारायणा १ नंत २ नृसिंह ३ च्युत ४ केशवाः ५ हिरण्यगर्भ ६ प्रद्युम्न ७ गोपाल ८ गरुडध्वजाः ९
रामा १० निरुद्ध ११ वक्रास्य १२ दामोदर १३ गदाधराः १४ चतुर्भुज १५ महानील १६ मुकुं १७ पुरुषोत्तमाः १८ पी
तांबरो १९ हरिवल्ल २० हंसः २१ श्रीधर २२ माधवौ २३ वासुदेवेति २४ चाद्योक्तास्तुविंशतयःशिलाः वक्रास्यः
वक्रंभ्रमनमास्यंमुखंयस्येतिसः हयग्रीवइत्यर्थः वक्रेतिहरिविशेषणं ब्रह्मस्तत्रिपवित्शूद्रपत्नीनामिष्टदाऽर्चिताः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
२०५
209

नैववर्णाधमानां च नतान्नविलयोषितां ब्राह्मणानां पूज्या मूर्तीराह शिलाद्ध्येकद्वित्र्यष्टादशान्विता पूज्या हि स
र्वदाऽद्यानां गंडकीसरिद्भवा लक्ष्मीनारायणानंतहिरण्यगर्भवृहद्धोत्तमचतुर्भुजसंज्ञाः शालग्रामशिलामू
र्तयः आद्यानां ब्राह्मणानां पूजने प्रशस्ताः क्षत्रियाणां पूज्या मूर्तीराह राज्ञामाद्यद्व्येकविंशत्येकादशनवाष्टमी द्
शद्वाविंशतिमता सर्वदाभीष्टदायिनः लक्ष्मीनारायणानंतकृष्णानिरुद्धगरुडध्वजगोपालरामश्रीधरसंज्ञा मूर्त
यः क्षत्रियाणां पूजने प्रशस्ताः वैश्यानां पूज्या मूर्तीराह चतुर्विंशतिसप्तैव त्रयोदश चतुर्दश एकोनविंशवि
शैकानि मान्या वैश्या शिला विशां वासुदेवप्रद्युम्नदामोदरगदाधरपीतांवरहरिलक्ष्मीनारायणसंज्ञा मूर्तयो वै
श्यानां पूजने प्रशस्ताः सच्छूद्राणां पूज्या मूर्तीराह त्रयोविंशैव विंशैकत्र्येकादश माचया पंचमैकोनविंशा·
ह्नी सच्छूद्राणां विलेष्टदेति माधवहरिलक्ष्मीनारायणानंतानिरुद्धकेशवपीतांवरसंज्ञा मूर्तयः सच्छूद्राणां
पूजने प्रशस्ताः चतुर्विंशतिमूर्तिष्वप्यवशिष्टा मूर्तयः नृसिंहवक्त्रास्यमहानीलमुकुंदसंज्ञाः यतीनां पूजने
प्रशस्ता इत्यर्थः स्कंदपुराणे ब्राह्मणात्क्षत्रियविशां सच्छूद्राणां मयापि वा शालग्रामाधिकारोस्ति न चान्येषां कदाच
न स्त्रियो वाथ दिगम्बुद्धा ब्राह्मणाः क्षत्रियादयः पूजयित्वा शिलाचक्रं लभंते शाश्वतं पदमिति नन्वब्राह्मणाः पू
जयेन्नित्यं क्षत्रियादि न पूजयेदिति विलवर्मोक्तवचनात् प्रणवोच्चारणाच्चैव शालग्रामशिलार्चनात् ब्राह्म·

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णीगमनाद्वापि शूद्रस्यांत्यजनानां वज्रे दिस्माएसंवचनात्क्षत्रियादीनां शालग्रामशिलामूर्त्तिपूजननिषेधात्क्ष
त्रियादिभिः शालग्राममूर्त्तिपूजनं कर्त्तव्यमित्युक्तं तत्कथमिति चेत् सत्यं ब्राह्मणक्षत्रियविंशाद्ययाणां मुनि
सत्तम अधिकारः स्मृतः सद्भिः शालग्रामशिलार्चने स्त्रीशूद्रपतितानां च षंढानां च विकर्मणां नैवाधिकारो वि
ज्ञेयः शालग्रामशिलार्चने स्त्रीशूद्रानुपनीतानां विदानां च विकर्मणां नैवाधिकारो विज्ञेयः शालग्रामशिला
र्चने विष्णुभक्तैर्वैष्णवैर्विप्रैर्गोब्राह्मणहितेरतैः शालग्रामशिलाचक्रं पूजनीयं सदा मुने इत्यादिपद्मपुराणादि
वचनैः पूर्वोदाहृतवचनैश्च क्षत्रियादीनां शालग्रामशिलामूर्त्तिपूजाप्यनुज्ञाश्रवणात् ब्राह्मणस्यैव पूज्योऽहं शु
चेरप्यशुचेरपि स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शो वज्रस्पर्शाधिको मम मे इति भविष्यलिंगपुराणवचने ब्राह्मणस्यैव संप्राप्य यो
गत्वावबोधपरेणैवकारेण ब्राह्मणमात्रस्यैव स्पर्शे स्वत्वप्रत्यायामधिकारावगमात् क्षत्रियादीनां शालग्राममूर्त्ति
स्पर्शमात्रे निषिद्ध इति त्ववगम्यते एवं च स्मृति क्षत्रियादिपूजानिषेधकवचनानां स्पर्शात्र निषेधपरत्वात् क्षत्रियादी
नां शालग्रामशिलामूर्त्तिपूजाविधायकानि वचनानि स्पर्शहीनपूजाविषयत्वेन योज्यानीति अत एव बृहन्नार
दीये प्युक्तं स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च जनेश्वर स्पर्शने नाधिकारोस्ति विष्णोर्वा शंकरस्य च शूद्रो वाऽनुपनी
तो वा स्त्री वापि पतितोपि वा केशवं वा शिवं वापि स्पृष्ट्वा नरकमश्नुत इति अत्रानास्थयाप्रमेकवाशब्दे क्षत्रियादीनामस्पृ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पसंग्रहो ज्ञेयः यद्येवं स्त्रियादीनां शालग्रामस्पर्शनिषेधस्तर्हि सदाचारविरोधः स्यादिति चेत् अत्र ब्रूमः ब्राह्मणक्ष
त्रियविशां त्रयाणामनुनिसृजनम अधिकारः स्मृतः सद्भिः शालग्रामशिलार्चने स्त्रीशूद्रपतितानां च षंढानां च विकर्म
णां नैवाधिकारो विज्ञेयः शालग्रामशिलार्चने इत्यादि पूर्वोदाहृतवचननिचयात् तथा च ब्राह्मणस्यैव पूज्योहं
ल·प्र· शुचेरप्यशुचेरपि स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शो वज्रस्पर्शाधिको मम इति वचनमप्येवं व्याख्येयं शुचेरप्यशुचेरपि ब्राह्मण
२१० 210 स्यैवाहं पूज्यः न क्षत्रियादेः क्षत्रियादेस्तु शुचेरेवाहं स्पर्शयोग्यः नाशुचेरित्यर्थः सत्क्षत्रियवैश्ययोरेव स्पर्शे वस्तु
जातायामधिकारो नान्येषामित्याशयः किंच अन्ययोगव्यवच्छेदपर एवकारोप्यशुचिक्षत्रियादिस्पर्शनिषेधपरो
ऽवतिष्ठते तथा सति स्त्रीशूद्रकरसंस्पर्शो वज्रस्पर्शाधिको मम इत्युत्तरार्द्धं शूद्रादिस्पर्शनिषेधपरं यथाश्रुतमेव
स्वरसं · यत्तु पूर्वोदाहृतं बृहन्नारदीयवचनं स्त्रीणामनुपनीतानामित्यादि तत्रापि शूद्रादीनामेव ग्राह्यं स्पर्शनि
षेधात्तत्परमेव · वा शब्देन च क्षत्रियाद्युपसंग्रहे क्लिष्टकल्पना · तस्माद्ब्राह्मणैः सत्क्षत्रियैः सद्वैश्यैः स्पर्शः शूद्रैर्विका
शालग्रामस्य पूजा कार्या नासत्क्षत्रियादिभिरिति सिद्धं अत्र स्त्रीशूद्रानुपनीतानामित्याद्युदाहृतवचनैः शालग्राम
शिलार्चने यः शूद्रनिषेधः स च सच्छूद्रातिरिक्तविषयः सच्छूद्रैस्तु ब्राह्मणद्वारा शालग्रामशिलार्चनं कर्तव्यं त
थाचोक्तं पद्मपुराणोत्तरखण्डे च दीक्षायुक्तैस्तथा शूद्रैर्मद्यपानविवर्जितैः कर्तव्यं ब्राह्मणद्वारा शालग्राम

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शिलार्चनमिति शालग्रामशिलामूर्त्तिश्चयस्याइष्टामूर्त्तिः सा तेन पूज्या तदुक्तंब्राह्मब्रह्माण्डपुराणयोः इष्टा-
चयस्यामूर्त्तिः सतां यत्नेन पूजयेत् पूजयित्वा फलं सम्यक् प्राप्नोतीह परत्र चेति इष्टमूर्त्त्यभावे च शालग्रामशि
लामूर्त्तेरपि सर्वदेवताधिकरणत्वेनेष्टदेवताः पूज्या शालग्रामशिलायां तत्प्रत्याः सर्वदेवता इति ब्रह्माण्डपुरा
णवचनेन शालग्रामशिलायां सर्वदेवतापूजाविधानात् स्वेष्टदेवतानुपक्रम्य तेषां लिंगे मणौ कुंभे मंडले वा प्रपूजने
शालग्राममेव तत्त्वध्यायंश्चादौ च प्रपूजयेत् भूमौ चैव कृता पूजा पुत्रायुर्धननाशिनीति रुद्रयामलवचनाच्च शालग्रा
मशिलायां च तत्तद्ध्यानसमर्चयेदिति सोमशंभुवचनाच्च अत्रापि अश्वत्थो हृदये सूर्ये स्थंडिले प्रतिमासु च शा
लग्रामे च चक्रांके पटे सद्रास्वदेवता इति प्रतिमादीनां नित्यपूजने स्नानं न कारयेत् तदाह व्यासः प्रतिमापटयंत्राणां नि
त्यस्नानं न कारयेत् कारयेत्पर्वदिवसे यदा मलनिवारणमिति शालग्रामशिलामूर्त्तिपूजायां तु नित्यमपि स्नानं कार्यमे
व नित्यत्वं प्रतिपाद्यते तथा हि स्कंदपुराणे कर्त्तव्यं सततं भक्त्या शालग्रामशिलार्चनमिति पुराणसंग्रहे नारदं प्र
ति ब्रह्मणो वचनं देवर्षे किं बहूक्तेन शृणु मे निश्चितं वचः शालग्रामशिलार्चा पूजनीया सदा द्विजैरिति इत्यादि
वचनेषु सततं सदा शब्दश्रवणात् शालग्रामशिलापूजां विना योऽश्नाति किंचन स चांडालादिविष्ठायामाकल्पं
जायते कृमिरिति यमपुराणे पूजनं विना भोजने निंदाश्रवणाच्च नित्यमवगम्यत इति शालग्रामशिलामूर्त्तिपूजनं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प्र·
२११
२११

तु पूजाविधिजपा यन मित्तेनापि कर्त्तव्यमेव तथा चोक्तं पद्मपुराणे न गुरुर्न च मंत्रोऽस्ति न जापो न च भावना नस्तुति
र्नोपचारश्च चक्रांकितशिलार्चने इति स्कंदपुराणेपि न पूजनं न मंत्राश्च न जापो न च भावना नस्तुतिर्नोपचारश्च शा
लग्रामशिलार्चने इति पुराणसंग्रहे येषां नास्ति विधिर्मंत्रो न दीक्षा न विधिक्रमः न तेषामपराधोऽस्ति शालग्राम
शिलार्चने इति गृहस्थैः गृहे शालग्रामद्वयं नार्च्यं उक्तं वाराहपुराणे गृहे लिंगद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा द्वे
चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्ये सूर्यद्वयं तथा शक्तित्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च द्वौ शंखौ नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतिमां
तथा नार्चयेच्च तथा शंखमत्स्यद्वादशकांकितं गृहे ग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वर्ज्या परे अर्च्याः प्रतिमाः एतासां
पूजनात्त्रिन्युक्तं सर्वं नश्यात्नूयात् गृही शालग्रामशिलाः भग्नाः पूजनीयाः सचक्रकेति पद्मपुराणे विशेषः शालग्रामा
युग्माः पूज्या युग्मेषु द्वितयं न हि अयुग्मा नैव पूज्यंते विषमेष्वेकपवहीति स्कांदेपि शालग्रामाः समाः पूज्या विष
मा न कदाचन समेषु द्वितयं नेष्टं विषमेष्वेकपवहीति द्वादशशालग्रामशिलामूर्तिपूजने फलाधिक्यमुक्तं पद्म
पुराणे शिला द्वादश भो वैश्य शालग्रामसमुद्भवाः विधिवत्पूजिता येन तस्य पुण्यं वदामि ते कोटिद्वादशलिं
गेस्तु पूजितैः स्वर्णपंकजैः यत्स्याद्द्वादशकल्पेषु दिनेनैकेन तद्भवेदिति ब्रह्मपुराणेपि शिला द्वादश भो पुत्र
शालग्रामसमुद्भवाः विधिवत्पूजिता येन तस्य पुण्यं वदामि ते कोटिलिंगसहस्रैस्तु पूजितैर्जाह्नवीतटे काश्यां

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वासेदिनान्यष्टौ दिनेकैकेन तद्भवेदिति ॥ स्नान शालग्रामपूजने फलविशेषोप्युक्तः पद्मपुराणे यः पुनः पूजयेद्भक्त्या
शालग्रामशिलाशतं उषित्वा सद्धरे लोके चक्रवर्ती हि जायते इति तथा यः पुनः पूजयेद्भक्त्या शालग्रामशिलाश
तं तत्फलं नैव शक्नोऽहं वक्तुं कल्पशतैरपीति शालग्रामशिलामूर्तौ प्रतिष्ठानियमो नास्ति तथा चोक्तं स्कंदपुराणे
शालग्रामशिलायास्तु प्रतिष्ठा नैव विद्यते महापूजां तु कृत्वादौ पूजयेत्तां सदा बुधः इति शालग्रामे विलोऽन्यदेव
तानां चनावाहनं कार्यमिति केचिदाहु स्तत्र स्कंदपुराणवाक्यं मूलं तच्चेदं शालग्रामार्चने नैव आवाहनविस
र्जने शालग्रामे हि भगवानाविर्भूतः सदा हरिरिति अन्ये तु विष्णुः सर्वनिर्जदेहे स्मरन्नृकेन न मसे तु यः ततस्तु प्रति
मायां तु शालग्रामे विशेषतः क्रमेणैव ततः पश्चात्कुर्यादावाहनादिकं आवाहयेत्तु प्रयतो ध्यानसेवां हि जोजनमे
ति शिवार्चनचंद्रिकायां स्कंदपुराणवचनैः सर्वमावाहयेदेवमासनं तु द्वितीयपतिषोडशोपचारपूजाविधाना
त्र शालग्रामे विलोऽन्यदेवतानामप्यावश्यवाहनं कार्यमेवेत्याहुः तत्र सर्वावाहनस्यांत्य सरूपमुक्तं सिद्धांतशेखरे
स्वतंत्रवाभिः शाणिस्तत्तत्र स्येहार्चनादिषु सादरं सम्मुखीभावस्तत्रावाहनमिष्यते इति अतएवोक्तं मंत्रराजात्तु पू
र्वविधाने अमंत्रेणा नैवेद्यपूज्यः समंत्रेणास्तु मद्भया स्वस्थाने न सदा पूज्यो नानास्था पूजयेद्धरिं स्वमूर्तिः स्वेन मंत्रेण
पूज्यैवावाहनं विना सर्वाः शिलाः समभ्यर्च्याः पुरुषसूक्तेन नित्यशः आवाहनं च चादयात्सर्वं पूष्पांजालिं हरेः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तस्यैवोन्मुखेनात्मामैयागेवोद्दासनेऽस्य च शतेषु प्र्यांजलिं दद्याद्यागसंपूर्त्तिसिद्धय इति शालग्रामशिलादानेऽच चक्रा-
यीतत्फलाधिक्यात् तथा च पद्मपुराणे शालग्रामशिलाचक्रं यो दद्याद्यतमुत्तमं भूचक्रं तेन दत्तं स्यात्सशैलवन-
काननमिति हृद्रह्मादीये ब्रह्मांडकोटिदानेन यत्फलं लभते नरः तत्फलं समवाप्नोति शिवलिंगप्रदानतः शालग्रामशि-
ल॰ग्र॰ लादानेन ततोपि द्विगुणं फलं शालग्रामशिलारूपी विष्णुरेवेति वेश्रुतिरिति शालग्रामशिलाक्रयविक्रयो च न कुर्यात्
२१२ तदुक्तं पद्मपुराणे शालग्रामशिलायां यो मौल्यमुत्पादयेन्नरः विक्रेता चानुमंता च यः परीक्षानुमोदकः सर्वे ते नर-
212 कं यांति यावदाभूतसंप्लवमिति पुराणसंग्रहेपि शालग्रामशिलायां यो मौल्यमुद्घाटयेन्नरः विक्रेता चानुमंता च
परीक्षां योनुमोदयेत् सर्वे ते पापिनो ज्ञेयाः शाश्वतदुःखभागिनः मुनेकिं बहुनोक्तेन नरकं यांति दारुणमि-
ति शालग्रामस्पर्शनमन्त्रैर्न कर्तव्यं तदुक्तं स्मृतिसंग्रहे शालग्रामे च चक्रांके शिवनाभौ विशेषतः नात्रैः स्पर्श-
येद्विष्णुमर्चयन्नरकं व्रजेदिति अव्रतनाः यवाः अव्रतनाथानाः कृत्वा सर्पिषाहृतिः नतिः अव्रतनस्य कनानवंकल-
शं स्पर्शयिते साश्वलायनसूत्रे हस्तिकारादिभिः अव्रतनानाम यवा इति व्याख्यातं अव्रतैः स्पर्शने विलंबेन साधन-
यास्तेनेत्यादिना विशेषतो विहितं विल्वस्पर्शनमद्य यत्नतो यायांयवैरेव क्रियते तथा तत्रैव तानेवदत्ता विमेभ्य-
इत्यादिना अव्रतयत्नतो यायां विमेभ्यो यवादीयंते भीदत्तेन च अव्रतनाः आमतंडुला इति व्याख्यातं शालग्रामस्पर्श-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१६५

नैस्तुलसीदलैः कुर्यात् तथाच काशीखंडे ध्रुववाक्यं शालग्रामशिलायेन पूजिता तुलसीदलैः सपारिजातमाला
भिः पूजिते स्तु रसमनीति गरुडपुराणे तुलसीमिश्रतोयेन स्नापयंति जनार्दनं पूजयंति च भावेन धन्यास्ते भु
वि मानवा इति शालग्रामशिलाश्च द्वारकाशिला चक्रयुताः पूज्याः न केवलमिति तदुक्तं स्कंदपुराणे शालग्रा
मोद्भवो देवो देवो द्वारवतीभवः उभयोः संगमो यत्र तत्र मुक्तिर्न संशय इति तथा प्रत्यहं द्वादश शिलाः शाल
ग्रामस्य योऽर्चयेत् द्वारवत्याः शिलायुक्ताः स वैकुंठे महीयत इति तथा शालग्रामशिला यत्र यत्र द्वारवतीशिला
उभयोः संगमो यत्र मुक्तिस्तत्र न संशय इति तथा नारसिंहे पूजने श्रेष्ठ शालग्रामोद्भवा शिला द्वारकाजात चक्रां
का शिला श्रेष्ठा तथैव च तयोश्च संगमं कृत्वा पूजयन्मुक्तिभाग्भवेत् शालग्रामशिलावापि चक्रांकितशिलापि
४१४ वेति शालग्रामशिलामूर्त्तिर्नीर्थमाल्यधारणं च कर्त्तव्यमेव तदुक्तं पाद्मस्कांदयोः तीर्थकोटिसहस्रैस्तु सेवितैः
४०॥० किं प्रयोजनं तोयं यः पिबते नित्यं शालग्रामशिलाच्युतं गवां कोटिप्रदानेन यज्ञायुतशतेन च यत्फलं ऋषिभिः
प्रोक्तं विप्राः पादोदकेन तत् लभ्यत इति शेषः चक्रांकितशिलाग्रे तु निर्माल्यं तोयमेव च यो वै शिरसा बिभृयान्नास्ति
धुर्यो नरस्ततः कुंकुमं चंदनं पत्रं नैवेद्यं कुसुमं जलं शालग्रामशिलालग्नं तीर्थकोटिशताधिकमिति ब्रह्मपुराणे
गंगा गोदावरी रेवा नद्यो मुक्तिप्रदास्तथा निवसंति सतीर्थास्ताः शालग्रामशिलाजल इति पुराणसंग्रहेऽपि द्विज

ल.प्र.
२१६
213

स्नानमहासेन गर्भवासः सुदारुणः पीतं येन सदा विष्णोः शालग्रामशिलाजलं पादोदकेन देवस्य हत्याकोटिसम
न्विः शुध्यते नात्र संदेहस्तथा शंखोदकेन हि ये पिबंति नरा नित्यं शालग्रामशिलाजलं पंचगव्यसहस्रैस्तु प्राशितैः
किं प्रयोजनं प्राश्नितेसमुन्नत्ते किं दानैः किमुपोषणैः चांद्रायणैश्च किं तीर्थैः पीतापादोदकंस्तु विरिति शालग्रा
मविष्णादिदेवार्पितं नैवेद्यं भोक्तव्यमेव न दुष्कृतं पाद्मस्कांदब्राह्मपुराणेषु येहष्ट शिवउवाच भक्त्या भुंक्ते च नैवे-
द्यं शालग्रामशिलार्पितं कोट्यैंदरस लभते फलं यज्ञसहस्रपोः पैदवं चांद्रायणं अनर्हं मम नैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं
फलं जलं शालग्रामशिलालग्नं सर्वं याति पवित्रतां शालग्रामशिलालग्नं शालग्रामशिलासंबद्धेन नैवेद्येन यत्र शा
लग्रामे सर्वदेवतापूजाधिकरणत्वेन शिवपूजने क्रियते तन्नैवेद्यमग्राह्यम् अथवा शालग्रामे या शिवमूर्तिः शि
वनाभिमूर्तिस्तत्पूजने यन्नैवेद्यादि तद्ग्राह्यमिति अथवा शालग्रामशिलासंपृक्ते शिवलिंगपूजने नैवेद्यादि किं भक्ष
णीयं केवलशिवलिंगनैवेद्यभक्षणे तु स एवाह नैवेद्यं मेन रोभक्त्वा शुद्धो चांद्रायणं चरेत् विष्णुनैवेद्यभक्षणे तु पुनः
स एवाह भुक्त्वा केशवनैवेद्यं कोटियज्ञफलं लभेदिति ॥ बृहन्नारदीयेऽपि हरिरूपं सुखं नाम नैवेद्यं मदरोहरेः पादो
दकं च निर्माल्यं मस्तके यस्य सोऽच्युतः अन्यकाले तु यस्याग्रे दीयते पादयोर्जलं अपि पापसमाचारः सगच्छेद्धि सुम
मयं अग्निष्टोमसहस्रैस्तु वाजपेयशतैरपि नाप्नोति लभते देवि विष्णोर्नैवेद्यभक्षणादिति अत एव एकादश्यामि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णिधमस्तावेषारणाविषयेमाधवाचार्यैरुपपादितं पारणं चनैवेद्यमिश्रितं कुर्यात् तदुक्तं स्कंदपुराणे कृत्वा
वैवोपवासं तद्योश्नातिद्वादशीदिने नैवेद्यं तुलसीमिश्रं हत्याकोटिविनाशनमिति शिवलिंगनैवेद्यातिरिक्त
मपिविष्ण्वादिदेवार्पितं नैवेद्यं नग्राह्यं कुतः अर्पणं चदानमेकदानैवेद्ये अर्पिते पुनर्नैवेद्यग्रहणेदत्तापहार·
दोषइतिकेचिदाहुस्तदंधप्रलपितं हेयः अज्ञानं वामूलमिमांसकोप्रसक्तानुप्रसक्तविचारेणेति अथ शिवना
भिमाहात्म्यं लक्षणं च पद्मपुराणे स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये पाषाणाः संतिभूमिपा शालग्रामसमाः क्वापि निवसंति पु
नः पुनः शिलालिंगाकृतिर्यत्र दृश्यते चयत्नतः शिवनाभिः स विज्ञेयः शालग्रामोद्भवो नृप पूजयेत्तं वि
धानेन तत्र संनिहितः शिवः दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा नरो भक्त्या सर्वपापैः प्रमुच्यते शिवनारायणे शैले शालग्रामसमुद्भवं पू
जयेत्प्रयत्नेन तत्र संनिहितावुभौ शालग्रामशिलाभक्ता भक्ता विष्णोः शिवस्य च शालग्रामशिलामध्ये लिंग
रूपी शिवः स्थितः अर्चयंतिमहाभक्त्या शिवनाभिं तु ये जनाः तेयांति मंदिरं शैवं सिद्धचारणसेवितं शिवनाभिं तु
ये मर्त्या विधिवत्पूजयंतिच मंत्रैः शुष्योपहारैश्च तेयांति शिवसन्निधौ शिवनारायणे शैले पत्रदेशे व्यवस्थितं त
स्मैवं वैलवंतीर्थं भुक्तिमुक्तिप्रदायकं चक्रे तद्दृश्यते लिंगं शिलायां नारदः क्वचित् श्रीधरः स तु विज्ञेयः सर्वकामफ
लप्रदइति स्कंदपुराणे शालग्रामशिलालिंगे यः करोति ममार्चनं तेनार्चितः कार्त्तिकेयप्रमुखगणानामेकसप्ततिरिति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सर्वपुराणसारोद्धारकार्तिकमाहात्म्ये कूर्मचक्रमध्यभागेश्वेताभागोरेखान्विता शिवनाभिरितिख्याताभु
क्तिफल रेखान्विता गोष्पदयुक्ता पूर्वैर्विंदुकलाभानुरूर्ध्वपिंगजटाशशी शिवनाभिरितिख्यातः सूक्ष्मा
स्यः स्पष्टलिंगकइति ब्रह्मांडपुराणे कूर्माकृतिश्वोभागेलिंगभागेरेखान्वितः शिवनाभिरितिख्यितो·
भुक्तिमुक्तिफलप्रदः सर्वत्रलोहिताकारामूर्द्धिरेकजटाशशी अघोरासापरिज्ञेयाज्ञात्तृहिभिर्यतिपूजिता
ल॰प्र॰ हेमवर्णजटायुक्ताहेमविंदुसमन्विता मस्तकेगोरेखाभाचचंद्रगंगासमन्विता सद्योजाताभिधाश्रेष्ठापु·
२१४ त्रपौत्रधनप्रदा शिरोमध्येरक्तवर्णाश्वेतचंद्रजटायुता वामदेवाभिधाश्रेष्ठागृहिभिःपूजितासदा किंचित्क
214 पिलसंयुक्ताकृत्स्ननीलजटायुता पार्श्वेरेखासमोपेताईशानाभुक्तिदाभवेत् सूर्यविंदुजटाभारऊर्ध्वपिंगज
टाशशी तत्पुरुषाभिधानास्यात् दुर्लभासर्वकामदा द्विलिंगोवात्रिलिंगोवाचतुः पंचषट्लिंगवान् तत्तद्धे
करनाम्नास्याद्देवदेवः सदाशिवः देवत्वदायकैर्लिंगैः पंचभिः षड्भिरुत्तमा ततोमूर्तिफलंपुण्यमप्रावक्तुं
नशक्यतइति नृसिंहपुराणे कूर्मचक्रमध्यभागेश्वेताभागोरेखान्विता शिवनाभिरितिख्याताभुक्तिमुक्तिफ
लप्रदा पूर्वविंदुकलाभानुः पूर्वपिंगजटाशशी शिवनाभिरितिख्याता दुर्लभासर्वकामदेति यद्योगयाति
जानेपिकिंचित्समर्प्यते द्विनाभिःपद्मरूपाचेद्वेद्वेरिहरात्मिका नाभौलिंगेनयुक्तावाश्वेताभावैरेखान्विता

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शिवनाभीतिविख्याताभुक्तिमुक्तिप्रदायिका यवमात्रंतुगर्त्तस्यायवार्द्धंलिंगमुच्यते शिवनाभिरितिख्यात
स्त्रिषुलोकेषुदुर्लभः वासुदेवमयंह्येतत्लिंगंशिवमयंस्मृतं तस्माद्धरिहरक्षेत्रेशूलपंकेकराच्युतो सावेछिला
शनैः शास्त्राचतुर्वर्गफलप्रदा साक्षान्महेश्वरेणात्रसंयुक्तःशूलिनोहरिरिति इतिशिवनाभिमहात्म्यंलक्ष
णंच अथद्वारवतीशिलामाहात्म्यं स्कंदपुराणे द्वारवत्याःशिलादेविमुद्रयाममुद्रिता तयात्तुसहितेन
त्यात्तीर्थंद्वादशयोजने म्लेच्छदेशेऽपि चौर्यापिचक्रांकोयत्रतिष्ठति योजनानितथात्रीणिममक्षेत्रंवसुंधरे त
न्मध्येम्रियतेयस्तुस्तजकः सुसमाहितः शतवार्थीचग्रामस्ततत्पुनः सोपिजायते चक्रांकितस्यसान्निध्येयत्कृ
मिक्रियतेनरैः स्नानंदानंतपोहोमः सर्वंभवतिचाक्षयं संवत्सरंतुयत्पापंमनसाकर्मणाकृतं तत्सर्वंनश्यते
पुंसांसकृच्चक्रांकदर्शनात् ज्वरदाहोविषंचैवअग्निचौरभयंतथा सर्वंतेप्रशमंयांतिसकृच्चक्रांकपूजनात् भू
तप्रेतपिशाचाश्चडाकिन्यश्चवसुंधरे सर्वेतेप्रलयंयांतियत्रचक्रांकितंस्मरेत् भक्त्यावायदिवाऽभक्त्याचक्रांकंद्र
जयेन्नरः अपिचेत्सुदुराचारोमुच्यतेनात्रसंशयः संवत्सरंतुयः कुर्यात्पूजास्पर्शनदर्शनं विनासांख्येनयोगेन
मुच्यतेनात्रसंशयइति तथाद्वारवतीमध्येतुयत्किंचित्तुपाषाणंतुसचक्रेणमुद्रितं तस्यदर्शनमात्रेणमु
च्यतेसर्वपातकैः हृदिस्थितेनतुचक्रांकेहन्तावैवसनंतत्र नोपसर्पतितेनेभीतानष्टाविलुप्तपरिग्रहमिति तथावि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प्र·
२२५
225

विहीनापियाकाचिक्रियामंत्रविवर्जिता चक्रांकस्य पूजनान्मम्यक्फलंलभेव्यासोदितंफलं चक्रांकितशिलाग्रस्थंति
र्मात्यंतोयमेवच योवहेच्छिरसानित्यंनास्तिधन्योननरस्ततः चक्रांकितशिलाग्रेनकुर्यान्नागरसांहियः एकादशं
न्यग्रोधस्थदेवास्तत्रसर्वस्ववराः यत्रतिष्ठतिचक्रांकोदेवोद्वारवतीभवः तीर्थकोटिसहस्राणितत्रसंनिहितानिवै
यत्रयत्रन्यग्रोधस्थदेवस्यचक्रांकविह्नितः तत्रगच्छमहाभागसंसाराच्छिन्नरिष्यसीति तथाभगवद्वाक्यमपि ति
थीनांद्वादशीव्रतन् अभीष्टामुनिसत्तम प्रतिमानांतुसर्वासांशालग्रामशिलामम चक्रांकितास्तुपाषाणा
द्वारकायांचयेस्थिताः ममेष्टाःसर्वदाविप्रचक्रतीर्थसमुद्भवाः प्रवरंसर्वतीर्थानांशालग्रामशिलोदकं चक्रांकि
तस्यविशेषंदत्तापरंवियतेकविदिति तथान्यत्रापि सर्वेषुतीर्थेषुवसतिशैलाःपरंतत्केशवचक्रचिह्निताः
येचांकिताःकृत्स्नदर्शनेनवर्जनिपूजांशुभसंयुताश्च तिष्ठंतितस्मिन्नितस्मिन्नितरोमतुष्यास्तीर्थानिगंगागा
यपुष्कराणि यत्रामेयाप्यपिपुण्यशैलाश्चक्रांकिताःयस्यवसंतिगेहेइति इतिद्वारकाशिलामाहात्म्यं अथद्वा
रकाशिलालक्षणं पद्मपुराणे कृत्सामस्तुप्रदानिसंकपिलातुभयावहा श्रोन्मसंकरतुरादयाम्मीताविघ्नवि
नाशिनी कर्बुराशबला दुःखाभाषुत्रनाशायभग्नाभार्याविद्योगदा श्वेतात्रिलाष्टजासर्वकामार्थदापिकाच
छिद्रचक्रासादुःखाद्युःखदारिद्र्यनाशनी छिद्रादारिद्र्यदाचैवभवेत्पार्थिवसाशिला पुत्रपौत्रग्रहादीनिसुगमो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्सत्वानि च ददाति शुक्लवर्णाभा यत्नेन तु समर्चयेत् वर्तुला च तथा स्थूला च रुजिता सिद्धिदायिका सुखदा सम
चक्रा च विषमा दुःखदा भवेत् विषमा विषमचक्रिका छिद्रा भग्ना त्रिकोणा च न तथा विषमचक्रिका अर्धचंद्रा
कृतिर्या च शस्ता स्थानभवं तिरि फलमुन्नयने नासौ रुजयान्न कदाचनेत्यभिधानात् त्रिकोणा विषमा रक्ताः छि
द्रा भग्ना विवर्जयेत् अर्धचंद्राकृतिर्या तु रुजिता हानिकारिकेति प्रयोगपारिजाते तु विशेषः स्मर्यते भिन्नश्चै
वार्थनाशाय स्थूलो वृद्धिविनाशकः दीर्घश्चायुर्हरो ज्ञेयो न्यूनो वृद्धिविनाशकृत् शुक्लावर्णाशुभं त्तेयं तत्तच
क्रं तथैव चेति अत्रैव चक्रैर्मूर्तिभेदो अग्निपुराणे उक्तः सुदर्शनस्त्वेकचक्रो द्वयात् त्रिचक्रश्चाच्युतो देवस्त्रिच-
क्रो वा त्रिविक्रमः जनार्दनश्चतुश्चक्रो वासुदेवश्च पंचभिः षड्भिः प्रद्युम्नश्चैव स्यात् संकर्षणस्तु सप्तभिः संकर्ष
णो बलदेवः पुरुषोत्तमोऽष्टचक्रो नवव्यूहो नवात्मकः दशावतारो दशभिर्दशैकेनानिरुद्धकः द्वादशात्मा द्वा
दशभिरत ऊर्ध्वमनंतक इति गरुडपुराणे बालोवाच चतुष्कश्चतुर्भुज इति विशेषः हेमाद्रौ तु मूर्तिभेदेन फ
लभेदाः स्मर्यंते विलक्षणा च एकचक्रा शिला नारसिंहाख्याः सुशोभना सुदर्शनो महादेवो मोक्षैकफलदायकः
लक्ष्मीनारायणो द्वाभ्यां चक्राभ्यामंकिता शिला रुजिता भक्तियुक्तेन भुक्तिमुक्तिफलप्रदा त्रिचक्रश्चाच्युतो देवं
दत्त्यपदप्रदः रुजितो नात्र संदेहस्त्रिविक्रमस्य कीर्तितः चशब्दो वार्थे त्रिचक्रः अच्युतस्त्रिविक्रमो वेत्यर्थः श्रीम

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
२१८
218

दोरिपुहंतावचतस्त्रक्रोजनार्दनः पूजयेद्भक्तिसंयुक्तः सुगंधैः कुसुमादिभिः पंचभिर्वासुदेवः स्यात्पंचचक्रैः
शिलार्चितः जन्ममृत्युभयाज्ज्ञाताभवतेनात्र संशयः प्रद्युम्नः षड्भिश्चक्रैश्चलक्ष्मीकीर्तिप्रदोभवेत् पूजितोभक्ति
भावेनचक्रतीर्थशिलोद्भवः विलयद्दशिलास्तेयासप्तचक्रांकितास्त्विन पूजितस्तस्यनेदेवोगोत्रपुत्रप्रदोभवेत्
वोढितेवाष्टभिश्चक्रैर्ददातिपुरुषोत्तमः सर्वदयानवचक्रोऽदुर्लभंयन्नत्रैरपि पूजितः केशवस्तस्यददातिस्थान
मुत्तमम् राज्यदोदशभिश्चक्रैर्दशावतारसंज्ञकः दशावतारपूजासाचक्रांकस्यास्यपूजनात् एकादशभिश्चक्रैश्च
मधिकंचषड्गुनिय पूजितोभक्तिभावेनचक्रतीर्थशिलोद्भवः नत्वैवप्राप्यतेदेवश्चक्रैर्द्वादशभिश्चितः पूजि-
तः सर्वकामानामनंतफलदायकः द्वादशात्मासविज्ञेयोमुक्तिप्रदोश्चितः अतऊर्ध्वपरात्मासोसहस्राक्षीतिवि-
वर्द्धनः पूजितः सर्वलोकात्माविष्णुलोकप्रदायकः इतिचक्रांकितशिलाः कथिताः फलनामतः एकचक्रवि
षयेविशेषः प्रयोगपारिजातेस्मर्यते एकचक्रेविशेषोस्तिसविशेषस्तथोच्यते शुक्लकृष्णतथारक्तेद्विवर्णावि
ऊवर्णके यथैकचक्रिणः सर्वेतेषांसत्ताभवेत्क्रमात् पुंडरीकः प्रलंबघ्नोरामोवैकुंठएवच विष्वक्सेनइतिव
ख्यातस्तेषांपूजाफलंशृणु मोक्षमसृविवादंवदारिद्र्यमटनेनतथा ददातिपूजकस्यास्यनस्यात्तोत्रपरिस्पजेदि
ति इतिद्वारावतीशिलामूर्तिलक्षणं इतिशालग्रामशिलामूर्तिलक्षणप्रकरणंसमाप्तम् अथलिंगलक्षणं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रकरणे तत्र विशेषाच्छैलजं मुक्तिभुक्तये चानुषंगतः पार्थिवं भुक्तये शास्त्रं मुक्तये चानुषंगतः एवं वैदारुजं तेषां
मे विद्रलिंगेन यायाव्रतः स्थिरलक्ष्मीप्रदं हैमं राजतं चैव राज्यभृत् प्रजावृद्धिकरं ताम्रं भोगमाप्नुः श्ववर्धनं पद्मरागं महा
भूत्यै सौभाग्याय च मौक्तिकं चंद्रकान्तं मृत्युजितं स्फाटिकं सर्वकामदमित्यादिवचनैः फलविशेषकामनया मनया
नानाविधलिंगपूजा उक्ता सा च पूजा लिंगं सुलक्षणं कुर्यादन्यथा लिंगमलक्षणं दैर्घ्यहीने भवेद्व्याधिरधिके श
त्रुवर्धनं नाहहीने विनाशः स्यादधिके च शिश्नक्षयः विस्तारे चाधिके हीने राष्ट्रनाशो भवेत् ध्रुवं स्थूलहीने तु
दारिद्र्यं शिरोहीने कुलक्षयः बलस्तु विहीने च राजा राष्ट्रं च नश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेन लिंगं कुर्यात्सलक्षणं लिं
गं सलक्षणं पूज्यं मुनिजे लिंगमलक्षणमित्यादिवचनैः स्वसलक्षणानामेव लिंगानां कर्तव्यत्वेन प्रोक्तं न तु कानि सल
क्षणानि लिंगानीति लिंगलक्षणमुच्यते तत्रादौ लिंगमहिमाख्यानं स्कन्दपुराणे शिव उवाच न तु ध्यानस्य स्वि
तोर्च्चायां पुष्पधूपनिवेदनैः लिंगे स्थितिं यथा यात्यर्थं परं तुष्यामि पार्वति एष देवि पुराकल्पे लीनोऽहं सर्वदेवतैः
लीनत्वाल्लिंगमित्युक्तं सदेवासुरकिंनरैः सर्वैर्दिव्यप्रयुक्तो वा संयुक्तः सर्वपातकैः ययक्षामि दिवं देवि यो मे लिं
गार्चने रतः स्पृष्ट्वा सर्वाणि पापानि निर्दहेदोदयकल्मषः मन्नाम मन्त्रमस्कारो मामेव प्रतिपद्यते वस्त्रपूतजले
लिंगं स्नपयिता मम मामराः लक्षाश्वमेधजनितं पुण्यं समाप्नोति स नमाः स्रग्गंधचंदनरसैः लिंगमालिप्य भक्तितः तत्र

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.पु.
२२८

लिप्यते सरस्त्रीभिः स्वर्गापवर्गतत्कर्दमैरिति शिवनारदसंवादे पि विना लिंगार्चनं यस्य कालो गच्छति नित्यशः म
हाहानिर्भवेत्तस्य दुःखं तस्य दुरात्मनः एकतः सर्वदानानि व्रतानि विविधानि च तीर्थानि नियमा यज्ञा लिंगार्च
नैकतः स्थिता कुलो लिंगार्चनं श्रेष्ठं यथा लोके प्रदृश्यते तथा नास्तीति नास्तीति शास्त्राणामेष निश्चयः भु
क्तिमुक्तिप्रदं लिंगं विविधापत्तिवारणं पूजयित्वा नरो नित्यं शिवसायुज्यमाप्नुयात् न लिंगाराधनादन्यत् पु
ण्यं वेदचतुष्टये पि विद्यते सर्वशास्त्राणामेष एव विनिश्चयः सर्वमन्यत्परित्यज्य कर्मजालमशेषतः भक्त्या-
परमया विद्वान् लिंगमेकं प्रपूजयेत् ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वाप्यनुलोमजः पूजयेत्सततं लिंगं तत्त-
न्मंत्रेण सादरं तत्तन्मंत्रेण यथायोग्यं वैदिकतंत्रनाममंत्रेण लिंगपुराणे बहुनात्र किमुक्तेन चराचरमि
दं जगत् शिवलिंगं समभ्यर्च्य स्थितमत्र न संशयः मूले ब्रह्मा तथा योग्यं वैदिकतंत्रनाममंत्रेण लिं मध्ये
विष्णुस्त्रिभुवनेश्वरः रुद्रोपरि महादेवः प्रणवाख्यः सदाशिवः लिंगवेदी महादेवी लिंगं साक्षान्महेश्वरः त
योः संपूजनान्नित्यं देवी देवश्च पूजितौ दर्शनात्स्पर्शनात्तस्य लभते निर्वृतिं नराः तस्य पुण्यं मया वक्तुं सम्यग्युग
शतैरपि शक्यते नैव विप्रेंद्रास्तस्मात्संस्थापयेच्छिवं सर्वेषामेव वर्णानां विभोर्दिव्यं वपुः शुभं सकलं भाव
नायोग्यं योगिनामेव निष्कलं तथा शिवलिंगं समुत्सृज्य यजते चान्यदेवताः स नृपः सह देशेन रौरवं नरकं व्रजे

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्‌ब्रह्मादयः सुराः सर्वे राजानश्च महर्द्धिकाः मानवा मुनयश्चैव सर्वे लिंगं यजंति च विष्णुनारायणं दृष्ट्वा सस्मैन्यं ब्र
ह्मणः सुते स्थापितं विधिवद्भक्त्या लिंगं नीरेन दीयते ः कृत्वा पापसहस्राणि दृष्ट्वा विमशानेन तथा भावात्समा
श्रितो लिंगं मुच्यते नात्र संशयः सर्वे लिंगमया लोकाः सर्वे लिंगे प्रतिष्ठिताः तस्मादभ्यर्चयेल्लिंगं यदीच्छेच्छा
श्वतं पदं सर्वलिंगमयं लोकं सर्वलिंगे प्रतिष्ठितं तस्मात्सर्वः प्रयत्नेन स्थापयेत्पूजयेच्च तत् ब्रह्मा हरश्च भगवा
न् विश्वदेवी उमा हरा लक्ष्मीर्धृतिः स्मृतिः प्रज्ञा विधिर्दुर्गा शची तथा रुद्राश्च वसवः स्कंदो विशाखः शाख एव च नैगमे
यश्च भगवान् लोकपाला ग्रहास्तथा सर्वे नंदिपुरोगाश्च गणा गणपतिः प्रभुः पितरो मुनयः सर्वे कुवेराद्याश्च सु
प्रभाः आदित्या वसवः साध्या अश्विनौ च भिषग्वरौ विश्वेदेवाः समरुतः पशवः पक्षिणो मृगाः ब्रह्मादिस्थावरां
तं च सर्वं लिंगे प्रतिष्ठितं तस्मात्सर्वं परित्यज्य स्थापयेल्लिंगमैश्वरं यत्नेन स्थापिते सर्वं पूजितं पूजयेद्यदि मूले·
ब्रह्मा वसति भगवान् मध्यभागे च विष्णुः सर्वेशानः पशुपतिरन्त्ये रुद्रमूर्तिर्वरेण्यः तस्माल्लिंगं गुरुतरं स्थापयेत्पू
जयेद्वा यस्मात्तत्र गणपतिरसौ देवमुख्यैः समस्तैः गंधैः स्रग्धूपदीपस्नपनजनवलिस्तोत्रमंत्रोपहारैर्नित्यं येऽभ्य
र्चयंति त्रिदशवरतनुं लिंगमूर्तिं महेशं गर्भाधानार्तिनाशत्यघभयरहिताः देवगंधर्वमुख्यैः सिद्धैर्याश्च स्तूयमाना गणाव
रनमितास्ते भवं त्वप्रमेयाः तस्माद्भक्त्योपचारेण स्थापयेत्परमेश्वरं पूजयेच्च विशेषेण लिंगं सर्वार्थसिद्धये तथा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
२१८
218

तस्मात्सदा पूजनीयो लिंगमूर्त्तिर्महेश्वरः यावत्पूजा सुरेशस्य तावद्देहस्थितिर्यतः पूजनीयः शिवो नित्यमतः
श्रद्धासमन्वितैः सर्वलिंगमयं लोकं सर्वलिंगे प्रतिष्ठितं तस्मात्संपूजयेल्लिंगं य इच्छेत्सिद्धिमात्मनः सर्वलिंगार्चना
देवदेवा दैत्याश्च दानवाः यक्षा विद्याधराः सिद्धा राक्षसाः पिशिताशिनः पितरो मुनयश्चापि पिशाचाः किंनराद
यः अर्चयित्वा लिंगमूर्त्तिं संसिद्धा नात्र संशयः तस्माल्लिंगं यजेन्नित्यं येनकेनापि भो सुराः तथा येवांछति महाभो
गान्राज्यं वा त्रिदशालये तेर्च्चयंतु सदाकाले लिंगरूपं महेश्वरं छित्वा भित्वा च भूतानि हत्वा सर्वमिदं जगत् यजेदेकं
विरूपाक्षं न स पापैः प्रलिप्यत इति इति लिंगमहिमा अथ लिंगलक्षणं तत्र लिंगं द्विविधं अकृत्रिमं कृत्रिमं
च अकृत्रिमं स्वयमुद्भूतं स्वयंभुवाणलिंगादि कृत्रिमं निर्मितं धातुलिंगादि सिद्धांतशेखरे तत्वानां क प्रासादे स्था
पितं लिंगमचलं तत् शिलादिजं स्थापितं तत्चलं गेहे स्थिरं लिंगमथोच्यते पंचधा तत्स्थिरं लिंगं स्वयंभू दैवं बाणकं
आर्षं च मानुषं लिंगं तेषां लक्षणमुच्यत इति तत्र स्वयंभुलिंगलक्षणं चोक्तमपदीपिकायां आचार्यमतेपि सैवस्व
यंभूतो महेश्वरः यत्रैव स्वयमुत्पन्नं लिंगमुक्तं स्वयंभुतत्त्वं विभुवयस्य संस्पर्शाद्दहति दिव्यमेवतत् भुवत्स्वय
म्भाद्यशिं पिंगलाद्यतिरिक्ताबल्लरं यं निर्मितिमनि गितानाद्यौ शैवसिद्धांतशेखरे नानाच्छिद्रसंयुक्तं नानावर्णसम
इमयं लिंगं पिंडिकां विंदुरूपिणी शालीशिलांकलारूपां च से लिंगस्थलक्षणं तल्लिंगं द्विविधं ज्ञेयमचलं चचलं तथा प्रत्येकं त्रिविधं ज्ञेयं

वि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ष्ठितं अरहमूलं च लिंगं कर्कशं भुवि दृश्यते तल्लिंगं स्वयमुद्भूतमपीदं लक्षणच्युतं स्वयंभुलिंगमित्युक्तं तत्र नाना
विधं मतं शंखाभं मस्तके लिंगं बैल्वं तद्द्राहृतं पद्माभं मस्तके ब्राह्मं छत्राभं शाक्रमुच्यते शिरोग्रमं तदाग्नेयं पि
तृवंयाम्यमीरितं खड्गाभं नैर्ऋते लिंगं वारुणं कलशाकृति वायव्यं ध्वजलिंगं कौबेरं तु गदानिभं ईशानस्य त्रि
शूलाभं लोकपानामिति स्मृतं स्वयंभुलिंगमाख्यानमिति इति स्वयंभुलिंगलक्षणं अथ बाणलिंगलक्षणं का
लोत्तरे बाणलिंगं तथा शैवं भुक्तिमुक्तिप्रदायकं उत्पत्तिं बाणलिंगानां लक्षणं लेशतः शृणु नर्मदा देविका
या च गंगा यमुना च यास्तथा संति पुण्यनदीनां च बाणलिंगानि षण्मुख इंद्रादिपूजितान्याहुः साम्राज्यार्थप्रदानि
तु आरुणं दिव्यकीलालम्लसत्स्वर्णांकशोभितं आग्नेयं तत्र शक्तिनिभमथवा शक्तिलांछितं रुद्रं लिंगवरं स्थाप्यते
जस्तापि पतिर्भवेत् दंडाकारं भवेद्याम्यमथवा रसनाकृति पद्माकेसर्वकृते तन्निर्ऋतिकं जायते तदा निर्ऋतिकं रूदे
शत्रूणां निधनं तेन क्रियते स्थापितेन तु गात्तसंख्यं सदृशं ज्ञानयोगफलप्रदं शर्करादिमलिमं तु कटुकं तेन
चेत्तदा गात्तसं नैर्ऋतिलिंगं वारुणं वर्तुलाकारं पाशांकं चाति वर्चसं हृदिस्थं खाद स्वच्छं तन्मंभोयाम्यमथ
गे हुलं भूम्नं च वायव्यं ध्वजाभं भुजभूषणं मस्तके स्थापितं तस्य तु लोन्नूनमितं सतः निर्वीते तु चलस्पत्र शोक
चाटने हितं तलः कार्याहुः गदाकारं मध्यगुरु कौबेरं संस्थमध्यगं दिनं वाप्यथवा रात्रिं संस्थानं हृद्धिवर्धनं अस्त्र
च आपीतानि घरस्नानि च क्रांकानि विशेषतः इंद्रलिंगानि तान्याहुः साम्राज्यार्थप्रदानि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰ २१९

२१९

शूलांकितं रौद्रं हिमकं देववर्द्धनं चतुर्वर्णमयं वापि वैस्नवं जायते यतः वैस्नवं चक्रशंखांकं गदाब्जादिविभूषि
तं श्रीवत्सकौस्तुभांकं च शेषसिंहासनांकितं वैनतेयसमांकं वा तदा विस्नुपदांकितं वैस्नवं नाम तत्प्रोक्तं स
र्वैश्वर्यफलप्रदं शालग्रामादिसंस्थं तु शंखांकं श्रीविवर्द्धनं पद्मांकं स्वस्तिकांकं वा श्रीवत्सांकं विभूतये
उक्तांकं श्रेयसे योज्यं शेषमन्त्रविवर्जयेत् पद्मवर्णं तु यल्लिंगं पद्मांकं वा कमण्डलु दण्डांकं सूत्रचिह्नं वा ब्राह्मं तत्
नामितं मतं शशिवर्णं महाकालं नन्दीशं पद्मरागवत् पुष्परागनिभं शार्वं सुवर्णाभं सिद्धपूजितं मौक्तिकाभं नी
लनिभं रुद्रादिभिः प्रपूजितं वसुदैर्मेदयते शंगुल्यकैर्यात्तथा नकैः नानावर्णं लोहवर्णमथ नीलोत्पलप्रभं
रत्नेन लतर्णाभं कंपरीसं तत्त्वकोविदैः त्रिःसप्तमपंचवारं वा तुलासाम्यं न जायते तदा बाणं समाख्यातं शेषं
पाषाणसंभवं नयावा प्रक्षिपेद्द्वयोर्यदा तदुपलभ्यते बाणलिंगं तदा विद्धि नूनं सर्वविवर्द्धनं एवं बाणस
माख्यातं यथावत्सेतयादितः बाणः सदाशिवो देवो बाणो बाणासुरोऽपि च तेनेतत्संस्कृतं यस्माद्बाणलिंग
मुदाहृतं सदा संनिहितस्तत्र शिवः सर्वार्थदायकः कृतप्रतिष्ठितं लिंगं बाणाख्येन शिवेन च पक्वजम्बूफ
लाकारं कुक्कुटांडसमाकृति भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव बाणलिंगमुदाहृतं कर्कशे बाणलिंगे तु पुत्रदारक्षयो भ
वेत् चिपिटे पूजिते तस्मिन् गृहभंगो भवेत् ध्रुवं एकपार्श्वगते तेन पुत्रदारधनक्षयः शिरसि स्फुटिते वा॰

२१९

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णो व्याधिर्मरणमेव च अग्न्यज्ञातिविलग्नेन सर्वगोत्रक्षयो भवेत् छिद्रे लिंगे च्छिन्ने वाणे विदेशगमनं भवेत् लिंगे-
चक्राणिकां दृष्ट्वा व्याधितो जायते पुमान् अर्धस्यात्कपिले लिंगं मुनीनां मोक्षकांक्षिणां लघु वा कपिले स्थूले
शूद्रैनैवार्चयेत्कश्चित् गृहे विवर्जयेत्तात्कृतं तन्मुमुक्षार्थिनो हिते शूजितव्यं शूद्रस्थेन वर्णेन भ्रमरोपमे तत्त्व
पीठमपीठं वा मंत्रसंस्कारवर्जितं सिद्धिमुक्तिप्रदं वाणं सर्वप्रासादपीठगं वाणलिंगं यदा हस्ते न तदासौ भुक्तिकं
वदेत् सप्तम्यायेगवापुष्पकानाशी त्रिपंचसमवारं वा न लाभाय न जायते तदा वाणं समाख्यातं शेषं पाषा-
णकं च वदेत् नर्मदां वा प्रद्विपेद्रूपो यदा तदुपलभ्यते तदा वाणं समाख्यातं मन्यथा क्लेशदायकं रेवाकारो वि-
चार्योत्र संहितोक्तविधानतः तथा श्रीभैरव उवाच साधु साधु महाभाग यत्त्वया पृष्टितो ह्यहं कथयामि त-
संदेहोपघाशास्त्रे च निश्चयं वाणासुरः पुरा भद्रे शिवस्यातिवल्लभः जितक्रोधो नु रक्तश्च शिवपूजाविधौ र-
तः बुद्धिस्तो निपुणश्चैव शिल्पज्ञो लक्षणान्वितः दिने दिने स्वयं कृत्वा लिंगं स्थाप्य प्रपूजयेत् एवं यावच्छतं
चार्द्धं दिव्यमानेन पूजयत् तदा तद्भक्तिपुष्टेस्तु प्रसन्नः शंकरो भवत् शंकर उवाच तुष्टोऽहं तव हे वाण वरं ब्रू-
हि किमिच्छसि शंकरस्य वचः श्रुत्वा वाणो वचनमब्रवीत् यदि तुष्टोसि देवेश ह्यमहं तव मंदभागिने क्लिष्टोऽहं त-
व देवेश लिंगं कृत्वा दिने दिने ततलक्षणसंसिद्धं लक्षणं शास्त्रनिर्मितं यास्तार्थो ऽप्यलभो देव सिद्धस्वार्थः स

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दुर्लभः तस्मात्त्वं यदि मे तुष्टो लिंगे देहि सुलक्षणं सर्वकाङ्क्षणिकं नाथ सर्वसत्वानुकंपकं सर्वेषां च हितार्थाय
प्रसादं कुरु शंकर आश्रुत्यैवं वचनं तस्य शिवः परमकारणं गत्वा कैलासमूर्द्धानं बाणेन सह शंकरः निर्मिता-
लिंगकोटीनां संख्यायामेव च चतुर्दश सिद्धलिंगं तु तत्सर्वं सदोदयं स्वसंभवं आपाद्यैवं स्वसंश्रीबाणस्य च सम-
ल·प्र· र्पितं अद्वयं वाव्ययं बाणं स्थाप्यमानं च नित्यशः ततः सहस्रबाणस्तु भारं कृत्वा प्रयत्नतः तद्द्वारे स्वपुरं नीत्वा
२२० नूनं चिंतयते शुचिः अद्वयं यदि संसिद्धं स्थाप्यमानं दिने दिने सतां नां सिद्धिहेतवे अर्थं पुराणस्थाने शुभसंचये लिंगा-
दौ कालिकागर्ते संविनास्तु त्रिकोटयः श्रीशैले कोटयस्तिस्रः कोट्येका कन्यकाश्रमे माहेश्वरे च कोटिस्त्वेक
न्यातीर्थे च कोटिका महेंद्रे चैव नेपाले यत्रैका कोटिरेव च बाणार्थं हि कृतं लिंगं बाणलिंगमतः स्मृतं बाणो
वा शिवस्तस्मात्स्वकृतं बाणमुच्यते तत्कृतत्वात्स्वयो बाणस्तेनो लिंगानुरूपतः तस्मात्तेषु प्रदेशेषु पुराणस्था-
नेनतोपि वा स्थितं यच्छिवसद्भावं शिवस्याकृतिविग्रहं हेमाद्युदाहृतलक्षणासमन्वयेपि स्वयंभुलिंगवद्बाण
लिंगं भुक्तिं च मुक्तये सहस्रफलमन्यस्माद्यथास्थापनपूजने श्रीशैले कालिकागर्ते लिंगाद्रौ कार्णिकाश्रमे
कन्यातीर्थे वनेपाले महेंद्रे कामरेश्वरे स्थितानि बाणलिंगानि शिवेनैव कृतानि तु शैवसिद्धांतशेखरे बाणलिं-
गानधिकृत्य तदनेकप्रकारं स्याद्द्व्वर्णमपीठकं सलिंगं तत्रविहीनं च वा रंगं तत्स्थलतायकमिति पनेषां वा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णलिंगानां च प्रतिष्ठावाहनादिकं न कर्त्तव्यं तदुक्तं भविष्यपुराणे वाणलिंगानि राजेंद्र स्थितानि भुवनत्रये न प्र
तिष्ठा न संस्कारस्तेषामावाहनं न तथेति इति वाणलिंगलक्षणं अथ रौद्रलिंगलक्षणं सिद्धांतशेखरे नदी
समुद्रवं रौद्रमन्योन्यस्य विघर्षणात् नदीवेगात्समं स्निग्धं संजातं रौद्रमुच्यते हेमाद्युदाहृतलक्षणसमुच्चये स
रित्प्रवाहसंस्थाने वाणलिंगसमाकृति यदन्यदपि वा रुद्र्यं लिंगं रौद्रं स्मृतं वरं सरित्नदी सा च नर्मदा रौद्रं
लिंगं तथाख्यातं वाणलिंगसमप्रभुक्ति श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं विप्रादिपूजिते स्वभावात्कृष्णवर्णं वा सर्वजा-
तिषु सिद्धिदं नर्मदासंभवं रौद्रं वाणलिंगवदीरितमिति कालोत्तरे उक्तत्वात् सिद्धांतशेखरे नर्मदासंभवं लिंग
वाणलिंगवदीरितं सर्वप्रासादयोग्यं च सर्वपीठार्हकं मतमिति इति रौद्रलिंगलक्षणं अथ शिवनाभिलिं
गमहिमा शिवनारदसंवादे शिवनाभिमयं लिंगं नित्यं पूज्यं महर्षिभिः एतच्च सर्वलिंगेभ्यस्तस्मात्पूज्यं विधा
नतः इति सर्वलिंगेभ्यः श्रेष्ठमित्यर्थः इति शिवनाभिलिंगमहिमा अथ शिवनाभिलिंगलक्षणं शिवनारद
संवादे शिवनाभिलिंगं प्रक्रम्य उत्तमं मध्यमं नीचं त्रिविधं लिंगमीरितं चतुरंगुलमुच्छ्रायं रम्यं वेदिकया युतं
उत्तमं लिंगमाख्यातं मुनिभिः शास्त्रकोविदैः तदर्धं मध्यमं प्रोक्तं तस्यार्धं चाधमं स्मृतमिति इति शिवनाभि
लिंगलक्षणं अथ दैवलिंगलक्षणं सिद्धांतशेखरे करसंपुटसंस्पर्शशूलटंकेन भूषितं रेखाकोटरसंयुक्तं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प्र·
२२१

निम्नोन्नतसमन्वितं दीर्घाकारं च यल्लिंगं ब्रह्मभागादिवर्जितं लिंगं दैवमिति प्रोक्तं गाणकं श्रोयतेधुनेति इति
दैवलिंगलक्षणं ॥ अथ गाणलिंगलक्षणं सिद्धांतशेखरे कूष्मांडस्य फलाकारं मातुलुंगफलोपमं उर्वारु
कफलाकारं कपित्थफलसंनिभं तालस्य वा फलाकारं गाणं तल्लिंगमीरितमिति इति गाणलिंगलक्षणं
अथार्षलिंगलक्षणं तत्रैव नालिकेरफलाकारं ब्रह्मसूत्रविवर्जितं मूले स्थूलं च यल्लिंगमग्रे स्थूलं च यद्भवे
त् मध्ये स्थूलं च यल्लिंगं ऋषीणां तदुदाहृतं इत्यार्षलिंगलक्षणं अथ कृत्रिममानुषलिंगलक्षणं तत्रानेक
विधं तत्र रत्नादिनिर्मितं तथा च शैवसिद्धांतशेखरे मानुषं च तथा प्रोक्तं रत्नजं लोहजं तथा धातुजं रत्न
येवार्दं शैलं पिष्टादिनिर्मितमिति लोहजं स्वर्णादिनिर्मितं स्वर्णादीनि च द्रव्याणि लोहान्युच्यंते विस्तर
भीतेरेचापलक्षणं लोहानि ताम्रचत्वारि शस्यंते चापकर्माणि स्वर्णं रजतं ताम्रं तथा कृष्णायसं द्विजेत्युक्तत्वा
त् अत्र मानुषलिंगभेदे यत्पिष्टादिनिर्मितं लिंगं तत्क्षणिकं ज्ञेयं नास्थिरं तं न चले क्षणिकं नाम तात्कालिकं
तत्र यथाकामं गंधादिद्रव्यमयं निर्माय प्रतिष्ठाप्य तत्कालमेव समभ्यर्च्य विसृज्य जले प्रक्षिपेत् तथा चोक्तं का
लोत्तरे गंधादिपिष्टजातानि नास्थिराणि चलानि तु तावत्कालं च संपूज्य विसर्ज्यैतानि के क्षिपेदिति एतानि क्ष
णिकलिंगानि कंजलं सिद्धांतशेखरेपि क्षणिकानामथो वक्ष्ये लिंगानां लक्षणं ततः गंधजं पिष्टजं गोमयं गोम

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

योऽन्यं च भस्मजं हरिद्रानवनीतोत्थं सैकतं तन्मयं तथा लाक्षं सार्जरसं सैक्थं नानाद्रव्यसमुद्भवं फलं पुष्पमिती
मानि क्षणिकानि विचक्षणाः आद्यलिंगानि चैतेषां चतुर्भिर्वीक्षणादिभिः शुद्धिं कृत्वाय संपूज्य ततो मंत्राद्वि
सर्जयेत् पूजांते तानि लिंगानि निरूपणापेक्षया सिद्धिप्रदानीति हेमाद्रावुदाहृतलक्षणसमुच्चये द्विविधं रत्नजं लिंगं
निर्मितं चाप्यनिर्मितं कारुभिर्घटितं यच्च तल्लिंगं निर्मितं स्मृतं स्वभावोत्थं विशुद्धं यद्रत्नं तच्चाप्यनिर्मितं तत्पू
ज्यं राजभिर्यत्नाद्भुक्तिमुक्त्यर्थिभिः सदा त्यजेद्विद्वान् विनेशोद्भूलाग्रचिपिटं कृशं अधोधोवदनं दीर्घमथः स्फु
लेचनिः प्रभमिति रत्नलिंगे शुद्धैलीकरत्नपरीक्षाप्रकरणोक्तनिःस्वलक्षणापेक्षणादोषादकालेन तद्रत्नलिंगं
शुद्धं द्रष्टव्याः सिद्धान्तशेखरे त्रिविधं स्फाटिकं प्रोक्तमर्कसोममयमात्मकं मध्याह्नसमये तीव्रो सूर्यरश्मौ स्थितेम
णौ जायते सार्कतूले वह्निर्यस्मात्तत्सूर्यकान्तकं संस्पृष्टे चंद्रकिरणे निशीथे विस्रुते मणौ यस्मात्स्रवति पानीयं
चंद्रकान्तं तदुच्यते नज्वलत्यर्करश्मौ च यन्नेन्दुरश्मौ द्रवत्यपि समात्मकं तत्स्फटिकं सर्वतत्त्वं च तत्त्रिविधं शुक्लं रक्तं च
पीतं च हृत्वा भद्रालक्षणादिषु अंबुबिंदुनिभं स्वच्छं समं स्निग्धं प्रभान्वितं अशेषदोषनिर्मुक्तं स्फाटिकं सर्वकामदं निः
प्रभं निम्नं विरूपं च रूक्षं वर्णं च जर्जरं तुषारकणसंयुक्तं रेखाविपिटसंयुतं सगर्भकीलकोपेतं शर्करावर्णसंयु
तं अश्मजातिसमाक्रान्तं सदोषं स्फाटिकं त्यजेत् रत्नानामपि लिंगानां पीठं कार्यं स्वयोनिजं हेमजं तदभावे स्यान्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ प्र॰
२२२
२२२

दभावेतु राजतं ताम्रजं तदभावे वा कुर्यात्काष्ठेन लोहजं सपीठं स्फाटिकं कुर्यात्तल्लक्षणमथोच्यते लिंगमस्तक
विस्तारे स्याद्भागसमेन पेत् नाहेन त्रिगुणं कुर्यान्नाहवत् पीठविस्तरं ईशांश द्विगुणं कुर्यादुच्चत्वेन पीठमुत्तमं ईशं वा
चतुरस्रं वा मध्ये कंठसमन्वितं द्विगुणं लिंगनाहाच्च कंठनाहं समाचरेत् त्रिमेखलमथ पश्चोर्ध्वसमं वाथ द्विमेखल
लिंगमस्तकविस्तारं षड्गुणं विभजेत्ततः मेखलामेकभागेन कुर्यात्तु खातं च तत्समं लिंगदैर्घ्यसमं कुर्यात्प्रनालं पी
ठ वाह्यतः विस्तारं तत्समं मूलेन तदर्धं च तदर्धतः जलमार्गः प्रकर्तव्यस्तस्य मध्ये त्रिभागतः कुर्यान्नीवार्धदीर्घं
वा प्रनाले च षिवोदितं सर्वेषां रत्नलिंगानां सपीठानां विशेषतः लोहादीनां च लिंगानामेवं लक्षणमाचरे-
दिति शिल्पशास्त्रे लिंगमस्तकमध्यान्तसूत्रे स्यादाप्रणालिकं लिंगप्रणालीपृष्ठत्वेनावदेव प्रकीर्तितं उच्च
त्वे पितयापीठे पूर्वसूत्रे प्रचक्षते इति कालोत्तरे लिंगमस्तकविस्तारो लिंगोच्छ्रायसमो भवेत् त्रिगुणः परिणा
हः स्यात्ततः पीठी प्रतिष्ठिता लिंगत्वं लप्रमाणं लेखानां च सूत्रस्य लक्षणं पंचसूत्रसमायुक्तं शिवलिंगं समर्चयेत्
भुक्तिदं मुक्तिदं देवि धनारोग्यसुतप्रदमिति इदं च पंचसूत्रादिलक्षणं च लेपपाषाणलिंगेष्वेव स्पंदश्यमेव रत्न-
लिंगादेस्तु तदभावेपि न दोषः तदुक्तं हयशीर्षपंचरात्रे न कुर्याल्लक्षणोद्धारं रत्नजानां च लात्मनां स्वभावल
णं तेषां स्वर्णजानामपि द्विज तस्मात्तल्लक्षणोद्धारं कुर्यान्मापाषाणलिंगवत् प्रचलानां तेजसानां कृ विदिष्यते न लक्ष

आदिना पूर्वलिखितरि ज्ञानशोरवरवाक्यगतं धातुमृत्तिकावृक्षशिला पिष्टादितंग्रहः अस्या पिसिद्धांतशेखरे वाक्यसे न॰ तत्र पूर्वीनकानां मेवसंग्रहस्यन्यायत्वात्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

णाभिस्मादि पाषाणलिंगवदिति पदेन पाषाणलिंगे पंचसूत्रादिलक्षणमुक्तं स्पष्टमित्यवगम्यते सोमशं-
भुनाप्युक्तं रत्नजे लक्षणोद्धारेण लोहेन सरिद्भवे लिंगे तु चललोहे तु न दृष्टं क्वचिदागमे स्वरूपलक्षणं नैवाम
भारत्ने तु निर्मलेति शिवनारदसंवादे पंचसूत्रविधानं च पार्थिवेन विचारयेत् यथा कथंचिद्धि धिनारमणीयं
प्रकारयेत् अखंडेन हि कर्तव्यं न हि खंडं प्रकारयेत् सखंडे हि अकुर्वाणो नैव पूजाफलं लभेत् एकजं तु फलाकारं स
र्वकामप्रदं शिवं ॥ विपरीतं यः करोत्येव हानिः पीडाकरं हि न दिति अथापरो विशेषः उक्तः कालोत्तरे रत्नजं हेमजं
लिंगं पारदं स्फाटिकं तथा पार्थिवं पिष्टजं पौष्पमखंडं तु प्रकारयेदिति पिष्टजपदं पौष्पपदं च सर्वक्षणिकलिं
गोलक्षकं शिवनारदसंवादे विशेषः अखंडं तु चरं लिंगं हि अखंडमचरं स्मृतं वेदिकान्तमहाविस्रलिंगं देवो महे
श्वरः अतो हि स्थावरे लिंगे स्मृता श्रेष्ठा हि खंडता हि खंडं स्थावरं लिंगं कर्तव्यं हि विधानतः अखंडं जंगमं प्रोक्तं शै
वसिद्धान्तवेदिभिः हि खंडं तु चरं लिंगं कुर्वंत्यज्ञानमोहिताः नैव सिद्धान्तवेत्तारो मुनयः शास्त्रपारगाः अखंडं स्था
वरं लिंगं हि खंडं चरमेव च ये कुर्वंति नरा मूढा न पूजाफलभागिनः तस्मात् शास्त्रोक्तविधिना नाखंडं तु रसज
कं हि खंडं स्थावरं लिंगं कर्जव्यंपरयामुदेति इति क्षणिकमात्रपलिंगलक्षणं अथ लिंगमाने सिद्धान्तशेखरे
अंगुलादिविहस्तान्तानि रत्नलिंगानि कारयेत् सर्वलक्षणयुक्तानि विविभिर्भागैर्युतानि चेति कालोत्तरे लोहरत्नमयं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विमले: अङ्गुलात्

लिंगं गृहिणां च गृहे हितं अंगुलात्तु वितस्त्यन्तं नोर्ध्वं नार्थो विभूतये अंगुलादि वितस्त्यन्तमिति रत्नव्यतिरिक्तमपरं लिंगविष-
यं रत्नजे तु नापं तिपमः रत्नजे नियमो नास्ति यथालाभं प्रपूजयेदिति स्मरणात् नियमो नास्तीत्येतदपि सगुणो-
त्तमरत्नविषयमिति मानोन्मानप्रमाणादि नेष्यते नवाङ्गुले हि तत्राप्येवस्यते तथा तत्केलेदानं च वापि रत्न-
दे परिवर्जयेदिति मयसंग्रहे रत्नलिंगमधिकृत्य इष्टकुपीठमपीठं वा तत्स्यात्तोर्ध्वं नवांगुलात् नवांगुलादि-
लम्प्र· ति गुणादी रत्नविषयं अंगुलादर्वागपि महारत्नमयं लिंगं भवतीत्याह स एव सिद्धये वदरात्राप ञ्चणकाद्दाश-
शस्यते वदराथः सिद्धयेत प्रशस्यते इति वदनं वदरप्रमाणमथ तु जानाति चणकाद्दे नि गुणाधिकमभिप्रे-
२२२ त्योक्ते अत एवांगुलादर्वागपि महारत्नलिंगपूजने फलमपि स्मर्यते मुद्गायंगुलपर्यन्तं शालजैः सुपरीक्षितैः
२२३ महारत्नमहामूल्यं गुणान्वितं योजयेत्सदा तस्यार्चनाज्जयः शान्तिरारोग्यं विपुलाः श्रियः सन्तानो पायशस्या-
युर्भवेद्भूपते स्थिरमिति प्रभातिशये सति परापरप्रमाणावधिद्वयातिक्रमेऽपि न दोषः स्मात् स्व संस्थाने मही-
मवेदाधिक्येपि न दोषकृत् सत्येवैको गुणो येन वलीयान्सर्वदोषजित् तथा यदि स्वसंस्थानं शोभनलिंगाकृ-
तिसंकृतं पक्वकृष्णनदीमिश्रकं च भवति न दानवांगुलाधिके चणकादल्पत्वेपि दोषकं च भवति येन कारणे·
नातिवलवानेकयवदीमिलता गुणाः सर्वदोषजिद्भवति किं पुनः संस्थानयुक्तरत्नार्थः दीप्ते समे सर्वदो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वज्रिलेदेत्वमाह समस्तमणिजातीनां दीप्तिः सांनिध्यकारणं ज्योतिर्मयस्य परमस्य शरस्य दीप्तिरेव सन्निधेः का
रणं तदुक्तं येन पाषाणवैडूर्यमूल्यमलं वसुंधराः वज्रादीमनरत्नाद्यतेजसस्तद्धि जंभिन्नमिति अतः स्तसं
स्थानवतिदीप्तेचरत्नेचाणाकादारभ्यनवांगुलाच्चधिकोमाननियमोनग्राह्यः तथाह मानोन्मानप्रमाणादि
नेषुग्राह्यं नवात्रुधेरिति शिवागमे स्फाटिकंलिंगमधिकृत्य अंगुलादिवितस्त्यंतं पूजनीयं गृहे सदा तदू
र्ध्वीधोपिसंस्थाप्यं निर्मलं प्रभयोज्वलमिति सिद्धांतशेखरेपि अंगुलादिवितस्त्यंतं लिंगं गेहे प्रपूजयेत् या
सादेतुन हूर्ध्वं स्यान्मूलतोयं प्रयत्नतः इति हेमाद्रौ लक्षणसमुच्चये विशेषः चललिंगं द्विधा कार्यं पाषाणरत्नम
यं शुभं हेमादिचललिंगं स्यादंगुलादित्रिपंचकं तद्रत्नोत्थमप्येवं समानाह रत्नजं हेमादीन्यधातद्गु
णांसविंशानवज्रवीहिणाहेमरजतमभिन्नधातुलिंगं गृह्यैनैतच्चांगुलादित्रिपंचकमेकांगुलमारभ्यपंचदशांगु
लप्रमाणावधिकुर्यात् हेमरजतलिंगंतु द्वादशांगुलप्रमाणांतं कार्यं रत्नंतेहेमतारोत्थं लिंगं शेषैस्त्रिपंचकं
रक्षासिद्धिः स्तनोधर्मः सौभाग्यं च रिपुक्षयः आरोग्यं राजसौख्यं च नृपस्त्रीजनकृज्जयः धैर्यं च स्त्रीजनाशुस्त्रालिं
गादेकांगुलादितः चललिंगान्नैवकार्यं साधकानां क्वचिन्मते इति स्मरणात् रत्नंतं द्वादशांगुलान्तं शेषैर्हेम
रजतातिरिक्तधातुभिः त्रिपंचकं पंचदशांगुलप्रमाणं अयमत्र निष्कर्षः एकांगुलादारभ्य द्वादशांगुलां

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰प्र॰
२२५

तं हेमरत्नजं लिंगं नदन्ति विकृत्या तल्लिंगं च पंचदशांगुलान्तं कुर्यादिति स्वमानादिति यावन्मानं रत्नं लभ्यते ता-
वन्मानादेव तिर्यङ्नमत्र जातीनां नृपाणां यावदिंद्रकं वैश्यानां मन्मथांतं तेषां शूद्राणां वसुगावधि तिथयः
पंचदश इंद्राश्चतुर्दश मन्मथास्त्रयोदश वसवोऽष्टौ अगाः सप्त यत्तादीनां कविलिंगविकारादेकविंशतिः
चलेन सर्वदेवानां त्रयस्त्रिंशतिकांगुले तथा एकांगुलादि पंचांतमधमं चलमुच्यते षडादिदशपर्यंतं चल-
लिंगं च मध्यमं एकादशांगुलादि सप्तक्रमात्पंचदशांतकं श्रेष्ठं लिंगप्रमाणं तत्र श्रेष्ठाद्यंगुललहितमिति गंध-
धिनिर्मितं च तत्क्षणिकलिंगमेकांगुलमारभ्यांगुलावधि पंचांगुलावधिकार्यं तदुक्तं हेमाद्रौ लक्षणसमुच्चये
पैष्टिकं अंगुलं यावत् त्रीर्धं गंधप्रभवादिकं पंचांगुलं च वै न्याय्यः फलं तत्स्वप्रमाणत इति पैष्टिकमैष्टिकपुष्पादिका-
मशब्दमित्यर्थः गंधप्रभवादीत्यत्रादिपदेन सर्वाणि तात्क्षणिकलिंगान्युपलक्ष्यंते कुत्र विदिशेषः श्वेत्रे निर्मितं
लिंगं च अंगुलादि सप्तांगुलान्तं कुर्यात तदुक्तं ज्ञानरत्नावल्यां अथ पंचाननजं लिंगं कर्तव्यं वा त्वसंभवे अंगु-
लाद्वर्णावान्तं च कर्तव्यं हि यथारुचि अगावाः सप्त गुणानत्वपदेशात्पयस्वाञ्छिवसमो भवेदिति सुरलिं-
गं तु एकांगुलमारभ्य द्वादशांगुलान्तं कुर्यात् तदप्युक्तं ज्ञानरत्नावल्यां कार्यं सुरमयं लिंगं कलान्तो द्वादशां-
गुले प्राप्नोत्यैश्वर्यमतुलं तत्र ये मोदं लभेत यथेति इति लिंगमाने अथ लिंगफले कालोत्तरे सर्वरत्नमयं महाप्रभु

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नैमणयस्तद्देवर्द्धि अनंतायाः स्तनारुद्वैमणयो विद्युदुज्ज्वलाः रात्रौ प्रकाशकाः सर्वे विषघ्ना जयकारिणः
नानावर्णास्तु विज्ञेया रसगंधानुरूपतः वज्राणाः स्फटिकायाश्च रत्नावैश्मुक्तिमुक्तिदाः अयस्कांतं च तत्र्यान्तरे
येषामान्यसिद्धिषु वैरकं कटुकैश्चैव भ्रामकं चुंबकं तथा एवमादीनि रत्नानि ज्ञातव्यान्याप्यानि षण्मुखेति म
यसंग्रहे विशेषः सर्वरत्नभवं श्रेष्ठं तत्र हज्ज्ञमरिक्षिदे पद्मरागं महाभूत्यै सौभाग्याय च मौक्तिकं प्रुष्टिमु
त्लेमहानीलं ज्योतीरसससमुद्भवं यशसे कुलसंतत्यै तेजसे सूर्यकांतजं चेद्दपियं मस्तुजितं स्फाटिकं सर्वका
मदं चंद्रकांतजमित्यर्थः शूलादिवमणिजं शत्रुत्तयाय पौत्तिकं तथा यत्संनिधानात् शूलरोगनाशः स शूल
मणिः पौत्तिकं पुलकजं सास्यकं सस्यनिष्पत्तौ भौजंगं दिव्यसिद्धिदं सस्यकं रत्नविशेषः श्रेष्ठं मारकतं लिंगमा
रोग्याहितचेतसा आरोग्येच्छाहितचेतोयैः आरोग्यकामैरित्यर्थः वैडूर्ये च महावर्गे रत्नाय स्कांतजे हितं रुद्र
सिद्धिषु तन्मंत्रजानि संस्कृतमिष्टदं रुद्रसिद्धिषु मारणोच्चाटनादिषु तन्मंत्रजानि संस्कृतं रुद्रसिद्धिकरमंत्रजा
निप्रतिष्ठितं गुणाहसंफलं विप्राः परास्वमणिजातिषु परास्वउत्कृष्टास्ववैडूर्यादिमणिजातिषु गुणोत्कर्षा
त्फलोत्कर्षो वेदितव्य इत्यर्थः वर्णाभिधानसंस्थानविशेषभ्यस्त्वतद्विदा कर्तव्यफलमित्यन्वयः हेमाद्युदा
हृतलक्षणसमन्वयेपि आयुष्यं हीरजं ज्ञेयं योगहृत्मौक्तिकोद्भवं सारख्ननप्रवपरागोत्यं वैडूर्यं शत्रुदर्पहृत्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पद्मरागं च लक्ष्मीदं हैमेंद्रनीलं यशःप्रदं लिंगं मारकतं पुष्ट्यै स्फाटिकं सर्वकामदं महारत्नोत्थलिंगानि निर्दिष्टरत्नो
द्भवान्यतः महारत्नोद्भवानि लिंगान्युक्तानि अतः परं तद्धुरत्नोद्भवानि वक्ष्यामीति शेषः वैदूर्यं च यशःकामार्थं
कर्केतनमभिचारहृत् पुलाकोऽप्यन्तविद्याहृत् सांख्यसौख्यप्रदायकमिति पुलाकोऽन्त्येन तच्छेदे सांख्यसौख्ये च का
ल॰प॰ लोत्तरे महाभूतिप्रदं हैमं तारं नं भूनिवर्धनं आरकूटं तथा कांस्यं स्रमत्वं ताम्रमत्युक्तिदं आरकूटं पित्तलं मुक्ते
२२५ नायं त्रपुसीसायसं लिंगं शत्रूणां नाशने हितं तथा कीर्तिदं कांस्यजं लिंगं ताम्रजं पुत्रवर्धनं पैत्तलं भुक्तिमु
225 क्त्यर्थमिष्टजं सर्वसिद्धिदं शिवनारदसंवादे पितृणां मुक्तये पूर्वं लिंगं रजतसंभवं हैमजं सप्तलोकस्य प्राप्त
ये पूजयेत् सुमान् पूजयेत्ताम्रजं लिंगं पुष्टिकामो हि मानवः तुष्टिकामस्तु सततं लिंगं पित्तलसंभवं कीर्तिका-
मोर्चयेन्नित्यं लिंगं कांस्यसमुद्भवं शत्रुमारणकामस्तु लिंगं लोहमयं सदा सदासीसमयं लिंगमायुःकामो
र्चयेत्सदेति तथा ब्रह्मस्वपरिहारार्थं सौवर्णं लिंगमर्चयेदिति लक्षणसमुच्चये स्थिरलक्ष्मीप्रदं हैमं राजतं
चैव राज्यभृत् प्रजावृद्धिकरं वांगं ताम्रमायुःप्रवर्धनं विद्वेषकारकं कांस्यं रीतिजं शत्रुनाशनं रीतिजं पि-
त्तलमयं रोगघ्नं सीसकं लिंगमायुष्यं रिपुनाशनं आयसं लोहमयं लिंगं कष्टरोगक्षयावहं त्रिलोहसंभवं लि
गं मंत्रध्यानप्रसिद्धिदमिति कालोत्तरे विशेषाद्वैतजं मुक्तौ भुक्तये वा तु षंगतः पार्थिवं भुक्तये शस्तं मुक्तये

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चान्वषंगतः एवं वैडूर्यजं चित्रलिंगं नव्याश्नुवदिति शिवनारदसंवादे पाषाणसंभवं लिंगं संपूज्य परमात्
दा इष्टकामानवाप्नोति श्रेयश्चानुत्तमं पदं लिंगानामपि सर्वेषां पार्थिवं लिंगमुत्तमं कृत्वा संपूज्य विधिवत्सर्वा
न्कामानवाप्नुयादिति लिंगपुराणे श्रीप्रदं शर्वजं लिंगं शिलाजं सर्वसिद्धिदं शर्वजः पारदः धातुजं धनदं स्या
त्दारुजं भोगसिद्धिदं मृन्मयं धान्यदं चैव वृक्षाणिकं कर्मसिद्धिदमिति कालोत्तरे गंधपुष्पमयं लिंगं तथा
न्नादिविनिर्मितं भस्मगोमयजं चाथ गुडान्नादिविनिर्मितं सर्वकामप्रदं पुंसां लिंगं तत्कालिकं मतमिति
लक्षणसमुच्चये गांधं सौभाग्यदं लिंगं पौष्पं भुक्तिप्रदायकं स्थंडिले मंडले प्रशस्ताहीनाच्च स्थापनाक्षिके ए
काह्नान्येहिकान्यत्रभोक्तं ते सिद्धिमिच्छता प्रभुमानप्रदं धान्यजं सैन्यदं नागदंतजं कृमिकीकससंजातं नूनं पाता
लसिद्धिदं अणिमादिप्रदानि स्युः रत्नान्यष्टाईत्वः सदा पैष्टान्यष्टप्रकाराणि सच्छीलसेष्टकजानि तु शालिपि
ष्टोद्भवं पुष्टिशाष्टिकं वृद्धिवर्द्धनं गोधूमसंवातरोगघ्नं यवजं वत्ससौख्यदं विष्णुभेदकरं मौद्गं स्त्रीदं साग्न्माषसंभ
वं तैलपिष्टं करोत्यग्निसिद्धार्थं भगनाशनं अर्थिकरोति मंदाग्नेः दहौधं करोत्यर्थः सर्वसिद्धं नवनीतं तु गोमय
रोगनाशनं अन्नमाषः प्रदं ज्ञेयं गोऽन्नं प्रीतिविवर्द्धनं नानाफलोद्भवं लिंगं नानाकामप्रदायकं गुडादं सैकतं
भूतिसौभाग्यायपत्रलावणं उच्चाटने तु पाशवं मौलं शत्रुक्षयावहं वशीकरं रसमुत्पन्नं तेजसाहृहि प्रदं भवेत्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल.प्र.
२२८
226

पुरतो मकरं पौरं रामठं वाऽथ कारकम् इति पौरं गुग्गुलनिर्मितं रामठं हिङ्गुनिर्मितं ज्ञानरत्नावल्यां तात्कालिकं
दविड्स्य कृत्वा भक्त्या समर्चयेत् पूज्यं गंधमयं लिंगं त्रिकालं सम्मखोवधि चंद्रेण चंदनेनाथ कुंकुमेन सुगंधिना
चतुःसमेन वा कार्यं लघुना केवलेन वा चंद्रः कर्पूरः चतुःसमलक्षणमुक्तं गरुडपुराणे कस्तूरिकाया द्वौ
भागौ चत्वारश्चंदनस्य च कुंकुमस्य त्रयश्चैव शशिनस्त्वेकः स्मृतः इति शशी कर्पूरः लघुरगरुः एवं वै गंधलिंगं
तु कृत्वा सेवं यजन्भक्तितः मयाति शिवसायुज्यं बंधुभिः सहितो नरः कल्पफलमयं लिंगं सनीयेत परे पदे कार्यं
पुष्पमयं लिंगं रूपगंधसमन्वितं नवखंडायरोग्यकागणेशाधिपतिर्भवेत् रजोभिर्निर्मितं लिंगं यः पूजयति
भक्तितः विद्याधरपदं प्राप्य पश्चाच्छिवसमो भवेत् ममुत्तस्मसितं लिंगं पूजयेच्छिवतां व्रजेत् श्रीकामो गोश-
कृल्लिंगमहन्यहनि पूजयेत् स्वच्छेन कापिलेनैव गोमयेन प्रकल्पयेत् स्वच्छेन भूमिपतनात्याग्रे वा हृतेन
कार्यं पिष्टमयं लिंगं यवगोधूमशालिजं स्त्रीकामः पुष्टिकामश्च पुत्रकामस्तदर्चयेत् सितखंडमयं लिंगं स-
ज्यमारोग्यवर्द्धनं कीर्तिकामेन संपूज्यो दर्पणे परमेश्वरः वश्ये लवणजं लिंगं तालत्रिकटुकान्वितं तालेह-
रितालं त्रिकटुकं शुंठी पिप्पली मरिचमिति द्रव्यत्रयं प्रसिद्धं गव्यं घृतमयं लिंगं संपूज्यं बुद्धिवर्धनं भूतये व
स्त्रलिंगं तु इष्टं सार्षपं शिवमिति शिवनारदसंवादेपि लवणेन वसौभाग्यं पार्थिवं सर्वकामिकं कामदं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिलपिष्टोत्थं तुषोत्थं मारणोत्सवं भस्मोत्थमन्नदं प्रोक्तं गुडोत्थं प्रीतिवर्धनं गंधोत्थं गुणदं भूरि शार्करोत्थं सुख-
प्रदं वंशांकुरोत्थं वंशार्थं गोमयं सर्वरोगहृत् केशास्थिसंभवं लिंगं सर्वशत्रुविनाशनं लभते रजनीपिष्टसंभवे
लिंगमुत्तमं रजनी हरिद्रा तंडुलोद्भवपिष्टस्य लिंगं सारस्वतप्रदं दधिदुग्धोद्भवं लिंगं कीर्तिलक्ष्मीसुखप्रदं धान्य-
जं लिंगं फलोत्थं फलकृद्भवेत् पुष्पोत्थं दिव्यभोगाय पुण्यं धात्रीफलोद्भवं नवनीतोद्भवं लिंगं कीर्तिसौभाग्यव-
र्धनं दूर्वागुडूचीसंभूतमपमृत्युनिवारणं लवंगद्रोद्भवं लिंगं स्तंभनमुच्चाटनेपरं ज्वरशांत्यै चंदनजमर्चयेद्धि पिव
त्सदा कर्पूरसंभवं लिंगं शांतिकामोर्चयेत्सदा कस्तूरीसंभवं लिंगं यतिकोद्दिष्टं पूजयेत् लिंगं गोरोचनोत्थं तु रू-
पकामस्तु पूजयेत् कांतिकामस्तु सततं लिंगं कुंकुमकेसरे श्वेतनागरसमुद्भूतं महाबुद्धिविवर्द्धनं धारणाश-
क्तिदं लिंगं कृष्णागरुसमुद्भवं रक्तकर्दमसंभूतं लिंगं प्रीतिविवर्द्धनं गोधूमपिष्टजं लिंगं गोकामो नित्यमर्च-
येत् मुद्गपिष्टमयं लिंगं पूजयेन्मृदमाप्नुयात् माषपिष्टमयं लिंगं नित्यं मिष्टान्नसिद्धिदं चणकोद्भवपिष्टस्य
लिंगं पुष्टिविवर्द्धनं आढकीपिष्टजं लिंगं रतिसौख्यविवर्द्धनं लिंगं व्रीहिमयं पूज्यं वर्चस्कामेन नित्यशः यवपा
ष्टमयं लिंगं यमलोकनिवारणं प्रियंगुपिष्टजं लिंगं प्रियदं सर्वदेहिनां नीवारपिष्टजं लिंगं सर्वारिष्टनिवारणं
यः करोति तिलैः श्वेतैः श्वेतैर्हीपे महीयते यः कृष्णैस्तिलैः सम्यक् लिंगं कृत्वार्चयेन्नरः सर्वपापविनिर्मुक्तो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यातिमाहेश्वरंपदं मधुपुष्पोद्भवंलिंगंवसंतेपूजयेन्नरः यःकामेश्वःप्रियोनित्यंभवेत्प्राणिनांचमानवः ग्रीष्मेचम
ल्लिकापुष्पसंभवंलिंगमुत्तमं पूजयित्वानरोभक्त्याप्राप्नोतिमहतींकृषिं वर्षासुपूजयेद्भक्त्यालिंगंकनकपुष्प
जं कनकपुष्पजंचंपककिंशुकपन्नरक्तकांचनारपुष्पनिर्मितं इहवामुष्मिकेलोकेसुखीभवतिमानवः नीलोत्प
ल॰प॰ लमयंलिंगंज्ञात्वाशरदिमानवः पूजयन्परमांसिद्धिंभक्त्याप्राप्नोतिमानवः हेमंतेजातिकुसुमैर्लिंगंकृत्वामनो
२२२ हरं भक्त्यासमर्च्यमतिमान्शिवेनसहमोदते शिशिरेसर्वपुष्पोत्थंलिंगमभ्यर्च्यमानवः सर्वपापंविहायाशुमो
227 दतेब्रह्मणासह येनकेनप्रकारेणपुष्पकेणापिवत्सनः कृत्वालिंगंसमभ्यर्च्यगाणपत्यमवाप्नुयादिति पूर्वो
क्तसर्वलिंगपूजनेनातारतम्यमपिश्रूयतेतत्रैव पाषाणात्स्फाटिकंश्रेष्ठंस्फाटिकात्पद्मरागजंपद्मरागात्तुका
श्मीरंकाश्मीरात्पुष्परागजं इंद्रनीलंपुष्परागादिंद्रनीलाच्चगोमदं गोमदाद्विद्रुमंश्रेष्ठंविद्रुमान्मौक्तिकंपरं
मौक्तिकाद्राजतंश्रेष्ठंसौवर्णंराजतात्परं सौवर्णाद्धीरकंश्रेष्ठंहीरकात्पारदंपरं पारदाद्बाणजंश्रेष्ठंतस्मात्श्रे
ष्ठंनविद्यते सर्वतीर्थानियज्ञाश्चसांगावेदव्रतानिच सुरसंघाश्चयोगिनश्चबाणलिंगेव्यवस्थिताः तदर्चावि
धिंविज्ञात्वाशिवलोकेमहीयते बाणेचराजतेरत्नेस्फाटिकेहेमसंभवे काश्मीरेचंद्रकांतेचलिंगेस्वायंभुवेन
या सदासंनिहितोदेवः शांवःसप्तादिलक्षणः विद्यतेहर्निशंयस्मात्तस्मात्पूज्यानिनित्यशइति उक्तलिंगेषुक

२२२

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लोकेहिप्रफलदंनानाविधकामनयापार्थिवलिंगमेवपूज्यं तथुक्तंशिवनारदसंवादे अन्योषेतेषुलिंगेषुलिंग
मेकंसमाश्रयेत् तत्रापिपार्थिवंलिंगंदिव्यंसिद्धिप्रदंभवेत् पार्थिवेनतुलिंगेनबहवःसिद्धिमागताः देवा
सुरमनुष्यगंधर्वोरगराक्षसाः कृतेरत्नमयंलिंगंत्रेतायांहेमसंभवं द्वापरेपारदंश्रेष्ठंपार्थिवंतुकलौयुगेअ
ष्टमूर्तिषुसर्वासुमूर्तिर्वैपार्थिवीपरा एवंपार्थिवलिंगंतुलिंगेष्वन्येषुविद्यते यथासर्वेषुदेवेषुश्रेष्ठःका
लमहेश्वरः एवंसर्वेषुलिंगेषुपार्थिवंश्रेष्ठमुच्यते यथानदीषुसर्वासुज्येष्ठागंगासरिद्वरा तथासर्वेषुलिंगे
षुपार्थिवंश्रेष्ठमुच्यतइति अत्रैवकामनाभेदेनपूजनेपार्थिवलिंगसंख्योपिसर्पते ईश्वरउवाच मुनेसर्वप्र
यत्नेनपार्थिवंलिंगमुत्तमं कर्त्तव्यंहिनरैर्नित्यंकार्यमुद्दिश्ययत्नतः संख्यापार्थिवलिंगानांयथाकामं
निगद्यते सल्लिंगपार्थिवंलक्षंभुक्तिमुक्तिकरंपरं देशकालंफलंज्ञात्वाकुर्यात्लिंगंफलप्रदं तत्करोतिय
दाज्ञात्वानकार्यंतत्सांसिध्यति विद्यार्थीलिंगसाहस्रंधनार्थीचतदर्धकं पुत्रार्थीसार्धसाहस्रंकन्यार्थीचशत
त्रयं विद्वान्लिंगायुतंकुर्यात्सर्वपापहरंपरं राज्यार्थीशतसाहस्रंकांतार्थीशतपंचकं मोक्षार्थीकोटिगुणि
तंभूकामस्त्रिसहस्रकं रूपार्थीत्रिसहस्रंतुतीर्थार्थीद्विसहस्रकं सुहृत्कामःसहस्रंतुवश्यार्थीशतमष्टकं
मारणार्थीसप्तशतंमोहनार्थीशताष्टकं उच्चाटनपरश्चैवसहस्रंचयथोक्ततः स्तंभनेचसहस्रंतुजारणेच

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तदर्धकं निगडान्मुक्तिकामस्य सहस्रं सार्धमीरितं महाराजभये पंचशतं चौरादिसंकटे शतद्वयं तडाकिन्याभ
येपंचशतं परं दरिद्रः पंचसाहस्रमयुतं सर्वकामदं एवं पापहरं शोकं हि लिंगं चार्थसिद्धिदं त्रिलिंगं सर्व
कामानां कारणं परमीरितं उत्तरोत्तरमेवं स्यात्पूर्वोक्तगणनावधीति ग्रंथांतरे लिंगानामयुतं कृत्वा महा
ल. प्र. राजभयं हरेत् सहस्रमेकं लिंगानां व्याधीनां तु भयं हरेत् सहस्राणि तथा पंच निगडान्मुक्तये कुर्वं कारा
२२८ गृहविमुक्त्यर्थमयुतं कारयेद्बुधः डाकिन्यादिभये सम्यक् सहस्रं कारयेत्तथा सहस्राणि च पंचाशद्पुत्रोऽपि हि
228 प्रकारयेत् लिंगानामयुतेनैव कन्यकासंततिं लभेत् एकलिंगार्चनेनैव स्वलोकं प्रियमाप्नुयात् ल-
क्षमेकं तु लिंगानां यः करोति नरो भुवि शिव एव भवेत्सोपि नात्र कार्या विचारणेति इति लिंगफले अथ
शिवलिंगनैवेद्यभक्षणाभक्षणविचारः पद्मपुराणे स्वयमन्नं फलं तोयं शिवस्य न स्पृशेत्क्वचित् लंघयेन्नैव
निर्माल्यं कूपे सर्वं विनिःक्षिपेत् मृत्तिकापादमात्रं यः शिवस्वमुपजीवति लोभान्मोहात्स पच्येत कल्पां-
ते नरके नर इति पाद्मस्कांदब्रह्माण्डपुराणसंग्रहेषु शिव उवाच अनर्हं मम नैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलं शाल
ग्रामशिलालग्नं सर्वं याति पवित्रतां नैवेद्यमेनं नरो भुक्त्वा शुद्ध्यै चांद्रायणं चरेदिति शालग्रामशिलालग्नमि-
त्यस्यार्थः स्वयमेव शालग्रामशिलालक्षणप्रकरणे नैवेद्यप्रस्तावे प्रपंचितः क्वचित् शिवलिंगनैवेद्यभक्षणे दो

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

याभावोपि तदुक्तं शिवनारदसंवादे बाणलिंगे न चंडांशो न च निर्माल्यकल्पना सर्वं बाणार्पितं ग्राह्यं भक्त्या
भक्तैः स्वनान्यथा ग्राह्याग्राह्यविचारोयं बाणलिंगे न विद्यते तदर्पितं जलं चात्र ग्राह्यं प्राश्यं सादरं सज्जना बाणलिं
गे स्वयंभूते चंद्रकांते हृदि स्थिते चांद्रायणसमं ज्ञेयं शंभोर्नैवेद्यभक्षणमिति निर्माल्यकल्पना चोक्ता सिद्धां
तशेखरे धराहिरण्यगोरत्नताम्ररौप्यांशुका[illegible]दिकान् विहाय शेषं निर्माल्यं चंडेशाय निवेदयेत्
अन्नं दुग्धादि पानीयं तांबूलं गंधपुष्पकं दद्याच्चंडाय निर्माल्यं शिवभुक्तं तु सर्वश इति भविष्यपुराणे ज्यो
तिर्लिंगं विना लिंगं यः पूजयति सननमाः तस्य नैवेद्यनिर्माल्यभक्षणात्तप्तकृच्छ्रकं शालग्रामोद्भवे लिंगे वा
लिंगे स्वयंभुवि रत्नलिंगे तथार्षे च सिद्धप्रतिष्ठिते हृदये चंद्रकांते च स्वर्णरूप्यादिनिर्मिते शिवदीक्षा
वता भक्तेनेदं भक्ष्यमितीरितम् इति स्वर्णरूप्यादीत्यत्रादिना ताम्रादिधातुमयलिंगं गृह्यते तथा हनूमंतं प्र
ति शंभुः बाणलिंगे स्वयंभूते चंद्रकांते हृदि स्थिते चांद्रायणसमं ज्ञेयं शंभोर्नैवेद्यभक्षणं लिंगे स्वयंभवे
बाणे रत्नजे रसनिर्मिते सिद्धप्रतिष्ठिते चैव न चंडाधिकृतिर्भवेत् यत्र चंडाधिकारोस्ति न भोक्तव्यं च मानवैः
चंडाधिकारो नो यत्र भोक्तव्यं तच्च भक्तितः इति यच्च पुरुषार्थप्रबोधे शिववचनं किं दीक्षया किं तपसा किं ध्या व
नेन जपेन किं शृणु देवि वरारोहे मन्नैवेद्यं यदि भुज्यते इति तदपि बाणादिलिंगार्पितनैवेद्यविषयमिति

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बाणलिंगादिषु शंभोर्नैवेद्यभक्षणेन दोष इति वदता तत्तीर्थमाल्यधारणमप्यभ्यनुज्ञातं श्रीविश्वनाथतीर्थादि
धारणं तु कर्तव्यमेव तथा च स्कांदे काशीखंडे जलस्य धारणं मूर्ध्नि विश्वेशस्नानजन्मनः स्नपनाम्भोके स्नापयि
त्वा विधानेन यो लिंगस्नापनोदकं त्रिः पिबेत्त्रिविधं पापं तस्येहाशु विनश्यति लिंगस्नपनवार्भिर्यः कुर्यान्मू
र्द्धाभिषेचनं गंगास्नानफलं तस्य जायते त्र विपाप्मनः इति तथा रत्नेश्वरोपाख्याने श्रद्धावतां सुभक्तानामप
सर्गमहत्त्वपि नोपायांतरमस्त्येव विनेशचरणोदकं पेयाद्यो हि डः स्नाप्याद्वहिरंतः शरीरिणा श्रद्धयेशो
दकस्पर्शात्तेन शंभ्वैव नान्यथेति ज्योतिर्लिंगं विना लिंगमिति पूर्वोदाहृतभविष्यवचनाच्चेति इति शिवलिंग
नैवेद्यादिभक्ष्याभक्ष्यविचारः अथ प्रसंगादन्यदपि किंचिदुच्यते पाराशरमाधवीये नंदिकेश्वरः यः प्रदद्यान्न
वांल्लक्षं दोग्ध्रीणां वेदपारगे एकाहमर्चयेल्लिंगं तस्य पुण्यं ततोऽधिकं सकृत्स्नपयते यस्तु भगवंतं उमापतिं
अश्वमेधादधिकं फलं भवति नान्यथेति व्यासः सहस्रकलशैरद्भिरभिषेकं करोति यः शिवाय विधिवन्मे
चैश्चिरंजीवी भवेन्नरः इति विष्णुधर्मोत्तरे प्रायश्चित्तविहीनानि यानि स्युः राजभूपते समस्तपापतुल्यानि महा
नरकदानि वै यः शूद्रेणार्चितं लिंगं विष्णुं वा प्रणमेन्नरः न तस्य निष्कृतिर्भूप प्रायश्चित्तायुतैरपि न मेध्यः शूद्र
संस्पृष्टं लिंगं वाऽहरिमेव वा स सर्वयातनाभोगी यावदाचंद्रतारकं योषिद्भिः पूजितं लिंगं विष्णुं वापि नमेन्नरः

ल॰प्र॰
२२५
224

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सकोटिकुलसंयुक्तआकल्पंरौरवंव्रजेत् पाखंडस्थापितंलिंगंनत्वाणखंडनांव्रजेत् आभीरस्थापितंलिंगं
विस्नुंवापिनरेश्वर नमंतेनाशयाम्येवकिमन्यैर्बहुभाषितैः शूद्रोवानुपनीतोवास्त्रीवापिपतितोपिवा
केशवंवाशिवंवापिस्पृष्ट्वानरकमश्नुते इतिपतन्सर्वमिदानींतनप्रतिष्ठितलिंगादिविषयं नतुपुराण
प्रसिद्धमहिमलिंगादिविषयं यदाप्रतिष्ठितेलिंगेमंत्रविद्भिर्यथाविधि तदाप्रभृतिशूद्रस्त्रीयोषिद्वापि
नसंस्पृशेदितितत्रैवोक्तत्वात् अतएवस्कांदेकाशीलिंगानिप्रकृत्योक्तं अदृश्यान्यपिदृश्यानिदुःखस्था
न्यपिचप्रिये भग्नान्यपिचकालेनतानिपूज्यानिसुंदरीति दुःखस्थानस्पृश्यस्पृष्टानि तथान्योपिविशे
षस्तत्रैवस्त्रीणामनुपनीतानांशूद्राणांचनरेश्वर स्पर्शनेनापिकारोस्तिविस्नोर्वाशंकरस्यच यःशूद्रसं
स्कृतेलिंगेविस्नौवापिनमेन्नरः उद्वेगात्पतनइत्येवानिष्पश्यंत्यामुष्मिकेकिंच शूद्रोवानुपनीतोवास्त्रीवापि
पतितोपिवा केशवंवाशिवंवापिस्पृष्ट्वानरकमश्नुत इति सिद्धांतशेखरे प्रतिष्ठांशिवलिंगस्यवसेनाना
गमोदितां आचार्यैरुपदिष्टांचसमासेनयथामति पंचधायाशिवेनोक्ताप्रतिष्ठास्थापनंततःस्थितस्था
पनमित्येतत्त्रयमव्यक्तलिंगके आस्थापनंतुव्यक्तेस्यात्उत्थापनंमतं लिंगब्रह्मशिलायोगःप्रतिष्ठा
मंत्रसंस्कृतः लिंगवाणादिकेकृत्वासमयापंचधाविधा द्विधावारोपणेपीठेप्रस्थापनमनुच्यते अभिव्रीपि

कृत्येतिप्रवृत्त्याधर्मिणं पाराससलयं भूत्वात्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्रिकं लिंगं रत्नं वा लोहजादिकं त्रिधा संक्षिप्यते मंत्रैस्तत्स्थितस्थापनं मतं व्यक्तलिंगस्य पीठस्य योगः क्रिय
ते गुणैः आस्थापनं तदुद्दिष्टं विस्त्रादि प्रतिमास्वपि जीर्णादिदोषदुष्टं यल्लिंगं वा प्रतिमापि वा उद्धृत्य
स्थाप्यते यत्र तदुत्स्थापनमुच्यते एवं पंचविधा प्रोक्ता प्रतिष्ठा शिवशासने इति वायवीयसंहितायां अन्य
ल॰प्र॰ तोपहृतं लिंगं विशोध्य स्थापयेत्पुनः संप्रोक्षयेदुपहृतं न मन्त्रपूजेत् लिंगानि बाणसंज्ञानि स्थापनीयानि पदिते
२३॰ वा नानि शैवे शिवे नैव संस्कृतानि यतस्ततः संस्कृतानीति पाद्मोत्तरे रौद्राणि स्थापनीयानि यानि दृष्टानि
230 निर्वाणवत् स्वयंभूतलिंगे च दिव्ये चार्षे तथैव च अपीठे पीठमावेश्य कृत्वा संप्रोक्षणविधिं यजेत्तत्र
शिवं तेषां प्रतिष्ठा नावसीयते दग्धं स्फुटितं भग्नं च क्षिपेल्लिंगं जलाशये संस्थानयोग्यं संस्थाप्य प्रतिष्ठादिकमा
चरेत् वेराद्याविकला लिंगादेवं क्षेत्रपुरःसरं उद्धृत्य हृदि संस्थाने स्नानं वा पूजकमाचरेदिति वेरः काश्मीरे न
ष्टात्रिविक्रमस्यात्र स्पृष्टे सति तु लिंगे च वेरे मर्त्यप्रतिष्ठिते पुनः प्रतिष्ठा कर्तव्या शस्त्रजयेन तत्र पंडितैः पुनः प्रति
ष्ठां यो मोहाद्दृष्ट्वा तत्र शंकरं पूजयेत्तस्य शास्त्रेषु निष्कृतिर्नैव दृश्यते स्पृष्टे लिंगे च वेरे वा शूद्राद्यैः प्रतिष्ठि
ते रुद्राभिषेकतो धीमान् विशोध्यात्र समर्चयेदिति सिद्धान्तशेखरे लिंगादीनां च जीर्णानां प्रोच्यते वि
धिरुत्तमौ सर्वारिष्टविनाशार्थं सर्वप्राणिहितार्थकं लिंगस्य पिंडिकायाश्च प्रतिमामुखलिंगयोः स

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वैषांपरिवाराणांहर्म्यप्राकारयोस्तथा उद्धारश्चोद्धृतिः प्रोक्ताद्वोहारेरे नुतच्यते स्फुटितेखंडितेभिन्नेदग्धे
वाशनिनाग्निना उन्मत्तैः शत्रुभिश्चौरैः करिणास्रोतसाहृते लिंगेपीठादिकेवापिविशीर्णेकालपर्ययात् दे
हेजीर्णेयथादेहीत्यक्त्वान्यदुपगच्छति लिंगादीनितुजीर्णानितथामुंचंतिदेवताः ततःप्रेताश्चवेतालाःजी
र्णंहृष्ट्वाश्रयंतिच लिंगायसमलक्षणान्वातथाचब्रह्मराक्षसाः कर्तुर्नृपस्यराष्ट्रस्यतद्ग्रामस्यविशेषतः
पीडांकुर्वंतितेसुग्रांदुर्भिक्षमरणादिकां तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकुर्यादुद्धरणक्रियां स्वायंभुवेचदैवेचबाणेच
गाणलिंगके ऋषिभिश्चासुरैर्दैवैस्तत्वविद्भिः प्रतिष्ठिते लिंगेजीर्णादिदुष्टेपिनोद्धारंतत्रकारयेत् स्वायंभु
वादिलिंगानांजीर्णपीठंपरित्यजेत् उक्तैर्जीर्णादिभिर्दुष्टमानुषंतुपरित्यजेत् दिग्मूढंपतितंस्थानान्म
ध्यस्थंस्रोतसाहृतं अग्निपुराणेतुदिग्भ्रष्टमितिपाठः वेदाद्यैश्चालितंलिंगंस्थापयेत्तुनिर्व्रणंपुनः यदितुनस्त
लिंगंनिर्व्रणंभवेत्तदातदेवपुनःस्थापयेत् अग्निपुराणेतुस्पष्टमेवाभिहितं एवंविधंचसंस्थाप्यनिर्व्रणं
चभवेद्यदाति लोहाद्यैर्छिन्नभिन्नांगसंधायस्थापयेत्ततः वाङ्गपादशिरोहीनांकर्णनासास्यहीनकां ना
हृष्टांपरिवाराणांप्रतिमांपरिवर्जयेत् यत् द्रव्ययत्प्रमाणंचलिंगंवाप्रतिमापिवा त्यक्तेनतेनमानेनत
द्रव्येणप्रकल्पयेत् कारयेन्नान्यमानेननान्यद्रव्येणतत्त्वधः नान्याकारंचनान्यत्रस्थापयेत्तद्रूपतमः स्रोत

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सापवृत्ते लिंगे प्रासादे वा तद्वत्तः तत्समीपगते देशे स्थापयेद्धा यव वर्जिते प्राकारे पतिते हर्म्ये गोपुरे मंडपा
दिके तदाकारं च तद्रूपं तन्मानेन तत्र कारयेत् कर्मयोग्य शिलाशालाष्टकास्तु तथाविधाः हीनद्रव्यकृते
हर्म्ये श्रेष्ठैर्द्रव्यैः समाचरेत् हीनं वाप्यधिकं मानं प्राकारं वा न कारयेत् एवमुक्तेन मार्गेण दोषैरुक्तैर्विवर्ज्य
च लिंगपीठादिकं जीर्णोद्धारं तदाचरेत् स्थितिं तत्र वारादीन् तद्दर्थं न विचारयेत् जीर्णोद्धारये
ल॰प्र॰ जीर्णमजीर्णं रत्नजं तु यत् इति अथ पुराणे सुस्थिते दुःस्थिते वापि शिवलिंगं न चालयेत् शतेन स्थाप
२३१ नं कुर्यात्सहस्रेण तु चालनमिति सुस्थिते दुःस्थिते लक्षणमपि तत्रैवोक्तं वज्रादिभिश्च संयुक्तं जीर्णमप
231 पि सुस्थितं ~~वज्रादिभिश्च संयुक्तं जीर्णमपि सुस्थितं~~ वज्रपूरहितं यत्तदष्टमपि दुःस्थितमिति अदृष्टम-
जीर्णहीनं वज्रादिभिर्लिंगमजीर्णमपि दुःस्थितमिति सिद्धान्तशेखरे उक्तत्वात् अजीर्णत्वमनेककालस्थि
तियोग्यमित्यर्थः दुःस्थितविषये तत्रैव विशेषः दिग्मूढस्यापि ते लिंगे मोहात्रिस्रत्वमागते तल्लिंगं दुःस्थि-
तं वापि तत्रैव इति निश्चिते शतेन स्थापनं कुर्यात्सहस्रेण तु चालनमित्यस्यार्थः सिद्धान्तशेखरे उक्तः स
हस्राधिकहोमेन तस्य चालनमाश्रितं स्थापनं शतहोमेन तस्य लिंगस्य चोदितमिति अतिजीर्णे लिंगे न
ष्टे न दाने जले निक्षिप्य तत्रान्यल्लिंगं स्थापयेत् एतद्विधिश्चाग्निपुराणे उक्तः विसृज्य सर्गपाशेन च

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पक्षे यस्य यानया रक्तावधानयानीताशैवं मंत्रं ग्रहणं नश्यतैः तज्जले निःक्षिपेन्मंत्री पुष्पं यंत्र कृपाचूतेन र
मये दिक्पतीनां ववास्तु पुष्पेशो शांतेशांते रक्तो विधायतन्हारा मिमहाशापमुपतालतः लिंगमन्यतनलत्रवि
धिवन्स्थापयेत्तु हरिरिति इति लिंगलक्षणप्रकरणं अथ प्रकीर्णलक्षणप्रकरणं रुद्रसर्वे शालग्राम
शिवलिंगादिमूर्तिपूजाकर्त्तव्येत्युक्तं तत्र वैष्णवानां सौरागमोक्तदीक्षावद्भिर्वैष्णवैः शालग्रामादिविष्णुमूर्ति
पूजाकर्त्तव्या शिवागमोक्तदीक्षावद्भिः शिवभक्तैस्तु लिंगादिपूजाकर्त्तव्येति विवेकस्तत्र तत्र दीक्षादौ गुरो
गुरोरावश्यकत्वात्कीदृग्लक्षणो गुरुः कर्तव्य इति तल्लक्षणमुच्यते रामार्चनचंद्रिकायां शांतो दांतः कुलीनश्च
विनीतः शुद्धवेषवान् शुद्धाचारः सुप्रतिष्ठः शुचिर्दक्षः सुबुद्धिमान् आश्रमी ध्याननिष्ठश्च मंत्रतंत्रविच^
क्षणः निग्रहानुग्रहे शक्तो गुरुरित्यभिधीयते इति मंत्रमुक्तावल्यां प्रसन्नदानान्वयेशुद्धः स्वोचिताचारतत्प
रः आश्रमी वेदवित्क्रोधरहितः सर्वशास्त्रवित् श्रद्धावाननसूयश्च प्रियवाक्प्रियदर्शनः शुचिः सुवेषस्त
रुणः सर्वभूतसमानधीः तरुणस्तपनेनश्च निहृद्धः इंद्रियविकलोऽप्यपोढो वालश्च निषिध्यते तत्र तरु-
णोप्येवंनाक्रांतो भिधीयते हीनांगमधिकांगं च खल्वाटं दंतुरं तथा खल्वाटमसूईकेश अतिबालं च वृद्ध
हं च खंजं गौडोद्भवं तथा काणं टंकं च कालिंगं कामरूपं विवर्जयेदिति तत्र शेषवचनात् धीमानवृद्ध

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ग्र॰ २३२

नमतिः शर्मोहंताविमर्शकः सूरिः मंत्रकलापेतिकर्तव्यतायागमज्ञानवान् अहंताज्ञवाहिंसकः विमर्शी
कोविचारवान् स्वगुणाचारकृतधीः कृतत्तः शिष्यवत्सलः निग्रहानुग्रहे दक्षो महामंत्रपरायणः महा
मंत्रपरायणत्वं निगदेनस्वद्वित्वियोपासनपाद्दद्वदेवताभकारहितः प्रतीयते रुद्रायोर्वप्रकारार्थः सुद्रास्य
कृपालयः सुद्धः आयः द्रव्यागमोपसमः तथोक्तः असत्प्रतिग्रहान्यायोपार्जितद्रव्यविवर्जितइत्यर्थः इत्यादि
लक्षणोपेतो गुरुः स्यात् हिमालयइति गरिमागुरुत्वं सिद्धान्तशेखरे तु विशेषः आर्यावर्त्तसमुद्भूतो गुरुः श्रे
ष्ठः प्रकीर्तितः अथवा स्वेच्छयायत्रचरंतिश्यामलास्मृगाः तद्देशसंभवो मेध्याऽसत्सदेशीयो गुरुर्वरः ब्राह्मणः स
र्ववर्णानां त्रयाणां क्षत्रियो गुरुः द्वयोर्वैश्यो गुरुः स्वस्यस्पृष्टोवर्णानुसर्वतः गृहस्थः सर्ववर्णेषु श्रेष्ठो गुरुः सदा
हृतः नैष्ठिकत्वधर्मात्तेयो भौतिकत्वनतोधमः भौतिकोभूत्याऐश्वर्येणसंपन्नः महायतीत्यर्थः वानप्रस्थ
यतीनां तु गुरुत्वं नेष्यते सदा इदं तु गृहस्थादिभिन्नाश्रमिविषयं एकाश्रमविषये तु नदोषः गृहस्थानां गृ
हस्थो वै यतीनां तु यतिर्भवेत् भिन्नाश्रमी गृहस्थाश्च सर्वसाधारणाश्रयइति कस्यचिन्मतं अभिधाना
त् अथवा उक्तगुणोपेतगृहस्थसद्भावे निर्गुणयत्यादिविषयं वर्णाश्रमक्रियानिष्ठो वेदविद्यास्तु कोवि
दः मिताशीमितनिद्रश्च मितवाक् योगतत्परः जितेन्द्रियो जितद्वन्द्वस्तपोदानदयापरः जितद्वंद्वो जि

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तपीनोस्मः स्थिरबुद्धिः स्थिरारंभः दांतः शांतः प्रसन्नधीः सत्यवाग्जितप्रज्ञो मेधावी नियतः शुचिः
शाक्तः कुलीनो निस्पृहश्च सर्वभूतहितान्वितः कलो निरामयः वाल्ये शास्त्रकृताभ्यासः शास्त्रार्थविच
क्षणः नित्याधिकारकुशलो नैमित्तिकविचक्षणः काम्याधिकारचतुरो दीक्षाकर्मणि कर्मठः मंडले
मंडपे कुंडे प्रासादे प्रतिमासु च लिंगे पीठे शिलायां च परीक्षानिपुणाग्रणीः निग्रहानुग्रहे दक्षः सर्वदोष
विवर्जितः एवंभूतो गुरुः श्रेयान् वरो दीक्षाप्रतिष्ठयोः वर्ज्योपि विशेषतस्तत्रैवोक्तः क्षयरोगी च दुश्चर्मा
कुनखी श्यावदंतकः काणोंधः कुसमात्स्नवलाटः खंजरीटकः खंजरीटकुः खंजः अंगहीनो तिरि
क्तांगः पिंगाक्षः छिन्ननासिकः हृस्वांगो वामनः कुब्जः पंगुः श्चितीनपुंसकः दुर्गंधिनासिकः श्वेतश्चीक कुष्ठी
श्वित्रिविशिष्टकृशास्थूलो दीर्घश्रोत्रोवविवर्जितः त्रिकर्णो दंतुरो हृस्वो वालो लंबोदरान्वितः श्चिपिविष्टः ख
ल्वाटः सन्नकृशस्थूलः अन्यैश्चैर्देहजैर्दोषैः संयुक्तो निंदितो गुरुः अकुलीनः कुदेशस्थः कुमातापितृ
संभवः संस्काररहितो मूर्खो वेदशास्त्रविवर्जितः श्रौतस्मार्त्तक्रियाभ्रष्टः पतितः शुष्कतार्किकः पु
रोधाः परान्नजीवी च नटो वैपश्चगायकः कुवेषो दांभिकः सर्पी च व्यसनी कृपणः खलः कुसंगी नास्तिको भीष्कर्म
ह्यापातकहेवितः परिवित्तिनिरस्मानकश्च परिवेत्ता च सेवकः वानप्रस्थश्च संन्यासी पितृनामो निंदितात्तु भक्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल॰ प॰
२३३
233

देशवर्णाश्रमाचाररहितः पारदारिकः देवाग्निगुरुविप्रादिपूजाविधिपराङ्मुखः संध्यातर्पणपूजादौ मंत्रोद्धारज्ञान
वर्जितः आलस्योपहतो भोगाधर्मदानस्तपस्युतः इत्याद्यैर्बहुभिर्दोषैरागमोक्तैस्समंततः वर्जनीयो गुरुः प्राज्ञै
र्दीक्षास्वस्थापनादिषु इति गुरुलक्षणं अथ शिष्यलक्षणं अमात्यदोषो राजानं भार्यादोषः पतिं यथा त
था शिष्यकृतो दोषं गुरुः प्राप्नोत्यसंशयं तस्मात्किंचिद्गुरुर्नित्यं परीक्ष्यैव[redacted]परिग्रहेदिति चूडामणिवचना
द्गुरुणा शिष्यो विपरीक्षणीयः इति लक्षणमप्युक्तं शारदातिलके शिष्यः कुलीनः शुद्धात्मा पुरुषार्थपराय
णः अधीतवेदः कुशलो दूरमुक्तमनोभवः हितैषी प्राणिनां नित्यमास्तिकस्त्यक्तनास्तिकः स्वधर्मनिरतो
भक्त्या पितृमातृहितोद्यतः वाङ्मनःकायवसुभिर्गुरुशुश्रूषणे रतः एतादृशगुणोपेतः शिष्यो भवति नाप
रः इति रामार्चनचंद्रिकायां शांतो विनीतः शुद्धात्मा श्रद्धावान्धारणाक्षमः समर्थश्च कुलीनश्च प्राज्ञः सच्चरि
तो यती एवमादिगुणैर्युक्तः शिष्यो भवति नान्यथेति मंत्रमुक्तावल्यां शिष्यः शुद्धान्वयः श्रीमान्विनीतः
प्रियदर्शनः सत्यवाक्पुण्यचरितः शुद्धधीर्दंभवर्जितः कामक्रोधपरित्यागी रागी च गुरुपादयोः देवताप्रव
णः कायमनोवाग्भिर्दिवानिशं नीरुजो निर्जिताशेषपातकः श्रद्धयान्वितः द्विजदेवपितॄणां च नित्यमर्चाप
रायणः युवा विनियताशेषकरणः करुणालयः परोपकारेषु रतः परार्थे विगतज्वरः इति भैरवपद्मावतीक

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ले मंत्राराधनशूरः पापविहरो गुणेन गंभीरः मौनी महाभिमानी मंत्री स्यादीदृशः गुरुरिति तत्र
शेषं वक्ष्ये शिष्यलक्षणमपि कृत्वा वक्षस्यालापितं कामं क्रोधं लोभं च चापलं असत्यवादिनं कृपणं कु
रूणानकदाचन शिवस्य रहस्यं ज्ञानी यानुग्रहमर्मं न भावयेत् एतादृशगुणोपेतो नेतरो ऽङः खलु कृद्गुरो
रिति वर्जयेत् शिष्यः अन्ताचकः विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि असूय-
कायानृजवेऽयताय न मां ब्रूयाद्वीर्यवती तथा स्यामिति अयमर्थः विद्या ब्राह्मणमाहमां गोपाय रक्ष तेऽहं
शेवधिः निधिरस्मि ननु कोऽसौ रक्षणप्रकारस्तमाह असूयकायेर्ष्यायुक्ताय अनृजवे यः ऋजुर्न भवति तस्मै
अयताय अप्रविज्ञाय मां न त्वं ब्रूयाः एवंभूताय न वक्तव्यामित्यर्थः एतावतैव मम रक्षणं भवति अन्यथाऽन्न
वैपरीत्ये अहमवीर्यवती स्यां भुवनेश्वरीकल्पे अयोग्याय न दातव्यो मंत्रराजस्त्वया नव अलसं मलिनं
क्लिष्टं दंभलोभसमन्वितं अन्यायेनार्जितद्रव्यं परदाररतं सदा भ्रष्टवनकष्टहृत्रिं पिशुनं दुष्टमानसं बहु
शिनं क्रूरचेष्टं अश्रद्धगणपद्गुरात्मनामिति चूडामणौ अन्यदेशागतं क्रूरं स्तब्धं तमनिलोभिनं पाषंडिनं
विकर्मस्थं कुजातिं व्याधिपीडितं काश्मीरकं काकणं चैव कार्णाटं करहाटकं कौवेर्यं कौशलं काणमे
तान्यत्नेन वर्जयेत् कौवेर्यं कौशलं उत्तरकोशलोद्भवं दक्षिणायस्य दत्तदोषः शापो ग्रहमपि स्पृशेत् अमा-

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

त्वदोषोराजानंभार्यादोषः पतिंयथा तथाशिष्यकृतंदोषंगुरुः प्राप्नोत्यसंशयं तस्माच्छिष्यंगुरुर्नित्यंपरीक्ष्यैव
परिग्रहेत् शिष्यपरीक्षाकालोवधिरप्युक्तोरामार्चनचंद्रिकायांसारसंग्रहेच सद्गुरुःस्वाश्रितंशिष्यंवर्षमेकंप
रीक्षयेदि वर्णभेदेनविशेषउक्तः शारदातिलके एकाब्देनभवेद्योग्योब्राह्मणोहृद्वयान्नृपः वैश्योवर्षैस्त्रि
भिः शूद्रश्चतुर्भिर्वत्सरैर्गुरोः सशुश्रूषुःपरिचर्यालोदीक्षायागब्रतादिषु एवंशिष्येणापिगुरुःपरीक्षणीयः
ल॰प्र॰ गुरुंपरीक्षयेच्छिष्योवक्ष्यमाणसर्वकर्मभिः गुणैः पूर्वोदितैःसर्वैरागमज्ञानपूर्वकैरितिसिद्धान्तशेखरवचना
२३४ त् मंत्रमुक्तावल्यामपिगुरुशिष्यलक्षणमुक्तं तयोर्वत्सरवासेनज्ञानान्योन्यस्वभावयोः गुरुताशिष्य
234 ताचापितान्यथेतिविनिश्चयःइत्युक्तत्वात् इतिशिष्यलक्षणं योगपट्टादीनांपदार्थानांपूजादावुपयो
गात्तल्लक्षणमुच्यते सिद्धान्तशेखरे त्रिविधंयोगपट्टंस्यादाद्यंव्याघ्राजिनोद्भवं द्वितीयंमृगचर्मोत्थंतृ
तीयंतन्तुनिर्मितं चतुर्मात्रप्रविस्तारंदैर्घ्यंस्याद्यज्ञसूत्रवदिति इतियोगपट्टलक्षणं अथकौपीनल
क्षणं सिद्धान्तशेखरे एकहस्तप्रविस्तारंकरद्वंद्वसमायतं विलंबितन्तरीयांशंगुह्याच्छादनमीरितं इ
तिकौपीनलक्षणं अथकटितन्तुलक्षणं तत्रैव कार्पाससूत्रसंभूतंत्रिगुणंत्रिगुणीकृतं तन्तुनस्त्रि
गुणंचेतिसप्तविंशतिसूत्रकं प्रदक्षिणक्रमेणैतिकटिसूत्रमुदाहृतमिति इतिकटिसूत्रलक्षणं अथ

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यज्ञोपवीतलक्षणं तत्रैव यज्ञसूत्रमथोवक्ष्ये सूत्रं कार्पाससूत्रनिर्मितं सुस्नातेन सुसितं सूक्ष्मं समं ग्रंथ्या
दिवर्जितं वेष्टयेद्दक्षहस्तस्य चतुरंगुलिमध्यतः सूमं तथा षण्णवतिसंख्ययान्वितं ततः त्रिगुणीकृ
त्य तत्सूत्रं जलाक्तं वर्तयेद्यथा पूर्वमूर्ध्वं नयेद्वामपाणिस्थसूत्रस्य वर्तने पश्चादूर्ध्वं नयेद्दक्षपाणिस्थं एवं द
वास्थितः त्रिगुणं त्रिगुणीभूते गोमयालिप्तभूतले द्विमध्यमनिपातवत्तावत्सीतिमति ब्रजेत् त्रिसवि
स्तरं हेतुग्रन्थिसंकुमवेत् वैश्यस्य हि सर्वेषोक्ते शूद्रस्यैकसरं मतमिति छन्दोगपरिशिष्टे त्रिवृदूर्ध्व
वृतं कार्यं तन्तुत्रयमधोवृतं त्रिवृतं चोपवीतं स्यात्तस्यैको ग्रन्थिरिष्यते तथा पृष्ठदेशे च नाभ्यां च धृतं य
द्विन्दते कटिं तद्धार्यमुपवीतं स्यान्नातिलम्बं न चोच्छ्रितमिति इति यज्ञोपवीतलक्षणं अथोत्तरीयलक्षणं
सिद्धान्तशेखरे समसप्तपंचहस्ते वा दैर्घ्यं स्यादुत्तरीयके एकहस्तप्रविस्तारं यद्वा सूर्यांगुलायतं द्विपुच्छो
वेष्टयेत्तस्य धारयेद्यज्ञसूत्रवत् यद्वा यथोदितास्तीर्णं द्वैर्ध्येन यज्ञसूत्रवत् उत्तरीयमिति ख्यातमिति इत्युत्त
रीयलक्षणं अथ रुद्राक्षमाहिमा स्मृतिसंग्रहे सर्वाश्रमाणां वर्णानां रुद्राक्षाणां च धारणं कर्तव्यं मंत्रत
स्तोकं द्विजानां नान्यवर्णिनां रुद्राक्षधारणादेव रुद्रा रुद्रत्वमागताः मुनयः सत्यसंकल्पाः ब्रह्मा ब्रह्मत्वमाग
तः रुद्राक्षमालाभरणाः शिवपूजापरायणाः वाह्यलक्षणसंयुक्तास्ते रुद्रास्ते च सर्वशः रुद्राक्षस्य समुद्भव

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रु.क्र.
२३५
235

स्नानात्तं विसुः सनातनः देवाश्चविंदवोजनार्दशः सर्वाधिदेवता स्वर्वर्णेनाथवा वध्वा रुद्राक्षं रजतेनवा शि
खायां धारयेन्नित्यं कर्णयोर्वा समाहितः यज्ञोपवीते हस्ते वा कंठेत्वेऽथवा नरः श्रीमत्तंवात्तैरोगे वध्वा वैने
ववाथवा शान्तमन्त्रेणमेधारयेत्सदा रुद्राक्षधारणं साक्षाच्छिवज्ञानस्य साधनं रुद्राक्षं यः शिवाख्यं न शिवत
त्वमितिस्मरेत् कर्णयोरुभयोश्चैव देवं देवीं च भावयेत् यज्ञोपवीते वेदांश्च तथा हस्ते दिवा स्मरेत् कंठे स
रस्वतीं देवीं पावकं चैव भावयेत् सहेम रुद्राक्षमालामनोज्ञाशमलापहा तद्वत्स्वहेमपद्माक्षमाला कांतिप
प्रकरी स्फाटिकं पद्म रुद्राक्ष हारमाभरणानि च मेध्यं जनाश्रमाणां स्थ्यंत्रीकरं पापवारणं रुद्राक्षधारिणं
श्राद्धे शं जयित्वा तुमोदितः पितृलोकमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा रुद्राक्षधारिणं दृष्ट्वा परिवादं करोति
यः उत्पत्तौ न स्य संकर्यमस्येवेति विनिश्चयः इति क्रियासारे रुद्राक्षधारिणं यस्तु श्राद्धे भोजयति द्विजे पित
रस्तस्य तृप्तिश्च भवंति हि विनो भणाम्यिति इति रुद्राक्षमहिमा अथ रुद्राक्षलक्षणं क्रियासारे ब्राह्मणःश्वेत्रि
यो वैश्यः पीः शूद्रश्चेति चतुर्विधः श्वेतो रक्तः स्ववर्णाभः कृष्णवर्णः क्रमाद्भवेत् पनेषु ब्राह्मणः श्रेष्ठो जपमा
लार्कैर्नोभवंति अलाभे स्ववर्णजातीनामपि वा हि द्विजातयः धारणे सकलाश्रेष्ठा रुद्राक्षा दोषवर्जिताः रुद्रा
क्षं सर्वदा धार्यं शिवभक्तैरसंस्पृशं न सोच्छिष्टादिको दोषो नास्ति नाशनधारणे अतिस्थूलोतिसूक्ष्मस्का

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रितो मे गुरोलघु: भिन्न:पुराघ्नतो जीर्णो रुद्राक्षो नावर: स्मृत इति इति रुद्राक्षलक्षणं वैखानससंहितायां
आराधनोपकरणानां लक्षणमेव च उच्यते संप्रति वत्स लग्न शृणु तत्त्वतो न दशेषत तदुपक्रमणसिंहासनं चंदाभिषे
कधूपदीपादिपात्रलक्षणानामभिधाय वत्स ऋंकेरेम दंष्ट्रसूत्रार्थपरिकल्पये दिस्त्रपसंहारात् चंदाभिषेकादिप
त्राणां स्रजां गतस्मरणात्स्रजोपयोगिवाद्युपकरणपात्रलक्षणान्युच्यंते तत्र प्रथमं देवाधिष्ठानतया श्र-
भहितत्वात्सिंहासनलक्षणं निरूप्यते वैखानसग्रंथे श्रीभगवानुवाच आराधनोपकरणानं लक्ष
णमेव च उच्यते संप्रति वत्स लग्न शृणु तत्त्वतो न दशेषतः सपर्याविशिष्टं वत्स ऋलमानान्वितं प्रभु यद्भास्त्वनसस्त
त्थं यथाविनानुसारतः सपर्याविषु रंसिंहासनं सिंहपादयुते पद्मासहस्तिपादचतुष्टयं शार्दूलपादमथवा
हेमरत्नपरिष्कृते चतुरस्रं मध्यमे तु समरसीरुहविस्तृते तपनीयमयं पद्मारजतादिविनिर्मिते दारुजे वा मणि
केर्दस्वर्णपदैर्विराजितमिति इति सिंहासनलक्षणं अथ कुंभलक्षणं विष्णुधर्मोत्तरे हैमराजततानस्थ
मन्मयाल्लक्षणान्विताः यागे होमे प्रतिष्ठादौ कुंभा स्युरभिषेचने पंचाशांगुलवैपुल्या उन्नते षोडशांगुलाः
द्वादशांगुलमूलास्युर्मुखमष्टांगुलं भवेदिति पंचाशोनिपंचचशाखपंचाशतः आशाः दशपंचदशांगुलैर्मि
पे विस्तारस्यार्थः अष्टांगुले च दक्षिणस्यस्वहस्तस्य मध्यांगुलास्य मध्यमं पर्वदैर्घ्येण मात्रा व्यमंगुलनत्रिपा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मते उत्तमे पर्वदैर्घ्यं स्यात्तस्मादेकोनं तु मध्यमं पर्वदैर्घ्यार्धमधमं मितिमात्रा त्र्यङ्गुले त्रियवेति सिद्धान्तशेखरोक्तेयाः सि
द्धान्तशेखरे विशेषः तत्रादौ संभवस्वामिशिवकुंभस्य लक्षणं उदरस्य प्रविस्तारो भवेत्पंचदशाङ्गुलः एकाद
शाङ्गुलोत्सेधश्चास्य संस्थाद्व्यन्तरेऽङ्गुले अष्टमेकाङ्गुलं कुर्यान्तं निर्वृहं चतुर्यवं व्यंगुलेन तु नालोत्सेधं तिलको रेखाग
ल॰प॰ लादयः पक्वबिम्बफलाकारः क्षतभिन्नादिवर्जितः शिवकुम्भ इति प्रोक्तो वर्धनीलक्षणं ब्रुवे सप्ताङ्गुलस
२३६ मोत्सेधा विस्तृतास्यान्नवाङ्गुलं व्यंगुलं वक्त्रविस्तारं कण्ठोत्सेधं चतुर्यवं ग्रीवं तु त्र्यङ्गुलं कुर्यान्निर्गमं चैकमङ्गु
236 लं नालं सार्धाङ्गुलं कुर्यात्पद्मलाकृतिवत्कुम्भे वर्धनीलक्षणं प्रोक्तं कलशस्याथ लक्षणं षडङ्गुलोन्नताः सर्वे
विस्तृतानानापर्वभिः नागाः गजाः तैश्चैव श्रेष्ठाः पर्वमानाङ्गुले व्यङ्गुलेश्चास्य विस्तारं कुर्यादर्धाङ्गुलोष्ठकं तन्निर्वृ
हं पंचचैकाङ्गुलोत्सेधं चतुर्यवं कनिष्ठाः कलशास्ते ते द्विगुणा मध्यमा मताः उत्तमास्त्रिगुणाज्ञेयाः कल
शाः कथिता इति सामान्यघटसंघातलक्षणं वान्मिसांप्रतं षट्त्रिंशाङ्गुलोन्नताः कार्या विस्तृता रुद्रपर्वभिः
आस्यमष्टाङ्गुलं कुर्याद्दोष्ठमर्धाङ्गुलं ततः अग्निशब्दात्रिसंख्यावाचकः तन्निर्वृहं यवं कुर्यात्मानेसार्धाङ्गुलो
न्नतं साधारणाः समुद्दिष्टाः देवस्य स्नपनार्हकाः इति कुम्भलक्षणं अथार्घ्यपात्रलक्षणं देवीपुरा
णे हैमराजतताम्राणि काश्मरचैलजानि च रत्नादीनि च पात्राणि शुभरेखाङ्कितानि च सर्वनैवेद्यपूजा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्यं बलिदानेषु कल्पयेदिति ॥ शिवरहस्ये विशेषः हेमपात्राणि सर्वाणि र्द्दिनानि भवंत्वमो अर्घं दत्वा तु रौप्ये
ण श्राधू राज्यं सुतानान् लभेत् नाम्रपात्रेण सौभाग्यं धर्मं मन्मयसंभवे सर्वाभावे तु माहेयं स्वहस्तरचितं यदि-
माहेयं मृन्मयं मृन्मयं आसने वार्घपात्रं च भग्नमासादयेत्तु सर्वत्र स्वर्णकं ताम्रमर्घपात्रे ततोऽधिकं पात्राणा-
मादरः कार्यः पात्राण्येव तन्मादरः बलिहोमक्रियार्थं हि विना पात्रं न सिध्यति षट्त्रिंशदंगुलं पात्रमुत्तमं
परिकीर्तितं मध्यमं तु त्रिभागोनं कनिष्ठं द्वादशांगुले चतुर्विंशांगुले मध्यं कनिष्ठं द्वादशांगुलमित्यपि क्वचि-
त्पाठः वस्वंगुलविहीनेन तु न पात्रं कारयेत्क्वचित् न पात्रं कारयेत्तु यद्गतिपादांतरं सर्वाभावे तु न मात्रं स्रवते
यत्र धारितं यत्रोदकं न स्रवते तत् स्रवतश्चेति कार्यं ह्यमोघलक्षकं नाभीविवररूपाणि पुंडरीकाकृतीनि
च शंखनीलोत्पलाभानि पात्राणि परिकल्पयेदिति वैखानससंग्रहे प्रस्थमानपलद्वयशरयोग्यान्तराणि
च शंखशुक्तिप्रभवाणि यद्वापानाणि कल्पयेदिति सिद्धान्तशेखरे अर्घ्यस्य लक्षणं वक्ष्ये पलद्व्यादिभेदतः
सामान्यं हि निरोधार्थं विशेषार्घ्यपरास्त्वेवं अर्घपात्राणि चत्वारि स्वर्णदुर्वर्णजानि वा दुर्वर्णं रजतं ता-
म्रशुक्तिशिलादारुकूर्मम्मृत्पात्रजानि च उत्तमं पलविंशत्या मध्यमं दशभिः पलैः हीनं पंचपलं कुर्यादेव
मावाप्यपाययोः चतुःपर्वाणि तानि स्युः विस्तृतान्यष्टपर्वभिः षडेषं के तु होकानिष्ठताकाराणि वा पुनः

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प्र·
२५०
237

चतुरस्राणि कुर्वीत चतुःपात्राणि चार्चके कर्पूरं कुंकुमं दूर्वां सिद्धार्थं बिल्वपत्रकं यवदर्भांकुरांश्चेति सामान्य
र्घ्ये विनिःक्षिपेत् तिलप्रसूनसिद्धार्थदर्भदूर्वायवाक्षतान् द्रव्याण्येतानि समापि निर्घोथार्घ्ये विनिक्षिपेत्
तिलतंडुलसिद्धार्थदूर्वादर्भयवानपि पराङ्मुखार्घ्यपात्रे चद्रव्यषट्कं प्रकल्पयेदिति अर्घ्यपात्रलक्ष
णं अथ पाद्यपात्रलक्षणं वैखानससंग्रहे पादावनेजनजलग्रहणपात्रमद्भुतं त्रिरावृत्तं सरोजाभं हे
मराजतमेव वा ताम्रं सचक्रचरणं पवित्रां पावनं समामिति सिद्धान्तशेखरे षडंगुलप्रविस्तारमुत्सेधं च
त्र्यंगुलं नष्टमेकांगुलं कुर्यान्नासिकां चतुरंगुलां पृष्ठे पादसमायुक्तं चतुरंगुलमानतः पाद्यपात्रमिति ।
इति पाद्यपात्रलक्षणं अथ पाद्यहेयपाणिपपात्रलक्षणं सिद्धान्तशेखरे अष्टांगुलसमुत्सेधं विस्तारं षोडशां
गुलं नष्टमेकांगुलं कुर्यात् शरावाकृतिपात्रकं उभयोः कुर्यान्नाहतं कैकणाकेसमे पृष्ठे पादसमायुक्तमष्टा
ष्टांगुलसुविस्तृतं पादोन्मेषं चतुर्मात्रं पायाधारं प्रकीर्तितमिति इति पाद्यहेयपाणिपपात्रलक्षणं अथाच
मनपात्रलक्षणं वैखानससंग्रहे आचामवारिग्रहणपात्रमुत्तमलोहजं सरोजकर्णिकाकारं कुर्याद्द्रुतद
प्रीतं कार्तस्वरमयं हृत्ते राजतं ताम्रपावनमिति कार्तस्वरं सुवर्णं सिद्धान्तशेखरे द्वादशांगुलविस्तारं कृति
मध्यं सहजेकं व्याप्तलं ततगलोत्सेधमोष्ठं कुर्यादथांगुले आसनारेचिमात्रे स्यान्ताम्र्येनासाप्युगांगुला रेखकं

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निष्टिकान्तत्समग्रेतद्विगुणेन च ः एतेपादानिनं कुर्याद्ङ्गसेयं द्व्यंगुलेनतः षडंगुल प्रविस्तारेयात्त्रमाचमनार्थ
र्थिकमिति इत्याचमनपात्रलक्षणं अथाभिषेकपात्रलक्षणं वैखानसग्रंथे अरत्निमानविस्तारेमध्येष्टदल
संयुतं प्रतिपत्रदलेमध्येसुषिराषिराणिशतंभवेत् अष्टोत्तरशतेभूयः पर्यंतदलमध्यतः खचितंचमहारत्ने
रेवंधारासहस्रकं अथमर्थः अरत्निमानविस्तीर्णपात्रंकुर्यान्नन्मध्ये अष्टदलंकार्यं तदेकैकदलेशतंसुषिरा
णिएवमष्टदलेसुषिराणामष्टशतानीसंजायन्ते भूयः अष्टोत्तरशतेसंपादितसुषिराष्टशतसुत्तरशतेउपरितने
शतद्वयं छिद्राणां अष्टसु पर्यंतदलेषु पंच विंशातिसंख्येणाकार्यं एवं सहस्रं सुषिरैः रत्नखचितैः धारासहस्रकं
भवतीत्यर्थः धाराष्टकेनवापुत्रमभिषेकायकल्पयेत् आकोशपंकजाकारं भृङ्गसुतनमलोद्भवं आटकापरि
मणांभः हरयोग्यंमहाविलं हस्तदीर्घेण नलस्ताविपार्श्वेमानोपशोभितं कल्पयेदपरं स्नानपात्रंमुक्तापरिष्कृतं
महाशंखनिभाकारमग्रतोजलनालकं इतिमिषेकपात्रलक्षणं अथत्रिपादीलक्षणं सिद्धान्तशेखरे चतुःष
ड्ष्टभिर्मात्रैरुत्तुंगताविस्तृताक्रिया उत्तमादिविभेदेनपंचिकात्रिपदीमता त्रिचक्रपादसंयुक्तापादार्धसिंहवक्रांके
पादमध्येसुहृतंसा करावाभिपद्मोप्ययः शेषंकुर्याद्यथाशोभं त्रिपादीतिशकीर्तिता मूर्च्छशंखादिनैवेद्यपात्रा
धारात्रिपादिकेति इतित्रिपादीलक्षणं अथशंखमाहात्म्यं स्कंदपुराणे त्रैलोक्येयानितीर्थानिवासुदेवस्याज्ञया

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शंखे तिष्ठति विप्रेंद्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचज-
न्य नमोस्तु ते तव नादेन जीमूता वित्रस्यंति सुरासुराः शशांकायुतदीप्ताभ पांचजन्य नमोस्तु ते दर्शनादेव शं-
खस्य किं पुनः स्पर्शनेन तु विलयं यांति पापानि हिमवद्भास्करोदये प्रणतो वासुदेवस्य पुष्पं सजलाक्षतं शंखम-
ल.प्र. भ्यर्चितं तिष्ठेत्तस्य लक्ष्मीर्न दुर्लभा शंखस्थितात्तु पानीयं सपुष्पं सजलाक्षतं अर्घ्यं ददाति देवस्य ससागरमहीफ-
२३८ लं प्राप्नुयादिति शेषः अर्घ्यं दत्वा तु शंखेन यः करोति प्रदक्षिणं प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुंधरा तीर्थो-
238 दकं हरेर्मूर्ध्नि भ्रामयेत् शंखसंस्थितं मुक्तिं ददाति चैतस्य क्षीरसागरजाप्रिया भ्रामयित्वा हरेर्मूर्ध्नि दर्शने कुलस-
र्वदा तथा शंखलग्नं तु यत्तोयं भ्रामितं केशवोपरि वहते शिरसा नित्यं गंगास्नानेन तस्य किं नित्ये नैमित्तिके का-
म्ये स्नानार्चनविलेपने शंखमुद्वहते यस्तु श्वेतद्वीपे वसेद्धि सः इति शंखमाहात्म्यं अथ शंखलक्षणं क्रि-
यासारे प्रस्थांबुप्रमितः शंखः श्रेष्ठस्तत्र्यंशशर्मकः मध्यस्तदर्धप्रमितः कनिष्ठः क्रमशो भवेत् लक्षणः
प्रांशुशिखरः स्निग्धो दीर्घविद्रुपद्धतिः शंखः स्यादर्चने योग्यो योग्यावर्तिकवर्त्तुषः अलिकचक्रश्चित्रपत्रकः मलि-
नो निम्नशिखरः सरंध्रः किंचिदष्टकः ह्रस्वश्च तालिकः शंखो न स्याद्योग्यः सुरार्चने गोक्षीरधवलः स्निग्धो दीर्घ-
नालो वृहत्तनुः हृतोपि दक्षिणावर्तः सोद्विजः शंखसंज्ञकः सर्वाकलक्षणोपेतो वामावर्त्तोथवाद्विजः शंखाय

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नातिसुलभः सोपि मुख्यः स्वराचिते ताम्रस्फटिकशंखे सुसुवर्णकलधौतकैः न विद्यते भिन्नदोषो दुष्टं सुवर्णेषु वि
द्यते कलधौते रजते शंखवः शुद्धो भवेत्तत्र तत्पाभिर्बुधैरोगान्वेति तेषाः ध्यान्यतवः इति शंखलक्षणं अथ गंधपा
त्रलक्षणं सिद्धान्तशेखरे अर्चिवत्गंधपात्रं स्यादिति अत्रार्च्यवदित्यनेन संपूर्णार्घ्यपात्रलक्षणातिदेशः यथार्घ्य
पात्रं क्रियते तथैव गंधपात्रं कर्तव्यमित्यर्थः इति गंधपात्रलक्षणं अथ धूपपात्रलक्षणं वैखानससंग्रहे धूपपा
त्रं सौराजतं सुवर्णादिविनिर्मितं पादयोरथितस्यास्याऽन्तेधस्यात्तुरंगुलः अनेकसुच्छिद्रतस्यपिधानेसंहतेम
वेत् पिधानमाछादने अथवा विकसत्पद्मसदृशाकारशोभितमिति सिद्धान्तशेखरे धूपपात्रविधिं वक्ष्ये पल
द्वयादि पूर्ववत् चतुः पंचरसास्यैर्वा पात्रविस्तारमंगुलैः रसाः षट् अश्वाः सप्त पात्रोन्नत्यं तदर्धं स्यादोष्ठम-
४३५ र्धांगुलं मतं पद्माभं परितः पात्रं द्व्यंगुलाधो गलोन्नतिः पादमेकांगुलोन्नत्यं विस्तृतं द्व्यंगुलं ततः षट्पर्वदीर्घना
पृ.३. लेस्यान्नतन्नाहं द्व्यंगुलं मतं पूर्ववत्पादसंयुक्तं नमं चक्रं वचापवत् पिधानमंगुलोन्नत्यं नानाछिद्रसमन्वितं एक
छिद्रयुतं वापि कलशाकारमूर्द्धनि इति इति धूपपात्रलक्षणं अथ दीपपात्रलक्षणं वैखानससंग्रहे दीपपात्रंत
थानालमध्ये कमुदकायतं वर्णाधारैः शतेनापि पुलमष्टाभिरेव च विंशत्या वाष्टभिस्त्रैव द्वाभ्यां वा दशभिश्च गोत्र
षभिर्वा यथा शक्तिकल्पये छिद्रवितमयति सिद्धान्तशेखरे दीपपात्रविधिं वक्ष्ये पलद्वयादिरर्च्यवत् पादनाल

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गलायूपपात्रवच्छेषतच्चो एकपत्रंचनव:पत्रं षट्दलंचाष्टपत्रकं नवैकपत्रंमध्येनिम्नाम्भन्यदलाकृति चतुर्दिक्षु
मध्यस्थानिम्नकर्णिकाषट्दले॰ष्टदलेनवदुपयत्रसमन्वितमिति इतिदीपपात्रलक्षणं सिद्धान्तशेख
रे दार्वयस्ताम्रसंभूतादीपमालायमामता मध्यमाष्षतथाश्रेष्ठाः स्वर्णादुर्वर्णजाःक्रमे द्वारेषुद्वारवत्कल्पीत
ल.प्र. लिंगष्टेष्प्रभाकृति द्वाराभामन्यदेशेषुदीपमालांसुशोभनां चतुर्भिरंगुलैर्दीर्घस्कंधपंचांगुलविस्तृते एवंकृ
२३९ त्वाविभागैकैकेस्मिन्मध्येनियोजयेत् स्कंधान्तसंधंसमंकुर्यादंतरंभूतमात्रके दीपमालेतिगदितादीपाधारोथ
239 कथ्यते इतिदीपमालालक्षणं अथदीपाधारलक्षणं सिद्धान्तशेखरे हेमताम्रादिसंभूतंविद्धयाद्युत्तमादिकं
द्वादशांगुलमारभ्यद्विद्व्यंगुलविवर्द्धितः अष्टादशोदितान्भेदादीपाधारस्यचोत्तमा स्वेद्वाधारस्यपादेनुनाहंदैर्घ्य
समंमतं पादनारश्शरांशेणवास्वद्वाधीरोपितन्समः नरर्धमुकुलेकर्यात्पद्मिकादिसमन्विते नानापट्टीसमायु
क्तताम्रकुंभैस्सनालकं दीपाधारइतिप्रोक्तइति इतिदीपाधारलक्षणं अथदीपिकालक्षणं वैखानसग्रंथे
लोहजातंदीपिकास्तंभानूचतुर्हस्तप्रमाणकान् त्रिहस्तानेकहस्तान्वाद्विहस्तान्वायथाबलं ताम्रजानूरा
जतीयान्वापुष्पैस्सैः स्वेदधारकैः पुष्पैर्वीरुत्तविलीर्णैर्वद्धसैर्वापरिष्कृतान् स्नेहाधारपरिक्षिप्तपद्मकोशेर-
लंकृतानिति इतिदीपिकालक्षणं अथनीराजनपात्रलक्षणं वैखानसग्रंथे नीराजनक्रियापात्रयोर्हेमा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दिङ्ध्वनिर्मिताः त्रितालायतविस्तीर्णाश्च तन्मध्यस्थोन्नताः नववासमवापंचतिसृस्वेकाहुनिर्भवेत् सिद्धांत
शेखरे हिरण्यताम्रादिनिर्मितं स्रुतमादिकं षट्त्रिंशतांगुलैः श्रेष्ठं विंशतामध्यमं मतं चतुर्विंशतिमा
त्रैः स्यादधमं विस्तरतोऽक्रमात् अग्निभागैकभागेन कुर्यान्मध्ये त्रिकर्णिकां ननुवारणकांशमुन्नेयं कर्णि
काः प्रमाणतः पट्टिकापरितः कुर्याद्यवपृथुमेन विस्तृतां तत्समानोन्नतां चाथ परितोऽष्टदलानि च कर्णि
कार्धप्रमाणेन काष्ठानामष्टके सम अष्टमे कांगुले कुर्याद्विस्तारात्कर्णिकोन्नतेः समाने सूर्णि चंद्राभं दीपा
पाराश्च कुंभवत् उत्तमादिचतुर्मात्रैर्विस्तृतांश्चांगुलद्वयात् तदूर्ध्वं षडंगुलं कुर्यात्कर्णिकामध्यसंस्थितं दी
पाधाराश्च पात्रेस्मिन्स्थापयेत दलाष्टके मध्यस्थमेकमित्येवं नवदीपक्रमो मतः पंचात्मके चतुर्दिक्षु म
ध्येत्वेकमिति त्रिधा अंगुलत्रयमानेन पादं कुर्यादधस्ततः नीराजनमिति प्रोक्तं चंद्रालक्षणमुच्यतेऽथ इति
नीराजनपात्रलक्षणं अथ चंद्रालक्षणं वैखानससंग्रहे शाद्वलमपि चंद्राहस्तोन्नेयं प्रमाणका त्रस्तोऽउगो
लकाकारासौ वर्णपुष्टमा भवेत् अधोमुखत्वालमानविस्तारोन्नेयं मे ततः प्रदीपनलसंस्थाननीत्वाग
भ्यंतरना कः चक्रोकारप्रमंजोकावासैषापरिकीर्तिता नालवंथाश्चनसेन्नाचंद्राः प्रतिदिशः कृताः एवं
विशिष्टायंत्रस्याग्रहाविनातुसारत इति सिद्धांतशेखरे पंचांगुलोन्नताचंद्रा नैव विस्तारसंमता अष्टचत्व

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल·प·
२५०
250

र्यं चं कुर्यात्तत्समं तस्य निर्गमं उपपद्दीपवेनस्यात्सिखरं तं गुलोन्नतं अर्द्धांगुलो गलोत्सेधो जिह्वा वेदांगुलाय
ता घंटायास्तत्परीणाहो विस्तारार्धेन वर्त्तितः अंगुलं दंडदैर्घ्यं स्यान्नाहस्तत्समं मतं दंडाग्रे वृषभं शूलं नालि
नेवापि कारयेत् शुद्धकांस्येन कर्त्तव्या घंटालक्षणमीरितं महाघंटां मया वक्ष्ये विदध्यात् शुद्धकांस्यतः सप्तां
गुलसमुत्सेधामष्टांगुलसुविस्तृतां अष्टांगुलोन्नतगलां गलनाहस्तु सांगुला परिकाहस्तु सप्तदंडां गुले शिव
रोदयः तन्नाहमष्टमात्रं स्याच्चतुर्नासं स्तंभकं नारार्थवर्त्तितं नाहं जिह्वा रंध्रांगुलायता चतुर्मात्रपरीणाहा
नदध्रे वलयान्विता महाघंटा समाख्याता इति घंटालक्षणं अथ भेरीलक्षणं सिद्धांतशेखरे सारदारुस
मुद्भूतां वृत्तां हस्तद्वयायतां पंचतालपरीणाहां चतुर्थवदनां शुभां द्वादशांगुलविस्तारास्यकोऽस्याः समकी
लकाः पार्श्वयोरुभयोर्मध्ये चायःपट्टेन वेष्टितं चर्मबद्धमुखां भेरीं कुर्यात्तस्याः प्रहारकं अयसा दारुणा वापि
षोडशांगुलदैर्घ्यकं मध्यांगुलपरीणाहं भेरीताडनसाधनं भेरीलक्षणमित्युक्तं इति भेरीलक्षणं अथ नैवेद्य
पात्रलक्षणं वैखानससंग्रहे नैवेद्यपात्रं वक्ष्यामि केशवाय महात्मने हैरण्यं राजतं ताम्रं कांस्यं मृन्मयमेव वा पा
लाशं पद्मपत्रं वा पात्रं विष्णोरतिप्रियं हविर्द्रव्यप्रमाणानि युक्तानि परिकल्पयेदिति सिद्धांतशेखरे स्वर्णाद्युक्ता
ताम्रास्यात्स्थालिकास्तु तन्मादिका शुद्धकांस्येन वा कुर्याद्देवनैवेद्यपात्रकं एककपात्रं समारभ्य पंचाशत्पात्रतः क्रमात्

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कुर्यान्नैवेद्यपात्राणि हीनं नैवेद्यकादिषु पात्रं शतपलं श्रेष्ठं तदर्धं मध्यमं मतं तदर्धमधमं ज्ञेयं पात्रसंख्येति कीर्त्ति
ता स्थालिका नवधा कार्या नाराः षट्त्रिंशदंगुलैः अंगुलत्र्यंगुलन्यूनैर्यथाकीर्गुलैः क्रमात् इति विस्तारमाख्या
ते स्थालिकानवके क्रमात् उत्तमत्रयमग्रे स्यान्मध्यमे मध्यमत्रयं न्यूनत्रयमधस्तात्स्यात्स्थालिकानां यथाक्रमं कुशे
नवयव श्रेष्ठे पत्रे एकैकविहीनतः विस्तरेण तथोत्सेधान्नवधा कीर्त्तितः क्रमादिति इति नैवेद्यपात्रलक्षणं अ
थ पानीयपात्रलक्षणं वैखानससंग्रहे पानीयपात्रं सौवर्णं राजतं ताम्रमेव वा वृत्तायतं सुवृत्तं वा भवाभवेदा
यतमेव वा प्रस्थमानप्रमाणं भः पूरयोग्यं तत्र शुभमिति इति पानीयपात्रलक्षणं अथ ताम्बूलपात्रलक्ष
णं वैखानससंग्रहे कल्पयेन्नागवल्लिकादलपात्रं च रैमयं हैमयं सौवर्णं अरत्निमानविस्तीर्णं कार्यं हृद्यं यथा
बलमिति इति ताम्बूलपात्रलक्षणं अथ मुकुटलक्षणं सिद्धान्तशेखरे जटामुकुटमीशस्य शक्तीनां तु करंड
कं किरीटमन्यदेवानां तत्तन्मुकुटमानतः नानारत्नसमायुक्तं वल्लीकलशशोभितं लक्षणं मुकुटस्योक्तंप
हलक्षणमुच्यते इति मुकुटलक्षणं अथ स्वर्णपुष्पलक्षणं सिद्धान्तशेखरे अंगुलं पुष्पविस्तारं वृत्तं हैमं वि
निर्मितं दलाष्टकसमायुक्तं मध्ये कर्णिकयाकयायुतं हैमपुष्पमिति ख्यातं कर्पादाभरणं यथेति इति स्वर्ण
पुष्पलक्षणं अथ नानाभरणलक्षणं सिद्धान्तशेखरे हारकंकणकेयूरमुद्रिकाकटिसूत्रक पदेकंकठमा

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लाचयत्तमूत्रं चतुरस्रं अम्बराभरणं सर्वं तत्तन्मानानुरूपतः हिरण्यनिर्मितं कुर्यान्नानारत्नावचित्रितमिति इ
तिनानाभरणलक्षणं अथ कंकणलक्षणं वैखानसग्रंथे कंकणं कनकं रूप्यमपि वा द्व्यंगुलायतं षडंगुलाय
तं यद्वा नंद्यंगुलविस्तृतं विंशत्यादशानैर्युक्तं भवेदुभयतोमुखं यद्वा षोडशभिर्दन्तै रत्नाभिर्वा यमंगलमिति इति
कंकणलक्षणं अथांजनदोदपात्रशलाकालक्षणं वैखानसग्रंथे सौवर्णमंजनदोदभाजनं पंचमगाकृ
लक्ष॰ तिं सिंहाकारं भवेद्यद्वा हंसाकारमथापि वा शिरोविलं शलाका च द्वादशांगुलमायता अष्टांगुला वा सौवर्णा
२५२ भवेदुभयतोमुखीति इत्यंजनकुंकुमपात्रशलाकालक्षणं अथ दर्पणलक्षणं वैखानसग्रंथे दर्पणं प्र
तिमामानेन तदर्धं वा सुशोभनं हृतं कांस्यमहारत्नखचितं वा यथाबलं पादपद्मं सनालं वा मुखमानमथापि
251 वेति सिद्धांतशेखरे दर्पणं शुद्धकांस्येन शशांकचंद्रसमाकृति षट्त्रिंशतांगुलैर्नीहं विद्याद्द्वादश तदर्धतः
नालमष्टांगुलेन स्यात्पद्मं स्याच्चतुरंगुलं नानापत्रिकया युक्तं प्रोक्तं दर्पणलक्षणमिति इति दर्पणलक्षणं
अथ व्यजनलक्षणं सिद्धांतशेखरे षट्त्रिंशता त्रिंशता वा दैर्घ्यमंगुलनाहकः दंडो दंडाग्रभागे तु द्विधा कृ
त्वात्र योजयेत् षोडशांगुलकं वृत्तं पिंछनालसमूहकं स्वदंडेन तु संबद्धं वृत्ताये पिंछभूषितं मायूरं व्यजनं प्रोक्तं
वस्त्रे पद्मादिसंभवं संयायस्त्रैर्वद्धं वृत्तं वेणुविवर्जितं अष्टादशांगुलं वाथ षोडशांगुलसंमितं देवांगप॰

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हकार्षेसवेष्टितंयोजयेद्दृढं लक्षणंव्यञ्जनस्योक्तमिति इतिव्यञ्जनलक्षणं अथपादुकालक्षणं
वैश्वानरस्यग्रंथे पादमानानुसारेणपादुकैरेमयेत्सुधीः गृहाद्रूप्यमयेनाम्रमयेकांस्यमयेनतथा अथोम
येविवर्ज्येस्याहृतमध्येकृतंतावज्रं दंडस्थानीयमित्यर्थः सिद्धान्तशेखरे पादुकालक्षणंवसेत्सुवर्णिनाम्रा
दिदारुजंपादुकायुगलंकार्यंपूजार्थेचोत्सवादिषु पूजार्थपादुकायुग्मंदैर्घ्येमध्यादशांगुलं पंचांगुल
सुविस्तारंशेषंस्याद्दसमाणवत् तत्तन्मादसमंदैर्घ्यंप्रतिमाचार्यकादिषु दैर्घ्यार्धविस्तृतंकार्यंपादु
कायद्वयंसमं पार्ष्णिभागःपार्ष्णिसमोच्चनेस्याच्चतुरंगुलं तत्रच्चनंतत्रिधाकृत्वाभागमध्यंततस्तोन्नतिः
भागेनोर्ध्वघनेकुर्यादष्टांशोच्चंतुकीलकं तदर्धंतत्समंपुष्पमुकुलंतत्रिभागतः हंससिंहादिरचनायवार्थे
नविचित्रिता स्त्रिविभागतोगर्तंकुर्यान्मूलाग्रयोर्द्वयः पार्श्वावनोन्नसंश्लिष्टोऽंगुलार्धविचित्रिताविति
इतिपादुकालक्षणं अथवितानलक्षणं सिद्धान्तशेखरे दुकूलपट्टहेमांगकार्पासेवावितानके चतुरस्र
समायामंविस्तारंगुणसंयुते चतुःकोणसमोपेतंयंत्रादज्जसमन्वितंकोणेषुतत्त्वदैर्घ्यंविधानद्वारयेद्बु-
द्धिः चतुःकराद्यनादंत्रास्त्वतुरंगुलनाहकाः अथोवलयसंयुक्तावेणवाश्चथिवर्जिताः प्रासादमंडपाद्येषुत
त्संख्यासमानके वितानेविस्तृतंतद्वदितानमितिकीर्तितमिति इतिवितानलक्षणं एतानिचसर्वाणिकल

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल-प-
२४२
242

हणानि सिंहासनादीन्युपकरणपात्राणि सज्जार्थमुपकल्पनीयानि तथाचोक्तं वैखानससंग्रहे मुक्तातपत्रं
यवलंशशिबिंबसमद्युति पद्मातपत्राणि तथा बर्हिःपत्रमयानि च पातपत्राण्यनेकानि हैमदंडानि पद्मज
व्यजनानि च भूयांसि कलशानि महांति च चन्द्रकं हेमदंडांश्च सज्जार्थं परिकल्पयेदिति प्रत्याशं परिवर्द्धित
र्थिजनतादैन्यांधकारापहे श्रीमहीरमणेंद्रदानजलधिपिहक्कचंद्रोदये राजादेशितमित्रमिश्रविदुषस्त
स्तोक्तिभिर्निर्मिते ग्रंथे लक्षणसंग्रहस्य गहनः पूर्णप्रकाशोऽनमत् ॥ इति श्रीमत्सकलसामंतचक्रचूडा
मणिमरीचिमंजरीनीराजितचरणकमलस्य श्रीमन्महाराजाधिराजमधुकरसाहसूनुचतुरुदधिव
लयवसुंधराहृदयपुंडरीकविकासदिनकरश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीवीरसिंहदेवोद्योजितश्रीहंसपंडि
तात्मजश्रीपरशुराममिश्रसूनुसकलविद्यापारावारपारीणमधुरीणजगद्दारिद्र्यमहागजपारीन्द्र
विहज्जनजीवातुश्रीमन्मित्रमिश्रकृते वीरमित्रोदयाभिधेयनिबंधे लक्षणप्रकाशस्समाप्तः ॥
संवत् १९३२ आषाढशुदी अष्टम्यां परतो नवम्यां गुरुवासरे शुभमस्तु ॥ ॥ ॥

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

योगेश्वरस्य ...

नं. ६३८

१८५ ये पत्रा नहीं है

लक्षणप्रकास

सूचिपत्र पत्रे ६

पत्रे २४२

८००० श्लोकसंख्या

संवत् १९३३ आषाढ ३ प्र. १९ गणपत पंडितदी लिखित

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative